

श्रीवाक्पतिपादा विजयन्तान्तमाम् ॥

५५८.

अंक २.

शुद्धाद्वैत

अने

वैशाख

१८८८.

श्रीचण्डिका

४५५.

सहितमार्तुः

प्रार्थना.

दवात्रिजान्संस्तुतिलीयमानांस्तु प्रभुः शुष्टितानगण्यन् ।
चम्पावने यः प्रकटो बभूव स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥१॥
विस्मापयन्स्वीयगुरुं पठन्त्यो द्राक् शब्दशास्त्रोदधिपारमैयः ।
कौमार एवात्रियताथ वाचा स वागधीशो दययावताम्रः ॥ २॥
विद्यामु विशानगरे प्रवीणाः कर्तुं विवादं मिलिता विदग्धाः ।
यो ब्रह्मवादं प्रजगौ प्रमाणैः स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥६॥
चिन्तातुरो दैवजनोद्भूतौ यः श्रीब्रह्मसम्बन्धकृतौ प्रदिष्टः ।
तुर्यमिपारोक्षसि माधवेन स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥४॥
सूर्यापितं येन मुदा पृथिव्यां श्रीपुष्टिमार्गान्मुजसत्प्रकाशे ।
दामोदरायैर्भ्रमरायितं च स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥५॥
श्रीनाथवक्त्राम्बुजीनःसृता ये पञ्चाक्षराष्टाक्षरगन्धमन्त्राः ।
तैर्निर्भया येन कृताथ दैवाः स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥६॥
श्रीविठ्ठलादेशवर्शेन येन भक्तिप्रचाराय शुभोऽत्र वैशः
अतो गृहस्थाश्रम आहतोऽपि स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥७॥
दयानिधानावितपुष्टिमार्गे याथां विधातुं हरिरप्यशक्तः ।
स्मृत्या स्वभक्तातिविनाशको यः स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥८॥
रासेश्वरो यद्भजनीयदेवः सेवारसाला रसिकांश्च भक्ताः ।
ग्रन्था रसा यस्य रसाश्रयो यः स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥९॥

श्रीकृष्णलीलामृतसिंधुविन्दुः सिन्धूयते भक्तहृदन्तराले ।
 यस्य त्विहानुग्रहदृष्टिदृष्ट्या स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥१०॥
 बन्धुसहसैरिह सेव्यमानो लीलापयोधौ हि कलानिधानः ।
 यत्स्वान्तशेषोपरिगे विशाले स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥११॥
 वृन्दावनेन्दुः किल यस्य दानं भक्ता ग्रहीतार इहैव दाता ।
 दत्तेऽपि दाने निधिरक्षयो यः स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥१२॥
 प्रभुर्व्रजेशः खलु वैष्णवानां योऽरं दयालुर्व्रजनाथदाता ।
 महामभुस्तत्प्रथितः पृथिव्यां स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥१३॥
 चेतोगताज्ञानतमिस्रनाशाद् वैश्वानरः प्राज्ञगणैर्विभाषे ।
 यो वस्तुतः कृष्ण इषाय भूमिं स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥१४॥
 श्रीकृष्णरूपः परिपेव्यमाण आचार्यरूपः परिपेवमाणः ।
 योऽभूद् द्विधासेवनशिक्षणाय स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥१५॥
 स्वदर्शनोत्कोऽन्तिकमागतोऽपि मत्स्यद्वतः श्रीपतिना मुदा यः ।
 शान्तो यतोऽभूद् गिरिराजतापः स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥१६॥
 परिक्रमन्भूमितले त्रिवारं ग्रन्थान् रसालान् रचयन्ननेकान् ।
 य उद्धरन् देवजनान्व्यवराजत् स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥१७॥
 स्नानापदेशेन धरागतानि कृतानि तीर्थानि हि नाथवन्ति ।
 भूमण्डलाचार्यवरेण येन स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥१८॥
 यः पायपन्पुष्टिमहारसं स्वान् विभिन्नदेशस्थितपुष्टिमक्तान् ।
 तीर्थाटनाचामसतापहारी स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥१९॥
 गुणानगण्यान्विदुषामवर्णान्नासेश्वरानुग्रहपण्यलभ्यान् ।
 संख्यातुमीष्टे नहि कोऽपि यस्य स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥२०॥
 माहात्म्यपूर्णं चरितं यदीयं भक्तिं निजे वर्धयते, श्रुतोक्तम् ।
 आदर्शरूपं निजसेवकेषु स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥२१॥
 य आत्मकामः परिपूर्णरूपः कर्मोणि चक्रे निजदंशदेतोः ।
 अङ्गीचकारेह निजान्प्रमेयात् स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥२२॥
 प्राप्तं बिलोक्य व्यसनाख्यभक्तिं स्याच्चेद् गृहत्यागरतस्त्वपक्वः ।
 वसेद् इरिस्थान इदं य ऊचे स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥२३॥
 विभाषं कार्यं निजसेवकानामाज्ञां व्रजेऽस्य च पालयित्वा ।
 विष्णोर्विषोऽगाय जहौ समं यः स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥२४॥

भ्लेच्छा नृपाला बहवोऽत्र वादा दैवा अभूवन्भुवि कांदिशोकाः ।
तदावतीर्येह ररक्ष यस्तान् स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥२५॥
यो मोहयामास निजैर्भ्रैर्यरागदानामुरजीववृन्दान् ।
विराजमानोऽपि निजेषु नित्यं स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥२६॥
धर्मद्विषां नैकाविधैः कुतर्कदैवे क्षितौ मज्जन्ति संशयाब्धौ ।
अलौकिकाग्निः पुरोत्तमो यः स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥२७॥
ज्ञानं न चास्मासु दृढा न भक्तिर्न वाश्रयः कर्मबलं न योगः ।
स्वीयत्वमालोक्य दयानिधिर्यः स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥२८॥
मानादिदोषान् दह बल्लभाग्ने स्वभक्तगान्तमति पदं विशृद्धाः ।
क्षिप्रं भवेयुश्च यथार्थदीना दासानुदासाश्चरितेऽपि ते नृपः ॥२९॥
दैन्यामृतं सिद्ध दयानिधे त्वं भक्ते निजे साम्प्रतिके कृपातः ।
यन्नामसेवां तत्र रूपसेवां कृत्वा मिथोऽनन्तमुखं लभेत ॥३०॥
श्रीवल्लभाचार्यकुलावतंसः श्रीकृष्णचन्द्राङ्घ्रिसरोजभृङ्गः ।
कृपामकार्पीदनिरुद्धलालः श्रीदेवकृष्णात्मजदुर्लभेऽस्मिन् ॥३१॥
यद्वल्लभाचार्यगुणान्गृणाति तद्वाक्मुधास्वादलवं तथैति ।
सर्वस्य बीजं गुरुदृष्टिपातो नक्षम्पतेऽयं हृदि तत्पद्माब्जम् ॥३२॥
श्रीवल्लभीयान्तरमध्यवर्तिश्रीवल्लभीयाङ्घ्रिसरोजयोधं ।
सुवाक्यपुष्पाञ्जलिमर्पयामि श्रीवल्लभानुग्रहचाञ्छयाऽहम् ॥३३॥

॥ इति श्रीमद्वल्लभविशुपदपद्मपरागण्डविष्णुः श्रीत्वाजिराजसंस्कृतशालाव्यापको भद्रश्रीदेवकृष्णा-
त्मजदुर्लभशाली श्रीवल्लभप्रभुप्रार्थनामकार्पात् ॥

प्राचीन कीर्तन.

राग सारंग ॥ गहवर वन सघन कुंच माघि. खसखानो रच्यो अंतर गुलाबकी सुगंध
सुखकारी ॥ माघकी मधरात जेसी व्येष्ट दुपहरी आली मान कर बेठी तोय लज नहीं प्यारी ॥१॥
अदभुत बदनचंद तेरो कह्यो किधौ न माने मेरो उसार की रावरी गुलाबजल सुखकारी ॥ छिरकी
प्रीतम अंतर चित्र सारी ब्रजाधीस प्रसुको बदनकमल निरखि बलिहारी ॥

राग नट ॥ कहा करुं बिच जमुना बादी ॥ परली-पार स्याम मुरली बजावत उली पार
। टाडी ॥१॥ कांध कमरियां हाथ लकुरिया रहतु सदाही आदो ॥ तानसेनके प्रभु बहुनायक
कस कराडे टाडा ॥२॥

[संग्रहकर्ता वैष्णव (फणवी) बहालजी ज्ञाना केसोदवात्राना भगवत्संमरण.]

श्रीपद्मनाभदासजीके पद.

श्रीवृंदावन रम्यक रसदानी

श्रीवल्लभपद कंज माधुरी तिनकुं जिन अलि यहाँ रुचि मानी ॥१॥

भूविलास अंतःपुर गह्वर रासस्थली दगन दरसानी ॥

नंद सनु मुख अवधि यहाँ लॉ मंडल जोर पासरठ पानी ॥२॥

वागधीश युवजन रसमूली मधुराई मुरली मयु जानी ॥

अटपटी बात लपेट बहुत सखि, सुरसावत सच प्रज अरुजानी ॥३॥

अंतरंग बहिरंग प्रसंगित, मयुर मधुर बंसी गुन गानी ॥

सत्प्रधं ब्हे प्रगट केलि जे, प्रचुर करी सखि बहुत संयानी ॥४॥

नखशिखाप संकुलित विविधि निधि, कृपाप्रधि सम्यक् मुखजानी ॥

सन्मुख भये नेह वरदेश्वर, पावै पुलिन ठोरे की ठानी ॥५॥

भूखनभाव बसन पट पेहेरे, ललितं घटा गहरानी ॥

दशनखचंद्र किरन रंजित ब्हे, पद्मनाभ अखियों अरुजानी ॥६॥

या कीर्तनमें श्रीवृंदावन रम्यक केवल धर्मी भगवान तथा गोपीजनके सुखकी अवधिको (१) और या अवधिको स्थान जो श्रीमहाप्रभुजी हे तिनके स्वरूपको (२) तथा ये धर्मी स्वरूपको जाकुं आप दान करत हे, ऐसे जो अधिकारी भक्त हे तिनके स्वरूपको (३); ऐसे तीन प्रकारको यहाँ वर्णन हे । सो कहत हे ॥ वृंदावन इति । प्रथम वृंदावन जो हे सो अमुरसंबंधी भूमि हे । वामें भी धीसंधंधी-अत्यंत निकृष्ट—एसी होयके भी भगवानके चरणारविन्दके स्पर्शसे श्रीयुत होय पृथ्वीकी कीर्तिकुं चिख्यात करत हे । अर्थात् वैकुण्ठसों भी अधिक हे । ऐसे वृंदावनकुं श्रीयमुनाजी सहित भगवान पद्मगुणयुक्त करके अर्थात् अपने समान करके वापें आप रमण करत हैं । ऐसे जो धर्मी भगवानको दशरसयुक्त स्वरूप जो हे ताको आप दान करत हे ॥ यातें दानी पद कह्यो । दानी कहेवेसों जेसैं अपनी सत्ताकी जो वस्तु हे, वा वस्तुपें पर सत्ता—संपादन करावे, वाहीकुं दान कहत हे । ऐसे श्रीवल्लभ हे । वामें श्रौं जतायों जो वृंदावनकी स्मणीय जो भगवल्लीला हे सो सच श्रीमहा-प्रभुजीकी सत्ता की है । बाको आप दान करत हे यह सूचित कीनो । अब या लीलामय रसस्वरूपके दानके अधिकारी जो भक्त हे तिनको स्वरूप कहत हे—श्रीवल्लभपद इति ॥ श्री कहिये स्वामिन्यादिभाव करिके युक्त । वल्लभ कहिये युगल स्वरूपको अत्यंत प्रिय । ऐसे जो श्रीवल्लभ इनके चरणकमलकी माधुरी—मधुरमकरंद—ताकुं जिन भक्तनने अलि-भ्रमर—रूपसों रुचि मानी ताकुं ही रसदान करत हैं ॥ रुचि मानी कहियेसों जेसे भोजनमें रुचि होय तवही स्वाद आवे, ओर रुचि तो जठराग्नि प्रवळ बिना होय नहि, ओर जठराग्नि हे सो भीतरकी वस्तु हे,

तेसे अंतःकरणमें विरहकी प्रवृत्ति होय अर्थात् तीव्र व्यसन होयवेसों चरणकमलके मकरंदमें रुचि होय। तबही रसको स्वाद आवे, यातें रुचि कही। मानी पद कबो तासों जो बुद्धिपुरःसर चरण-कमलकी ही माने वेई दानके अधिकारी हे। यहां पद कबो तासों अंगुलीनिर्देश करके प्रत्यक्ष निकट ही चरणकमल दिखाये, दूर नहीं। अलिपदसों अन्य पुष्पको अभाव सूचित कीनो। काष्ण कमलपुष्प विना अन्य पुष्पमें अलिकुं उत्तम प्रकारकी मधुरताको अभाव हे। अथवा अलिपद सों रस जहांसों नाशकुं नहि प्राप्त होय हे, अथवा जिनसों रस नाशकुं नहि पावत हे सो अलि कबो जाय। यातें अनन्यताको पूर्णभाव सूचित कीनो। पदकंज कबो तासों—कं—जो सुख, जहां सो जन्म्यो हे एसो जो पद अर्थात् सुखको मूल हे, जहां दुःखको अभाव हे, ऐसे पदकंज पर जाने अलिरूपसों रुचि मानी हे। ताहीहुं श्रीवृन्दाधनरम्यक—जो पूर्णपुरुषोत्तम केवलधर्मी स्वरूप रस-रूप हे, ताको ही आप दान करत हे, अन्य स्वरूपको नहि। अथवा अन्य जो अलिरूप पूर्ण अधिकारी व्यतिरिक्त जो हे ताकुं भी नहि यह सूचित कीनो वामें सप्रेमभक्तिसत्ता प्रगट दिखाई। अब उपर कहे ऐसे भक्तुं ऐसे स्वरूपको दान करत हे। ऐसे जो दानी हे, उनके स्वरूपको वर्णन करत हे भूविलास इति ॥ श्रीमहाप्रभुजीको प्रथम तीन अंगको—१ भू, २ अंतःकरण तथा ३ नेत्रकमल। इन तीनों ठिकाने जो भाव दरस रह्यो हे ताको कहत हे। भू भगवानके विलास करवेको स्थान हे। अंतःकरण एसो गहन हे, अर्थात् अत्यंत गहरो—विस्तारवारो हे कि जहां ब्रजभक्तनसहित भगवानको निवासस्थान हे। याहीतें पुर कहिके वर्णन कीनो। ओर नेत्र रासलीला करवेको स्थान हे। रासरसको जहां समूह हे यह स्थली पद कबो तासों स्थली जो अहमिम, भूमि बनी बनाई नहि, अर्थात् स्वतःसिद्ध भूमि जो हे बाहिकुं स्थली कहत हे। यामें यह जतायो जो श्रीमहाप्रभुजीके नेत्रकमल तथा अंतःकरणरूप स्थलीमें सदा सर्वकाल भगवान ब्रजभक्तनसहित विलास कर रहे हे यह सूचित कीनो। या प्रकार श्रीमहाप्रभुजीके तीन अंगको भाव पद्मनाभदासजीकुं दृश्यमान होय रह्यो हे, यातें दरसानी एसो कबो। अब भगवानके सुखकी अवधिको कहत हे नंदमूनु इति ॥ जेसे अमरगीतमें लक्ष्मणजीने गोपीजनकी स्तुति कीनी हे, तामें प्रथम ब्रह्मकल्पतें भक्ति प्रवृत्त भई, तब सों लगाय भक्तिकी अवधि—सीमा—गोपीजन ताई दिखाई। तेसे पद्मनाभदासजीने भी भक्तजनसों भगवानकुं जो सुख प्राप्त होय हे, ताकी यहां अवधि दिखाई। अवधि कही तासों रासलीलैक-तात्पर्याय नमः यह श्रीप्रभुचरणने आज्ञा करी हे या अर्थ के भावमायित होय भगवानके सुखकी जामें अवधि हे एसो भी रासलीलाको तात्पर्य हे, अर्थात् भगवानने प्रत्येक अवतारमें प्रत्येक भक्तनके लिये जूदो जूदो रूप धरिके एक एक कार्य कीनो। अथवा एक रूपसों अनेक कार्य करके प्रांठे अंतर्धान भये। अर्थात् भक्तको दुःख मिटाय—उतनोहि सुख मान अंतर्धान भये, परन्तु कोई भक्तनसों कोई अवतारमें भगवानकुं पूर्ण सुख प्राप्त भयो नहि। ओर यहां तो आप

स्वतः सुख होय के भी अत्यंत सुख मिलेकी इन्हाके अर्थ ब्रजभक्तनके साथ अनेक रूप धारण करके बारंबार रासलीला करके यह जतावत हे जो मोकुं यहां बिना अन्यत्र कहुं भी सुख नहीं हे, यह विरुद्ध धर्म करके अदभुतरसता दिखाइ। यातें सुखकी अवधि कही । नंदसूनु सुख ऐसे कछो तासों नंदरायजीकुं पुत्रभावसों आनंदकर्ता यह एकदेशी भाव जतायो। अथवा नंद कहीये आनंद. सूनु-पुत्र अर्थात् आनंदपुत्र ऐसे कहिवेसो जहां भक्तके हृदयमें भगवदानंद प्रगट होत हे तहां ही भगवानको प्राकट्य होत हे। यह सर्वदेशी भाव जतायो। आनंदरूप होय के भी भक्तनतांइ सुखकी अवधि मानत हे। यातें सुखकी अवधि यहां तांइ हे अन्यत्र नहि हे। याहीतें यहां छे पद हे। ताहीकुं पद्मनाभदासजी कहत हे को छे। यह अंगुलि-निर्देश करके यहां-निकट ही-भगवानके सुखकी अवधिको स्थान श्रीमहाप्रभुजी हे, तानकुं छे कहीये वा आनंदरूप स्थानको ग्रहण करो, वा प्रकार जीव पर कृपा करत हे। यामें करुणारसना सूचित कीनी। या प्रकार आनंदको अवधिके अंतर्भाव दिखायके अब बहिर्भाव दिखावत हे-मंडल ओर पास रुहपानी-रुह-कमल पानी-हस्त-अर्थात् जैसे रासलीलायें हस्तकमलको मंडल होय ता प्रकार नेत्रकमलके प्रकाशको मंडल हे। ओर पास कछो तासुं भ्रुकुटिसो लगाय हृदयकमल तांइ परितः रासस्थलीको मंडल हे। अथवा श्रीमहाप्रभुजीको भ्रूसों लगाय हृदयकमल तांइको जो भाग हे सो आदि वृंदावनरूप हे। ओर वाके मध्यमें जो नेत्रकमल हे तामें आनंदकी निधि भगवान ब्रजभक्तन सहित सर्वकाल रासलीला करत हे। याहीतें भ्रूःकाल, अर्थात् सर्वकाल रास-लीला आनंद विलस रहे हे; यह सूचित कीनी। अथवा भगवानके सुखकी अवधि श्रीमहा-प्रभुजी तांइ हे। याहीतें भगवान यहां ही निवास करत हे; यह सूचित कीनी ॥ [अपूर्ण.]

वचनामृत.

[नित्यलीलास्थ गोस्वामी श्रीगोवर्धनलालजीं महाराजके यह वचनामृत चिनके श्रीचैटीजीने लिखे हे।]

तृतीय वचनामृत—एक समें श्रीनृकाजी महाराजने ऐस आज्ञा करी जो आपुने श्रीलाडिलेराजीके स्वरूपको भाव श्रीलाडिलेराजीके नामपेंसुंदी प्रगट दोखे हे। तब हमने पूर्वी जो आप आज्ञा करो, तब हमकुं खबर पडे। तब आपने आज्ञा करी जो लाडिली जो श्रीस्वामिनीजी, तिनके ईश नाम पति भये. सो कोनसे समें? एक समय श्रीनंदरायजीकी गाय खोय गइ। ताकुं हेरेवेकुं श्रीनंदरायजी आप पधारे। तिनके संग हठ करिके बालक बालमावकी नांइ श्रीठाकुरजी पधारे। वा समें गायकुं हेरेते हेरेते सांजे पड गइ। सूर्य अस्त होय गयो। ओर मेघकी श्याम घटा चहुंदिस छइ गई। ओर चौरों आडी वीजली चमकवे लग गई। ओर मेघ भी खूब वरसवे लग्यो। तब श्रीनंदरायजीने मनमें विचार्यो, जो यह बालक संग हे, सो छपेगो, सो कोनके संग

वाक्य धर भेजनों : यहां कीइ मनुष्ये दीसत नाही । ऐसे विचार करिके बहुत चिंतामें मन लग गयो । ताही समें श्रीस्वामिनीजी रावलमें विराजते हते । सो विनकुं श्रीनंदरायजीनें बुलाये । तब आप पास आये । तब नंदरायजीनें कही, बेटी राधिका, इतना काम करो के या कहैयाकुं हमारे घर बाकी मांके पास पहुँचाय आओ । तब श्रीस्वामिनीजीने कही, हां हां लोओ, बडे प्रेमसुं बहोत जतन करीकें घर पहुँचाय आयुंगी । आप निश्चित रहो । ऐसे कही के श्रीस्वामिनीजी प्रभुनकुं गोदमें पधरायकें चले । रस्तामें आपथी स्वामिनीजी मनमें विचार करवे लगे, जो घर बहुत सुंदर है; परंतु छोटी है, सो कैसे न्याहो जाय ? मैं बहुत बड़ी होय गइ । ऐसं मनमें विचार करवे लगे, तब प्रभु अंतर्गामी होय गये । सो श्रीस्वामिनीजीके हृदयकी जानी । आपथी स्वामिनीजीके बरोबर होय गये । फेर श्रीस्वामिनीजीको मनोरथ पूर्ण कीनो । फेर आप वाक्य होय गये । तब श्रीस्वामिनीजीने, नंदरायजीके घर प्रभुनको पहुंचाय दीए, और श्रीयशोदाजीसुं कही, के मैं बडे जतनसुं प्रभुनकुं पधराइ लाई हुं, सो आप जतन करकें राखो । एसे कहिकें श्रीस्वामिनीजी घर पधारे । सो स्वरूप श्रीलाडीलेशजी है । सो जो क्षत्रांगी वैष्णव महावनमें रहत हती, उनकुं चार स्वरूप प्राप्त भये हते । स्वरूपनके नाम एक श्रीलाडीलेशजी, दुसरे श्रीललितप्रियंगीरायजी, और तिसरे श्रीगोकुलचंद्रमाजी, और चौथे श्रीनवनीतप्रियाजी, सो तामें सुं श्रीलाडीलेशजी तो जीयादासके मांथे श्रीमहाप्रभुजीनें पधराय दीये । सो विनने चार पहर सेवाकर कर देह थकी और लीलामें प्राप्त भये । तब फेर श्रीमहाप्रभुजीके घर पधारे । सो स्वरूप श्रीलाडीलेशजी, सो श्रीवाल्क्यजीकुं श्रीदारिकानाथजी पधराय दीये । तब विनके संग श्रीगुसांनजीने, श्रीलाडीलेशजीहु पधराय दीये । सो स्वरूप रानपुरमें विराजत हते, श्रीगोकुलनाथजी बेरावल पधराय लाये । सो वार्ता पहले लीखाइ है ।

इति श्रीगोवर्धनलालजी महाराजको तृतीय वचनामृत संग्रह.

चतुर्थ वचनामृत—एकदिन श्रीकृष्णजी महाराजने ऐसं आज्ञा करी । जो अनुने उपर श्रीलाडीलेशजी विराजे है, जो बडो प्रतापी स्वरूप है । एकदिन हमारे श्रीदादाजी महाराजकुं आपने स्वप्नमें आज्ञा करी, जो हमकुं राजभोगमें स्वीकें संग मोनकी पुरी धर्यो करो । सो आपने न मानी और परदेशकुं पधारे । पाछलसुं मंदिरमें चोरी भई । आभरण सब चोरीमें गए, तिलक कंठी सब गये । आपकुं तार करके पधराये । फेर आपने पंचाशत स्नान करवायकें आपने छ गहेना तोड़के सब आभरण बनवाये । तब फेर श्रीलाडीलेशजीने आज्ञा करी, के तुमने मोनकी पुरी नहीं आरोगाई । तासुं हमने चोरी करवाई तब फेर श्रीदादाजी महाराजने मोनकी पुरी आरोगाई ऐसं तामसी प्रभु है । और एक समे एक भीतरीयाने मोनथारकी सामग्री चांदीके थारमें ढाली हती, सो वा भीतरीयाकी बुद्धि बीगडी, सो थार सामग्री सब चोरके घर ले गयो । और एक मलयनीकुं दे दीयो सो आपने वृंदावन मुखीयाजी तथा जीणा अधिकारीकुं स्वप्नमें जताइ ।

भक्तके दर्शन.

(लेखक:—श्रीयुक्त बेलजोनाई नयुजी मिर्छा, राजकोट.)

भक्तका अवतार भूतकालमें भी विद्यमान रहता है। यह कथन सत्य ही है। जैसे भगवद्-आर्तुर्भाव करणामूलक है, वैसे ही भक्त इस आर्यभूमिपर भक्तिका प्रभाव अचल स्तनके लिए अलौकिक देहसे विचरते रहते हैं। कथन मात्र हैं कि, भक्त लीलाप्रामिके पीछे भूमिपर नहीं रहते हैं। कथन है कि सब मर जाते हैं और भक्त नहीं मरते हैं। भक्त अचल और अमर हैं। कोई कहेगा कि ऐसा भक्त किस तरह मिल सका है? और उसका दर्शन हम पा सके हैं? इस बातपर हमको जो अनुभव हुआ है वह सब श्रीवल्लभमणि समस्त कहकर कृतार्थ बनेंगे। भग्न, स्मार्त, त्रिभूति विद्यमान नहीं होती तो जगत्की उत्पत्ति, पालन, संहार कैसे हो सकता था? इसी तरह भक्तिके निर्वाहके लिये महानुभावोंका प्राकट्य भूतलपर अवश्य होना ही चाहिये। परंतु उस भक्तका दर्शन करना सहज बात नहीं है। जिसको वे कृपाकर दर्शन देते हैं, वही दर्शन पा लेते हैं, अब कौन भक्त है इसकी पहिचान कैसे होती है? इस प्रश्नमें जानना चाहिये कि, प्राचीन भक्त चरित्र मनन कर, उसीका स्वरूप हृदयपर बना लेना चाहिए। फिर कभी मौका मिल जाता तो पहचान अवश्य पड़ती है। संवत् १९४४ की सालकी बात है। मैया पुरुषोत्तमदास पीताम्बर-दास बड़े भक्त थे। सात सात बार माय दुग्ध आहार कर श्रीनरनागवत्जी कि सगाह की थी। हम और इनका स्नेहसंबंध-अवर्ण्य था। हम दोनों हरताल श्रीगुरुचरनके जन्मदिन पर जुनागढ़ जाते थे। उपर लिखी भई सालमें हम जानेके लिये तैयार हुए। उस समय एक महापुरुष घरपर/ लाय गये। उम्र बरस भद्रह—सौटकी थी। पासमें एक कन्तानकी बालरी और छोटासा पुस्तक, एक पुरुषोत्तमसहस्रनामका था। सिवा कुछ चीज न थी। पहिनी हुई छोटीसी घोती और ऊढनेके लिये पुरानासा उपरना था। एक दिन रहे, और हमने जुनागढ़ चले समय उनसे कहा—आप हमारे संग चलोगे? तब आनेके लिये कञ्चल दी, उस समय रेल चलती नहीं थी। एक बैरगाड़ी किराया ले ली थी। हम लोग गाडीमें बैठ गये। भक्तकी बैठनेके लिये विनक्ति की। तब भक्तने जाही कर दी। वे तो गाडीकी साथ पैरसे चलने लगे। हम दो फोस गये तब भक्तने और गौदकी तरफ चल दिया। हमने कहा—कहां जाओगे? उनने कहा—अब हाल भाडेगा। हम दो फोस आगे बढे, इतनेमें न मालूम किसी औरसे आ गये। गाडीकी पास खडे देसे। इसी तरह तिन दिनमें सात-आठ दफा ऐसा कौतुक दिख पडा। हम लोग सोचने लगे कि वे कोई काश्मिक अवश्य होंगे। फिर न मालूम कौन थे?

जुनागढ़ पहुंचे। महामत्त राजनागर वैष्णव विभुवनदासजीके यहां ठहरे। दूसरे दिन प्रातःकाल श्रीनारायणभुजीकी बैठकमें जानेके लिये पाँवसे चल्नेका शुरु किया। भक्त भी साथ थे,

बैठकजी पहुँचकर स्नानकर मंदिरमें आपके सान्निध्य पहुँचे। दर्शन किया, भक्त स्नान करते थे। दंडोत्तर हमने शरीजी भरनेको सोचा। मुखियाजीने कृपाकर शरीजी भरनेकी सेवा दी।

भक्त भीतर आकर श्रीमहाप्रभुजीके स्वरूपमें विर्लीन हो गये। कुछ विलक्षण दशामें थे। वे वहां स्थित हुए नेत्रोंसे आंसु टपका रहे थे। वृक्ष की तरह वे तो वहां ही जम गये। हम लोग सब सेवा पहुँच चुके थे। आधा घंटौ हो गया, फिर भक्तने अपने नेत्र प्रमुर्की औरसे नेक भी हटाया नहीं। हम बाहर आये। चलनेके समय कहा—वे तो तुरत दंडवत् करने लग गये। दंडवत् करते बेहोश हो गये। हम हाथ पकड़ बाहर लाये। थोड़ी देरमें कुछ सचेत हुए। राजभोग आरती हुई। मुखियाजीने प्रसाद लेनेके लिये कहा। पोतना कर गये। अवराधृत पधारये वही दिन मीठी कचोरी आरोगे थे। अद्भुत स्वाद था। भक्त पासमें बैठे थे। हम लोग प्रसाद पाने लगे। भक्त चार प्रास ले खड़े हो गये। हम दोनों भैया, भैयाकी महतारी और बहुत विचारने लगे कि, रास्तेमें भी विलकुल कुब्ध नहीं पाया। और इहां भी नहीं लिया। मालूम नहीं, कौन है? हम प्रसाद लेकर कपड़े पहननेकी तैयारी करते थे, इतनेमें भक्तने चढ़ दिया। हम बिना कपड़ा पहने पीछे गये। वे तो रेवतीकुंडकी पश्चिमकी खाईमें उतर पड़े। हम भी पीछे उतरे वहां गडोरा जंगल है। पथर और वृक्षसे पूर्ण है। रास्ता उपर जानेका भी नहीं था, और भक्त पर्वतके उपर बिना रास्त चलने लगे। हमने बहुत निषेध किया; बाबा उपर मत जाओ, बड़ा भारी जंगल है, हिंसक प्राणी भी बहुत रहते हैं। ऐसे बहुत विज्ञापन किया। भक्तने एक भी नहीं सुना। पथरोंपर पैर देते देते एक घंटामें उपर पहुँचे। हम तो सामने देखते ही रह गये। हम दोनों फेर घीघाईके रोने लगे। बहुत पुकारा। कुछ नहीं सुना, और वे पहाड़की उपर चले गये। हम बैठकजीमें आये। बहू और महतारी चित्तमें रहे थे। इतनी देर कहां ठहरे होंगे? हमको आते देख दोनोंमें जी आया। “अरे तुम दोनों घंटा देढ़ घंटा तक बिना कपड़ा पहने कहां गये थे? हमने सब वृत्तांत सुनाया, तब उनको भी बड़ा दुःख हुआ; सांजके पांच बजे मंदिर आये। महाराजश्रीकुं सब बात सुनाई। आपने आज्ञा की किनुन्हारे भाग्यबलसे दर्शन मिले। चौरासी भक्त सदैव भूतकालपर आविर्भूत हैं। किसी वस्त्र दर्शन प्राप्त हो जाता है। भक्त त्रिभुवनदासजीने कृष्णदास मेघनका कहा। राजकोटमें नारायणदासजीसे बात की, इन्हें श्रीशुक-देवजीका दरसन वतलया। इससे निश्चित है कि, भक्तका प्रादुर्भाव भूतकालपर सदैव रहता है। जहांपर धर्मीका प्राकट्य हो वहांपर धर्म क्यों न हो? वह भक्तके दर्शनका लाभ हमारे श्रीगुरुचरण समीप जानेका था। गुरुकी कृपाके आगे सर्व अलौकिक फल अवश्य सामने आकर रहते हैं।

દ્વિતીય પદનો અર્થ.

શ્રીવૃંદાવનમાં સુંદર રસનું દાન કરનાર આપ શ્રીવલ્લભપ્રિયાજ છે, તેથી તેની પ્રાપ્તિને અર્થે સર્વ સખીજનની રુચિ આપશ્રીના ચરણકમલમાંજ લાગી રહે છે. હવે સુંદર શ્રીવૃંદાવન, જે પ્રિયતમના રસરાસનુંજ સ્થલ છે, જેથી તેનું સૌંદર્ય સહજસિદ્ધજ હોય. જ્યાં સકલ સામગ્રી સૌંદર્યજ હોય. આપ વલ્લભા છે. જેથી જ્યાં સર્વત્ર વલ્લભ હોય તેજ વલ્લભ કહેવાય. તેમ આપને સર્વ સખીયો ખડુ પ્રિય છે. જેથી તેમની પણ સૌભાગ્યસિદ્ધિને અર્થે આપ રમ્યક રસનું દાન પ્રાપ્ત કરાવે છે. આપ રસાધિષ્ઠાત્રી હોવાથી અને આપજ સર્વ રસનાં કારણભૂત હોવાથી રમ્યક ગદ્યા પ્રકારે રસનું દાન નિજવત્ સ્વસખીઓને પ્રાપ્ત કરાવે છે. એ રમ્યક રસની પ્રાપ્તિમાં આપના ચરણકમળની રુચિજ કારણરૂપ છે, જેથી સ્વસખીયો આપનાં હૃદયગત સૌંદર્યનું ધ્યાન નખથી તે શિખાપર્યંત ફરી રહે છે, અથવા ભૂતળના પ્રાકટ્યે પણ એ રમ્યક રસપ્રાપ્તિ એ ચરણચરણ વિના કદી થઈ શકતી નથી. અથવા એમ ભાવ પણ પ્રાપ્ત થાય છે કે જ્યાં એ કમળ હોય ત્યાં અલિ બ્રમર પણ હોય, કમળ પ્રત્યે બ્રમરનું સહજપ્રિયત્વ હોય છે. તેમને મકરંદ પ્રત્યેજ રુચિ હોય છે. તેમ તે ભક્તરૂપ છે. બ્રમર ચરણકમળના મકરંદ તરફ લોભાઈ રહ્યા છે. હવે એથી પણ આગળ વિશેષ કૃણ સૂચન કરે છે.

જ્યાં આપનો વિદ્યાસ સદાને માટે અન્તાપુર જે રાસસ્થલી તેજ હૃદયગત અને હૃદયગત રહી આવે છે. અથવા પ્રભુનું અન્તાપુર જે હૃદય તેની અને ભૂવિદ્યા-સની રસમાધુરીની પ્રાપ્તિ સ્વઅતરંગ સખીજનને રમ્યક રસની પ્રાપ્તિ આ પ્રમાણે કરાવે છે, કેમ કે ગહવર રાસસ્થિતિ ગત્યવી છે. ગહવર હોય ત્યાં કોઈની ગમ્ય નજ હોય, તેને ગમ્ય કરાવનાર શ્રીવલ્લભાજ છે, વળી અન્તાપુર જનાનો કહેવાય. ત્યાં પ્રવેશની દુર્લભતાજ હોય છે, ત્યાં તો અન્તાપુર દાસદાસી સહભાવે એ સ્થલ સોહામણું હોય (રમ્યક-હોય). વળી રાસસ્થલી કહી છે. જ્યાં રસદાનની પ્રાપ્તિ થતી હોય, એ રાસસ્થલી કહેવાય, વળી જ્યાં રસની અવધિ હોય, જ્યાં ઉદીપન વિભાવાદિ હાસ્ય, કટાક્ષમોહ હોય.

જ્યાં ભક્ત પર સદા કૃપાકટાક્ષથી સ્નેહરસની ગદી વરસી રહી હોય. જ્યાં મંડલ ભેર પાસ રુદ્રપાની, જ્યાંશ્રી પ્રિયા પ્રિયતમ મંડળ ભેડીને સંગમાં બિરાજ રહ્યાં હોય. આસપાસ નિત્યસિદ્ધા શ્રીચંદ્રાવલીજ શ્રીલલિતાજ શ્રીવિશાખાજ આદિક મંડલમધ્ય સુગત સ્વરૂપ ગલ ઘોંઘ દઈને બિરાજ રહ્યાં હોય. ત્યાંજ સકલ સુખ અવધિ કહી શકાય.

વાગધીશ—શ્રીવલ્લભ (વાન્પતિર્વિવૃષેશ્વરઃ)

જે રસ ઉપર બતાવેલ નિત્યસિદ્ધાજને પ્રાપ્ત કરાવામાં પણ આપજ અને એજ રસ ભૂતલપર નિજપદરુચિકર ભક્તને પ્રાપ્ત કરાવે છે. જ્યાં જ્યાં આપ

સ્વધન્યએ જે જે જીવની એ ચરણકમળના પરાગમાં રુચિ અદૃશ્ય બની રહેલ હોય તેને ઉપરની લીલાનો અનુભવ પ્રાકૃત વિગ્રહે પણ આપ કરાવી આપે છે. જે દેહનું સૂચન પોતાની વાકસુધામાં બતાવ્યું છે. ૧. સેવાપયોગી અલૌકિક દેહ, ૨. સાયુજ્ય ૩. અલૌકિક સામર્થ્ય, તેથી એ રસપ્રાપ્તિનું મૂળ આપજ છે. આપનું શ્રીવિગ્રહ શ્રીવેણુજ છે. તેની લક્ષ્મીને તો સદાકાળ સુધાપિપાસાનું બની રહે છે. અને તે પ્રાપ્તિ શ્રીમદ્ગોકુલનાથસંગમસુધા. એ પ્રમાણુ સુખજ થાય છે.

આ અલૌકિક લીલારસવિષય છે, તેથી સખી સુરઝાવત સર્વનિજ લક્ષ્મીને જે જે લીલા યજ્ઞ પ્રત્યે અખંડરાસમંડલમાં થાય છે, તેજ લીલા આપ નિજવાણીથી એ રસપાનનું નિજ લક્ષ્મીને દાન કરે છે, જેમાં સ્વપ્રભુસંગ્રાંધી રહસ્યલીલા તે શ્રીસુબોધિનીજ દ્વારા (ઉચ્ચાર આનંદ તે અધિક દીપ્તિ) એ પ્રમાણુ વચનામૃત-દ્વારા સાક્ષાત્ સુખપ્રાપ્તિનો અનુભવ સિદ્ધ કરાવી આપ્યો.

ત્યારે શ્રીવેણુજનો નાદ થયો, ત્યારે પણ અતરંગ ને ગહિરંગ સર્વેએ શ્રવણ કર્યો, તથાપિ શ્રીવેણુસુધાસ્વરૂપનું દાન તો જેને જે જે પ્રસંગે થયું હતું, તેનેજ તે તો સુધાદ્વારા રસાત્મક સ્વરૂપનો પ્રાહ્નલાવ હૃદયગત થયો. તેમજ બીજે ભાવ વિચારીએ તો જે જે જીવોએ વેણુજનું શ્રવણ “ તાન ધ્યાન મુનિ. મધૂર રૂપે સાંભળે ધરી ધ્યાન, નિત્ય લીલા ગાન શ્રવણે કરે તે મધુપાન ” એના અમૃતનો સ્પર્શ માત્ર નિજ અંતરંગનેજ કરાવી આપ્યો. તેવીજ રીતે અત્રે પણ અતરંગ શ્રીપદનાભદ્રાજી સરીખા વિરલાનેજ એ રસપ્રાપ્તિ થઈ. તે દ્વારા અનેક જીવ એ ચરણચરણમાં પ્રીતિવાળા હતા, તેને એ લીલારસની પ્રાપ્તિ થઈ, સમરંધ્ર પ્રગટ કરીને સમ રંધ્રથી રસનો આર્વિભાવ થયો. રસાગમમાં સમછિદ્ર રસાગમ ઉદીપનભાવ યોગ્ય છે, તેમ સકલ જીવના ઉદીપનાર્થ શ્રીજુસાંઈજી (વેણુજી) તેના સમ રંધ્ર સમ બાલક દ્વારા અનેક જીવને એ રસદાન સુદૃઢ કરાવી આપ્યું જેમાં આપની સર્વ પ્રકારની અતુરાઈથીજ વિના અધિકારી નજ ગ્રહી શકે, અથવા એ ભાવ સ્વરૂપનું હૃદયગત ધ્યાન કરવાવાળા લાઘ્યનાન લક્ષ્મી બહુ સચાના હોય (અતુર હોય તેજ અતુરના રસને જાણી શકે.)

જે શ્રીમહાપ્રભુજીની કૃપા સર્વ અલૌકિક સુખને લાવનાર છે. કેમકે આપ સર્વે સુખપ્રાપ્તિમાં કારણરૂપ છે. વિવિધ ભાવમયસ્વરૂપ હોવાથી આવાંશુભૂષિતા મૂર્તિ છે. અનેક ભાવથી શોભતું અને સર્વ અંગ અંગ પ્રતિ લીલારસપરિપૂર્ણતા જેમાં છાઈ રહી છે. વળી લક્ષ્મીના કલ્પવૃક્ષ હોવાથી લક્ષ્મીમનોરથપૂરક છે, જે કોઈ જીવ સમસ્ત પદાર્થની સાથે સ્વનિવેદિતઆત્મા કરી ચરણકમલ સન્સુખ રહે તોજ આપ તો કૃપારૂપી ગાંઠ તેની પાસે જોલી દે છે. જે ગાંઠમાં સર્વ પ્રકારનાં સુખ સમાયેલાં છે. આવા નિજ જનને શું વર આપે છે? યમુનાપુલ્લિનકોર જહાં રાસસ્થલ છે, તે લીલાપ્રાપ્તિ કરાવી આપે છે.

ભાવનાજ સુખલુનો અંગીકાર કરીને મુંદર રસઘટા શ્રીમુખકમળ પર સદા બરાજમાન છે, એ ઘટા જેના પર દશભયચંદ્રની પ્રસન્નતા પ્રાપ્ત થાય, ત્યાં એ રસઘટા વરસે છે, એહી આશાનું સ્મરણ શ્રીપદનાભદ્રાચલ કરી રહ્યા છે. એથીજ આપના શ્રીમુખકમળ પર નિષ્ઠિ લાગી રહી છે.

મારવામી શ્રી૧૦૮ શ્રીદારકેશલાલજી પેદર્શદરવાળા શ્રીની કૃપા નિરંતર સ્મરણ કરવાને થએલી હોયથી તેજ પ્રભુએ મારી જીવિમાં પ્રવેશીને લખાવ્યું તેજ નિવેદન કર્યું છે. મ'પણું' પદ કમ સદ માળા શુદ્ધાદેવ પારણ કરે એવી અભિલાષાને પ્રભુ ભગવદીપકૃપાથી પૂર્ણ કરો. દા. ઘ. વે. ન. મીચો.

નિત્યસીલારંધ મારવામી. શ્રી ૬ શ્રીપદપીઠાધીશ્વર શ્રીગિરિધરલાલજી મહારાજનાં

વચનામૃત.

(લેખક:-ભગવદીય વેલજીભાઈ કેશવજીભાઈ.)

સંવત ૧૯૭૨ ની સાલમાં શ્રીજગન્નરિકમામાં શ્રીગોપાલલાલજી (મથુરાંજી વાલા) ની આજે આપ બિરાજતા હતા. શ્રીગિરિરાજજીની તલેટીમાં મુરલિકુંડ ઉપર પાલમાં આપ બિરાજતા હતા. તે વખતે એક વૈષ્ણવે વિનતિ કરી જે મહારાજ, પ્રહ્મસંબંધ ઘણાજ વૈષ્ણવને એકજ પંક્તિમાં એકજ વખતે આપ કરાવો છો, છતાં તેમાંના કોઈ વૈષ્ણવને અધિકભાવ હોય, કોઈને ઓછો ભાવ અને કોઈને સ્થિર હોય છે, તો એકજ હારે એકજ સમયમાં નિવેદન થયા છતાં ભાવમાં ન્યૂનાધિકતા કેમ દેખાય છે ? તે કૃપા કરીને આપશ્રીનાં વચનામૃતદ્વારા અમને દાન કરો.

આપશ્રી આજ્ઞા કરે છે:-પુષ્ટિમાર્ગમાં જેટલી આર્તિ તેટલું દાન. દરિયામાં છીપમાં મોતી પાડે છે; તે સ્વાતી નક્ષત્રનું જલ છીપમાં પડે છે, તેનાં મોતી ચાય છે. પણ તે છીપ સ્વાતિનું જલ લેવાને અતિઆતુર થઈને અધર ઉચ્છેદી મેળવે છે. તેમાં ઘણીજ હિચી કીંમતનાં મોતી ચાય છે અને દરિયા ઉપરજ મોઢું ખુલ્લું રાખી જે છીપોત્પત્તી રહે છે; તેમાં પણ મોતી તો જરૂર ચાય છે, પણ આતુરતાથી જોઈ ચડી ત્યારે કદાં કીંમતવાળી કચીજેમાં મોતી જેવાં જોઈ કિમતનાં મોતી તેમાં ચતાં નથી. સાધારણ કીંમતનાં મોતી ચાય છે. સ્વાતીનું ખુદ લેનાર (કીંમતનાર) છીપોમાં તમામમાં મોતી તો ચોક્કસ ચાય છે. તેમજ આંહી જે પ્રભુસંબંધી આર્તિ કરે છે તેને વિશેષ ભાવનું દાન પ્રભુ કરે છે. પુષ્ટિમાર્ગમાં જેટલી આર્તિ એટલું દાન.

વૈષ્ણવ વિનતિ કરે છે:-હે કૃપાનાથ, આર્તિ જેટલું દાન તે તો મર્યાદામાં પણ છે. તેમ લોકિકમાં પણ છે, જેટલી મજુરી કરે તેટલું દ્રવ્ય લોકિકમાં પણ મળે છે. તો પુષ્ટિમાર્ગ જેટલે કેવલ અનુગ્રહ માર્ગ છે. તે શી રીતે ? તે કૃપા કરીને સમજાવો.

આપશ્રી વચનામૃત કરે છે. તમારે અનુગ્રહમાર્ગ (પુષ્ટિ માર્ગ) જોવાજ હોય તો હાથ (નિદ્રા) નો ત્યાગ કરવો તે શી રીતે ? જે ઘણા દિવસની ગાઢ નિદ્રા

એટલે બહુજ નિદ્રા આવેલી છે. જે હું ક્યાંનો છું છું? ક્યાંથી આવ્યો છું? તેનું બાન બુદ્ધાઈ ગયું એટલે જતું રહ્યું છે. તે તો તમે વધુવો જ્યારે સત્સંગ કરો છો ત્યારે સ્મરણ કરો છો એટલે તેટલોજ વખત તો તે નિદ્રા ઊડી જાય છે ખરી, પણ સાથે આલસનો પણ ત્યાગ કરવો જોઈએ. શ્રીઅનિરુદ્ધલાલજીએ વૈદિક માર્ગનિરીક્ષા નામના પુસ્તકમાં લખ્યું છે જે રાજાને જોલાખવાથી રાજા પ્રસન્ન થતો નથી, જે રાજા અમુક રાજાનો પુત્ર છે, અમુક તિથિએ રાજાનો જન્મદિવસ છે, અમુક અવયવ રાજાના અમુક રીતના છે, અમુક લક્ષણવાળા છે; અમુક કામ ઉપર, અમુક રમત ઉપર, અમુક ખોરાક ઉપર રાજાને વિશેષ શોખ છે, એવી એવી અનેક રીતભાત પ્રકૃતિ રાજાની જાણવાથી રાજા પ્રસન્ન થતો નથી, પણ રાજાને પ્રસન્ન કરવાને તો પ્રત્યક્ષ રાજાના ગુણ ગાય, રાજાના દરેક કામને ટેકો આપે, અને રાજાના શોખની વસ્તુ રાજાને નિવેદન કરે, તેથીજ રાજા પ્રસન્ન થાય છે. તેવીજ રીતે તમે વૈષ્ણવો ૫-૧૦ મલીને ઠંઠ નિકુંજની વાતો કરો, તેથી તમોને નિદ્રા તેટલીજ વાર ગઈ કહેવાય ખરી, પણ તે નિદ્રા ઊઠવાનીજ સાથે આળસનો પણ ત્યાગ કરીને લગવત્સેવાનો ઉદ્યમ કરવા લાગી જાઓ એટલે આચરણમાં હો, એટલે તરતજ પુષ્ટિમાર્ગ સાક્ષાત જોનો પ્રકાશ થઈ રહ્યો છે, તે તમોને દેખાયો. શ્રીગુસાંઈજીએ પણ આપ સેવા કરી શીખવે શ્રીહરિ એટલે આપે સેવા કરીને શીખવાલી છે. બીજા માર્ગમાં માત્ર કહીનેજ બતાવે છે, પણ પુષ્ટિમાર્ગ સાક્ષાત છે એટલે કરીને બતાવે છે, માટે જેને પુષ્ટિમાર્ગ જોવો હોય તેણે ઉપર કહેવા પ્રમાણે ઉદ્યમ અને આલસનો બીલકુલ ત્યાગ કરવો. લગવદીયે ગાયું છે. “જે આ લીલા આગે નવ સુણી હવે પાછળ નહોસે, અખંડ લીલા કલિકાલમાં બડલાગીઆ જોશે.” દયારામભાઈએ પણ ગાયું છે. પ્રસન્ન કરવા હોય ને પ્રભુને તો અભિમાન અલગું રાખ. માટે અભિમાનનો ત્યાગ કરશો અને ઉદ્યમ આલસનો ત્યાગ કરી જાગૃત થઈ આચરણવાળા થશો તો પુષ્ટિમાર્ગ પ્રકટ જણાયો. આ પુષ્ટિમાર્ગ જે કંઈપણ છે તેનાં કેવળ આનંદરૂપ જે ફલ છે તે આજરો.

નિર્ણયાર્ણવ.

મધ્યમ વરદ્ધ

(અનુવાદક-શ્રીકૃત કેશવરામ કોરીશમ શાસ્ત્રી, માંગરોલ-કાશિવાડ.)

૧૦.

નવરત્ન ગ્રંથ વિશે અહીં કાંઈક લખવામાં આવે છે:—

પ્રીયતેજમ્લયા મત્તયા હરિરન્યદ્વિદ્વન્ધવમ્ ॥ (મા. ૧૧-

“હરિ લગવાન નિર્મલ ભક્તિથી પ્રસન્ન થાય છે. ખાકી બીજાં સાધનો વિદ્યમાણામાત્ર છે.” “મત્તયાહમેકયા પ્રાણ: (મા. ૧૧-૧૪-૨૧) એક માત્ર ભક્તિથી હું (લગવાન) અલગ કરી શકાઉં તેવો છું.” “યસે કુર્વન્તિ માં મત્તયા સત્ત્વિય: સત્ત્વાર્તિ યયા

(મા. ૧-૪-૬૬) સંતી ઓયો જે પ્રમાણે સત્યપતિને વચ દે છે, તે પ્રમાણે મારા ભક્તો ભક્તિથી મને વચ દે છે. ” “ મતૃયૈવ તુષ્ટિમભ્યેતિ (મા.) પ્રભુ ભક્તિથી જ સન્તોષ પામે છે. ” એ વચનો ૨૫૯ કહે છે કે પ્રભુને પ્રેમવશ્યાભક્તિથી પ્રાપ્ત કરી શકાય છે. (શ્રીગુણોપદેશ) નવરતન પ્રકાશમાં:—

દારાન્ સુતાન્ રુદાન્ માણાન્ ચત્પરસ્મૈ નિવેદનમ્ (મા. ૧૧-૩-૨૮)

एवं धर्ममनुष्याणामुद्धवात्मनिवेदिनाम् ।

માયે સંજાયતે ભક્તિઃ કૌઙ્વયોઽર્ચોઽસ્યાવશિષ્યતે (મા. ૧૧-૧૯-૨૪)

“ઓ, પુત્ર, ધર, પ્રાણ એ બધું પરમ પરમાત્મને નિવેદન કરી દેવું. ” “ દે ઉદ્ધવ ! આ ધર્મોથી આત્મનિવેદી ભક્તોને મારામાં ભક્તિ ઉત્પન્ન થાય છે. આમ જેને મારામાં ભક્તિ ઉત્પન્ન થઈ છે, તેને કયો અર્થ બાકી રહે છે ? ” (આ જે શ્લોક ઉદ્ધૃત કર્યા છે. તેને ઉદ્દેશને લાલુ-લંદીશ કહે છે કે-) આ વાચ્યથી ૨૫૯ નીકળે છે કે-આત્મનિવેદન કરવાથી પ્રેમવશ્યાભક્તિ પ્રાપ્ત થાય છે; અને નિવેદન ત્યારે થાય છે કે જ્યારે દેવ વચેરેમાં ‘ આ મારા છે ’ એવા પ્રકારના મિથ્યાગાનની નિવૃત્તિ થતાં ‘ આ બધુંય પ્રભુનાં જ છે, ’ તેવી સુદ્ધિ થાય.

“ ક્રોડાર્યમાત્મન દ્વં ત્રિજગત્કૃતં તે સ્યામ્યન્તુ તન્ન કુધિયોઽપર ર્શા ! કુર્યુઃ (મા. ૮-૨૨-૨૦) હે પ્રભુ ! આપે કેવળ લીલા કરવા ખાતર આપમાંથી આ પ્રભુવન પ્રગટ કર્યું છે. પરન્તુ ખીલ કુર્ણુદિ પુરુષો આ જગદાદિ ઉપર સ્વામીપણું કરે છે. ” આ વચેરે અનેક વાણીથી સિદ્ધ છે કે બધાનું પદાર્થે પ્રભુનાજ છે. આમ ‘ બધા પદાર્થો પ્રભુનાજ છે, ’ એવી સુદ્ધિ થવાથી દેવ વચેરે બધુંય પ્રભુસેવામાંજ ઉપયોગમાં આવ્યું તેનું નામ તે નિવેદન. આ નિવેદન પ્રાપ્ત થતાં પણ જો ‘ આ છટ અને અનિષ્ટ; આ મેળવું અને આ જતું કઈ ’ એવા વિચારો વચેરેના સ્વરૂપમાં રહેલી ચિન્તા જો કરવામાં આવે તો કરેલું આત્મનિવેદન બ્યર્થ જાય; અને તેમ થતાં કયારે ન સરે. આ ખાતરજ પરમરૂપાશુ શ્રીમદ્વત્સાધીશ્વર આચાર્ય-અરુણેયે ચિન્તાના રૂપમાં રહેલા આ પ્રતિબંધને નિવારવા માટે ચિન્તા યાગપિ ન કાર્યો એમ નવ શ્લોકથી ઉપદેશ આપેલ.

અને એક ચક્રા ઉત્પન્ન થાય કે-આત્મનિવેદન એ શ્રવણાદિ આઠ ભક્તિ પદ્ધતિ છે; શ્રવણાદિ પ્રત્યેક ભક્તિ દુઃખેથી પ્રાપ્ત કરી શકાય તેવી છે, તેજ રીતે છેલ્લી આત્મનિવેદન ભક્તિ પણ દુઃખેથી પ્રાપ્ત કરી શકાય તેવી છે. આમ નિવેદનજ અત્યન્ત દુરાપ હોવાથી તેને લીધે ઉત્પન્ન થતી પ્રેમવશ્યાભક્તિજ હાય તાળી ઈર્ષ્ય હરથી જાય છે. એટલે તેનાથી થતી પ્રભુ-પ્રાપ્તિજ કરી રીતે થાય ?

તેના ખુલાસામાં કહેવાનું કે-શ્રીમદાચાર્યવર્ણેયે નવરતનના છેલા શ્લોકમાં:—

તસ્માત્સર્વાત્મના નિત્યં શ્રીકૃષ્ણઃ શરણં મમ ।

વદન્નિરેવ સતતં સ્વેયમ્—

“ તેથી હરમેશાં સર્વાંતમાયે કરી શ્રીકૃષ્ણઃ શરણં મમ એમ અટકાશરમંત સતત બોધતાજ રહેવું. ” આનાથીજ દરેક અડચણ નાશ પામે છે અને સકલ સિદ્ધિ આવી મળે છે ” એમ ૨૫૯ ઉપદેશ છે.

વાર, આનાથીજ દરેક અડચણ કે અસિદ્ધિ નાશ પામે છે અને સકલ સિદ્ધિ આવી મળે છે તે કેવી રીતે જતી રહે ?

આ શુદ્ધિના પ્રવાસો. શ્રીગુણ્ડીય તે શ્લોક ઉપરના પ્રકરણમાં ઉત્થાનિકામાં આપે છે. આ શ્લોકને સ્પષ્ટ કરતાં કહે છે કે—“સાધનફલે^૧ વ્યકીકૃત્ય સર્વસમાધાનમાહુઃ—” શ્રીકૃષ્ણ-શરણં મમ ” એ અષ્ટાક્ષરમન્ત્રમાં સાધન અને ફલને એક કરવાથી આ શુદ્ધિઓનું સમાધાન થઈ જાય છે.”

(શ્રીસાવજીદંત્ર આ મન્ત્રનો અર્થ આપતાં કહે છે કે—) ફલરૂપ શ્રીકૃષ્ણપ્રભુ નિઃસાધન-જનોના ઉદ્ધાર માટે પ્રગટ થયેલા છે. તેઓ બધાનો ઉદ્ધાર કરવાને સદા તત્પર છે. તે પ્રભુ નિઃસાધન એવા જે હ' તેનો આસરો છે. અર્થાત્ પ્રભુજી રાક્ષ અને અરાક્ષ વસ્તુઓનાં સંસ્પાદક છે.

જે કે પોતાની અયોગ્યતાનો વિચાર કરતાં તેમજ શ્રવણ વગેરે સાધનો અત્યંત દુર્લભ છે, તેવી સ્થિતિ હોતાં ‘પ્રભુ પ્રાપ્ત થશે’ તેવા પ્રકારની નિશ્ચિન્તતાનો સંભવજ નથી, આમ હતાં પ્રભુ-અનુમદનો વિચાર કરતાં પ્રભુને શરણે જવાથી બધુંજ સુલભ થઈ પડે છે. પ્રભુ અભુરૂપને એ સમ્યક્માં સ્પષ્ટ કહે છે કે—

તેપામહં સમુદ્ધર્તા મૃત્યુસંસારસાગરાત્ ।

ભવામિ નાચિરાત્પાર્થ ! મય્યાવેશિતચેતસામ્ ॥ (ભં. ગી. ૧૨-૭)

મારામાં જેણે ચિત્ત પરાયું છે, તેવા મારા ભક્તોને આ મૃત્યુસંસાર-સાગરમાંથી હે પાર્થ ! તરતજ ઉદ્ધાર કરનારો થાઉં છું.”

જે પ્રભુની ઇચ્છા સાધનો કરાવતાં કરાવતાં ઉદ્ધાર કરવાની હોય તો જ્યને મુશ્કેલ તેવું પણ શ્રવણાદિ નવધા ભક્તિરૂપ સાધનો પ્રાપ્ત કરાવી ઉદ્ધાર કરે છે. જે પ્રભુની સાધનો કરાવવાની ઇચ્છા નહોતી તો સાધનો વિના પણ કૃતાર્થ કરી દિધે છે. આપીજ શરણુમન એ પુરુષાર્થમાં સાધનરૂપ છે. આથીજ શ્રીમદ્વાયાર્થશરણુયે કિં વા પ્રોક્તેન વહુના ? શરણં ભાવયેદ્દરિઃ [વિ. ધ. આ. ૧૬)

મક્તદ્રોહે મત્તપમાવે મક્તૈવાતિક્રમે કૃતે ।

અશવયે વા સુશવયે વા સર્વયોં શરણં દરિઃ ॥ (વિ. ધ. આ. ૧૧)

ભક્તો દ્રોહ કરે, પોતામાં ભક્તિનો અભાવ હોય, ભક્તો અપમાન કરે, કોઈ કોઈ અસાધ્ય હોય કોઈ સારી રીતે રાક્ષ હોય આ બધામાં જ્યાં રીતે દરિદ્રં તરણુ રાખવું “એમ આગા કરી છે. એમાંથી તાત્પર્ય એ નીકળે છે કે—ભક્તિ નહોતી તોય પણ ભક્તિની સિદ્ધિ માટે પ્રભુના શરણુની ભાવના કરવી. અહીં નવરૂપમાં પણ તેજ માટે “નવપ્રકારની શ્રવણાદિ ભક્તિ દુર્લભ છે,” એમ જાણી તે નવે પ્રકારની ભક્તિસિદ્ધિ માટેજ શ્રીમદ્વાયાર્થશરણુયે અષ્ટાક્ષરમન્ત્રની સતત આશુતિ કરવાનું ઉપદેશ છે.

અહીં પ્રમાણુગણથી જે વિચાર કરિયે તો આનું સમાધાન નજ મળી શકે. આનું સમાધાન તો ત્યારેજ મળે છે કે જ્યારે પ્રમેયજનો વિચાર કરવામાં આવે છે. (નિઃસાધનને પણ સસાધન બનાવી ઉદ્ધાર કરે તેનું નામ પ્રમેયજન.) શ્રીગુણ્ડીય જે કૃત્તિકા કિંવા લીલી આપે છે, તેનો એજ આશય છે કે પ્રભુ આત્મનિવેદનાત્મક ફલનેજ અહીં સાધનરૂપ બનાવી દિધે છે. આમ આ શ્રીકૃષ્ણઃ શરણં મમ એ મન્ત્રના અર્થનું વ્યાખ્યાન જાણવું.

૧. આ લીલી ઉપર વ્યાખ્યાન કરતાં ક. વિ. શ્રીગુણ્ડીયજી મહારાજ આજ્ઞા કરે છે કે—“શ્રવણ વગેરે આઠ ભક્તિ એ સાધન અને અનિત્તમ આત્મનિવેદન ફળ છે. તે બન્નેને એક કરી અસાધ્ય પણ સાધ્ય બની લાય છે, તેવા પ્રકારનું સમાધાન શ્રીમદ્વાયાર્થશરણુ આપે છે.”

વિશેષમાં આ મન્ત ખીજા અનેક સામાન્ય મન્ત જેવો નથી. પરંતુ સમર્પણ તત્ત્વ મન્ત જેમ પુષ્ટિમાર્ગીય છે. આ મારેજ શ્રીકૃષ્ણાર્ચિયે આગા કરી છે કે-

“યદુજં તાતચરણૈઃ શ્રીકૃષ્ણઃ શરણં મમ । તત્ત્વ ઇવાસ્તિ નૈશ્ચિન્યમૈહિકે પારલૌકિકે ”

તાતચરણ શ્રીમદાપ્રભુજીએ શ્રીકૃષ્ણઃ શરણં મમ એમ જે કહ્યું છે, તેનાથી જ આ લોક તેમજ પરલોકવિષયક સર્વ આખતોમાં નિયંત્રતા છે.”

પુષ્ટિમાર્ગીયતા એટલે કે પ્રભુના સ્વરૂપથી ભિન્ન એવું જે કોઈ ફક્ત તેને જોઈને અભાવ છે તે (આ વાત ખ્યાનમાં આવવાથી સ્પષ્ટ થશે કે) પુષ્ટિમાર્ગીયિયે આ મન્તનું સતત આવાર્તન કર્યું. મનથી ઉપર કલ્પા મુગ્ધ અર્થાત્મ-જ્ઞાનપૂર્વક શરણુની ભાવના કરવી. આ મારેજ શ્રીઆચાર્યશરણા વિવેકધર્માશ્રવણં સ્પષ્ટ આગા કરે છે કે एवं चित्ते सदा भाव्यं वाचा च परिकर्तयेत् આ પ્રભાણે ચિત્તમાં સદા શરણુની ભાવના કરવી અને વાણીથી શરણુ મન્ત જોડ્યા કરવો. “આમ શરણુમતિમાં પ્રભુ અશકયને પણ સાધી દેશે એવો આમાથી નિષ્કર્ષ નીકળે છે. આથીજ શ્રીકૃષ્ણાર્ચિયે પણ તે જોડીની વિરૂધ્ધિમાં સર્વોત્તમા શરણાગતી પ્રમુરેચ સમ્પાદયિવ્યતીતિ દ્વયમ્ સર્વભાષે કરી શરણે જતાં પ્રભુજી સર્વ પ્રાપ્ત કરાવશે એવો આશય છે” એમ ખુલાસો કર્યો છે. આમ યતાં ચિન્તાનું નામનિશાન નહોતું રહે અને તેથી પ્રતિબન્ધજન રહેવાને લીધે નિવેદનની સિદ્ધિમાં મુખ્ય ભક્તિની પ્રાપ્તિ અને તેને લીધે પ્રભુપ્રાપ્તિ થશે. આથી ચિન્તા ન કરવાનો જે ઉપદેશ શ્રીઆચાર્યશરણાએ આપ્યો છે તે સાર્થક છે, એમ વિદ્વાનો જાણે.

૧૧.

નિબન્ધશાસ્ત્રાર્થપ્રકરણમાં નીચેનું વાક્ય છે.

आकाशवद् व्यापकं हि ब्रह्म मायांशवेष्टितम् ।

આકાશની માફક વ્યાપક એવું બ્રહ્મ માયાએ કરી બદલના અંશથી વૈંટાયેલું છે :

આ કારંકામાં. માયાંશવેષ્ટિતમ્ એ ૫૮ છે. આ ૫૮માં અંશવેષ્ટિતમ્ એ અંશેન વેષ્ટિતમ્ અંશે વૈંટાયેલું તે એમ તૃતીયાત્પુરુષ છે. અંશ બદલના છે, માયાના નથી. એટલે બ્રહ્મ એ પોતાના અંશથી વૈંટાયેલું છે. માયયા માયાએ કરી અંશવેષ્ટિતમ્ અંશોયે વૈંટાયેલું તેવું બ્રહ્મ છે. અહીં તૃતીયાવિભક્તિમાં રહેલો માયા શબ્દ અંશવેષ્ટિતમ્ સાથે સમાય પામ્યો છે. માયા શબ્દને કેવા અંશ સાથે સંબન્ધ નથી. આ રીતે બ્રહ્મ અંશથી વૈંટાયેલું છે. માયાનું હેતુ પાછું છે અને તે ચોખ્ખું છે. માયા એ પ્રભુની સર્વભવનસમર્થરૂપ શક્તિ છે. તે માયાથી પ્રભુ પોતાની વ્યાપકતાને આવરી દિધે છે. સારે પ્રભુનો વ્યાપકતારૂપ ધર્મ નિરોધિત થવાથી અમુક આકારસ્વપરિવેશવાળો બ્રહ્મધર્મ આવિર્ભાવ પામે છે. તેથી કરી પરિવેશ રૂપ ધર્મનો આવિર્ભાવ યતાં અંશથી વૈંટાયેલું બ્રહ્મ થાય છે. આથી કરીનેજ વ્યાપકતાને આવરી પરિવેશ દિંવા અમુક સંકુચિત આકારરૂપ ધર્મ પ્રકટ કરી ‘બ્રહ્મ અંશવેષ્ટિત છે તેવું સ્પષ્ટ કરાવતી’ માયા ‘બ્રહ્મ અંશથી વેષ્ટિત છે તેના હેતુરૂપે થાય છે. આ મારેજ શ્રીઆચાર્યશરણાએ ઉપરની કારિકાના પ્રકાશમાં “માયયા તાદ્દશમાયઃ માયાયે તેવા પ્રકારનું થાય છે;” એમ માયા એ તૃતીયાવિભક્તિમાં છે, તેવું વિવરણ આપી માયાનું હેતુપણું આપ્યું છે.

૧. શાસ્ત્રદ્રષ્ટા એમ કહેવા મળે છે કે માયાયાઃ અંશાઃ માયાંશાઃ તૈઃ વેષ્ટિતમ્ એમ વિચલ કરવાનો નથી. એટલે કે અંશ એ માયાના નથી. માયા તે હેતુ માય છે.

બ્રહ્મ અંશથી વેદિત છે, તેમાં માયાનું જે હેતુપણું છે તે ઉપર બતાવેલી રીતે બધાનું પ્રકાશમાં માયયા તાદશ્યભાવે, તેન વેદિતમ્ । માયાથી તેવા પ્રકારનું થાય છે. તેવા પ્રકારનું એટલે કે અમુક પરિચ્છિન્ન સ્થિતિવાળું. બ્રહ્મ તે હેતુરૂપે રહેલા પરિચ્છિન્ન સ્થિતિવાળા બ્રહ્મધર્મને લીધે પોતાના અંશોએ વીંટાયેલું છે. એવા એમાંથી આરાધ નીકળે છે.

આ પરિચ્છેદાત્મક સ્થિતિ તે બ્રહ્મધર્મ છે, અને તે ત્યારે વ્યાપકતાનું તિરોધાન થાય છે, ત્યારેજ પ્રકટ થાય છે. ત્યારે પોતાના અંશોએ વીંટાયેલું સ્પુરણમાન થાય છે, તેમાં પરિચ્છેદાત્મક સ્થિતિ ‘બ્રહ્મ પોતાના અંશોથી વીંટાયેલું છે, તેમાં હેતુરૂપ છે. ત્યારે વ્યાપકતા સ્પુરણમાન હોય છે, ત્યારે બ્રહ્મને અંશોથી વીંટાવાપણું નથી. આમ ભગવાન માયાએ કરી વ્યાપકતાને આવરી પરિચ્છેદકતાને આવિર્ભાવ કરે છે; અને ત્યારેજ બ્રહ્મ ઈચ્છાથી પ્રભુમાંથી નીકળવાના પોતાના આચરૂપ છવસંતાને મેળવનારા અંશોથી વીંટાયેલું અને છે.

આ વસ્તુ સિદ્ધજ છે કે આ વિશ્વનું સર્જન કરવાની ઇચ્છાવાળા પ્રભુ પોતાના સામર્થ્યરૂપે રહેલા માયાએ કરી પોતાની વ્યાપકતાને આવરી પોતાની પરિચ્છેદકતાને પ્રકટાવી પોતેજ પોતાના અંશાત્મક છવોથી વીંટાયેલું થાય છે.

આમ દ્રાષ્ટ પશુ રચે પરમતત્ત્વેશનો અર્થ સુદાં નથી. એમ બધુંય નિર્દોષ છે.

શુદ્ધાદૈત-ભક્તિમાર્ગ.

(ભેખક: શ્રીયુત વિનાદરાય જયસુખરામ મજમુદાર B. A. LL. B; અમરેલી.)

“ ભજ, મન યરન ચિંતાકરન;

પતિતપાવન અધનસાવન, મહા અધર્મ ઉદ્ધરન. ભજ. ॥૧॥

સદ્ગુણ નામ ઉચ્ચાર જાહે, પરમ મંગળ કરન;

સુખલ હોત સંસાર સાગર, માંતો બચ્છકો યરન. ભજ. ॥૨॥

અતિ ઉદાર અપાર કરુનાનિધિ ભક્ત ઉર આભરન;

દામ સુનિ સુનિ ચારણ આપો, બિરદ અચરન ચરન. ભજ. ॥૩॥

“ શુદ્ધાદૈત ” શબ્દના સમાસ માટે આપણા શ્રીઆચાર્યવર્યે સમાસચ્છેદ કરેલા છે તે પહેલાં એ શબ્દનો ઉપયોગ બધા બધા પ્રાચીન કાળમાં પણ હતો એમ “ રંશાદ્યપ્રોત્તરદાતો-પનિપદ: ” નામના સંગ્રહમાં ચોપનમા ત્રિપાદિભૂતિમહાનારાયણોપનિષત્ ના આ.૧મા અષ્ટાધ્યયી સ્તંભરૂપે નાંખાઈ નજારે છે:—

તત: પિપ્તામહ: પરિષ્ઠંજિત મગવતં મહાવિષ્ણું મગવન્ ! શુદ્ધાદૈતપરમાન્દલક્ષ્મ-પરમહણસ્ત્વ, કથં વિરુદ્ધવૈકુંઠપ્રાસાદપ્રાકારવિમાનાધનન્તવસ્તુભેદ: ?

“ સત્યમેવંકોત ” મિતિ મગવાન્ મહાવિષ્ણુ: પરિહરતિ યથા શુદ્ધસુવર્ણસ્ય કટકમુકુરં-ગદાદિભેદ: યથા સમુદ્રસાલિલસ્ય સ્પૂલસ્પૃશ્મતરણફેનવુદ્વુદ્વકરકલ્પલપાપાણાધનન્તવસ્તુભેદ: ॥ યથા ભૂમે: પર્વતશૃંગાતુણ્ગુન્મલતાધનન્તવસ્તુભેદ: ॥ તથૈવાદૈતપરમાન્દલક્ષણપરમહણો નમ સર્વાદૈતમુપપન્નં મવ્યેવ મત્સ્વરૂપમેવ સર્વં, મદ્યતિરિક્તમશુમાત્રં ન વિષતે. ”

“ આ વાક્યમાં ‘ ઉત્પન્ન’ ભવતિ’ એ સમ્બોધી શ્રીવેદવ્યાસજીના “ સર્વધર્મોપપત્તે ” સૂત્રની પાઠગીરી આવે છે. અને ઉપર દર્શિત શ્રુતિના પાઠ્યનો અર્થ સહેલો છે તેથી અક્ષર”

વસ્તુઓ નવી કરતાં બાવાઈ માત્ર આપું છું. જ્યાંજ પ્રજા છે તે છે તે બાવળ, અને શુદ્ધ-
દેવ પરમાનન્દનશય પરબ્રહ્મા પેકુંદા વિમાનો વગેરે અનંત વસ્તુ એટલે કેમ છે? તેને વસ્તુના
અદાવિષય આપે છે કે એકજ સુવર્ણ (ખાતું) શુદ્ધ છે તેના કયાં સુકટ બાળુપદે વિગેરે વસ્તુએ
છે. તેમ (આની સાથે છાંદોમ્ય હૃદયના છાંદા પ્રપાદકમાં એક મૃતિપદે બદલાયી બધું
મુદમય જાણ્યામાં આવે તેજ રીતે એક લોક મણિ જાણ્યાથી સર્વ લોકમય વસ્તુઓ અને એક
નખનિદૃતનથી સર્વ કાષ્ઠજામ જાણ્યામાં આવે છે એ પણ વાદ સમજું.) જ્યાં આના છે
છે કે એકજ પૃથ્વી છે છતાં તેમા પર્વત ઝાડ ઘસ પેલા વિગેરે અનંત વસ્તુ નખપદે એટલે કે
તેમ બધું માઈ સ્વરૂપ છે મારાથી જુદું અથવા મારા વિના થીનું કંઈ નથી. આજ ખુલાસે
શીમદ્ભાગવતમાં વેદવ્યુતિ કહે છે કે “વૃહદ્વપ્તધર્મતદ્” જેના સાર પણ એજ છે
જેમ યજા કુંડા ક્રેડીયાં વિગેરે શ્વેતકાન્ત છે તેમ આ સર્વ દસ્યમાન જગત્ બૃહદ્વજ છે તેથી
અવિશે પોતાનાં મન કર્મ અને યગનો આપ પ્રભુના પરોવે છે (મુકે છે) વિગેરે તેમજ આગળ
આશ્વતા “નાદિ ચિદ્રત્તિ ર્વજન્નિ પતનકસ્ય” કયાં સુવર્ણના ઘાતે (નિપદ માસ)
ખરીદનારા ખુડીયાં વેપારી જેમ પામે કરેસરી કે મને ને લંબાર સીજ સાગરજા મેનાની બધે
ન દોષ, અંદર લાખ, રહેલ વગેરે દોષ છતાં તેને: કમ રિકમ કરીને છોડી દેના નથી પણ સુવર્ણ-
તક કિંમત આપીને કમવિક્રમવવાર કરે છે તેમ આપણે શ્રીકૃષ્ણજીવ અને શ્રીકૃષ્ણજીવ
સર્વ સમજીને વર્તવાનું છે.

દવે “ભક્તિ” શબ્દની તો વ્યાખ્યાજ એકાદમાં (ગોપાલપૂર્વતાવિની નામના)
ઉપનિષદમાં આપી છે. પદેલા મંત્રને ઉપદત્તા બાએ કે ભક્તિરસ્ય ભજનમ્। તદ્વિદ્યુત્યોપાધિન-
રાયેન અમુષ્મિન્ મનઃકલ્પનમ્। એ શ્રુતિમા સર્વનામ “અરમ” અને અમુષ્મિન્” અર્થ
તે દોષ એ ઉપરના વાક્યમાંજ “કૃષ્ણાય ગોવિન્દાય ગોપીજન વચસાય” હિન તને શબ્દો
અજીકાદૃત શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માને સંજોગે વચસંચા છે. તેમજ મંપુટ તરીકે પુરતજ વ્યાખ્યા
પછી પણ શ્રુતિ કહે છે કે “જતદેષ ચ નૈવકર્મ્યમ્। કૃષ્ણં તં (ખ્યાલ રાખા કે તે કૃષ્ણ
કંપા કે જેને ઉપર “આ, “આમાં” રાખે. ચાપરીને રાન્નિખવાચક સર્વ નામ અસી અર્થ
પુરોવર્તી સૂચ્યા છે તે) ચિદ્રાઃ યદુયા યજન્નિ એ પ્રમાણે પદેલા મંત્રમા કહ્યું છે કે ભક્તિ
એટલે ઉપર કહેલા કૃષ્ણ ગોવિન્દ ગોપીજનવચ્ચમું ભજન કરવું ને ભજન (ની રીતે) આ
શોકમાં અને પરશોકમાં ઉપાધિની આશા (એટલે કે મને આમ સુખ વૈભવ સંપત્તિ વગેરે
દલાકાંકાની કામના) રાખ્યા વિના એ શ્રીકૃષ્ણ ગોવિન્દ ગોપીજનવચ્ચમાં મન લગાવું
(અર્થત્ કામનારહિત નિષ્કામ ભજન) શ્રુતિ આગળ આજા કરે છે કે એનું નામજ નૈવકર્મ્ય
(ભજનનાદિ કરતાં છતાં કલ્પભોગ ભોગવવાનું બંધ ન થાય તેનું કર્મ) તે કૃષ્ણને વેદ વસ્તુજા-
વાળા અનેક પ્રકારે ભજન કરે છે. તે ગોવિન્દ દેવતાથી તેને અનેક પ્રકારે આરાધન કરે છે
ગોપીજનવચ્ચમે “સ્વાદા” ને આશ્રયે સુવને પારણ કપા (સર્વ લીલા કરી) અને સદરા
વીર્ષ વડે આ જગત્ પારણ કર્યું (વિસર્જીલા) આ વ્યાખ્યા પ્રમાણે સમજીને (એટલે કે
રહસ્ય કરી સમજીને ભજન, યજન, આરાધન (એ શ્રુતિના શબ્દો) એટલે કે આપણા સંપ્રદાય
પ્રમાણે “સેવા” કરવામાં આવે તો શરજાતમાં ભોખનના ઉપનિષદનો આશો અખ્યાલ રાખો
છે તેમાંજ કહ્યું છે કે—

રણુછાહદાસ—ભાઈ, વૃથાલાપ એટલે શું ?

કરુણાશંકર—વૃથાલાપ એટલે શ્રીભગવાનનું નામ, અને પ્રભુની લીલાઓને છોડી બીજી દુનીયાની નકામી વાતો ક્યાં કરવી તે વૃથાલાપ.

રણુછાહદાસ—ભાઈ! ખરેખર આજ તો પ્રભુનામ અને પ્રભુની લીલાઓનું વર્ણન તો તો ક્યાંકજ સાંભળવામાં આવે છે, બાકી તો સર્વત્ર દુનીયાની કુથલીજ સાંભળવામાં આવે છે. તેમાં પણ પ્રભુમંદિરમાં દર્શન કરવા ગયા હોય ત્યાં પણ દર્શનને જતા વખત હોય તો કેવલ વૃથા કથમલાટજ સાંભળવામાં આવે છે; ત્યારે ઘરમાં તો પ્રભુનામ ક્યાંથીજ લઈ શકાય? સદ્-ભાગીજ પ્રભુનામ લઈ રહે કે.

કરુણાશંકર—ખરેખર ભાઈ! શ્રીમહાપ્રભુજીએ નવરત્ન ગ્રન્થમાં આના કરી છે કે તેસ્માસુ સર્વાત્મના નિવ્યં શ્રીહૃણ્ણઃ શરણં મમ શ્રવદ્ગિરૈવ સતતં સ્થેયમિત્યેવ મે મતિઃ ॥

અર્થ—તેથી સર્વાત્મના પડે તેમાં “શ્રીકૃષ્ણઃ શરણં મમ” સતત બોધતાં રહેવું એવી મતિ છે. આમ કાણ માત્ર પણ પ્રભુનામનો ત્યાગ કરીએ તો આસુરાવેશ આપ મટે કાણ માત્ર પણ અણકર મન્ત્ર “શ્રીકૃષ્ણઃ શરણં મમ” નો જપ છોડીને ન જોઈએ.

રણુછાહદાસ—સુગમ ભગવદ્ગામ જિહ્વાચ વચાર્વસિતી. તથાપિ નરકં યાન્તિ ધિગ્સ્તુ તામ્નરાધમાન્ ॥

ભાઈ કરુણાશંકર, કહ્યું છે કે “પ્રભુનું નામ સુગમ છે, છલ પોતાને વશ છે; તોપણ પ્રભુનામ ન સેતાં છવ નરકમાં પડે છે. આવા મનુષ્યોને આપણે ધિક! વિના બિનું શું કહી શકીએ?

કરુણાશંકર—પણ ભાઈ! પ્રભુનું નામ છલ ઉપર આવવું ક્યાં સહેલું છે? પ્રભુનું નામ તો પ્રભુની કૃપા હોય તોજ ઉઠતાં, બેસતાં રસોધ કરતાં, સંજવારી કાઢતાં દરણું દળતાં, લાકડતાં, આકડતાં, એ પ્રમાણે આખો દિવસ અદ્વિતર પ્રભુનું નામ લઇ શકાય. બાકી હૃદયમાં પાપ ભર્યું હોય ત્યાં પ્રભુનું નામ લેવાયજ ક્યાંથી? કહ્યું છે કે “જેસે જ્વરકે જોરમે ભોજનકો રુચિ જાય. તેસે પાપસંમૂહમે નહિ હરિનામ સુદાય.

રણુછાહદાસ—સાચું તદન સાચું, ભાઈ આપણે એ ગાઉ ચાલીને જવાનું હોય અને ત્યાં જતાં પહેલાં વિચાર કરી નક્કી કરીએ કે આખો રસ્તો પ્રભુનો નિર્મલ અણકર મન્ત્ર જપતાં જપતાં જશું, પણ રસ્તામાં ચાલતાં અનેકવાર શૂલી જવાય છે. અને મન બીજે રસ્તે ચડી જાય છે.

કરુણાશંકર—ભાઈ તેથીજ માનુષ પડે છે કે પાપની પ્રખલતાથી પ્રભુનું નામ લઇ શકાતું નથી. શ્રીમહાપ્રભુજીએ નિમ-ધમાં આગા કરી છે કે—શ્રૃંગાલાપક્રિયાધ્યાનં સર્વથેવ પરિત્યજેત “વૃથાલાપ, વૃથાક્રિયા, વૃથાધ્યાનનો સર્વથા ત્યાગ કરવો જોઈએ” છતાં પણ ત્યાગ કરી શકાતો નથી.

રણુછાહદાસ—ભાઈ! હવે તેનો કાંઈ ઉપાય ખરો?

કરુણાશંકર—ભાઈ ઉપાય તો માત્ર એજ છે કે ખીજ નકામી પુસ્તકો ને વાંચતી અને ગદી વાતો ન સાંભળતાં અને ભગવન્નામને શૂઝનારની સંગતિ છોડીને ભગવન્નામામૃતનું પાન કરાવનાર ભગવદીયનો સંગ કરવો, તેવાંજ પંખનાં પુસ્તકો વાંચવા. આથી મન પ્રભુમાં રહેતાં અણકર મન્ત્ર નહીં શૂઝાવનાર મન છે. પણ પ્રભુએ આગા કરી છે કે અભ્યાસેન તુ કૌન્તેય વૈરાગ્યેણ ચ શુદ્ધયે ॥ મન મંચળ છે પણ અભ્યાસ અને વૈરાગ્યથી તે વશ પાપ છે.

રણુછાહદાસ—ભાઈ અહીં સાઈ દવેશીનું પણ તેવો અભ્યાસ કરવા તપર ઘડરા બેથી પ્રભુ હૃદયમાં સાથ. હવે નીચેનું લાવ પછું પદ બોલી આપણે આપણું સ્થાન લઈએ.

શ્રીવલ્લભસંપ્રદાય.

(વસ્તા—શ્રીયુત મહીધરલાલ હિંમતલાલ, જેશીપુરા, ખો. એ., હેડમાસ્ટર;
સર વાલ્મીકી કૌન્સિલર, ટંકારા, (મોરબી રોડ).)

સન્મનો અને સન્નારીઓ,

આપણે આજે એક ધવાનો પ્રસંગ હરકોઈને વિદિત છે, એટલે તે વિશે વધારે ઉલ્લેખ કરવો ખાસ આવશ્યક નથી, છતાં પણ શ્રીવલ્લભાચાર્યજીની જયન્તિના ઉત્સવ પ્રસંગે આપણે એકલા યથા છીએ એટલે તેઓશ્રીના ઇવનજીયાંતનું તથા તેમણે રચાયેલા સંપ્રદાયનું ટુંક દિગ્દર્શન આજે અરથાને નહિજ ગણાય. એમ માની હું નીચે પ્રમાણે જણાવવા રત્ન લઉં છું.

મારો આ સંપ્રદાયના અંગે અને આચાર્યો સંબંધે અભ્યાસ બહુજ અગ્ર્ય છે, એટલે આ વિષયની અંદર હું કંઈ નહું અજવાળું નાખી શકું તેમ નથી; પરંતુ જ્યારે આ વિષય ઉપર યત્નકિંચિત્ જોવાવા ઇષ્ટ જતો તરફથી અને કહેવામાં આવ્યું ત્યારે મારે યથાશક્તિ મારી ફરજ બજાવવી એ મારો ધર્મ છે, એમ હું માનું છું.

પુષ્ટિમાર્ગના આદિ આચાર્ય શ્રીવલ્લભાચાર્યજીનો પ્રાદુર્ભાવ સંવત ૧૫૩૫ ના ચૈત્ર વદી ૧૧ ના રોજ ચંપારણ્યમાં થયો હતો. તેઓશ્રી આ ભૂતજ-ઉપર લગભગ ૫૨ વર્ષ ચિરાન્ત્યા હતા, પરંતુ આટલા ટુંકા વખતમાં અને લંદકાટ અને અશાંતિના સમયમાં, હિંદુસ્થાન જેવા વિશાળ દેશમાં ઉત્તરથી દક્ષિણ અને પૂર્વથી પશ્ચિમ મુખી ત્રણ વખત પરિક્રમણ કરી શ્રીહરિની સેવામાં દંમેશાં ધણી વખત વ્યતીત કરવાની સાથે વેદ, ગીતા તથા શ્રીમદ્ભાગવતનાં અનેક સ્થાનોએ પારાપણ કરી છતાંમુએને જોવાપ્રત આપી આશરે ૮૪ અંગે તેઓશ્રીએ સંસ્કૃતમાંજ રચ્યા. તેઓશ્રીના પછી તેમના પુત્ર શ્રીવિદ્યનાથજીએ પણ શ્રીહરિસેવામાં પરાયણ રહી, પોતાના અવકાશનો સંપૂર્ણયોગ કરી, ધર્મની પ્રગતિ માટે ઘણા અંગે રચ્યા છે. આ પછી શ્રીપુરુષોત્તમજી મદારાજનું પ્રાકટ્ય સત્તરના સૈકામાં થયું હતું. તેઓશ્રીએ પોતાની ૪૫ વર્ષની લઘુ વયમાં વેદ અને સ્મૃતિ વગેરે તમામ શાસ્ત્રનું ઘણી સારી રીતે ટોદન કરી લગભગ નવ લાખ શ્લોકનું પૂર ચાપ એટલા અંગે લખેલા છે. આ પ્રમાણે દરેક આચાર્યોએ પોતાની શક્તિ અનુસાર સંપ્રદાયની સેવા બજાવી છે.

હવે પુષ્ટિમાર્ગ જલવાદનું-શુદ્ધાદેવનું-અવર્જન કરે છે. નિષ્પક્ષપાત પુષ્ટિથી પુષ્ટિમાર્ગના, શુદ્ધાદેવ સિદ્ધાંતોની તુલના કરવાથી એવો નિશ્ચય થશે કે પરબ્રહ્મ, જીવ, જગત્ અને એ સંસારના સ્વરૂપ વિશેના આ સંપ્રદાયના બીજા સિદ્ધાંતો વેદ, ગીતા, જલસૂત્ર અને શ્રીમદ્ભાગવતપ્રતિપાદિત છે. પુષ્ટિશાસ્ત્રનો અર્થ અનુગ્રહ અથવા કૃપા એવો થાય છે. ભક્તિમાર્ગમાં પ્રભુની કૃપાનું અવર્જન કરવામાં આવે છે. અને પ્રભુનોજ આશ્રય રાખવો એવો આ માર્ગનો મૂળ ઉદ્દેશ છે. હવે આ આશય અતિ ઉચ્ચકોટિનો મહત્ત્વનો અને અનુકરણીય છે. દરેક ધર્મના મુખ્ય સિદ્ધાંતનું આપણે અવગોચન કરશું તો સ્પષ્ટ રીતે જણાશે કે પોતાના ઇષ્ટ દેવની કૃપાનું અવર્જન કરવું એ ધર્મનું મુખ્ય લક્ષણ હોવું જોઈએ. પુષ્ટિમાર્ગમાં પરબ્રહ્મ પરમાત્મા પૂર્ણપુરુષોત્તમ ભગવાન શ્રીકૃષ્ણની અનન્ય, અચ્છાલિયારિણી ભક્તિ નિષ્કામ જીવિથી કરવાનો મુખ્ય આદેશ છે. પરબ્રહ્મ પરમાત્મા વેદથી પણ અતીત છે; જ્ઞાન તથા વૈદિક ક્રિયાઓના ફળદાતા પોતેજ છે. શુભોધી અતીત છે, વેદના નિયન્તા છે. વેદનો ઉલ્લેખ તેમનામાંથીજ છે અને એ સર્વશક્તિમાન છે, તેથી ઉત્તમાધિકારીએ કેવળ પરબ્રહ્મ શ્રીકૃષ્ણનુંજ અવર્જન કરવું. તેનોજ આશ્રય કરવો. તેમના ઉત્તમાધિકારીએ કેવળ પરબ્રહ્મ શ્રીકૃષ્ણનુંજ અવર્જન કરવું. તેનોજ આશ્રય કરવો. તેમના માદાત્મ્યનું જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરવું, તેમનાજ શરણે જવું, તેમનીજ કૃપા-મેળવવાની-આશંકા રાખવી.

તેમને પ્રસન્ન કરવામાં કર્તવ્ય માનવું. કહ્યું છે કે મક્તિનિષ્ઠા તદા જ્ઞેયા યદા કૃપ્ણઃ પ્રસીદ્ધતિ એટલે કે શ્રીકૃષ્ણ પ્રસન્ન થાય તોજ લક્ષિતની પરાદક્ષા પ્રાપ્ત કરી શકાય છે અને ખરેખર જે લક્ષિતભાવ પડે શ્રીકૃષ્ણની સેવા એક નિઃશયી કરવામાં આવે તો કહ્યું છે કે કૃપ્ણઃ ચેત્ સેવ્યતે મસ્ત્યા કાલિઃ તસ્ય ફલાય દિ એટલે કે આ કલિકાલ પણ કૃપ્ણથી નીવડે છે.

પરશ્વલ્લભસ્વરૂપ શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માએ સ્વમુખે ગીતા કહેલી છે, તે એક આધારવર્તનો અનુપમ ગ્રંથ છે. ગીતા સર્વ શાસ્ત્રોનો સાર છે, ઉપનિષદોનું હૃદય છે, જ્ઞાનોનો સાગર છે અને મનુષ્યની લૌકિક અને પારલૌકિક મહેન્દ્રાઓનું પરિપૂરક કલ્પવૃક્ષ છે, એમ કહેવામાં જરા પણ અતિશયોક્તિ નથી. ગીતાનો વિષય એટલો અધો અગ્રાધ અને વિધવિધ પ્રકારનો છે કે તેની અંદર દરેક સિદ્ધાંતનું મયન કરવામાં આવ્યું છે. દરેક ધર્મ અને સાહિત્યનાં તમામ અંગોની સંપૂર્ણ ટાંચ પહેંચેલી ખીલવટ તેમાં દરમિયાન થાય છે. કાવ્યમાધુર્ય, નીતિશાસ્ત્ર અને શાયરોની તેમાં પરાકાષ્ટા જોવામાં આવે છે. ગીતાનું રહસ્ય અમુક સમાજ, અમુક પ્રજા કે અમુક દેશનેજ ફલાત્મક છે એમ નથી, પરંતુ તેની અંદર સમગ્ર માનવ જાતિને શ્રેયકર અને ઉન્નતિકારક સિદ્ધાંતોનું પ્રતિપાદન કરવામાં આવ્યું છે. આ જ્ઞાનવતી સામ્રાજી તેનો દુનિઆની લગભગ દરેક ભાગમાં યજ્ઞેન્દ્રો અનુવાદ સિદ્ધ કરી આપે છે. જુદા જુદા દેસાના વિદ્વાનોએ ધણી ખરી નીતિશાસ્ત્ર જ્ઞાનોનાં સદાયારનો પ્રકાશ ગીતાના અનુવાદથી ફેલાવવાનો શત્રુ પ્રયત્ન કરેલો આપણને દૃષ્ટિગોચર થાય છે. દુકામાં ગીતાની સ્વશ્રેયતા મુક્ત કંઠે સારા જગતભરમાં સ્વીકારવામાં આવી છે એ વાત નિઃશંક છે. ચાર્લ્સ વિલિંગ્ટન નામના અંગ્રેજ વિદ્વાને ગીતાનો જે અનુવાદ કર્યો છે તેની ભૂમિકામાં યૌરન હેરલ્ડે લખે છે કે “કોઈ પણ જાતિને ઉન્નતિના શિખરે ચઢાવવામાં ગીતાનો ઉપદેશ અદ્વિતીય છે.” અંગ્રેજ જેની ફેબ્રુઆરીની અંદર અગ્રયાન ભોગવતી પ્રજાની એક મહાન બાકિત તરફથી આદરો ઉઘો અભિપ્રાય મળે, તે ગીતા સમગ્ર વિશ્વના સાહિત્યમાંનો સર્વોત્તમ દિવ્ય ગ્રંથ છે એમ પુરવાર કરવાને ખસે છે. હવે યુદ્ધિમાર્ગની અંદર જે દાસત્વભાવ સ્વીકારવામાં આવ્યો તે પણ ગીતાના આધારેજ રાખેલો જણાય છે, કારણ કે ગીતાજીમાં કહ્યું છે કે જ્યારે દાસત્વભાવથી નિઃપ્રામદકિત થાય છે ત્યારે અદઃતામમતાનો નાશ થાય છે; અને જ્યારે આ કૃત્રિમ વૃત્તિઓનો વિપ્રસંય થાય છે ત્યારેજ મોક્ષ મેળવી શકાય છે.

હવે શ્રી ગીતાની અંદર શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માએ જે ચારિત્ર્યધન અને પ્રસન્ન પ્રકૃતિ ઉપર પ્રવચન કરેલું છે તેનું હું યથાશક્તિ વિવરણ કરું છું.

મનુષ્યને પ્રસન્ન પ્રકૃતિ યદિ સાદૃશ્ય છે, તથાપિ તે મુખ્યત્વે અન્ય દેવોની ભાદક કેળવણીથી પ્રાપ્ત થાય છે, જીવનને અર્થતમય યા વિપમય જનાવૃત્તે એ કેવળ આપણા હાથમાંજ છે. જ્ઞાની અને અજ્ઞાની ઉભયને સુખ, દુઃખ સર્વે પ્રાપ્ત થાય છે, પણ જ્ઞાની સમાધાનીથી પ્રસન્ન રહે છે જ્યારે અજ્ઞાની વૃથા શોક કરે છે. આ જન્મે દુઃખને અન્યથા કરવાને તો અસમર્થજ છે, છતાં પણ પ્રસન્નતાથી એક અમૃતમય જીવન કરે છે જ્યારે અપ્રસન્ન વૃત્તિથી ખીજે વિપમય જીવન કરે છે. સતોપથી મનુષ્ય દુઃખને દાખી નાખે છે. અજ્ઞાનને દૂર કરે છે અને શોકને વિદારે છે. યુદ્ધિવલ્લભ સતોપથી અધિક પ્રકાશ પામે છે અને શરીર સૌંદર્ય પણ વિકાસ પામે છે, આંત્રી વૃત્તિ વિના જીવિતનો શીતળ પ્રભાવ ભોગવી શકતો નથી, તેમાં વિકાસી રહેલાં પત્ર પુષ્પોનો અનુભવ લેવાતો નથી; અને આપણું વિશ્વ ઉજ્જ્વલ, નિર્જીવ, નિરર્થ અને અન્ય લાગે છે. પ્રસન્નતા સુખનું નિદાન છે, તેમ ચારિત્ર્યનું મોટું સંરક્ષણ છે એનાથી લક્ષ્યા અને મદ્યજીવનાં ખીજને ફાસમાં મારે ઉત્તમ ભૂમિકા બંધાય છે, એનાથી હૃદય વિશુદ્ધ થાય છે, અને વૃત્તિ પ્રસાદ

વાળી થાય છે. પ્રસન્નતા દાતૃભાવની સખી છે, ધૈર્યની ધાત્રી છે અને હ્રદાપણની માતા છે. મન અને આરિય ઉભયને સુધારનારૂં એ ઉત્તમ ઔપચ છે. ઘણા મહાપુરુષો બહુ લાંબુ ઇંડવન ગાળી ગયા છે તેનું નિદાન વિચારતાં તેમના દ્વભાવની પ્રસન્નતાજ સુખ્ય કારણભૂત જણાય છે. સંસ્કૃતમાં કહ્યું છે કે:—

સર્પા પિવંતિ પવનં ન ચ દુર્વલાસ્તે શુકૈસ્તૃણૈર્વનંગજા બહેનો ભવન્તિ ॥

કન્દૈર્ફલૈર્મુનિવરા ક્ષપયન્તિ કાઠં સંતોષ એવ પુરુષસ્ય પરં નિધાનમ્ ॥

આ સંસ્કારમાં પ્રતિક્ષણ વિપત્તિઓ વરસાદની માફક પડે છે પણ તેમાં ધીરજ રાખવી. શૌર્યવાળાં મનુષ્ય યાતાં નથી. તેઓ એકજ રહેણી કરણીથી રહે છે. કહ્યું છે કે:—

ઉદયે સવિતા રક્તો રત્નસ્થાસ્તમને તથા । સંપત્તૌ ચ વિપત્તૌ ચ મહતામેકરૂપતા ॥

જેમ સંપત્તિથી તેમને ગર્વ થતો નથી તેમ વિપત્તિથી તેમનું ધૈર્ય સ્પષ્ટિત થતું નથી તેઓ “સુખસમૃદ્ધમાં હમી નય જવું દુઃખમાં ન દિંમત દારવી.” એ સૂત્રનું અવગમન કરી હંમેશાં એકજ વૃત્તિથી રહે છે. હવે દરકોષ માણસમાં દુર્ગુણ છે કે નહિ તેના નિશ્ચય કરવો હોય તો તે સંપત્તિસમૃદ્ધેજ થઈ શકે છે, પણ તેનામાં કયો સદ્ગુણ છે તે જોવાનું તો વિપત્તિમાંજ અને છે. દાખલા તરીકે ચંદનના લાકડાને અમથું જોવાથી તે અન્ય લાકડા જેવુંજ દેખાય છે. પરંતુ તેને ઘસવાથીજ તેનો ખરો ગુણ જણાઈ આવે છે. આ પ્રમાણે વિપત્તિની અંદરજ માણસના ખરા ગુણ પ્રકાશમાં આવે છે. માણસે હંમેશાં સંપત્તિ અને વિપત્તિમાં એકજ રીતે રહી કામ, ક્રોધ, લોભ, મોહ, મત્સર આદિ દોષોને દૂર કરી ભગવત્પરાયણ રહી જગતની અંદર જળકમવત્ ઇંડવન ગાળી આ લોક અને પરલોકનું શ્રેય સાધવું એજ ખરો ધર્મ છે.

આટલું જોશી ટું જોસી જવાની રગ્ન લઈ છું અને આપ સર્વેએ શાંતિપૂર્વક અવગમ કર્યું નેને મારે તમારો અંતઃકરણપૂર્વક આભાર માનું છું.

શ્રીમહાપ્રમુજી અને મૂઢીવાદ.

(અનુસંધાન-ગતોંકના ૫૪ ૨૮ થી)

મનુદેહાસ—ભાણ મજદાસને મારોજ પક્ષ સામીત કરતો સાંભળાને મારી પુરાણો પાર નથી!
મજદાસ—સમજ મારા મિત્ર! ઉતાવળા ન ચાઓ. માફ પૂકું સાંભળી લો. પછીથી તમારે જે નિશ્ચય કરવો હોય તે કરી લેજો. (પોતાનું વક્તવ્ય વધારે પ્રકટ કરતાં) જગદ્ગુરુ શ્રીવલ્લભાધીશ્વરનો મહાન આદર્શ એ છે કે, આ સમગ્ર વિશ્વ એ મહાન વિશ્વનાથક વિભુનું ક્રીડારથાન છે. આ સંપૂર્ણ જગત અખિત્ર બ્રહ્માંડના સૂત્રધારે પોતાને મારેજ બનાવ્યું છે. આ સમગ્ર સૃષ્ટિના તે એકલોજ માલીક છે. આ દુનિયામાંની આણમાં આણ વસ્તુ ઉપર પણ એ સર્વસમર્થ પ્રભુ વિના બીજા કોઈની માલીક નથી. એણે ઉત્પન્ન કરેલી કોઈ પણ વસ્તુ ઉપર પોતાની સત્તા માનનારાઓ દુષ્ટબુદ્ધિનાજ સમજવા રહ્યા. ત્યારે બધું પ્રભુનુંજ છે ત્યારે આપણે કપી જડ અથવા ચેતન વસ્તુને આપણી માલીકની સમજ શકીએ? એકમને નહિ; એજ સિદ્ધાંત છે. પ્રારબ્ધજયથી કે પુરુષાર્થથી આપણે જે કોઈ વસ્તુ જેજીએ અથવા તો પ્રમુદ્ધપાથી આપણને જે કાંઈ સંપત્તિ મળે, એ સર્વ ઉપર આપણી લેશ પણ સત્તા નથી, એના ખરા માલીક તો પ્રભુજ છે. આપણે તો માત્ર એ પ્રભુની આજ્ઞા મુજબ એ સાંપડેલા દુન્યવી પદ્ધતોની વ્યવસ્થા કરી શકીએ. આપણે ત્યાં કોઈ યાપણ મૂઢી જાય, કોઈ વસ્તુ અમાનત રાખી જાય, તેના ઉપર

આપણે જો માલીકીનો દંડ ધરાવતા યજ્ઞને તો દુનિયા આપણને દગામાજ કહેશે; અને આપણે પણ વિશ્વાસઘાતના મહાપાપપંકમાં ફૂળી મંચીયું. અંદે જોતાં તો આપણા કહેવાતા આ ધરખાર સ્ત્રીપુત્રપરિવારનાએ આપણે ખરા માલીક તો નથીજ. એ બધું પ્રભુનું જ છે. આપણે તો તેમના આશાધારક દાસ કહો કે એક દૂરી કહો, તેજ છીએ. આ દિવ્ય ભાવનાનો જગતમાં પ્રચાર થાય તો અસારે એકમેકની ગરદન ઉપર છરી ચોડવીને પાપી પૈસા પેદા કરવાની જે ઘાતક પ્રવૃત્તિ આવી રહી છે તેના સંપૂર્ણનો નાશ થઈ જાય. હાલ આખું જગત આસુરી ધમાકોથી ઘેરાઈ ગયું છે. શાંતિનું નામોનિશાન રહ્યું નથી. જીવનમાંથી રસકસ ઉઠી ગયા છે. આ રાક્ષસી પ્રવૃત્તિનું પરિણામ તો સ્પષ્ટ જ છે. આખું વિશ્વ પોતાનાજ ખજાણે કુહાડે; મારવાની એવદૃશીને ન જોતાં નિજનો અર્થનાશને નોતરી રહ્યું છે. આ દુનિયા પણ જ્યારે આસુરી લાલસાઓથી અને તેના બધાનકે પરિણામોથી ઘેરાઈ ચાકીને પાછી વળશે અને તેને જ્યારે દિવ્ય શાંતિ અને ચિરકાંતના સુખની ભૂખ લાગશે ત્યારે આખરે જગદ્ગુરુના ઉક્ત આદર્શોને જ સરણે જવું પડશે. એ આદર્શોનું સ્વરૂપ સમજીને તેને જીવનમાં ઉતારવા માટે મહામથન કરવાં પડશે. અને તે પછી આ વિશ્વ કોઈ અનેરી અઘોરિક સુખશાંતિ અનુભવી રહ્યું હશે. તે વખતે એક પણ દેવધારી અહંતામમતાની સાથે સંબંધ નહિ ધરાવતા હોય. પ્રભુસેવારૂપ મહાભયમાં પોતાનાં સર્વદેવને વિનયોગ કરવામાંજ જીવનનું છેલ્લું ખેય સ્વીકારાઈ ગયું હશે. નીવિ, પવિત્રતા, સદાચાર આદિ દેવી ગુણોનો સર્વ પ્રકાર ફેલાઈ રહેલો હશે. ધનવાને પોતાના દ્રવ્યને ઉપયોગ માત્ર પોતાની ઇદ્રિયતૃપ્તિ માટે નહિજ કરતા હોય. દુન્યવી ભોગવિલાસોના બડકાઓથી તેઓ દૂર ન્હાસશે. પોતાના એ દેવી દ્રવ્યનો ઉપયોગ તો માત્ર પ્રભુસેવામાંજ કરશે. પ્રભુસેવા એ એવો એક અપારક મહાધર્મ છે કે, તે જગતના સર્વ અંગોને પોષે છે; હાલના સામ્યવાદનો તો તે વખતે નાશ જ થયો અને તે પુસ્તકોનાં પાનાંઓમાં બરાઈ બેઠેલો હશે તો તે તરફ પણ જનસમાજ દયાની દૃષ્ટિએ જોશે. ધનવાનોને હુદી લઈને, સમગ્ર દેશની દાલત એક સ્થાને રાખીને, તેના પર અમુક દુન્યવી સત્તા રજાપીને બંધાને એક હાલતમાં ધકેલી દેવાના હાલના સામ્યવાદના પિરામી ચાળા ગળકતા બાંધે ફરી નાંખ્યા હશે. જગદ્ગુરુ સ્પષ્ટ ઉપદેશ છે કે—

‘‘દયયા સર્વમૂતેષુ સંતુષ્ટયા યેન કેનચિત્ ! સર્વેન્દ્રિયોપરાન્તયા ચ તુલ્યવ્યાશુ જનાર્દનઃ ॥

‘‘વિદેશાનરાચાર્યચરણ આરા કરે છે કે—પ્રભુને શીઘ્રાવિશીધ પ્રસન્ન કરવા હોય તો આ ત્રણ ચાંત ગાંઠે બાંધી લો. ૧. ગ્રાણીમાત્ર ઉપર દયા રાખો, ૨. જે મળે તેમાં સંતોષ માનો, ૩. સર્વે ઇદ્રિયોને કાણુમાં રાખો. બસ, આ ત્રણ વાતોનો અમલ કરશો કે પ્રભુ તુરંતજ પ્રસન્ન થશે. આ એક દુકામાં દુકા ઉપદેશમાં સમગ્ર વિશ્વનો સુખશાંતિ સમાવશે છે. આ ત્રણ વાતથી વિહાલ અનેક વિશ્વ અભ્યારે અનેક દુઃખોથી ગ્રાસી રહ્યું છે. જગદ્ગુરુના આ ત્રણ આદર્શ ઉપર જો સમાજચલતા થાય તો સ્વર્ગ નીચે ઉતરે. દેવાભાવ જગતમાં પ્રસરે તો દિસાપાપને બાર તો આ પવિત્ર ભૂમિ પરથી કાપીને ટલી જાય. નીવિ અને ધર્મના માત્રથી મળેલા યોગ અથવા વધારે દ્રવ્યથી સંતોષ પકડવો એ આદર્શ તો હાલના દ્રવ્ય ચૂસવાના વિશ્વઆપક, મદારોગનું અંકસીર-આપક છે. જગતમાંથી સંતોષરૂપ ગુણ તિરોહિત થયો છે. આસુરી તાણાઓ અને લાલસાઓએ પોતાનું સાંક્રાંત્ય યોગેરે જમાવી દીધું છે. એજ કારણથી એકમેકનો સર્વનાશ કરવા માટે બધા તકપી રવા છે. કોઈ કોઈનું શુભ ઇચ્છતુંજ નથી. દવે આ દાયાનગમાંથી બચવાનો ઇલાજ માત્ર સંતોષરૂપ સદેવ (જગદ્ગુરુ) જ છે. જો સંતોષ હોય તો વિશ્વની દાસની આરાધારીનો અંત યોગજ સમયમાં આવી જાય. બાઈ મનુદાસજી! આપ દવે સમજી શક્યા

હશે કે આપના હાસના સામ્યવાદ અને તેમાં શેષમણીની જેમ સુખમ્મનો એનારા નેતાઓન વિચારો અમારી દિવ્ય ભાવનાઓથી લાખો ગાઉ દૂર છે. હવે આપની ખાતરી થઈ હશે અમારા કથનમાં આપને આવેલી ‘સામ્યવાદ’ ની મંથ રહી નહિજ હોય. (તાળીઓ).

મગ્ગરહાસ—હા, આપના આ અતિલાંબી વ્યાખ્યાનથી હું જગદ્ગુરુનો આદર્શ કાંઈ સમજી શકું છું. હાલનો સામ્યવાદ અને જગદ્ગુરુનો આદર્શ કેટલા વિતરણ છે અને એ બંનેના મૂલ સિદ્ધાંતો અને પ્રવૃત્તિઓ પણ કેટલી ભિન્ન ભિન્ન છે તેનો ખ્યાલ મને આવે છે, છતાંએ આપે જે ખોટીના ચેક પૂર્ણ, દિવ્ય ભાવનાની જે બી બી વાતો હાંકી તે જેટલી ભોલવામાં રચિતર મીઠી મંથ જેવી લાગે છે, પણ તેનો અમલ કેટલો મુશ્કેલ છે એનો કોઈ વિચાર કરશે ? અન્યારે માનવોનાં હૃદયો ક્યા દિશામાં દોડી રહ્યાં છે ? નિર્મલ મધુર જનનો પ્રવાહ કહો કે અંજવાનાં નીર કહો; પણ એજ એય ભણી સમગ્ર વૃષાર્ત માનવ હૃદયો યાદોમ દોડી રહ્યાં છે, આના સમયમાં તેમને બીજાજ દિશામાં વાળખાં, તેમના પર આધિકાર ગેળવલો એ શું અશક્ય સ્થિતિ નથી ? વળી અહંતામમતાના ત્યાગનો તમે વાત કરી પણ કરોડની સંપત્તિ હોય અને એ જે ચૂડેલાંકંથુનો પડખો પણ ન પડે એ બનેજ કેમ ? જગદ્ગુરુ શ્રીમદ્ભલાચાર્યશ્રીએ તો તેથીજ મઠ મંદિર કે વૈભવો જમાવ્યા નથી, આપ એવો ઇતિહાસ રજુ કરી શકશે કે અહંતામમતાનો હાગ અને સંતોષ જેવી સંપત્તિઓ પણ અઘળક દુન્યવી સંપત્તિ સાથે રહેલી હોય ?

મગ્ગરહાસ—ઓહો ! એમાં તે શું ? આપે જગદ્ગુરુના કૃપાપાત્ર અંતરંગ સેવક શેઠ શ્રીપુરુષોત્તમદાસજી કાશીવાળાનું નામ સાંભળ્યું છે ?

મગ્ગરહાસ—ના, મુદ્દલે નહિ. એમનો ઇતિહાસ શેમાં લખેલો છે ? તે જણાવશે ?

મગ્ગરહાસ—આફસોસ ! હાલના પુષ્ટિમાર્ગીય પંડિતો શાસ્ત્રોની યોડી યોડી વાતો કરવામાં ચડા હોય છે, પણ જે મહાન પવિત્ર ગ્રંથોના અક્ષરેઅક્ષરે પુષ્ટિમાર્ગીય સિદ્ધાંતો અને દૈવી હથેનો પ્રકાશી રહ્યાં છે એ ગ્રંથો તરફ ઉપેક્ષા રાખે છે ! ખેર, હું એ ખાતર—સ્મૃતીય વંદનીય મહાનુભાવ શેઠ શ્રીપુરુષોત્તમદાસની વાર્તાનું વર્ણન કરીને મારી વાણીને પવિત્ર કરીશ.

સાઝ ચારસો વર્ષ પહેલાંની વાત છે. કાશીએ ભારતવર્ષમાં અદિતીય પ્રતિષ્ઠા પ્રાપ્ત કરી હતી. કાશી અને ત્રિવેણી એ જે રાષ્ટ્રો જ એકમેકના પર્વપ્રદપ ગણાતા. વિદ્યાર્થ અભ્યાસિક ધનના ભંડાર ધરાવતા કેટલાએ આચાર્યો, સંન્યાસીઓ, સંતમહત્તો અને વિદ્વાનો; એ કાશીનગરીના અણમેલ જવાહિરો હતાં. કાશીનરિય પણ એક આર્થ ક્ષત્રિય વીર હતા. પ્રાણના પણ બોલે ધર્મરક્ષા અને ત્રિવેણીનરક્ષા એ જે કર્તવ્યનું પાલન કરવું એ એમનો મુદ્દલેખ હતો. શ્રીમદાપ્રભુજી પણ કાશીમાં પધાર્યા. અનેક વિદ્વાન સંન્યાસીઓ, મહંત મહાધીરો અને પંડિતો સાથે આપશ્રીએ શરૂઆત કરી. આપશ્રીના અપૂર્વ પાંડિત્યથી, આર્થસંસ્કૃતિના પવિત્ર આદર્શસમા મદર્પિત્યનથી, મહાત્યાગથી, તેજસ્વિજ્વરપથી, કાશીનો માનવસમૂહ આશ્ચર્યમુગ્ધ અને અદ્વાપૂર્ણ બન્યો હતો. એ સર્વમાં કાશીના તે સમયના ધન-કુખેરસમા ગણાતા રોઈશ્રી પુરુષોત્તમદાસજીએ તો શ્રીમદાપ્રભુજીને પોતાનું સર્વસ્વ અર્પણ કરી દીધું હતું, અને અતિસન્માન તેમજ અતિઆગ્રદયી એઓશ્રીને પોતાના ઘરમાંજ બિરાજવા વિનવિ કરી હતી. લકતેઆપુરક શ્રીવૃક્ષલાધીધર ત્યારબાદ શેઠના ઘરમાંજ બિરાજ્યા [મગ્ગરહાસ આ સમયે મદ્મદ્ કંઈ થઈ ગયા અને જે મિનિટ મુધી આગળ બોલી શક્યા નહિ, અને સજામાં તો સાંતિનું સામાન્ય પ્રસરી રહેલું હતું.] શેઠનાં બહુભાગીપણાનું વર્ણન આ ક્ષણ તે શું કરી શકે ? કાશીમાં એક આશ્ચર્ય તો પ્રસરેલું હતું, તેમાં અખળધિપતિ શેઠજી એક મર્મચાર્ણને રાષ્ટ્રે જાય અને પોતાની અંઘળક

સંપત્તિની ખુમારી, અપૂર્વ ગૌરવ વગેરેને તિલાંશરૂપે આપીને શ્રીવક્ત્રસચ્ચક્ષુકમતના દાસાનુદાસ બની જાય એ વાતે તો ભારે ચકચાર જગાદી હતી. શ્રીમદ્દાપ્રબુદ્ધ તો શેઠજીના ઘરમાં ગિરાન્યા. આપશ્રી ભક્તવેશિત રહ્યા. એટલે આપશ્રીની વચ્ચનસુધાથીજ જેમનો જીવનનિર્વહ છે એવા એવકો પણ સાધેજ રહ્યા. શેઠજીનું રાજસ ઘર, રાજસ કુટુંબ એ બધાનો નવોજ જન્મ થઈ ગયો. શેઠજીનો અદ્વિતુત જીવનપત્રો થયો. ત્રણ દિન ચાલે તેથી વધારે એક દાણો પણ નદિ સંધારનાર ત્યાગવૃત્તિ આપાપશ્રીએ શેઠજીને લાગી જનાર્યા નદિ અને એમનો કરોડોનો વ્યાપાર પણ ધનધોક્ષર ચાલવા દીધો. તેમની ધનકુળેર તરીકેની પ્રતિજ્ઞાને લેણ પણ દરકત પડેવાડી નદિ. બાળ વસ્તુસ્થિતિ જે હતી તેમાં બહુ ફરક પાડવાની જરૂર જોઈ નહિ. પણ તેમનો જીવનપત્રો તો અજ્ઞાન જ થઈ ગયો. કોઈ જૂનો પરિચિત તો એમજ કહે કે દેવ તો શેઠજીનો લાગે છે, પણ આત્મા કોઈ નવોજ આવ્યો છે !

તે વખતે ભારતવર્ષની રાજકીય સ્થિતિ લાંબા આર્થસંતાપનો હૃદયોને દગ્ધ કરી રહી હતી. દિનપ્રતિદિન વિધર્મોએ અને વિદેશીઓના અત્યાચારોના ત્રાસજનક કળુંકટુ કિસ્સાઓ કાને પડતા હતા, ધર્મપરાયણ કાશીનરેણ સ્વધર્મનું પાલન કરવા માટે જોતાનું સર્વસ્વ અર્પણ કરી સુખ્યા હતા. એમને રાજ અને ધર્મની રક્ષા માટે ફક્ત છોપન કરોડ રૂપિયાની જરૂર પડી હતી ! તે વખતના છોપન કરોડની ખરોખરી અત્યાચારના છોપન અખજ રૂપિયા પણ કરી શકે નહિ. કાશીનરેણને શેઠજી પાદ આવ્યા. એકદમ એ મહારાજા શેઠજીને ત્યાં પધાયા. અનેક પહેરા ગોઠવીને અદ્વિતુત રીતે શય્યાગારેલા દિવાનખાનામાં અપૂર્વ દાહથી બેસતા શેઠજી પાસે જવાને સાધારણ માણસનો તો પગ પણ ઉપડે નહિ. કાશીનરેણને બધા ઓળખતા હતા. ખરોખરી ૪ વાગ્યાનો સમય હતો. ખજર આપ્યા વિના અચાનકજ મહારાજાને આવેલા જોઈને અનુચર વર્ગ ગભરાઈમાં પડી ગયો. મુનીમજી તથા બીજા અનેક અનુચરોએ દરબારનું સ્વાગત કર્યું. કાશીનરેણે આભર્ષથી પૂછ્યું કે શેઠજી ક્યાં છે ? ત્યારે મુનીમજીએ અર્જ કરી કે “ નામદાર નરેણ ! શેઠજી તો અત્યારે સેવામાં છે. ” રાજાએ પૂછ્યું—“ અત્યારે સેવા ? ” મુનીમજીએ કહ્યું “ હા, નામદાર. ” નરેણે પૂછ્યું કે “ તેઓ અત્યારે મળશે કે કેમ ? ” મુનીમજીએ કહ્યું કે “ મળવામાં કાંઈ પ્રતિબંધ નથી. ” મુનીમજીએ રસ્તો બતાવ્યો અને મહારાજા પ્રભુમંદિરમાં દાખલ થયા. ઉચ્ચકાલના દિવસે હતા. અસલ જરૂરી ચોમેર વરસી રહી હતી. પસીનાથી ભીંજવયા કપડાંવાળા નરેણે જ્યાં મંદિરમાં પ્રવેશ કર્યો કે તુરતજ ત્યાંના પવિત્ર શીતજળ વાતાવરણે એમના ચરીરમાંજ નદિ પણ હૃદયમાં ઉગાડ્યાં પણ એક મુખમય શીતમતાનો સંચાર કરી દીધો. અજનાધપતિ શેઠજી તે વખતે માત્ર એક સાધારણ વજ્ર પહેરીને સોદંતીની (ગુદારીની) સેવા કરી રહ્યા હતા, કંઈ કે વાસીફ હાલત હતા. અનેકવાર મજેલા શેઠજીને આજે કાશીનરેણ ઓળખી ચક્રવા નહિ. રાજાને તે વખતે એક પણ પણ કલ્પસમાન હતી. બેજાકળા યાદને રાજાએ સોદંતીની સેવા કરતા શેઠજીનેજ પૂછી નાંખ્યું કે “ શેઠજી ક્યાં છે ? મારે મળવું છે ? ” શેઠજીએ તો દરબારને તુરતજ ઓળખી લીધા; અને કહ્યું કે—“ શેઠજી તો બીજા મંદિરમાં ગિરાજે છે, પણ હું એમનો દાસાનુદાસ હાજર છું. ”

રાજાએ અવાજ ઓળખ્યો. પૂર્વ રમરજી તાલું ચડ્યું. ધનમદ અને રાજસ વૈભવોમાં કુબેલા શેઠજીનાં જીવનમાંના આ પરિવર્તને રાજાને આશ્ચર્યમજ કરી દીધા. તે પછી રાજાએ વાનંશાય કરીને ૫૬ કરોડ રૂપિયા માગ્યા અને તે શેઠજીએ આપ્યા.

બાઈ મનુદાસજી અને વૈષ્ણવો ! આ જતરદગ્ધ ઇતિહાસનો અર્થ કરીને, તેમાંનાં રસ્યો ઉઠવીને આપ સ્વનો વધારે સમય દું લેતો નથી. આ એક જ ઇતિહાસથી ધનારોપોનાં દેવી જીવનનો ચિતાર આપનાં હૃદયોમાં અચરસ ખરે થયો હશે.

યુવક હૃદય વોલે છે !

(લેખક:—શાહ ઘનશ્યામલાલ મણિલાલ પેટલાદ.)

પુષ્ટિમાર્ગ ! આજ તારી ભદોજલાલીનાં તેજ કયા ગિરિયુગે પાછળ છુપાઇ ગયાં છે. પૂર્વેની તારી અનેરી ભદોજલાલીના પાંચાં આજ ઝમગમવા લાગ્યાં છે. સર્વત્ર તારાં તિરોધાનના ભણકારા સંભળાય છે. એક વખત જે સંપ્રદાય જગતમાં સર્વોત્કૃષ્ટ હતો, તે આજ સર્વત્ર ધૂણાની દૃષ્ટિથી જોવાય છે. આજ તારાં ઉચેરાં નિર્મળ શુદ્ધ સિદ્ધાંતો અમારી ખેદકારીની લીધે અદૃશ્ય થતા જાય છે. જે વૈષ્ણવ સમાજ એક વખત સર્વશિરોમણિ હતો, જે દુનીઆની અન્ય સર્વ જગતોને પ્રમાણરૂપ થતો તેજ સદંતર નિર્મોલ્યરૂપ ગણાઇ દુનીઆના સમાજના અવમાનપાત્ર બનશે ?

ઓ વહાલા વૈષ્ણવ સમાજ ! હવે તો ભૂંટી યા ! ક્યાં સુધી આમને આમ ધોર્યા કરવું છે ? હવે તો આમને આમ ઉધ્યાં ફરીશું તે નહિં ચાહે. આ અત્યંતરૂપ અધિકારને દૂર કરવાને માટે કર્તવ્યપથે દોડવાને માટે તેઆર યા ? રોજિના ઘેર અધિકારની ભીષણતામાં, અરણ્યમાં, વાધ વરનાં લયાનક ગર્જનમાં, પદાડની ઉડી અધારી ખીણોમાં બૂઝા પડેલ મનુષ્યની મોઢક દિગ્માન પિનાના મનુષ્યની માફક, નેત્રવિહીન પામર પ્રાણી માફક આમથી તેમ અને તેમથી આમ અચડતો, કુડતો, ભટકતો, ઠોકરો ખાતો એવો આજ અમારો સમાજ દેખાય છે ! ખરેખર તેની સહનશક્તિ તો ઓગળ છે, દિવસે દિવસે તે કમજોર બનતો જાય છે. જો બૂઝા પડેલ ધરમાણુની માફક ટુંક સમયમાં તેને ખરો માર્ગ નહિ સાંપડે તો તે અરણ્યમાં નિષ્કળ રહન કરતો નિર્વેતન બનશે. જ્યાં ત્યાં અત્યારે બ્રહ્માચારો અને ધર્મને નામે અનેક દુષ્ટ આચારો ચાલુ થતા જાય છે. અત્યારે અનેક ખીચારી ભોગ્સ બહેનો સ્વાર્થી પાંખડીઓના વાચાળપણાથી આકર્ષાઈને જીવનની ધુળધાણી કરે છે ! આપણો સમાજ આ બધું ક્યાં સુધી સહન કરશે ? સંપ્રદાયના બદાનાં નીચે પોતાની છટાથી તેમજ બાલ આડંબરથી કેટલીએ ઉછરેલી વધની શુદ્ધ હૃદયની સુવર્તિઓ તથા સુવર્તને વિવશની ગંદી ચટ્ટર તરફ પસંદી જતાં, એ શું વૈષ્ણવતા છે ? શુદ્ધ હૃદયનાં ઉછરતા યુવક સુવર્તિઓને ઉચેટ કલંકિત થયેને આપણાં ક્યાં વિના ચાલતુંજ નથી. ઓ ભોગ્યા બહેનો તથા ઓ વહાલા સુવર્તો ! તમે પ્રજુને અર્પણ કરેલ રૂપ જીવનને નહવું ધંબી ફેંકી ન દેતાં શ્રીકૃષ્ણચરણોમાં અર્પણ કરો. તમારી જીવનનોંકા શ્રીમદાપ્રબુદરતમાં સોંપી દો, કે જોયી તમે આ સંસારમાં કૃતકૃત્ય યાઓ.

ઓ વૈષ્ણવ વહીવ વર્ગ ? આજની ઉછરેલી પ્રજા આવા સગાઓ શી રીતે ચાલવા દેશે ? આજના સુવર્તો તથા સુવર્તિઓ આવા કલંકો હવે નહિ ચાલવા દે. તને પ્રજુએ બોલેલ આ તારાં મોંઘા જીવનને આમ નકામું વેઢી ના ખાતે. શ્રીમદ્વૃક્ષસાચાંજના ઉચ્ચ સિદ્ધાંતોને સમજીને વિવચાનદના લ્હાવા લેવાના છોડી છઈ લજબાનદનો અનુભવ કરવાને તૈયાર યા. પ્રજુએ લીધેલ તારી મુંદર કાપાને ભગવત્કેવાને માટે ન્યોઝાવર કરી દે. ફાણમંચર દાડમાંસ ચામના જોતિક સૌન્દર્ય ઉપર મુગ્ધ થવાને બદલે એ સૌન્દર્યને ખનાવનાર અને એ સૌન્દર્યનું છુટે હોતે દાન કરનાર અજર, અમર, કોટિકંઈ કરતાં અધિક અનેરી સૌન્દર્યની છટા જેના ઉપર છાઈ રહી છે એવા શ્રીશ્યામકુંવરઉપર મુગ્ધ થઈ તારૂં સર્વસ્વ તેના ચરણોમાં અર્પણ કરી દે. એ સૌન્દર્યની છટાથી તો તારા વિવશની ભગવતી લ્તાળાઓનો પ્રજુ સમૂહ નારા પામશે. તારા કેભળ હૃદયમંદિરને એ દિવ્ય પ્રેમ સરોવરમાં કુણાવી દે. શ્રીશ્યામકુંવર સાથે સન્ધાવન પ્રીતિનું રેણુ સાંધી દે. સાથ સાથ એ પ્રીતિ કરતાં પહેલાં એટલું યાદ રાખવું જોઈએ કે પ્રીતિ કરવી સરેશી છે પણ તેને નિભાવવી સુશ્રીમ છે. પ્રેમને નિભાવવામાં આત્મસમર્પણ કરવાને પણ તૈયાર રહેવું જોઈએ, આ યરીર રહે

તા જાય, મનનો કાષ્ટ દાસમાંથી છુટી જાય, હૃદય પવન જાળમાં યજ્ઞ જાય, સરીરે પવન એ પ્રેમ-
 નિર્મિતમાં લાગી જાય, અને આ માથું પણ દસમાં હસતો એ પ્રેમમગ્નતાના ચરણોમાં ચડાવી
 લેવું પડે તો પવન શીકર નહિ એવી તૈયારી બે આપણી દોષ તોજ તે પ્રેમના આપણે અધિકારી
 થઈ શકીએ. જે પ્રેમને નિભાવવાનું બલુલો નથી, તેને રમેદનદીમાં આગળ તરવું નહિ જોઈએ.
 પ્રેમરૂપી ઇવન ઇવનમાં કૌંસપણ આપણે આવી જાય તો પપૈઆ અથવા આતકને આપણા
 હૃદય બનાવવન જોઈએ. કાંઈક કે આદિથી કે અંત સુધી પ્રેમની રીત એક રસ નિભાવતી તેનું
 જાન તેઓને સારી રીતે દોષ છે.

આ વેપકવ વરીત વર્ગે જે આ વિશુદ્ધ આત્મન પ્રોતિની રીતો તથા પૂજાપાદ શ્રીમદ્
 શુભાચાર્યના ઉચ્ચ સિદ્ધાંતોને આજના આમારે જેવા ઉછરતાં યુવકો તથા યુવતીઓને શીખ-
 ત્યા તથા સમજાવવા પ્રયત્ન કરેશો તો જરૂર તેઓ સીખવાને તૈયાર થશે, અને તેની અસર
 રેઓનાં કુમળાં હૃદય ઉપર થાળીજ સારી થશે. પણ પ્રભુના મંદિરો તો સ્વચ્છ, નિર્મળ અને
 પવિત્ર વાતાવરણમાં, નહિ દોષ તો તેમના ઉપર કદાચ આજના યુવકને શ્રદ્ધા નહિ થાય. પણ
 ખરેખર જે, જેજ મંદિરોમાંથી પવિત્ર ખનિ થશે તો જ્યાંને આકર્ષિત. આપણા આચાર્યશ્રીઓ
 બાપ્તારે પણ સાદાઈ, ઉચ્ચ ચારિત્ર્ય આદિ ગુણોથી શ્રીમદ્ પ્રભુજી અને શ્રીપ્રભુચરણની માકલ
 ઉગતા તરંગો ઉપર નિજ ઇવનની છાપ પાડે તો જરૂર એજ યુવકો અને આચાર્યશ્રીઓના ચર-
 ણોમાં પેનાનું માથું એક ફેરો નહિ પણ દશ ફેરો ઝુકાવે છે અને ઝુકાવશે એ નિઃસંદેહ છે.

છેવટમાં એટલું કહેવાનું કે શ્રીમદ્ શુભાચાર્યજીએ રચેલ મજબૂત પાયા ઉપર શ્રીમદ્ પ્રભુચરણો
 હૈયોની સુંદર સમરત હાથે ન થઈ જાય તે માટે બાતક બાલિકાઓ, યુવકયુવતીઓ, શ્રીપુત્રો
 ધાત્રીઓ, આચાર્યો, માસિકના તંત્રીઓ મંત્રીઓએ પેનાનાથી અને તેટલી સંપૂર્ણ મદદ કરવાને
 માટે કટિબદ્ધ થવું જોઈએ. નહિ તો દિવસે દિવસે વેપકવ સમાજ પડતીની રિયાત ઉપર આવવા
 માટે છે, શીજીય વધતી જાય છે. અને શારીરિક અને માનસિક સામર્થ્ય ઘટતું જાય છે. માટે
 વેપકવ સમાજને ઉત્થાનના માર્ગ ઉપર ધરતી અને જાળન થઈ કર્તવ્યપથ ઉપર આવવા સારી
 ખાસ અભ્યર્થના છે.

આ બદલાય વેપકવ યુવકો કે હૃદયની કુદ-કુર્મજનને ત્યાગી એકદમ જાળન થાઈ. નહિ તો
 પુષ્ટિમાર્ગનો સ્વર્ગ આશ્રમવાની તૈયારી ઉપર છે, અને જેતજેતામાં આથમી પણ જશે. તમે નિઃ-
 સાર પ્રમાદ અને સંકોચને પત્તિપાગી શ્રીદરિયાપછ આદિ આચાર્યવંશજોની આગ પ્રભાણે પ્રભુનું
 ધવજમનનાદિ કરતાં રહી, પ્રભુસેવામાં અંતઃકરણને પોતી રાખી, સમાજના સમાજોના અને
 તેના મજાને નાશ કરવા, પુષ્ટિમાર્ગને અદ્ધકલાપર સરિખડો નિર્મળ અને નિષ્કલંક કરવા ઉદ્દેશ
 કર્તવ્યપથે શીખ દોરો!

ગજવંતી, ચત્તારી	
ગોવિન્દ ગોપાલ ગોકુલેશ નામ લીજીએ, તથાલાપ-કિયા-જ્ઞાનકોરી ત્યાજ કીજીએ.	ગો. ૧
મુખમે ગોવિન્દ તામ, કરુએ ગોવિન્દ કામ, ચલિસે ગોવિન્દ નામની સુધાવી પીજીએ.	ગો. ૨
અટયામ વાદી તાનં આરએ સદા વિરામ, વાદીશ વિદ્વંકે પામ થોદી જાન લીજીએ.	ગો. ૩
રેન દિવસ પીત મંત્ર અત સર્વ એક આન, એન ચિત્ત પાવીને કીરુપ્યુ રૂપ્યુ કીજીએ.	ગો. ૪

સાંપ્રદાયિક પ્રવૃત્તિ.

મુંબાઈમાં શ્રીમદ્ભક્ષાચાર્યપ્રાદુર્ભાવમંદામહોત્સવ—શ્રીમદ્ભક્ષાધીશ્વરનો ૪૫૫ મો પ્રાદુર્ભાવ-મંદામહોત્સવ ઉજવવા મુંબાઈના વૈષ્ણવોનું એક મહાસંમેલન રચનાય મહોદી હવેલીમાં ૫. પા. ગો. શ્રી. ગોકુલનાથજી મંદારાજશ્રીના સભાપતિપદે શુરવાર તા. ૨૦ તથા શુક્રવાર તા. ૨૧-૪-૩૩ ના (બન્ને દિવસે) રાતના આઠ કલાકે મળ્યું હતું. તે સમયે બા. ગો. શ્રી દીક્ષિતજીનું નિયુક્ત ભક્તિ અને, ગો. શ્રી. ત્રિવિધરાલ બાવા, ગો. ચિ. શ્રીમજ્જનાયકાલજીનું ‘શુદ્ધ પુષ્કિમંતો’ તથા ગો. શ્રીગોપીનાથજી આદિના વચનામૃતો ઉપરાંત પં. હરિશંકર ઓઝારજી, સાશ્વતી હરિપુષ્પ વીરજી, અને સાશ્વતી ત્રીકમજી ‘શુદ્ધાદૈત વિચાર’ ના પ્રાસંગિક વ્યાખ્યાનો યથા હતા. બન્ને દિવસે સભાપતિશ્રીના સાંપ્રદાયિક સિદ્ધાંત પૂર્ણ મનનીય વચનામૃતો યથા હતાં. તદુપરાંત તેજ્યેશ્રી તરફથી ચાલતી શ્રીબાલકૃષ્ણ પાઠશાળામાં સાંપ્રદાયિક શિક્ષણ લઈ અન્તિમ પરીક્ષામાં ઉત્તમ કક્ષામાં ઉત્તીર્ણ થયેલ બાઈ ત્રીકમજી સમંતે પ્રમુખશ્રીએ અદીત્તો દ્વીપીઆ તથા વક્તાહિનું પારિતોષિક અને ‘શુદ્ધાદૈતવિચાર’ ની પદવી પ્રદાન કરી હતી. તથા પં. અદીનાથ વેણને તેની આયુર્વેદશિક્ષિત્વામાં નિયુક્તવાને લીધે સર્વેશ્વરે આપ્યું હતું. તે બન્નેએ રત્નીકારીને સભાપતિશ્રીના આશાર માન્યા હતા. બન્ને દિવસે ૩ કલાક સુધી કામકાજ ચાલ્યું હતું અને વૈષ્ણવધર્મ-દુરાગી બાઈ બ્લેન્ડેએ સારા પ્રમાણમાં લાભ લીધો હતો. છેલ્લે દિવસે શ્રીયુત જન્માવન વાલજીએ સભાપતિશ્રી, તથા અન્ય ગો. બાલકોટા આશાર માન્યા પછી સમાનમાં વધાઈ મવાયા બાદ શ્રીબાલકૃષ્ણ-લાલજીના ન્ય નાદ વચ્ચે સદ્ વિખરાયા હતા.

વિલાપારલામાં—સંસ્કૃત પાઠશાળા તરફથી શ્રીમદ્ભક્ષાચાર્યજીને પ્રાકટ્યોત્સવ ઉજવવા તા. ૨૦-૪-૩૩ ને શુરવાર રાતના નવ કલાકે એક સભા શ્રી ગોરવાલ બ્રહ્મનિવાસમાં શ્રીયુત મહુભાઈ કીશન-દાસ સોલીસીટરના પ્રમુખપણી નીચે મળી હતી. તે સમયે સંસ્થાના મંત્રીએ પ્રારંભિક ઉપક્રમ કરતાં સભા યોજાવવાનું પ્રયોજન લહેર કર્યા બાદ આજની સમાના મુખ્ય વક્તા શ્રીયુત હોદાલાલ ભગીરદાસે પ્રાસંગિક વિવેચન કર્યા બાદ ‘ભારતના મહાત્મજીના’ નામક ગો. શ્રીમજ્જનાયકાલજીએ લખેલ નિબંધ વાંચી સંભળાવ્યા બાદ શ્રીયુત જે.દારકે શ્રીમદ્ભક્ષાચાર્યશ્રીના ચરિત્ર ઉપર વિદ્વતાપૂર્ણ વિવેચન કર્યા બાદ, શ્રીયુત ત્રિવિધરાલ જી. શાહે શ્રીમદ્ભક્ષાચાર્યજીના વિશ્વમાન્ય સિદ્ધાંતોનું દિગ્વિશંસન કરાવ્યો પછી પ્રમુખશ્રીએ પણ આવશ્યક વ્યાખ્યાન કર્યા બાદ શ્રીયુત ફવેએ પ્રમુખશ્રી તથા અન્ય વક્તાઓનો આશાર માન્યા બાદ મોટી રાતના સભા વિસર્જન થઈ હતી. ઉપર્યુક્ત મહોત્સવ નિમિત્તે રચનાય શ્રી ભક્તિ-માર્ગીય સા. મન્દિર, શ્રી પુ. યુ. પરિષદ વિગેરે સંસ્થાઓ તરફથી શ્રી વીલાપારલા સં. પાઠશાળાની પુસ્તકાલયને કેટલુંક સાગ્રપ્રત્યિક સાદિલ એટ આપવામાં આવ્યું હતું.

કચ્છ નદીયામાં—પ્રાકટ્યમહામહોત્સવ ઉજવવા કચ્છ નદીયાના વૈષ્ણવોની એક સભા ચૈત્ર કૃષ્ણ ૧૧ ને શુરવાર તા. ૨૦-૪-૩૩ ના દિને જાનના પાંચ કલાકે કચ્છ મંડીવીવાલા ૫ પા. ગો. શ્રી ૧૦૮ શ્રીદ્વાકેશલાલ મહોદયના પ્રમુખપણી નીચે નવી ધર્મશાળામાં મળી હતી.

મહારાજશ્રીના સાશ્વતી પં. મંગાધરજી વ્યાકરણાચાર્યે વિદ્વતાપૂર્ણ (દિન્દીમાં) ભ.પ.પૂ આપતાં નજીવું હતું કે શ્રીમદ્ભક્ષાચાર્યજી ભક્તિ-માર્ગના ઉદ્ધા આચાર્ય યથા છે. આપશ્રીને પૂર્વાચાર્યોએ પ્રતિ-પાદન કરેલ ભક્તિમાર્ગમાં અનેક ગુટિકો નજીવું. શ્રીમદ્ભક્ષાચાર્યજીની પૂર્વના ભક્તિમાર્ગના આચાર્યોએ દૈત યા વિશિષ્ટાદૈત રત્નીકારી ભક્તિમાર્ગ ઉપદેશો દત્તો. દૈત ભાવમાં સર્વથા નિષ્કામ સેવન નજી થઈ શકે. કંઈક સ્વાર્થ દૈતવાદમાં ભક્તનો રહે છે ન. તેથીજ સર્વથા નિષ્કામ, નિયુક્ત, ભક્તિમાર્ગ સેવા માર્ગને પ્રવર્તાવવા શ્રીમદ્ભક્ષાચાર્યજીએ શુદ્ધાદૈત બ્રહ્મવાદને રત્નીકારી સર્વત્ર આત્મભાવ ‘વાહુદેવઃ સર્વ-મિતિ સ મહાત્મા હુદુલ્લમઃ’ આ બજવદ્ વાક્યાનુસાર અખિલ બ્રહ્માંડમાં, અસંખ્ય ચરત્રમાં, અને ૧ બેટજી નદિ પણ સ્વયં પોતામાં નિયુક્ત-નિષ્કામ બજવદ્ ભક્ત પોતાના પ્રેમ-પ્રિયતમને અવલોકી તેમના પ્રેમમાં મસ્ત બની-અદૈત ભાવમાં તદ્વપ બની કરાની પણ ઇન્દ્રા રાખ્યા વિના ભજવત્સેવન કરે છે, એજ વિશિષ્ટ ભક્તિમાર્ગ શ્રીમદ્ભક્ષાચાર્યજીનો છે.

સમાપતિશ્રીનો મનનીય સંકુપરેશ—ત્યાર પછી પ્રમુખશ્રીએ શ્રીમદ્દશાધ્યાયચરણના છવનની રૂપરેખા દોરી આપશ્રીએ આપણા હપરે કંટકી નિરૂપીત દૃષ્ટા કરી છે તે પરત્વે જણાવું છું કે શ્રીમદ્-દશાધ્યાયચરણે પ્રથમ નવ વર્ષ, દ્વિતીય પાંચ વર્ષ અને તૃતીય ચાર વર્ષ; કુલે અઠાર વર્ષમાં ત્રણ વખત ભારતવર્ષમાં પરિક્રમણ કરીને સંસારરોમાંથી પીડાતા નિઃસાધન છવોને બચવૃદ્ધભવનરસ પાદ સાલોદ્યાદિમુક્તિચરણથી પણ અધિક ભવભાગ્યને આસ્વાદ કરાવે છે. શ્રીમદ્દશાધ્યાયચરણે આ અલૌકિક દેવતાઓને પણ કુર્ણભ બચવૃદ્ધમુક્તિનું જ્ઞાન કોઈ પણ ભવના બેદરબાવ વગર સર્વ ભવિષ્યને કબ્જે રાખે. ખેડેખરા પતિતોના—અરપૂરણોના જ્ઞાતક શ્રીમદ્દશાધ્યાયચરણ દતા. પતિતો—અરપૂરણોના આ સંસાર સામંતમાંથી—જન્મમરણના યા લગુચોતશીના ફેરમાંથી ઉદ્ધાર કર્યાં દતો. શ્રીમદ્દશાધ્યાયચરણે અરપૂરણોના જ્ઞાતક કવચ વણના દિન્દુઓના બચવૃદ્ધમિદિર્માં અરપૂરણોને યુક્તાશ્વા વગર, અન્યત્રે સાથે રોડીબેડીવ્યવહાર કર્યા વગર, કવચ દિન્દુઓ પાસે ચમ્પાર, મોચી, ભંગી, વગેરેનું કામ ભુંટાયા વગર; અરપૂરણોના રોડીઓ યાજ્યા વગર ઉદ્ધાર કર્યાં દતો; કે ને અરપૂરણો—મોદના ભંગી જેવા વિધવંશ બચવૃદ્ધમજાના રકંધ હપર વેશ નેને નેતિ નેતિ પોકારે છે તે રસરૂપ અમણિતાનંદ રૂપ પ્રમુ શ્રીગોવર્ધનધરણુ બિરાજ ખેલતા દતા. સાચા અરપૂરણોજ્ઞાતક—પતિતોજ્ઞાતક તે શ્રીમદ્દશાધ્યાયચરણ દતા. હવે પણ પતિતો—અરપૂરણો અને તેઓની હવતિ ઈચ્છનારાઓ શ્રીમદ્દશાધ્યાયચરણપદિય સરણિને અનુસરે તોજ અરપૂરણોના ઉદ્ધાર સમ્ભવ છે. અન્ય રીતે તો બિચારા ગરીબ અરપૂરણોનું અધઃપતન અવરણભાવી છે. તેમને પણ દિન્દુ ધર્મથી વિમુખ બતાવી ડો. અગ્નિહર જેવા પ્રીત્વી યા નાદિતક બતાવી, તેમના અન્ય જન્મોમાં અરપૂરણ—ચોક્કસોનિધી પણ નીચ—દુષ્કૃતિ—યા અધતમ નરકમાં ધોલવાનોજ આ સર્વ વંદોળીયો છે. આવા અનેક લોકોપકારી—જન્મકલ્યાણકારી કર્યાં કરી—જનમુદ્ધર, ભાગવત વિગેરે અનેક આકર સાધ્યા લખી શ્રીમદ્દશાધ્યાયચરણે સં. ૧૫૮૩ના અસાદ શુકલ ૩ ના દિને અધ્યાન્હે કાશીમાં હનુમાન ઘાટ પર પુનિત ભવંદલીના મધ્યમાં તેજાપુત્ર યદુ રવધામ પધાર્યા દતા. જ્યારે શ્રીમદ્દશાધ્યાયચરણે સંન્યાસાશ્રમ પ્રદણ કર્યાં. આ. શુ. ૩ ને દિને નિજ પુત્રો શ્રીરામોનાથજી અને શ્રીવિઠ્ઠલાથજી (શ્રીગુણાથજી) અને વેંમુલો શ્રીમદ્દશાધ્યાયચરણ પાસે આવી પોતાને શ્રી આજ્ઞા છે, તે પૂછું ત્યારે અરમદાદિ જનોની જેમ થર, જમીન, ખેતર યા માલ મિલકતની સંભાળારાની ભજામણ ન કરતાં અલૌકિક એક આધ્યાયને રોલે તેનું વસીયતનામું લીધે કહું.

ત્યારે તમે કોઈ પણ રીતે ભગવાનની બલિમુખ—વિમુખ ઘરો—લોકિકમાં આસક્ત થયો તો તમારા ચિત્ત દેહ વિગેરે સર્વ કાલપ્રવાદમાં ચલિત થઈ તમારે સર્વ પ્રગરે ભજન કરો—નાશ કરો. એવી ખરી મતિ છે. આ શ્રીમદ્દશાધ્યાયચરણનું વસીયતનામું—લીધે છે. પોતાનો તે અમૃત્ય વારસો પોતાના વંશજોને આપ્યો છે. જરે તેઓશ્રીના વંશજો, શિષ્યો, સેવકો, વેંમુલો પણ શ્રીમદ્દશાધ્યાયચરણે કહેલ પોતાના વસીયતનામાની શરતો પાલન કરે તોજ તેઓશ્રીના વારસા દહ—મિલકત—હાથરોપરિચિત સદસાવર્ગમીતજન્મ—સીમાર્તનીઓથી સૌંવિત લીલાશીરભાષીયાથી શીરસપ્રચુર પ્રણ પ્રાપ્ત કરી શકે અન્યથા નહિ.

ત્યાર બાદ આશ્રયની વધાર્થ દલી મદ્દાજાન અને સમગ્ર જોતનીવાએ સમાજમાં અચા બાદ સમાપતિશ્રીનો આજ્ઞા મનાયા પછી શ્રીગોવર્ધનધરણુના જન્મના સાથે સમા વિસર્જન થઈ દતી.

શ્રીમદ્દશાધ્યાયચરણચંતી—શ્રી શંખોદેવ પાકાળા વરુથી (ચેલ્લાદામ) સાતરવર્ષની દબેલીએથી સર્વનાં હવો વરધોડા ચલેલો દતો. સરઆવર્માં મુંદર મેન્દ લાખું તે પછી વેંમુલ વર્ગ અને તે પાછળ વિરોધિયા ગાડીમાં શ્રીમદ્દાપ્રણુના મુંદર ચિતળને પધારાવી બને બાળુએ મુખ્યાલ્યો ચમર દેવો રક્ષા દતા. તે પાછળ શ્રી વર્ગ મંજળમજા જગ્યો ખારજૂ કરી કુલવિત સ્વરે ચીતવનિ કરતાં ચાશી રક્ષાં દર્તા. વરધોડા જનરમાં ફરી દશા દિસાવાળની ધર્મશાળ્યે હવેલો દતો. ધર્મશાળ્યને વેંમુલ ગિરિધરલાસે આસોપાલક તથા પાલ પતાકાથી યજુમરેલી હતી, જળ અંદરખાં સિંદાસન હપર શ્રીમદ્દાપ્રણુને બજાજા બાદ નેઈ સેકેટરી સાદ મણિલાલ ડાઘલાસે પ્રમુખની દરખાસત રજુ કરતાં તેને ચાશી મંજારાંકરે અનુમોદન આપતાં પ્રમુખ કાવાર રોડ જુગાખોડાસ નારણલાસે પોતાનું રવાન સ્વીકારનાં પાકાળાની બાજાઓએ પ્રાર્થના કરી “શ્રીમદ્દશાધ્યાયચરણે કિલ્લ ૧૪૬૨થી રજો દે” એ જરણે

સુલલિત કંઠે માથે હતો, બાદ પાદશાળાના સેકેટરી પરીખ દિશાલાલ મોલીલાલે સં. ૧૯૮૮ નો દિસાળ રજુ કરી પાદશાળાના કામથી સતોષ બહેર કરી દેખાડાવે, સામ્રોજીની કંઈ ન થઈ. યશ્વાથી ઘેલચોરી નજીવી શ્રીમદ્વાપ્તજીના ચરિત્ર સંબંધી વિવેચન કર્યું હતું. તે પછી પરમ ભવવંદીય શ્રીમાન મનલાલ બાઈએ વેષ્ણુવોને ધાર્મિક જીવન ગાળવાને સ્વચ્છંબનો બોધ સમભવી સરળ માત્ર દર્શાવ્યો હતો. બાદ સામ્રોજી મણિશંકરભાઈએ ટૂંકમાં ભક્તિમાર્ગની સરળતા ધણીજ સુંદર રીતે દર્શાવી હતી. તેમજ સામ્રોજી રામકૃષ્ણે પ્રસંગોચિત વિવેચન કર્યું હતું. ત્યારબાદ પાદશાળાના સામ્રોજી ન્યેણારામ દરિજીવન મેશીએ ધર્મથીજ ભારતવર્ષની ઉન્નતિ દર્શાવી ધર્મની આવરણકરો વિષે વિવેચન કરતાં ધાર્મિક અને નૈતિક જ્ઞાન મેળવવા સ્વ બાળક બાળાઓને. પાદશાળામાં મોકલવા વેષ્ણુવોને સલાહ્યા હતા. ત્યારબાદ પાસ્તોપિક, પ્રભાષુપત્રો અને રેકૉર્ડરશીપની વહેંચણી પ્રમુખના હસ્તે થઈ હતી. તે પછી શ્રીમદ્વાપ્તજીનો ગરજો બાળાઓએ આપ્યો હતો. બાદ પ્રમુખશ્રીએ જોતાંનું ભાગ્ય આપતાં પાદશાળાના કામથી સતોષ બહેર રહ્યો હતો. તે પછી પ્રમુખનો તથા વેષ્ણુવોનો આભાર માની નવનાઈ પૂર્વક સભા વિસત્રન થઈ હતી.

ધારીમાં પ્રાકટ્ય મહોત્સવ—આજે અખંડભૂમિલાલ્યાયવંશ ભક્તિમાર્ગપ્રવર્તક શ્રીમદ્ વલ્લભાચાર્યજીનો જન્મ ઉત્સવ ઠોપાથી બારિક વેષ્ણુવોના હૃદયમાં આનંદનો ઉદયિ ઉજળો રહ્યો હતો. સંજના પછી ૭ વાગતાંના સમય સભાનો સમયો હતો. હવેલીના ચોકમાં ધન્ય પતાકાથી સજ્જારી શ્રીમદ્વાપ્તજીના ચિત્રજ એક હંચા આસન ઉપર પધરાવ્યો હતા. સમય થતાં શેઠ ચત્રજીન આજુકાને ધેરથી મંગળ કલશ પધરાવી બહેનો અને ભાઈઓ મંગલ વધાઈથી આવી હવેલીએ આવતા હતા; રસ્તામાં છોટનીયાના અભાવે—ધારી પુષ્ટિમાર્ગીય પાદશાળાના બાળ વિદ્યાર્થીઓએ આજે, રસ્તે મંગળ રતોત્રે મધુર ચાણીમાં આઈ. શ્રીનાથજી, શ્રીમદ્વાપ્તજી અને શ્રીસુસંધિજીના નવજનિથી આજા શહેરમાં આજનો માર્મિક ઉત્સવ પ્રદર્શિત કર્યો હતો. તમામ મંડળ હવેલીએ પહોંચતાં સમાના રૂપમાં ગૌહાલ મયું. શેઠ ચત્રજીન આજુકા તરફથી કળસની આરતી થઈ એકંદર ભેટની રકમ પણ સારી થઈ હતી. પાદશાળાના વિદ્યાર્થીઓએ ધાર્મિક સંવાદો કર્યા ઉપરાંત રતોત્રે મધુર સ્વરથી બાઈને સમાજનોનાં મન આકર્ષ્યાં હતાં. માસ્તર દરિદાસ જીમનાઈએ શ્રીમદ્વાપ્તજીનાં દિવ્ય ચરિત્રોનું યશોમાન વ્યાખ્યાનરૂપે કર્યું. તેમાં અપખીનું આ ભૂતળે ઉપર પ્રકટ્ય પવાનું મુખ્ય કારણ વિસ્તારપૂર્વક વર્ણવ્યું હતું. ઉપરે હર સાવે મુજબ શેઠ વિશ્વામ પુરોહિતમ તરફથી તમામ વેષ્ણુવ ભાઈઓને અનસખા મદાપ્રસાદ વંટાળી શ્રીમદ્વાપ્તજીના જય પત્રોનિ વચ્ચે સભાનું કામ સમાપ્ત થયું હતું. એકંદરે આજનો આનંદ આ રવજના પ્રમાણમાં ખૂબ થયો એમ કહેવામાં જરા પણ અતિશયોક્તિ નથી. પુષ્ટિમાર્ગીય પરીક્ષામાં પાસ થયેલા વિદ્યાર્થીઓનાં ફનાઓ પણ આજની સભામાં વહેંચાયાં હતાં.

વડવાણુમાં આનંદ—શ્રીમદ્દનમોહનલાલજીની હવેલી તથા શ્રીકેસરીયામંડલી તથા શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય વેષ્ણુવ મદાસભાની જોડીસ, ધન્ય, વાવરા, તોરજો, હવાદિથી સજ્જારામાં આવ્યા હતા. ર ચૈતર વદ પાંચમથી અબીયારસ કુદી રાત્રે મંડલીમાં નિત્ય નિવસ થયા બાદ સમાજમાં વધાઈએ જોલવામાં આવી હતી. ૩ ચૈતર વદ ૧૨ ના રૂબ દિવસે પ્રભાતે (મૂળજંઘાસ તરફથી શ્રી કેસરીયા મંડળને અપહ્નુ કરવામાં આવેલ મહાનમાં) વિધિસર મંડલીની રચાપના કરવામાં આવી હતી અને ત્યાંથીજ કલસ સદિત વરધેડો મદવામાં આવ્યો હતો. તેમાં પ્રથમ જ્વલ સાખતમાં આવેલ હતી. ત્યારબાદ બાલ મંડલીના બાળકોએ નાના વાવરા રાખ્યા હતા. અને શ્રીની જય મુન પણના વચ્ચારો કરતા હતા. ત્યારબાદ પતાકા રાખવામાં આવ્યા હતા. તે પછી વેષ્ણુવોના સમુદાય આવતો હતો અને ત્યાર પછી શ્રીકેસરીયા મંડળના મેમ્બરો અને છોટનાકરો સમાજના જય લલકારતા હતા. ત્યારબાદ એક નાની ગાઢીમાં શ્રીમદ્વાપ્તજીના ચિત્રને પધરાવવામાં આવ્યા હતાં અને તેઓથી સન્મુખ શ્રીમાનિરૂપાં આરંભ મદારાનશ્રીના ચિત્રજ પધરાવવામાં આવ્યાં હતાં. ગાઢીની બંને બાજુએ મોરસલી સાંચે બાળકો આવતા હતા. ત્યારબાદ બાળાઓએ આરતી તથા કલસ પધરાવ્યા હતા. ત્યારપછી શ્રીજી સુંદર ધોળ જોલવી ચાલવી હતી. આ વરધેડો ફરજારમદ પાસે થઈ મદાસભાની જોડીસ આજળે થઈ (મદાસભાના મંત્રીએ શ્રીચિત્રને સુમધી અગ્રીત શુદ્ધાદેવ કથાની અને મુખ્યમંજી ધરાવી હતી.) ત્યાંથી દિવાન

સાહેબના રહેણાં રસતો લઈ વરગેટો હવેલીએ પહોંચ્યા હતા ત્યાં તિલકના આચાર્ય દરેન યથા અને ત્યાં સમાજ, વધાઈ, ઘોળ, હીચ હમચા, ઈત્યાદિથી આનંદ કરવામાં આવ્યો હતો ત્યારબાદ વરગેટો ખાંડી પોળ થઈ માધાવાવ થઈ મોતી ચોકમાં અને ત્યાંથી કંસારા બનરમાં થઈ શ્રીકેસરીયામંડળીના મુકામે હતર્યા હતા ત્યાં વેખ્ણુવાને મહાપ્રસાદ વંચાયા બાદ શ્રીની નયચોયણ સાથે વેખ્ણુવા પોતપોતાને પેર ગયાં હતા. ત્યારબાદ સંજે પાંચ વાગતાં શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય વેખ્ણુવ મહાસભાની ચોક્કસમાં સભા રાખવામાં આવી હતી. તેમાં પ્રમુખરથાને ગોસ્વામી શ્રીદ શ્રીમદ્ અનિરુદ્ધચાર્યજી મહારાજશ્રીના ચિત્તને પદચાલવામાં આવ્યાં હતાં અને તે પછી ચતુરદાસે અનેક સિદ્ધાંતિ, દર્શાવ સાથે શ્રીમદ્ગ્રંથપુણ્ય દુક લખનચારિત્ર વિષે બાપજી કૃત્વ હર્ષઃ ત્યારબાદ પુષ્ટિમાર્ગીય વેખ્ણુવ મહાસભાના મંત્રી ગોપાલદાસે તેમના બાપજીને ટેકા આપીને આનંદના આ શુભ દિવસનું દુક વર્ણન સમભવ્યું હતું અને ત્યારબાદ ભગવદીય લલ્લુભાઈ ભગવદાલ તરફથી મળેલ ગોસ્વામી બાલકેના ફેરોએ વહેંચવામાં આવ્યા હતા. ૫ ત્યારબાદ રાત્રે નવ વાગે શ્રીકેસરીયા મંડળીના મુકામે નિત્ય નિયમ યંચાબાદ સમાજ ઈલાદિ કરવામાં આવ્યાં હતાં અને ત્યારબાદ શ્રીકેસરીયા મંડળીના કાર્યકર્તા ગોપાલદાસે આ મંડળીની રચાપના થયાને ૨૬ વર્ષોના અદેવાલ તથા આજ સુધીમાં જે જે ભગવદીયો તરફથી આ સંસ્થાને મદદ મળી હતી તેઓના આભાર માનવામાં આવ્યો હતો જે આ નીચે પ્રમાણે છે:—(૧) શ્રી કેસરીયામંડળી આજે પોતાની રચાપનાને ૨૬ વર્ષે પસાર કરી અને ત્રીસમા વર્ષમાં પ્રવેશ કરે છે. (૨) મુખ્યાલ્ય દામોદરદાસ (તે શ્રીમદ્ ગોદાવળ રહેવાસી) તેમણે આપણા ઉપર મદાન પરિશ્રમ હતાની અને આપણને અન્ય માર્ગથી બચાવી અને સ્વમાન (ભગવદ્ભક્તિ) માં જોડયા તેટલુંજ નહીં પણ સાથે સાથે અનેક પ્રકારની અમૂલ્ય પુસ્તકો (હરત્રિવિધિ) ની જોડ આપી અને આ મંડળીને આગળ ધયાવી પોતાનું નામ અમર બનાવી ગયા. (૩) આ મંડળીની રચાપના કરવાની આજ્ઞા ગોસ્વામિની શ્રીરાધામાજી (શ્રી ભમનગરવા) શ્રીમદ્ગોદાવળશ્રીએ આપી અને આ મંડળીને કૃતાઈ કરી. (૪) આ મંડળીની રચાપના દરજ વેખ્ણુવ અશ્રુતકાલ બાઈની હેમરેખ નીચે કરવામાં આવી હતી અને તેઓએ મોટા પરિશ્રમ લઈ મોટી રાતોના ઉભરા કરી પોતાની નિરવાઈ સેવા બનવી આ મંડળીને પંક્તિમાં આણી છે. (૫) આ સંસ્થાની શરૂઆતમાં ૫. બ. જવારામગાઈ મંગલજીએ પોતાના ખર્ચે અનેક સાજા ભેવા કે નગારા, દોકડ પખાવજી ભજમ ઈત્યાદિની મદદ આપી અને પોતાની ચુદરચાઈ દીધાવી. (૬) આ મંડળીની રચાપના થઈ ત્યારથી આજ સુધી ૨૬ વર્ષ સુધી ૫. બ. અમરસીમાઈએ પોતાનું મકાન વાપરવા આપી પોતાની ઉદારતા બતાવી એટલુંજ નહીં પણ પ્રસંગોપાત અનેક પ્રકારની નાની મોટી મદદો કરી રહ્યા છે. (૭) સ્વસ્થાન શ્રોતબત્તર નદરા ભગવદ્ધર્મવચચણ મહારાજા શ્રી સાત શ્રીબલવીરસિંહજી બહાદુર તરફથી આ સંસ્થાને પેટ્રોલિક્સ બની એક તથા દારમોનીયમ હાયપેટી એક આપી અને આ મંડળીની સાલની ખામી દૂર કરી છે. (૮) ભગવદીય ગંગજીસાઈ નયુસાઈ (પ્રમિલાવાળા) આ સંસ્થાને પતાકા નં. ૨ કરાવી આપી આ મંડળીના સાજામાં ઉમેરો કર્યો છે. (૯) આ સંસ્થાને અનેક ભગવદીયો તરફથી અવારનવાર નાની મોટી મદદો મળી રહી છે. (૧૦) આ મંડળીમાં કેટલાક વેખ્ણુવા પોતાનું લવાજમ ભરી અને ગેમ્મર બની અને સેવા બનવી રહ્યા છે. (૧૧) કોઈ દિવસ કોઈથી નંદિ વીસરાય તેવું પરમ ભગવદીય મરભટી મૂળચંદ્રદાસ ભેગલાઈએ પોતાનું મકાન આ મંડળીને અર્પણ કરી અને પોતાનું નામ અમર બનાવ્યું છે તેટલુંજ નહીં પણ હજી તેઓને આ મંડળી વિષે કેટલી ઉમેદ છે. (૧૨) આ મંડળીમાં જે જે ભગવદીયો તરફથી જેટ મળી છે તેઓની અગોને યાદ છે તેટલાની નોંધ લીધી છે તે સીવાય કોઈ ભગવદીયદાસ કોઈ જેટ મળી હોય તેમનું અગોને ભણી નહીં દોવાથી કદી રાક્યા નથી તેો સમા કરી. ૬ ઉપરોક્ત નામવાળા ભગવદીયો તરફથી આ સંસ્થાને લખ્યા પ્રમાણે મદદ મળી છે તેઓના આ મંડળી આભાર માને છે. એજ.

મોટીમારડ (કાઠિયાવાડ) માં આનંદ—અત્રેની હવેલીમાં શ્રીમદ્ આચાર્યચરણના નન્મ દિવસ નિમિત્તે શ્રીમદ્ગોદાવળ પ્રથમે પૂજાર્માં હુડાવવામાં આવ્યા હતા, અને રાત્રેજોખ વખતે નન્મ નયન્તિતો હરસવ માનવામાં આવ્યો હતો અને શ્રીમદ્ગ્રંથપુણ્યની વધાઈ ગાવામાં આવી હતી. અને વેખ્ણુવ નતતાના હૃદયમાં આનંદ છવાઈ રહ્યો હતો. આનંદના દુલમંડળી કરવામાં આવી હતી. અત્રેથી ત્રણ ગાંડ

છેતે બાદેર આગે આ જન્મભય'તિ પ્રસંગ માટે ટંકારાચલા શેઠ જન્મનાદાસ દયાલભાઈએ અનેની કીર્તનમંડળીને આમંત્રણ કરી હોય કીર્તન કરાવ્યા હતાં. અને ટાટી લીલા કરવામાં આવી હતી. અનેથી વીસ કીર્તનીઆ લાંબાયાં હતા અને અપૂર્વ આનંદ લીધો હતો. સતનાં ચાર વાગ્યા સુધી ટાટી લીલા ચાલી હતી. અને કીર્તનાયજીની ભેટમાં ઠીક રકમ ભરાઈ હતી. ખીજે દિવસે સવારમાં ઠગી રનાન વગેરે પરચાયા બાદ એકાદ કલાક કીર્તનમાં ગાયથો હતો અને ભારેબાદ સોએ મહાપ્રસાદ લીધો હતો. આ વખતે શેઠ જન્મનાદાસભાઈએ હતમ પ્રકારની વ્યવસ્થા કરી વૈષ્ણવ મંડળની પળી રોચા કરી હતી. ભાર બાદ સંતનાં ચાર વાગે શ્રીમદ્વિસાનપરતપ્રી નય 'શ્રીમદ્દાપ્રભુજીની નય' બોધાવી વૈષ્ણવ મંડળે બાગ રરતે પરત મોટીઆર આપ્યું હતું. આ પ્રમાણે શ્રીમદ્દાપ્રભુજીના જન્મ મહોત્સવ દિવસ નિમિત્તે સોએ અપૂર્વ આનંદ લીધો હતો.

શ્રીવલ્લભ નય'તિ મહોત્સવ ટંકારા—તા. ૨૦-૪-૩૩ ના રોજ શ્રીવલ્લભ નય'તિ મહોત્સવ સમરોહથી ઉલ્લસવામાં આવી છે. આ મહોત્સવ નય'તિ ઉલ્લસવા માટે શ્રીવૈષ્ણવ ધર્મ મહાસભાના કાર્ય-કર્તાઓ અઠવાડીઆ પહેલાંથીજ અતિ ઉત્સાહવાળા હૃદયથી તૈયારીઓ કરી રહ્યા હતા. છેવટે એ અનેશ મહામુલો અવસર આવી પહોંચ્યો. ધમવાવિકોનાં મન આનંદથી હથળી રહ્યાં હતાં. સાંપ્રદાયિક નર નારીઓને મન આનંદો દિવસ કંઈ નોખીજ તરેહનો આનંદદાયક લાગતો હતો, કારણ કે આજના પવિત્ર દિવસે શ્રીમદ્દાપ્રભુજી આ વામંડલ ઉપર આધમ જીવને ઉદ્ધારવા અને વિધર્મીઓએ કરેલી ધર્મહાનિને વારંવાર કરી ફરીથી દિવ્ય ધર્મની રચાપત્ર કરવા પ્રગટ થયા હતા. આના મહાન ધર્મરચાયક, પરમ દયાનિધિ પરોપકારક સર્તા વિમુક્તયઃ એ સૂત્રનું અક્ષરસઃ પાલન કરવા તનતોડ પ્રયત્ન કરવા પ્રયાસ કરનાર દિવ્ય વિમુક્તિના જન્મમહોત્સવ ઉલ્લસવા કોણ તૈયાર ન હોવ ? નય'તિના વ્યવસ્થિત કાર્યક્રમ માટે આગળથીજ સોની હીરજીભૂષિના આગામમાં એક બંધ મંડપ ઉભો કરવામાં આવ્યો હતો. આ મંડપનું કાર્ય એટલી કુશલતાથી કરવામાં આવ્યું હતું કે આ મંડપને નીરખવા માટે ટંકારાની પ્રમંથાલી પ્રજા ઉત્સાહ પૂર્વક આવતી હતી. ત્યજે નિયમમાંજ તે રખો હોય તેમ તેની ચોલા અદ્વૈતિક હતી. અદ્વૈતશક્તિના તેજોમય પ્રકાશમાં મંડપની દિવ્ય પતાકાઓ પવનની સાથે મહાપ્રભુજીના પ્રાગટ્યની વાતો કરતી આનંદથી ફૂલફાટ કરી હર્ષ પ્રેરણિત કરતી હતી. વાણુદેવ પણ તે દિવસે આનંદમાં ગમ ધણે ત્યજે આ નય'તિમાં બાગ લેતા હોય તેમ પ્રજાજ વેગથી વાળને પોતાનો ઉત્સાહ પ્રગટ કરતા હતા. મનુષ્યો પણ પોતાનાં હૃદય પ્રેમથી, ધર્મભાવનાથી બરપુર લાગણીથી રોલતા રોલતા હર્ષથી પ્રદુષિત ધણે આ સમારંભમાં વાગ લેવા પુરતી સંખ્યામાં હાજર થયા હતા. પહેલું કાર્ય કળશનું હતું. આ કાર્ય કરવા માટે એક સરયસના આકારમાં સળગા મોઢાવાયા હતા. સરસ્વાતીમાં પાકરાળાના નિધાર્થિઓ વાવડા લેખને "શ્રીવલ્લભાધીશ મહોત્સવ"ના અક્ષરોથી અક્ષિત એક પોડ સાથે શ્રીમદ્દાપ્રભુજીનાં ચરોગાન ગાતા ગાતા ચાલતા હતા. તેમના આ રેતુલ કાર્યમાં મદદ કરવા તેમની પછી શહેરના સાંપ્રદાયિક નામરિકો વિદ્યાર્થીયોને જોડેજોડ કરતા કરતા ચાલતા હતા. કેસરીયા મંડલી પણ પોતાના સંપૂર્ણ સાજ સાથે શ્રીવલ્લભાધીશનાં ચરોગાન ગાવામાં તહીન જની ગઈ હતી. અને એ મંડળીના ચાલકોની આવી બાવપ્રસ્તિ અને ભક્તિયુક્ત રેતુતિ સર્વજ્ઞોને પ્રેક્ષા મુખ્ય થતા જતા હતા. અને છેવટમાં મનભક્તોનું તાદેશ ચિત્ર-પટ રજૂ કરતી કુમારિકાઓ પોતાના સુમધુર કંઠ વડે "શ્રીવલ્લભ આજ પ્રગટ હુશા રે" એ ગીત ગાંધે મેદાનીને પ્રભુજીના પ્રાગટ્યનું ચચાચ માન કરાવતી હતી. એકંદર આ બધુંય સરયસ ધમનાળતા પ્રબળ વાદિપ્રવાહ સમું, જનસમુદાયરૂપ મહાપ્રબળ પ્રવાહથી બક્ષિરસમાં મગ્નરવ જની, જનતાને આશ્ચર્યમાં નાખતું, ધર્મ ભાવના પ્રેરતું, અને આનંદ દેવાતું પરમ ભગવંદીય સોની પોષપટાલ કાલીદાસને ઘેરથી સંપૂર્ણ તૈયારી સાથે રવાના થયું. સરયસ શહેરના મુખ્ય મુખ્ય બાગમાં ફરીને સાતરવરપના મંદિર આગળ ધણે હવેલીએ પહોંચ્યું હતું. લાંબી શ્રીના તિલબા દર્શનની તૈયારી હતી. તેથી દર્શન શુદ્ધતાની સાથે વૈષ્ણવ નેરનારીઓએ બહુલા બહુલા ચાકમાં શ્રીની સાંનિધ્ય નંદમહોત્સવ કરી પોતાનો ભક્તિભાવ પ્રદર્શિત કર્યો હતો અને ઉપર મુજબ સવારના કાર્યક્રમ પૂર્ણ થયો હતો. બપોરના સા થી ૬ સુધી સભા સભામાં આવી હતી. સભાના પ્રમુખરથાને ઉત્સવપ્રતિનાં ચિત્રજીને પદસંપવામાં આવ્યાં હતાં. આ સભામાં સાંપ્રદાયીક અગ્રગણ્ય ગૃહસ્થો ભગવંદીય શેઠ શબ્દેશ્વર વીરથંદ, બ. દલસીદાસ ગોળદાસ, બ.

જગજ્ઞાન ગાવિંદજીમાં, જ. સોની પાપટલાલ કાળીદાસ તથા વેદચાસીજી લદમાસીકર દરિયાકર માટે દાનરી આપી હતી. આ ચિવાય બીજી અનેક સામ્રદાયિક વ્યક્તિઓએ સભામાં દાનરી આપી શેઠામાં આર વધારા કર્યાં હતાં. અમલદાર વર્ગમાં મે. ડોક્ટર સાહેબ કે. જી. દવે, સબ. આ. સરજન, મે. જેડ. મારતર સાહેબ એમ. એચ. નેશીપુરા બી. એ., કન્યાશ્રમચાલકશ્રીમતી મુખ્ય અધિકારી મદદરાય ગિરધરલાલ તથા શ્રીયુવ જે. એચ. બની તથા સાર્વજનિક સેવા સમાજના પ્રેસિડેન્ટ સાહેબ રા. આશુદેવ ભાઈ તથા આચાર્યસમાજના મંત્રી વૈદ્યરાજ સ્વયંભુજ શિવજીમાં દાનરી આપી હતી. રા. પાપટલાલ રામાંએ વેપ્પુવ જન તે તેને કહીએ એ પદ લલકારી તેનો અર્થ સમજાવેા હતા અને કન્યા શ્રમચાલક શ્રીમતી બાળાઓએ તેમના મુખપુર કંઈથી “પ્રજુ બીન કે નહિ અપના” એ માનવ પ્રાધને સત્તાને દિકમુદ કરી દીધી હતી. કાર્યક્રમમાં અંતરે અંતરે પાઠશાળાના વિદ્યાર્થીઓના આકર્ષિત સંવાદો અનુભવે જતા હતા અને મેંદનીને અપૂર્વ આનંદ આપી બહિરસ અંતરની હડાલમાં રેડે છે જતા હતા. પાઠશાળાના આ સુવ્યવસ્થિત કાર્ય માટે પાઠશાળાના અધ્યાપક રા. નવચરાંકર વિધનાય આચાર્યની સભાએ મુદત કંઈ પ્રસાંસ કરી હતી અને અધ્યાપકને તેમના આ કાર્યમાં મદદ કરી રા. બાનુસંકર છત્રજીલાલ બની તથા રા. પુરોહિતમ આપડલાલ બનીને પ્રથમ પદ સભાએ વખાણેા હતા. ઉપર લખેલા જે જે સભાઓએ સભામાં દાનરી આપી હતી અને પોતાથી બનતી મદદ કરી હતી તેને માટે આ સંસ્થાના અધ્યક્ષ તરફથી આભાર અનુભામાં આપેા હતા. આ સભાના કાર્યક્રમ દરમિયાન આચાર્ય સમાજના મંત્રી વૈદ્યરાજ સ્વયંભુજ શિવજીમાં ઉભા થઈને સંપ્રદાય તરફ સંતુષ્ટતા બતાવેને વેપ્પુવ ધર્મ મદાસભાના મેમ્બર થયા હતા તેમના આ સુલભ કાર્યમાં તેમના ધર્મપત્ની પણ ભાગ્યેા હતા. રા. મોહનલાલ કાળીદાસે પણ મેમ્બર તરીકે પોતાનું નામ નોંધાવું હતું. ફરા નામ બીજા પણ નોંધાયા હતા. આથી અમારા પ્રચાર કાર્યનું પહેલું પગથીયું સર થયું માનીએ બીએ.

ઉપરમાં રા. તુલસીદાસમાં ઉભા થઈને કાર્યના ઉપસંહાર કરીને પાઠશાળાના વિદ્યાર્થીઓના કાંમને વખાળીને તેમને ઉત્તેજ આપવા માટે રમણો વડેઆ હતા. ત્યારપછી સભામાં પધારેલા સંદેશકરમાં તથા સત્કારીઓના ઉપકાર માનવામાં આવેા હતા અને શોભાશાસીસતી નયનમંડા સાથે સભા વિસર્જન થઈ હતી. લાલજી દયાલજી રાણપુરા, મંત્રી, શ્રીવેપ્પુવધર્મ મદાસભા—દંકારા.

મે. ડોક્ટર સાહેબ કે. જી. દવે. સમ. આસી. સરજનના બાપજીને સારાંસ—તેઓએ સારાંસમાં જાણવું હતું કે શ્રીમદાપ્રજુજીના પ્રાકટ્ય વિષે રા. મંત્રીજી તથા રા. હેડમારતર સાહેબ લાલજી દોનાથી તેમનું પુત્રવધન કરવા કું ઇચ્છતા નથી તેથી કું મનુષ્ય ધર્મ એ વિષય ઉપર ચોડું બાંધીશા.

૧૨મો એક સંકેતી મદાસભાને લાલ મારી ફક્ત પિતૃઆત્મા પાળવા રા માટે વનવાસ સ્વીકારેા / સતી શિશોમળી સીતાજીએ રાજ્યના સુખ નેશવને ત્યાંથી રા માટે રામચંદ વનમગન પસંદ કરું / તદ્દમજીએ પણ પોતાના સરીર સુખથી દરકાર કર્યા વિના મદેડમાં રહેવાનું ઇચ્છી રા માટે રામ સામે જતાનું પસંદ કરું / આનો જવાબ આપણને એ મજશે કે તેઓએ પોતાનો ધર્મ બજાવવા માટે તેમ કરું હતું. અધ્યારના જવાબમાં ફરક મનુષ્યો પોતાનો કું ધર્મ છે તે બતાવેા જવા છે. અને તેથીજ ત્યાં રાં કસંભે જવામાં આવે છે માટે આપણે ફરક પોતાનો ધર્મ કું છે તે બતાવવાની જાણ જરૂર છે અને જે માણસ પોતાના ધર્મને વચાઈ રીતે બળે છે અને તે મુજબ વતન કરે છે તેજ હશે માણસ મનાવ છે.

મે. ડોક્ટર સાહેબ આ વિષય ઉપર સંપૂર્ણ વિચાર કરી અને શોભાઓમાં ધર્મ એ કું ચરક છે તે બતાવેા સમજાવું હતું અને પછી તેઓએ તેમનું સાબળ સમાપ્ત કરું હતું.

કન્યા શ્રમચાલકશ્રીમતી મુખ્યાધિકારી મદદરાય ગિરધરલાલમાં બાપજીને સારાંસ— મો મદાપ્રજુજીના જન્મ બેસા સંજોમાં થયેા છે કે જે તે વખતે આ મદાપુરને જન્મ ન હોત તેા કું પરિણામ આવત તે કહી રામાંદ નથી. તે વખતે મુસ્લીમ સત્તાની પ્રચર વિનયવંત પવત્રાએ કિંદુલને જાવામાં લઈને હજુવાનું સાર કરું હતું. ડોક્ટર ધર્મદાનિજ દશિયાર વતી હતી અને કિંદુ ધર્મ નજ પ્રાથમ વધેા હતા એટલે આ ઉપરથી સારીજ લાલ છે કે મદાપ્રજુજીના જન્મ સમારજી હતા અને જરૂર વખતે શ્રીજીના પ્રાકટ્યથી કિંદુજીને જાણ બજાવ થયેા છે. આ વિષય ઉપર તેઓએ જતા વખતે થયાં કરીને પોતાનું સાબળ સંપૂર્ણ કરું હતું.

શ્રીયુત જલદાર કર ચુંદરજી લતનીના લાપલુડી કુંકે સારસંસ—શ્રીયુત જનનીજ્યો પ્રેમ એ વિષય ઉપર વ્યાખ્યાન કર્યું હતું. તેઓએ જણાવ્યું હતું કે બરખાલુમાં પ્રેમ જુલો પ્રમાણે હોય છે. યુવા-વરયામાં આવતાં તેમ પ્રેમનું સ્વરૂપ ફેરવાઈ જાય છે. રૂઢાવરયામાં, વળી આ બન્ને પ્રેમ એક જ યથા કંઈ જુલુલ રૂપ પકડે છે. આમ દરેક અવસ્થામાં આપણને પ્રેમ જુલો જુલો તરેહનો દેખાય છે. જેવી રીતે એક જ વસ્તુ જોનારા જુલો જુલો માણસો તે વસ્તુનું જુલો જુલો રીતે વર્ણન કરે છે તેમ પ્રેમનું પણ મૂળ સ્વરૂપ એક જ છે. પરંતુ તે રૂપને આપણે બસબર સમજતા ન હોવાથી તે આપણને જુલોજુલો રૂપમાં લાગે છે. ઉપર મુજબનું પ્રેમ વિષય ઉપર સચોટ વ્યાખ્યાન આપી તેઓએ ભાષણ પૂરું કર્યું હતું.

શ્રીકામવનમાં પાકસાહોદધાટન—શ્રીમદાપ્રજ્ઞજીનું ચત પ્રાકટ્યોત્સવના મહાત્મ મંગલમય દિને “શ્રીદેવકીનન્દનાચાર્યસંસ્કૃત પાઠશાળા” એ નામથી એક ચંચાની સ્થાપના પૂન્યપાદ ગોસ્વામી શ્રોતહોભાચાર્યજી મહારાજશ્રીએ કરી છે એ જાણીને વૈષ્ણવોને આનંદ થયો.

“ચલો મચ્છેન્દ્ર ગોરખ આયા !”—આ વાક્ય હોત મરાઠર બન્યું છે. એ વાક્ય લખીને કોઈ ‘ભા’ આ પત્રના તંત્રીને સંભાગણુ આપે છે. પણ એ ‘ભા’ ને લાન નથી કે, મચ્છેન્દ્રનાય માયામાં હુધ્યા ન હતા. અલ્પમતિ ગોરખનાં મિથ્યાભિમાનને તોડવાનેજ મચ્છેન્દ્રનાયે માયાબળ રચી હતી. મચ્છેન્દ્રનાયને બચાવવા નીકળેલા ગોરખ પોતેજ આખરે ખરીવાણી પડયા અને ચુકળની માયામાં કંઈ સમજ્યો નહિ અને પોતાના વધોબળને જવં આખરે દુનવાની ચુરના ચરણમાં પડયા. નીસાગીસહીના વસંતઋતુના વિરમયત્નક દિવસોમાં, માદક પદ્યન્યા યેનમાં પડેલા ગરીબ બીચાર ‘ભા’ મચ્છેન્દ્રનાયની ફીલમ અર્ધાં રોધનેજ હાંધી ગયા લાગે છે તેથી અલ્પમતિ અને અલ્પસંહિત ગોરખને મચ્છેન્દ્રજીને માયામાં હુધ્યતા બચાવનાર તરીકે માની લેવાની બેવડી સરેલી નહોર જાહેર કરીને પોતાને કંડાઈ દસામાં ખૂંચાની ધમ્મચાસાહીને પણ ‘ભા’ જોઈ શકતા નથી ! ઉત્તરવાર અંજોસાં !

નવો કેસ માંડયો—આયસમાજના હોલમાં યથર્થ તોફાનને પરિણામે મુંબાઈની ચોલીરો કેટલાક આયસમાજીઓને અને કેટલાક વૈષ્ણવોને પકડયા હતા. તેમાં આયસ માજીઓની સામે પુરાવા મળતા નથી એમ જણાવીને તેમને છોડી ચુક્યા હતા. પણ છ વૈષ્ણવો ઉપર કેસ માંડયો હતો. આથી વૈષ્ણવ પક્ષના ત્રણ આરોપીઓએ (૧. હરિશંકર સાસ્ત્રી, ૨. જ્યેષ્ઠવાલ ગોવર્ધનદાસ, ૩. શ. હનનદાસ હરખજી) પોતાના નકીલ મી. કાનુગા સાથે બીરજામ કોર્ટમાં એક કેસ માંડી લીધો છે અને પેલા છુટી મથેલા આયસમાજીઓ સામે સમન્સ પણ નીકળી ગયા છે. આ નવો કેસ હવે પછી ચાલશે.

પુદિમાર્ગીય વૈષ્ણવોને ચેતવણી—શ્રીકામવનના ગોસ્વામી શ્રી૧૦૮ શ્રીમજ્જાલજી મહારાજ તરફથી સર્વે પુદિમાર્ગીય વૈષ્ણવોને ચેતવણી આપવામાં આવે છે કે સાત સ્વરૂપની નીધીનાં શ્રીમદ્ભગોદત્તજી શ્રીકામવનમાં બીસાને છે, તેમની કાઠી ભેટ વગેરે ને હોય તે શ્રીમદ્ભગોદત્તજીનું મંદિર શ્રી. કામવન, જહો ભરતપુર એ સરનામે મોકલાવવા બાકી કોઈ પણ બેઠીયાને આપવી નહીં, તેમ કોઈ પણ ગોલખમાં નાંખવી નહીં તેમ ચંદાવાદમાં શ્રીગોકુલચંદ્રમાજીની ભેટ સાથે અપાતી તે પણ આપવી નહીં કારણ કે અમારો કોઈ બેઠીયો નથી તેમ ગોલખ પણ નથી, મટિ ઉપરના સરનામે મોકલાવતાં. જોથી શ્રીને અંગીકાર થયો બીજાં ક્યાં પણ આપવાથી અમેને મળશે નહીં.

કરાંચીમાં યાદગાર સંમેલન—અનેની સનાતન ધર્મ પુવક સમાજો વાર્ષિક મહોત્સવ સુરતવાળા વિદ્વદ્ભાવ ગોસ્વામી શ્રીમત્સરતલાલજી મહારાજશ્રીના પ્રમુખપણ નીચે ઉત્તવાધો હતા. આ વખતે એક આકર્ષક લભ્ય મંદપ તૈયાર કર્યો હતો. શ્રીમદાપ્રજ્ઞજીને મહામહોત્સવ પણ ખૂબ ધામધૂમથી થયો. એ નિમિત્તે એક લભ્ય સમ્મારોહ થયો હતો અને શ્રીમદાપ્રજ્ઞજીનાં ચિરંજ તથા પવિત્ર ભગવદ્રૂપ નેનાં પુસ્તકો એક શાળાદેવી બાણીમાં પદ્યરસોને સહોદમાં વાળતે આનંદે એ યાદગાર લભ્ય સમ્મારોહ કર્યો હતો. આ ઉપરાંત મરાઠર સનાતની વડલા પં. અખિલાનંદજી, પં. રૂપનાથજી, સાસ્ત્રીજી શ્રીમતલાલજી, સાસ્ત્રી પદમાનંદજી, સાસ્ત્રી રવીન્દ્રનાથજી વગેરેએ યાદગાર ધાર્મિક બ્યાખ્યાનોની હાંડી વરસાવી હતી. મહારાજશ્રીના વિદ્વતાપજી બ્યાખ્યાને તે લાદે અસર કરી હતી. કરાંચીમાં આવેા લભ્ય સમ્મારોહ પહેલોજ હતો અને તે ચિરંમરણીય બન્યો હતો.

સાહિત્ય—દશમરંકંધ ઉત્તરાર્ધ શ્રીસુબાષિનીજી તથા પ્રકાશ આદિ સાહિત્ય ને કંઈ બાકી હતું તે બધું પ્રકટ થઈ ગયું છે. તત્ત્વાર્થદીપ નિબંધનો શુદ્ધસતી અનુવાદ પણ પ્રકટ થઈ ગયાનું સાંભળ્યું છે. વળી મુંબાઈવાળા નિલકોશીકારય ગો. શ્રીજીવંતજી મહારાજના નામથી પ્રસિદ્ધ થયેલી શ્રીવદ્ધમાખ્યાનની મજાવાયા દીકા શુદ્ધસતી અક્ષરેમાં શેઠ રવજી ભગતે છપાવી અને તે માન હ આનામાં વેચાય છે.

દેવગઢ બારીઆનો શ્રી યૌવજ્ઞે ત્યાંના દિવાનસાહેબને લખી આપ્યું છે કે, અમારામાં ધર્મ સંબંધી જે વકાર છે તેને નિરેડા લાવવા માટે ચતુર્થ પંચમીનાથી શરૂ કરવાથી શ્રીવૃક્ષાચાર્યના મહારાજની જે કાંઈ ફરમાવશે તે પ્રમાણે અમે નર્તીશું. એની કબજાત આપવાથી જ્યાં સુધી થાય માંડે છે. કારણ કે શ્રીમદ્દેવગઢની અનન્ય સૃષ્ટિ દરેકે ત્યાંના મહાત્મને પણ એવું લખી આપ્યું છે કે તે બધાઓએ જો. શ્રીવૃક્ષાચાર્યના મહારાજની આજ્ઞા મુજબ આવતા થઈ નય તો અમે તેમને મહાત્મનમાં લેવા ખુશી છીએ. આવા નિર્ણય ઉપર આવવા બદલ મહાત્મને અનેક મન્યવાદ થઈ છે. આખરે મહાત્મની સત્યની લક્ષ્ણો આ વિનયદંડે વાળે છે.

ચોખ્ખી પ્રતારણા—શોરાણથી બમરદીય પ્રાગજ્ઞાઈ લખે છે કે:—“સુખાદેવ” માં કેટલાક માસથી નહેરે ખબર છપાય છે. ગઈ ફાગરની-પાંચમી દરવાજા નેપ સાચી વૃક્ષમદાસ રયામજી રયામજીય એ નહેરે ખબર છપાવે છે. તેઓ શ્રીચેસ્ત્રામિયાલોકના ફેરાઓ થઈ એમાં પાંચ આનામાં મોકલી અપાવે છે. અમે પત્રવ્યવહાર કર્યો. એક દહન ઉપર રસા ટકા કમીસન આપવાની પણ તેમણે તાત કરી. આખરે અમે એક દહન ફેરા મંગાવ્યા ત્યારે પૂંકા પર ચોડ્યા વિનાના અગીયાર ફેરાઓ ત્યારે રૂપીઆના ત્રી. પી. થી અમારા પર મોકલી આપ્યા. આવી કમીસ માટે અમે પત્ર લખ્યો તેને જવાબ મળ્યો કે, “તમારા લખવા મુજબ અમલ થયો.” પણ અમલ થયો નહિ, તેથી અમે પ્રાદેશ નોટીસ મોકલી, તેનો જવાબ ન મળ્યો. આ ખરથી અમે નહેરે રીતે ચેતવણી આપીએ છીએ કે વૈષ્ણવોએ આવી નહેરે ખબરથી ફસાઈ નહિ.

શ્રીચંદ્રપ્રભુ વિષે એક ચેતવણી—શ્રીચંદ્રપ્રભુમાં છઠ્ઠીધરની એક બેઠક કામવનવાળા શ્રીમદ્દેવગઢના શ્રી ૧૦૮ શ્રીવૃક્ષાચાર્યના મહારાજની છે. અને તેમના તરફથી બેઠકમાં પડેલો છુટ્ટ પણ રહે છે તો પણ આ આ મૂલ માલિકે બની સાથે મોકલેલી પત્રિકા મુજબ છપાવેલી નોટીસો અમર પડેલો છુટ્ટો પણ પોતાની જ છપાવેલી છપાવી. આને ધણ વખતથી જ ચાલી રહેલું છે અને જેનું કોઈપણ મુદ્દત નથી કેટલાક રૂપીયા સેવાના નામથી આવે છે. જેનાં મહાને, જેવો પોતાના નામના વીવરમાં કરે છે. આ પાત તે બેઠકના મુખ્ય માલિકે અધિકારીઓએ તેમજ વૈષ્ણવોએ ખાસ સમજવા જેવી છે. તે આ વૈષ્ણવો દેશવરે સેવા કરવા જઈ હોય તો કામવનની જ પડેલો છુટ્ટ ચંદ્રપ્રભુની બેઠકમાં રહે છે તો તે છુટ્ટો અને મુખ્ય માલિકના અધિકારીઓએ આજ્ઞાપત સીકાવાલો કેમ મેળવે તદ્દી હોય અને આ સ્વર્ગ નોટીસો અને પડેલો છપાવવાનું શું કારણ હશે તે વૈષ્ણવો બહુી સારો અને માલિક શ્રી ચંદ્રપ્રભુની જેમજેમના બેઠકના છપાવત કરવા દેવા કરીએ. ફરકો.

નહેરે સભા—માર્ગ માસમાં અખિત્રમાસતરથી વર્ણુધમ સ્વરાજ્ય સંપત્તિ ખાસ મહાધિવેશન કીટલી ખાતે મળ્યું હતું તેમાં બાજ લેવાને અમદાવાદની જુદી જુદી સનાતની સંસ્થાઓના પ્રતિનીધીઓ તથા દત્તા. એ પ્રતિનીધીઓએ પોતાનો સ્વાતંત્ર્ય અને સનાતની જનતા સમક્ષ ગયે રવીનારે અનેની બીડીચની વાડીમાં એક નહેરે સભામાં કહી સંજયગ્યો હતો.

સરચાતમાં શ્રી. બાળાચંદ્ર મનલાલે સુરે આ સભાનું પ્રમુખસ્થાન પડેલ શ્રી. ચંદ્રપ્રભુજીના વ્યાખ્યાન વાચકપદીને આપવાની દરખાસ્ત મૂકી હતી અને તેને પોસલિક શ્રી. આનંદલાલજીએ રોકી આપતાં, સંવત્સરમાં મસાર થતાં, પડેલજીએ પ્રારંભિક વ્યાખ્યાન આપતાં મળ્યાં છે:—

દીક્ષીના ઉદ્દેશ વિરોધાધિવેશનમાં મળ્યા પ્રતિનીધીઓ દરેક પ્રતિભાથી તથા દત્તા. આપણા સંદેશના જે સંજોલો તથા દત્તા તેઓ આજે પોતાનો પ્રલક્ષ અનુસર કહી બતાવે. હું દીક્ષી તથા ન દત્તા, પણ અગ્રેષ્ઠ દીક્ષી, તથા જુનસાદી અખલાદે વચ્ચેના લાંબા વચ્ચે કાચથી હું મંડક વાકે થયો છું. જુનસાદાના પ્રતિનીધીઓએ લાંબા મહાત્મ્ય કર્યું છે જેમાં તો માર્ગમાં નથી. આધિવેશન ઉપરાંત લાંબી પણ ધારી સભાઓ થઈ હતી. આ બધા દેશવર છપાવેલો પ્રકર કર્યો નથી. ‘જુનસાદી’ માં એ ઉત્તમોત્તમ રીતે પ્રકર થયેલ છે.

‘કંપની બાજો’ કંપની—દીક્ષીમાં કંપનીબાજ નહેરે રયાન છે. એ રયાનમાં તો રાષ્ટ્રીય સમાજોનાં યતી. લાં કેટલાક નેતાઓ રાષ્ટ્રીય જાતને જનસમાજને નહેરેમાં જોડી ચૂં ચૂં સમજાવેને ધાર્મિક વિષયમાં કમતા હતા. પણ એ નહેરે રયાનને કંપની સતત પ્રચાર કાપ કરીને સનાતનીઓએ લીધો હતો. મુખ્યારેકની વાકાત નહોતી કે એ રયાનમાં નહેરે સભા બરી રાકે. સનાત નીઓએ તો ધર્મ ખાતર કુશાવતીની તર્કાત બતાવી દીધી છે. સરચાતમાં તો ત્યાં સમજાવેલું છે ત્યારે કેટલાક થયા અને જેમજેર

લલત ચલાવવી પડી. પંખી તો તે નહેર રંચમૂમીને પૂછી રીતે સનાતનીઓએ સ્વાધીન કરી હતી. એ ગમ્ય પ્રદેશ છે, ત્યાં મરદાઇ છે, હિન્દુમાં પણ બહુમતી આપણીજ છે. બનારસમાં તો ૧૫-૨૦ હજાર માનવ સમુદાય આ લલત માટે એકત્ર થાય છે. તે વખતે નૃતનોઆઓ તો સંતાપ નય છે.

બહુમતીઓનો ખાલુ !—આ સવાલમાં મદીર પ્રવેશ તરફ બહુમતી નથી એ મો. રંગાઆયરે પણ જોઇ લીધું છે! ધર્મના સીધાંતો બહુમતીના દેરથી ડાકા. એસાઇય નહી. લોકોમાં અત્યારે અસંસલનો ખૂબ પ્રચાર છે. અસંસલ તરફ બહુમતી છે તેથી અસંસલ જીવવું એ સિદ્ધાંત ન કહેવાય. હાંતમાં રસીયામાં નાસ્તીકવાદ ફેલાયો છે. ત્યાં ‘ઇશ્વર નથી’ એ વાદ તરફ બહુમતી છે. તેથી શું એ આદર્શ રસીયારી શકાય? અમારી બહુમતી છે એવી સુધારાની જૂમ તદ્દન ખોટી છે. ગુરુવાપુરમાં ગાંધીજી તરફ દયા બતાવીને સનાતનીઓએ તટસ્થતા દેખાડી હતી પણ તેનો હવે દુરુપયોગ થઇ રહ્યો છે. અત્યારે અંગ્રેજ બાલુવામિની સંખ્યા પાંચ ટકા જેટલીજ છે અને તેમાંથી બે ટકાજ સુધારકો હશે તો ૯૮ ટકા જેટલી બહુમતી સનાતનીઓનીજ છે. માર્કીયો તોડવાનું સિદ્ધાંત સુધારકોએ દેરાને આપ્યું છે. ગાંધી સનાતનીઓએ પોતાના દેરદાર સિદ્ધાંતોનું સદબળ બળ કેળવવાનું છે. એ આદર્શો અત્યારે નહી. તો હવે પંખી બધા માનરોજ. પ્રાચીન સુકેતો રથોષી, ખપપુરતુંજ અંગ્રેજ શિક્ષણ આપવું. આદર્શ સંસ્કૃતિનો પ્રચાર થશે. હવે હું પ્રો. દૂરકાલને દીલ્હીના અવુમ્મલો કહેવા વિનંતું છું.

પ્રો. દૂરકાલે તે પછી જણાવ્યું કે, દીલ્હીનું કાર્ય સંતોષજનક છે. સનાતનીઓની યોગી પ્રતિષ્ઠા પણ મો. રંગા આયરનું બીજ ટાંચે ચડ્યું છે. આ જેવો તેવો વિનય નથી. યોગી ગોઠા નેતાઓના લગીરય પ્રચારો પણ નિષ્ફળ નીવડયા અને બીજ જોરે પડ્યું છે. સનાતનીઓ આથી પણ વધુ ક્રમ કરશે તો ધારેલું કામ ફોલ્ગમંદ થઈ જાય. સનાતની કાર્યક્ષેત્રોનું મંડળ ઉત્તમોત્તમ કાર્ય કરી રહ્યું છે. નહેર રથાનો પણ તેમજી કબજે કર્યા છે. આર્થ સમાજઓ સાથે નહેરમાં વાદવિવાદ કરીને શાસ્ત્ર અને યુક્તિમાં સમાજજીને સનાતનીઓએ મહાંત કર્યા છે. એ સમિલનમાં ધણી એરોપ્લીના સલાસદારોએ બામ લીધા છે. હું નામ. વાઇસરોય, તથા પ્રો. રોહિટરી મો. એન્ડીર તથા હોગમિંબર બરેને પણ મથ્યા છું. તેમની પાસે સનાતની મહાંત જનસમૂહના વિચારો રહ્યું ક્યાં છે.

સંધ્યાલીટની મળના—કદર સનાતની અને દેશ લલત બારતબૂપણ શ્રી. સંધ્યાલીટને સનાતનીઓને કુંબકણની નિદ્રાથી ફર રહેવાનો પડકાર કરતાં કહ્યું હતું કે દીલ્હીનું તો તમે બધું સાંભળ્યું પણ તેથી રાજ્યધને હવે બેસી રહેવાનું નથી. જો હવે પ્રમુદ સેવરી તોખ્યાલ રાજાને કે મીસરની તથા જાળીસીયન પ્રભુને જેમ સર્વનારા થઈ ગયા તેમ તમારો પણ વરોચ્છેદ થઈ જશે. હવે તો સ્વચંદ્ર ફર છે, પણ જો પ્રભસત્તાક રાજ્ય થશે તો રંગાઆયર અને નંગાઆયર જેવા કેક લાએ ધર્મ પર મથા દુકરના બંધાર પડશે. આ મંદીરો અને મદંતો તેમજ મહાધીરો પણ હવે અજસગાં ને મોનનાંદમાં રહેશે તો એમનો પણ સર્વનારા સર્વધર્મોજ સમજાવે. જૂત રામાયણ તમે સાંભળ્યું પણ જો હવે તેથી ખુશાલીમાં આવી જશે નહિ. ના. વાઇસરોયે કહ્યું કે, ધર્મની બાળતમાં અને તટસ્થ છીએ. હું ખુશી રીતે જંગીવીશ કે, શહેનશાહ ના. પંચમ જ્યાં પ્રભના ધર્મ અને ધનના રક્ષણ માટે બંધાયેલા છે, ધન અને ધર્મ માટે પ્રભને કલેશ સેવેલા પટે તેવી સ્થિતિ જો ઉભી થાય તો હું ખુદ છું કે આ બીટીરા સરકાર! હવે તારું શું થશે? મારી તો અવરણ થઈ છે. નગીનભાઈ તો વાડજને જીતારે જશે. પણ જો આપ બાલુવા હવે નચૂત નહિ બનો, ધર્મ માટે પ્રાણ ત્યાગ કરવાનું સ્વમર્થ નહિ બંતાવે તો ખ્યાલ રાજાને કે જાળી સમજર છે. લાલમાં રાજપ્રભ, મીતમાલેક અને મનુકો; રોઠ અને નોકરો વચ્ચેના કથડા ઉભા કરવામાં આયા છે. આ વખતે આપ લોકો તૈયાર થાઓ, સ્વપદ બનો, હિન્દુલ અને સનાતન ધર્મનું અભિમાન રાખો.

વસંતરામ રાજપૂતીએ તે પછી દીલ્હીનાં કાર્યોના અભિદૂત મીતાર આપેલા હતા. વળી ત્યાંના ગાંધીવેલાં જાપાંઓ “હિન્દુસ્તાન ટાઈમ્સ” અને “અર્જુન” જેવાઓનાં અધ્યક્ષ અને અસત્યપૂર્ણ પ્રચારકાર્યોના પૂરાવા સાથે પરિચય આપેલા હતા. વિરોધીઓના આવા ગલીચ તથા લાચ કરે પ્રચારકાર્ય વચ્ચે સનાતનીઓએ નીરતાથી ને ફાંક મેળવી તેનો ખ્યાલ આપતાં કહ્યું કે—લાખ બે લાખની જનસંખ્યાની અસહકારની નહેર સલાને સુધાઈના “ટાઈમ્સ ઓફ ઇન્ડિયા” પંચે ચોંડા માણસેની સમા અચારે આજખાવા ત્યાં અસહકારી જાપાંઓ અંગ્રેજ જાપાં સામે ઉજડી પડ્યાં હતાં. અત્યારે એજ ગાંધીવેલાં જાપાં

સત્યનું નિર્દયતાથી ખૂન કરીને, ૧૫-૨૦ દબારની જનસંખ્યાની સનાતની સમાજોને પંદર નીસ માણસોની સુશા તરીકે જાહેરમાં ઝાળખાવતાં યત્નમાં નથી ! દીક્ષીમાં શ્રીયુત અંધરીજીએ એક દબાર ૧૩૫૫માં ફરમાવે બરીને અમદાવાદનું નામ ચાલ્યાર બન્યું છે. તેમણે પહેલાં પણ પંદરસો ૧૩૫૫માં બધાં હતા.

અમદાવાદ ડેપુટેશન—અમદાવાદની સનાતની જનતાએ રથપેશી શ્રી સનાતન વર્ણાશ્રમ ધર્મ સંસ્કૃત સભાએ એક ગેમોથલ તૈયાર કર્યું હતું, તેમાં અમદાવાદના લગભગ તમામ આચાર્યશ્રીઓ, મહંતો, મહાધારી તથા વિદ્વાનોની સદીઓ લેવામાં આવી હતી. આ ગેમોથલ આપવા માટે તા. ૧૬-૩-૩૩ ના રોજ પ્રેક્ષક શ્રી. દુરગાજી આગેવાની નીચે શ્રીયુત બોલાનાય ત્રિવેદી, શ્રી. બાલારામકર મનવાલ શુકલ, શ્રી. વસંતરામ સાસ્ત્રી; જેમનું એક ડેપુટેશન ના વાઈસચેયના પ્રા. રો. મી. મેન્ડીબને મળ્યું હતું અને ડેપુટેશનનો ધાર્મિક વિચારો લખીને પ્રા. સેક્રેટરી સાહેબે ધર્મની લાગણીની કદર કરીને, બહુજ દહાર તાથી નવાળ આપીને ધર્મની બાબતમાં સનાતનીઓની માનની તરફ ધ્યાન આપવા જણાવ્યું હતું.

બીજી ડેપુટેશન—સમગ્ર બારતવર્ષનું એક મહાત્મ ડેપુટેશન રાજમહારાજે, સદૃશકરે અને વિદ્વાનોનું ના. વાઈસચેય પાસે મળ્યું હતું. બુલરાતના પ્રતિનિધિઓ તરીકે જે ડેપુટેશનમાં સ્થાપી શ્રી અનિરંજનીયજી મહાધારી [એમ. એ. એલ. એલ. બી.] સૌથી સીટર મનુભાઈ ધંડયા, શ્રી. વસંતરામ સાસ્ત્રી, મનવાલ કામદાર સુટાયા હતા. તે વખતે પણ ના. વાઈસચેયે ધણેજ દીક્ષીજી બધાં નવાળ આપે.

દેશીનમાં સભા—સંવત્ ૧૯૮૨ ના ચૈત્ર કૃષ્ણ ૧૧ ને શુક્રવારના રોજ શ્રીમાન્ રોડ લક્ષ્મીદાસ પંદાપતના આમંત્રણથી શ્રીમદાચાર્યજીને જન્મમહોત્સવ ઉજવવા, અને તદવસદે પાઠશાળાના પ્રમુખ સદૃશક રોડ હરિદાસ ચંદુજી તથા પદોપધારી પુરુષોત્તમ સદૃશક રોડ નાનજી મેધજી તથા ચિત્રોને શ્રીમાન્ રોડ જોશામ દુરગાજીને હસ્તે ખુર્ચી મૂકાવવા એક જાહેર સમા શ્રીનવનીતકૃષ્ણમંદિરમાં આવેલ પાઠશાળામાં કરવામાં આવી હતી. કર્ણમૂલં અર્પણમં થી શરૂ કરી પુરુષોત્તમ પાંચને તાર મધુર સ્વરથી ન્યાદે લલકારી ત્યાદે પાઠશાળાના નવીન વિરાજ મકાનમાં એક તરફથી શ્રી વર્ગ પ્રવેશ કર્યો. “સમાનો કાર્યક્રમ” સર્વને મળી રહેતા, દરખાસ્તાનુસાર પ્રમુખસ્થાને સ્થાપી, જોશામધણે શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીના ચિત્રજીને પુષ્પમાળા પહેરાવી. વિદ્યાર્થી નાનાલાલ હાથીરામે દુરગાજી વેદિક રતુતિ હ્રમ્ય સ્વદે માળ જતાવી અને બીજા નાનાં વિદ્યાર્થીઓએ ટેચુકડા બ્યાખ્યાનો અને સંવાદો શ્રોતાઓને સંભળાયા. વિદ્યાર્થી ખુશાલ દાસ છવાભાઈ માલનીયાએ ઉપક્રમના આરંભમાં સમયની કરકસરીની જરૂરિયાત જણાવી, સમાનો કાર્ય અને વિષયનો અંક નિર્દેશ કર્યો. ઉપક્રમના ઉપસંહારમાં શ્રીમદાચાર્યજીના પુષ્પિમાર્ગપવની અજરતબરતા અને સદૃશક પુરુષોત્તમજીના બ્રહ્મસ્વંકની અચલતા અનેદ્રવતા ધ્યાની, પાઠશાળાના અધ્યાપક વે. સા. સં. સાસ્ત્રીજી હાથીરામ, રતનજી સાર્ગએ સદૃશક હરિદાસગાઈને નાનજીરાજના વિરુદ્ધ જીવન ચરિત્રોને ટુંકાણમાં આવેખી, ટુંક સમયમાં તેઓના સર્વ વલણોને રજૂ કરી, તેઓની સ્મૃતિને યુગ સહુજ્ય વેષ્ણુવર્મા રચાવેલ કરી સમાનો પ્રમુખ શ્રીમાન્ રોડ જોશામ છવરાજે સદૃશક પુરુષોત્તમજીના શુભોને અંશુલિનિર્દેશ કરી, ચિત્રોને ખુર્ચી મૂકવાનો લાભ દેવા બદલ કાર્યકર્તાઓને આભાર માની, હવે તાણીઓના નાદ વગ્ગે બને ચિત્રોને ખોલી, વિજળીકે જતોના પ્રકાશમાં વિપુલ સમાન કરી મૂક્યા. અભાર સુધી વેપારી લાજાના ૨૦ ટકામાંથી નિમજી પાઠશાળાને, વેપાર મંદવાને લીધે, લાજાની આવક પુરી ન પડતાં નવી યોજનાનુસાર મેસર્સ મૂળજી જોશામ. એ રૂ. ૨૫૦, રોડ હરિદાસ ચંદુજીને રૂ. ૨૨૫, રોડ નાનજી મેધજીને રૂ. ૧૦૦, રોડ લક્ષ્મીદાસ ચંદાવને રૂ. ૭૫, રોડ હરિદાસ પુરુષોત્તમજી રૂ. ૫૦, રોડ રામદાસ દરગાજી રૂ. ૨૫, મદિને મદિને આપવાનું જાહેર કર્યું. કેલિકાટથી મદોલસવ પ્રસંગે પધારેલા શ્રીમાન્ રોડ તલકચંદ પ્રેમજીએ મદિને મદિને પોતાના તરફથી રૂ. ૫૦ આપવાનું જાહેર કરી તેઓના ઉત્સાહમાં વધારો કર્યો. હવે રોડ જોશામ છવરાજ, રોડ હરિદાસ ચંદુજી અને રોડ નાનજી મેધજી તરફથી સારા દીનામે બાળકોને આપવામાં આવ્યા. રોડ પાનામંદ દેવજીજી તરફથી રૂ. ૧૫૦ ન અને રોડ તલકચંદ પ્રેમજી તરફથી બધે કોરી નેચા ને સુંદર પેન્સિલો વિદ્યાર્થીઓમાં વહેંચવા સમા મેદની શ્રીમદાચાર્યજીના નામાદારો ન્ય યોગ કરવી આનંદથી વિખરાઈ.

સોને માટે

તાકત-તાઝીવી લારપૂર

લગજતદાર

અંડુ દ્રાક્ષા સ વ

—વિના વિલગે—
વાપરવા માંડો

ખાસ ટ્રીઓને માટે

તનદુરસ્તી-તાકદથી લારપૂર

સીઓની નબખાઈમાં
આખાદ અસર કરનાર

અંડુ અશોકારિષ્ટ

પ્રદરાદિ રોગોના
અકસીર ધલાજ
દરેક ઘરમાં હોવો લેખ્યો

ખાણકોનાં પેટનાં દર્દોમાં

આખાદ કામ કરનાર

બિલકુલ
કેદ વગરનું

અંડુ બાલ શૂલાક

—ખાણકોવાળા—
દરેક ઘરમાં રાખવું લેખ્યો
—શીશી એકના આના બાર—

અંડુ ફાર્માસ્યુટિકલ વર્ક્સ લી૦ મુંબઈ નં ૦ ૧૪

અમદાવાદના એજંટ: બોગીલાલ અધસ, ૧૧૪, રીચીરોડ.

આપુર્વેદિક દવાઓનું સુચીપત્ર આજેજ મંગાવો.

विश्वना तारुण्यद्वारे श्रीमदाप्रभुलना विद्योद्वारः विजितानो
 'भयान् करु' सन्निभ भासिः

ସୁଧାଘ୍ନେୟ-ଭାବିତମାର୍ତ୍ତଃ.

पृष्ठ ८३

ज्यैष्ठ. संवत् १८८६.

ਪ੍ਰਿਥੀ ਦਾ

આહ્વાને વિનંતિ.

આમાથી વર્ષનો આ નીતો અંક આપના હંમત આપશે
આકાંક્ષક વર્ષની આપ આ બંધનો પેલા આપના છે તેના
તરફ આપ સર્વની મનન આ આપના સ્વભાવ અનંતો કેમકે
પૂરે છે પણ મહામંત્રે તે પ્રાપ્ત કરીને મહામંત્રે મળે
એવી અમર આપીને કાર્યકર્તાને પણ મુક્તિ આપનારો
હોયો છે તેણે પણ તેની હજારોમાં પ્રાપ્તોને મેં કરનાર
કે પ્રાપ્ત કરીને તેની કલ્યાણ જોઈને પ્રાપ્તો તોયો
જોઈને પ્રાપ્તોની નમ અનંત છે. વી. પી. ની આપના વધુ
કાર્યો આકાંક્ષક દીર પ્રાપ્ત આપના વધુ અંક છે.

આચાર્યશ્રી જીવજીવિ અને કૃતિ તથા ગાનગાન સમગ્ર
કવિના પ્રતિષ્ઠા તથા જગત્પ્રસિદ્ધિ માટે જાન્યવાર ૧૯૫૬
પ્રતિષ્ઠા સમારંભ તથા મેઘનાદ સમારંભ છે. ૧૯૫૬

१. १९६८, २१ मार्च की रै. ग.
अमरावती.

ત-ની રસે પ્રાપ્ત,
પરમ-નમ હૃદય-ગામી

वार्तिक प्रवृत्तये च इति-आ. (२११ अ० ६.)

લેખાનુક્રમ.

જાણે, મંવન ૧૯૮૯.

વિષયો.	પૃષ્ઠ.	વિષયો.	પૃષ્ઠ.
૧. સમસ્થાપિત ...	૮૧	૮. ભક્તિ કે ઉપાસના...	૮૨
૨. આત્મીય કીર્તન...	૮૨	૯. આપત્તવના રક્ષણ...	૧૦૨
૩. શ્રીપદ્મન ભક્તસંજ્ઞા પદો .	૮૩	૧૦. નામમાહાત્મ્ય ...	૧૦૩
૪. વચનામૃત ...	૮૪	૧૧. ગોવિન્દ ...	૧૦૫
૫. વેચનસુધા ...	૮૭	૧૨. સત્સંગમા ...	૧૦૮
૬. પ્રભુભક્તિ અને અત્યંતે ..	૯૩	૧૩. વરદશાટ...	૧૦૯
૭. શુદ્ધિત-ભક્તિમાર્ગ ...	૯૭	૧૪. શ્રીમદ્દામૃત અને મહાશાટ ...	૧૧૫
		૧૫. સાપ્રદાયિક પ્રવૃત્તિ ...	૧૧૭

અદ્ભુત અમરકાર !

અદ્ભુત અમરકાર ! !

ધોળા દીવસે તાર.

શ્રી ગિરીગજ આશુ તથા ગીરનાગના મહાભાઈ પાસેથી વળા દીવસના પ્રથમથી મહાન પ્રપત્તે દિવ્ય વિદ્યા મેળવી આનંદાર વૈદ્યરાજ ભાતીલાલ મહાશાંકર ભટ્ટ L. W. T. રાજકાવાસ કે જેમની પાસેથી નીચે બતાવેના દુ જે થી ગમી મકાષ છે.

૧. જેઓ ગેતાન શનુઓના પાસેથી કટાગી ગયા હોય
૨. વેપાગની ઉચ્ચ પાપયોગા નુકરનાતિમા આવી ગયા હોય.
૩. વાગીઆ પાણાના મેળા મેળાથી દૈવ્ય કક્ષી ઉદ્યા હોય
૪. તથા દરેક પ્રકારની મુશ્કરણ, નમની વીચારો ઉપર વિજ્ય મેળવી ધન, પુત્ર, માન, આશ્ર, મર, વેપાગમા લાભ, ઈર્ટ પ્રસન્ના કલેદ, સારા પ્રકાર નોકરી, શનુ વિજ્ય તથા સ્ત્રી પુરુષમા અણુ બનાવ રહેતો હોય તો અગ્ન પ્રેમ મરાવી આપનાર તથા દગરો દના વાપથી છવ્વ લય કર હમીના દહી નકરના કે દેવી કારણથી ન મટતા હોય તેમણે રૂમર મરી ખુલાસો મેળવી.

ફક્ત પાંચજ મીનીટમાં રૂમર મળવાથી તમારૂ આશુ ભવિષ્ય ફક્ત કહી દેવામાં આવશે. એક પ્રગતિ રૂ ૧-૪-૦ પાંચ પ્રગતિ રૂ ૫-૪-૦ આખા ભવિષ્ય ફક્ત રૂ. ૧૦-૩-૦ ઉપગત મુકે, મોટ, કાકણ, સાકણ, બલગક્ષસ તીરે નકરના કારણો પેતાની દેવી પ્રયોગોના બગથી અજબ રીતે દૂર કરી કરી સકાય છે. મોળે યા લખો,

વૈદ્યરાજ ભાતીલાલ મહાશાંકર ભટ્ટ. L. W. T.

(મગદળાની ખામ વેલ)

કે કકડીકની પોળ મામે, ખાણીનીવાસના મેડે, આગળ—અમદાવાદ

સાપ્રદાયિક ગ્રંથો ક્યાંથી મેળવશે ?

મુદ્રિત થયલા તથા નહિ મળતા સંસ્કૃત, મળ, હિન્દી, ગુજરાતી અને અંગ્રેજ ભાષાના સાપ્રદાયિક નવ ગ્રંથો નીચેને સ્થળે મળશે ચોગ્ય કમીશન પણ આપવામાં આવશે બહારનામની માગણી પર પૂરું ધ્યાન આપવામાં આવશે.

લખો યા મળો —

ભારત માર્તંડ પંડિત શ્રીગદ્ગદાલાલની સંસ્થા,

નં. ૫૧/૫૩ કેથેડ્રલ સ્ટ્રીટ, ભુલેશ્વર, મુંબાઈ નં. ૨.

श्रीवाक्पतिपादा विजयन्तान्तमाम् ॥

पृष्ठ ८.

अंक ३.

शुद्धाद्वैत

अने

अथ

१८८८.

श्रीवृद्धसाधक

४५५.

सहितमार्तः.

करुणा दृगेपा.

(के.—शास्त्री दुर्लभजी देवदृष्ण रवाजिराज संस्कृत पाठशाला मोरयी.)

उद्धर्तुमङ्गीकृतजीवदृष्टान् खलान्प्रहन्तुं सुवि भारभूतान् ।

धर्मावनार्य सहसाऽवतीर्णः कृष्णस्तदीया करुणा दृगेपा ॥१॥

विषेः समाधौ हरिणा यदुक्तं सत्यं विधातुं वचनं स्वकीयम् ।

कारागृहेऽपि स्वयमाविशसीत् पूर्णा तदीया करुणा दृगेपा ॥२॥

अजे जगत्यां निशि जायमाने गुणा ऋतूनां प्रकटीवमूवुः ।

कुल्लानि पद्मानि सतां मनोऽजैर्मूर्मासुक्ता करुणा दृगेपा ॥३॥

अलौकिकाकल्पविभूषिताङ्गो भाजन्करः उद्धृगदाम्बजैः ।

प्रभुः पितृप्रार्थनया बभूव यः प्राकृतोऽर्भः करुणा दृगेपा ॥४॥

मात्रा च पित्रा विदितोऽपि साक्षात् परः प्रकृत्याः पुरुषः खुतोऽपि ।

ताभ्यां तु विस्मारितवान्महत्त्वं लीलां विधातुं, करुणा दृगेपा ॥५॥

विरोर्मये वीर्य्य समीक्ष्य पूर्वं दत्तं श्रुतिभ्यो न्यरमात्मनैव ।

लीलोदधिं स्थापयितुं पृथिव्यां जगाम घोषं, करुणा दृगेपा ॥६॥

प्राकट्यलीलाजनितं सुखं यच्छ्रीगोकुले स्वाननुभाज्य मूमा ।

भावानुरूपं विततार कृष्णो निज्यं निजेभ्यः करुणा दृगेपा ॥७॥

यन्मायया बद्धमिदं हि विश्वं प्रीत्याश्चेतोजननीनिबद्धः ।

संदर्शितं भक्तवशान्वमेवं कृष्णेन पूर्णा करुणा दृगेपा ॥८॥

पद्मः स्वयं भक्तवचोऽनुसारी विषय मुक्तौ छ्युः वृक्षभावात् ।

ददौ स्वर्भक्तिं धनदात्मजान्यां श्रीगोकुलेभ्यः, करुणा दृगेपा ॥९॥

कृणावतारं सफलं विधातुं परं पवित्रं-भगवच्चरित्रम् ।

व्यासः पुराणेषु जगद्विदितार्थमूचे तदीया करुणा द्योषा ॥१०॥

व्यासोक्तिमप्यत्र मत्तान्धकारैर्बद्धनां सदग्रे प्रकटां चकार ।

तत्त्वार्थदीपेन हि बलभाभिः पूर्णां तदीया करुणा द्योषा ॥११॥

‘ नवं करोति ’

श्रीमद्गुरोः पादनखार्करश्मिः स्वान्ताम्बराज्ञानतमस्तृणेदि ।

ज्ञानप्रकाशात्सफलं स्व नेत्रं स ध्यायतो जन्म नवं करोति ॥१॥

वृक्षान्दलैर्भूषयते नवीनैः पुष्पैः फलैर्वा सरसैर्मनीशैः ।

पुंस्कोकिलान्कूजयते नगस्यान् वनं वसन्तो हि नवं करोति ॥२॥

अनेकशः शाखवचोऽनुभूतं संकीर्तने वा श्रवणे मनुष्यैः ।

सनततनं चापि तदेव वाक्यं प्रज्ञावतां वाक् तु नवं करोति ॥३॥

सङ्गः सतां बुद्धिमलं प्रमार्ष्टि हिनस्ति पापं मुकृतं प्रसूते ।

पुराकृतैः पुण्यचयस्तु लब्धौ जनुर्गुणां चापि नवं करोति ॥४॥

कर्णातिथिः कृष्णकथा यदि स्यात् सत्त्वं विशुद्धं श्रुतिप्रणाशः ।

मैत्री तथा स्याद् भगवज्जनेषु ततो नृणां जन्म नवं करोति ॥५॥

प्राचीन कीर्तन.

राग सारंग ॥ कुंजमहल प्याकि के संग बैठे लाळ करत रंग अघर सुरली घर स्याम सारंग
सुर बजायो ॥ अघर विकट तान छेत सप्त सुरसों गात्र उपजावत मान विविध भांत रस
॥१॥ मंद सुगंध बहत पवन सुंदर आति सुखद भवन रीझ रापे पियाके संग मधुर मधुर
॥ छतिस्वामी गिरिधर मगन भये आंको भरत सुखसवाद ता समेको कहत न वानि आयो ॥
॥ ठाडो कदमतर जमुनाके तट पीत टिपारो ब्रजजन मोहे ॥ कटि उट काळ पीत उपरेना ओर
बैजयंती कंठ विराजत करनफूल अति सोहे ॥१॥ सुरली बजावत गत उपजावत उपज छेत छंद भारी ॥
न्यारी नंददास प्रभुकी छवि निरखत कोटि रति पति बारी ॥२॥ पद ॥ जमुनातट ठाडे सुरली
बजावे मोहन मदनगोपाल ॥ सीस टिपारो लाळ कावनी पीत उपरेना, उर राजत वनमाळ
॥१॥ कमल किरावत गत उपजावत अतिरस गीत रसाळ ॥ कुमनदास प्रभु त्रिभुवनमोहन
गोवर्धनधरलाळ ॥२॥

राग कल्याण ॥ लाडिले गुमानी हो पिय निरखत दगन छुमानी ॥ कुसुमकली हो
वीनन निकसी सघनलता अरुमानी ॥१॥ सोंपे सार बदनकमळ छब मधुप करत नकवानी ॥
ब्रजाधीस प्रभु रंगीले रसिया छतियांसों अँखियाँ सीरानी ॥२॥

[धंभद्वताः—कण्वी चैष्णव चंद्रालर्जा लाखा केशोद्वारा.]..

श्रीपद्मनाभदासजीके पद.

या प्रकार श्रीमहाप्रभुजीके भूविलास तथा अंतःकरण तथा नेत्रकमल वर्णन करके अब इनके मध्य भागमें जो मुस्तारविन्द है ताको वर्णन करत है वागधीन इति ॥ वाक्-वाणी-सरस्वती ताके अधीश जो भगवान तद्रूप श्रीमहाप्रभुजी है । 'वस्तुतः कृष्ण एव' वा नामके भावभावित होय एव पदसो निश्चय करके यही है, अर्थात् वाणीको स्थान जो मुस्तारविन्द है तद्रूप आप है । और युवजन जो ब्रजभक्त है उनके रसमूली भी आपही है, अर्थात् रसके मूलहं धारण करे सो रसमूली । याँते उनकुं रसकी प्राप्ति भी मुस्तारविन्दसों ही होय हैं यह सूचित कीनी । अब यह रस ब्रजभक्तनकुं कीनके द्वारा प्राप्त भयो है सो कहत है मुरली । या पदसो वेशुके द्वारा प्राप्त भयो है, यह वहाँपीडं या शोकमें स्पष्ट हैं । मधुराई कहिवेसों वा रसकी जो गीतास है वासों कोई कालमें तृप्ति नहि है । अर्थात् सर्व काल वाहीकी इच्छा घनी रहे, वाहीकुं मधुराई कहत है । एसो जो मधु-मधुररस-मधुराई लियो भयो वेशुके द्वारा ब्रजभक्तनकुं प्राप्त भयो । वेशुकुं सुखी कहिवेसों भगवानने वा वेशुकुं मुरके लीनी ताँतों मुरली एसे फयो । भगवानकुं ब्रजभक्तनके लिये रसदान करने हे ताको उत्सुकतासों वेशुकुं मुरके छेत मापही रस-दान करिवेके आनंदके आवेशमें देहानुसंधान नहि रहिवेसों वेसे ही ललित त्रिमंग होय स्थित है । यह मुरली पदसों सूचित कीनी, (यहां भावनाको प्रसंग है ।) प्रमेयप्रकरणके सातमें अप्यायमें श्रीद्वारकाधीशके स्वरूपसों वेशुनाद करके अपने दशरसयुक्त रसरूप स्वरूप गोपीजनके अंतर्में स्थित कीनी । और द्वारकाधीश स्वरूप और त्रिविक्रम स्वरूप एकही है अर्थात् चरण, फटि, तथा श्रीवा ए तीनों भाग क्रमसों नहीं, ताँतों त्रिविक्रम स्वरूप है-अर्थात् एककालवाचिन्तन अनेक लीलादर्शयवेकेलिये यहां फलप्रकरणमें भी भगवान त्रिविक्रम स्वरूप कहिये छलित-त्रिमंग स्वरूपसों स्थित है । यहां मुख्य शृंगाररससों लीला करनी है । शृंगाररस कहा ! जो सबसे आगे गति करे सो शृंगाररस, और नीलरूप आपकों प्रिय है । कारण नीलरूप शृंगाररसात्मक है । याँते पनस्यामसुंदर रूप धारण कर ललितत्रिमंग होय वेशुनाद करत में दक्षिण श्रीहस्तको करतल भाग भजन-सेवाके विषे अभय करत है । याँते करतलकुं अंगुलिके अग्रभागको स्पर्श नहि होयके अंगुष्ठकुं तर्जनीको स्पर्श है । और मध्यमा, अनामिका तथा कनिष्ठिका यह तीनों अंगुलि ऊर्ध्व है । याँते यह नृत्यको भाव भी सूचित करके जतायो और वेशुकी स्थिति दोनों श्रीहस्तके अचयवके मध्यभागमें है, और वेशुको शब्द आपकुं प्रिय है, कारण या वेशुमें प्रथम सुधाधारकत्व है और वेशुद्वारा गोपीजनकुं सुधाको भोग करावनी है, कारण भगवत्सुधाको भोग भये बिना भगवद्भोग्या होय नहीं । अथवा वेशु-व=प्रसादनं अर्थात् मोक्षानंद; इ=विषयानंद; इनकुं अशु-बुद्ध करिके भजनानंदको दान करने हे । याँते वेशुद्वारा सुधाको दान है । और स्पर्श आपकुं गोपीजनको ही प्रिय है । कारण ! गोपीजनमें सुधाधारकत्व है और रासलीलमें इनको स्पर्श करने हे,

यातें वेशुकुं धारण करके सुधाको दान करत हे । अथवा श्रीहस्तके मध्यभाग कहिये करतल भाग
 माधव भगवानको निवासस्थान हे । वाकुं सन्मुख करिके यह जतावत हे जो लक्ष्मी महाचंचल हे,
 तो भी मेरी क्रियाशक्ति करिके स्थिर हे यातें व्रजभक्तनके मध्यमें निरोधकी स्थितिमें लीलाउद्बोधक-
 भाव अतिचंचल, ता भावकुं स्थिर करिवेकुं सूचित भाव जतावत हे । अंगुष्ठ जो गोविन्द भगवानको
 स्थान हे ओर तर्जनी महीधर भगवानको स्थान हे, तातें अंगुष्ठकुं तर्जनीको संबंध कराय यह
 जतावत हे जो में गोविन्द हुं अर्थात् व्रजको इन्द्र हुं ओर इन्द्रकुं भोग प्रिय हे, ओर मही जो
 पृथ्वीके धारण करिवेवारे जो आवेशी संकर्षण भगवान हे उनको संबंध हे, यातें तुमकुं में या
 पृथ्वीपर अपने आवेशको दान करिके सम्यक् प्रकारसों आकर्षण करिके तुम्हारे मेंही भोग सिद्ध
 करुंगो । याही कारणसों अभयसूचक श्रीहस्तको करतलभाग जो हे ताकुं व्रजभक्तनको आगमन
 जान सन्मुख करके दिखावत हे । यह सूचित भाव जतावत हे । ओर मध्यमा जो द्वीपके
 भगवानको स्थान कनिष्ठिका, जो विष्णु भगवानको स्थान—इन तीनों अंगुलिकुं ऊर्ध्व करके यह
 जतावत हे जो द्वीपके कहिये इन्द्रियनको ईश हुं, तातें इन्द्रियनकूँ मेरे विषे प्रेरित करके मेंही
 ऊर्ध्वगतिकुं प्राप्त करुंगो । यामें लौकिक विषयको अभाव सूचित कीनो । क्यों कि भगवत्प्रेरक
 विषय हे तासों अलौकिक हे ओर त्रिविक्रमरूप—वरण, कटि तथा म्रीवा ये तीनों जिनके विक्रम हे
 अर्थात् क्रमसों नहि हे या रूपसों यह जतावत हे जो तुमारे विचित्र विक्रम रूप हे अर्थात्
 निर्गुण होयके सात्विक, राजस, तामस—गुणवारे भये हो, तासों ये गुणमय लघुरूपता तुमारी या
 रूपसंबंधसों दूर करिके निर्गुणतारूप ऊर्ध्वगतिकुं प्राप्त करुंगो यह सूचित कीनो । ओर विष्णु-
 रूपसों यह जतावत हे जो में सर्वत्र व्यापक हुं ओर मोसों जिनको संबंध हे वेही ऊर्ध्वगतिके
 अधिकारी हे, एसो सत्त्वगुणी रूपसों शांतिको सूचित भाव जतायो । श्रीहस्तको पृष्ठभाग हे, सो
 जनार्दन भगवानको स्थान हे, ताको व्रजभक्तनके सन्मुख करके यह जतावत हे । जो मेरे सन्मुख
 जिनको आगमन हे वामें जो दुष्टजन प्रतिबंधक हे ताको मेंही अर्दन—नाश—करुंगो, अथवा
 मेरे जनके हृदयस्थित जो दुष्टभाव कहिये कामभावना, ताको नाश में ही करुंगो अथवा वाम अंग
 जो पुष्ट हे तासों वाम श्रीहस्तसों पुष्टिभक्तनको ही आवाहन करके बुलावत हे, अन्यकुं नहीं ।
 यामें यह जतायो जो भगवानके सुखार्थ जेसे पूतनासंधंधी रक्षामें गोपीजनने अंगन्यास करके
 करन्यास करके भगवन्नामसोंही भगवानकी रक्षा कीनी, तेसे यहां भी गोपीजनके सुखार्थ अंगन्यास,
 करन्यास, करके रसकी प्राप्ति करायवेके लिये ललितत्रिभंग स्वरूपसों स्थित हे । याकी विशेष
 जिज्ञासा होय तो ललितत्रिभंग ग्रंथकी टीकामें वर्णन हैं, तहां देखनो । यह सर्व लीलारूप
 श्रीमहाप्रभुजीको स्वरूप हे याहीतें जानी यह पद कक्षो । आपकी कृपातें मेरे जानवेमें एसी
 आवत हे, यातें 'मेने जानी' यह पद्मनाभदासजी अपने स्वतःको अनुभव कर रहे हैं । या
 प्रकार ललितत्रिभंग स्वरूपसों श्रीमहाप्रभुजीको हि वर्णन करत हे, सो कहत हे "अटपटी बात

.....पाछे पुलिन ठोरकी ठानी ” यह अदाइ तुलु को संबंध हे। भगवानकी अटपटी बात, जामें समज न पडे सो, किन्तु इतनोही नहि तो वा बातें छपेटा भी बहोतसे ल्यो, वा छपेटाकुं सुर-शायवेवारे जो ब्रजभक्त हे, उनसों नहि सुरसैं उलटे वामें वे सब अरुझ गये । सब कहें तासों वा लीलारथजमें जो आये वे सब या प्रकार अंतरंग प्रसंग सों मिले भये एसे ब्रजभक्तजनको भगवानने मधुर मधुर कहिये बडे आदरपूर्वक, एसो कि जो गोपीजनके समजमें नहि आवे, या रीतको अव्यक्त मधुर वेणुके ससरंध्र जे के गुणगान, स्नेहपूर्वक गान कीनी । वा मधुर गानने बहुत सयानी सखि जो ब्रजभक्त अपने समानशीलव्यसनवारी तिनकुं प्रचुर करी, उनकुं भगवान के सन्मुख करके वनमें फैलाय दीनी । अथवा उनकी लौकिक सयानता छोडाय अन्तःकरणको प्रकर्ष करके पूर्ण कीनी, क्योंकि फिर लौकिक रीतसों सयानी वनके भगवत्सन्मुखसों पाछी घर न जाय । या रीतके गुणगानने उनके अंतरंग देशकुं आकर्षण करके भगवत्सन्मुख कीने ॥४॥ अब बहिरंग देश, बाहिरकी कियार्तुं कहत हे, नखशिखाग्र चरणके नखसुं ल्याय शिखाके अग्र भागतांइ संकुलित अर्थात् दृढ अर्थात् सम्यक् प्रकारसों मिली भइ, जेसे छता वृक्षपर संकुलित होय तेसे मिली भइ, विविध प्रकारकी निधि कहिये नाना प्रकारकी लीलारूप निधि तिनके समूहमें भगवाननें मुखसों मिलाय दीनी । इतनो ही नहि किन्तु वा लीलारूप ग्रंथिमें उनके अंग उत्तम प्रकार करके बांध दीने । अर्थात् कृपारूप ग्रंथिसों वे निधियां छूटे हि नहि या प्रकार अपने समान मुखरूप कर अपनेमें उनको स्नेह कराय अपने सन्मुख कर लीनी । एसे करवेमें हेतु कहत हे वरदेश्वर इति ॥ वर कहिये श्रेष्ठ इश्वर जो धर्मा स्वरूप, ता स्वरूपसों द कहिये दान कीनी, यातें द पद मध्यमें हे । अथवा वे कुमारिका स्नेह करके जब सन्मुख भइ तब, उनकुं वर देवेवारे इश्वरने रासलीलाको दान देवेकी आज्ञा दीनी । अब जा ठोर मुखदान देवेकी आज्ञा कीनी तां ठोरकुं कहत हे । “ पाछे पुलिन ठोरही ठानी ” । पाछे कहियेसों प्रथमही धर्मा स्वरूपसों वर देके पाछे याही स्वरूपसों रासलीला करनी हे अथवा इतनो कार्य करके अपने समान मुखरूप करके पाछे श्रीयमुनाजीके पुलिनमें ठोरको ठान क्रियो । [अपूर्ण.]

वचनामृत.

[नित्यलीलास्थ गोस्वामी श्रीगोवर्धनलालजी महाराजके यह वचनामृत
विनके श्रीपेटीजीने लिखे हे ।]

पंचमवचनामृत—फेर एक समें श्रीकाकाजी महाराजनें एसे आज्ञा करी, जो अपने माथे श्रीलालजी विराजे हैं, सो कोदामें छोटे मयुरेशजीवारे, श्रीमयुरानाथजी महाराजके भाइ श्रीरामकृष्णजीके श्रीठाकुरजी है । श्रीमहाप्रभुजीकी निधि है । चोराशी वैष्णवकी बातमें सिद्धानंद वारे अम्मा क्षत्राणीके ठाकुरजी है । इनके चरित्र इनकी बातमें प्रसिद्ध हे । और श्रीरामकृष्णजी

महाराजके, वहां भी इन ठाकुरजीके अदभुत चरित्र हैं, परन्तु जीतने याद है, सो लीलाये है । आप श्रीरामकृष्णजी महाराज श्रीमद्गोकुलमें विराजते, श्रीलालजीकुं छोड़ि के कभी परदेश नहि पधारेते । तासों चित्तको बहुत संकोच रहैतो नोकर चाकर नही रखते, आप तथा आपके बहुजी तथा बेटीजी तीनों जन मिलके सब सेवा करते । जल तथा चक्की तककी सेवा करते । और एक समें श्रीवृन्दावनको मेला देखेकुं सब आग्रह करीके पधराइ गये, तब आपभी पधारे, फेर आप पाछे पधारे तब श्रीलालजीने आज्ञा करी कि दोहिता दोकुं तो मेला देखाय लये धोर हमकु नहि छे गये सो हम ज्हा तुझारे बेटा नहि है ! तब आपने कही येतो सब देहसंघी है, मेरे तो सर्वस्व आपहो, आपकुं छे जाउंगो । तब प्रभु प्रसन्न भये । फेर दुसरो बरस श्रीलालजीकुं झांपी में पधरायेके श्रीवृन्दावन मेला दीखाय लये, पाछे प्रभु प्रसन्न भये ऐसे सोखीन श्रीलालजी है । और एक बिरियां श्रीलालजीने उनके बहुजीकुं आज्ञा करी के हमारे डुबकी भात सानो है, तब उनके बहुजीने कही, के कैसे होय ? तब आपने सिखायो । तब डुबकी भात आयेगे, और उनके बालकनके ताई उपर बादी करते तब श्रीलालजीने आज्ञा करी, जो तुझारे बालकनकुं तो नित्य बादी खवावो हो, और हमकुं बादी नहि खवावो हो । तबहुं श्रीठाकुरजी कुं बादी होयवे लगी । सो अभीताई होय है । और श्रीरामकृष्णजी महाराज के फक्त एक बेटीजी हते, लालजी नही हते, सो भूतलमें विराजे तहां ताई सेवा करि फेर बेटीजीकुं घर दीनी ।

॥ इति श्रीगोवर्धनलालजी महाराजको पांचमो वचनामृत संपूर्ण ॥

छठो वचनामृत—अब एक समय श्रीकाकाजी महाराजने ऐसे आज्ञा करीके राम-कृष्णजीके बेटीजीकुं घर दीनी हतो, सो उनके एक लाल, तथा एक लाली हते, सो बेटीजी भूतलमें विराजे तहांताई उनने सेवा करी पीछे बहीबट उनके लाछने कयों, और घर लाछीकुं दीयो । उनकी लाली हमारे दामोदरजी काकाजीकुं ब्यादे हते । सो ब्याहा भये वरस दिन भयो, तब हमारे श्रीकाकाजी महाराज लीलामें पधारे । सो हमारे काकाजी महाराज बालक हते, और उनके भाई बहीबट करते, सो उनके मोंटे गोकुलके लुन्चा लग गये । सो सब पैसा खाय गये । और मंदिरके उपर एक लाख रुपयाको करज करदीयो । और हमारे काकाजी बालक हते और परदेश बहुत फीरे पर करज न चुको तब हमारे दादाजी महाराजहुं कही, जो आप करज चुकावो, तब आपने कही, हमकुं लीख देउ, तब बिनने लीख दीयो, उनके भाहनें भी सही करी, फेर हमारे दादीजी महाराजने बड़ोत रुपया दीये, लाख रुपयायानहुंभी उपरांत दिए तो भी उनको करज नहि चुक्यो, तब आपु बहुत अमुंजे, और श्रीलालजीकुं मुंबई पधराइवेको विचार कयों, सो गोकुल मधारेके श्रीलालजीकुं चीझी नांसी । चीझीमें आपके मुंबई पधारेवेको ईच्छा है तब गोपीनाथलालजीहुं छाने पधरायेवेको विचार राख्यो । ओ श्रीलालजी जेसो दूसरो स्वरूप पनवावो सो बिनहुं पधराये, रातकुं शैव्यामें और ये श्रीलालजी,

ઓર શ્રીમહાપ્રમુજીકે હસ્તાકર જાંપામેં પધરાયે, ઓર સંવેરે કુચ ક્રિયો સો આગરેમેં મુકામ કીયો ।
 યહાં ગોપીનાથલાલજીકું સંવર પડી સો વાર્દે બલત પાંચ-દસ લગડેનકો લેકે આગરે આવે; પરંતુ
 શ્રીલાલજીકી ઈચ્છા નેહતી; સો ઓનકું સંવર ન પડી । ઓર હમારે ઘર આવકે ઉતરે; ઓર રાંલનાદ,
 ધંડાનાદ, સંચ સેવા નિત્યપ્રમાણ મહે તોહ ઓનકો સંવર ન પડી । ઓર હ્યાં સો શ્રીદાદાજી
 મહારાજ રેલમેં વૈઠકે મુંવર્દે પવારે । એસે એસે ચમત્કાર પ્રમુનેં દીલાયે, ઓર દાદાજી મહારાજકું
 ફલુ હરફત આવે નહિ એસે શ્રીલાલજીકે ઓનેક ચરિત્ર હૈ સો વહાં તાંદે હીલે ?

॥ ઇતિ શ્રીગોવર્ધનલાલજી મહારાજકી છટ્ટો વચનામૃત સંપૂર્ણ ॥

વચનસુધા.

શ્રીગુરુવંદના.

પુષ્ટિમાર્ગનું સર્વંદ શ્રીગુરુદેવજ છે. ખરી રીતે જોતાં સર્વ સંપ્રદાયો ગુરુનો
 મહિમા બધાથી વિશેષ રીતે ગાય છે ઉપનિષદો તો ગુરુમાં અને પ્રભુમાં બેદભાવ
 રાખનારને ધાર્મિક ભાવો સૂઝતા જ નથી એમ કહે છે. આપણા સંપ્રદાયમાં પ્રભુથી
 પણ ગુરુદેવ અધિક છે. ગુરુદેવની કૃપા યથા પછી આપણને પ્રભુની કૃપા માટે
 વળખાં મારવાનીએ કશી જરૂર નથી. ગુરુદેવની કૃપા માટે જ્યાં પ્રભુને આપણે
 વિનવીએ, ત્યાં ગુરુકૃપા યથા પછી પ્રભુકૃપાનું મ્હોં તાકવા ક્યાં બેસીએ ? આપણે
 દીનમાં દીન છીએ એ વાત તો સારી પેટે જાણી ચુક્યા. એક દીન કિંકર પોતાના
 પોતાના તાલેવાન શેઠને શું આપી શકે ? તેમાંએ આપણા સ્વામી તો શેઠ લોકના
 નાથ રહ્યા. વિષ્ણુનાં ચરણો તો એક લક્ષ્મીજ સેવે અને આપણા શ્રીકૃષ્ણપ્રભુની
 સેવા ટહેલે તો હજારો અસંખ્ય લક્ષ્મીઓ ક્યાં કરે. એવા પ્રભુને આપણે શું
 નજરાણું ધરવાના હતા ? આપણે તો દીનતાથી એને વંદનજ કરી છુટીએ. એ હાથ
 નેં ત્રીલુગ માથું એના ચરણમાં ધરીએ. જ્યારે પ્રભુ પાસે આપણે વંદન-પ્રણામ
 વિના બીલું કાંઈપણ કરવાની તાકાત ધરાવતા નથી, ત્યારે શ્રીમહાપ્રભુ પાસે આપણે
 શું ધરવાના હતા ? શ્રીમહાપ્રભુ તો શ્રીકૃષ્ણપ્રભુનાએ સર્વંદ. ‘યથા દેવે તથા
 ગુરો’ ‘જેમ દેવ તેમ ગુરુ’ એ ઉપનિષદના મહાવાક્ય મુજબ, ગુરુદેવને પણ
 વંદનાજ કરવી રહી. આપણા શ્રીમહાપ્રભુ તે આપણા બ્રહ્મસંબંધકાતા ગુરુદેવ જ
 “પ્રત્યક્ષ પાવક પરહરી, પથ્થરમાં શિદ શિર ફેાડીએ ?” જે, શ્રીવલ્લભાગ્રિરૂપ
 ગુરુદેવતાં રોજ આપણને દર્શન યાય, આપણે તેમનાં ચરણસ્પર્શનું મુખ જાનુભવીએ,
 તેમની સાથે વાતોવાપ કરવાનું સૌભાગ્ય આપણને મળે, આ બધું છોડીને હવામાં
 બાચકા શીદને ભરીએ ? આપણા એ પ્રત્યક્ષ ગુરુદેવનું સ્વરૂપ શું છે, એ શ્રીહરિ-
 રાયણ ‘શ્રીગુરુદેવાષ્ટક’માં સ્પષ્ટ કહે છે જેથી આપણે બહારથી મનુષ્યનાટ્ય
 કરી રહેતા શ્રીગુરુદેવનું આધિદેવિક સ્વરૂપ સંમળ શકીશું. શ્રીહરિરાયપ્રભુ
 આરાધ કરે છે કે:—

શ્રીગુરુદેવને અમે વંદન કરીએ છીએ. આપણા 'ગુરુદેવ પુષ્ટિમાર્ગનું સર્વસ્વ (તત્ત્વ) જાણે છે. પોતાના માર્ગની ખુબી પોતે ન જાણે તો ખીજું કોણ જાણે ? વળી આપણા પક્ષ એ સર્વસ છે. પ્રભુ સર્વસ ખરા, સર્વના હૃદયમાં બિરાજીને ખડું જાણી લે છે એ વાત પણ કબૂલ, પરંતુ પુષ્ટિમાર્ગમાં અંગીકાર જેમનો થયેલો છે, તેના સર્વસ પ્રભુ નહિ. ન્યારે જીવ પુષ્ટિમાર્ગીય થાય ત્યારે તેના હૃદયમાં પ્રભુને બંદલે શ્રીમહાપ્રભુ બિરાજે. એટલે આપણા પુષ્ટિમાર્ગીયોના સર્વસ 'તો શ્રીવલ્લભાધીશ્વર જ, શ્રીગુરુદેવ જ. વળી કરુણારસથી ભરેલા, જે કરુણારસ ન હોય તો આપણા હૃદયમાં બિરાજ જ ન શકે. આપણા જેવા દોષથી ભરેલા નિઃસાધનના હૃદયોમાં આવીને રહેવું એ જેવા તેવા દયાળુથી નજ અને ! શ્રીગુરુદેવ દયારસથી ભરેલા માટેજ તે આપણા હૃદયમાં સ્થિતિ કરે છે. 'કૃપારસ નયન કમલદલ કુલે.' પોતે શ્રેષ્ઠ છે. પુરુષોત્તમથી પણ જે ઉત્તમ હોય તે શ્રેષ્ઠ હોય જ એમાં આશ્ચર્ય શું ? શ્રેષ્ઠ છે, માટે શ્રેષ્ઠ-ઉત્તમ-શ્રદ્ધના ઢાંચા છે. જેને પોતાનો કરે છે અપનાવે છે તેને ગમે તે કાંઈ આપી દઈને ખુશ કરી દેતા નથી. ફળ આપવામાં વિલંબ અવશ્ય કરે છે. જીવને તાલી નાખે છે. પરંતુ ખીજા દેવોની પેઠે ઘોડામાં પતાવી દેતા નથી. પરંતુ ઘોડામાં પતાવે ચાલે એમ આ માર્ગમાં ન જ હોય. આ માર્ગના ટેકા ભરતો એમની ચાલાકીને તુરતજ ઓળખી લે એવા હોય છે. એટલે એમને તો ઉત્તમ ફળ આપેજ છુટકો. માટે એવા ગુરુદેવને આપણે નમન કરીએ છીએ. ૧.

પ્રભુ જગતનો ઉદ્ધાર કરે, ન્યારે શ્રીગુરુદેવ દેવી જીવોનેજ ઉદ્ધાર કરે. અનેક પ્રકારના જીવોમાંથી નિજ અંગીકાર થયેલા જીવોને વીણી લે. એનો ઉદ્ધાર કરે. અનેક અધમ જીવોના સંગથી દેવી જીવો પણ પોતાનું સ્વરૂપ ભૂલીને અથડાયા કરતા. શ્રીવલ્લભાધીશ્વર એઓને ચેતાવ્યા. પુષ્ટિમાર્ગ જેવા એક મહાન રાજ-માર્ગને છોડીને ગલીગુચીઓમાં ભૂલા પડેલા એ જીવોને રાજમાર્ગના દર્શન કરાવ્યાં. ગણિતાનંદમાં સપડાયલાઓને અગણિતાનંદનું ભાન કરાવ્યું. કારણ કે પોતે આનંદમય દેહવાળા છે. શ્રીગુરુદેવનું મનુષ્યનાટ્ય જોઈને આપણે આપણા જેવા એક માણસ તરીકે તેમને સમજાવેસવાની મહાપ્રતિભા ભોગ યદ્ય પડીએ છીએ. એઓ પોતે આનંદમય સ્વરૂપે રહે તો આપણી શક્તિ નથી કે આપણે એમને જોઈ શકીએ. આપણા પર કૃપા કરીને એઓ એક સુંદર મનુષ્યના આકારમાં આપણને દર્શન આપે છે. એથી વ્રાંત જીવો તો એમને મનુષ્યજ માને. જેઓ દેવી છે, તેઓજ એમને આનંદમયસ્વરૂપે અનુભવે છે. જેઓ પ્રત્યક્ષ ગુરુદેવને આનંદમય જાણે છે, એમના લૌકિક અનુકરણથી એમને લૌકિક નથી માનતા તેજ બઠસાગી છે, તેજ શ્રીમહાપ્રભુજીના સ્વરૂપને પ્રત્યક્ષ કરી ચૂક્યા છે. સાક્ષાત્ દર્શન આપી રહેલા ગુરુદેવને મનુષ્ય માનીને શ્રીમહાપ્રભુજીને ભજવાનો જે ઘાંટો પાડી રહ્યા છે, તે દંભી છે. તેઓથી શ્રીવલ્લભાધીશ્વર અતિદૂર છે. આપણા પ્રત્યક્ષ ગુરુદેવનું જે મનુષ્ય સ્વરૂપ દેખાય છે, તે આધિભૌતિક છે. એમનું આધિદેવિક સ્વરૂપ તો

આનંદમય છે, રસરૂપ છે. વળી ગુરુદેવ રસિક રહ્યા. એકલા રસિક નહિ, પણ રસિકના એકલા શિરોમણિ. રસિક તો પ્રભુ પણ ગણાય. મળબરતો કાંઈ ઓછાં રસિક નથી. એ સર્વના શિરોમણિ તો શ્રીગુરુદેવ જ. આ સ્વરૂપનું ધ્યાનજ યથા સહે. માટે હે સ્વામિન! હે નાથ! હે ગુરુદેવ! આ સ્વરૂપે તમે ધ્યાન કરવા યોગ્ય છે. એ સ્વરૂપનું ધ્યાન કરતાં નેત્રમાં પણ એ સ્વરૂપ ઝલકે. પછી હું આપના લૌકિક અનુકરણથી કદી નજાં છેતરાઉં. આપના લૌકિક ભાગ્યતા દેહથી હું કદી જમમાં નજાં પડું. ૨.

સેવામાર્ગ જેટલો સુગમ છે, તેટલો જ મુશ્કેલ છે. ગુરુકૃપા પાસે સુગમ છે, નહિતર મુશ્કેલીનો પાર નથી. સેવા કરતાં અનેક પ્રતિબંધો નહે. કેટલાક પ્રતિબંધો ઘરબારના રોજના લાગેલા હોય છે, તેજ વચ્ચે આવી ઉભા રહે છે. કેટલાક પ્રતિબંધો ભગવાન મોકલે છે. એ બધા પ્રતિબંધોને નસાડનાર શ્રીગુરુદેવ છે. એની કૃપા યતાંજ પ્રતિબંધોની બેડીઓ તડોતડ તૂટી જાય. પોતાના પ્રયત્નથી તૂટવાની આશા ફાગટ છે. પુષ્ટિ એટલે કૃપા. કૃપાનું જ્ઞાન કેમ થાય? જ્ઞાન તો જેને આપણે નજરે લેઈએ તેનું જ સારી પેઠે થાય. પુષ્ટિનું સ્વરૂપ એવું નથી કે એકદમ આપણને તેનાં દર્શન થાય. જો દર્શન ન થાય તો આપણે પુષ્ટિને માનીએ ખરા? શ્રીવલ્લભાધીશ્વર જાણે છે કે જો પુષ્ટિના સાક્ષાત્ દર્શન જો આ જીવોને નહિ થાય. તો તેઓ પુષ્ટિને માનશે કે ગણકારશે નહિ. જેમ પુષ્ટિના-અનુગ્રહના ભંડારરૂપ પ્રભુના સાક્ષાત્ દર્શન એમને કરાવ્યાં તેમ પુષ્ટિરૂપ જાનને પણ એમને ખતાવી દેવો લેઈએ. નહિતર એઓ ભારે હઠીલા હોવાથી દર્શનની હઠ લઈ બેસી જશે! માટે એમને પુષ્ટિનું જ્ઞાન થાય તેવો ઉપાય કરવો ઘટે. એમ વિચારીને આપશ્રીએ એક અલૌકિક દીવો પ્રકટાવ્યો. એ દીવાથી પુષ્ટિભક્તિમુંદરીની દિવ્ય ઝાંખી તુરતજ યથા. પુષ્ટિનું બધું સ્વરૂપ એ દીવાથી આપણે પ્રત્યક્ષ કરી શકીએ. એ દીવો તે તરવારદીપનિબંધરૂપ મહાઅંધની રચના કરીને આપશ્રીએ પુષ્ટિનું જ્ઞાન આપણને કરાવ્યું. એવા અલૌકિક દીવાની જળહળતી જ્યોતિથી જો આપણે પુષ્ટિમાર્ગનું સ્વરૂપ ન સમજીએ તો પછી આપણાં નશીબ કેટલાંજ સમજવાં. એ નિબંધરૂપ મહાન અંધમાં વળી આપશ્રીએ બધા સિદ્ધાંતો કહ્યા. એકલી પુષ્ટિની જ વાત નહિ, પરંતુ બીજા માર્ગની પણ વાત સમજાવી એટલે આપણને બીજા માર્ગ સાથે આપણા માર્ગને મુકાબલો કરવાનો અનાયાસે લાલ મળી ગયો. બીજા માર્ગ સાથે આપણા માર્ગની તુલના કરીને આપણે પોતાના માર્ગની ઉત્તમતાનો નિશ્ચય કરીએ અને આપણા માર્ગમાં અચલ થઈને રહીએ. આવી કૃપા જો શ્રીમહાપ્રભુએ ન કરી હોત તો આપણો કાંઈ આરો ન હતો. વળી આપણે ગરીબ રહ્યા, અને ગરીબાર્થમાં માણસ સારાં નરસાનો વિવેક ભૂલી જાય. રૂબરૂ માણસ તણખલાને પકડે એવી દશા આપણા જેવા દીનની. બને. આપણી એવી દુઃખ ભરી રિયતિ શું શ્રીમહાપ્રભુ સહી શકે? એઓશ્રી કરુણાની ખાણ એટલે દીનનું દુઃખ કદી ન સહે. બધું

સહન કરવાની શક્તિ ધરાવે; છતાં પોતાના જનનું દુઃખ ઘડીએ સહન ન કરી શકે. પોતે પ્રભુ છે, સર્વ શક્તિમાન છે, છતાં ભક્તનું દુઃખ સહી લેવાની શક્તિ એમનામાં નથી. ૩.

પ્રતિબંધો આવી પડવાનું કારણ દોષ છે. જીવના અનેક દોષ હોય. સ્વભાવંથીજ તે દોષે ભરેલો, એટલે પ્રતિબંધો તેને સત્તાવે. એ પ્રતિબંધોને દૂર કરીને જ પ્રભુ એકી ન રહે, પરંતુ એ પ્રતિબંધો પાછા કોઈવાર પોતાનું જોર ન જમાવે તે માટે જીવના બધા દોષોનો પોતે નાશ કરે. જીવ નિર્દોષ બની જાય એવી રીતે જીવને નિર્દોષ બનાવીને સુખનું દાન કરે. તે સુખ સર્વથી પહેલાં રહેતું છે. સર્વથી પર સુખરૂપ તો પ્રભુ જ હોય, જીવને બ્રહ્મસંબંધે કરાવીને એ સુખરૂપ પ્રભુનું દાન કરે; જીવના બધા દોષો બ્રહ્મસંબંધથી જડમૂળથી ઉપડી જાય, ને નાશ પામે એટલે એના માથે પ્રભુને આપશ્રી પધરાવી દે. નહિ દઈ શકાય તેનું દાન કરવાનું સામર્થ્ય શ્રીગુરુદેવ વિના બીજા કોનામાં હોય? પછી એ જીવની બુદ્ધિના પ્રેરક આપ બને. કારણ કે જીવ તો જીવ કયો. કોઈ વાર તેની બુદ્ધિ ખગડે, દાનત શ્રદ્ધ યાય, એટલા માટે એનો અંગીકાર કરી લીધા પછી તેની બુદ્ધિના પ્રેરક પોતે જ બની જાય. આપણું શરીર એક રથ છે. એ રથના ઘોડા બધી ઇંદ્રિયો છે. એ ઘોડાની લગાગ રૂપ મન છે. મારણનો વેશ બુદ્ધિ ભજવી રહી છે. એ રથમાં સહેલાણી તરીકે જીવ મોજ માણી રહ્યો છે. એ જીવને જ્યારે શ્રીમહાપ્રભુજીએ પોતાનો કયો એટલે એ જીવની બધી સત્તા પોતે લઈ લીધી! એનો બુદ્ધિરૂપી સારથિ પરજ હુકમ ચલાવતો હતો, તે ખુશ્ખી લીધો અને તેના બુદ્ધિના પ્રેરક પોતે બન્યા. પોતે ભાવાત્મક સ્વરૂપે દૃઢ્યમાં બિરાજ્યા. એવા દયાળુ પ્રભુને હું નમન કરું છું. કોઈના રથ પર ચઢી બેસીને સારથિ પર પોતાની જબરદસ્તીથી બેહુકમી જે ચલાવે તેને આપણે પ્રણામ વિના બીજું શું કરીએ? ૪.

ચક્રોર અને હુશીયાર શિખ્યાના ગુરુ બનવાને ઘણાં નીકળી આવે, પરંતુ મારા જેવા એકઠેએક ન જાણનારનો કોણ હાથ પકડે? મને તો એટલું જ જાણ નથી કે હું કોણ છું? હું પુણ્યવાન છું કે પાપી? હું ગરીબ છું કે તાલેવાન? હું નિર્દોષ છું કે દોષથી ભરેલો? આમાંનું હું કંઈ જાણતો નથી. મારા સ્વરૂપનાં જ્ઞાનમાં મોટું ૦ મીડું છે. પરંતુ આપની દયાનો પાર નથી. એવાના પશુ બધા પાપો હરી લેા છે. જ્યાં સુધી પાપ હોય ત્યાં સુધી મારું સ્વરૂપ કેમ સમજું? સહુથી પહેલાં મારું પોત હું પારખી શકું તેને માટે પહેલીજ વાર દર્શન દઈને મારાં બધાં પાપો આપ હરી લેા છે. પાપ જતાંને વાર જ હું મારું સ્વરૂપ સમજી શકું છું. દરેક કાર્ય કરવામાં આપ સમર્થ છે. એટલે મારાં બધાં પાપો હરી લેવા એ તો આપને એક નજીવી વાત થઈ એથીજ મેં આપને મારા નામ બનાવ્યા છે! માટે હું આપને મારા નામ માનીને નમન કરી રહ્યો છું. ૫.

હું જાણું છું કે આપ રસમય છે. આપનો સુખ્ય રસ વિપ્રયોગ રસ છે. એ રસમાં જ આપ છક્યાં રહો છો. છતાં અમારાં હૃદયોને દૂર કરો છો. નિજ

જનનાં હુઃખ દૂર કરવાં એ પણ આપનો એક વિલાસ છે. રસમાં જે મગ હોય તે કંઈ વિલાસો કર્યા કરે. અમારી વ્યથાને દૂર કરીને જ આપ અટકતા નથી, ને એટલેથી અટકે પાલવે તેમ પણ ન જ હોય. અમે આપની પાસે નકરાં હુઃખ દૂર કરાવાજ નથી આવતા, પરંતુ આપની પાસેથી કંઈ ખીલું જ લેવા આવીએ છીએ. એટલે આપને તો આપેજ છુટકો. એવા ખીલો કોણ કયાણ હોય કે જે પોતાનું ગધું દાન કરી દે. માટે તો આપને શરણે પડ્યા છીએ, આપજ સર્વદાન કરી શકો. તેમાંએ વળી વિલક્ષણતા ખરી જ. જેવા અધિકારીઓ તેલું તેને દાન કરો, તેમજ આપ સર્વાંગે સુંદર છો. ‘સર્વ અંગોઅંગ રસભર્યા, રસભર્યા લોચન ચાર.’ આપનાં અંગોઅંગની સુંદરતા શે વર્ણવી જાય? એટલુંજ કહી શકાય કે આપ ‘સુંદરતાની સીમા છો,’ રતિનો નાથ કામદેવ પણ આપનાં સ્વરૂપને જોઈને ધરણીપર ઢળે. ‘તેમાં કામ જેવા ફૂટડા વહેવાય છે હો જીરે.’ આવી ખુબસુરતીથી અમારો આપનામાં નિરોધ થયો છે. નહિ તો ખુબસુરતીનાં તરશ્યા અમારાં નેત્રો કોણ જાણે કયાં જઈને ચોટે? ‘આનંદસ્વપ્ન અનુપમ સુંદર, પામે નહિ કોઈ પાર.’ ‘નખ શિખ સુંદર મજજન જીવન પ્રાણ.’ આવી મહાનુભાવ ભગવદીયોની વાણીજ આપનાં સ્વસ્વપ્નનાં માધુર્યનો પરિચય આપી શકે. ૬.

આપને લક્ષિત ઘણીજ વડાલી લાગે છે. દીન સેવક પાસેથી ખીજી કંઈ નહિ પણ લક્ષિતની તો આપ આશા રાખો જ. લક્ષિત એટલે સ્નેહ, સ્નેહ પણ એક પ્રકારનો રસ જ છે. રસરૂપ આપ સ્નેહરસને પ્રિય ગણો એમાં શું આશ્ચર્ય! આપના આવાં સ્વરૂપની ગમ માત્ર ભાવથી જ થાય. જે ભાવ હોય તો જ આપને અમે ખરા સ્વરૂપે જોઈ શકીએ, નહિતર આપના ગહારના દેખાવથી તો ભ્રમણામા પડી જઈએ. આપનું આતું સુંદર સ્વરૂપ પણ ભાવથી જ જોઈ શકાય. આપ રસરૂપ છો, રસના જ્ઞાતા છો, રસનું દાન પણ કરો છો. રસનું જ્ઞાન તો ઘણાને હોય, પણ તેનું દાન તો આપ વિના ખીલ કોઈથી થઈ શકે તેમ નથી. આપ જ્યારે રસનું દાન કરો ત્યારે આપનું સ્વરૂપ અમને જોર જ લાસે છે. આપ અતિમધુરતાના સમૂહ લાગો છો, ગંધી અલૌકિક મધુરતા જાણે આપના જ અંગો અંગમાં ન ભરી હોય. ‘અધરં મધુરં’ નું સ્વરૂપ અમે આપમાં જ અનુભવીએ છીએ. આપના અતિમાધુર્યથી અમને રવાને પણ તુરિત થતી નથી, પરંતુ આપનું આ સ્વરૂપ દુર્લભ છે, માત્ર ભાવથી જ તે જાણી શકાય છે. આપ પોતે દુર્લભ છો. પરંતુ આપ ભાવનું દાન કરીને, ભાવને જમાવી, આપનું જ સ્વરૂપ અમને પ્રકટ રીતે દેખાડો છો. ૭

અમારો આપે અંગીકાર કર્યો. અમારો હાથ આલ્યો. અમે આપને અમારા સ્વામી માન્યા. હવે જે અમે મન વાણી અને કર્મથી આપની લેશ પણ સેવા ચુકીએ તો અમારી અનન્યતાનો ભંગ થાય. એટલા માટે જ આપ અમારામાં અનન્યધર્મ સ્થાપો છો. અમને અનન્યધર્મનું દાન કરો છો. અમને વ્યભિચારથી અટકાવો છો. અમારામાં રહેલી ગંધે ભટકવાની વલણને આપ દૂર હટાવો છો. આપના જેવા સ્વામી મળ્યા, તોએ અમારી વૃત્તિ ખીજે ભટકે તો તેની લાજ આપને જ હોય.

જોવો કેવો ધણી કે જેની સ્ત્રી ખીલત વરદે સ્વપ્ને પણ આંખે? આપનું ધણીપણું
ઠાઘ વિનાનું રાખવા માટે આપને અમારામાં અનન્યધર્મ સ્થાપ્યા સિવાય છુટકો જ
નથી. બાકી અમે તો કેવા છીએ તે આપ જાણો છો જ. આપ અમને જાણો ને
કાંઈક અમે આપને જોળખીએ છીએ. શરણે આવેલાનું પણ આપ રક્ષણ કરો છો.
ન કરો તો આપનું ખીરદ બચ. શરણે આવેલા પણ કાલ વગેરેના ભયથી કેવે તો
પછી આપ કેટલે પ્રહાંડના નાયક શાના? શરણે આવેલાના દરેક ભયનો આપને
નાશ કરવો જ પડે. વળી ભય ટાળ્યાથી જ કાંઈ આપનો છુટકો થવાનો નથી.
આપને તો તેથીએ વધારે દાન કરવાનું છે. શ્રીવિઠ્ઠલાધીશ્વરની પ્રાપ્તિ પણ આપે જ
કરાવવી રહી. શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરપ્રભુની પ્રાપ્તિ આપ કરાવો. આપ શ્રીવિઠ્ઠલનાથજીની
આંખી કરાવો. મને નિજદાસ ગણીને મારા આધારરૂપ ધાવ્યો. નિજદાસનો, મોઢારાનો
આધાર આપ વિના ખીજે કોણ હોય? શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વર પ્રભુ પાસે ત્યારે આપ પધારો
ત્યારે મારે ખસે હાથ મૂકીને પધારો. ૮

એ રીતે પોતાના ગુરુદેવ શ્રીગોકુલનાથજીનાં નમનરૂપ ગ્રંથ શ્રીહરિરાયજીએ કયો છે. આ ઉપરથી સર્વેએ પોતાના ગુરુદેવને શ્રીમહાપ્રભુજીરૂપ માનવાના નિશાનાથી કદી ચાતરવું નહિ. આજકાલના ખીલ મુઝ જીવની વાણીથી કદી ભરમાવું નહિ ! ભમરાળી વાણીમાં પડીએ તો આપણે પણ કુદૃષ્ટિ કયાંજ કરીએ. એ ‘કુદૃષ્ટી’ હોડીને આપણે તો આવી વચનસુધાનું જ પાન કરીએ.



प्रभात



(सचिन्त्र मासिकपत्र)

इसका—

मथमांक “मत्तापांक” के नाम से निकल कर

ਦਸਮੇ—

अष्टमि स्वतन्त्रता के पूजारी प्रातःस्मरणीय हिन्दू-सूर्य महाराणा प्रताप-सम्बन्धी लेख, कविताएँ प्रकाशित होंगी और महाराणा के अप्रकाशित इतिहास पर विशेष प्रकाश डाला जायेगा।

सुतः—

साहित्यज्ञो से निवेदन है कि वे अपने लेख, कविताएं आदि भेजकर इसमें हाथ बटाएँ।

सर्व सज्जनों से सूचना हेकि-

आजही अपना नाम ग्राहक श्रेणी में लिखवाइये !!!

घार्पिक मूल्य ३), उःमाही २), एक अङ्क के १०), इस अङ्क का ११).

प्राइको को यह मदद भी मुफ्त मिलेगा।

पत्र व्यवहार का पता—

भयर्क्षय—

मेनेजर "प्रभात" आफिस

ज्यवरथापक "मभात"

नाथद्वारा [मेवाड]

नाथद्वारा.

પ્રભુભક્તિ અને અન્યજ્ઞે.

પ્રભુભક્તિ અને અન્યજ્ઞો.

[સાહિત્યસુધાકર ગોસ્વામી શ્રી ૬ શ્રીમદ્ભગવાદગીતાના મહોદયે પાદરામાં આપણું યાદગાર હૃદયસ્પર્શિ વ્યાખ્યાન].

સરસ્વાતમાં મંગલાચરણ બાદ આપણીએ કહ્યું કે-ગઈ કાને જે બ્રાહ્મણકુળમાં જન્મ પામી શ્રીકૃષ્ણભક્તિ ન કરે તે કરતાં અપયકુળમાં જન્મ પામી શ્રીકૃષ્ણભક્તિ કરે છે તે ઘણે દરજ્જે ઔચ છે. એ ભક્તિહીન બ્રાહ્મણ કરતાં ભક્તિવાળો યાંડળ શ્રેષ્ઠ છે એમ કહેવું. તેથી યાંડળને ભક્તિ કરવાનો અધિકાર છે પણ તેને સ્પર્શ કરવાનો અધિકાર નથી. તે અસ્પૃશ્ય છે, તે શાસ્ત્ર-સંમત છે ને તેને સ્પર્શ કરવાની પ્રમા અમારા સંપ્રદાયમાં નથી. વેદની એક પણ પક્તિ અમારા સંપ્રદાયમાં અપ્રાપ્ય નથી. તેમજ શ્રીમદ્ભગવદ્ગીતાના તથા વ્યાસજીનાં મુત્રા ને સમાધિઆપ પણ પ્રાપ્ય છે. શાસ્ત્રોક્ત જે ચાર વર્ણોના જુદા જુદા ધર્મો છે તે દરેક વર્ણોએ પોતપોતાના વર્ણના ધર્મોમાં પ્રવૃત્ત રહેવું ને શ્રીકૃષ્ણની ભક્તિ કરવી, જેથી ભવરૂપી સમુદ્ર તરી પાર ઉતરી શકાય. અગાઉના જે જે ભક્તો યથ ગયા છે તેમણે આપણા કલ્યાણને માટે ભક્તિનૌકા કમિયુગમાં જીવેને તરીપાર ઉતરવા માટે મૂકી ગયા છે. તેમાં બેસીને ભક્તો તરી પાર ઉતરે છે. દયાગામીભાઈ કહે છે કે:-

ભક્તિ નૌકા તારે સર્વને જે કોઈ સંરણે આવે શુચિ પાપી,

અન્ય સાધન દારુ તુંબિકા મહે સભય તરે કો કલાપિ.

તરે કદા બવે કામાદિ પ્રાદયી સમર્થ નદિ અણુ તારવા શાપી ?

વિશુધ વિચારી જુઓ નિજ મન ભક્તિ ભલી કે સાધન અન્ય ?

શ્રીકૃષ્ણપ્રભુને સરણે જે કોઈ પુણ્યશાળી જીવ કે પાપી જીવ આવે છે તે ભક્તિનૌકાવડે સંસારસમુદ્ર તરી પાર ઉતરે છે. પણ અન્ય સાધન જેમ લાકડું અને તુંબિકાની મદદથી તરી શકાય છે, પણ તેમાં યુગવાનો ભય ખરોજ. પરંતુ ભક્તિમાં તે નથી. ભક્તિ કરવામાં કામ ક્રોધ વગેરે પ્રાદનો ભય નથી. લાકડાં કે તુંબિકાથી તરતી વખતે મગર પકડી લે તેમ ખીજાં સાધન કરવામાં નરે, કામ ક્રોધ વગેરે ભક્તિમાં ન નરે.

આપારે અંદરોઅંદર ઘણા ડુસપો છે કે આજે આપણી સમક્ષ અંત્યજ્ઞસ્પર્શસ્પર્શનો પ્રશ્ન ઉભો થયો છે. શાસ્ત્રોમાં તપાસતાં કોઈ રચણે આવેા ઉદ્દેશ્ય નથી કે અંત્યજ્ઞનો સ્પર્શ કરવો, એ અંત્યજ્ઞને અસ્પૃશ્ય છે ને તે અસ્પૃશ્ય જ રહેવાના.

ભગવાન શ્રીગીતાજીમાં કહે છે કે-મેં ચાર વર્ણોને ઉત્પન્ન કર્યા છે તે દરેક પોતપોતાના ધર્મ પ્રમાણે ચાલવું, ને તેથીજ તેમનું કલ્યાણ છે. એમ અનેક ગીતાવાચોથી સિદ્ધ થાય છે, જાતિની ઉત્પત્તિ કર્મથી છે કે જાતિથી ? તે તપાસતાં જન્મથી જાતિ છે એમ સાબીત થાય છે. મનુષ્યોએ પોતપોતાનાં કર્મો કરવાં જોઈએ. અસ્પૃશ્યહિનો માણસ શાસ્ત્રવાચ્યોનો નિરોધ કરે તો તે રોપિત થાય છે. ધર્મશાસ્ત્રો ને પુરાણો અંત્યજ્ઞને અસ્પૃશ્યો ગણે છે.

આપારે જે અંત્યજ્ઞેદારનું આદેશન ચાલી રહ્યું છે તે અપ્રમાણ છે. વગી અંત્યજ્ઞનો મંદિરપ્રવેશનો પ્રશ્ન પણ ચાલી રહ્યો છે, પણ તેજ અંત્યજ્ઞને મંદિરપ્રવેશ માટે આગ્રહ કરનાજ નથી; ને તેઓ ખુશી નથી. તેમને તો ફક્ત રોટલાનીજ જરૂર છે. માટે ધર્મને આગળ મૂકી સભજીને કામ કરીશું તો સર્વ પ્રાપ્ત થશે. શાસ્ત્રો-શ્રુતિઓ કહે છે કે આત્મા જલજુરા જેવો ને અનુભવવા જેવો છે આપણું કર્તવ્ય ધર્મપરાયણ બનીને શ્રીકૃષ્ણની ભક્તિ કરવામાંજ સમાવડું

છે, તેથી આપણું અવશ્ય કલ્યાણ છે. દયારામભાઈના કથન પ્રમાણે જે શ્રીકૃષ્ણના પ્રેમરસનું પાન કરાવે તો તેથી જીવનું કલ્યાણજ થાય છે.

અત્યંતજેનો મંદિરપ્રવેશ અગર સ્પર્શ મારેનો પ્રશ્નજ અથોચ્છ છે, પણ તેને ભક્તિનો અધિકાર છે. દરેક વર્ણને ભક્તિનો અધિકાર છે. આ પુષ્ટિમાર્ગ પવિત્ર છે ને તેમાં દરેકને વર્ણ-વેશી ભક્તિ કરવાનો અધિકાર છે તથા જેને શાસ્ત્રોએ અસ્પૃશ્ય ગણ્યા છે તેને અત્યંતજેને પણ ભક્તિનો અધિકાર છે. અત્યંતજેને મંદિરપ્રવેશનો અધિકાર હોઈ ન શકે, જેમ રસમાન, અલીપાન પદાણુ, શ્રીમતીતાજ, મોહનાભંગી વગેરે અસ્પૃશ્ય ભક્તો શ્રીકૃષ્ણની એનન્દ્ય ભક્તિથી તરી ગયા છે. તેમને પ્રભુની ભક્તિથી, અનુગ્રહથી સાનુભાવ હતો. ભક્તિના પ્રભાવથી સેવા કરતા પણ તેમને બ્રહ્મસંબંધ આત્મનિવેદન મંત્ર અપાયો નથી. કૌટુંબિક જીવનો પૂર્ણ પુરોહિતમ સાથે સંબંધ થવો તે બ્રહ્મસંબંધ છે, ને તે યાવ ત્યારે તેના અનેક પ્રકારનાં પાપો દૂર થઈ શ્રીકૃષ્ણના ચરણારવિંદમાં તે પોતાનું સર્વથ અર્પણ કરે છે તે વખતે દાઢમાં રહેલાં ગુણસીદ્ધો શ્રીકૃષ્ણના ચરણારવિંદમાં અર્પણ કરી કંઈકર થાય છે તેથી જે વર્ણો મંદિરપ્રવેશ કરી શકે છે તેનેજ આત્મનિવેદન મળી શકે છે, તે સિવાય કાંઈ પણ અસ્પૃશ્ય વર્ણને અધિકાર નથી. મોટા આદો-દનોથી કંઈ પણ વળવાનું નથી, પણ એટલુંજ કહીશ કે અસ્પૃશ્ય હિંદુઓ છે તે ગુણસી ગાયોને પૂજે છે, તેને મારે કુવા નિશાળો મંદિરો વગેરે સાધનોની વ્યવસ્થા ઉચ્ચ વર્ણના હિંદુ લોકોએ કરી આપવી જોઈએ, અને તેમના ઉપર હમેશાં બ્રાહ્મણથી વર્તવું જોઈએ, ને તેના ઉદ્ધારને અર્થે પ્રયાસ કરવો જોઈએ.

વળી અત્યંતજેને શરણુદીક્ષા શ્રીકૃષ્ણઃ શરણું મમ આપવામાં આવે છે ને તે અષ્ટાક્ષરમંત્ર સર્વ મંત્રોનો રાજ છે કેષ છે, અન્ય મંત્રોના ઉચ્ચારમાં જે હોય થાય તો ફળ મળતું નથી, ને કદાચ ઉચ્ચાર શુદ્ધ હોય તો મળે છે તો તે સ્વર્ગને પામી તે ભોગવતાં પૃથ્વી ઉપર નીચે અવતરવું પડે છે, શ્રીકૃષ્ણઃ શરણું મમના ઉચ્ચારથી કદ્ય તેમાં દાઢ થાય તો પણ ફળ જીવેને નિજપદનું મળે છે. છતાં શ્રીકૃષ્ણઃ શરણું મમનો ઉચ્ચાર બિર્ધપુકૃતિવ્રત, ને ગુણસીની માગ્ય કંઈમાં હોય ને અષ્ટાક્ષરનો ઉચ્ચાર થાય તો અનેક પ્રકારનાં દુઃખો હાજર હોય તો પણ તેનો તત્કાળ નાશ થાય છે ને પૂર્ણ ચાન્તિ થાય છે, ને મોક્ષ થાય છે. ભક્તોની જેવી ભાવના-તેવા સ્વરૂપે શ્રીકૃષ્ણનાં દર્શન થાય છે ને કલ્યાણ થાય છેજ. (તાળાઓ).

ભગવાન આગ્રા કરે છે કે મારાં નામે અનેક પ્રકારનાં છે તેમાં શ્રીકૃષ્ણનું નામ શ્રેષ્ઠ છે, ને તે નામ યકી સમગ્ર પાપોનો નાશ થાય છે. બ્રહ્મપુરાણમાં શ્રીકૃષ્ણનું વાક્ય છે જે માફ જે અક્ષરનું શ્રીકૃષ્ણ નામ છે, તે તું ગ્રહણ કર ને તેના ઉચ્ચારથી સર્વથા મનુષ્યજન્મનું કલ્યાણ સંભાય છે. જેનું હૃદય શ્રીકૃષ્ણઃ શરણું મમના ઉચ્ચારથી પવિત્ર થયું નથી, જેનું હૃદય શ્રીકૃષ્ણની ભક્તિ કથાના રસારવાદમાં મગ્ન નથી અથવાં શ્રીભાવકૃષ્ણની ભક્તિનું રધાન નથી તેનું જીવન નિષ્ફળ છે. શ્રીકૃષ્ણના ચરણારવિંદમાં તમામ ઇન્દ્રિયોનો રોધ કરી ભક્તિમાં લગાડી ચિત્ત સર્વથા શ્રીકૃષ્ણમાં ચોટાડી રાખવુંજ જોઈએ તેથીજ જીવનું સર્વથા કલ્યાણ છે. એ સિવાય બીજો માર્ગ નથી. શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીએ ભક્તિમાર્ગ નવો પ્રકટાવ્યો નથી પણ શાસ્ત્રોમાં જે ગ્રંથ હતો તે દેવી જીવોના ઉદ્ધારને અર્થેજ પ્રકટ કર્યો છે. ત્યારે ત્યારે ભારતમાં અધર્મ થાય છે ને સાધુ પુરુષો ગાયો વગેરે દુષ્પ્રાણી પીડાય છે, ત્યારે ત્યારે તે સાધુપુરુષોનું રક્ષણ કરવા ધર્મ રચાવવા દૃ યુગે યુગે અવતાર ધારણ કરે છે. તેજ પ્રમાણે શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીનો પ્રાદુર્ભાવ અપારવર્ષમાં થયો હતો. જે તેઓશ્રીનું આ જૂતજ ઉપર પ્રાકટ્ય ન હોત તો આ ભારતવર્ષમાં ધર્મનું તથા હિંદુ-ઓનું નામનિશાન નહોત.

દેવે શ્રીકૃષ્ણના ચરણારવિન્દમાં જીવને અવસરજોયે થઈ આત્મસમર્પણ કર્યા પછીને વખતને અવસરજોયેનો પ્રથમજોનો ઉચ્ચાર તથા ભાવર્થ જીવને સમજાવવામાં આવેલો તે હૃદયારૂઢ શાખી મનન કરવાથીજ સર્વથા કલ્યાણ છે, અને અવસરજોયે થવાથી પાંચ પ્રકારના દોષ જતા રહે છે. ત્યાર બાદ અસમર્પિત વસ્તુનો ત્યાગ અનન્યભાવ અવસરજોયે ને આત્મસમર્પણ વગેરે આવેલો જો સતત સમજાવમાં શાખીયું તો અવસર આપણું કલ્યાણ છે, એથી વિરલ વર્તનારને નાટે તો સર્વથા અકલ્યાણ છે.

અત્યારે અંગ્રેજી શિક્ષણથી નાસ્તિકવાદ પ્રસરી ગયો છે તે માટે બાળકોને ધાર્મિક શિક્ષણ આપવાની ખાસ જરૂર છે, અને માળાપોએ ધાર્મિક શિક્ષણથી કેળવણી પ્રાપ્ત કરી ચૂકેલી અંદર બાળકોને ધાર્મિક શિક્ષણ આપવું જોઈએ. જેથી ભવિષ્યમાં થનારી પ્રજાને તે મરેકાર કેળવણી પ્રાપ્ત થઈ ધર્મભાવના જાગૃત રહે અને તે જુસ્સાઈ ન જાય માટે ધાર્મિક પાઠશાળા દોરી જોઈએ. જેમ દાસમાં અમરાવાદ, સૂરત, દાદોદ વગેરે રચે છે. વળી ધાર્મિક પરીશાઓની પણ પ્રથા છે તે જાણ રહેલી જોઈએ, અને તેનો લાભ બહોળા પ્રેમાળુમાં લેવો જોઈએ, ને તે રચેલ ગયેલ થવાની ખાસ જરૂર છે. વાસ્તવિક સમાજો કાદરા પૂર્ણ જ્ઞાનની જરૂર છે. જ્ઞાનના પ્રકારમાં બહોળોનો સદાકાર ટકતો નથી. એથી કેટલાક સમાજો દૂર થશે ને સાંપ્રદાયિક ધાર્મિક જીવનથી બધા કૃતાર્થતાને પણ પગશે. અમે ગોરખમીઓ શાસ્ત્રીઓ શાસ્ત્રને ધાર્મિક શિક્ષણ આપાવીએ પણ તેનું કૃષ જોઈએ તેનું પ્રાપ્ત થવું નથી, પણ જો અમે ગોરખાગીઓ તેનું કાર્ય કરી ઉપદેશ આપી કર્તવ્યપરાયણ રહ્યા હોઈએ તો અત્યારની જે આ સંપ્રદાયની સ્થિતિ છે તે ઉદ્દિગોચર ન થાત, પણ ગેણી વાતનો શોક વ્યર્થ છે, તેથી અર્થ વસ્તુને શોક ન કરતાં દેવે ધર્મભાવનાથી જાગૃત રહી ભાગ્યભાવના એક સૂત્રમાં પગેવાઈ જઈ અજ્ઞાન દૂર કરવા સુદિવારો પેાવરા શ્રીકૃષ્ણમહિનો પ્રગટ કરવા તૈયાર રહેવાની ખાસ જરૂર છે. દયારામ બાબ ભક્તિપોષણમાં કહે છે કે:-

પ્રેમ આસક્તિ વ્યસન એ ત્રણ રોદનાં લાડીએ,
તે ઉપર મોથી તનખવના તે યદી કોઈ ના કહીયે;
કહીએ પ્રેમનું લાશળ એક જ્યારે મને ત્યારે તેનો તે જોઈ,
વિયોગ થાય ત્યારે તપે તન ત્યાંહાનું ત્યાંહાં વજાનું રહે મન.

પ્રેમ-આસક્તિ વ્યસન ને તનખવના એ રોદનાં રૂપો છે. પ્રેમનું લાશળ એ છે કે પ્રેમ થતાં વળી જ્યારે ને વસ્તુ મને ત્યારે ત્યારે રોદ ચાલુ રહી જોઈ થાય છે ને ઉત્તરાય છે. ને જો વિયોગ થાય તો શરીર તપે છે, કુખી થાય છે, ને તેની પ્રાપ્તિ માટે તનખવના થવા કરે છે. કંઈ કેમનું નથી શરીરના ધર્મો પણ સનાથી ચક્રતા નથી. તે વસ્તુ મજાનુંજ અનંદ પ્રકટે છે ને અદર્શિત થિત તેમાં ને તેમાંજ ભ્રમણ કરે છે.

એકવાર આખા દિવસમાં મજ્યા વિના નવ રહેવાય,
તે ના મને તો વિષય થાય આસક્તિ એ તે કહેવાય,
કહેવાય વ્યસન આનું જ્યારે થાય રદાખા રદાખી હરયો વિષય,
તનખવતા તે મત્યુસમાન આ ચારે આવે આપે દરિ રાન.

એકવાર આખા દિવસમાં મજ્યા વિના મેન પાડું નથી તે જો ન મજાવ તે: જમરામણ ધાવ. પીઠા થમ એ આસક્તિનું સ્વરૂપ છે ને વસ્તુ વધતાં હૃદય વિષય તરે વ્યમનરસ પ્રાપ્ત થય છે ને તે ભાવના ચાલુ રહેતાં મત્યુસમાન જેવી સ્થિતિમાં રહેલા પશોં તન વિષયી જાય

છે. ચિત્ત શ્રીકૃષ્ણના ચરણારવિદ્યમાં ઓટી નખ છે અન્ય દિશામાં તો નખજુ નહિ. એ પ્રમાણે તલ્લીનતા પ્રાપ્ત થતાં તેવી સ્થિતિ ચાલુ રહે છે ને તે શીદરિ દાન આપે તોજુ જીવમાં ઉતરે છે.

નતિ તો લુઓ આદીરની તેમાં અળગા અધમ અવતાર,
એ વેદાદિ નહોતી ભણી ન્દોતો ઉત્તમ કર્મ અધિકાર,

અધિકાર વધુ એક પ્રતાપ કર્યા આધીન શ્રીકૃષ્ણજી આપ,
તે ગોપીની પદરજ વદે ધરા પ્રેમલક્ષણ તે સદ્ગુને શીય,

શ્રીગોપીજનોની નત આદીરની હતી અને વળી તેઓ અળગાઓ હતી. આદીરનો અધમ તરીકેનો અવતાર ગણે છે એ અળગાઓ વેદ વિગેરે કંઈ ભણી ન્દોતી. ઉત્તમ કર્મનો અધિકાર પણ નહોતો છતાં શ્રીકૃષ્ણજીને વરા કર્યા તે પ્રેમલક્ષણ, ભક્તિનો પ્રતાપ છે ને તે પ્રેમલક્ષણ સદ્ગુણી શ્રેષ્ઠ છે તે ગોપીજનોની ચરણની રમ્મને પણ શીદરિ વદે છે જેથી શ્રીકૃષ્ણ કૃપાળ છે તેને પ્રેમપૂર્વક સેવે.

કુવજીને ક્યાં વય હતું? સુદામાને હતું ક્યાં ધન?

કુમળને હતું રૂપ ક્યાંહાં? ઉગ્રસેન શું પુરુષાતન?

પુરુષાતન નહોતું ઉગ્રરાય જન્મે ક્યાંહાં હતી વિદ્યા,

પારધિમાં ક્યાંથી શુભ આચરણ કેવળ ભક્તિ પામ્યો ગિરિધરજી.

શ્રીકૃષ્ણની ભક્તિ કરવામાં વય-ધન-રૂપ-પુરુષાતન વિદ્યા શુભ આચરણ નેવાતું નથી. પ્રભુ કૃપાથી સર્વે ક્રમે ક્રમે પ્રાપ્ત થાય છે. ભક્તિ જીવમાં પ્રવેશી વૃદ્ધિ પામી વિતાળતાને પામી જીવન પ્રભુમય બની જાય છે. માટે હરેશાં આમલપૂર્વક ભક્તિને સેવે. લુઓ કે કુવજીની વય વાનીજ હતી છતાં શીદરિની આરાધના કરી પ્રભુ પ્રસન્ન કર્યા. વળી સુદામાને ક્યાં ધન હતું? નિર્ધનજ હતો છતાં કૃષ્ણ ઉપર કેટલો બધો પ્રેમભાવ હતો કે તેમના સુદૃઢ તાંડુલ શ્રીકૃષ્ણએ આરાગી તેમને અટળક ધન આપી દીધું. છતાં જીવન પર્યંત સુદામાએ શ્રીકૃષ્ણની ભક્તિ કરી પણ એકલક્ષણ શ્રીકૃષ્ણને નિસાચો નથી. જો રૂપથીજ ભક્તિ થતી હોય તો કુમળને ક્યાંહાં રૂપ હતું? છતાં તેણે પ્રેમથી શ્રીકૃષ્ણ આરાધના કરી જેથી શ્રીકૃષ્ણ તેને આધીન થયા. જો પુરુષાતનથી પ્રભુ પ્રસન્ન થતા હોય તો ઉગ્રસેનને ગાદી ઉપરથી ઉઠાવી મૂકી કંસે રાગસત્તા હાથમાં લીધી. ઉગ્રસેનને કે ક્યાં બાદ કંસે ધણીજ અધર્મ કરવા માંડ્યો ઉગ્રસેન શ્રીકૃષ્ણભક્તિ વિસરતા નહોતો જેથી શ્રીકૃષ્ણજીએ ઉગ્રસેન ભક્તની આશુર ભક્તિથી વેગે આવીને કંસને મારીને રાગ્યાગિનેક ઉગ્રસેનને ક્યોં એ શું ભક્તિનો પ્રભાવ ઓછો છે? વળી લુઓ વિદ્યા પ્રાપ્ત ક્યોંથી શીદરિ દર્શન આપતા હોય તો લુઓ કે હાથીમાં વિદ્યા ક્યાં હતી? છતાં મગરથી મદેસા હાથીએ કુરૂખી યત્ન હરિમરણ ચાલુ રાખી અંતિમ સ્થિતિમાં કમળ શ્રીકૃષ્ણને અર્પણ કર્યું તે શુદ્ધ ભાવનું હોવાથી શ્રીકૃષ્ણ ગરુડ ઉપર સ્વારી કરી. ત્યાં પધારી તેનો ઉદ્ધાર કર્યો. વળી આચરણથી જો પ્રભુ પ્રાપ્તિ થતી હોય તો પારધી વાસ્ત્વિક વગેરેમાં કંઈ શુભ આચરણ ન હોતું, છતાં પ્રભુએ કૃપા કરીને ભક્તિથી પ્રસન્ન થઈ અભયપદ આપ્યું. પ્રભુ ભાવના શુભ્યા છે. શ્રીકૃષ્ણ ભક્તિથીજ પ્રસન્ન થાય છે પ્રાણી માત્રનો ઉદ્ધાર ભક્તિથીજ છે. આપણે જીવન સાત્ત્વિક રીતે ગાળીશું તો અચર્ય આપણે ઉદ્ધાર થઈજ. ભારતવર્ષનો ઉદ્ધાર કરવા અને તેની પરવર્તતા નષ્ટ કરવાને જો આપણે આપણા આદર્શ આદેશો પાળીશું તો શ્રીકૃષ્ણ અચર્ય આપણને વિજય અપાવશે તેમાં સંદેહ નથી. પ્રભુની ભક્તિ તો પ્રાણી માત્રનો ઉદ્ધારી રહે છે. પ્રભુ સ્વયં આગા કરે છે કે મારામાં નિશાપૂર્વકની ભક્તિ એજ અત્યંતને ઉદ્ધારે છે.

મયજી

લિ. કુલચંદ ગોવર્ધનદાસ શાહ, (મંત્રી-શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય પુસ્તકાલય, પાદરા.)

શુદ્ધાદેવ-ભક્તિમાર્તંડ.

લેખક:—શ્રીયુત વિનાદરાય જેમુખરાય, બી. એ. એફ.એફ. બી. અમરેલી.)

(અનુસંધાન પૃષ્ઠ ૬૦ થી.)

રસિક બિન કો રસપાન કરે ?

નન્દનન્દન વૃષભાનનન્દિની લીલાઝરન ઝરે—રસિકબિન ૥૧૥

હાય રહ્યો જમીસો જગમદિયાં, પુષ્ટિ પ્રવાહ ધરે,

પ્રેમાજન પીવત નિસવાસર કમઠ કણુ ઝરે—રસિકબિન ૥૨૥

શ્રીવલ્લભ કરુણા સ્વસંગત, ઉભય ઉપાય ઝરે,

શ્રીકૃષ્ણસ અન્ય સાધનતે, કાજ કણુ ન સરે—રસિકબિન ૥૩૥

ગયા એકના પૃષ્ઠ પદ ના અંત ભાગમાં “ભક્તિયોગ એવ પ્રશસ્યતે” એટલું સંસ્કૃત જાપા પછી અર્ધ-તરીકે જે વાંચ્યો. પૃષ્ઠ ૬૦ ઉપર એકથી દસ લીટી સુધી જાપેલાં છે તે વાંચ્યો “મારા પોતાના વિચારો” હોય તેવો ભાસ થાય છે પણ તેમ મનજવાનું નથી. મૂળમાંજ “ભક્તિયોગો-નિરુપદ્રવ” થી શરૂ કરી “ભક્તવત્સલઃ સ્વયમેવ સર્વેભ્યો” વગેરે અવાન્તર શાખો ખતાવીને અતે ભગવતી શ્રુતિ આગ્રા કરે છે કે “તત્માત્મમપિ સર્વોપાયાન્ પરિત્યજ્ય ભક્તિમાશ્રય ભક્તિનિષ્ઠો ભવ ભક્ત્યા સર્વસિદ્ધયઃ સિધ્ધન્તિ ભક્ત્યાડસાધ્ય” ન કિંચિદસ્તિ” એ પ્રેમાણે શ્રુતિ અનુસારે શ્રીમદ્ભગવદ્ગીતાજીમાં પણ શ્રીમુખની આગ્રા છે કે:—

૧ સર્વધર્માન્પરિત્યજ્ય મામેકં શરણં મ્મજ ૨ ન મે ભક્તઃ પ્રણયતિ ૩ મત્તવા ત્ય-
નન્યયા શક્તયા ૪ નાદં વેદેર્ન તપસા ન દાનેન ન ચેજ્યયા ૫ મન્મના મવ મદ્ગુકો”
છત્પાદિ અને આપણા સંપ્રદાયમાં તો શ્રીમદ્ભગવદ્ગીતાજીમાંનાં શ્રીમુખનાં વાક્યો એટલે કે “ધીરુગવાક્યાનિ” સાક્ષાત્ વેદવાણીજ છે. કારણ કે શ્રુતિજ બુદ્ધદારણ્યકમાં આગ્રા કરે છે કે “અરય મહંતો બૃહસ્પ નિઃશસિત” ઝગરેદો યલુર્વેદઃ સામવેદોઽયજુર્ગીરસઃ ઈત્યાદિઃ તો પછી શ્રીમદ્ભગવદ્ગીતામાંનાં શ્રીકૃષ્ણવાક્યો બોલનાર “અરિમ વેદે લોકે ચ પ્રથિતઃ પુરુષોત્તમઃ” “વેદાન્તકૃત્ વેદવિદેવ ચાદ” છે. જેથી તેમનાં શ્રીમુખનાં વાક્યો જે વેદવાણી જાણવામાંજ અને ગણવામાંજ આવે છે અને આવવાજ જોઈએ એમાં શી નવાઈ? તે શ્રીમુખની વાણીમાં:—

૧ શ્રવણભક્તિ માટે “અપરેક્ષન્તિ તે જ્ઞાનં તદ્વિદિ પ્રણિયાતેન પરિપ્રજ્ઞેન ચ. ૪ શ્લોક ૩૪માં આગ્રા કરે છે.

૨ કીર્તન ભક્તિ માટે અધ્યાય ૯ શ્લોક ૧૪ સતત કીર્તયન્તો માં પરન્તત્ર દદમતાઃ થી.

૩ રમરણુભક્તિમાં અનન્યચેતાઃ સતત યો માં રમરતિ નિત્યયઃ ચ. ૯ શ્લોક ૧૪ માં તથા યથાનાં જવયજ્ઞોઽસ્મિ અ. ૧ શ્લોક ૫ માં આગ્રા કરેલી છે.

૪ પાદસેવન માટે ઉપર લખેલા અ. ૪ શ્લોક ૩૪ માં ઉપરેક્ષ કરનારની સેવા કરવાની આગ્રા છે ત્યારે પ્રભુની તો મન્મના મવ મદ્ગુકો બનવાની આગ્રામાં સમાવેશ હોવાજ એમાં શી નવાઈ?

૫ અર્ચનભક્તિ એજ મન્મનામવયાણા અ. ૧ ના શ્લોક ૩૪ માં મદાઝી બનવા આગ્રા છે અને ઉપર કહેલા અ. ૧ શ્લોક ૧૪ માં દદ મત અપ્રતે યત્ન કરવામાં સમાવેશ છે.

૬ છટ્ટી વન્દનભક્તિ તો અ. ૯ શ્લોક ૧૪ માં નમસ્વન્તો ચ માં ભક્ત્યા અ. ૯ શ્લોક ૩૪ માં નમરકુરુ અ. ૪ શ્લોક ૩૪ માં પ્રણિયાતેન એમ આગ્રા કરી તે મુજબ અ. ૧૧ ના શ્લોક ૫, ૩૬ અને ૪૦. અણુને પ્રણામો ક્યાં પણ છે.

૭ દાસ્યલક્ષિ તે “ શાધિ માં ત્વાં પ્રપન્ન ” એમ અભ્યુત્થિ પહેલી દીનતા ખતાવીને છે. અ. ૧૮ ના શ્લોક ૭૩ માં “ કરિસ્યે વચનં તવ ” એમ આગાહારી જનવાનું વચન પણ આપે છે અને પછી તે વચન પાળ્યું પણ છે.

૮ સખ્યલક્ષિ તે અભ્યુત્થિની પહેલેથીજ હતી માટે અ. ૧૧ શ્લોક ૪૧ માં સખેતિ મત્વ “ તથા સખેવ સખ્યુઃ પ્રિયઃ પ્રિયાઘાલ્સિ દેવ સોદુ ” એવી વિનતિ કરેલી અને નવમી આત્મ નિવેદન લક્ષિની આગા તે અ. ૩ શ્લોક ૩૦ માં મયિસર્વાશ્ચિકર્માશ્ચિસંન્યસ્યાઆત્મચેતસા અ. ૪ શ્લોક ૨૪ માં જે પ્રહારપર્ણાશ્વજાલવિઃ કલ્પું તેની સ્પષ્ટતા અ. ૯ શ્લોક ૨૭ માં યતકરોપિ યદ્દેનાસિ વિગેરે કુરુષ્વ મદર્પણું ” એમ આગ્રામાં કરી છેવટે અ. ૧૮ શ્લોક ૬૬ માં તો મહાવાક્ય “ સર્વધર્માન્યપરિત્યજ્ય મામેકં શરણું મજ ” દ્વરમાવીને અવધિ કરી છે પછી તેથી વધારે અભ્યુત્થિ પોતે પ્રુષ્ઠિમિત્ર ભક્ત હોવાથી અને શુદ્ધ પ્રુષ્ઠિનો અધિકાર ધરાવતો નહોતો હોવાથી તે રથજે આગા કરવા જરૂર નહોતી. ત્યાં જરૂર હતી ત્યાં “ ન પારથેકદનિરવલસંયુજા ” ઇત્યાદિથી કહેલી છે તે આગળ આવશે. કારણકે તે પહેલાં તે કાટિ આપણે સમજવાની પ્રથમ જરૂર છે અને યોગ્યતા પણ પ્રાપ્ત કરવી જોઈએ. “ તાનાવિદમભ્યુત્થિગણદધિયઃ સ્વમાત્માનમંદસ્તથેદ ” એકોદિ તથા “ મામોયુરંજસા ” એ દ્વેષ્ટિએ પહોંચવું મુશ્કેલ છે તે સમજવાનું હવે પછીને માટે રાખીને હાથ તો આગલાવના પદથી સમાપ્તિ કરે છું.

જસોમતિ અપને લાલકા સુંગાર ખનાવે,
ખદન પોંછી દે ગિંદુકા નયની પહેનાવે. ૧૧૧॥
કરનકમ કટિકિકિની ઉરહાર ધરાવે,
કાજર તેનન આંછકે મિસ મદુકા લાવે. ૧૧૨॥
આંગદ કંકના મુદ્રિકા નૃપુર ઊગિ ઊવે,
કુલહી ઝગુલી જરકરી દૈસિ મોદ જતાવે. ૧૧૩॥
કંઠહાંસુરી ખાંસુરી કરલકુડી ગદાવે,
દર્પન દાપ દિગ્માયકે કણુ હસેહસાવે. ૧૧૪॥
કમલક કંઠ લગાવકે પવપાન કરાવે,
કમલક નવનવનીત લે રચિ રચિ ખવાવે. ૧૧૫॥
જે સુખ વિવસત જસોમતિ અહાદિ ન પાવે,
જન ત્રીકમ, અપુને કદા જડઆગ્ય સિરાવે;
જસોમતિ અપુને લાલકા સુંગાર ખનાવે. ૧૧૬॥

આ પદોના રચનાર ત્રિકમદાસ જ્યારા પ્રુષ્ઠિભક્ત હતા અને પ્રુષ્ઠિકવિ દયારામજી જે શુરુના પ્રતાપથી નામાંકિત વૈષ્ણવ યથા તે પ્રદીપકાર ઇચ્છારામ ભટ્ટજીના મિત્ર હતા તેનાં પદની વાનગી પ્રસંગોપાત લેખમાં સામેલ ચંદ્રને આવે તો જેમ પ્રાચીન કીર્તન જાણે છે તેમ જાણવામાં અચકાશે નહીં. તેમની પ્રુષ્ઠિભક્તિની વાનગીઓ કું ગોકળાઓ કરીશ. તેમની દૃઢ પ્રુષ્ઠિભક્તિથી તો તેમના પાત્રના પાત્ર જેમને આપ તથા ઘણાખરા કાઠીઆવાડના પ્રુષ્ઠિવૈષ્ણવો આજખે છે તે ગારા પિતાથી આજે તાદશી જેના દર્શાત છે ત્યાં સુધી અવિચ્છિન્ન પરંપરા ચાલી આવેલી છે,

ભક્તિ કે ઉપાસના ?

(લેખક:-૨૧. ૨૧. જેઠાલાલ મોહનલાલ દવે, B. A.)

સમલકમલદલ લોચન ભવમોચન ૬ । ત્રિમુવનભવનનિધાન જયજય દેવ હરે ।

ભમિનવજલપરસુન્દર મૃતમન્દર ૬ । શ્રીમુક્તચન્દ્રચકોર જયજય દેવ હરે ॥

અનાદિ કાળથી સારા જીવતની ભાષાઓમાં સનાતન તત્ત્વની ઉપાસનાનું માન્યતા દેવી યુગોએ યુગ કંઠે ગાયું છે. અંગ્રેજ રાજકવિ ટેનિસન કહે છે "More things are wrought by prayer than this world dreams of." ઉપાસનાથી આપણે ધારીએ હીએ તેથી વધારે મેળવી શકીએ હીએ. ખરેખર પ્રાર્થનાનું બળ અદ્ભુત છે.

આર્યોનાં ધર્મસ્તંભોરૂપી વેદ ઉપનિષદ અને પુરાણોમાં ઉપાસનાનાં તત્ત્વો દષ્ટિગોચર થાય છે. અતિપ્રાચીન ઋગ્વેદનાં વરુણદેવની ઋચાઓમાં નિષ્કપટી આર્યોનું ભક્તિમીનું હૃદય પ્રતિબિંબિત છે.

"All religions originate in Fear and culminate in Love." તત્ત્વચિંતક કાર્લસ્ટ્રાસ તેના પીઠ પુસ્તક "Sartor Resartus" માં લખે છે કે:-"Wonder is the basis of worship." "અમરકાર સિવાય નમરકાર ન હોય."

દેવળ કુદરતના દર્શનોમાં વિચરતા, પ્રગતિ કરતા આર્યોએ તારકિત નભોમંડળ, વિગ્નળાના અમકારા ને ગેધગજના સાંભળી વિસ્મય પામી પોતાનું ભાવિક હૃદય ઋચાઓમાં પ્રદર્શિત કર્યું. દૈત્યીક ઋચાઓ, પવિત્ર ભાગલીઓનો અદ્ભુત ઉભરો દર્શાવતી હોવાથી સાહિત્યમાં રૂપ જેવી અમૂલ્ય છે. તેમાં કવિતા અને ધર્મનો મુંઠર સમન્વય છે.

યો મે રાજન્યુગ્યો વા સસા વા સ્વન્ને મયં મીલે મહામાહ ।

સ્તેનો વા યો દિપ્સતિ નો વૃકો વા ત્વં તસ્માદ્વરુણ પાહ્યસ્માન્ ॥

ઋ. મં. ૨. મુ. ૨૮/૧૦.

અર્થ:-ઓ વરુણ દેવ ! કોઈ મારો ભાંડુ અથવા મિત્ર જે મારી સમક્ષ સ્વપ્નમાં જોયેલ દર્શનો વળીએ અગર હેતરવા પ્રયત્ન કરનાર ચોર તથા વરુણોથી મને બચાવ. અમારે રક્ષણ કર.

ન સ સ્વો દક્ષો વરુણ ધૃતિઃ સા મુરારમન્યુર્દિર્ભદિકો અચિત્તિઃ ।

અસ્તિ જ્યાયાન્કનીયસ ઉપારે સ્વપ્નચ્ચનેદન્વૃતસ્ય પ્રયોતા ॥

ઋ. મં. ૭. મુ. ૮૬/૬.

અર્થ:-ઓ વરુણ દેવ, મારો કંઈ પોતાનો એવો આશય ન હતો. એ, સો દાર, કોધ, પાસાની રમત તથા અવિવેકનું પરિણામ હતું. ઓ દેવ, મોટા પુરુષોના વાકમાં ગાનાં ગાયકો સદાય હોય છે. મારાં પ્રોટાં કૃત્યો અનેક રાત્રિઓ વીતી ગઈ તો પણ બૂધાતાં નથી.

આવી રીતે મંત્રોમાં ક્ષમા માગતું હૃદય માત્રમ પડે છે. બધા વેદોનો સાર શુદ્ધ અદેશમાં પરિણમે છે. મુખ્ય ઉપનિષદોનો સાર ભગવાન બ્રહ્માણ્યે વેદાન્તમુદ્રોમાં પ્રચિત કર્યો છે. તેના પર ઉપનિષદ, શ્રીયંકર, શ્રીરામાનુજ, શ્રીવલ્લભ ઇલાદિ આચાર્યોએ લાખ્ય લખ્યાં છે.

ઉપનિષદો, વેદાન્તમુદ્રો તથા ભગવદ્ગીતા મળી પ્રચાનત્રી કહેવાય છે. આ સર્વમાન્ય પ્રમાણુત પ્રચાનત્રી ઉપરથી પશું ઉપાસના એ ઈશ્વરાનુભવનું એક સરળ અંગ છે એમ સાબીત થશે.

તા વાં વાસ્તૂન્યુપ્મસિ ગમધ્યૈ યત્ર ગાવો મૂરિગુંદ્રા અયાસઃ । ઋગ્વેદ.

પૃથ્વીવતાર શ્રીબાલકૃષ્ણચંદ્રની દેવી શ્રીકાનું મૂચન આ ઋચામાં ગમિત રીતે થયું છે.

પ્રેમવદ્ધાભક્તિનો દ્વાનુભવ તદ્વિષ્ણોઃ પરમં પદં સદાં પર્યાન્તિ સૂત્રમ્ । (તે સ. ૧-૩-૧૧)
માં ખતાવ્યો છે.

“સોમુતે સર્વોન્કમાન્વદ્યદ્ધા વિષયિતા ।” શ્રુતિ ઉપરથી જ્યાં ઇશ્વરનુબદ્ધી તેનાં સાન્નિ-
ધ્યમાં રહી સર્વ પ્રકારનો આનંદ ભોગવે છે એમ જણાયો.

પરતોત્રમાં પણ સંકેશચાર્યે ગાયું છે:—

સત્યપિ મેવાપગમે નાથ તવાશ્નં ન ગામકીનેત્તવમ્ ।

સામુદ્રો હિ તરંગઃ સ્વચ્ચન સમુદ્રો ન તારંગઃ ॥

જ્યાં એ પરમાત્મા પરશ્વજનો અંશ છે. “મર્મવાંસો જીવલોકે જીવમૂલઃ સનાતનઃ ।” એ
ભગવદ્વાક્ય છે. “અધિકં તુ મેદન્નિર્દેશાત્ । ઇત્યાદિ વેદાન્ત સૂત્રો પરથી તથા વાલ્મીકીયમાનસ
શ્લોકો કલ્પિતસ્ય ત્વાં શાગો જીવઃ સ વિદેયઃ ॥ ૨૧ ॥ ૩-૫-૮ ના મંત્ર ઉપરથી જ્યાં અણુ
અને પરશ્વજની મદતા સ્પષ્ટ છે. “સર્વોપેતા ચ તદ્દર્શનાત્” સૂત્ર પરથી પરશ્વજ સર્વશક્તિપુત્ર છે
એ પણ નિર્વિવાદ છે.

માતા યશોદાજી શ્રીબાલકૃષ્ણને અનેક દોરીધારી બાંધી શક્યાં નહતાં જે મિદાનદે કુઃખાત
દ્રોષદીનાં ચીર ખેંચતાં ખેંચતાં હુદ્ડ કુઃસાસનની બીજાં બુલમયો થાકી ગઇ એટલાં ચીર સતત
પૂર્ણજ કપી. અનેક વિશુદ્ધ ભક્તોની બીડ લાંગી, જણાયું ભક્ત અણુને જેને—“ભનતવીર્વામિત્વ
વિગમસ્ત્વ” કહી ઉપાસના કરે છે એવા કર્તુમકર્તુમન્યથાકર્તુ શક્ય ભગવાનને તો નેકે નેકે
કહીનેજ વારી જ્વાપ તેમ છે.

પરશ્વજ પરમાત્મા અભિધાધાર છે. સર્વકર્તા અને શુદ્ધસુદ્ધમુક્ત સ્વભાવવાળા હોષ વિરહ
ધર્મોત્તમ છે. “કાલીનો દર્દ મનસિ જ્ઞાતો ચાતિ સર્વતઃ ।” એવી અને અન્ય શ્રુતિઓ પરે પર-
શ્વજનું વિરહધર્મોત્તમત્વ કહિત થાય છે. પરમાત્માનાં જન્મ અને કર્મ દિવ્ય અને અદ્વિત્ય છે.

બાલ્યું એટલે બળવું. પ્રેમથી વળગવું. જે તમે ભજો નહિ, પ્રેમથી વળગો નહિ તો તમારા-
માં જ્ઞાન ઉત્પન્ન થયું નથી એમ સમજવું. પરમાત્મા એ પ્રેમી ભક્તો માટે પ્રેમનું આશ્રયન છે.
ભગવાન પ્રેમ વડેજ વશ થાય છે. તે પ્રેમાનુભવ તો મીરાં, દયારામ કે નરસિંહ જેવાં વિશુદ્ધ
અને નિઃસીમ ભક્તિભાવવાળાં હૃદયોજ બાણી રાકે.

અદ્વાવિત ભક્તે સારી મેંડે સમજતું જોઈએ કે અલગતિરિક્ત કંઈ જેજ નહિ. જ્યાં અને
‘અલ’ અર્થે આત્મરોગ્ય સંબંધ છે. જ્યાં આત્મા, આત્મિત છે. પ્રાણ એ ‘એય’, આધાર અને
અંતર્ધર્મી છે.

દયાધન પરમાત્મા ભક્તની વિશુદ્ધ ઉપાસનાથી પ્રસન્ન થાય છે. પ્રભુકૃપા થઇ એટલે કંઈ
પ્રાપ્તિન્ય રહેતુંજ નથી. ભક્તનાં પાપ બળી જાય છે. તેનું હૃદય વિશુદ્ધ બને છે. “ધર્મેય પાપમન્નુદતિ”
એવી મહાનાશયજ્ઞોપનિષદમાં શ્રુતિ છે. કાલાન્તરે તેવધારાવત્ સતત પરાતુરકિંતથી મનોવૃત્તિ
સ્થિર થાય છે; અન્તઃકરણ અતિવિશુદ્ધ બને છે અને સર્વત્ર અહમદૃષ્ટિ થાય છે. આવા ભક્તો તો
સર્વપ્રાણી માત્રમાં દરિદર્યન અનુભવે છે. તેને તો “જ્યાં જ્યાં નજર મારી કરે ત્યાં ત્યાં નિશાની
આપતી.” એમ તદાકાર વૃત્તિ થઇ ઉપમ-પુરતોત્રમાં કહ્યા પ્રમાણે વિરહીવ વિમો પ્રિયમનઃ પરિવરણમિ
મવન્મયે જગત્ ।” અનુભવે છે. આવી ચરમાવસ્થાનો ધન્ય પળોમાં જ્ઞાન અને ભક્તિનો બેદ રહેતોજ
નથી. જ્ઞાતી કવિ અમો કહે છે તેમ “આત્મા ધૂપ સમરસ રહે” છે. આ દેવી રિયતિમાં
અર્ચાકેક અને અવાન્ય આનંદ પ્રાપ્ત થાય છે.

યં લક્ષ્યં ચાપરં લભં મન્યતે નાધિકં તતઃ । યદિમન્થિતો ન દુઃસ્તેન ગુરુણાપિ વિચિન્ત્યતે ॥

આ રીતે ભક્તિ વડે દુઃખની આત્મલિક નિવૃત્તિ યદિ નિશ્ચિતશય મુખની પ્રાપ્તિ થાય છે. માટે ભગવાનની ભક્તિ એજ સાચો પુરુષાર્થ છે. ॥ પુરુષાર્થો દિ મગજનિવ ॥ અણુમાણ.

ધણુંને શંકા થાય છે કે ક્યા દેવની ઉપાસના કરવી ? આનો જવાબ એ કે શ્રદ્ધા એ ઉપાસનાનું પ્રથમ પગથીઉ છે. સાધકે ઉપનિષદમાં તથા ગીતામાં કલા પ્રમાણે શ્રદ્ધાવિત્તઃ યતુઃ શ્રદ્ધાવિદીન કરેલાં કાર્યો નિષ્ફળ જાય છે. મહાભારતમાં કહ્યું છે કે “ અપ્રદ્ધા પરમં પાપં શ્રદ્ધા પાપમોચનો ॥ ”

ખીજી આખત મિમ્મલવિદિં શ્લોકઃ । જ્ઞેમ એકજ જાતના ખોરાક પર બધાને એક સરખી રમિ ઉત્પન્ન થવી અસંભવિત છે તેમ એકજ દેવની ઉપાસના ઉપર બધાને આરથા થવી શંકાસ્પદ છે. દરેકને તેના પૂર્વકર્મોનુસાર, તેની પ્રકૃતિ અનુસાર અમુકજ દેવ પ્રત્યે સ્વાભાવિક વિશેષ પ્રીતિ ઉદ્ભવે છે. તેને તેમાં શ્રદ્ધા જટ ચોટે છે. તે સાધકે સ્વરચિકર દેવમાં અજાદદિ કરી સર્વાત્મમાત્રે ઉપાસના કરવી. એવસાધકે તો પ્રતીકમાંથી રચ્યદદિ દૂર કરી મૂળ બળદદિએ જ્ઞેવાનું છે. રસાત્મક બ્રહ્મના સાધકને તો સર્વદેવનમસ્કારકેરુર્ણઃ પ્રતિગચ્છતિ ॥ એવી દૃઢ ભાવના ધોવી જોઈએ. ઉપાસના એ મનોઆધાર છે.

દેશ અને કાળાદિ ધ્યાનમાં લેતાં ઉપાસનાનું રહસ્ય, આત્મસમર્પણ અને નિષ્કામ કર્મવીર યત્રામાંજ સમાયેલું છે. શીભગવદાક્ય પશુ છે:—

મયિ સર્વાણિ કર્માણિ સંન્યસ્યાધ્યાત્મચેતસા ॥

નિરાશીર્નિર્મમો ભૂત્વા પુવ્યસ્ય વિગતઃશ્વરઃ ॥૨૧૩૦

ભગવદ્ગીતાના પુરુષોત્તમયોગમાં ગીતાસાર સમાયેજ છે. ઉપાસ્ય તત્ત્વનું તથા આત્મસમર્પણનું સૂચન નીચેના શ્લોકમાં આકેખ્યું છે.

તતઃ પદં તત્પરિમાર્ગિતવ્યં યસ્મિન્ગતા ન નિર્વર્તન્તિ મયઃ ।

તમેવ ચાપં પુરુષં પ્રપપે યતઃ પ્રવૃત્તિઃ પ્રસૂતા પુરાણી ॥૨૧૪૧॥

[શેષક સાંપ્રદાયિક નથી, છતાં તેમનો ધાર્મિક ઉત્સાહ વધાવવો રહ્યા. તંત્રી.]

અમ્મ પાચન માટે અજળ ગુરુજો, સ્વાદિષ્ઠ શુદ્ધ મુંદર

હળમાહળમે ચૂર્ણ.

આ ચૂર્ણ વૃદ્ધ યુવાન બાલક વગેરે દરેક સેવન કરી શકે છે. આથી કબજાયાત, અપચો, પેટનો દુખાવો, આંદરો, દાહ, મંદાગ્નિ, ઉલટી, ખાડા, મોળ, અલ્હુ, અશક્તિ વગેરે તેમજ હાથ પગની તૂટ, વીર્યસ્રાવ, સ્વપ્નદોષ, શરદી, અજેખમ વગેરે શરીરની વ્યાધિઓમાં અકસીર છે. કિં. બા. ૧ નો ૩. એક, ટપાલ ખર્ચ જુદું. નમુના માટે એ આનાની ટીકીટ મોકલો.

દે. ખરડા કાર્મસી, પોરબંદર.

આર્યત્વના રક્ષણહાર.

(વક્તા—લાલજી દયાળજી રાણપુરા, મંત્રી—શ્રીવૈષ્ણુવંધર્મ મહાસાગર ટંકારા.)

શ્રીવલ્લભાધીશ્વરના પ્રાકટ્યનું સ્વરૂપ યત્કિચિત્ આપ સમજાવો. સમક્ષ બોલવા રંગ લઈ છું. આ મેલાવકામાં કેટલાએક મેલ્યુએટોની હાજરી હોઈ તે તે મહાન્ વક્તાઓ સમક્ષ મારા જેવા બેચાર ચોપડીના જ્ઞાનવાળા બોલી આવી આદર્શ સલામમાં શું અન્યાયનું નાંખવાના ? તો પણ મારી બોલવાની કંઈક અંશે ફરજ લેખાય એ દૃષ્ટિએ આજના ઉત્સવપતિના પ્રાકટ્ય ઉપર મારી અલ્પ બુદ્ધિઅનુસાર કહી ફરજ અદા કરીશ.

આપણે ઇતિહાસના પાનાઓ ઉર્થલાવેને બેઠાએ છીએ. કે જે ધર્મને રાજ્યાશ્રય હોય તે ધર્મ અધિક પ્રખળ હોય છે. પરંતુ જે ધર્મને રાજ્યાશ્રય નથી તે ધર્મની પ્રગળતા તે ધર્મના સસ સ્વરૂપને સ્વયં શક્તિપર રહેલી છે. રાજ્યની શક્તિ કરતા ધર્મની શક્તિ અધિક છે. કારણ કે રાજ્યશક્તિ એ લૌકિક શક્તિ અને ધર્મની શક્તિ એ અલૌકિક શક્તિ છે. જેથી લૌકિક શક્તિ મને તેટલી પ્રગળ હોય પણ ધાર્મિક અલૌકિક શક્તિ આગળ તે તૂટી પડે છે. હિન્દુસ્થાનમાં બ્યારે ઇસ્લામીઓનું શાસન પ્રવૃત્ત હતું, ત્યારે આર્ય ધર્મ ઉપર ઇસ્લામીઓ અમાનુષી ભુલ્મ શુભરવા જરાયે ચૂકતા નહતા. છતાં પણ પ્રાચીન અને રાજ્ય સ્વરૂપને ધારણ કરનારો આર્ય ધર્મ મક્કમણે પોતાની સત્તા તેવી ને તેવી જ બળવી રહ્યો છે.

હિન્દુસ્થાનમાં ઇસ્લામીઓની સત્તા લગભગ છસ વર્ષ સુધી રહી હતી ને તે દરમિયાન હિન્દુ ધર્મ ઉપર ને હિન્દુ કોમ ઉપર પ્રસંગોપાત્ત બુલ્મો થયાજ કહી, છતાં હિન્દુ ધર્મને પ્રકાશમાં લાવનારા આચાર્યો ઉદ્ભવ પામી મુસ્લીમોના બુલ્મને જેર કરી હિન્દુ ધર્મનો પાયો મજબુત કરતા જ ગયા છે.

હિન્દુ ધર્મના મહાન્ આચાર્યો પૈકી શંકર, રામાનુજ, મધ્વ, નિમ્બાર્ક; ચિતંબ અને શ્રીવલ્લભાચાર્ય આદિ મહાન્ આચાર્યોએ પોતાના બહુવિધ મહામૂલ્ય જીવનને ધાર્મિક પરિસ્થિતિને અંગે સર્વસ્વ હોમી આર્યત્વ અને આર્ય ધર્મનું રક્ષણ કરી વેદ ધર્મનો લોપ થતો અટકાવી યુગ સ્વધર્મના મોરચા માંડ્યાજ છે. એ મહાન્ આચાર્યો પૈકી એક શ્રીવલ્લભાચાર્યજી શ્રીમહા પ્રભુજી છે કે જેમની જયંતિ ઉજવવાને આપણે આજે આ સ્થળે મન વચન અને કર્મથી એકત્ર થયા છીએ. આજે એ મહાપુરુષવરના જીવનકાવ્યની રૂપરેખા ચિતરવા આપ સમક્ષ આ સેવકે હીમત તો કરી છે પરંતુ એ રૂપરેખા સંપૂર્ણ રીતે દોરી શકીશ કે કેમ એનો મને વિશ્વાસ નથી, તો પણ એ શ્રીવલ્લભપ્રભુની કૃપાથી યત્કિચિત રીતે પણ વર્ણનાગાન ગાઇ મને કૃતકૃત્ય માનીશ.

શ્રીવલ્લભાચાર્યજીના પ્રાકટ્ય વખતે અને તે પહેલાં અસ્થાન્તિનોજ સુમ હતો, એટલે કે હિન્દુ ધર્મની રિયતિ ધણીજ વિષમ હતી. જે કે તે વખતે વિજયનગરનું હિન્દુ રાજ્ય કંઈક અંશે હિન્દુ ધર્મની સત્તા ને ગારવ બાળવવાને પ્રયત્ન કરતું હતું પણ તે હિન્દુ ધર્મના વિશાળ પ્રદેશને હિન્દુ કોમની વિશાળતા આગળ વનરાજ આગળ સૂઝની માફક કશા હીસાબમાં નહતું. વળી તેનાથી બેઠાએ તેટલી છુટકા તે કામ થઈ શકતું નહતું. કારણ કે દક્ષિણના બ્રાહ્મણી રાજ્યનો દેવ તેના ઉપર ગાજતો હતો, અને તેજ રાજ્યોએ તેને આખરે જમીનદોરત કર્યું હતું. બીજી બાજુ વિધર્મીઓના આક્રમણથી આપણા પૂર્વજો અસ્થિત તારી રહ્યા હતા અને રાજ્ય મંજૂરમાં કેવળ અવ્યવસ્થાનું સામ્રાજ્ય પ્રવર્તી રહેતું હતું. મનુષ્યજન્મ જેવું મહાસાધન મધ્યા પછી પણ ઔદિક અને પારલૌકિકની ઉન્નતિ સાધવાનું અસાધ્ય જેવું થઈ પડ્યું હતું. આગાની

રાત્ર્યપાનીએ ગહેલા ધર્માન્ધ સિકંદર હોદી હિન્દુઓ અને હિન્દુઓના ધર્મને જમીનદોસ્ત કરવા જગાએ પાછી પાની કરતો નહિ. તેની સત્તા અને રાત્ર્ય મજબુત હતાં. તેણે પોતાના આખા્ય રાત્ર્યમાં હિન્દુઓને દેવદર્શન કરવાની પવિત્ર નદીઓમાં ન્દાવાની તથા તીર્થાટન કરવાની પણ મના કરી હતી. હુંકમાં એટલું તો કહીશું કે સર્વત્ર અધર્મજ પ્રવર્તી રહેશે હતો, આવા અશાન્તિના યુગમાં પ્રભુ વિચારે છે અને શાન્તિ અને ધર્મનું સ્થાપન માટે જ અપતાર લે છે. શ્રીગીતામાં કહ્યું છે કે:—“હું અજન્મા છતાં આવનાશી છતાં અને સર્વ પ્રાણીઓનો તથા પદાર્થોનો ધ્રુવર છતાં મારી માયારી જન્મ ધરું છું. અને જન્મ ધરું છું તે પણ મારી પર-અહ્યાત્મક રીતિતે નહીં સુકતાજ ધરું છું.”

જ્યારે ત્યારે ધર્મની ગ્તાનિ અને અધર્મનો ઉદ્ભવ થાય છે ત્યારે ત્યારે હું પોતાને પ્રકટ કરું છું. શાસ્ત્રીય દષ્ટિએ સિદ્ધ થયું કે આ સમય ધર્મગ્તાનિનો હતો. આવા સમયમાં ભારતભાતા પણ ત્રાહી ત્રાહી પોકારી રહ્યાં હતાં. આવા કટોકટીના સમયમાં આર્વાધર્મના યુગ્મતા દીપકને પ્રજ્વલિત કરનાર ભારતભાતાના અરે આર્વાત્તના રક્ષણદાર મલી ગયા. તે શુદ્ધ સનાતન લક્ષ્મિ-માર્ગના સ્થાપક જગદુદ્ધારક જગદ્ધંનીય જગદ્ગુરુ શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજી શ્રીમદ્દાપ્રભુજી (તાલીઓ).

આપશ્રીનું પ્રાકટ્ય મધ્ય પ્રાંત રાયપુર જ્ઞાના રાજગ્રામ સગીપ અંપારજ્યમાં વિક્રમ સંવત ૧૫૩૫ ના ચૈત્ર કૃષ્ણ ૧૧ ના મંગલમય દિવસે થયું હતું. આપશ્રીના પિતાશ્રીનું નામ શ્રીવદ્મજ્ય લાદ્ય, જાતિ તૈક્ષ્ણ બ્રાહ્મણ કૃષ્ણ યજુર્વેદ શાખા તૈત્તિરીય ગોત્ર ભારદ્વાજ કુલ. વેંગનાડુ જોળખાતું હતું. આપશ્રીને સંવત ૧૫૪૦ માં ચૈત્ર કૃષ્ણ અષ્ટમીના દિવસે અનેક પિદાનો અને રાગતીયની હાજરીમાં વૈદિક વિધિનુસાર ઉપનયન સંસ્કાર અપૂર્વ સમારોહથી કરાવ્યો, તદનુસાર આપશ્રીનું વિદ્યાધ્યયન કાર્ય શરૂ કર્યું. આપશ્રી એવા તો વિદ્યાવ્યસની કે ગુરુની પાસે તો વિદ્યા-ધ્યન તો કરતા પણ આપશ્રીના વિદ્યાન પિતાથી તેમજ અન્ય વિદ્યાનોની પાસે પણ જે જે શાસ્ત્રોની સાતા હોય તે તે શાસ્ત્રોનું પણ લક્ષ્યપૂર્વક ગ્રહણ કરતા આપશ્રી હુંક સમયમાંજ વિદ્યા-ધ્યનનું કાર્ય પૂર્ણ કરી લીધું અને આપશ્રી વિદ્યાનો પરિચય કરાવતા અનેક પિદાનોને પરાજીત કરી લેતા [આપશ્રી આપશ્રીની અઘૌકિકતાનો પરિચય દેવા લાગ્યા. આપશ્રીએ હુંક ‘સમયમાંજ આખા્ય હિન્દમાં ફક્ત એક ધવલ (સરોદ) ધોતી અને ઉપરજેજી ચરણે ચાત્રી ધારી કરીને શુદ્ધ વૈદિક પુષ્ટિ-લક્ષિતમાર્ગની સત્તા ચારે છેડે સ્થાપી. પશ્ચિમમાં નગરદેશ, દક્ષિણમાંવેતપિંદુ રાજેશ્વર, પૂર્વમાં કલકત્તાની પણ પેત્રીપાર ગંગાસાગરને ઉત્તરે છેક હિમાલયની તમેટીમાં બદ્રીનાથ કેદારનાથ તથા વ્યાસાશ્રમ સુધી પોતાનો વિજયપન્થ ફરકારીને અનેક જીવને સરણે લીધા. આ કાર્યમાં તે વખતે પરધર્મના રાત્ર્યો છતાં પણ પરજ્ઞાતવના તેજેમય દિવ્યશક્તિએ સર્વેના સિરે તેઓશીના અરણ્યાર્ચિદમાં સુકી જતા, સમયાલાવથી આટલું જ બોલીને હાલ તો પિરમીસ.

નામમાહાત્મ્ય.

[લેખિકા:—બહેન સરસ્વતી દાણી.]

આપણે સૌ જગતમાં મોટામાં મોટા એવા પ્રભુને માનીએ છીએ કારણ કે તેજ આપણા જન્મદાતા રક્ષક અને કલ્યાણકર્તા છે અને તેથી ભગવાનના નામનું સ્મરણ અને રટણ બધાં કરતાં ઉત્તમોત્તમ છે. ભગવાન સર્વવ્યાપક અને અતંયગમી હોવા છતાં તે આપણી દષ્ટિએ અદશ્ય છે અને તેથી આપતકાળમાં તેમની સહાયતા મેળવવા આપણે અસમર્થ છીએ. ને કે ભગવાન સદાસર્વદા સર્વવ્યાપક એટલે નહક દોષાં છતાં પણ આપણે માટે તે દૂર જેવા છે.

દરેક મનુષ્ય ત્યારે ત્યારે પોતાના ઉપર કાંઈ પણ આપત્તિ આવી પડે છે અને ત્યારે કંઈ પણ ઉપાય જણતો નથી ત્યારે ભગવાનને સંભારે છે અને ભગવન્નામોચ્ચારણથી ઉપાધિથી ઘેર-ધંધા મનુષ્યને એક પ્રકારની શાંતિ મળે છે અને ધૈર્ય પ્રાપ્ત થાય છે અને તે પેતાને નિર્ભય મને છે. આપત્તિના સમયમાં ભગવન્નામ લેવાથી આપણને શાંતિ થાય છે અને અણધારી મદદ મળી જઈ આપણા દુઃખની નિવૃત્તિ થાય છે.

દ્રૌપદીની ઉપર ત્યારે કૌરવોએ લુલુપ્થ કરવા માંડ્યો ત્યારે એક પછી રસ્તો ન સૂઝતો દ્રૌપદીએ ભગવાનનેજ સંભાર્યો અને શીઠરિએ તેની રક્ષા કરી તે આપણે સા જાણીએ છીએ. એવી રીતે અનેક ભક્તોના દુઃખોનું નિવારણ ફક્ત અંતઃકરણપૂર્વક અને ભાવપૂર્વક ભગવત સ્મરણથીજ થયું છે તેની સાક્ષી આપણો ઇતિહાસ પૂરે છે. બીજા મનુષ્યને પણ તેવા પ્રકાર પ્રાપ્ત થતાં ભગવતનામઉચ્ચારથી તેને નિઃકરતા આવી જાય છે અને ધૈર્ય પ્રાપ્ત થાય છે એવા પ્રતાપ ભગવતનામનો છે. ભગવાનની પ્રાર્થના માટે અનેક પ્રકારના સાધનો હોય છતાં સાધારણ મનુષ્યોને માટે ભગવત નામ સિવાય અન્ય કોઈ સરલ સાધન નથી. કહ્યું છે કે જે લોકો જન્મ મરણથી દૂરવા માંગતા હોય તેણે આદિઆદિ પરમાત્માનું અહર્નિશ સ્મરણ કરવું.

કલિયુગમાં બીજા સાધનો કરતાં ભગવન્નામોચ્ચારણ માત્રથીજ ભગવતપ્રાપ્તિ થઈ શકે છે એમ અનેક દેકાણે શાસ્ત્રોમાં છે. અને કહ્યું છે કે સત્યયુગમાં ધ્યાનથી, ત્રેતાયુગમાં યજ્ઞથી, દ્વાપરયુગમાં અર્ચનથી જે દુઃખ મળતું તે દુઃખ કલિયુગમાં ફક્ત ભગવાનના નામસ્મરણ અને કીર્તનથી મળે છે. શ્રીમદ્ભગવતમાં શ્રીમદ્વેદવ્યાસજી કહે છે કે—

કલેર્દોષનિષે રાજન્ અસ્તિ લોકો મહાનુભઃ ॥

કૌર્ત્તેનાદેવ કૃષ્ણસ્ય મુક્તવન્ધઃ પરં વ્રજેત્ ॥

એટલે કે કલિયુગમાં ભગવતનામ અને કીર્તનથીજ સંસારના બધા બંધનોથી મુક્ત થઈ મનુષ્ય પરમાત્માને પ્રાપ્ત કરી શકે છે.

એવી રીતે ભગવન્નામનું માહાત્મ્ય મહાન છે. તેનું વર્ણન કરવું અશક્ય છે. કલિયુગમાં બીજા સાધનો ન બની શકે તો ભગવતનામથીજ ઉદ્ધાર થાય છે. માટે જેસતાં ઉત્તો, હાવતાં, ચાલતાં, સૂતાં જાગતાં અને કામકાન્ન કરતાં ભગવાનના નામનુંજ સ્મરણ કરવાની જો આપણે દરેક દેવ પાદીએ તો આપણું કથ્થાણુજ થાય એ નિર્વિવાદ છે. x

x સુચિત

[મગ્ધુર લેખની અનુવાદિકા બહેનનો સામાન્ય પરિચય આ છે. કુ. બહેન સરસ્વતી અમારા સન્નિવર પરભગવદીય ભાષ્ય દારકાદાસ જેઠાભાઈ દાણીનાં સુપુત્રી છે. ચિ. સરસ્વતી માત્ર મોડકાવર્ષીય હોવા છતાં સારાં ઉત્સાહી અને સુસરકારી બાલિકા છે. ધાર્મિક સંસ્કાર સારા છે તદનુસાર સામાજિક કાર્ય પણ આગળ પડતો ભાગ લઈને કરે છે. ધો. પ્રા. સમયમાં તેમણે ચાલિતી બહેનો પ્રગતિ કરે તેને માટે એક અધીવ બહાર પાડી હતી તેથી તાત્કાલિકમાં ચાલિતું 'શ્રીગાદિલવાદ દસા શ્રીમાળી સ્ત્રી મંડળ' સ્થાપી તે દ્વારા શિક્ષણ અને શિષ્યુના વર્ગો ચલાવવા અને પુરવઠાકાલની વ્યવસ્થા પણ ચિ. સરસ્વતી રાખે છે. (મગ્ધુર. સરસ્વતી મન્નિયુ છે.) ગત વર્ષે તે 'વનકિયુવર' શાસ્ત્રના પરીક્ષામાં ઉચ્ચકક્ષામાં ઉત્તીર્ણ થયાં છે અને હાલમાં તે રચનાત્મક વનિતવિગ્રામની ટ્રેનીંગ સંસ્થામાં પ્રથમવર્ગ પણ સોરે નંબરે પસાર કર્યું છે. તે અત્યંત નવાર લેખ કાવ્યાદિ મોકલાવે છે. તેમજ સામગ્રીતિક તથા અન્ય 'પણ રસાદિતીનું વાંચન સારા પ્રમાણમાં કરે છે.]

ગોવિન્દ.

[અનુવાદક—ડૉ. મોનાંશ વિશ્વામ ઠક્કર, જી. પી. એ. સી., ખેડોઇ-૬૨૭.]

ગોવર્ધન નામનું એક સુંદર નાનું ગાય હતું. ગાયમાં આઠાણ, કાશિય અને વેરણીની વસ્તી વધારે પ્રમાણમાં હતી. આ ગામની વચ્ચેમાં એક મંદિર હતું જેમાં શ્રીનાથજીનું એક સુંદર સ્વરૂપ મિશ્રજેઠું હતું. સ્વરૂપ એટલું સુંદર હતું કે તે જોતાં માણસનું મન ધરાવજ નહિ. તેના ચરણોમાં ઝાંઝર, ગજામાં માળા, મસ્તકપર મુકુટ-વગેરે શોભી રહ્યાં હતાં. નેત્રો પણ મનોહર હતાં અને પીતામ્બર પહેરેલું હતું.

આ મંદિરની ખાલુમાંજ એક ગરીબ આઠાણનું ઘર હતું કે જેનું હૃદય પ્રભુભક્તિમાં રંગાયેલું હતું. તેની સ્ત્રી પણ બહુ સરળ સ્વભાવની હતી અને પોતાના પતિની માફક તે પણ પ્રભુભક્તિમાં મસ્ત રહી તે પતિની સાથે રહેતી. એના મુળેથી ક્યારે પણ કાઠને તે કડવા વચન કહેતી નહિ.

માતા પિતાની જેવી પ્રકૃતિ હોય છે તેવીજ બાળકની પણ થાય છે. એ નિયમ પ્રમાણે આ ઘંપતીને ગોવિન્દ નામે દસ વરસની ઉમરનો બહુ સરળ સ્વભાવનો એક પુત્ર હોતો જે એટલો સુંદર હતો કે લોકો તેને કામદેવનો અપ્તાર કહેતાં પણ અચકાતા નહિ.

ગોવિન્દ ગામની બહાર પોતાના મિત્ર સત્તાનંદ અને રામદાસની સાથે રમતો. એક દિવસ રમતાં રમતાં સાંજ થઇ અને તે પોતાના ઘર તરફ આવતો હતો એવામાં મંદિરમાં આરતી થતી હતી ત્યાં ઘંટા, ઝાંઝ વગેરેનો અવાજ સાંભળીને તેને પણ ભાં જળીને તે જોવાની ઇચ્છા થઈ અને તરતજ દોડીને શ્રીનાથજીની આસપાસ ફરતી ફરતી ત્યાં તે ગયો.

શ્રીનાથજીનાં દર્શન કરીને બાલકનું મન તેમાંજ રમી રહ્યું. ગોવિન્દ મૂર્તિને એક મૂર્તિ ન સમજતાં તેણે પ્રત્યક્ષ જોયું કે એક સુંદર ચંતનમય બાળક ઉભું ઉભું હસે છે.

ગોવિન્દ શ્રીનાથજીની મધુર મુખપ્રકૃતિ પર મોહિત થયો. તેના મનને થયું કે જો આ બાળક મારો મિત્ર બની જાય અને મારી સાથે રમે તો બહુ મજા પડે. એટલામાં આગ્રહ સમાપ્ત થઈ અને બંધા લોકો પોતાને ઘેર ગયા. સેરક પણ મંદિર બંધ કરી પોતાને ઘેર ગયો પણ ગોવિન્દ મંદિરની બહાર અધારામાં શ્રીનાથજીની વાટ જોતો ઉભો રહ્યો. જ્યારે તેણે ચાતરક જોઇ લીધું કે હવે અહિં કોઇ પણ નથી ત્યારે મંદિરના દરવાજાના છેદોમાંથી અંદરના શ્રીનાથજીને જોઈ તે હૃદયની બહુગંભીર અવાજથી ગદગદ કરે પ્રેમપૂર્વક કહેવા લાગ્યો—“શ્રીનાથજી, તમે શું મારી સાથે નહિ રમો ? માફ મન તમારી સાથે રમવાને બંદુ આવુર થઇ રહ્યું છે. લાઈ આવો. ભુઓ તો ખરા ? કેવી મજાની સાંઘતી રાત છે ? આજે આપણે બંને મેદાનમાં ગેડીદો રમીએ હું સાચું કહું છું કે લાઈ, તમારી સાથે હું લડીશ નહિ અને મારપીટ નહિ કરું.

સરળ હૃદયના બાળકના મત ઉપર આરતીના સમયે જે પ્રજ્ઞા પડ્યો તેનાથી તે ગાંઝા જેવો થઈ ગયો. પરમાત્માના મંદુર અને અનંત પ્રેમના અપ્રત લાઈ પવિત્ર વાતાવરણથી પ્રેમ-મગ્ન થઈને મંદિરની અંદર ઉભેલા એ ભક્તના પ્રાણુનને ગોવિન્દ શાંત શાંતિ એજ વિનંતિ કરવા લાગ્યો. બાળકના એ આંસુભર્યા ચહેરાએ ક્યારે કામ કર્યું. “જે મને જેની રીતે લાગે છે તેવી રીતે હું તેને મળું છું. એ પ્રતિજ્ઞા પ્રમાણે ભક્તનાં પ્રેમે શ્રીનાથજીને ખેંચી લીધા. ગોવિન્દે સાંભળ્યું. અંદરથી અવાજ આવ્યો કે લાઈ, આવ, આવું છું. આપણે બંને સાથે રમશું.

નિષ્પાલક હૃદયના બાળકનો પ્રેમ પ્રભુને બહુ ઈચ્છીથી ખેંચે છે. બાળકે ક્યારે મારે ચારે ભુમમાળા બનીને વનમાં જઈ પડ્યું. ભંડા પ્રજ્ઞાને મારે નરસિંહવેશ-ધારનો પડ્યો, અને

મગ્ગના બાળકોની સાથે પોતે ગાયો ચરાવતા ચરાવતા ધ્વનિન ધુમ્પા અને આજ ગોવિન્દની પ્રેમભરી વિનવટથી તેની સાથે રમવાને મંદિરની બહાર આવ્યા.

ધન્ય પ્રજા, તમે તમારી સકિત સાથે કંઈક વનત જાતની કીડા કરો છો. તમારી કળાને કોણ કળી શકે ? નહીં માયાની સકિતના પ્રમળથી પણ શ્વેતલોકના મનુષ્યો બ્રમમાં પડી જાય છે. તો તમે તો માયાના પણ અધિષ્ઠાતા છો. જિયારી માયા તો તમારી દાસી છે અને હરહંમેશ તમારા ચરણકમલની સેવા કરી રહી છે તો તમારી માયાને કોણ છતી શકે ? એટલું તો અવશ્ય જણાય છે કે તમે તમારા લક્ષ્મીની સાથે ગમત કરવામાં જુદુ આનંદ માને છો. તેથીજ તમે ભક્ત ધનાઞ્ઞ સાથે ગાયો દોહતા ફરતા હતા. અને એવીજ રીતે આજ પણ ભક્ત બાલક ગોવિન્દનો આર્તનાદ સાંભળીને તેની સાથે રમવાને તૈયાર થયા છો.

શ્રીનાથજી હસતા હસતા ગોવિન્દની પાસે આવ્યા અને બહુજ પ્રેમપૂર્વક તેનો હાથ ધકડ્યો. આજે ગોવિન્દના આનંદનો પાર નથી. એ શ્રીનાથજીનું મુખ જોઈને ગાંડો બની જાય છે. તો વળી ક્યારેક તેમના કોમળ હાથનો રક્ત કરીને પોતાને ધન્ય માને છે. વળી તેમના મનોહર નેત્રો જોઈને મોહિત થાય છે. તો વળી તેમનો મધુર અવાજ સાંભળીને ફરીથી તે સાંભળવાની ઇચ્છા કરે છે. એમ ગોવિન્દના હૃદયમાં આજે આનંદ સમાતો નથી. અને ખરેખર એવુંજ હતું કારણ કે જગતનું સમસ્ત સૌંદર્ય જેના સૌંદર્ય પાસે એક તુચ્છ વસ્તુ જણાય છે એવા સૌંદર્યને મેળવીને એવો કોણ હોય જે મુગ્ધ ન થાય ?

આ નવા મિત્રને પોતાની સાથે રાખી ગોવિન્દ ગામની બહાર ગયો. ચંદ્રમા પૂર્ણ પ્રકારનો હતો. ચાંદની ખીસી રહી હતી. પુષ્પની અર્ધો ખીસેલી કળાઓ જંગલના પવનને પોતાની મધુર શ્વપથથી જંગલની ખુશીમાં વધારો કરી રહી હતી. જલ્લે કે કુદરત પોતાના નાથને પોતાની સેવાથી ખુશી કરવાને તત્પર હતી. આરી મનોહર ચાંદનીમાં શ્રીનાથજી મળવાથી ગોવિન્દ પોતાનું ધર માતા પિતા ઉપર ભૂખે સર્વે ભૂડી ગયો અને બંને મિત્રો જુદી જુદી રમતો ખેલુજ આનંદથી રમવા લાગ્યા.

ગોવિન્દે કહ્યું હતું કે હું તમારાથી લરીશ નહિ અને મારીશ નહિ કહ્યું ચરતું શ્રીનાથજીની વિનોદપ્રિય માયાથી મોહિત થઈને એ વાતને તે ભૂલી ગયો. રમતાં રમતાં કોઈ વાત ઉપરથી બંને મિત્રો લડી પડ્યા. ગોવિન્દ શરૂએ થઈ ગયો અને શ્રીનાથજીના ગાલ પર એક થપક ચડાવી દીધી. અને કહ્યું બોલ ફરીથી બે કદી અને ખીજનવીસ તો વાદ રાખજો કે મારી મારીને વાંસો લાલ કરી દર્શશ. સૂર્ય ચંદ્ર વિગેરે જેના ભયથી પોતાના કામમાં લાગી રહ્યા છે, દેવરાજ છંદ પણ જેના ભયથી વખત પર વરસાદ વરસાવવાને બંધાયેલા છે, યમરાજ પણ જેના ભયથી પાપીઓને ભય દેખાડવામાં લાગી રહ્યા છે, એવા ત્રિભુવનનાથ આજ એક નાના બાલક ભક્તની સાથે રમતાં તેની થપાટ સહન કરીને કંઈ બોલતા નથી. ધન્ય છે.

શ્રીનાથજી રાવા લાગ્યા. અને કહ્યું ભાઈ ગોવિન્દ, તે કહ્યું હતું કે હું મારીશ નહિ તો પછી તેં મને કેમ માર્યો ? શ્રીનાથજીને રહતા જોઈને અને આમ કહેતાં સાંભળીને ગોવિન્દનું હૃદય ભરાઈ આવ્યું અને ટોડીને શ્રીનાથજીના આંસુ જુદીને પોતાને ગળે લગાડીને કહ્યું ભાઈ તું રહ નહિ; તું મને બહુજ વ્હાલો લાગે છે, તારી આંખમાં આંસુ જોઈને મારું હૃદય ફાટી જાય છે. બંને મિત્રો ફરીથી રમવા લાગ્યા. રોજિ નધરે વીતી ગઈ તેથી પ્રખુએ જોશુ કે તેના માતા પિતા તેની ચિંતા કરશે એટલે ગોવિન્દના હૃદયમાં તેને ઘેર જવાની પ્રેરણા કરી. ગોવિન્દે કહ્યું.

શ્રીનાથજી, જાડુ મોડું થયું. હવે હું મેર જાઉં છું. આપતી કાલે વળી આપણે રમીશું. શ્રીનાથજીએ અનુમતિ આપી ગોવિન્દ ઘેર ગયો અને અનાથોના એકજ આધાર શ્રીનાથજી પોતાના મંદિરમાં પધાર્યો.

દરરોજ આવી રીતે જાને જાણા રમવા લાગ્યા. આ મનોહર મિત્ર મળવાથી ગોવિન્દ તેના જુના જાને મિત્રોને જુડી ગયો એક દિવસ રમતાં રમતાં ગોવિન્દને દાવ ન આપતાં શ્રીનાથજી લાગ્યા. ગોવિન્દ પણ તેમની પાછળ દોડ્યો. શ્રીનાથજી મંદિરમાં ધુસી ગયા અને મંદિરના દાર જાંધ દતા. મંદિરના દાર જાંધ થવાથી ગોવિન્દ અંદર જઈ શક્યો નહિ અને શ્રીનાથજીએ અન્યાય ક્યોં સમજીને ખહાર ઉભો રહીને ખુબ શુસ્સાથી તેમને સાચી ખોટી મંલગાવવા લાગ્યો.

જેવું મંદિર ઉઘડ્યું કે તુરતજ ગોવિન્દ અંદર ધુસી ગયો અને લાકડીથી શ્રીનાથજીને મારતો કહેવા લાગ્યો કે હવે પછી ક્યારે લાગશે કે? પુત્રીઓએ હાં હાં કરીને ગોવિન્દને પકડી લીધા અને મારી પીટીને ખહાર કાઢી મુક્યો. આથી તો વળી તેને વધારે શુસ્સે ચડ્યો અને જોશ્યો કે શ્રીનાથજી, તમે જાડુ અન્યાય ક્યોં. એક દાવ ન આપના લાગી આવ્યા અને હવે પોતાના માણસોથી મરણીને ખહાર કાઢી મુક્યો કીક છે. હવે કામે નેધ લઈશ. ત્યાં સુધી હું તને આનો ખદસો ન આપું ત્યાં સુધી હું પાણી પણ પીશ નહિ. આમ કહીને તે શુસ્સામાં ત્યાંથી આજ્યો ગયો અને ગોવિંદકુંડ ઉપર બેઠો.

અહિં મંદિરમાં ભોગ તૈયાર થયો. ત્યારે સેવકોને પ્રગટ હુકમ થયો કે તમે જે મારા ભક્તને માર મારીને કાઢી મુક્યો છે, તે ત્યાં સુધી અહિં ન આવે ત્યાં સુધી મને ભોગ ધરાવી શકાય નહિ. તેના શરીર જે માર પડ્યો તે જથ્થો મારા શરીર પરજ લાગ્યો છે. સેવકોને શુ જાપર કે ભક્ત તથા ભક્તવત્સલ ભગવાન જુદા નથી?

સેવકો જાડુ હેરાન થયા. શોષતા શોષતા ત્યાં ગોવિંદ ગોવિંદકુંડ ઉપર બેઠો હતો ત્યાં આવ્યા અને કહ્યું કે ભાઈ, આજ શ્રીનાથજી તને જોલાવે છે. એ તારી પાસે પોતાની દાર કચુક કરે છે અને વળી તારી સાથે રમવાની હાં કરે છે. ગોવિન્દે કે હું નહિ આણું. એજ અદિ આવે અને જ્યારે હું એને ખુબ મારી મારીને સીધો કફ ત્યારેજ એ સરખો ચાલે પણ હવે જ્યારે એ દાર કચુક કરે છે ત્યારે તો ચાલો હું આણું છું. એમ કહીને ગોવિન્દ વિચળના ગર્વથી દરમને મંદિરમાં ગયો અને જોશ્યો, કેમ શ્રીનાથજી, હવે પછી ક્યારે એવી આજ્ઞા કરશે કે? એ તો કીક થયું કે તમે મને જોલાવ્યો નહિતર એવું કરત કે જાંઘરી સુધી યાદ કરત. ગોવિન્દે આમ કહ્યું તો ખંડ પણ જ્યારે તેણે શ્રીનાથજીનું મોડું ઉઘાસ જેવું ત્યારે એના સરસ હૃદયના દુખ સાથે કહેવો લાગ્યો, ભાઈ, તમે હજી સુધી ભોગ કેમ નથી લીધો? તમારું મુખ ઉઘાસ નેધને મને રખું આવી જાય છે. હવે હું તમને ક્યારે પણ મારીશ નહિ. તમારી ઉઘાસીનતા મારાથી સહન થતી નથી. હું હવે શુસ્સે નહિ થાઉં. તમે રાજી થાજો અને ભોગ લ્યો.

મંદિરના દાર જાંધ થઈ ગયા. શ્રીનાથજી પ્રત્યક્ષ થયા અને જોશ્યો ભાઈ, તું પોતે પણ જુખ્યો છે. આવ આપણે જાને સાથે જમીએ. શ્રીનાથજીને ખુશીમાં નેધ ગોવિન્દ ખુબ રાજી થયો. જાને હસવા લાગ્યા. અને આનંદના અવાજથી મંદિર ગાજી ઉઠ્યું. ગોવિન્દ ગોવિન્દને હાથે વેચાણ. અચાનક દરવાજા ખુલી ગયા. ગોવિન્દને દિવ્ય દ્રષ્ટિ પ્રાપ્ત થઈ. તે સર્વજ્ઞ શ્રીનાથજીને જ નેચા લાગ્યો.

સત્સંગમાં.

વિકુલદાસ—ભાઈ વિદુલદાસ, તમેજે જે કહીઆરા દીવાનની વાતો કહી તેવા અધી-કારીઓ હાલમાં આપણા સંપ્રદાયના મંદિરમાં છે ખરા ? અમે.....મથા હતા ત્યારે મોટા મહારાજે લીધા કયા પછી મંદિરમાં તો ઘણા અધિકારી થઈ ગયા છે. તેઓ મોત્ર વાતો જવાર કરે છે જે અમે તો સેવામિત્રે કામ કરીએ છીએ, તેવા માત્ર ડાંગે દેખાડે છે અને મંદિરમાં ઘણીજ ગેરવ્યવસ્થા દેખાય છે. શાકધરનાં દર્શન કરવા અમે મથા પણ તે તો જાણે કેમ લગાઈ ધર દોષ તેનુંજ અર્થે તો જોયું અને જે નામમાત્રના કહેવાતા અધિકારીઓ પેતાની પ્રતિષ્ઠા પુરતું કામ કરી કેટલાંક સેવા કરનારાંઓને રાક લાવીને સેવા દોડવા ફરજ પાડી છે. ઉપરાંત તે વૈષ્ણવો ગિઆરાં સેવા છોડી બેસી રહ્યાં છે તે વાત આપણી નહી જાણતા હોય કે કેમ ? અસારવા શ્રીઆચાર્યજીમાં કારતક ચુદ લ રમિયારનો અજકટ હતો ત્યારે અમે દર્શન કરવા મથા હતા પણ ત્યાં તો દર્શનમાં ભીડ ન થાય અને વૈષ્ણવોને કોઈ દુઃખ ન પડે તે કારણથી શીરણોડાલાલજીએ બહુજ વોલીન્ટીયરો રાખીને બદોબસ્ત કરાવ્યો હતો. કાંઈ ભીડ બીલકુલ નહી હતી કે આપણો ખાપ પણ નહી હતો છતાં ત્યાં બેઠકજીમાં એક નંદાજી કરીને મારવાડી જેના કારભારી છે તેણે દર્શન કરતાં વૈષ્ણવોમાં એક વૈષ્ણવ દર્શન કરતો હતો ત્યાં એક કુચડાં વળ દબને મોટા કરીને એક વૈષ્ણવને ફોડફ મારવા માંડ્યું. વૈષ્ણવ તો દર્શનજી કયાં કરતો હતો છતાં વધારે મોટા લાગવાથી પાછું જોયું તો મોટાના ધા ધઈ રહ્યા હતા. ફોડફ એક પછી બીજો ને બીજા પછી ત્રીજો એમ ચાપડતા હતા તે વૈષ્ણવે દર્શન છોડીને નંદાજીને કહ્યું કે પથરા ને કાંતો લાકડી મારી લે કે જેથી તારી દાઝ બીતરે. ત્યારે નંદાજી કહ્યું હું તો તારાં પાપ કાપું છું ત્યારે તે વૈષ્ણવે કહ્યું કે તારે દાઝ બીતારવી છે તો હું કારણને સમજું છઉં પણ મારે લગવદનામ છોડી દબને તારી સાથે કોરટ કરવી નથી. ત્યારે નંદાજી કહ્યું જે પાપી હું તો તારાં પાપ ઘોતો હતો. હવે વિદ્યુત દારુભાઈ તેણે શું તેનાં પાપ ઘોવાનું કહીને તે વૈષ્ણવને માર મારીને ફાંખી કરવા ધાર્યું હોય તેવું મને તો દેખાણું તે વૈષ્ણવ તો ત્યાંથી જતો રહ્યો. કહેવાનો મતલબ કે શું શીરણોડાલાલજી મહારાજની તરફથી તે નંદાજી વગેરેને બીલકુલ કર નહિ દોષ તેવું દેખાય છે કે શું મહારાજથી ત્રીજી નજરથી તે બધું જોવા કરતા દરે કારણ કે આપ બહુજ ચતુર છે.

રમણદાસ કહે છે, જે તમારો પહેલોજ પ્રશ્ન છે જે કહીઆરા દીવાન જેવા અધિકારી હશે ખરા તો ? જવાબમાં.

વિકુલદાસ—ભાઈ ગોરધનદાસ, તેજાજી અધિકારી (કારભારી) તો નહિ પણ મેં તો વડોદરામાં રણોડાદાસ કરીને એક મોંઘસમાં એટલું બધું દૈન્ય દેખાતું હતું તેથી અમે તો વિચારમાંજ પડી ગયા કે આ શું ? વડોદરા મંદિરની કેવી સુદર સ્થિતિ છે તેવું કારણ શું હશે ? પરિણામે ત્રીજી દૃષ્ટિથી જોવા લાગ્યા તો તેવું મૂલ કારણ ધીગોસ્વામી બાલકોનાં કથા-વચનામૃત નહી સાંભળતાં અગર દૈન્યથી સત્સંગ નહીં કરનારની આવી સ્થિતિ થાય, તે લોકોનેજ આધિકારમદ રહે છે, અને તેનાથી સેવાને બદલે વિપરીત કાર્ષ થાય છે. તેવીજ રીતે કારખાનામાં, પેટીઓમાં પણ અધિકારી સોડા અધિકારમદમાં પોતાનો ધર્મ ખોઈ જોશે છે.

ગોરધનદાસ—ભાઈ વિદુલદાસ, તે સોડોની તો તેવીજ ગતિ થતી હશે કે—

વિકુલદાસ—ભાઈ, વૈષ્ણવોજી જેવાનો ચેતવેલો આવી તો બીજાના આવા નાનકડાની તો વિપરીત ગતિ થાય તેમાં શું નવાઈ ?

ગોરધનદાસ—ભાઈ ત્યારે એવા લોકોની મુદર ગતિ થી રીતે થાય ?

વિકુલદાસ—કૃષ્ણદાસ “ મુરતે અમુર ભયે અમુરતે મુર ભયે ચરણુ છાય ” તેવીજ રીતે થીવલુભ પ્રત્યે દૈન્ય કરે અને વલુભીનો દૈન્યપૂર્વક સત્સંગ કરે તો પાછો ધર્મ આવી જાય. દારખાનાં, પેદીઓ દાસાં અધિકારી લોકો પશુ નીતિચાલનો આદરપૂર્વક સંગ કરે એટલે તેઓનાં વલુભી તરફ દષ્ટિ કરી ચુલુનું પ્રદાન કરે તો તે લોકોની પણ સારી ગતિ થાય.

ગોરધનદાસ—ભાઈ વિકુલદાસ, લૌકિક કાર્ય પણ દીનતાથી થતાં હશે ખરાં ?

વિકુલદાસ—ભાઈ ગોરધનદાસ, દીનતા તો ચક્રલ લોકમાં માર્ગ કરી આપે છે.

ગોરધનદાસ—ત્યારે આ અલવસ દાસ જે આટલા બધા હેરાન થાય છે અને દુનીઆને હેરાન કરે છે તેનું કારણ તે લોકો આધકાર પદ ગોચરતા હશે, અને તેઓને દૈન્ય બીજકુષ્ઠ હશેજ નહીં તેથી તેનો પોતાનાં ધર્મો તો નાશ થયા પણ બીજના ધર્મો પણ જગાડવા તૈયાર થઈ બેઠા છે.

શી ૦ વેલથ કેશવથ.

ઘટસ્ફોટ.

હરીને મહાત્મા ગાંધીજીને ૨૧ ઉપવાસો કરવા પડ્યા છે. એઓ પોતાના દંભી અનુયાયીઓને હલુએ ઝાળખી ચક્રા નથી તેને મારે અનંદદ બેઠ થાય છે. મહાત્માજીને અનેકવાર કહેવામાં આવ્યું, તે પણ મજબૂત પુરાવા સીધા, છતાં તેઓએ પોતાના કહેવાતા અનુયાયીઓ ઉપર અંધ વિશ્વાસ રાખ્યો. આ પરથી એમ કેમ ન માનવું કે તેઓ પોતાની છાયા નીચે બંધાઈ કહો કે શયતાન્યતને પણ આશ્રય આપી રહ્યા છે અને તેને છાવરવાનું મહાપાપ વહોરી રહ્યા છે ? વળી પહેલાંની વાત છે. અસહકારના જન્મસમયે સરકારી શાળાઓનો બહિષ્કાર પૂર જોશમાં ચાલુ હતો. મહાત્માજીના પદે સિંચ રા. મહાદેવ દેસાઈ ‘ નવજીવન ’ માં લખતા હતા કે પૂતનાની મેડે સરકારી શાળાઓ હિન્દુઓને જરૂર પાય છે, માટે તેનો બહિષ્કાર કરો. જાહેરના રા. મહાદેવભાઈ ખાનગીમાં પોતાના એક સગા માટે સરકારી કેળવણીમાં આગળ વધવાને ક્ષોભરણીય મેળવવા વળખાં મારતા હતા. ન્યાં રા. મહાદેવભાઈ જેવાની આ અધમ પાખંડી મનોદંશ હોય ત્યાં બીજાઓની તો વાત જ શી કરવી ? તે જ વખતે મેં નીચે મુજબ એક રજીસ્ટર પત્ર લખ્યો :

કાર્તિક કૃષ્ણ ૦))

શુક સં. ૧૯૭૭.

રા. રા. મહાદેવ જે. દેસાઈ,

આપ પૂર્ણ અસહકારવાદી છો, એમ ‘ નવજીવન ’ માં આવતા આપના લેખોથી સમજાય છે. આપના એક પાસેના સગા યુવક અત્રે ‘ નિર્મલ કાસેજ ’ માં અભ્યાસ કરે છે. એમને દ્રવ્યની સહાયતા કરવાની લાલામણ આપે અનેના ચોક્કસ ચૂદરથને કરેશી, તે વાત શું ખરી છે ? તે કાર્ય એક સુરત અસહકારીને જાજતું છે ? આનો સત્વર જવાબ લખવા કૃપા કરશો, અને તે જાહેરમાં પ્રકટ કરવાની પરવાનગી આપશોજ એજ.

વસંતરામ હરિદ્રુષ્ટ રાસરી,

ઉપરના પ્રશ્નો રા. દેસાઈ જવાબ આપે જ શાના ? આજ ને આજ અનેક દેભાષાડોથી ખાંચોખાંચ લેરેલા અસહકારી ખોળીઓનું સહ કહો કે નગ્ન સ્વરૂપ થોડાં વર્ષ પહેલાં મહા યુજારાતના કેવિસમદ્ સત્ય વક્તા શ્રીયુત નાનાલાલભાઈએ

“ બંધાઈનો સંઘ ”

એ નામથી પ્રકટ કર્યું હતું. આ સમયે લલભવા દંભીઓએ કવિશી સામે ધૂળતી મૂકીએ કેવાની અભ્યાસાદી ચેષ્ટાઓ કરી હતી. પણ થોડા જ સમયમાં ગાંધીજીનો આશ્રમ જ બંધાઈથી

ધેરાયલો પૂરવાર થયો. ગાંધીજીના લગ્નના જીવનભ્રમ, કે જેઓ પોતાની સત્યાગ્રહાશ્રમનાં નાણાં તથા ગીજી વરતુઓ ઉગ્રાપત કરતા હતા, જેમની સામે પાંચ વર્ષથી ચોકસો ચતા પણ મદાતમાજી સંભાળવા ના પાડતા, તેમનાં પાપો કૃત્યાં, અને જાલસામુદ્ધે

દર્શ હજાર રૂપીઆ ઉગ્રાપત

કર્પાનું જાહેર થયું. વળી આશ્રમમાં વ્યભિચારની બદખૂદલાયલી જાહેર થઈ. આ બધાને દાંડવા માટે ઉપવાસો થયા તથા 'નવજીવન' માં અગ્રલેખો લખાયા. 'બદમાશોનો સંઘ' સિદ્ધ થયો.

છતાં ગાંધીજી પોતાના અનુયાયીઓ પર અધે વિશ્વાસ રાખે જ જતા હતા. હાલની અરપૃથક્તાનિવારણની હડત ચાલુ કરવામાં આવી અને તેને શુદ્ધ "ધાર્મિક આત્મશુદ્ધિની હડત" તરીકે ઓળખાવવામાં આવી, ત્યારે પણ બદમાશોનો સંઘ જ અગ્રેસર બન્યો હતો અને તેનાથી ચેતવા માટે મેં ત્રીએ મુજબ એક પત્ર આજયી ૭ માર્ચ પર મદાતમાજી ઉપર લખ્યો હતો:-

કાર્તિક સુદ ૧૪

સં. ૧૯૮૯

મદાતમાજી,

"ગુજરાતી પંચ" ની કાપડીઓ મળી દસી. આ સાથે 'અરપૃથોદ્ધાર' નામક લેખમંત્રક ગોઠવું હું. થું અને ૧૯૨૧ ની સાલના ગાંધીજી સને ૧૯૩૨ ની સાલમાં આત્મા સાથે પલટાઇ તો નથી ગયા ને ? આજી આપ જેમને આપના લાખોની સંખ્યાના અનુયાયીઓ કહો છો તેમાં લાખોમાંથી રાજજી જેવાને બાદ કરતાં બધાઓ દેવ અને પાખંડમાં હળી રહ્યા છે. આપને કહ્યા છે, કહે છે અને કહશે. એમના અત્યાચારોની તપાસ કરવા માટે એક કમીટી નીચે તો કાળી ગણાતી પ્રજા જારી પ્રજાને પણ કેવી કપી જાય છે તેની ખબર પડે. એજ

વસંતરામના યથાચોગ્ય,

ચરવડા જેલ,

તા. ૧૫-૧૧-૩૨.

૧. બાઈ વસંતરામ શાઓ,

"ગુજરાતી પંચ" ની કાપડીઓ તો હજી મળી નથી, તેમજ લેખસંપ્રદ નથી મળ્યો. મારી પોતાની હાલ પ્રમાણે તો હું ૧૯૨૧ ની સાલમાં દતો તેજ હું. પણ એવી આશા રાખું છું કે એજ દિશામાં કાંઈક પ્રગતિ મેં કરી દસી. આ જગતમાં કાંઈ દિયર તો નથી જ, કાં આગળ વધે અથવા તો પાછળ પડે જે લાખોને ચિરે તમે પાખંડ કહ્યો છો એ લાખોને વિરે મેં નથી લખ્યું. પાખંડ મળી શકાય એવી સંખ્યામાં હોય છે. મેં તો અગવ્ય લાખોને વિરે લખ્યું છે. તેઓમાં અજાન હોય, મૂર્ખતા હોય પણ પાખંડ ન હોય. જરા ઉડા ઉતરીને વિચારશો તો આ વાતની પ્રતીતિ થવા વિના તમને નહિ જ રહે. અત્યાચાર વિરે જરા વધારે ફાડ પાડે એમ હું ઇચ્છું છું.

બોલનતસના બં. મા. (વદેમાતરમ)

ઉપરનું પોસ્ટકાર્ડ મળ્યા પછી જોતે જ દિવસે નીચેનું પોસ્ટકાર્ડ મળ્યું. મારા હમણાં જ પ્રકટ થયલા 'અરપૃથોદ્ધાર' નામક પુસ્તકમાંની "એક જ બૂલ" વિરે તેમાં ઉલ્લેખ છે.

ચરવડા જેલ,

તા. ૧૭-૧૧-૩૨.

બાઈ વસંતરામ,

બાઈ મદાદેવની ચકરી આંખ તમારા "અરપૃથોદ્ધાર" માં એક ગંભીર બૂલ જોઈ મઠ છે. હુએ પાનું ૨૧૪ લીટી ૪-૫. મારી કલમે તમે જે એક નાનકડો ચમદ ગદાબો છે એજે

અર્થનો અનર્થ કરી મૂક્યો છે. તમારા ચોપાનિઆમાં “વૈષ્ણવો ધરાવે છે” એમ જણાયું છે ત્યારે મારી નવજીવની નોંધમાં “છે” શબ્દ છે જ નહિ. એરવે જ્યાં મેં રસત રૂપે જે વાક્ય મૂક્યું છે એને તમે કે જાપનારે નિશિત વિચાર જનારી દીધું છે; ત્યારે તમે અને હું બન્ને જાણીએ છીએ કે બધા વૈષ્ણવો તમારા લેખમાં તમે જે વિચારો દર્શાવ્યા છે એ વિચારો નથી પરાવતા. નામધારી વૈષ્ણવ નામને દીપાવનારા કમચારી વૈષ્ણવ ચર્ચ લખે તો સ્વર્ગને આપણે આપણે પૃથ્વી ઉપર લાવી મૂકીએ. મગધૂર જુવ મુધારવને. આટલું પણ કહી દઉં. તમારું ચોપાનીડ આપણું બાઈ મદારેવ જોઈ ગયા નથી. અને હું તો ખેલો અકાસો” છે જ એવા પાખો છું.

મોદનદાસના બં. મા. (વન્દેમાતરમ.)

ઉપરના બંને પોરટકાડનો તીર્થ મુજબ જવાબ મેં લખ્યો છે:-

કા. ૫. ૧૦-નાં. ૧૯૮૬.

મદારમાઈ! બંને પોરટકાડ મધ્યાં.

આ સાથે ‘શુદ્ધતાતી પંચ’ ની કાપલી કરીને મોકલું છું. એ આપનો જ જૂનકાકરો અને ૧૯૨૦-૨૧ નો આદર્શ છે. આપ એ દર્શનમાં બાર વર્ષ પહેલાના ગ્રામીણને સારી પેઠે નિરંખી ચક્રશે. અત્યારે એ આદર્શથી કેટલા બધા સાતથો હો, એની પણ આપને ખબર પડશે. આદર્શથી દૂર થયું એને શું આપ ‘પ્રમતિ’ માનો છો? જનદરમાં ‘દેવપૂર્ણ વ્યવહાર’ અર્થજો તરફ ન રહે તેને માટે જ આપની લગ્ન હતી. પણ હવે તો રોડી જેરી બાવદાર અને મંદિરપ્રવેશની પણ આપ હીમાવત કરી રહ્યા છો. અને શું આપ ‘પ્રમતિ’ કહો છો? અરણ્યપત્નિનિધારણમાં રોડી જેરી વ્યવહાર અને મંદિરપ્રવેશ પણ આપી જતો દનો તો સને ૧૯૨૦ માં જ એ વાતને સ્પષ્ટ કહી નાખતી હતી કે અંતિમ ખેવ આજ છે. આ તો આપે ખચિત જ દિંદુસભાજ સાથે ઉતરપોટી કરી છે. એમ કરીને આપ દયાનંદી સમાજની રિથિતિમાં મૂકાયા છે. આપે મદાન પ્રચલતથી જે દિંદુ-મુસ્લીમ એકબીની હમારત ઉભી કરી હતી, તે દયાનંદી બાઈઓએ ‘શુદ્ધિસંજ્ઞા’ ને નામે કરી જમીનદોસ્ત કરી નાખી? આપના ઐતિહાસિક ચરિત્રકાર્યને કેવી ઉડી ખીળખું નાંખ્યું? આપ તે બૂલી ગયા નહિ જ હો. આપના તેથી કકળેલા અંતરાત્માના અવાજને દલુ પણ કાનમાં જગજગારા મારે છે, આવી જ રાષ્ટ્રની એકતા તોડનારી આપની આજુ પ્રતિષ્ઠી લાખે સનાતનીઓ કકળી ઉઠ્યા છે. આમાં તો હું દેશનું દુર્ભાગ્ય જ સમજું છું. આપને દેશ રાષ્ટ્રીય એકતાના રથાપક તરીકે જોવા છડે છે, પણ આપને દાયે તો જાણે અજાણે એકતા પર કુદરવાત ચર્ચ રહ્યો છે. આપને દેશ રાષ્ટ્રીય તરીકે સન્માને છે. જો આપ સંસાર મુધારાના વિષમ ક્ષેત્રમાં જ સર્વ સક્તિઓ વેરકવા માંડશે તો આપનું સન્માન રહેશે નહિ. દેહુએ એ ક્ષેત્રમાંથી પાછા ફરો!

મદારમાઈ! આપ આપના મળી ચકાવે તેવા દંભપાખંડપૂર્ણ અનુવાદોઓની આંખે ન જુઓ, આપે તો અગવ્ય લાખો તરફ ખીટ માંડવી રહી ગળ્યા માંડ્યા દંભીઓ એ ‘અજ્ઞાન’ અથવા ‘મૂર્ખતા’ નો કોશ મેરલાભ લઇ રહ્યા છે તે આપનાથી છાનું દોષ એમ હું ન જ માનું. અરણ્યપત્નિનિધારણ કરવા નીકળેલા એ કાઠ ફિરકાઓએ એકાદ અત્યંતને પણ પેતાના ઘરમાં કે કાર્યોલખમાં અપનાવ્યો નથી. વર્ગોના વડાખાં વાધો! દલુ ત્યાંના ત્યાંજ છે. ત્યારા દંભી અનુવાદોઓનાં અજ્ઞાન અને મૂર્ખ રીતોં પણ તેમાં જ અને છે.

અત્યાચાર વિશે શું કહ્યું? માફ કરો. રાજા ગામેરીતને શુદ્ધવર્મમંદિરના દરરી તરીકે આપજ શું કરવાને થેરી રહ્યા છો? દરરીનો ધર્મ તો સંસ્થાના ઉદ્દેશ જગજગતને દોષ. આપ

તો ઉદ્દેશનું ખૂન કરવા, વિશ્વાસઘાત સથા બેવફાઈના શુનાદ કરવાની તાલીમ શું આપતા નથી ? શું સંત્યાગદાશ્રમના કોઈ દ્રુષ્ટીને આશ્રમના ઉદ્દેશનું ખૂન કરતો આપ સાંખી શકશો ? રામ જાગૈરીનંતે સંસ્થામાંથી રાંછનામું આપવાનું આપ કહી શકો પણ ગમે તેવા પણ સંસ્થાના ઉદ્દેશને ઠોકર મારવાના વિશ્વાસઘાત કે બેવફાઈના પાક તો આપ નજ શિખતી શકો.

અમદાવાદના જૈન મંદિરમાં ખેસાડવા માટે બાર બાર આના રોજંથી અંત્યજ્નેને રોકવામાં આવ્યા અને મંદિર ખુલ્લું મૂકવાનું નાટક ભગવાયું. પણ ધર્મધીર બદાદુર જૈન લાઇઓએ વેળાસર એ કસકને ઉગતાં જ કામી દીધું.

દ્રો. મહાદેવલાઇની સંકેરી આંખે જણાવતી બૂચ એ પ્રશ્નમાં મુધારી હતી, પણ ખીખી જોડાવનારાઓ ફોર્મ છાપવાની રજા મળ્યા પછી જુલો મુધારવામાં દેરલા ખેદરકાર હોય છે તે આપનાથી અગત્યનું ન જ હોય. પુરસદે 'અરપૂર્યોદ્ધાર' તરફ દષ્ટિપાત કરશે જ.

વસંતરામ હરિકૃષ્ણ શાસ્ત્રીનાં ચણાયોગ.

મારા ઉપરના પત્રનો જવાબ મને ત્રીજે મુજબ મળ્યો:-

ચરવડા જેલ,

તા. ૩૦-૧૧-૩૨.

બાઈ વસંતરામ,

તમારો કાગળ મળ્યો. આગસ્ટ વિચારો અને આજના વિચારોમાં કોઈ ફેરફાર હોય એવું મને લાસતું નથી. અરપૂર્યતાનિવારણની જે હદ મેં પૂર્વે બાંધી હતી તેજ આજે છે. મંદિર પ્રવેશ ત્યારે પણ હતો. મંદિરો જોડાવાના પ્રયત્ન ત્યારથીજ ચાલતા આવ્યા છે. કાશીવિશ્વનાથમાં અરપૂર્યોનો પ્રવેશ થયો હતો અને તે ઉપર ચર્ચા પણ થઈ હતી. તેને આજે સાત વર્ષ થયાં. એમાં હું સાથે હતો. તમે છાપેલા 'અરપૂર્યોદ્ધાર' માંજ મારો લેખ તમે લીધો છે. તેમાંય મંદિરપ્રવેશ છે. પણ હું નેહાં છું કે તમે તો મંદિરપ્રવેશને તમારી દીકામાં ઉગાવી દીધો છે. 'તો એમ કહ્યું છે કે બધા દેવાલયોમાં અંત્યજ્નેને જવાનો હક ન હોઈ શકે. આજે પણ હું એમ કહું છું, પણ જે દેવાલયો જાહેરનાં છે, અને જેમાં અંત્યજેતર બધા દિક્ક જઈ શકે છે તેમાં અંત્યજ જવા નોંધએ એમ મેં પૂર્વે કહેલું અને એજ હું આજે કહું છું. રાદીબેડીઅવધાર અરપૂર્યતાનિવારણમાં સમાય છે એમ પૂર્વે નોંધાતું કહ્યું તેમ આજે પણ નથી કહેતો. એ વસ્તુ તોખી છે એમ પૂર્વે કહેલું અને આજે પણ કહું છું.

જાગૈરિનંતે દ્રુષ્ટના ઉદ્દેશોને લાંઘ કરવાનું મેં મુચ્ચુંજ નથી. જાગૈરિનંતી પાસે દ્રુષ્ટ જેવું કોઈ છેજ નહીં. જે હોય તે ચાલતો આવેલો રિવાજ અને આજની અદાલતોના ફેંસલા છે.

તમને નથી લાગતું કે ખીખી જોડાવાનાઓએ 'છે' રહેલા દીધો તો દરેક નકશમાંથી તમારે કદાવલો નોંધતો હતો ?

પાખંડ અને અત્યાચારનું તો તમે કોઈ દષ્ટાંતો આપો તો હું જરૂર ઝાંપધ કરું. હાલ જે હીલચાલ ચાલી રહેલી છે તેનો ધારજપૂર્વક અભ્યાસ કરવાનો તમારો ધર્મ છે એમ મને લાગે છે. તમારા કાગળમાં મને અધીરાઈ અને અનશ્વાસની વાસ આવી છે.

મોહનદાસના બ. મા.

ઉપરનો પત્ર મળ્યા પછી મેંજ પત્રવ્યવહાર કરવો માંડી વાળ્યો. કારણ કે અનુગ્રામીઓનાં રમકડાં બનેલા ગાંધીજી કેવળ વિતંડાવાદજ કરી રહ્યા હતા. ઉપરના પત્રમાં જેમ કોઈ વચીત પોતાના ખરા શુદ્ધાચાર અસીલનો બચાવ ફેરે તેવીજ 'વાસ' આવી રહી છે. અંત્યજનેના

પરિપ્રવેશ માટે માંધીય અને તેમનાં અનુયાયીઓએ નામ વાઈસરોય અને ધારાસભાના સભા-સભોની ડાહીમાં હાથ ધાલીને જે પગથી કરી છે તે છુપી રહી નથી. પોતાની કમલે દેહધુની લક્ષ્મીને બ્રાહ્મણ સાથે પરલુગ્તવાનું 'ચોકકુ' માંધીયએજ ગોઠવ્યું છે. વળી રા. શંભોપાધ્યાયેની બ્રાહ્મણના લક્ષ્મીની સાથે પોતાના વાણીયા પુત્ર દેવદાસ સાથે લગ્ન કરાવવામાં આગળ પડતો જાન મદાતમાયએજ લીધો છે. આ રીતે ઉપરથી કંઈ અને અંદરથી કંઈ રમતો રમાય છે. આ વાગળજ હવે કોણે રસાવનાર નથીજ. પ્રાચીન વર્ણશ્રમવ્યવસ્થાને છિન્ન મિન્ન કરીને બધાને ક્રિશ્ચિયન બનાવવાનો માંધીયનો ઇશિદો હવે છુપો રહ્યો નથી. ક્રિશ્ચિયન પાદરીઓ તો ખુશી રીતે સમા આવે છે ત્યારે માંધીય તો અંદર પેસીને ઉપરથી મોઢક વાગ્મળ ખીજાવીને ભયંકર વિચારલાતની વાચ રમી રહ્યા છે.

માંધીયના સાહીના સાક સુવર્ણચરિત્ર એક પત્રિકાએ મેં પ્રકટ કર્યા તે વિષે માંધીયએ એક પત્ર મારા ઉપર લખ્યો તથા એક પત્ર મારા રનેરી વેધ લાઠયાંકરભાઈ ઉપર લખ્યો, તેની નકલ આ રહી:—

ભાઈ વસંતરામ,

તમારી પંહેલી પત્રિકા મને કોઈ લાભએ મોકલી છે. તે ઘોડી વાંચી આટલું અમન્ય તમે લખી શકો એવી મેં શ્રદ્ધામાંએ આશા નહોતી રાખી. મને તો તેથી મુકયાન નહિ ધાવ. પણ વૈષ્ણવ ધર્મનું શું ?

૩૦-૧૧-૩૨.

મોહનદાસના બં, મા.

ચ. મં.

ભાઈ લાઠયાંકર વેધ,

તમે વસંતરામ શાસ્ત્રીની પત્રિકા મોકલી તે ઉપર ઉપરથી વાંચી ગયો. ફુખ્ત છે, પણ મારાથી એનો જવાબ ન અપાય.

૨-૧૧-૩૨.

મોહનદાસ માંધીના બં, મા.

ચ. મં.

ઉપરના પત્રનો જવાબ તીમે મુજબ મેં આપ્યો—

મિતિ મા. સુ. ૭ સં. ૧૯૮૯.

શીલ્પ મદાતમાય,

મારી પંહેલી પત્રિકા મારા એક વૈદ્યરાજ મિત્રેજ આપને ખીરી હતી. એ પત્રિકાથી આપને ફુલ્લ થયાથી મને પણ ફુલ્લની લાગણી થાયજ. પણ ત્યારે આપ કોઈ સનાતનીઓની આંતરડી કટગાવી રહ્યા હો, ત્યારે આપના વ્યક્તિગત ફુલ્લને વધુ મદત આપવું નહિ ધરે.

પત્રિકામાં લખેલાં મુદ્દા મેં આજે નવાં જાણ્યાં નથી. સને ૧૯૨૬ માં 'શ્રી રાજેન્દ્ર સનાતન ધર્મસભા' તરફથી તે પ્રકટ થયાં હતાં. મારી પત્રિકામાં તો માન તેનો ઉત્તરોજ છે. સને ૧૯૨૯ માં તેની એક નકલ આપને મોકલી હતી. ત્યારે આપે તે વિષે કોઈ ખુલાસો ન જ કર્યો ત્યારે તેની નવી આરતિ સમવાનુકૂલ પ્રકટ કરી છે. એ પત્રિકાની અસલ આરતિ આ સાથે છે; તેથી મારે વિષે થયેલો આપનો સંદેહ દૂર થશેજ.

આપ જેને 'અસલ' કહેો છો તેને દૂ સત્ય માનું છું. પત્રિકામાંનાં વાક્યો આપનાંજ છે અને તે 'નવચરન' તથા અન્ય વર્તમાનપત્રોમાંથી ચૂરી કરેલાં છે. આપના સંદિગ્ધતા ખૂબ બારીકાઈથી અભ્યાસ કરનાર દૂ તે પત્રિકામાંનાં વાક્યોને આપના હાથ વિચારોના પ્રતિજ્ઞા તરીકે માનનાં અવગણું નહિજ.

છતાં તેમાંનાં વાક્યો તથા વિચારો આપના નથી તેવું જાહેર કરશો તો જે આનંદ મને થશે તે બીજાને નહિજ થાય.

સત્ય અને અસત્યની યથાર્થ ખજાર તો ઇશ્વરનેજ છે. મનુષ્યની બુદ્ધિ તેમાં કાંઈ કામ કરતી નથી. તેમાં 'શકરી આંખ' પણ નિરર્થકજ છે. આપ વર્ષોથી અરપૂર્યોની સાત કરોડની સંખ્યા જાણાવી, છેક તદ્દન ખોટું લખીને જનસમાજને ભડકાવી રહ્યા છો. એ વિષેનો આપનો જમ દૂર કરવા માટે ઘણાંએ પ્રયાસો કર્યા પણ આપે તો ખોટી વાતજ પકડી રાખી ! તે ભૂલ (હિમાલય જેવી !) રા. કૃષ્ણે સુધારી. હવે પણ ચાર કરોડની સંખ્યા ખોટી છે.

આશ્રમમાંના જાનભાઈ માટે વર્ષોની ફરીયાદ હતી. પણ આપે સત્ય શોધવાની દરકારજ ક્યાં કરી હતી ? દશ હજાર રૂપિયા ઉચાપત થયા ત્યારેજ આપે હોહા કરી મૂકી !

ભારે આપના જેવા 'મહાન્ સત્યાગ્રહી'ની આ શિયતિ છે તો હું કોણ ? સત્ય અને અસત્યનો નિર્ણય શક્તિ અનુસારજ કરવો રહ્યો.

આમાં નુકશાનનો પ્રશ્નજ નથી. આપ હયાત છો, હવેજે જમ દૂર કરી શકો છો.

આપના પત્રિકામાંના સાઠ મૂંઝાથી વૈષ્ણવ ધર્મને તો કાંઈ નુકશાન નહિજ પહોંચે.

વળી આપના જેવા મહાન્ સત્યાગ્રહી વર્ષો સુધી સાત કરોડ અરપૂર્યોની તદ્દન ખોટી વાતથી જનસમૂહને ભડકાવતા રહ્યા, તેથી વૈષ્ણવ ધર્મને 'નુકશાન' ન પહોંચ્યું તો મારી પત્રિકાથી તેમ ઘશે એમ હું તો માનુંજ કેમ ?

આ સાથે પત્રિકાનો બીજો અંક મોકલું છું.

વસંતરામના યથાયોગ્ય.

ઉપરના પત્રનો કરોડજ જવાબ મલ્યો નહિ, તેથી બીજો પોસ્ટકાર્ડ નીચે પ્રમાણે મેં લખ્યો—

મા. વ. ૩-૧૯૮૯.

શ્રીયુત મહાત્માજી !

મારી આર્થ સંસ્કૃતિ સંરક્ષક પત્રિકા વિષેનો તા. ૩૦-૧૧-૩૨ નો આપનો પોસ્ટકાર્ડ મજેલો હતો તેના જવાબમાં માર્ગશીર્ષ સુદ ૭ મના રોજ એક પત્ર તથા છપેલી પત્રિકા વગેરે મેં મોકલ્યાં હતાં. આપે તેનો જવાબ આપવાનો શ્રમ લીધો નથી. આપના જવાબની રાહ જોઈ છું, કારણ કે એ બધો પત્રવ્યવહાર જાહેરમાં મૂકવાનો મારો ઇરાદો છે. વસંતરામના યથાયોગ્ય

ઉપરના પત્રનો સુદશે જવાબ મલ્યો નહિ. છેવટે આ અંકમાં બધો પત્રવ્યવહાર પ્રકટ કર્યો છે.

મુખ્ય પોકાર—મારા બધા પત્રોમાં એક વસ્તુ તો ઓતપ્રોત છે. ગાંધીજીને મેં આગ્રહપૂર્વક લખેલું કે, તમારા અનુયાયીઓના દબો-પાપડો અને અત્યાચારોની તપાસ કરો. પણ તેમણે એ વાત પર કદી લક્ષ્ય આપ્યું નથી. જતીલાનવાલા બાગના અત્યાચારો કરનાર અમલદારોનો પક્ષ કરવા માટે બધા માણ વાંધસરોય લોડ એમ્પ્લોઈને વગોવે છે. હું કહું છું કે ગાંધીજી લોડ એમ્પ્લોઈ કરતાં લગારે ઉદાર નથી. તેમણે હિંદુસ્થાનમાં આવીને પોતાના બદમાશ અનુયાયીઓનો ઢાંકપીછોડાજ કર્યો છે. પણ આખરે પાપ ફૂટ્યું અને ઘટસ્ફોટ થયો.

પોત પ્રકાશ્યું—એક ગોરી ચામડીની બાઈ સુરોપથી અહીં આવી. આ બાઈ પહેલા નંબરની પુંચવી હતી. અહીં પણ તેણે ઘણા યીકાર કર્યા હશે. તેની દુનવળી ખૂબસૂરતીની આગમાં ઘણા પતંગીયા બન્યા હશે. તેણે જોયું કે જાહેરમાં ૩૫ કરોડ સંખ્યાની જનતાના ઉદારક ગણાઇએ અને ખાનગીમાં વિષયોની લાલસાઓ તથા તનમનની ચેળ પૂરી પણ કરી શકીએ

સાંપ્રદાયિક પ્રવૃત્તિ.

શ્રીમદ્દક્ષિણમળ્યન્તીમદામદોત્સવ—પ્રથમ દિવસ ૩૧મી ટા. ૨૦-૨૧-૨૨-૨૩-૨૪ એપ્રિલ ૧૯૩૩
આ પાંચ દિન સનાતન યુગ સમાપ્તિ આશુ અધિવેશન એ. શ્રી ૧૦૮ શ્રીમદ્દક્ષિણમળ્યન્તી
પ્રમુખપદે થયું હતું. આને ટા. ૨૦ ના રોજ સંભળ્યા છ વાગે તે દિવસનાની સ્વામી સાથે શ્રીમદ્દક્ષિણમળ્યન્તી
સરપ્રસાર ચાર ધોડાની ચાલીમાં નિકળ્યું હતું, દબરો માણસોની મેદનીથી બંદે આ સરપ્રસારી નવરત્ન
અનેક સહુદરથી અને પંડિતાની ચાલીએ તથા ગાયકની ચાલીએ હતી. નવરત્ન, ચિત્રાચુર, દેશભાઈ
ચિત્રેશી, ધણા મેષુરો આભ્યા દલા, ચણિંધ એન્ડ, મદાચીરત્નના તથા સનાતન ધર્મ યુગ સમાપ્તિ
સ્વસ્ત્યે સાથે શ્રીમદ્દક્ષિણમળ્યન્તી મંડળના સ્વસ્ત્યે દલા, સરપ્રસાર ત્રણ ચાર માણસના રત્નમાં
પસાર થઈ અધિવેશન માટે સ્વતંત્ર બનાવેલા વિશાળ મંડપમાં પહોંચ્યું હતું. સરપ્રસારી નિચાલીસમઠ
બલનિકે હોડોનાં મન બદલ આકર્ષ્યા દલા.

મંડપમાં શ્રીમદ્દક્ષિણમળ્યન્તી રિવિનિયનું ગીત ગાયા બાદ એ. શ્રી ૧૦૮ શ્રીમદ્દક્ષિણમળ્યન્તી મદા-
ચામળ્યે શ્રીમદ્દક્ષિણમળ્યન્તી ચારિત્ર્ય ઉપર મુંદર વિવેચન થયું હતું, અન્ય વિદ્વાનોનાં તે પ્રશ્નોત્તરો
વિવેચનો થયા બાદ શ્રીમદ્દક્ષિણમળ્યન્તી નવરત્નપૂર્વક ગાયું થયું હતું.

બીજો દિવસ—તા. ૨૧ ના રોજ ૭ વાગેથી અધિવેશનનો પ્રારંભ થયો ત્યાં મંજીરામઠ કરવાઈના
બલનથી બનવામાં આપું થાતિ આવી ત્રણ ચારથી પાંચ દબરની મેદની દોવા છતાં એક પણ ભૂખ
ચળને અવાજ આવતો ન હતો, (સમાપ્તિ નિમગ્ન થઈ) પ્રમુખપદ માટે વિનંતિ થઈ પ્રમુખપદે મદાચામળ્યે
પસારીને આ સનાતન યુગ સમાપ્તિ અધિવેશનનું પ્રમુખપદ સ્વીકારવા ખાસ પ્રશંસન ભણાવતાં
હયુ ૧:—શ્રીમદ્દક્ષિણમળ્યન્તી નવરત્નનો મુંદર અરસર સાથે દોવાથી તે મદાચામળ્યે અવાજથી સાવંભનિક
દત્તવ્ય બનાવ્ય, અને તે દ્વારા અખિલ સનાતન બનવાના ઉપર શ્રીમદ્દક્ષિણમળ્યે થોડા ઉપકાર થયાં છે તે
સનાતની પ્રભ બંધે તે માટે આ પદ મેં લીધું છે. પછી સનાતન ધર્મનું મુખ્ય અંગ અથવારશુદ્ધિ આપે
ભણાવ્યું હતું. ત્યાર પછી આક્રમધર્મની મુંદર ભવરથા મદાચામળ્યે ભણાવી હતી.

સારભાઈ કવિરાવ પં. અખિલાનંદનું એ કલાક મુખી વિદ્વાનપૂર્વક ગામ્યાન થયું હતું. એમાં
આભામલના નાસ્તિકોનાં મુખમંદન સાક્ષે પ્રમાણથી થયાં હતાં, આ વખતે ઘણા નાસ્તિકોએ થોડાની
ગેરસમજોને પશ્ચાત્તાપ થયાં હતાં બાદ એ. શ્રીમદ્દક્ષિણમળ્યન્તી મદાચામળ્યે, ૩૧મીના મેષુર અને સ્વ
સનાતની પ્રભ ઉઠાવી અસિનંદન પત્ર આપવામાં આવ્યું હતું. એ અસિનંદન પત્ર અંગેના રહસ્ય વંદ-
સેન ચદશમ જેઠા બી. એ. મુનીશીપદ કાગ-સીદર માઠ (બદ પૂર્વ) એ. મેઠારેટ આવ્યું હતું.

અસિનંદન પત્રનું ઉત્તર આપતાં મદાચામળ્યે બહુનું કે અમને એ અગ્રે અસિનંદન પત્ર આપી
કુળમાં કરવામાં આવ્યું છે તેથી અમને આશ્ચર્ય થાય છે, એમ એક સીપાલીની ફરજ છે કે, થોડાની
ફરજ બલવથા તેણે ઘણે પદે ઉપર ભરવા અને દોડીઆર રહેવું નેહમે, મેલી રીને હું ધમને
સીપાલી છું. માટે મારી ફરજ છે કે આજ બલંકર સમયે મારે સાવધાનતા પૂર્વક ભરવા રહી ધમંરુ
માટે સર્વથા પેરા કરવો નેહમે એમાં હું મારી ફરજ સમજું છું, આ ફરજ હું આજ કરું અને તેમાં
ન્યૂનતા દોષ તે પૂર્વ કરવા શીલાવધુ પ્રકારે પ્રાર્થના કરું કે મારી ફરજ બલવથામાં મને પૂર્વ પ્રજન
બનાવે. આ પત્રદ્વારા અમને આજાણના ચાલાચાલમાં થયેલી ધર્મની દાનિનું સૂચન થયું છે, તે બોલાર
છે એને માટે અખિલ ભારતમાં રચનામાં ગાયું કરવાની ભર છે. આજા સારવમાં એ વર્ણાશ્રમ સ્વચ્છ
સંધ વિશે ને ને શુદ્ધ સનાતની-સંસ્થાએ છે તે સંસ્થાઓની સાથે મળીને અથવા તેના આદર્શવાદી
સ્વતંત્ર સંસ્થાઓ પ્રકટ કરી અભારે સંપ્રદાયીકી કામ કરવાની ભર છે. ભારતમાં રાવના સાદા અમી-
વાર થાને ભવચર અને સાંતિથી સમા વિદ્યાર્ન થઈ હતી.

ત્રીજો દિવસ તા. ૨૨ ના રોજ ૭ વાગેથી બલનિકાનાં રસિક શ્રીવેન ચાલુ થયાં. આ બલનિકા
શ્રીવેન અનુસાર કુળશ્રીવેન ચાલુ હતા. નિચાલીસમઠ શીખાવે છે, શ્રીમ કવિદામો દુરદ
અનાચીને ચાલુ હતા.

છે. પુણિમાર્ગની પરિસ્થિતિ બહુ ટેમજ સુરજ વજને ધર્મ પ્રતિ અભિરુચિ વધારણ આપ સતત પ્રયત્ન કરે છે. વગેરે કદા બાદ શ્રીયુત મુમખાવાલાએ વાર અને પચાદિ વર્ષો સંભળ્યા હતા જેમાં ભગવદગીર્ણા ગો. શ્રીઅનિકૃદ્ધવાલ મહારાજ, મંત્રિશીલ્પી કાચીસમ સાસી, ચાલોટથી પટવારી, અમલવાદી શ્રીમનવાલ મિરિધર પરીખ, શ્રીયુત જ્યોતીલાલ, વડોદરાથી મદુમાઈ કાંડાવાળ, સુભાષી શ્રીપુણિમાર્ગે સુરજ પરિષદ, જ્યોતસરથી શ્રી પુણિમાર્ગે મુલકલ વિવેકેના મુખ્ય હતા. ત્યારપછી શ્રીયુત દરિયેશ્વ સાસી 'શુદ્ધદેવ વિશ્વદેવ' બોલતાં જણાવ્યું હતું કે પુણિ સંપ્રદાયના મુખસિદ્ધ પંડિતને માનપત્ર આપવાનો સમારંભ છે. એ વ્યક્તિને ચોખ્ખ માન આપાય છે તેથી કાંઈ વેળુજ હાંસ્ય છુટી નહિ શાય ? કદોની વેળુજી સુધિમાં એમના નામથી રીડ આપવા નથી. ચેરનાથી બાલકો તેમના માટે એ આમદ ધરાવે છે તે ચોખ્ખ છે. શ્રીયુતોમિનીછતું સતત વાચન, સમપ્રદાયના સિદ્ધાંત પ્રચારણે પરિશ્રમ મટકેનાચાલે પં. ધરનાથ સાથે અલુમારના વૈદિકલ માટે કરેલી શેલેજા વિ શાસીછની ધર્મ પ્રતિ લાગણી અને સિદ્ધિતિનો પ્રવૃત્તિ અભ્યાસ જણારે છે. ત્યારબાદ શ્રીયુત જોડાવાલ શાલ એમ. એ. પલુ ફેરુક પ્રાસંગિક કદોના શાસીછને અભાર મુખી. તી સમપ્રદાયની સેવા, વિરોધીઓને આપેલાં જ્ઞાનો વિગેરે ફેરુક મુદાની બાબત વિવેચી. પછી શ્રીયુત સાકરવાલ વજીવે બુનુપૂરના વેળુજોની ફરજ પાતે ફેરુક નિરપલુ કરી શાસીછને બરચના વેળુજો પર કરેલાં ઉપકારનું કિંમતીન કરાવ્યા બાદ શાસીછને આપવાનું માનપત્ર વર્ષો સંભળે તે પૂન્ય પ્રમુખશ્રીને શાસીછને પ્રદાન કરવા વિનંતી કરી હતી. તે માનપત્ર નીચે મુજબ હતું:—

માનપત્ર.

વે. શા. સં. પદવાલ્યપ્રમાણુ પોદેસર અમલવાલ મળુપતિરામ સાસી એમ. એ. બરચ.

પરમાખ્ય શાસીછ, આપની જન્મ ભગિનજી દોષા છતાં સરકારી નોકરીને અંગે અભાર મુખી અહીં બધારે વખત રહેવાનો અવકાશ મેળવે તે ન હોય. પણ અચારથી નોકરીમાંથી નિવૃત્ત થયા ત્યારથી પોતાની જન્મભૂમિમાં આવી ઊભા એક વર્ષથી પ્રતિદિન શ્રીમદ્ધર્માચાર્યજીનું આદર જન્યોનું રહેલું રક્ષક રીતે અમને સમજાવી આપ્યા. ઉપર એ મહાન ઉપકાર કર્યો છે તેને માટે અમે બધા છતાં પશું અપદા જાણી છીએ. અને તે જાણી બાબત અને આપના પ્રતિ અમારે નેત્રિયક આદર આ માનપત્ર દ્વારા અમે આને વ્યક્ત કરીએ છીએ.

આપના કુટુંબનો અને આજના કુટુંબનો સંબંધ લગભગ દોઢસો વર્ષનો જુદો છે. આપના પૂર્વજે પદોદ્ધેથી જ અમારા પૂર્વજોને કીમતી વારિ જેવા ભગવદ્ધર્મનું વારપય સંવિસ્તર સમજાવતા આવ્યા છે. આપે આપના કુલની આ અનુપમ પરંપરા સર્વોત્કૃષ્ટ રીતે નક્કી છે અને જેમ શ્રીમદ્ધર્માચાર્ય નિમમદ્ધર્મવતરનું પરિપક્વ ફલ છે તેમ આપ પણ આપના કુટુંબનું પરિપક્વ ફલ છો. આપનો એક જન્મ આજના કુટુંબમાં જન્મ, ભાવનાવરણથી જ આપનું ધાર્મિક શિસ્ત, એક વખતે વિરલ મહાત્મા અંગેલે જન્મજીનું આપે હોયેલાં વાત, પશ્ચિમની સંસ્કૃતિથી અલિપ્ત રહીને પ્રાચીન ભારતીય સંસ્કૃતિનો અદ્યાર અને વિશ્વરક્ષા અર્થે કરેલો સત્કર્મ, સરકારી નોકરીમાં આપે મેળવેલું સન્માન અને નિરનિભાગમાં જન્મભૂમિમાં આપી પોતાની કુલપરંપરા તરફ આપે આપેલું લડા અપ્રમાણની આપના છાતનની રૂપરેખાનો વિગર કરતાં અમને સામર્થ્ય આનન્દ થાય છે અને આપના પ્રતિ અમારો આદર વધતો જાય છે.

આપે શેલેજામાં સંસ્કૃતનું અધ્યયન કરીને ફેરલ ભગવદ્ધર્મના બહેન બીલ બધી વિદ્યાએ દબાવત કરી છે. વિદ્યારૂપની અપરા ધોરણમિત્રની રીડ પછી અક્ષિના આશય વિનાજ આપે મેળવેલું પદ શાસ્ત્રનું અને તેમાં પણ વિરોધાત્મક ભગવદ્ધર્મનું જ્ઞાન અનુપમ છે. આપની આ સ્વદર્શનસિદ્ધ વિદ્યા મેળને આધુનિક વિદ્યાનો પદ્મ મુખ થાય છે.

આપે પુણિમાર્ગની કરેલી સેવા અચળુંદીવન છે. સમપ્રદાયના સંસ્કૃત જન્યોને શુદ્ધ રૂપમાં પ્રદાન કરીને અને અસંખ્યવાર શેજો લખીને અને બાધેજો પણ આપીને પુણિમાર્ગે આ સુરમાં અપમારમાંથી પ્રમાદમાં ભગવાનું જ્ઞાન એ રીડ પછી અક્ષિને ચારદલિક રીતે ધર્મ દેવ તે તે આપને જ મળે છે. એમ કહેવામાં જે મત સંભવતા નથી. સમપ્રદાયનો હિંદુલક દેવને છે કે સમપ્રદાય ઉપર અમારે અમારે

વિપતિ આવી પડતી ત્યારે ત્યારે મદદપુરોગેનો પ્રાદુર્ભાવ અવશ્ય થતો હતો. આ પ્રકારે જ શીવિદ્યેશ પ્રજા, શ્રીગણેશનાથ, શ્રીપુરોષોત્તમ અને પંડિત ગુરુભાણી પોત પોતાના સમયમાં વાલીઓના પ્રદાને દૂર કરીને સમગ્રદાયની સેવા કરી ગયા છે. તે જ પ્રમાણે આજ પણ વર્તમાન કાલમાં અને વાલીઓના આહ્વાને દૂર કરી સમગ્રદાયની સેવા કરી રહ્યા છો. આજ સત્યવ્રતા અને નિરપેક્ષ છે અને તેને પરિણામે કદાચિત આપની વાલીમાં કોરોનાનો આવાસ નહીં, પણ આપના સદાચરણો અમને નિશ્ચય છે કે આપના હૃદયની મુદ્રા જરૂર જોડાતી ન છે. વિદ્યા અને સરકારી અધિકારનો સુચેત્ર હતો જ્યાં પણ આપની સરલતા સર્વને આકર્ષી રહી છે. શ્રીમદ્દશાધીપતિ શરણુ, શ્રીસુભાષિન્યાદિ જ્ઞાનોનું દર્શન અને શ્રીરાધિકાનાથનું આરાધન કરીને આપે વૈષ્ણવી સંપ્રદાયને બતાવી આપ્યું છે કે મનુષ્ય એવન કેવી રીતે સર્વ થઈ શકે છે ? શ્રેસ્તામિદુલ્લા મદારાજશ્રીએને કહ્યું પણ સત્ય અને દિવકારક વચનો કહેવાના એ પ્રશ્નને આપને પ્રાપ્ત થાય છે તે શ્રીમદ્દશાધીપતિશરણુમાં રહેલા આપનો દૃઢ ભાવ જ સિદ્ધિ કરે છે. આ પ્રમાણે આજ સમગ્રદાયની જ્ઞાનમંદીર છે, સમગ્રદાયના ધ્યાનના દર્શિ છે.

આજ શાન્ત અને સુખિ રીધાંતુ જોગનો અને સમગ્રદાયની પૂર્વવંતુ સેવા કરો એનું અમંત્રી બચવાનું પ્રતિ પ્રાર્થના છે.

મિત્રી સં. ૧૯૮૬ ના
ન્યેષ શુકલ ૧૧ સરય

આપના કામી અને શુભાનુરાધી
મરચના રેનેટી વૈષ્ણવો.

સત્યાપતિશીલનું વ્યાખ્યાન—સત્યાપતિ શ્રી. શ્રીમદ્દશાધીપતિ મહોદયે મનુર માનવનું નિર્મલ દરવારવિન્દે શીવત શાસ્ત્રીએને આપ્યા જાદ વ્યાખ્યાન કરતાં નિશ્ચયે દર્શન કે આત્મ ગદને અત્યંત દર્શ આપ છે કે ભરચના વૈષ્ણવોએ પ્રા. મહાદાશ શાસ્ત્રીએને માનવનું આપવાના મેળાવમાં પ્રમુખ તરીકે ગદને જુદી કારણ છે તે માટે હૃદયમાં આનંદ થયા છે. સમગ્રદાયના વિદ્યમણિઓની કદર કરતી પદે અભાર સુધીમાં જેટલું કાચ કરડું તેજ્યે તેટલું કરી સમયા નથી તેનું કારણ માત્ર તેમની કદર વધન નથી. વિદ્યોનેને કાચદિશા સુચવતી પ્રાસાદન આપડું તે આપણું કર્તવ્ય છે. અદાના વૈષ્ણવો વડાંધી શાસ્ત્રીએને માનવનું આપતાં ગદને આદરદાઈ થાય છે. તેમની વિદ્યાના વખાણ ગદારી પદેવાના વખાણે થાય છે તેથી વધુ નર નથી. મુબાઈ અને પૂનામાં ગદે તેમનાં વ્યાખ્યાનો સાંભળ્યા છે. તેમની વ્યાખ્યાનયોદી સુન્દર દોષ કાચ કરનારા હૃદયમાં સોસિરી વેસી નથ છે. તેનો વાલ ભંડેચના વૈષ્ણવો વડાં રહ્યા છે તેથી મને અત્યંત આનંદ થાય છે. આપણે પુષ્ટિમાર્ગના સિદ્ધાન્તો સમજવા તેજ્યે નદિ તે આપણે તેનું અધીયન કરી શક્યું નહિ.

શ્રીમદ્દશાધીપતિશરણુ નેઈ, ગીતા, સૂત્ર, ભાગવત, એ ચાર પ્રમાણોથી આપણા સમગ્રદાયના સિદ્ધાન્તો ને આદરો સેવ્યા છે અને તે અભારે પણ તેવા ને તેવાનું છે. શ્રીમદ્દશાધીપતિશરણુ યદાયવાદિ ધર્મન્ય એ ગીતાકા પ્રતિજ્ઞાનુસાર દેવીજીવના ઉદારાદે અને સક્રિયમાર્ગે ગીતિનિર્મલ દર્શાવવા આ ભૂમંડલ પર પ્રાકટ્ય મૂકી તે સમય અભારે જેમ કમ અને જ્ઞાનાદિ માગે હુમ થઈ મયા છે એના અનુદાનો દુષ્કર છે. નારિતકવાઈ અને સંવમહીન સમયમાં તે કદસાધ થઈ પડ છે. એટલે તે કરી સકાતાન નથી તેથી શ્રીકૃષ્ણનું નામરમણ કરીને જ છવ પોતાનો ઉદાર કરી શકે છે. એટલે મદાન દુષ્કર હતો તેથી આપશ્રીએ પુષ્ટિસર્વ સર્વ જીવોના વિવશાનુસાર ઉદાર અજાસરમનથી કર્યા હતા અને શ્રીકૃષ્ણસાદના સમયમાં પણ સર્વ પ્રાણીના ઉદાર દુષ્કાળેન છે. પ્રા. શાસ્ત્રીએને શ્રીમદ્દશાધીપતિશરણુ અને શ્રીપુરુષોત્તમના સામગ્રાવિક સિદ્ધાન્તપ્રતિષાદ સર્વ તત્વને પોતાના હૃદયમાં જોતપ્રોત કર્યું છે. એટલું જ નહિ પણ પુષ્ટિમાર્ગના આકર જ્ઞાનોને ઉપદેશ કરે છે. એ સમય અમકાર-ધુમનો હતો કે ન્યાદે સમય સમાનમાં અજ્ઞાનતા દલી (અજ્ઞાતમાં અને વૈષ્ણવ વર્તમાં) કુપ્રસાદો અને સદાગ્યો પણ પેદા દલા; સમગ્રદાયનું સાદિલ અન્ય અક્ષિ વૈષ્ણવ સિવાય વાંચી ન શકે. દંતલિખિત સાદિલ છપાવી ન થાય, ધર્માદિ માનવતાએને લાષિ પુષ્ટિમાર્ગને કેટલું સહેલું પડ્યું છે અને કેટલું જન્ય સાદિલ નથ થઈ ગયું છે; અભારે જ્ઞાનોને પ્રમથયુગનો છે. સમાનમાંથી અજ્ઞાનતા નાટ થતી નથ છે. શાસ્ત્રીએ જેવા વિદાનો સામગ્રાવિક સિદ્ધાન્તપ્રચારનું કાચ નિરપેક્ષતાથી ચારી રીતે કરી રહ્યા છે; બચવાન શ્રીમદ્દશાધીપતિશરણુ તેને વિશ્વાધ્ય કરે અને સમગ્રદાયની સેવા કરવાના અને વૈષ્ણવો તેમના દ્વારા સિદ્ધાન્ત અવજ્ઞોને વિશેષ હામ લે એ અને આમદર્શન સુચવતી બીજી.

ગ્રા. ગણદાસ શાસ્ત્રીજીનું બાપજી—બો. સામ્રીજીએ માનપત્રનો સ્વીકાર કરી નવાબમાં બાપજી કરતાં નજીબું હતું. આજે મારા પ્રતિભાવ દર્શાવ્યા છે તેને માટે મારા મારી સામામાં જુલું અર્પણ કરના એ એકના શબ્દ છે. અન્ય મારે વિષે મને તે કહે પરંતુ અચ્ચતી કેવળ વેળુવા સુદિન નહીં પરંતુ મહારા જાતિબંધુઓએ પણ આ સમામાં ઉપરિવદ્ધ થઈને આજે સર્વે મળીને મને એકના લાવથી આજ આપ્યા છે આથી મને આનંદ થાય છે. કે આજા અચ્ચતી મહારા ઉપર અભિરુચિ છે. પંદર માસથી મારી સ્થિતિ અત્યંત છે. અનુભવી અભિલાષવાળાઓને મેં કહ્યુંઓને બહુભાષા, પત્રાવલંબન જેવા કઠિન અને શિક્ષાશોધી જેવા સંદેશ પ્રત્યે ઉપર ખ્યાન આપાં છે. શ્રીયમુનાજીક, સિદ્ધાન્ત-મુક્તાવલી, બાલમોહ અને પુષ્ટિવાદમર્માદોષ અને આવતી કાલે સિદ્ધાન્તરહસ્ય, શરૂ કરવાનો છે. એક સંચોગ છે. સિદ્ધાન્તરહસ્ય નવિવાનો પ્રારંભ અને તેના દિવસે શ્રીમદ્દામણલાલના રાજ્યમાર શ્રીતંત્રનાવવાદના બાવાનું અત્ર પધારવું. સિદ્ધાન્તરહસ્ય એકલે અક્ષરસંબંધનું રહસ્ય. આખરે કોણ ? કયાંથી આજા ? કયાં જવું છે ઈત્યાદિ અથ શ્લોકમાર્મ શ્રીમદ્દામણલાલ તેનું નિવેદન કરી ગયા છે. વિ. કહી બક્ષસંબંધનું રહસ્ય સમલભ્યું હતું. ત્યાર બાદ કેટલાક સામ્પ્રદાયિક સ્વરૂપનું વિવરણ શ્રીગીતા લાગવત; નિબંધારિના સુત્રોદ્ધાર કરાવી જ્ઞાન અને લક્ષિતની સમીક્ષા કરી હતી. વળી આખળ બોલતાં કહ્યું હતું કે મ.દાસજ્ઞાન એ ભગવતપ્રસિદ્ધ પહેલું પત્રથી છે. મહાદાસજ્ઞાન પણ રનેદ તે પછી અસ્તિ અને તેનું પરમ ફળ ભગવતપ્રસિદ્ધ છે. શ્રીમદ્દામણલાલ આજે આ ભૂમંડળમાં થયા નથી. તેમના સમા ગુણનાન, આદર્શ, અને લક્ષિતપ્રેરણા આદર્શ આચાર્ય શરૂ કરને ભવાનુભવ મળેા વિ. કહી પોતાનું વસ્તવ્ય સમાસ કહ્યું હતું. ત્યાર બાદ પ્રમુખશ્રી તથા અન્ય નકતોઓ અને અમનુષ્ઠ શુદ્ધિઓ આભાર મનાયા પછી મિલાપરે શ્રીગોવર્ધનનાચલના નવશેષ વચ્ચે વિખરાયેા હતા.

ધારીમાં શ્રીયમુનાજીનું સ્તવન—કચરીયા મંદીવાળા બાહ ત્રિગુણસંકર રજીસારકાસના અંતઃકરણમાં ધણા દિવસથી એવી લાગના હતી કે સારા સાધ ભગવતીયોને સમુદ્ધ એકત્ર કરી તે સમુદ્ધમાં ભેટી શ્રીમદ્દામણલાલની લાગના વિચારશે. અથવા મનોરથ ઉદ્ભવતાં તે અનુસાર તેમણે શ્રીગોસ્વામી આલોક આખળ વિનંતિ કરતાં તેઓશ્રીની આજ્ઞા અનુસાર કોઈ સાધ રચશે શ્રી યમુનાજીનાં જા પદનેા એક પાઠ એવાં જા પાઠો દરજેન કરવા અને તે જા ભગવતીયો સાથે મળીને જા દિવસ સુધી સંચય પૂર્વક કરવાં આ પ્રમાણે આજ્ઞા હઈને તેને માટે ત્રિગુણસંકરમાં પોતાના વદન તરફ કાઢીલાવડમાં સાઈ ફેશન ચોધવા નીકળતાં અમેા ધારીના વેળુવાના સદ્ગુણો તે કાચ ધારીમાં આજે ભવાનું નકો થયું. પોતપોતાના વેળુવાનેા ગુણ આમદ પણ અમારા ઉપર શ્રીયમુનાજીનાં દુષાએ અમારા મામના લાગોએ વહેલી બને નહીંઓએ ધારીને માટે અનુરોધન આપ્યું તે પ્રમાણે આમંત્રણ થતાં સારા દાસ ભગવતીયો અમારે આજે આવવા લાગ્યા. ગત વેષાખ સુદી ૧૦ શુક્રવારના મંભવમય પ્રભાતે મામને પાદર વહેલી ત્રિવેળીમાં સ્નાન કરી અરપદમાં રહી અવેની હવેલીના બગીચામાં ધણા ભગવતીયો ૪૨ દિવસના નિયમપૂર્વક શ્રીયમુનાજીનું સ્તવન કરવા ભેટી ગયા.

પ્રભાતના ચાર વાગતાં કોઈ સાંચાદિક કચર્યા પરવારી અરપદમાં જો એક આસન ઉપર બેસી પ્રથમ શ્રીયમુનાજીનાં ચિત્રજી સમીપમાં પધરાવી તેમનું આન કરી શ્રીયમુનાજીના પાઠ નવ વખત કરી પછી “ પ્રિયસંજ રમ. ભર કહોલ ” એ પદથી શરૂઆત કરી “ શરણુ પ્રતિભાવ ગોપાલરતિવધની ” ત્યાં સુધીનાં જા પદોએ એક વખતનેા એક પાઠ ગણી એવા જા પાઠો અધ્યાન્ન કાલ સુધીમાં પુરા કરતા ત્યારબાદ એક વખત મહાપ્રસાદ લઈ બક્ષસ્યાદિનું સેવન કરી લાકોને સમય ભગવદ્ ઉદ્દેશ અને ભગવદ્ ચત્સંભમાં બેસી કોઈ શેઠાં બેઠેનેા પણ તેમાં જોડાયાં. તેમનાં આસન અવગ્રં હતાં.

રાત્રિના ૧૧ વાગતાં સુધી ભગવદ્વાર્તામાં શ્રીયમુનાજીના પદના લાવા વિચારાયા. અધુના આદિ મહાન ભગવતીયોના અનુભવનેા લાભ આ સમયે મળેા. ધણા ભગવતીયો પોતપોતાના શ્રીને સાથે પધરાવીને આંભ્યા, જેથી નિબ મંદિરમાં ભર્મ સ્વરૂપે સાથે બીજાનાં લોવાથી અમેા ધારીના વેળુવાને કોઈ દહોડા ન મળેલાં તેનાં અને તે પણ આ ઉપર કાળના સમયના સમાર ધરેલા એના દર્શનનાં સુખેા અત્યાં એ અમારાં તેા મદદલાભ છે. આ અલૌકિક પાત્રની સમાપ્તિ એક સુદી ૭ વખત થઈ તે

વખતે પ્રભુ ઇચ્છાએ જે આનંદની ઝંખી થઈ, તે વળી જુદું. આ પ્રસંગે અમારા આંતરે પધારેલા પ્રભુ અને ભગવદીશાનું સ્વાતંત્ર્ય કરવામાં વજીર બોધવળ દુહિતજી અને શેઠ ચતુરજી આજુ'દજી ભંજુડાવાળા એઓ સતત પરિશ્રમ થઈ ટનુનની સાથે વિતાવે સેવા પણ ભાવપૂર્વક કરી રહ્યા હતા.

ભંજુસરમાં પ્રવૃત્તિ—તા. ૨૭-૪-૩૩ ને રોજ ભણત્રી નિવાસી શ્રીયુત સાક્ષીજી મનભાવ બહુપતરામ પ્રોફેસર એમ. એ. અને દરિયાઈ પ્રોફેસર એમ. એ. (અમરાવતી કોલેજના સંસ્કૃત પ્રોફેસર) ભંજુસર પધારીને ભંજુસરની વૈષ્ણવ જનપ્રાને પોતાના તા. ૨૮-૨૬-૩૦ ને રોજ પુષ્ટિમાર્ગ અને તેનાં સિદ્ધિતા ઉપર વિવેચન કરી અમૂલ્ય લાભ આપ્યા હતા. ઉપરના વ્યાખ્યાનોથી અનેની વૈષ્ણવ જનતામાં પુષ્ટિમાર્ગ વિષે પુષ્કળ ચેતન પ્રગટ થયું હતું. શ્રીયુત મનભાવ સાક્ષીજીની સલાહથી તા. ૨૦-૪-૩૩ ને રોજ અવરેના શેઠ ચીમનલાલ કાળીદાસ મહેસાવાલાના મકાનમાં રાવસાહેબ પ્રાણજીવનદાસ નરોત્તમદાસ જુમખાવાળાના અધ્યક્ષપણા નીચે એક પુષ્ટિમાર્ગીય મંડળની રચાપના થઈ. સદસ્ય મંડળના હરેશ નીચે પ્રમાણે છે. ૧. અનેની ભાવિક વૈષ્ણવ જનતામાં શ્રીમદ્વેદસાચાર્યના સિદ્ધિતાનો પ્રચાર કરવા. ૨. દેશ પરદેશના સાક્ષીજીઓને આમંત્રણ આપી ભાષણોદ્ધાર વૈષ્ણવોમાં ભવૃતિ લાવવી ૩. પુષ્ટિમાર્ગનાં પુસ્તકો જેવાં કે સંસ્કૃત, ગુજરાતી, વગેરે ભાષાનાં પુસ્તકો મંજાવી એક લાઇબ્રેરી અનેની સાતસ્વરૂપની હવેલીના મકાનમાં રચાવવી. ૪. પુસ્તકો ખરીદવાને જે તાણાં જોઈએ તેને ખર્ચ ફંડ એકઠું કરવું. ૫. દરેક વૈષ્ણવોને પુષ્ટિમાર્ગીય સભાસદો બનાવવા. પુષ્ટિમાર્ગીય મંડળનાં લાભના ૩૮ સભાસદો થયા છે. સભાસદ ફી વરસ ફિસે રૂ. ૧) રાખવામાં આવી છે. વધુ સભાસદો થતાં ભય છે. મંડળ રચાવવી વખતે નીચેના વૈષ્ણવોએ આ મંડળને નીચે પ્રમાણેની જોડ આપીને આ મંડળ ઉપર મોટા ઉપકાર કર્યો છે. ૨૫) શેઠ ચીમનલાલ કાળીદાસ, ૨૫) શેઠ ભાઈલાલ માલેકલાલ, ૨૫) શેઠ રજુજીદાસ જુનીલાલ, ૨૫) શેઠ મનુલાલ જુનલાલ, ૨૫) શેઠ મનભાવ ભાગશેવરદાસ, ૨૫) શેઠ જુનીલાલ નરોત્તમદાસ, ૨૧) વજીર મણીલાલ દામોદરદાસ, ૧૧) જનભાવ જોગીલાલ, ૧૫) શેઠ નાનાભાઈ ગોસ્વમીદાસ, ૧૧) જમલીલાલ જોગીલાલ, ૧૧) શેઠ નગીનલાલ જોગીલાલ, ૧૧) રાવસાહેબ પ્રાણજીવનદાસ નરોત્તમદાસ, ૧૧) શેઠ લાલભાઈ કૃષ્ણવ્રજદાસ જુમખાવાળા (મંડળના પ્રમુખ). કુલે રૂ. ૨૨૧) બસો એકતાળીસ ઉપરના સદસ્યદરેએએ આપ્યા છે. બીજા ભાવિક જે. પોતાની યત્નિત અનુસાર આ મંડળને જોડ આપે છે. શ્રીયુત મનભાવ સાક્ષીજીએ દર મહીનામાં એક વાર ભણત્રી અને આવી વ્યાખ્યાન દ્વારા વૈષ્ણવોમાં ભવૃતિ લાવવા નહીં થયું છે. આ મંડળના ઉપપ્રમુખ તરીકે વજીર મણીલાલ દામોદરદાસ અને સેક્રેટરી તરીકે શેઠ રજુજીદાસ જુનીલાલ ચૂંટયા છે. ત્યારબાદ મુખ્યાર્થમાં બિરાજતા શ્રીમદ્વાચસાલજી મહારાજ ચાંપાસેનીવાળા અવરે પધાર્યા હતા તેઓએ પણ લાજવગર ચાર દિવસ પરિશ્રમ કરાવીને વિજ્ઞાપકની વાદીમાં ભરેર વ્યાખ્યાન આપી ભંજુસરની વૈષ્ણવ જનતામાં ચેતન આણ્યું હતું. વળી ખંસાવ નિવાસી સાક્ષીજી સદસ્યકર ભવચંકરે પણ જે દિવસ તા. ૨૧-૨૨ મીને રોજ વૈષ્ણવનું કર્તવ્ય અને બાહ્ય આચાર વિચાર પર સાદું વ્યાખ્યાન આપ્યું હતું. રજુજીદાસ જુનીલાલ સાદ. સેક્રેટરી, પુષ્ટિમાર્ગીય મંડળ ભંજુસર.

શ્રી વૈષ્ણવધર્મ મહાસભા ટંકારા—શ્રીકૃષ્ણ પ્રજ્ઞાની અસીમ કૃપાથી શ્રીકૃષ્ણ પ્રજ્ઞાના અપરાધવાર શ્રીવલ્લભ પ્રજ્ઞાની આ આનંદમય ભવૃતિ પર શ્રીવૈષ્ણવધર્મ મહાસભાનો પાંચ વર્ષનો રિપોર્ટ આપ સભાનો સમક્ષ રજૂ કરતા મદદ આનંદ થાય છે. સંવત ૧૯૮૫ માં ન્યારે શ્રીમધુરા નગરરથ શ્રીમાન મદોદય શ્રીપુષ્પોત્તમલાલજી ટંકારા પધાર્યા ત્યારે અદ્વૈતી ધાર્મિક પરિસ્થિતિ તથા યુવકોની ધર્મ પ્રવૃત્તિ પ્રત્યેની તાણાવેલીટું પુરેપુરું નિરીક્ષણ કરીને આપ શ્રીમાને પોતાનાં પ્રયત્નપણુએ શ્રી ટંકારા ખાતે એક ધર્મપ્રચાર સંસ્થા રચાવી તેનું નામ 'શ્રી ટંકારા વૈષ્ણવધર્મ મહાસભા' રાખ્યું. એ સંસ્થાને અગ્રે જે કાર્યોની શરૂઆત કરી. એક સંસ્કૃત પાઠશાળા, બીજું વાચનાલય, આ બંને કાર્યો રચાયા અને શ્રીકૃષ્ણ પ્રજ્ઞાની પૂર્વ કૃપાથી અદ્યપિ પર્વત આસ્યા કરે છે. તેમાં અગ્રે પ્રજ્ઞાકૃપાન પ્રાધાન્ય માનીએ છીએ. આ સંસ્થાનું કાર્ય વ્યવસ્થિત રીતે ચાલે તે માટે પ્રમુખ, ઉપપ્રમુખ, મંત્રી અને ટ્રેઝરર એમ નીમવામાં આવ્યા છે. તે દરેક કાર્ય તે તે વ્યક્તિએ પોતાના કિંમતી વખતોનો ભાગ આપીને પોતાની સેવા આપ કરે છે.

સંસ્થાની આર્થિક સ્થિતિ—ત્યારે સંસ્થા શરૂ થઈ ત્યારે યોડાક મેમ્બરોના મેમ્બરશીપ ઉપરજ સંસ્થા બહુવિધ જીવનનો વિકાસ કરવા નિયમે પાછી પાની નોતી કરતી. કાળે કરીને જે મેમ્બરો હતા તે મેમ્બરોએ વિદાય લીધી. તે પછી યોડાક મેમ્બરોએ હુંક ખર્ચમાં પણ ચાલુ રાખવા પોતાની મમતા જેવી ને તેવીજ ચાલુ રાખી. પણ પ્રજા દુષ્પાથી જે રહેલા મેમ્બરોએ આર્થિક સ્થિતિ સુધારવા ચાચના સરખીએ કરી પોતાના વિવેકનો ભજન્યારેય ક્યો નહોતો. પાઠશાળા શરૂ થઈ ત્યારે પ્રથમ ૧ વિદ્યાર્થીઓ હતા. ક્રમે ક્રમે સોની, ભાદીયા, વાણીયા, હાદાણ, ખત્રી, ખેડૂત, અને જાદાણ આદિ મઠી ૩૭ વિદ્યાર્થીઓની સંખ્યા થઈ છે. હજુ પણ રચનાત્મક કાર્યથી અમારી સંસ્થાનું કાર્ય વધવા સંભવ છે. અમારી આ સંસ્થાની આર્થિક સ્થિતિ સુધારવાં મોટી જહેનો અને માતાઓને યોડું ધણું વાંચનનું જ્ઞાન થાય અને ધર્મ—નીતિના પુસ્તકો વાંચી શકે તેવી વ્યવસ્થા કરવા માટે કોઈ સુચિક્ષિત બંદેનને રોકવા અમારો વિચાર છે. વર્ષા ઋતુ અને હેમંત ઋતુના વિદાય થયા પછી અશકત ઠોરોને પીડિત શ્રીમ્મ ઋતુના આવિર્ભાવ થયા પછી તે બિચારા નીમણીઆંતા જેવા બની ન્યાં ત્યાં ભટકતા ફરતા ફરે છે તેો આ સંસ્થા એવો મનોરથ કરે છે કે હવે પછી એક ગીરાળા કરવી અને વિસ્થાળ જમા બાહે રાખવી અને ગાયોની ખૂબ સંભાળપૂર્વક સેવા કરવી. મધ્ય ત્રણ વર્ષ થયા પાઠશાળાનું કાર્ય અપૂર્ણ જેવું હવે પરંતુ હાલના નવા અધ્યાપક સા. રા. નવલરાંકર વિશ્વનાથને શિક્ષણનું કાર્ય તેમને અર્પિત કરતા તેમની સતત મહેનતને અંગે એક વર્ષ થયા તે કાર્ય ધણુંજ બંધરિયત બન્યું છે. આ વર્ષ જેટલી વિદ્યાર્થીઓની હાજરીમાં સંસ્થા ૩૦ ની કાયમ હાજરી રહી છે. ૩ વર્ષ પાઠશાળા ચાલી તે મેમ્બરોના બળે તથા તેમના સતત પ્રયત્નેજ સાર બાદ રૂ. ૬૦) એકી સાથે મહદ પરમ ભવવંદીય સોની મોહનલાલ નારણદાસ વરફી. મળેલી છે તથા બીજી જે જે વ્યક્તિ વરફી મળી છે તે શ્રી. મુળજીભાઈ કઢી સંભળાવરી પણ ન્યારે સમૂળથી સંસ્થાને આવક બંધ થઈ ત્યારે ટંકાસ હાલ નોતીયે (મહાનાસર) વાળા સોની નંદુલાલ એન્ડ બેચરાલાઈમાં પ્રજા વસ્થા અને તે કા. ના વહીવટ કરતા પરમ રેવેદી ભાઈ ચોપડલાલ કાયમ પોતાને ખર્ચે પાઠશાળા ચલાવવા ઉદારતા બતાવી છે તે બદલ આ રથે તેમનો ઉપહાર માનવાનું અમેા શુભતા નથી. પ્રજા તેમને તેવીજ શ્રદ્ધા કાયમ રખાવે એવી પ્રાર્થના છે. આ સંસ્થાને નરિયાદ વેપ્લુષ પુષ્ક મંડળ વરફી પુસ્તકોની મહદ મળી છે તે બદલ તે કાર્યકર્તાઓ અંતઃકરણપૂર્વક આભાર માનીએ છીએ બીજા પણ શુદ્ધરથોની મહદ મળી છે તે સવિસ્તર સા. મુળજીભાઈ કઢી સંભળાવરી. રાજ્યબંધિત શુભક્રિતિ, પિતૃમંત્રિતિ વગેરેના ક્રમેા મનુષ્યની ઉત્પત્તિની શરૂઆતથીજ નક્કર થયા છે એટલે આ કાથુને આશ્રયે દર પ્રસંગે સંભવન ધર્મ પુરંધર ના. મહારાજ સાહેબશ્રી લખધીરજ બહાદુર કે. સી. એસ. આઈ. ને અભિનંદન આદિ સમર્પાને અમેા દર વખત ધન્ય બન્યા છીએ. છેવટમાં આપ સર્વ સન્માનો અને સન્મારીઓના આભાર માની આપે શીઘ્રે વરફી માટે કામા ચાચી યેસી જવાની રજ લઉ છું. મંત્રી.

વિજ્ઞાન પત્રિકા.

નંદાનલાલ બાળકની બંદારે ધાઓ : : :

દેવી સંસ્કૃતિના કહો કે જગતભરની સંસ્કૃતિના મહાન રક્ષણદાર જનજીવન પરમદુષ્કારત જનજીવન શ્રીવહીભાચાર્યજી શ્રીમદ્વિપ્રજીવના પ્રાકૃત્યના સુમંજસમય દિવસેજ આ અને આશાવંત બાળકોના જન્મ થવા પામ્યો છે. આને આ બાળકે પણ પોતાની પાંચ પાંચ જન્મતિથિઓ પુરી કરી છઠ્ઠા વર્ષમાં પદાર્પણ કર્યું અને ઇયાજ પ્રજા શ્રીનંદન પાસે અભયની કિશ્કા માગી “શ્રીકૃષ્ણાનંદિનવર અવતાર” શ્રીકૃષ્ણ પ્રજાનાં અપરાધવાર શ્રીવહી પ્રજાએ એ કિશ્કાને યથાર્થ વધાવી લેવાને લાગે આશાસન આપ્યું હોયના ? તેમ તે બાલકના જન્મ મેલાવવામાં ટંકાસ બૂલે બૂલૂમાંથી પછો બસે વેપ્લુષ કે રોવ એતન માર્ગો કે જેન આદિએ ખુબ પ્રમાણમાં આ બાળકની મહામંજળ વધાઈ કીલવાને મહામંડપમાં એકચિત્ત થઈ ગયા અને એઓએ આ બાળકના “પારજીમાંથીજ બાળકના લક્ષણો નિર્ણયા.” એવા દરેકના મુખમંથરી શુકન ભર્યા શબ્દો નીકળી પડ્યા અને કહેવા હાથ્યા કે આ બાળક ભવિષ્યમાં ટંકાસ નદિ પણ સારાએ કાઢીઆવાડમાં પોતાની કુલિરા હાલવાના સોણલા સેવતા હાલ તેો આ બાળક સામેજ દળ કટક પોતાના પુષ્કળ સેન્ય અને બાહોસ સેનાપતિવા ચોખરે લશ્કરે જાવળી નાખીને પડ્યું છે અને.

એ બાળકને ઘેરો માલવા સતત પ્રયાસ કરાવે છે. પરંતુ “જેને રહે રયામ, તેના સામે ન પડે મોઢાં દોમ” એ સૂત્રના આધારેજ આ બાળક સંકોચાઈ પોતાના કાચનો મહામુદો અવસર પ્રજ્ઞ આપશે. એ આચાર્યે જેવી તેવી રિયલિટીમાં પડ્યું છે. પ્રશ્ન—“આ ન્દાના બાળકની ન્દારે માલો ! ! !”

છળકટકે તે આચંસમાળની પુષ્કળ પ્રવૃત્તિ અને બળને વિદ્યાવશે તે સમાજ તરફથી ચાલે છે. દયાનંદ કન્યા શિક્ષણચંદ્રિકામાં તેના રચનાત્મક કાર્યોથી સમ્યક્તન ધર્મના અને સ્વભાવના બાળકો દ્વારા યતા ભય છે ત્યારે એક દબર ધરની વેષ્ણવી શ્રીવલ્લભીય મુદિસાળા આ મામને શ્રીવલ્લભપ્રભુના એકાદ શુદ્ધરથ અનુયાયીની કૃપાનીજ આ મામલો અને એ મામલો એજ આ બાળક સર્વ યક્તિ ધરાવીને પોતાના પ્રચાર કાર્યની નજાએ ઉત્પન્ન ન આવવા દે તે બાળકને. હવે શુદ્ધરથે ટકાવે ના બસ લખતાં હૃદયે ભરાય આવે છે કે બસ આટલી જ મુશ્કેલી પુરી થરાના અસાવે ટકારા જેવા સહેરમાંથી આવેા વિશાળ અને હૃદયમય કોટિના પુદિમાર્મ હાંધી થઈ જશે ! પ્રજ્ઞ શ્રીવલ્લભ ! હવે સમર્થ છે હવે સારજુ છે હવે રક્ષા કર ! રક્ષા કર ! ! નિવેદક ડા. ડા. સેવક લાલજી દયાલજી રાજપુરા મંત્રી શ્રી વેષ્ણવ ધર્મમહાસભા ટંકારા

ગોંડલમાં આનંદ—સંવત્ ૧૯૮૯ ના ભવેષ્ઠ ગ્રંથ ૫-૬ નો ગોંડલમાં હવાણા વેષ્ણવ પરમ કમવડીય રણીવાલ જેન તરફથી શ્રીમદ્વાસાણીજીની લેણી જોલવાનો મનોરથ માનવામાં આવેા હોતો, બાળકો વિશદ્ધ ભાવ ને પ્રશુરભરણના પ્રભાવે ત્રીસ વરસમાં નહિ થયેલો આનંદ આ મનોરથમાં થશે, આદાર મામથી ૨૫૦ ને આચાર્ય વેષ્ણવેા આવેલા હતા. સામેયાં વેરી દરવાજેથી અરેડી દરવાજા સુધી થકોચતાં પાંચ કલાકનો ઘડીમ ગયો હતો. રસ્તામાં પાંચ મંડલીધોના કીર્તનની નજાવડ તેની વચમાં નૃત્ય કરનારો આવેા અદ્ભુત હતો, શોકે શોકે સમાજ કરી હીચ દમથી લેવાતી ભંપ, વેષ્ણવ દુકાનો આમગ નંદમહોત્સવ મનાતા ભંપ. સાકરના તો ચેદ વરસવા ભંપ, રસ્તામાં મીશીના પશુ તથા ટંકાજીવ પંખાથી વેષ્ણવની અનિર્વચનીય સેવા થતી ભંપ, અખીલ શુદ્ધાલની તો લંબ ન હતી. “કોહોને ભણે નહિ.” એ પ્રમાણે સર્વ વેષ્ણવ અને ગામવા લોકો આવેશી બની ગયા હતા.

બહારવામ (રીનારી) થી મૂળચંકર નામના બ્રાહ્મણ વેષ્ણવ કીર્તન વખતે મેયારીનો રવામ મારણ કરી માથે હપરા હપર દૂધનાં લે મેયારી ચકાવીને કાનહીલા બોલીને જે કોઈ આવેશથી નૃત્ય કર્યું છે, તેની તો પરિસીમાજ ન હતી. નૃત્ય કરતાં એકું હલેજ નહિ. એ ખુબી વખાણવા જેવી હતી. ૧ સાથે રાજકોટના ડા. નામજીભાઈ દલાલ તેમણે તો રાસના મરખાં તાનટપામાં લઈ લાવેા ભાવ ભેદ તાંદડ અભિનયથી રાસમંડળનાં દર્શન કરાવતા હોય નહિ એવા મામથી સાક પાંચક વરસની ઉમરે તન તોડ નૃત્ય આવેશથી કર્યું હતું. રણીવાલ જેનના ઘેર ડા. કુરુજીભાઈ સોમા અને સરવ સ્વભાવનાં તથા તેમના ભાઈ બુરાભાઈ પોપટભાઈ તથા મંગળજીભાઈ ન્યા મોડા બુરાભાઈ બધા તો આઠ આઠ દસ દસ રૂપીયા એક ફેરાના બોલતાં અચિકો ખાતા ન હતા જેટ ૨૫. ૧૦૦) શીજી બાવાની એક રાતમાં થઈ તેમ સમાજનો આનંદ લેવરાવનાર રાજકોટના બ. વીરજીભાઈ રામજી તથા મોવેશીના મુખ્યાજી તથા સોની વેષ્ણવ પોપટભાઈ સંબીતનું અદ્ભુત કામ કર્યું હતું. હપર મજાગ્યા પાંચ નામ પછી તથા સોની નિરુદ્ધસાજ બાઈ તથા હંદમજાજીના પ્રાણુજીના બાઈએ વેષ્ણવની રહેલ કારે પ્રમાણમાં કરી હતી, ખલ્લ છે શ્રીવલ્લભ અને શ્રીવલ્લભીને, કે આવા આનંદ લેવામાં દબની કરી કોમલ જ મજાવા નથી, બજવાન બજવડીયને અથેજ એના ઉપયોગ કરતાં નજાએ મન અચકાઈ નથી હને પણ આશા બંધાય છે ગોંડલમાં, નજીત આવી છે અને દિન પ્રતિ દિન અધા મનોરથો થવાનો સંભવ પણ રહે છે.

શુદ્ધદેવતા આલોકોને ખાસ લાભ—નિ. લી. ગે. શીજીવતલાલજી મહાસાજ (મુંબાઈવામાં) જેવ શ્રીવલ્લભાખ્યાન સહીક (જેના ઉપર ભારતમાર્ગેક પં. મટલાલજીએ ટિપ્પણ કર્યું છે ને) અને મોળપક મહારસાધિ ભાજ ૧ લો ૧૫ ૭૦૦ લગભગનું કળદર થાકા બાઈજીનું પુસ્તક “શુદ્ધદેવ” મોહોને માત્ર સાત આનામાં ત્રિરિધરલાલ જ. સાદ. લુકસેલર. ડે. શીલાલગાવા મનિર, બુલેધર, મુંબાઈ નં. ૨ નો દુકાનેથી આપવામાં આવ્યો. બહારગમથી મંગાવનારે અગ્રીમારણાના પારટ રટાં મોલવા.

શ્રીવેષ્ણવ ધર્મ મહાસભા-ટંકારા—અમને નજાવતા ૬૫ થાય છે કે અમારી સરવાના પાંચ નવ શ્રીવલ્લભ ન્યાતિના મંગળમય દિવસે પુરા થઈ છે. છતાં વર્ષમાં પાપપણું કર્યું છે. શ્રીકંકારા પાલતાના મહિ મોરબીજાના લાલ મુંબલ વસતા શ્રીપુદિમાર્ગેમી શ્રીયુત સોની એકલાલ વિદાલજીભાઈએ રશધર્મ

કલ્યાણની સ્તુતિ વિશ્વેશ્વરી પ્રેમથી રસાદીય પ્રેમ રા. ૧૩૨ ની કિંમતના ભેટ વરીકે આપ્યા છે તેથી અહીંની શ્રીવલ્લભસુધિ તેમના ઉપકાર માને છે અને તેમના એવા ધાર્મિક કાર્યો દિનપ્રતિદિન વૃદ્ધિ પામે તેમ હિંમે છે. આ બેન્ડ પોસ્ટાલથી શ્રીમંદિરે ભવ્ય પ્રથમજા સ્ત્રીની સંનિધાન દંકારાના મુખ્ય અગ્રેસરોની ઘાનરીમાં બનવી-સુલભ પ્રકારે-હવે તે દિવસે કુચડવાચના શ્રીયુત દયાસમભાઈ આવવાથી શ્રીદાદીશ્રીદાદી દેવી દેવી અને વેષ્ણુવાએ ખુબ આનંદ લીધો હતો.

વેષ્ણુવા પ્રતિ વિનતિ—કુચડવા (રાજકોટ) એ રાજકોટનું ફરેટકાસનું મદદાવ છે તેમાં પ્રવિરથ વેષ્ણુવા, બ્રાહ્મણ, વાણીયા-હુદાલા, ખેડૂત અદિ મતી ૩૦ થી ૩૫ થર છે તેઓ શ્રીવલ્લભસુધા શુદ્ધ હૃદયથી સુણાનુવાદ માનના છે. આ નવનકા યુગ સમુદમાં હવે પ્રમુદ્ધાથી વીસમી સદીનો હેરીદવાનો સંચાર થવા પામ્યો નથી. હાલમાં ધર્મસ્ત્રીએનું પ્રચાર કાર્ય કઠિયાવાડમાં આમટે ને ગોહરે થવા પામ્યું છે પરંતુ આવા વિષય વાગવારફોનો દોષ આ માનમાં રોડા પહેલાં સર્વ વેષ્ણુવાને હું દીનભાવે વિનતિ કરું છું કે એમોને ધર્મ રક્ષકનો અનુપમ દાવા લેવાને પ્રભુશ્રી નંદનને તમારા ભેટલોન અધિકાર આપો છે, સંપ્રદાયપ્રતિષ્ઠાન ધણવતાર મુદરથ બન્યોએ અને બ્હેનોને વિનતિ કરવાની કે અમારે માથે હાથ 'શ્રી' ના ચિત્રણ બિરાજે છે. તે ભાંગીતરી પશુક્રીમાંથી. હાલમાં વર્ષાસત્તા સમય પછી તે પશુક્રી તેણી સ્થિતિમાં રહેશે કે તે ભેટ મોટી થિંવા છે. તો તે પશુક્રીને મંદિરની સમગ્રે તૈયાર કરવામાં હાથ અમેને રા. ૭૦૦ ની મદદની ભર છે તો દુષા કરીને શ્રીવલ્લભપ્રભુના દુષાપાત્ર વેષ્ણુવ બન્યોએ અને બ્હેનોને અમારી વિનતિ છે. તો સર્વ વેષ્ણુવા આ માનભૂતિ હૃદયથી રાખી ચોત ચોતાથી બનતુ કરશે. લી. લી. હાલજ-દયાદજ દંકારવાળાના શ્રીમંદિર-સરનામુ-મદદ દયાસમ હાલમાઈ રહેલન માસવર. મુ. કુચડવા, રાજકોટ સોની વીરજ સમજામક મપદ્યા, મુ. રાજકોટ, કે. મંદવોચોક.

નવાખ-ચોરાણના મુલાર પ્રાજજ દેવજએ પોરણદણી યાજ્ઞોજ પાસેથી ગો. બાળકોના ચિત્રણ મંગાવ્યાં, તેમાં નચ્ચાલધર્મમાં ૫ હજારમાં ૧૨૫૦ ટકા વગર આપના નકો કરાવીને, ફક્ત ૧ હજાર થિંમે મંગાવ્યાં અને તેમાં વધી ૬૨૦ કરીને અમેને કમિશન કેમ ન આપ્યું? તેમાં પહેલાં જનરમાં જે 'નચ્ચાલુ' કે તમે પાંચ હજાર મંગાવશે તો ભર કમિશન કાપી આપીશ. ત્યાર બાદ એક કાગળ લખીને ધર્મથી આપી અને ત્રિંશનું ચક્ર હાથ પડ્યું અને રક્ષકાઈની ભાગ્યભૂતિના પત્રો લખના નકો કર્યું તે સ્વાર્થીનોવિનું રીજઈન શુદ્ધદેવમાં કરાવ્યું છે. તે સર્વ વધીકોને ખજાન છે. ધન્ય છે એ બાઈની. વેષ્ણુવવાને, અલાર મુધી સંપ્રદાયમાં ફક્ત પાંચ આનાની નછી કિંમતે અને તેના ઉપર-અત્યારે હબલ નગાવ પછી ચુકી છે એ ફોટોગ્રાફીક આપકની પંચપત્રી ચોળના કરનાર ચાસીને ધન્યવાને બાંહે આનારથક આપેથી કરના એ આ કઠિયાવાડની મથાની દુર્લભતા તો છે મું? ધન્ય છે.

નવસારીમાં નર્તુ મંદિર—નવસારીમાં શ્રીચંદ્રમાછીની સ્થિતિ છે. ગિત્યલોચારવ આચાર્યવર્ષ ગો. શ્રીદેવગીર્ણનાચાર્યજ મદદાસન લાં વર્ષમાં એક વાર તો પધારવાન. પણ વિવમાન શ્રીચંદ્રમખીધાધાર ભાષ્યોન સુધિને સંભાળવાનો પરિશ્રમ લે છે? નવસારીમાં પધારે ૧૦ વર્ષના વહાણાં વાર્યાં. ઉપરનામ તથા ચોળલી વણ નણ વાર પધાર્યાં, ભાષાશીના દુષાપાત્ર શ્રીયુત વાગ્યભાઈ સરકાર, રોડ બીજાભણજીસ પદિજ, રોડ બાલુભાઈ ગોંદે પછી વાર વિનવે પણ નવસારીનો ભાગજન ખુબે નીંદ. નવસારીનું મંદિર અતિભણ પછી ગણે હવે તેનો ઝલેદ્ધાર કરવાની ચિંતા મદાજનને માથે વધીથી આવી પછી દહી. મદાજનનાં નામ પ્રમાણે કામ પણ મોટાં, અને તેને મોટે સમય પણ પછી લાગે? આખરે પ્રભુએ કઈ જાજોન રંજ નમાવે. નવસારીનાં જતની અને સંધારણુ સ્થિતિમાંથી રંજુનમાંનાં બધાપારના પરિણામે ધનાદય સ્થિતિમાં આવેલા બગવદીય લક્ષ્મીમાઈ કમોદરણસ શાહ-તથા તેમના બાઈએના હૃદયોમાં પ્રભુએ પ્રેરણા કરી. રોડ લક્ષ્મીમાઈએ કમર કસી અને ચોડાન સમયમાં આલીસાન બંધ મંદિર સિદ્ધ કરાવી દીધું. ચાત્રાના રથનોમાં ચોતાનાં નચમે કાદરા મોટે લક્ષ્મીપતિએ ધર્મચાળાએ વધેરે બધાવે છે. ન્યારે ચોતાના ગામમાં જે ઉચ્ચ દોષ તેની સામું બેઠા પણ નથી બગવદીય લક્ષ્મીમાઈએ તો ચોતાના ગામમાં દેવી કૃપાને ઉત્તમોત્તમ ઉપલેખ કર્યો. વિનતી સેવા સાથે મંદિર સિદ્ધ થાય ત્યાં સુધી ખરે પડે ઉત્તમ રીતે વનુજેસેવા પણ તેમણે કરી. આ નિમિત્તે મુકોવ ગો. શ્રીવલ્લભાચાર્યજ મદદાસન નવસારી પધારે અને દેવી જીને જક સંખંધ કરાવે એવી અંતરની અભિલાષા રોડ લક્ષ્મીમાઈને હૃદયની એમણે આપકને કામવતરી પધારવા મોટે અગ્રણ પ્રવાસો કર્યા.

આપાશ્રીના કૃપાપાત્ર શેઠ વામનસાહેબ સરખાર તથા યદેશ શેઠે પણ ખૂબ પ્રયાસો કર્યા. ચેત્ર સુ. ૩ ૬ અને ચેત્ર વદ ૧૧ અને તે પછીના મુદ્દતો ઘણાં બહાર પડ્યાં. આખરે આપશ્રી વૈરાગ્ય મુદ ૬ ના શોકામવનથી મોટર દ્વારા વિદા થઇને, શ્રીપુષ્કરના પધાર્યા. ત્યારબાદ રેલ્વેમાં અમદાવાદ પધાર્યા. અમદાવાદથી આપશ્રી તા. ૨૭-૫-૩૩ ના રોજ પ્રાતઃકાલે નવસારી પધાર્યા. રેલેયન પર આપશ્રીનું સાવ-ણીનું સ્વાગત થયું. આખું બજાર તોરણ વાવડાઓથી સજ્જારૂં હતું. ૧૦ વર્ષના લાંબા સમય પછી આતકત્વ રાહ ભેટી વૈષ્ણવ સુદિના આનંદનો પાર ન રહ્યો. આપશ્રીને પધરાવવાની અને ન્યાંમુદી આપશ્રી સંપરિવાર બિરાજે ત્યાં સુધીની બધી વિતત્ત્વ સેવા કમવતીય લક્ષુભાઈની હતી. તેમના બાઈઓ બ. નેશીસનદાસભાઈ તથા બ. નમ્રોદનદાસભાઈ પણ ખેડે પગે તેયારજા હતા. યુવક વર્ગ પણ સેવમાં હાજરજા હતા. દરરોજ રાત્રે સલામો થતી. પેટલાઈથી સાચીજાળ્યેકારામભાઈ પણ આવી પહોંચ્યા હતા. તેમના તથા સાચી વસંતરામના દરરોજ વ્યાખ્યાનો થયાં. જો મુદ ૫ ના રોજ શ્રીને નવા મંદિરમાં પધરાવવાનું મુદ્દત્ હતું. શ્રીમદ્વીની વૈષ્ણવ મંડળીને આગ્રહ પૂર્વક આમંત્રી હતી. શેઠ કમવાનદાસભાઈ, શેઠ હરજીવનદાસભાઈ, મેઘા વયોદર્જ શેઠ તથા બ. હમરાદાસ, બ. મુરદાદ આદિ શ્રીમદ્વીની આવી પહોંચ્યા હતા. ચિ. લાલાબાવાશ્રી પ્રભુને પધરાવવા પધાર્યા હતા. બદામર શુભ મુદ્દત્ અનુસાર વાળતે બાળતે નવા મંદિરમાં પ્રભુ પધાર્યા. પ્રભુની સુખપાદને પધરાવવાની સેવા બ. લક્ષુભાઈ તથા તેમના બાઈઓએ કરી હતી. આ સમયનું દૃશ્ય તો નવસારી કદી વિસ્મર્યોજ નહિ. તેજ રાત્રે મદાનનને મદાન પ્રસાદ સેવરાવવામાં આવ્યો હતો અને આ ઉદારતા પૂર્ણ સેવા બદલ બ. લક્ષુભાઈને મદાનન તરફથી શાલ જોડાડવામાં આવી હતી. અહીંના નાયબ મુખ્યા પણ સભામાં બામ લેતા હતા એ નોંધવા જોઈ જોના પ્રભુ. નવસારીથી મદારાજશ્રી મુંબઈ પધાર્યા અને ત્યાં ૪ દિન બિરાજીને શ્રીમદ્વી પધાર્યા. શ્રીમદ્વીના શુદ્ધ પ્રેમ અને ભાવના સપ્રદાયમાં અભેદ છે. ત્યાં ૩ દિન આપશ્રી બિરાજ્યા. શ્રીમદ્વીથી આપશ્રી ઉમરગામ પધાર્યા. ઉમરગામથી સુરત થઇને આપશ્રી દાહમાં ઉમરે બિરાજે છે. અસાદ મુદ ૩ નો જન્મદિન તથા અસાદ મુદ ૬ નો શ્રીગુણનાથજીની જાતી પર બિરાજ્યા તે મંગલમય દિન ત્યાંથી.

શ્રીપુષ્કરમાર્ગીય વૈષ્ણવોપયોગી.

શ્રીભક્તિમાર્ગીય દર્શનીય ચિત્રસમૂહ ચિત્ર સંખ્યા ૩૧

અઘાપિ પર્યંત પ્રકટ થયેલ કાંડે સામગ્રિ વિવિધરંગી. (શ્રીનાથજી આદિ આંકે સ્વરૂપ, શ્રીમદ્વપ્રભુજી, શ્રીગુણદેવજી, શ્રીગોવિંદજી અને ગો. ધીમોકુલનાથજી મદારાજ શ્રીપ્રભાતના) ચિત્રઓ આપૂર્વ સંપ્રદ પીસામાં રહી શકે એવા પોલ્ટ સામગ્રિ મુન્દર ટકાઈ અને સોન્ટેરી પાકુ પડે. છતાં જ્યોત્સવર એક રૂપીયો. 'શુદ્ધદૈવ' ના ગ્રાહકોને ચાહે આનામાં આપવામાં આવશે. બહારગામથી મંગાવનારે માર્ગવ્યયના બે આના વધારે ચોક્કસવા.

મળવાનું કેકાણું—ગિરિધરલાલ જ. શાહ. શુક્રસેધર.

૬. શ્રીલાલબાવાજી મન્દિર, ભુલેધર. મુંબાઈ નં. ૨.

તા. ૬.—અમદારે ત્યાં વૈષ્ણવ સમ્પ્રદાયના સર્વમાં પુત્તકો અને ચિત્રો મળે છે.

મહારાક્ષિ વીર્યગુટિકા.

શક્તિની સર્વોત્તમ જડીબુટ્ટી આજકાલની શક્તિની દવાઓમાં પહેલે નંબરે પૂરવાર થઈ ચુકેલી વીર્યવર્ધક આ દવા છે. શરીરની નબળાઈ પર વિજળીક અસર કરનાર અને આનંદ આપનાર આ દવા બરકાતના પહોડોની અમરકારિક વનસ્પતિઓમાંથી બનાવેલી છે. ગોળી ૫૦ ના પાંચ રૂપીઆ. ટપાલ ખર્ચ છુટું. નમૂનાની ગોળીઓ માટે આઠ આનાની ટીકીટો બીટો. શ્રીભક્તિ આયુર્વેદિક ફાર્મસી, ૩. પોરબંદર (કાઠીયાવાડ).

સૌને માટે

તાકત-તાઝગીધી ભરપૂર

લગ્નતદાર

ઝંડુ દ્રાક્ષા સવ

—વિના વિલંબે—

વાપરવા માંડે

ખાસ સ્ત્રીઓને માટે

તનહરસ્તી-તાકદથી ભરપૂર

સ્ત્રીઓની નખખાઈમાં

આબાદ અસર કરનાર

ઝંડુ અશોકારિષ્ટ

પ્રદરદિ રોગોના

અકસીર ધલાવ

દરેક ઘરમાં હોવો જોઈએ

ખાજકોનાં પેટનાં દર્દોમાં

આબાદ કામ કરનાર

બિલકુલ
દેક વગરનું

ઝંડુ બાલશૂલાક

—ખાજકોવાળા—

દરેક ઘરમાં રાખવું જોઈએ

—શીશી એકના આના બાર—

ઝંડુ ફાર્માસ્યુટિકલ વર્ક્સ લી. મુંબઈ નં. ૧૪

અમદાવાદના એજન્ટ: ભોગીલાલ બ્રધર્સ, ૧૧૪, મીચીશિડ,

આયુર્વેદિક દવાઓનું સુચીપત્ર આજેજ મ'બાવે.

લેખાનુક્રમ.

આપાક સં. ૧૮૮૯.

વિષયો.

પૃષ્ઠ.

વિષયો.

પૃષ્ઠ.

૧. મદાભાગ્યોદયે ભવેત ...	૧૨૯	૭. યો વૈષ્ણવ યુવક...	...	૧૧
૨. શ્રીવલ્લભાચાર્યશરણાદકમ્ ...	૧૨૯	૮. શ્રોકૃષ્ણમકિત	૧૧
૩. વ્યાખ્યાન ...	૧૩૧	૯. ચંદા	૧૧
૪. શુદ્ધદૈત-ભક્તિમાર્ગ ...	૧૩૯	૧૦. અભ્યર્ચના	૧૧
૫. શ્રીમદ્ગણા ...	૧૪૨	૧૧. ચર્ચાપત્ર	૧૧
૬. પ્રતિમલ્લની પીછેદઠ ...	૧૪૫	૧૨. સામ્પ્રદાયિક પ્રવૃત્તિ	૧૧

અન્ય પાત્રન માટે અજળ તુરંજો, સ્વાદિષ્ઠ શુદ્ધ ગુદર .

હજમાહજમ ચૂણું.

આ ચૂણું વૃદ્ધ યુવાન બાલક વગેરે દરેક સેવન કરી ગઈ છે. આથી કળજીવાત અપચો, પેટનો દુખાવો, આક્રોશ, દાહ, મંદાગ્નિ, ઉલટી, ગાડા, મોળ, અજીર્ણ અશક્તિ વગેરે તેમજ હાથ પગની વૃદ્ધ, વીર્યભાવ, સ્વપ્નદોષ, શરદી, રાજેખર વગેરે શરીરની વ્યાધિઓમાં અકસીર છે. કિ. જા. ૧ નો રૂ. એક, ટપાલ ખર્ચ જુદાં. નમુના માટે જો આનાની ટીકીટ મોકલો.

ઠે. ખરડા ફાર્મસી, પોરબંદર

શ્રીપુષ્પગાર્ગીય વૈષ્ણવોપયોગા.

શ્રીમક્તિમાર્ગીય દર્શનીય ચિત્રસમૂહ

ચિત્ર સંખ્યા ૩૧

અત્રાપિ પર્યન્ત પ્રકટ થયેલ કાર્ડ સામગ્રિ વિવિધરંગી (શીનાયજી આદિ આઠે દશર શ્રીમહાપ્રભુજી, શ્રીગુણેશ, શ્રીગોકુલેશ અને યો. ધીગોકુલેશ યજ્ઞ મહાસાગર શ્રીમલ્લતિના) ચિત્રોને આપૂર્વ સંગ્રહ ખીંગામા રહી શકે એવા મોટા સામગ્રિ સુંદર ટપાલ અને સોનેરી પાકે હોય છેતા નોહાવર એક રૂપીયા. 'શુદ્ધદૈત' ના માલકને આદ આનામા આપવામા આસો. બહારગામથી મંગાવનારે માર્ગવ્યયના ને આના વધારે મોકલવા.

મળવાનું ટેકાણું—ગિરિધરટાલ જ. શાહ. યુકસેવર.

ઠે. શ્રીલાલબાવાજી મંદિર, ભુલેશ્વર. મુંબાઈ નં. ૨.

તા. ૬.—અમદાર ત્યા વૈષ્ણવ સમ્પ્રદાયના સર્વજ્ઞ પુરતો અને ચિત્રો મળે છે.

મહાશક્તિ વીર્યગુટિકા.

શક્તિની સર્વોત્તમ જડીપુટી આજકાલની શક્તિની દવાઓમાં પહેલે નંબ પૂરવાર થઈ ચુકેલી વીર્યવર્ધક આ દવા છે. શરીરની નગળાઈ પર વિજયી અસર કરનાર અને આનંદ આપનાર આ દવા ખરડાના પહાડોની ચગતકા વનરપતિઓમાંથી બનાવેલી છે. ગોળી ૫૦ ના પાંચ રૂપીયા. ટપાલ ખર્ચ નામૂનાની ગોળીઓ આઠે આઠ આનાની ટીકીટો ખીરો. શ્રીખંડા આયુર્વેદિક ફાર્મસી મ પોરબંદર (કાઠીયાવાડ).

श्रीवाक्पतिपादा विजयन्तान्तमाम् ॥

व५८.

अ५८.

शुद्धदेव

आ५८.

अने

१८८८.

सहितमार्तः

श्रीवृद्धलाजः

४५५.

महाभाग्योदये भवेत्.

धर्मे भागवते श्रद्धा रुचिर्भागवतश्रुतौ । संगो भागवतैः साक महाभाग्योदये भवेत् ॥१॥
 आश्रयो बलभार्यस्य सुबोधिन्वाद्य दर्शनम् । राधागुह्यभसेवा च महाभाग्योदये भवेत् ॥२॥
 यमुनायाः पयःपान प्रभृच्छिष्टेन पोषणम् । सदा श्रीगोतुले वासो महाभाग्योदये भवेत् ॥३॥
 अन्नं कृष्णलीलायाः कीर्तनं कुण्डलपरे । तस्या स्मरणमेकान्ते महाभाग्योदये भवेत् ॥४॥
 गिरिराजोपयन्ताया वासो बलभारीक्षणम् । भावनं कृष्णलीलाया महाभाग्योदये भवेत् ॥५॥
 प्रपञ्चविस्तृतिर्निष्मासकिर्हृदिचिन्तने श्रीकृष्णप्रवणं चेतो महाभाग्योदये भवेत् ॥६॥
 दर्शनं व्रजनाथस्य श्रवणं रसवद्विरामं । चिरं चर्यापदाजस्य महाभाग्योदये भवेत् ॥७॥
 गोचरानुभूयमानस्य व्रजेश्वरिहोदधे । तरंगशार्करावापिर्महाभाग्योदये भवेत् ॥८॥
 कृष्णानन्या समस्तोमे समालिङ्गनतत्परः । विरुद्धं तथाऽस्वस्थो महाभाग्योदये भवेत् ॥९॥
 निधितुल्यमुपचाना भावो वै हृदि सुस्थिरः । श्रीरङ्गमरूपादृष्ट्या महाभाग्योदये भवेत् ॥१०॥
 श्रीस्वाजीराजपाठराज्याव्यापकग्राहिदुर्लभशर्मणा विरचित महाभाग्योदयदशकम् ॥

श्रीवल्लभाचार्यशरणाष्टकम् ।

(प्रणेता तथा अनुवादक — श्रीयुक्त नरोत्तम मोतीराम शास्त्री.)

श्रीगोतुलेशपदपकजदानदक्षं श्रीगोतुलेन्दुचरणे विनिवद्वलस्यम् ।

श्रीदेवहीसुततनो प्रकटस्वरूपं श्रीवल्लभार्यचरणं शरणं प्रपद्ये ॥१॥

श्रीकृष्णसेवनपथप्रकटात्मभानं प्रेम्ण प्रतिवृत्तिमहो रजगोपिकानाम् ।

सिद्धान्तमर्गविदमप्यनिलश्रुतीना श्रीवल्लभार्यचरणं शरणं प्रपद्ये ॥२॥

વૈશ્વાનરાવતરણં તદપિ પ્રશાન્તમુપપ્રતાપમપિ ચન્દનતુલ્યચિત્તમ્ ।
 કૃષ્ણાવતારમપિ શુભયશઃપ્રકાશં શ્રીવલ્લભાર્યચરણં શરણં પ્રપદ્યે ॥૩॥
 શ્રીલક્ષ્મણાર્યકુલકૌસ્તુભરૂપદેહં શ્રીવિકૃલેશપરિશોભિતસુન્દરાક્ષમ્ ।
 ચન્દ્રાવલિપ્રકટિતાસ્યસરોજકાન્તિ શ્રીવલ્લભાર્યચરણં શરણં પ્રપદ્યે ॥૪॥
 ऐश्वर्यपूर्णमथ वीर्यगुणैरनन्यं ओजस्विनं कुमतिखण्डनबुद्धिधन्यम् ।
 श्रीसेविताङ्घ्रिमपि कामवने निवासं श्रीवल्लभार्यचरणं शरणं प्रपद्ये ॥५॥
 आनन्दमूर्तिमपि कृष्णवियोगतप्तं शुद्धप्रकाशंचरितं प्रभुभावगुप्तम् ।
 पूर्णप्रकाममपि कामविनाशकारि श्रीवल्लभार्यचरणं शरणं प्रपद्ये ॥६॥
 व्याप्तं कठोरनियमैः करुणैकसिन्धुम् पारखण्डशत्रुमपि दैवजनैः शरण्यम् ।
 त्यक्तान्यदेवभजनं विबुधाश्रयश्च श्रीवल्लभार्यचरणं शरणं प्रपद्ये ॥७॥
 अन्यं यदंग्रिकमलाश्रयतः कलौ न निःसाधनस्य हरिसेवनसाधनं हि ।
 तन्मङ्गलं नरमणिर्मनसा सदैव श्रीवल्लभार्यचरणं शरणं प्रपद्ये ॥८॥

સમશ્લોકી—ભાષાન્તર.

શ્રીગોકુલેશ ચરણે ધરવા સમર્થ છે શુદ્ધ લક્ષ્ય વિભુ ગોકુલચન્દ્રમાર્થ,
 લીધું પ્રકાશતનુ દેવકિનન્દનાર્થ શ્રીવલ્લભાર્યપદને શરણે સંદાયે.
 શ્રીકૃષ્ણભક્તિ પથને કરતા પ્રકાશ છે પ્રેમમૂર્તિ મજગોપિજનોની ખાસ,
 સિદ્ધાન્ત મર્મ સમજે સદુ વેદના જે શ્રીવલ્લભાર્યચરણે શરણે સદાયે:
 છે' અગ્નિરૂપ અવતાર તથાપિ શાંત ઉચ્ચ પ્રતાપ મન ચન્દન તુલ્ય અન્ત,
 કૃષ્ણાવતાર અતિશુકલ યશઃ પ્રકાશ શ્રીવલ્લભાર્ય ચરણે શરણે નિવાસ.
 શ્રીલક્ષ્મણપ્રભુકુલે મણિરૂપ દેહ શ્રીવિકૃલેશ, અતિ શોભિત ગોદ એહ,
 ચન્દ્રાવલિ પ્રકટ કાન્તિમુખે વિંકાસ શ્રીવલ્લભાર્યચરણે શરણે સમાસ.
 ઐશ્વર્ય પૂર્ણ પણ વીર્ય શુભે અનન્ય તેજસ્વિ ને કુપથ ખંડન બુદ્ધિ ધ-
 લક્ષ્મી રહી ચરણ કામવને નિવાસ શ્રીવલ્લભાર્ય ચરણે શરણે સમાસ.
 આનન્દમૂર્તિ પણ કૃષ્ણ વિયોગ તપ્ત શુદ્ધ પ્રકાશ ચરિતે પ્રભુભાવ ગુપ્ત,
 છે પૂર્ણકામ વનકામ કરે નિવાસ શ્રીવલ્લભાર્યચરણે શરણે સમાસ.
 પોતે કઠોર નિયમે કરુણા સમુદ્ર પાખંડશત્રુ પણ દેવ મનુષ્ય ભદ્ર,
 ત્યાગી બીજું ભજન પંડિત પૂર્ણઆશ શ્રીવલ્લભાર્યચરણે મમ હો સમાસ.
 ના અન્ય પાદ કમલાશ્રયથી કલીમાં નિઃસાધનોનિ હરિસેવન સિદ્ધિભૂમાં,
 દે મંગલે નરમણિ પ્રભુમાં સ્વઆશ શ્રીવલ્લભાર્યચરણે મમ હો નિવાસ.

વિદ્વદ્ગણકેસરી શ્રી ૧૦૮ ગો. શ્રીવજ્રરત્નલાલજી મહારાજશ્રીનું વ્યાખ્યાન.

શ્રીમદ્ભગવન્નિઃશ્વસિતવેદાદિપરમાપુરુષકૃપાપાત્રમ્બગ્ધુ!

શ્રીમદાપ્રભુજી શ્રીવજ્રસાચાર્યચરણનાં ઉત્તરના દિવસથી આરંભી આજે ચાર દિવસ થયા. સુવકસલાના અદ્ય વાર્ષિક મહામહેતસવ નિમિત્ત અનેક વિદ્વદ્ગણનાં વ્યાખ્યાનો થયાં. તથા અગત્યના પ્રતાનો પણ ગત રોજ આપણે ચાર પાંચ હજાર સંખ્યાની જનતાની મેદિની વચ્ચે સંતાનુમતે પસાર કર્યાં. હવે આજે અમારે સર્વ કાર્યની સમાપ્તિનાપૂર્વક આવરણકર્તવ્યનું મૂલ્યન કરવું છે.

ધર્મ-અધર્મ.

આપ જાણો છે કે આ બહુજ ગદન સમય આવી પહોંચ્યો છે, 'ધર્મ' અને 'અધર્મ' આ બંને શ્રીકૃષ્ણાવતારમાં પણ વારંવાર દિવાન પામતા હતા. અધર્મનું અભ્યુત્થાન થાય ત્યારે ધર્મની જ્ઞાન દૂર કરી પુનઃ પૂર્વ સ્થિતિમાં સરથાપન કરવા હજારવંશાર અંધ કંઠા આવેલથી થાય છે, અને સર્વોદ્ધાર કરવા પૂર્ણ રૂપે પણ કદામિત્ પધારે છે.

ધર્મની વ્યાખ્યા શાસ્ત્રમાં લુહા લુહા રવરૂપે દર્શાવી છે, તેની વ્યાપક વ્યાખ્યાએ આ છે.

યતો નિઃશ્વેયસસિદ્ધિઃ સ ધર્મઃ, વેદપ્રણિહિતો ધર્મઃ, અધર્મઃ તદ્વિપર્યયઃ ૬-૪ મા.

"જેનાથી પરમ કલ્યાણ જીવને પ્રાપ્ત થાય તે ધર્મ. અથવા વેદ જે કહે તે ધર્મ. તેનાથી વિપરીત તે અધર્મ. પરમ કલ્યાણના માર્ગે દર્શાવીને વેદ, સ્મૃતિ અને પુરાણ વગેરે શાસ્ત્રોએ બહુજ ઉપકાર કર્યો છે પરંતુ અત્યારે શાસ્ત્ર જેને ધર્મ કહે છે તેને અધર્મ દેખે, અને જેને શાસ્ત્ર અધર્મ કહે તેને ધર્મ દેખે એવી તમસાવૃત્ત ભુદ્ધિનું પરિણામ ચાકી રહ્યું છે, આનું દેખાવ ત્યારે ગીતાશાસ્ત્ર કહે છે.

અધર્મે ધર્મોમેતિ યા મન્યતે તમસાવૃતા ॥ સર્વાર્થાન્ વિપરીતોંધ બુદ્ધિઃ સા પાર્થ તામસો ।

ધર્મનું યથાર્થિત પાલન કરવા માટે ભારતના ઉત્તમોત્તમ તત્ત્વરૂપ વર્ણ અને આશ્રમના વ્યવસ્થિત વિભાગ છે. વેદ હજવાન પણ વર્ણવ્યવસ્થા દર્શાવતાં કહે છે કે—

ચાતુર્વર્ણ્ય.

સાક્ષ્ણોડય મુલ્કમાસદિ વાહુ રાજન્યઃ કલઃ । કલ્લ તદ્વચ ચૈરૈરયઃ પદ્મચાં શુભોડજાયત । યજુઃ ।

ચાતુર્વર્ણ્ય મયા સૃષ્ટે ગુણકર્મવિમામરાઃ । ગીતા ।

બ્રાહ્મણ મુખથી, બાહ્યથી ક્ષત્રિય, જીરથી વંશ, પત્રથી યદ થયા, ચાતુર્વર્ણ્ય એ શુદ્ધ અને કમો સાથે ઉત્પન્ન કર્યું, અર્થાત્ બ્રાહ્મણદિ તેના કર્મ અને તેના શુદ્ધ સાથેજ પ્રકટ કર્યો. નાહ કે પ્રકટ કર્યો પછી કર્મનું દાન કર્યું, તેના સદગ્ધ કર્મ આગળ ગીતાજીમાં જણાવ્યાં છે.

શુદ્ધિ તેના શુભોનું વર્ણન કરે છે. ચાર વર્ણના રંગ અને સ્વભાવ વિશે શાસ્ત્રો કહે છે કે આ પ્રભુએ ચાતુર્વર્ણ્ય સર્વ રંગ તમના ભેદથી સરળ્યું. અર્થાત્ શુભનુસાર સર્વશુદ્ધી બ્રાહ્મણ, સર્વ ન્યૂન અને રાજસ વધુ એવા ક્ષત્રિય, અને તામસન્યૂન અને રાજસપ્રધાન વૈશ્ય અને તમપ્રધાન એવા યદને પ્રકટ કર્યો, આ ચાર વર્ણનાં કર્મ પણ લુહાં લુહાં શાસ્ત્રમાં છે. કારણ કરવાથી તેવા વર્ણ પ્રાપ્ત થયા એમ ન માનવું. પરંતુ ચાર વર્ણ જન્મથીજ છે, કર્મથી નથી. આપસમાં પણ એજ આશા કરે છે કે—ચાર વર્ણ બ્રાહ્મણ, ક્ષત્રિય, વૈશ્ય યદ આ ચાર વર્ણમાં

પૂર્વ પૂર્ણ એટલે શરૂ કરતા વૈશ્ય, વૈશ્ય કરતા ક્ષત્રિય, ક્ષત્રિય કરતા બ્રાહ્મણ ઉત્તમ છે. તે જન્મથી જાનિત છે.

(ગીતાઇ) બ્રાહ્મણનાં કર્મ—બ્રાહ્મણના અભાવમિદ્ધ કર્મ, શમ, દમ, તપ, શાન્તિ, શાન્તિ, નમ્રતા, ગાન, નિરાન, શ્રદ્ધા આ મુખ્ય કર્મ કહ્યા જ ૧૮-૪૨. ક્ષત્રિયનાં કર્મ—તેજ, ધીરજ, ચપલતા, શુદ્ધમાયી પાત્ર ન કરવું, દાન અને ઐશ્વર્ય આ ક્ષત્રિયના સ્વાભાવિક કામ છે. વૈશ્ય કર્મ—ખેતિ, ગોરક્ષા, વેપાર એ વૈશ્યના સ્વાભાવિક કાર્ય છે. આપણા દેશમાં ગોરક્ષા સાથે ખેતી, અને ખેતી માથે ગોરક્ષા મુખ્ય છે અને વેપાર ત્રીજે નંબરે છે તે વેપાર કરતા ગોરક્ષાની આનંદપ્રકા વધારે જણાવે છે. શૂદ્રકર્મ—પરિચર્યા શૂદ્રને એકજ કામ છે આ પ્રમાણે વાક્યની અંદર શ્રીગીતાઇ કહે છે કે—પોતાનું ખાસ કર્મ—સદાજ કર્મ તે બંને સદા (દોષવાળું) હોય પણ તે તેણે છોડવું નહિ

પોતપોતાના કર્મમાં લાગ્યો નહોતો માણસ સિદ્ધિને મેળવે છે. સ્વધર્મ વિશાળ હોય તે પણ પાળવો, પણ પાળકા ધર્મનું પાનન કરવું તે દોષમય છે અથાત બ્રાહ્મણે ક્ષત્રિયના, ક્ષત્રિયે બ્રાહ્મણના કે શરૂ બ્રાહ્મણના કર્મ કરવા મરી ન જવું, એ તેનું વાત્પર્ય છે.

ભાગવતમાં વર્ણવર્મ,

વિષક્ષત્રિયવિશ્વશ્રદ્ધા મુલવાહરૂપાદજા । વૈરાજાત્ પુરુષાત્ જાતા ય આમાચારલક્ષણા ।

બ્રાહ્મણ ક્ષત્રિય વૈશ્ય શરૂ આ ચારે વર્ણુ રિસ્ટપુરુષના મુખ આ બે અને પગથી ચલા છે. બ્રાહ્મણ વિગેરેના કર્મ દર્શાવે છે, તેના કર્મ શમ, દમ, તપ, સતોષ, શાન્તિ, નમ્રતા, ભક્તિ, દયા, મક્ષ આ બ્રાહ્મણની પ્રતિજ્ઞા છે તેજ, બળ, ધીરજ, શીર્ષ તિતિક્ષા, ઉગ્રતા, ઉદમ, ચિરંજીવી, ઐશ્વર્ય આ ક્ષત્રિય પ્રતિજ્ઞા છે ૩ શ્રદ્ધા, દાનનિષ્ઠા, દભાહિતતા, બ્રાહ્મણસેવન (દ્રવ્ય પેના કરનામાં) અમતોષ આ વૈશ્ય પ્રતિજ્ઞા છે ૩ બ્રાહ્મણ ક્ષત્રિય વૈશ્ય અને ગાયની સેવામાં જે કંઈ મળે તેનાથીજ સતોષ માનવો, આ શરૂ કર્મ છે, હવે અન્તેવમથીના કર્મ પણ ભાગવતે બતાવ્યા છે અપવિત્રતા અમલ્ય ચોરી નાસ્તિકતા ગુપ્તકારી કામ કોવ લોભ આ અભાવ અન્તેવમથીના છે આ ધર્મોની શ્રીશુદ્ધેવજ સનાતન ધર્મથી પીઠાન આપે છે

અક્ષાત ભગવાને મનુ પોતુ પગમ કયાણુ કવા માગે આ ઉપગના સનાતન ધર્મો કહેના છે, આ સનાતન ધર્મની માથે મરી સમપ્રદાપની એકવામના છે, આ સનાતન ધર્મ જોડે જોડેના પણ વિરુદ્ધ મન નથી.

જાતિવદ્ય.

આ પ્રમાણે વે. ગી. ૭ ભાગવતમાં ચાર વર્ણુ દર્શાવ્યા, મનુ પણ ચાર વર્ણુ કહે છે

બ્રાહ્મણ ક્ષત્રિય, વૈશ્ય, ત્રણ વર્ણુ જિજ્ઞાસિ છે. કમળુ તેમને ઉપનયન વિધિ છે તદ પુન ચતુર્થ વર્ણુ એક જાનિ છે કાણુ ? ઉપનયન નથી પાચમો મર્ધ પણ વર્ણુ નથી, એ ઉપગથી નિર્ણય થયો ? પાચમો શુદ્ધ વર્ણુ નથી, પણ ખચ્ચ જેની સકીર્ણ જાનિએ છે તેમને વર્ણુ નથી કહેવાતી. વર્ણુ તો તેને ૮ કહેવાય કે જે બ્રાહ્મણીમાં બ્રાહ્મણી, ક્ષત્રિયજીમાં ક્ષત્રિયી, વૈશ્યજીમાં વૈશ્યી અને શૂદ્રજીમાં શૂદ્રીય ૧૫

જાનિનું લક્ષણ આજ જાણવું જો વગેરેના અનુષ્ઠાનનિવેશ એને સારનાનિશ્ચયથી જેમ જેવ સિદ્ધ થાય છે તેમ બ્રાહ્મણને ક્ષત્રિયને મમળવવા વૈશ્ય અને શૂદ્રને સમળવવા તેના દરીગના અવધવાના લક્ષણ દર્શાવવામાં આવ્યા નથી પણ સાચકાર કહે છે કે અમાન જાનિની જીમાં મમાન જાનિ પુરુષથી પે. યનાર મણુસને તે જાનિના જાણવો, જે વર્ણુની નિશાની

જો પોતાનાં કર્મ ન કરે તો

આહાણુ જેવાં કર્મ ન કરે તો જાતિએ આહાણુ રહે છે, પણ આહાણુ દેહથી જે ઉત્પન્ન થયે તે મેળવવું લેઈએ તે મળતું નથી. મહાભાષ્યકાર કહે છે કે—તપઃ ક્ષુત્તે ચ યોગેષ્વ તપઃ શાસ્ત્ર અને જન્મ આ ત્રણુ આહાણુનાં કારણ છે. આ ત્રણુથી આહાણુત્પન્ન રક્ષણ કરી શકશે. જે તપ કે શાસ્ત્ર ન હોય તો જન્મ માત્રથી જાતિ આહાણુ તો રહે છે. અર્થાત્ આહાણુકર્મરહિત હોવા છતાં નામે આહાણુ રહે છે. આ મનુવિચારને અમે સિદ્ધાંતીઓ પણ કહીએ છીએ કે અનાચાર કરવાથી “આહાણુપણું” જતું રહે છે. જે આહાણુચિત આચાર શાસ્ત્રાદિવાધ્યાય રાખે તો “આહાણુપણું” રહે. જેમ પૂજનમાર્ગમાં કેઈ મૂર્તિમાં મંત્રથી દેવતા આવહન થાય તે વખતે તે મંત્રમગ્ધથી દેવતા પધારે અને જે અનાચાર થાય તો દેવતાનું તિરોધાન થઈ જાય. તેમ આહાણુપણું જતું રહે, એ વાત મનુ કહે છે. લોકકાને હાથી હાથીના કામમાં ઉપયોગ ન આવે. પણ નામે હાથીજ કહેવાય. અર્થાત્ મૂંઝાણ મૂંઝાણ કરવામાં કામ ન આવે પણ નામે મૂંઝાણ કહેવાય છે. તેવી રીતે, સ્વાધ્યાયરહિત આહાણુ આહાણુના ઉત્તમેષ્ઠમ ફળમાં અયોગ્ય રહે છે. કારણ કે નામના જ માત્ર આહાણુ છે. આ શ્લોકથી જાતિને ફેરવી નાખનારાઓની ઘાટગણે એમ નથી. જાતિ પરિવર્તન તો બીજા જન્મમાં જ થશે.

અમારા શ્રીમદ્ભગવદ્ ગોપાલદેવ દશમના, આઠમા અધ્યાયના છઠ્ઠા શ્લોકમાં જન્મના પ્રાણીને ગુહઃ આનો અર્થ ઉપસ્થિતિમાર્ગ સર્વોપે પ્રાણીને ગુહર્મવતીતિ સર્વ આહાણુ ઉત્પત્તિ માત્રથીજ શુભ થાય છે એમ કહે છે. આ વાક્યમાં હું “ઉત્પત્તિમાત્ર” શબ્દ ઉપર આપતું ધ્યાન ખેંચું છું.

જાતિપરિવર્તન અન્ય જન્મમાં.

આ પ્રસંગમાં જે લોકો જાતિપરિવર્તન કરવાને પ્રમાણુ આપે છે તે જ પ્રમાણુનો ન્યાર કરીએ.

પ્રાણાં પ્રાણણાન્ જાતઃ શ્રેયસા ચેત્ પ્રજાયતે । અશ્રેયાન્ શ્રેયસીં જાતિં ગચ્છન્ત્યાસતમાયુગાત્ ॥

આ શ્લોક પછી ગુરુતજ

તદ્દો પ્રાણણતામેતિ પ્રાણજાતિરિતિ શ્દવાન્ । આ શ્લોક છે, સ્વાર્થાં લોકો આટલેજ શ્લોક બોલીને બોળાઓને ઉત્તર છે. ધર્મચર્ચથી જન્મ વળું ઉત્તમ ઉત્તમ વળું પ્રાપ્ત કરે છે. પણ તે ક્યારે ? તેનો ભ્રમ ન થાય તે મારે કહે છે કે જાતિ (જન્મ) પરિવર્તન ચતાં, બીજા જન્મમાં ઉત્તમ વળું પ્રાપ્ત કરે. આ ચાલુ જન્મમાં નહિ. કારણ કે પૂર્વ સૂત્રમાં અધર્મ સેવે તો અન્ય જન્મમાં જન્મતઃ શ્રેયાન્ આહાણુદિ ઉત્તમ વળું પદ પોતાનાથી ઉત્તરતી યોનિમાં જન્મે છે. આ વાક્યથી આપણે નહીં કયું કે, બીજા જન્મમાં જ વળું બદલાય છે કારણ “ય દ્વ રમણીયચરણા” શ્રુતિ પ્રમાણુ છે.

જન્મથી શ્રેષ્ઠ માન્યા છે. કર્મથી શ્રેષ્ઠ માન્યા નથી. એકજ જન્મમાં જે કર્મથી જાંતરતર થઈ શકતું હોય તો “જન્મતઃ શ્રેયાન્” પદ અર્થ પડી જાય.

ય દ્વ કપૂયચરણા અન્વાશો હ યત્તે કપૂયાં યોનિં આપયેન્ । ચયોનિં વા શૂકરયોનિં વા ચાણ્ડાલયોનિં વા.

સોપિ તૈસ્તકુલે જાતઃ કર્મણા જાયતે યતઃ । શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજી.

આ શ્રુતિ આપણને શું દર્શાવે છે ? જેવાં આચરણુ તેવો જન્મ પામે. કપૂય આચરણુવાળાને ફૂતરાની કે બુંડી કે ચાંડાલની યોનિ મળે છે. સારાં આચરણુ કરનારને આહાણુ, ક્ષત્રિય, વૈશ્ય

હવે ધર્મ અધર્મની વ્યાખ્યા ગીતાછના વાક્ય સાથે જોડી શકાશે —

ચાર વર્ણુ શાસ્ત્રમા તેમજ વેદમા પણ છે, પરંતુ ચાર વર્ણુ અતિરિક્ત પાત્રમેા કાઈ વર્ણુ નથી એમ મનુ કહે છે — “નાસ્તિ વર્ણસ્તુ પચમ”

તો ખીછ જાતિ કયાથી આવી ? જગતમા અનેક જાતિ જણાય છે તેનું શુ ?

અર્થાત આદ્યક્ષીર્ણથી શદ નામનો પુરુષ જે પ્રભ કરે તે આકાળ, આકાનાદિ જેની હીન પ્રજાનું વર્ણુન શાસ્ત્રમા છે, દસ્ટુ કરીને એક જાત તે ઝગ્ગેદમા પણ લખી છે તેના વિચારનો મંત્ર છે. આગળ ચાતલા પાત્રમા વર્ણુમા પાત્રમા વર્ણુસક જાતિ લખી છે. એવી ધણી જાતિ વેદે કહી છે આ સિવાય મનુના અ. ૧૦ માના ૨૦ થી ૫૦ શ્લોક સુધી અનેક હીન જાતિઓનું વર્ણુન કર્યું છે, અને તે યજુર્વેદના ત્રીશમા અધ્યાયમા ૨૫૪ નામ છે, છતાં વેદમા અન્ય ગ્રંથ જાતિનું નામ નથી એવી જુમ પાડનારાએ વેદ જોયો નથી. મનુ કે પાત્રનક્ય તેને દેખાતા નથી ક્રતા કલ્પનાના યોગ ઉગ્રાવવા છે શાસ્ત્રમા આકાલ સ્વપચે શુ કરવું ? તે પણ લખ્યું છે

चाण्डालश्चपचानां तु बहिर्धर्मात् प्रतिश्रयः । अपपात्राश्च कर्तव्या धनमेया श्रगदर्भम् ।

વાસાસિ મૃતચેલાનિ મિજમાખ્ડેપુ મોજતમ્ । કાર્ણાયત્તમલદ્વાર પરિયા ચ નિવ્યશઃ ॥ મનુ ॥

આકાલ સ્વપચોનો વાસ ગામથી બહાર છે. પાત્રથી તેમનો બહિષ્કાર છે એટલે કે તેમણે આધેક્ષ પાત્ર ગ્રંથ પણ સરકારથી શુદ્ધ થતું નથી, કુતરા-ખર તેમનું ધન છે. શમના વચ્ચે તે છે. આ માણસો સાથે મનુ લગનાન આરા કરે છે કે ધર્મીનુશાન સમયે આદ્યકાનાદિ સાથે યોગવાનો કે તેને જોવાનો વ્યવહાર ન કરવો હવે તમને સમજશે કે ન્યા શાસ્ત્રમા ધર્મક્રિયા મૂર્તિપૂજા કે સેવા કરતી વખતે તેમની સાથે બોલવાનો કે ગ્રંથપણ વ્યવહાર કરવાની શાસ્ત્ર મના કરે છે, તો તેને મદિરમા પેસાડીને આપણાથી ધર્મની ક્રિયા ચાલુ કેમ ? અન્યજ અને અત્યેવસાથી છુદા છે.

ધોખી, ચમાર, નર, વારા કોડા દેવર્ત, મેદ, (બાધની ગ્રંથ જાત) અને બીન માત્રના અન્યજમા અમાવેશ છે આકાલ-અપચ-ક્ષતા-સૂત-વેદેહક-આગર્થ અયોગર આ માત્ર અન્યાવર્થથીઓ છે. એવા બેદ પાડવાનું કાગ્યુ એ છે કે ૧૦૫૫ર તે મમમા પણ તત્તમ રાખનાથી અતિ નીચ કર્મઆકાલ અપચ જેવા-જકચર્મકાર સાથે ભળી જાય નહિ એ તેમા પણ મૂદ તત્તન છે

દરેક જાતિ સમાજનું અંગ છે.

તમાગ ઉપર કોઈ પ્રહાર કરના આપણે ત્યારે મન્તકરૂપી આદ્યજનું રક્ષણ કરવા હાય રૂપી ક્ષત્રિય ઉચા થઈ રક્ષણ કરશે ત્યારે ધીરુ તથા ચરણ ઉપર પ્રહાર આવશે તો પણ રક્ષણ કરના માટે હાય રૂપી ક્ષત્રિય નીચા આવીને રક્ષણ કરશે જ બે આદ્યજનું રૂપી મન્તક બગડશે તો આખું શરીર મેડ-(ગાડા) જેવું બનશે માટે આખા શરીરમા આદ્યજ રૂપી મન્તકનું ખાસ રક્ષણ કરનાની જરૂર છે. આદ્યજને સર્વ વજનોનું શુરુ કહેવાનું કારણ સમજ્યા હશે. તેના દાશજ મર્વ કાઈ વ્યવહાર થાય છે સમાજમા સુવારો વવારો કરનાનો વિચાર પ્રથમ મન્તકમા થાય છે આપને આમારે જણાવવું જોઈએ કે જે અન્યજ છે તે પણ અગ છે, પણ તે અગ તેને યથાને પોતાની ફરજ બજાવતું ગ્હે તોજ શોભે, તે અગ ખીમ અગો જેટલુંજ વડાક્ષ અને ઉપયોગી છે, શુદ્ધ અગ આપણું છે, ઉપયોગી છે, શુદ્ધિ વિના જરા પણ છતી શકાય નહિ. અગનો જેમ પરમ્પર ઉપકારક ભાવ છે તેમ વજનો પણ બજાવે. પોતપોતાના કર્મમા જે અભિગત રહે તેજ કતાણુંને મેળવે છે. “સ્વે સ્વે કર્મણિ” શ્લોક એજ કહે છે પૂર્વ જન્મના કારણથી તો આ દેહ તમને મળ્યો છે. શ્રુતિ પણ કપૂયચરણ રમણીય ચળુ કહે છે કુષ્ટવથી કપૂયથોનિ-ધ્યાન સંકર

આંધ્ર-બોનિ મુમુક્ષુ રમણીયપેરિ મને છે. આનંદ-સુત્રિય-સંસ્કૃતી એનિ પૂર્વ સમન્તા હમંધીજ મને છે. એ સમારે જુલું નહિ.

એક પૃથ્વીત્ય વિદ્વાન મું કહે છે.

જેમો વર્તુલ્યવરથા પ્રતિષ્ઠાં આપક છે, એક પૃથ્વી રીતે ઉપકારક નથી વર્તુલ્યવરમની, જરૂર નથી એવા વિચારકોને પાશ્વત્ય વિદ્વાનોના જ અભિપ્રાય બતાવીએ છીએ.

"The system of Cast," says Sir Henry Cotton, "far from being the source of all troubles which can be traced in Hindu Society, has rendered most important service in the past, and still continue to sustain order and solidarity."

"Caste in India cannot be either abolished or extinguished. The system will last for untold centuries, because in suits India on the whole. Hindu Society without caste is inconceivable. Reformers must be content to make the best of a system which cannot be destroyed.....The deep waters of Hinduism are not easily stirred. Ripples on the surface have the depths unmoved."

સર હેનરી કોટન કહે છે કે "સાતિપ્રથા" હિન્દુ સોસાયટીમાં જન્મીને ફુલ્લેનું થતું નથી, પરંતુ તે પ્રથાએ તેા જૂનઝાળની અંદર પડી ઉત્તમ એવા બન્યા છે. અને દરમુ પડુ તેને આવરથા અને ગિરતા દઢાવી રાખી છે.

સાતિપ્રથા હિન્દુસ્તાનની અંદર દૂર ચમકે છે નાચ ચમકે એમ નથી. એ પ્રથા ન કદી યથાચ્છેદ સાક્ષી સુધી આપશે. કારણ કે તે હિન્દુસ્તાનને સંપૂર્ણ અંધારેલી છે. સાતિ પ્રથા વિનાની હિન્દુ સોસાયટી (સમાજ) કદી ન યથાચ્છેદ એવી છે. સુધારકોએ, જે પ્રથાને નાશ ન થઈ શકે તેનો ઉત્તમ ઉપયોગ કરી સત્તાવાર માનવો જોઈએ. હિન્દુસ્તાન એટલાં ઉંડાં જગ છે કે તે સંદેશાઈથી દલાવી યથાચ્છેદ એમ નથી. ઉપરના કારણે તે જગની ન દલાવી યથાચ્છેદ એવી

શ્રદ્ધ, સ્ત્રીઓ વૈશ્ય અને પાપયોનિ ચાંડાલ જેવાની લક્ષિતથી પરગતિ માની છે. નહિ કે વર્ણશ્રમ બદલી નાંખવાની પરવાનગી આપી છે.

આ આપતકાલ નથી. જાણીશુછને ધર્મ ન તલ્લે.

આપતકાલનો ખોટો અર્થ ન કરવો. આપણને ટેવ પડી છે કે ત્યારે ત્યારે આપણી નબળાઈને આપતકાલ માની લઈએ છીએ. ત્યારે દુષ્ટાના આક્રમણ હોય, ત્યારે જંગલમાં પ્રાણુ જવાની તૈયારી થતી હોય, દુર્ભિક્ષ હોય તેવા ભયંકર સમયો દાખલો લઈ ધરતી પથારીમાં પ્રમાદથી પડેલાં આપત્તિકાલના ધર્મશાસ્ત્રની છૂટ ન લેવી, ઉપનિષદની એક વાતી યાદ આવે છે (જોદોઅના પ્રથમ પ્રપાઠકના દશમા ખંડમાં છે) ચક્રનો પુત્ર ઉપસ્થિત નામનો એક ઋષિ અસ્મદ્વાદૃષ્ટ દુષ્ટકાળથી દ્વિપિન કુરુ દેશમાં પોતાની સુવર્તિ સાથે જતો હતો. રસ્તામાં તેને માવતનું ગામ આવ્યું. ત્યાં ભૂખથી પ્રાણુ નીકળતો હતો તેણે એક માવત પામે અડદની થામના કરી. મને અડદ ખાવા આપ, હું મરણાત ભૂખ્યો છું. આનો ઉત્તર માવત કરેો મુંદર આવે છે? માવત “ભયંકર” કરવા માગતો નથી, “આજે હું અડદ ખાઈ રહ્યો છું તેનાથી હવે ખીજ મારી પાસે નથી, જે છે તે ઉચ્છિષ્ટ રહેલા છે તે છે માટે હવે હું શું કરું? ઉપસ્થિતિએ વિચાર્યું કે મારે પ્રાણુની રક્ષા કરવી છે તેથી તે પણ ખાધા. પછી કહ્યું કે ઉચ્છિષ્ટ માપમાંથી મને આપો. પછી તે માવતે પ્રાણુનત દુષ્પિત ઉપસ્થિતની પ્રાર્થનાથી માપ આપ્યા અને તે તેણે ખાધા. પ્રાણુ રક્ષા થઈ, હવે આપતકાલ દૂર થયો, તે પછીની યજ્ઞ માવત કહે છે કે આ અનુપાન લો (જલપાન, કરો) આ વખતનો ઉપસ્થિતો જવાન ધ્યાનમાં રાખજો.

નહિ ખાધા હોત તો મારી પ્રાણુરક્ષા ન ચાલ. તેથી તે મેં આપદર્મથી માપ સ્વીકાર્યું. હવે માપ ખાવાથી મારી પ્રાણુરક્ષા થઈ ગઈ. હવે કામનાથી ઉચ્છિષ્ટ જળ પીવું એ અધર્મ છે, આ બારીક જ્ઞાન તમેને શું સમજાવે છે? મોટાઈની કામનાથી હવે આજ કાલના દેશસેવાના બહાનાથી અથવા દોષપિણ કામનાથી અત્યારે મને તેનું પાણી પીવા લાગ્યા, તેના ધરમાં ખાઈ લીધું, આ કામનાના ધર્મપાતોથી ધર્મ ગયો. તેથી દેશનો ઉદ્ધાર તો સો ગાઉ દૂર ગયો, અનાચારના કારણથી શુદ્ધિ બગડી, અને પુનપુનઃ અનાચારપરંપરામાં ભારતના સંતાનો, અમર્યા મોડ્યા. કારણ કે અન્ન તેનું મન ચાય તે સ્તુતિ કહે છે. ખાધેનું અન્ન ત્રણ પ્રકારે વહેંચાય છે, જડભાગનો પરિણામ મદ્ય...સદ્ધર્મનું મન અને છે. આ હાંદોઅમાં અન્ન, જલ, તેજ આ ત્રણ મન, પ્રાણ વાણી રૂપે પરિણમે છે તે સ્પષ્ટ જણાવે છે, આજ હેતુથી હમારા પૂર્વજ દસદિગ્ધિવિગ્નથી શ્રીપુરુષોત્તમજી વર્ણશ્રમધર્મની ઉપયોગિતા સેવાપ્રકારમાં જણાવતાં કહે છે કે—વર્ણશ્રમધર્મનુસાર જે દ્રવ્ય સંપાદન કર્યું હોય તે દ્રવ્યથી સામગ્રી સંપાદન કરી તે પ્રભુને ભોગ ધરાવવો અને પવિત્ર અન્નથી વ્યવહાર કરવો. આ આપણી પ્રાચીન ભારતની સભ્યતા છે. આ ભગવાનના ઉચ્છિષ્ટને બદલે મને તેનું ઉચ્છિષ્ટ ખાનારા આસુરી પ્રવાહોમાં તણાવેલને શાસ્ત્રમાં કહેલી ભગવન્મંદિરની બુદ્ધારી કરતાં સરમ લાગે, અને ઝાડુ લેઈ પાપખાના સાફ કરવાની અનાધિકાર દાંભિક ચેષ્ટાઓમાં પડતાં જરોપણુ સદમ ન આવે. એનું કારણ પ્રભુજી જાણી શકે છે, જ્ઞાની ચર્ચ ગયા હો તો પણ આચારવિરદ વર્તવાનું દરમ્યાન નથી. તો સાધારણ કેશાના માથુઓ સ્વચ્છંદતાથી કેમ વર્તી શકે? ભગવાન ઉત્તરમીમાંસાસૂત્રકાર પણ કહે છે કે—આ સૂત્રમાં પણ આશા કરે છે કે અંતઃકરણશુદ્ધિ જ્ઞાનમાં સાધન તરીકે ઉપયોગમાં આવે અને જ્ઞાન થયા પછી સાધનની જરૂર નથી પણ આપત્તિ સિવાય બાકીના વખતમાં જ્ઞાની અને સાધારણ બન્નેને માટે હુટ આપવામાં આવતી નથી આપતકાલને માટે તો “હવિતાત્મ્ય” વચનથી

આપદ્મમાં ખાખ માટે આના કરે છે, આજ માટે ગમે તેવા અનાચાર કરનારાથી ભારતની સંસ્કૃતિ સો માટે દૂર છે.

ભક્તિમાર્ગ સર્વનો ઉપકારક છે માટે પાપી યોગી માટે તેજ ઉપાય છે.

હવે તેમણે શું કર્યું ! તેમને માટે પૈદ્ધિક કર્મ નથી, તેમને માટે ઉપાય સ્થાપનામાં સારો ગીતાઇ બતાવે છે તે સ્વીકારે. ભગવદ્દર્શનની ધૃષ્ટિ દોષ તો સ્તુતિ દર્શનથી પૂર્ણ કરી રાહે.

પ્રત્યુ શ્રીકૃષ્ણનો આશ્રય સ્વીકારી પેન્થપેન્થની કક્ષામાં રહેનાર પાપીયો દોષ અર્થાત્ અંસજ અન્ત્યેવસાથી જેવો પાપીયો અને ત્રિષો વૈશ્ય કે શૂદ્ર પુણ્ય પરાગતિને પામે છે. માટે ભક્તિમાર્ગ જેવો વિશ્વવ્યાપક કર્મ તેમને માટે નવાર છે, તે પોતાને ઘેર ભગવાનમાં પૂર્ણ શ્રેય રાખી દહર ભક્તિ દ્વારા રાહીદાસની માફક પોતાને ઘેર ભગવાનને ઢાલુ કરી દે તેમાં પરમ શ્રેય છે. મંદિરમાં પેસવાથી તો વિકર્મનું પાપ લાગશે. બીજા કર્મમાં લાખલ ચલાવી તેમનું કલ્યાણ થાયજ નહિ. પોને વધારે પાપી થાય છે. માટે પ્રત્યુના ચરણમાં ભક્તિદ્વારા ધણુ તરી નયા. તે પરમસક્ત વ્યક્તમાં પ્રસિદ્ધ છે. પણ ભક્ત બન્યા વિના ભક્તનાં દંભમાં ઉચ્ચ ભક્તોના ઓળી આપી તેમને સમાને ઉત્તમ કલા નો અમને કેમ નહિ કે એનું બોલનારા સામને કચર છે. માટે સર્વને બ્રાહ્મણ, કાશ્યપ, વૈશ્ય, શૂદ્ર, અન્ત્યજ, અન્ત્યેવસાથી ગમે તે હો તે પોને પોતાની કક્ષામાં કર્મ પાળીને તેમાંજ રહીને ભક્તિથી ઉત્તમ કક્ષા ભગવાપ્રાપ્તિ કરી શકે. એજ

શુદ્ધાદેવ-ભક્તિમાર્ગ.

(શિખર:—શ્રીગુત વિનોદરાય વચગુખરાય મળમુંદાર બી. એ. એમ્.એ. બી., અમરેલી.)

ગયા મંદે માતા વસોદાનાં અદોભાવ વર્ણવ્યાં છે તે ભાગ્યે લાભ ને ભક્તિભાવ બીનું હ્રસ્વ દશે તો આપણા સંપ્રદાયમાં દરેક સ્ત્રીકૃષ્ણ લાભ શકે છે તેમ છે. કારણ કે શ્રવ. કાંઈ સ્ત્રી જાતિ લુદો અને પુરુષાત્તિ લુદો નથી. તે તો એક સરખો બન્ને જાતિઓમાં એક સરખોજ છે માટે ગરમંત્રના શબ્દોમાં સ્ત્રી માટે કાંઈ પણ ફેરફાર રાખવામાં આવ્યો નથી.

વળી સ્વરૂપસેવાથી જે વિશેષ લાભ છે તે ચિત્રજીવી વગેરેની સેવામાં નથી તેનું કારણ એ છે કે શ્રીઆચાર્યચરણની આજી " ચેત: તત્પ્રવચ્ચ " કરવાની છે તે શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માએ શ્રીમુખથી જે તારનમ્ય બતાવ્યું છે તેને અનુસરીને છે તે એ રીતે કે " તપસ્વિઓપધિક્ષા યોગી જ્ઞાનિઓપધિક્ષા મન: કર્મિઓપધિક્ષા યોગી તસ્માદ્યોગી ભવાર્જુના પરાત્મા અર્જુનને યોગી થવાની આજી એટલા માટે કરે છે કે યોગી તપસ્વીઓથી, જ્ઞાનીઓથી અને કર્મનિક્ષી અધિક (મહે) છે. એમ કહેવાનું કારણ સમજવાની વડર છે. તપ કરવામાં મનને જે વસ્તુ મેગરવાની તથા ભોગવવાની શક્તિ દોષ છે (છતાં) તે વસ્તુઓ નહિ મેગરવાનો દર નિશ્ચ કરીને મન વસ કર્યું અને શરીરને કટ પડે તો ભક્ષે પડે તેમાં પાછ દર્યું નહો એમાં તાત્પર્ય નકારમાં અથવા વિસ્ત્રેષમાં વિગેરે પરિણામોમાં રહેયું છે. અને જાર શું છે ? કેમ ન રહેવાય ? વિગેરે પરમાત્મા સિવાયની વાત ઉપર ભાર આવ્યો અને પ્રમુ પ્રસન્ન કરવા નિમિત્તે તપ દોષ તોપણ પરમાત્મા સાથે હં બાંધીને વાસવ ભાવ ખીલવ્યા વિના અસિમાન (દહ) અદભાવ ખીલવીને અમુક કામનાને આગળ કરીને તણેજદથી પ્રમુને પ્રકટ થવાની ફરજ પાડવામાં અને તેની પાસેથી વરદાન માંગવામાં તાત્પર્ય છે. અને જ્ઞાનીને તેથી ઉચ્ચ " અમાનિત્વ " ક્ષપાદિ દં નથી મારે કંઈ નોંધવું નથી એ સારા ગુણો ખજા પજુ તે સચે વૈશ્ય ઉપર જાર દોવાથી.

અને વૈરાગ્યપોષક નકારાન્ત રહેલી પસંદ હોઈ ભગવાન પ્રત્યે પ્રેમવાત્સલ્યાદિને પણ “રાગ” ગણીને વિરાગ એટલે પ્રભુમાં રાગ પણ ઉપલબ્ધ ન થવા દેવાનું વર્તન પ્રદણ કરવામાં આવે છે કેમકે રાગથી બંધન થાય છે એવો (without exception) ભવ અસ્યાને ખીલવ્યાથી ભગવત્સંબંધી બાબતોમાંથી પણ વિરાગ એટલે બહિર્મુખતા થતી વખતે પેસી જાય છે અને પ્રભુને માત્ર જાણ્યા એટલું શુદ્ધગોન પૂરતું જનાય છે. ત્રીજા કર્મનિષ્ઠ વર્તનને વિધિ, નિષેધને આધીન વર્તવુંજ જોઈએ છીએ. હવે વિધિ એટલે વેદમાં જે આજ્ઞાઈ વાક્યો વાપર્યા છે પણ વેદ તો સંપૂર્ણ ઉપલબ્ધ થતા નથી-દાખલા તરીકે મગ્ગવેદની શાખા કૃત્ત્વાક ૨૪ કહે છે કૃત્ત્વાક ૨૧ કહે છે તેને બદલે આગે જે ચાર ઉપલબ્ધ છે. યજુર્વેદની ૧૦૧ શાખાને બદલે આગે ૧૧ શાખા ઉપલબ્ધ હશે! આમવેદની તો એક હજાર શાખા કહેવાય છે તેને બદલે દસ ધીસ ઉપલબ્ધ હશે!! અને અર્થવેદની કોષ્ટ ૧૨ કહે છે અને કોષ્ટ ૯ કહે તેમાં જે ત્રણ ઉપલબ્ધ હશે છતાં તકગર ખાતર જેટલું ઉપલબ્ધ છે તેમાંનાં વિધિવાક્યો ઉપર બાર દસ કર્મના દાખલા પ્રમાણે પ્રભુએ ક્ષણ દેવુંજ જોઈએ એવું તપના જેવું તાત્પર્ય ગ્રાખીને દેશકાળ દ્રવ્ય મંત્રકર્તા અને કર્મને કાળ (મમય) જેવાં શુદ્ધતમ રહતા નથી એ યોગી વાત જુદાકાં જવાય છે માટે શ્રીમુખે “યોગી” ખનવાની અભૂતને આજ્ઞા કરી યોગને અધિક કહી તેનું કારણ એજ છે કે “યોગઃ કર્મસુ કૌશલ” એમ શ્રીમુખે વ્યાખ્યા આપી કે “કુશલતા” ચતુરાઈ સીધી સમજ હોઈ મમજનું (રહસ્ય) તું પ્રદણ કર એમ કહીને તુરત તેજ અધ્યાય છતાંના સહતાણીસમા શ્લોકમાં ઉચ્ચતો નિર્ણય આપી દીધો છે “યોગિનામપિ સર્વેષા મહાતેનાન્તરાત્મના, શ્રદ્ધાવાન ભજતે યો માં સમે સુક્રતત્તોભવતઃ” અર્થાત્ ૧ મહાતાન્તરાત્મના યદને શ્રદ્ધાયુક્ત ખનીને ૩ માફ ભજન કરે તે પાછલા શ્લોકના અનુસંધાનમાં અર્થ કરીએ તો તપસ્વીધી, જ્ઞાનીધી, અને કર્મોધી જેઓ (યેવાન) છે તેવાઓમાં પણ શ્રેષ્ઠ એ છે કે જે માફ (શ્રીમુખ પરમાત્માનું) શ્રદ્ધાયુક્ત ભજન મહાતાન્તરાત્મના યદને કરે તે શ્રેષ્ઠ યોગી છે.

વળી જ્ઞાન વિજ્ઞાન શ્રદ્ધા, અધિશૂન આધિદેવ અધ્યાત્મ, અધિયત્, રાજવિદ્યા વિગેરે કહી ખતાવીને ઉવટે અધ્યાય નવમાના યોગીઓમાં શ્લોકમાં એજ આજ્ઞા કરી કે મમ્મન્ના મય મદ્વજ્ઞો મદ્વાજ્ઞ ઇત્યાદિ એ હું સર્વવ્યાપક છું છતાં અનેક વિમૂતિ (નિશ્ચિતોજ સત્તા વિગેરેવાળે રચે અને વ્યક્તિઓ) મા હે વધારે પ્રકટ છું અને એ વ્યષ્ટિ ઉપરાંત સમષ્ટિરૂપ વિરાટ પણ હું છું. એમ ખતાવ્યું એ બહારપને ભજનનારા સ્તવનારા પણ તેની સાથેજ અભૂતને ખતાવ્યા અને મત્કર્મકૃત મત્પરમો મહાભક્તઃ થવા આજ્ઞા કરી તેથી અભૂતને અધ્યાય ખારમાના પહેલા શ્લોકમાજ પ્રશ્ન પૂછ્યો કે “આય એટલે કે મ. ૧૨ ના શ્લોક ૪૬ અને ૪૭ માં કહેલું “ચતુર્ભુજ” “ત્રીમુખ” ઇત્યાદિવાળા શ્રીમુખે યોગીને ભજનનારા “યોગવિત્તમ” ? કે આ જગદન્ત હમણા મેં જોયું તેનું અવ્યક્ત અક્ષર સ્વરૂપ ભજનનારા “યોગવિત્તમ” છે ? તેનો સ્પષ્ટ જવાબ તુરતાતુરત શ્રીમુખે આપ્યો છે કે “મધ્યાવેશ્ય મનો યે માં નિચયુક્તા ઉપાસન્તે શ્રદ્ધાપરયોપેતાસન્તે નેયુક્તતમા મતા એ જવાબને ઉપર જણાવેલા છતાં અધ્યાયના સહતાણીસમા શ્લોક સાથે સરખાવવામાં આવશે તો તેની તેજ વાતે વધારે ભાર દઈને આજ્ઞા કરી છે કે “મહાતેનાન્તરાત્મના ખરા” પણ “નિય” તેવી રીતે યુક્ત રહેવું જોઈએ અને શ્રદ્ધાવાન યદને ભજન કરવાનું કહ્યું છે તે શ્રદ્ધા પરાશ્રદ્ધા હોવી જોઈએ એટલે તે યુક્તતમ ગણાય. અર્થાત્ અક્ષરને ભજનવાળા માટે એકમ પહેલી પસંદગી શ્રીમુખમાંથી નીકળી નથી પણ તેને ભજે છે તે આટલી આટલી યોગ્યતાવાળા (હોય તો) અધિક કહેણ પડે ત્યારે મનેજ પામે છે એમ ક્રીક ક્રીક સમાધાન

નહીં તેમ ખીજ કોઈપણ વસ્તુ તરફના રોષ કરતાં ન્યૂનતા અથવા ખીજા રોષ સાથે સમાનતા પણ રહેશે નહીં. અર્થાત્ ખરેખરે માહાત્મ્યવાન હૃદયાર્થ નહીં થયું હોય ત્યાં સુધી સુદૃઢપણામાં તથા સર્વશ્રેષ્ઠતામાં ન્યૂનતા રહેશે. ત્યાં સુધી “ત્રેમલક્ષણા ભક્તિ” ઉત્પન્ન થશે નહીં. માટેજ કવિવર દયારામભાષ્યએ ગાયું છે કે “નિશ્ચયના મહેલમાં વસે મળવાડિયો” અને નિશ્ચયનો એ દ્વાર મનથી પર છે. મન છે તે સંકલ્પ વિકલ્પાત્મક છે અને ધીમુખેથી. કંઠ ઉપનિષદ વાક્ય અર્જુનને કહ્યું છે તેમ મનસ્સરુ પરા ભુદિ છે તે બુદ્ધિનું લક્ષણ “નિશ્ચયાત્મિકા ભુદિ” એવું છે. મન તો અત્યારે નાસ્તિકીનાં પણ ખાલેલા છે તેથી અનેક વિકલ્પો અને ઉંધા સંકલ્પો કરે છે તેથી તેની બુદ્ધિ ભગવદ્ભિન્ન બેદામાં આવે છે.

શ્રીવ્રજયાત્રા.

વલ્લભદાસને ઘેર ન્યાં ભગવદ્વાર્તા હમેશાં યાય છે ત્યાં સર્વે ભગવદીયો આવે છે. સર્વે નેશ્વીરુષ્ણ કરીને બેસે છે. કૃષ્ણદાસ બત્તી બેઠે છે, વૈષ્ણવો મંગલાચરણ કરીને પુરતકજ બેસે છે. ત્યાં રતનમાં કહે છે—રામદાસજી વલ્લભદાસભાઈને પુછે જે કાને રાત્રે “મજા વહાણું રે વૈકુંઠ નહિ આવું.” તે ધોળ બોલાવ્યું તેના અર્થ અને સહેજ ભાવાર્થ સમજાવે તો ધણું સાફ.

વલ્લભદાસ—માજી, તમે બહુ સાફ પુછ્યું છે. આપણા મહારાજશ્રી આ વરસમાં મજાવાજી કરાવવાની આજ્ઞા કરી રહ્યા છે. તે અવધુ કરી શુભરાત, કાઠીઆવાડ, કચ્છ, વરાહ, મારવાડ પ્રભૃતિની શ્રીવલ્લભમુદિ મજાયાત્રાનાં સુખ લેવા તમસી રહી છે આ વર્ષની મજાયાત્રાનાં સુખ તો ભાગ્યશાળીઓને પૂર્ણ મલવાનાં છે.

રામદાસ—વહાલા વલ્લભદાસભાઈ, માજીએ પુછ્યું છે તે કરુણા કરી કાંઈ અવધુપાન કરાવો તો સાફ.

વલ્લભદાસ—રામદાસભાઈ, આપણને સર્વેને વિકૃતભાસભાઈ તે રસનું પાન કરાવશે.

વિકૃતભાસ—મારા વહાલાના વહાલાં ભગવદીયો, શ્રીવલ્લભ અને વલ્લભીદ્વારા મેં જે પાન કર્યું છે તેનું કરીને અવગાહન કરાવવા તમોએ મારા ઉપર કૃપા વિચારી છે તો જે મેં સાંભળ્યું છે તે નિવેદન કરું છું. પરણુ ભગવદીય રણજોડદાસ માસ્તરની મંડલીમાં એક વખત મેંજા ઉપર વૈષ્ણવો રાત્રે “મજા વહાણું રે વૈકુંઠ નહિ આવું ના ના નહીં આવું રે ના નહીં આવું મજા વહાણું રે વૈકુંઠ નહિ આવું.” તે ધોળ ગાઈ રહ્યા હતા. નીચે રસ્તા ઉપરથી એક જોડાર-શકર નામના અન્યમાર્મી પંડિત નીકળ્યા તેના કાન ઉપર આ શબ્દ પડતાં મનમાં વિચારવા લાગ્યા, જે આ મોડાએ મજા આવે તેમ ગાયા કરે છે, ઠીક છે, પણ કાલે સવારે હરિદાસ મારા પડોશમાં રહે છે તે વખતો વખત બગણાં (ગખા) માર્યા કરે છે, જે અમારા પુષ્ટિમાર્ગમાં જેટલું જેના અનુભવમાં આવ્યું હોય તેટલું તે ગાય છે, તો આ માસ્તરની મંડલીવાળા જાન વિનાનાં વૈષ્ણવો કહે છે જે વૈકુંઠ નહિ આવું, જે વૈકુંઠ દેવતાને દુર્લભ છે તેના કરતાં મજામાં શું અનુભવ્યું હશે? તે પ્રશ્ન હરિદાસને પુછીને તેને હસવખત ગપ્પાં મારતો બંધ કરી દઈશ. તેનીજ કલ્પનામાં રાત આખી કાંઈ ઉંધ કલ્પના કરી વીતાવી દીધી. સભ્યરમાં ઉલ્લાસ હરિદાસને બોલાવીને કહે છે હરિદાસ, આજે તમારી યોગ પકડી લાવ્યો છું. જવાબ પૂરો કરો.

હરિદાસ—પંડિતજી, આજે તો કાંઈ બહુ ભેરશોરમાં વાત છે? એવડી બધી ભારે યોગ શું પકડી લાવ્યા છો?

પંડિતજી—રાત્રે દસ વાગતાને મુમારે દોઢીવાડાની પેળખાની નીકડતાં ઘોરીજ વારે કાણુપુરના રસ્તા અને રીચીરિડ સડક વચ્ચે ને ગલી આવે છે તેમાં મેઝા ઉપર માસ્તરની મંડળીમાં વૈષ્ણવો બોલી રહ્યા હતા ને “મગ વડાહુરે વૈકુંઠ નહિ આવું, ના ના નહિ આવું, ના નહી આવું. મગ વડાહુરે વૈકુંઠ નહિ આવું.” તો લાઇ હરિદાસ, તમે વખતોવખત ગપ્પાં મારો છો ને અમારા પુણિમાર્ગમાં જેણે જેટલું અનુભવ્યું છે તેટલુંજ તે ગાય છે તો આ વૈષ્ણવો કહેતા હતા ને વૈકુંઠ નહિ આવું. તો લાઈ હરિદાસ, વૈકુંઠના દર્શનનો તો જેને મોક્ષની પ્રાપ્તિ ગઈ હોય તેનેજ થાય છે અને મોક્ષ પણ ચાર આશ્રમ સિદ્ધ થાય તેનેજ મળે છે. આવડું મધું કદિન કામ છતાં તે લોકો રાત્રે ગાતા હતા ને વૈકુંઠ નહી આવું, ના નહી આવું. તો મોક્ષ કરતાં અધિક શું હોય ને મોક્ષને તરછોડીને કહે છે ને નહી આવું ? અને તેથી પણ મગમાં વધારે શું અનુભવ્યું ને મગ વડાહું તેમ કહે છે તો તે ગપ્પાં નહિ તો શું કહેવાય ?

હરિદાસ—પંડિતજી તમારો મગ હું સમજ્યો છું. હવે મારે તમેને પુછવાનું છે ને તમે કહો છો ને ચાર આશ્રમ સિદ્ધ થાય તેનેજ મોક્ષ મળે છે તો તે ચાર આશ્રમ કયા કયા અને તે આશ્રમમાં શી રીતે વર્તવાનું તે જરા ઠીક કરીને કહો.

પંડિતજી—પહેલો બ્રહ્મચર્યાશ્રમ અને તેમાં એક વખત જન્મવાનું છે. ભોંય પર મુખું, નશાવાસા કોઈ પદાર્થ ખાવા પીવા નહી, એકાંતમાં કોઇ સાથે ઉઠ્યું બેસ્યું નહી વગેરે વગેરે. બીજો ઔરધાશ્રમ તેમાં ધર ખાંધીને રહેવું અને ધર આમળ આવેલા અતિથિનો ખનતો વાણી પાણી ને સાથરી સંપત સાથે અન્ન, ખંધી રીતે સત્કાર કરવો. ત્રીજો વાનપ્રસ્થાશ્રમ તેમાં જંગલમાં (વનમાં) રહેવું ત્થી સાથે હોય પણ સંસાર મુખને ખાટે નહિ. ભગવદ્ધર્મની અનુકૂલતા સારજ. ચોથો સંન્યસતાશ્રમ છે છતાં સર્વજન ત્યાગ કરવો તેનું નામ.

હરિદાસ—“નારી મુઠ ધર સંપતિ નાસી મુંઝ મુંઝાઇ ભયે સંન્યાસી” તેવા તો શ્રીમદ્ વલ્લભાચાર્યજીના પ્રાકટ્ય વખતે કાશીમાં દસ હજાર સંન્યાસીનું સૈન્ય ચવનની સેના સામે લડવા તૈયાર થયેલું હતું. સંન્યાસીના વેશના પડદા પાછળ મનમાને તેમ કરે તેવું તો નહીને ?

પંડિતજી—તેવું સંન્યસત તો નરકમાં બોળવાનું છે. તેનો આશ્રય કરનાર પણ સંસારમાં હોય. ઉપર કહેવા પ્રમાણે ચારે આશ્રમ જેને સિદ્ધ થાય એટલે યથાચિત વર્તનમાં આવે તેનેજ મોક્ષ મળી શકે છે છતાં એથી કદિનતાએ ને મોક્ષ મળી શકે છે તેને તે લોકો તરછોડે છે તે તેમની કટલી ખંધી અવાનતા ગણાય છતાં તમે તો હર વખત તેવા લોકોની સરાહના કર્યો કરો છો. હવે તેણે શું અનુભવ્યું તે જવાબ હું સમજી શકું તેથી રીતે આપો.

હરિદાસ—પંડિતજી તમે કોઇ વખત વૈષ્ણવોને મગધાત્રા કરાવવા શ્રીવલ્લભકુલ આવડે (ગોસ્વામી માહારાજને) વધારે છે તે જોયેલું કે સાંભળેલું છે ?

પંડિતજી—દસ બાર વરસ પહેલાં એક વખત અમે એક શેડની સાથે મંચાઇએ ગયા હતા. ત્યાંથી પછી ગોકુલ મયુરાંની જાત્રા કરી વંદરાવન જોયું. પછી તે શેડ વૈષ્ણવ હતા અને તેણે અમને જાત્રા કરવા રેલનું ખરચ આપ્યું હતું તથા ખાવા પીવાનું ખરચ પણ તે શેડજ આપતા હતા. તે શેડ શ્રીગુરુસંપંજી મહારાજની સાથે મગધાત્રા કરવા રોકાયા અને અમે પણ તે વખતે મગની પરિક્રમામાં સાથે હતા તે વખતે જોયેલું તો છે પણ હવે બરાબર યાદ રહ્યું નથી.

હરિદાસ—પંડિતજી, સાંભળો બધા વૈષ્ણવોએ તે વખતે વિશ્રાંતયાદ ઉપર જાત્રાના નિયમ લીધા. તેમાં બ્રહ્મચર્ય સર્વે પાળ્યાં. તે ચાલીસ દિવસની જાત્રા થઇ ત્યાં મુઠી તમારા જોવામાં આવ્યું કે ?

પંડિતજી—હા તે વખતે બધાં ભોય મૂતા, પંચકેશ રાખતા, તેણ લગાડતા નહી, એક વખત જન્મતા, તેનું બધું અહમચર્ચ આશ્રમ જેવો મેં જરાબર જોયેલો છે તે અને હજી યાદ પણ આવે છે પણ ભાઈ શુદ્ધચાત્રમનું શું ?

હરિદાસ—શુદ્ધચાત્રમ તેઓએ પાલ નાખેલા તે તેનાં ઘર સમજો. પોતાને પાસે આવે તેને ટાક તાકે વરસાદથી ખચાવવા જગ્યા પણ આપે છે. લોટ દાલ અમર ખપતાને દાળ ખાટી તૈયાર હોમ તેથી પણ ખનતો સત્કાર કરે તે શુદ્ધચાત્રમના ધર્મ ખરા કે નહિ ?

પંડિતજી—હા, તેમ પણ બન્યું હતું તે પણ હવે મને યાદ આવે છે પણ વાનપ્રચારમનું શું ?

હરિદાસ—ત્યા ડેરા વનમાંજ પડે છે. કોઈ દિવસ ગામમાં વાસ નથી કરતા. ચાંચીએ ડેરા વનમાંજ પડે છે અને સ્ત્રીજન સાથે હોય તે ભગવદ્ધર્મના અનુકૂળના માટેજ હોય છે. ત્યો સંસારસુખને માટે સ્ત્રીઓ સાથે રાખતા નથી.

પંડિતજી—હા, તે પણ બન્યું હતું તે પણ મને યાદ આવે છે પણ સંન્યસાશ્રમનું શું ?

હરિદાસ—ધરમા લાખો રૂપિયાનો વહીવટ સગા મહોદર સર્વે છે છતાં તે સુધામાયી ચિત્તનો નિરોધ કરીને એટલે અમારું કોઈ નથી અમારા એક શ્રીગોવર્ધનધર છે એનું મન સાથે નિશ્ચય કરી આનંદથી ભગવદ્દેહ્ય કરવી તે સંન્યસ.

પંડિતજી—હા, તેમજ હતું, અમારા શેઠને બહુજ જન્મના ઘર આગળ હતી. રાતદિવસ વેપાર રોજગાર વહેવામાંથી બીવકુલ નવરા થાય નહિ છતાં પણ ત્યા સર્વને કહી દીધું હતું જે ધરના સાગ ચા માદાં કાંઈ ખમર તમારે મને આપવા નહિ.

હરિદાસ—એમ પંડિતજી, તે ચારે આશ્રમના ધર્મો તે લોકો મનમાં જાણે ચાલીસ દિવસના સિદ્ધ કરી લે છે એટલે વર્તનમા લાવે છે તે તમે નજરે જોયેલું છે અને તેનું કય મોક્ષ તરછોડે છે. ગાયી જે તેને મળ્યા જે ચાલીસ દિવસમા જે સુખ થોડા પ્રમાણમા વિના અને શ્રીગુમાધજી મહારાજની કૃપાથી મળેલું છે એટલે અનુભવમા લીધેલું છે તેથીજ તે ગાય છે જે મંચ વહાણું રે વૈકુંઠ નહી આવે.

પંડિતજી—હરિદાસજી, હુ તો મળ્યા ગયો છતાં તમે જે સુખનું પર્ણન કર્યું તે બધું નજરે જોયેલું છતાં તેમાનો કાંઈ અનુભવ કરી શક્યા નહી તેનું કાગળ ?

હરિદાસ—પંડિતજી, તમે વાત કહી જે અનુભવમા આવી નહી તે ખરાબ છે. મળ્યા સુખની ખબર તે અનુભવવાવા ભગવદ્દેહ્યોના સત્સંગથીજ મળી શકે અને તેવા ભગવદ્દેહ્યોના સગ દાસધર્મવાલાઓનેજ ક્ષત્ર્ય થાય છે. તમેને તમારી પંડિતાઈએ એ સુખથી વેગવા રાખ્યા છે. શ્રીગુમાધજી મહારાજ પણ પોતાની દેવી સાથે હિર ન્યારે અતિરાય કરણાદિ વિચારે લારે સત્સંગેતારાજ તે સુખ લેવરાવે છે અને તેવા સત્સંગનું સુખ મળ્યા તેવા મળ્યા અનુભવવાવા ભગવદ્દેહ્યો હોય ખગ અને મળ્યાશ્રમિને આવે પણ ખરા તેટલાજ પુરતું મળ્યાના કરાવવાનું શ્રીગુમાધજી મહારાજ વિચારે છે જેથી દેવીજીવોના આનંદમા વૃદ્ધિ થાયો. આ પ્રમાણે મે સધારણ રીતે સાબળું છે તે મેં નિવેદન કર્યું છે. ભાવ સંબંધ પ્રમંથ એટલે શ્રીગોપીજનોનો ભાવ કુંજન કુંજને ભટકી હુ તો આવી જંદાવન ભટકી તે કોઈ દિવસ કોઈ ભગવદીને પુણ્ય.

જમનાદાસ—ભાઈ વલ્લભદાસ આજનો બહુજ આનંદ થયો. આપણી આખી મહેત્તી આ વરસે મળ્યાના કરવા જઈએ. આ વર્ષે શ્રીગુમાધજીએ કાંઈ અગણિત દાન કરવા વિચાર્યું છે. આખી આખી મહેત્તી વચ્ચે એક એકર એ પાંચ મોટા મોટા લઈએ, અને સર્વે મળીને સેવા

ગૂરસ અંથોના ઉપોદ્ધાત જે છપાવ્યો, છે તે મેં (વસંતરામે) જ લખીને 'આસેતુદિમાચ્ચ પંડિત' ના નામે પ્રકટ કરી ત્રાંખ્યો છે. આવી ભયંકર-અપ્રામાણિકતા કે બેધમાની મેં જાહેરમાં કરેલી હોય તેની મને યાદ નથી. હું પણ ગૂરસાચી છું, પણ મારી ધર્મપાત્રીને કે પુત્રીને ના એક પણ લેખ છપાવીને દુનિયાને દેગવાનું હીચકારાપણું બતાવ્યું નથી. એમ કરનારને 'પ્રતિમહ' પણ ન જ ગણું, પણ એક કાયર-ક્ષીણ જ ગણું.

ખેર, હવે ખરી વસ્તુરિથિતિ તો મારે જાહેરમાં ચૂકવી જ નેહ્યો. 'રસાલય ગૂરસ' અંથોના ઉપોદ્ધાતના અસલ લેખક કોણ? આ વિષે આસેતુદિમાચ્ચ પંડિતના હાથના લખેલા બોલતા કાગળો મારી પાસે છે. તે ક્રમશઃ પ્રકટ કરું છું. આ મગજૂત અને સંગીન પુરાવા પરથી વાચકો સમજી શકશે કે, દુશ્મનને દુશ્મન તરીકે જાહેરમાં જાળખાવવામાં જેટલી ખીનદાની બતાવાઈ છે તેટલી દુશ્મન ઉપર પ્રહાર કરવામાં બતાવાઈ નથી. રસાલય અને ગૂરસ અંથ હું લુપ્ત પ્રકટ કરવાની તૈયારીમાં હતો. મારે એક નાનીથી પ્રસ્તાવના અમુકજ હીતીમાં લખવી હતી. અંથમાં જે વિરદ્ધ અંશ હોય તો તે પ્રસ્તાવનામાં લખવાથી અંથપ્રકાશકની પત્રકારનીતિને ઝાંખપ લાગે. છે તે તો 'આસેતુદિમાચ્ચપંડિત' જ કહી શકે. અંથ અને અંથકારના ગુણદોષનું વિવેચન ન થાય તો તે ઉપોદ્ધાત જ શા કામનો? અંથના માત્ર વખાણ જ કરવાં અને વિરદ્ધોને પણ ખેડો બચાવ કરવો એવું નવું 'મીમાંસાશાસ્ત્ર' જૈમિનિ મહર્ષિએ રચ્યું હોય તો તે 'આસેતુદિમાચ્ચપંડિત' જ જાણે. હું તો એક નાનીથી પ્રસ્તાવના લખી નાંખવાના વિચારમાં હતો તેવામાં જામનગરથી તા. ૧-૮-૨૦ નો નીચે મુજબ પત્ર મળ્યો:—

“પૂજ્ય ભાઈશ્રી, રસાલય અંથ દાઢ લંડચીનો છે એમ મારા જાણવામાં છે. રસાલયમાં શ્રીવલ્લભાચાર્યચરણપ્રતિપાદિત પુષ્ટિમાર્ગ સાથે અનેક વિરોધો વિદ્યમાન છે. અરે એટલુંજ નહિ પણ શ્રીગોકુલેશના પુષ્ટિમાર્ગ સાથે પણ. જે ભરચીના પદપાતીઓ સામે તે વિરોધો મુકાય. અને સમાધાનની ચેતેજ અપાય તો જેઓ આપને ભાષ્યપ્રકાશ લખવાની ભલામણ કરતા હતા, તેમને પડકારી શકાય. જે તમે રચાન આપો તો હું ચર્ચાપત્ર લખું. પરંતુ પાછળથી મને ચર્ચાપત્રોના જવાબો છપાવવા માટે ફાંફાં મરાવો તે હીક નહિ. જવાબ લખશે.

હરિશંકરના પ્રણામ.

ઉપરના પત્રમાં શ્રીયુત પ્રેદેસર મગજાલ શાસ્ત્રીજી એમ. એ. ને ખુદશો પકકાર છે. જાહેરમાં તો શ્રીયુત મગજાલ શાસ્ત્રીજી માટે લખાય કે, સંપ્રદાયમાં તેઓ સુધ્ધિ જેવા છે, અને પાનગીમાં તેમને શોંગમાં મારવાની આ ચાલજાણ આસેતુદિમાચ્ચપંડિત તથા ૪૦ રીમ સરેદ કાગળોને કાળા લેખોથી રાણગારનાર કોઈ વિરલાજ બતાવી શકે. ઉપરનો પત્ર મળ્યા પછી મેં તેમને લખ્યું કે સિદ્ધાંતોની ચર્ચા કરવામાં કાંઈપણ વાંધો નજ દોષ શકે. તમે એ ભરચી અંથોનું ખંડન લખશે તો હું પ્રસ્તાવનામાં જાણીશ. મારા આ જવાબ પછી આસેતુદિમાચ્ચ પંડિતજીનો ખીન્ને પત્ર આ પ્રમાણે મળ્યો:—

શ્રીમત્સુ—નિતિતતય:—

કૃપાપત્ર નથી તે લખશે. મહાવદાસસંબંધી (રસાલયઅંથના કર્તા) લેખ લેવાર છે. પૂર્ણ વિચાર કરીને નિર્ણય થયો છે. જે આ લેખ છપાશે તો સાંપ્રદાયિકોને રોધાગ્નિ લાડકી ઉઠશે. ભરચીની વિરદ્ધ લખવાથી પ્રેદેસર સાહેબનો (શ્રીયુત મગજાલ શાસ્ત્રીજીનો) પારો ઉછળશે અને તે સમાજ ઉપરાંત આપણા પણ વૈષ્ણવો ગો. બાલકો અને પંડિતો નારાજ થશે, જેઓ અત્યારે મારાથી વિરદ્ધ છે, તેઓ આ કાર્ષમાં મદદ કરશે. વિના કારણ

આપ ક્યાકુશલ છો. તેથી ભગ્ની ગ્રંથાને પહેંચી વગ્યા. મારાથી તેમ થવું શક્ય નથી. ત્યારે માંડે પોતાનું પત્ર મરી અથવા પૃથ્વોપક મળશે ત્યારે છપાવીશ. અથવા બે મારે ઉપોદ્ધાત તમારા પોતાના નામથી છાપવા ઈચ્છા હોય તો તેમ કરજા હું ખુશી છું. પ્રાપ્તર લખશે.

હરિશંકરના પ્રણામ.

ઉપરનો પત્ર કેટલો બધો ભયંકર છે ? 'આસેતુદિમાયકપંડિત' જન હૃદયને જાણવા માટે આથી વધુ પુરાવો બીજો શો હોય ? મેં ફરી પત્ર લખીને ઉપોદ્ધાતની માંગણી કરી. પણ તે મારે, નામે છાપવાની કૃપાસાત તો મેં નજ આપી. 'આસેતુદિમાયકપંડિત' જનાં ધર્મપત્ની અ. સી. જગત્ત ખદેન તો તેમનાં એક ધર્મપત્ની કહેવાય, એટલે 'પત્રકાર' પતિતેન ધર્મપત્નીને નામે ગમે તેવા લેખો લખીને છાપે તો તેને માટે તેઓ મિત્રારાં મુંઝા રહીનેજ બેસી રહે, પણ હું એ મદાપંડિતના પ્રશાસન-ય લેખને મારે નામે છાપીને તેનો 'પત્ર' પાટવાની બેવકાઈ શા માટે બતાવું ? તેથી એ ઉપોદ્ધાત મૂલ લેખકના જ નામે ખદાર પાટવાની રજા માગી. આખરે એ ઉપોદ્ધાત આખો એ મદાપંડિતના હાથનો લખેલો અને મળ્યો. તેની સાથે એક પત્ર મળ્યો; તે આ રહ્યો:—

ભાઈશી, આપનો રોષ લયેો પત્ર વાચ્યો. અનિચ્છાથીજ આ લેખની તૃતીયાવૃત્તિ (બીજી કાપકુપ કરીને) સેવામાં રવાના કરી છે...આ લેખ મારે નામે પ્રકટ થાય એમ મારી સર્વથા ઇચ્છા નથી. બે તમારા નામે છાપશે તો સારું થશે. તેમ છતાં બે છાપશે તો હવે હું તેનો નિષેધ પણ કરીશ નહિ.

હરિશંકરના પ્રણામ.

ત્યાં સુધી તેઓ પોતાને નામે ઉપોદ્ધાત છાપવાની અને રજા ન આપે ત્યાં સુધી તે તેમને નામે છાપવાનો મારો પત્રકરૂઢમ ન ગણાય. ઉપરના પત્રમાં તેમની રજા મળી તે સ્પષ્ટ છે. તે પછી એમના ઉપોદ્ધાત સાથે મેં એ ગ્રંથો ખદાર પાટ્યા. આ ઉપરાંત બીજા પણ પત્રો મારી પાસે છે. રચનાકામથી મુકાના પત્રો ગ્રંથોમાં મૂક્યા છે. ઉપરના પત્રો તેમજ બીજા પત્રો તથા આખો ઉપોદ્ધાત એ આસેતુદિમાયકપંડિતના હાથનાજ લખેલા મારી પાસે મેળવ્યું છે. કોઈ પણ તરફથી તે બતાવવા તૈયાર જ છું.

ઉપરના પત્રો પર વિવેચન કરવાની જરૂર નથી. એ બોલતા કાગળોજ ખરી વસ્તુચિતિ કહી દેશે. આટલો પત્રચપહાર છતાં 'પ્રતિભક્ત' પંડિતજીએ જે નોંધ લખી તે કેમ લખી કે કેવલ આસેતુદિમાયકમાં, નહી, તત્કાલ કે સ્વનુમદિના જનપ્રસાદમાં છુદ્ધિ વહી ગઈ હશે અથવા તો પદારો સાથે અથડાઈને હાથ પગ ચિનાની 'સ્તત્' ચર્ચાગ્રંથ દશે. 'સ્મૃતિચંચાલ' એ પદપંચાથી એ મદાપંડિતને પ્રભુ બચાવે એ અભ્યર્થના.

જે શબ્દો કપડવંજપંથી ભાઈ ઓચવલાસને લખવા રહ્યા. તેમણે એ ચર્ચાપત્ર છાપવા અને મોકલવું બેઠવું હતું. પણ સિદ્ધાંતની ચર્ચામાં અંગત ચર્ચાને રવાન નજ હોય. પણ ભાઈ ઓચવલાસ પોતેજ સ્વાર્થમાં એવા રૂચાદૂન દશે છે કે તેમને બધા સ્વાર્થો દેખાય છે.

હું સ્વાર્થથી (પૈસાની ઈચ્છાથી) કામ કરું છું કે કરી રીતે તે એક કાલમાં પૂરવાર કરી શકું છું. પણ ભાઈ ઓચવલાસ લઠા, નિલસીલાસ ગો. શ્રી ૬ શ્રીકૃષ્ણાવાલજી મદારાજના સેવક થયા, તે પછી ગો. શ્રીમદ્ભગવાદજીના સેવક થયા, એઓશીના વૃદ્ધ આર્થા, તે પછી

મંદિરના પ્રસાદ લીધા હશે પાવરીઆ પંથના મહંત બન્યા. આમાં તેઓને પૈસાનો સ્વાર્થ નો નજ હોય. પણ ભાર્ગવ્યોચ્ચત્તાન-લક્ષ્મી રસિક ભગવદીય હોય અને ભમરાની પેઠે જુદા જુદા રસ ચાખવાની ટેવથી (એમના શબ્દોમાં કહું તો મુંઝવીની પેઠે) એક ભવમાં અનેક ભવ કરવા પ્રેરાયા હોય અને બીજાને પણ તેમજ બેઠા હોય તો તેમાં એ ભાષનો દોષ હું નજ ગણું.

તટસ્થ વાંચકોની એટલી તો ચોક્કસ ખાતરી-થઈ ગઈ હશે કે, રસાલય—હરમ પ્રાંથનો ઉપોદ્ધાત મેં ઉપગ્રવનીને રા. હરિશંકરજીને નામે પ્રકટ કર્યો નથી; પણ તે તેમણે વિના પ્રેરણાએ લખ્યો છે અને તેમની છેલ્લી રજ પછીજ તેમને નામે તે જાણ્યો છે. છતાં બાણે કાંઈ તે વિશે પોતે બાણનાજ ન હોય તેવી નોંધ તેઓ લખે છે, એ શું એમના ચિત્તની દયાગતક દશાનો પુરાવો નથી ? આ ચાલખાઈને કુટિલતા કેવી કે અદમારી ? લોકોની આંખોમાં ધૂળ નાખવાની ચેષ્ટા કહેવી કે પોતાની પ્રતિષ્ઠાપર પાણી ફેરવવાની બાંધિશા ? ચિત્તગ્રમ કર્તે કે વિપરીત મતિ ગણવી ? હું શું કહું ? વાચકોજ નિર્ણય કરી લેશે. આજ આસેગુહિમાયજ પંડિતોથી સંપ્રદાયને પ્રભુ બચાવે એવો ધ્વનિ સદગજ નિષ્કલે છે.

તંત્રી.

ઓ ! વૈષ્ણવ યુવક !

(ભાઈ ગઢલાલ દેરાવલાલ સોહા બીલખાવાળા.)

૧. કહી સવારમાં ' ન્હા ' ને બદલે પ્રભુનું નામ લીધું છે ?
૨. કહી ગપાટા કે કુચરીને બદલે સત્સંગ કર્યો છે ?
૩. નેવેશેા જેમાં કૃષિમ પુત્તકો વાંચવાને બદલે સ્વમાર્ગીય રસિક ગ્રંથો કહી ઉપાડ્યા છે ?
૪. અમરદાસોની ખુશામત કરવાને બદલે કહી પ્રભુસેવા કે દેશસેવા કરી છે ?
૫. સ્વધર્મની નિંદા કરવાને બદલે માર્ગમાં " શું કહેશું છે અને ધર્મની પ્રશ્નાંકિત શું છે " તે કહી બેઠ્યું છે ?

૬. આપણા દરેક કાર્યનું કેન્દ્ર પ્રભુ થય ગિરી કહી પ્રજ્ઞતિ કરી છે ?
૭. નાટક, સિનેમા જોવાને બદલે પ્રભુના દર્શન કરવા કહિ મંદિરે ગયા છે ?
૮. નાટ્યી ગાયનો ગાયને ગાયને બદલે પ્રભુનાં કીર્તનો કહી ગાયાં છે ?
૯. આપણે જગનની પરીક્ષામ. પાસ થવા વિચાર કરીએ છીએ પણ પ્રભુને આપવાની પરીક્ષામાં પસાદ થવા વિચાર વરીકે કર્યો છે ?

૧૦. રજાવામાં છંદગી માગવાને બદલે ધર્મના સમગ્રો અન કુરિવાને દૂર કરવા પ્રયત્ન કર્યો છે ? અને કહી સ્વમુખે " તોટી પાંડા અધર્મના કુરિવાળો-રે " ગાયું છે ?

૧૧. વધારે અને વધારે પૈસા મેળવવાને બદલે ને પૈસાનો ઉપયોગ ધર્મની ઉન્નતિમાં કર્યો છે ?
૧૨. આપણે પશ્ચિમના રંગમાં રંગાઈને નેકરાઈ અગ્રાની પણ ' ટાઇ ' ને બદલે કહી લિખક કર્યું છે ?

૧૩. દેહને શુશોભિત વસ્ત્રોથી રાજમાનવાને બદલે પ્રભુને કહી રાજમાર્ગી છે ? અને વધા વેદે તથા દેવે નું સૂત્ર કહી યાદ કર્યું છે ?

૧૪. પાખંડી વૈષ્ણવ થવાને બદલે ખરા વૈષ્ણવ થવા છે ?
૧૫. ઉપરના પ્રશ્નો, હે ! વૈષ્ણવ યુવક ! તારા મનને કહિ તે પૂછ્યા છે ?

વળી કલિયુગમાં પ્રભુપ્રાપ્તિનું સમગ્ર સાધન કયું ? આ કાળમાં એટલે સાન્ન્યતઃ કલિયુગમાં પ્રભુનું નામ, ધ્યાન, શરણાગતિ અને દૃઢ આશ્રય તથા વિશ્વાસ (પ્રભુ ઉપર) એ વિદ્યે વગરનાં સમગ્ર સાધનો છે. પરંતુ આ ભવસાગરમાંથી પાર ઉતારવામાં નોકા રૂપ શ્રીકૃષ્ણનું સ્મરણ તે કેવી રીતે કે—

કૃષ્ણો રતાઃ કૃષ્ણામનુસ્મરન્તિ રાગૌ ચ કૃષ્ણં પુનરુચિતા યે ।

તે ભિન્નદેહાઃ પ્રવિશન્તિ કૃષ્ણં હવિર્યથા મંત્રહુતં હુતારૌ ॥

સ્તોત્રકાર્યઃ—શ્રીકૃષ્ણમાં આસક્ત શ્રીકૃષ્ણનું પળે પળે સ્મરણ કરનાર સુતાં પણ શ્રીકૃષ્ણનું જોને સ્મરણ થાય છે તેવો જવાબા ભિન્ન દેહવાળો છતાં જેમ મંત્ર ભણી હોમેણું હવિ (હોમવાનું સાધન) અગ્નિમાં મળી જાય છે તેમ (આસક્ત) પણ શ્રીકૃષ્ણનું જની જઈ-પરા ભક્તિ ગુણી પહેંચે છે. વળી પણ સમગ્ર સાધનનો પ્રયત્ન કર્યો હોય તો જેમ એ હાથ વતી તાળી પડે તેમ ભક્તિમાં અન્ય સત્ પુરોનો સંગ કર્યો પડે છે તો પછી સંત જનોની નિરપેક્ષ દૈન્ય ભાવે (સંયુક્ત) સેવા આદર્શો મદત્ સાધનો છે કે જેથી સહજમાં પાર ઉતરી શકાય છે.

ચિન્તાનો સર્વોશો નાશ થઈ પ્રભુમાં આસક્તિ ક્યારે બંધાય કે—પ્રભુ સર્વસમર્થ છે, સર્વાત્માનો છે એમ ભ્યારે જીવને દૃઢ નિશ્ચય થાય અને પ્રભુ પેતાનીજ ઇચ્છાથી સર્વ કાર્ય કરે છે તથા પ્રભુજ માટે સ્મરણ છે—સ્મરણ છે એમ ભ્યારે જ્ઞાન થાય છે ત્યારે ચિન્તાનો સર્વોશો નાશ થઈ પ્રભુમાં દૃઢ વિશ્વાસ બંધાય છે અને તેથી જીવ નિઃસંશય કૃતાર્થ છે.

ભક્તની અનન્યતાનું સ્વરૂપ શું ?—કે સ્ત્રી ગમે તેવી ડાહી, શુણ્ણવંતી અને ચતુર હોય તદ્દપિ પોતાના ધણીનું શરણ લાગી અન્યનો આશ્રય કરવાથી જ પ્રતિત થઈને વળી પતિને જેમ અગ્રિય ચર્ચ પડે તેજ પ્રમાણે પોતાના હૃદયે દેવનો આશ્રય તરૂને અન્ય દેવ, દેવી, મનુષ્ય જીવ માત્ર જડ ચેતન્ય તથા અચેતન પદાર્થ પર્વત દ્રાહનો પણ આશ્રય તે પ્રભુને અગ્રિય લાગે છે એમ જિલણી સર્વોશો અન્યાશ્રયનો ત્યાગજ થઈ છે. શ્રીકૃષ્ણાશુ કૃષ્ણચંદ્રનું ગીતાગાનમાં કથન છે કે—

શ્રેયાન્ સ્વધર્મો વિગુણઃ પરધર્મસ્ત્વનુષ્ટિતાત્ ॥

સ્વધર્મનિવર્તં કર્મ કુર્વન્નામોતિ કિન્ચિપ્ ॥ (૧૮-૪૭)

સ્તોત્રકાર્યઃ—પોતાનું કર્મ (ભક્તિ) શુણ્ણવી રહિત છે તો પણ ખીનના સારી રીતે આચરેલાં કર્મ કરતાં સારું છે. પોતાના સ્વભાવથી જ કર્મ કરવાનું હોય તે કર્મ કરવાથી દોષ પ્રકારે હાનિ છેજ નહિ.

ટીકા—ખીનએ પોતાના શ્રેષ્ઠ શુણ્ણસ્વભાવને લીધે વિશેષ શુણ્ણવાળો ધર્મ પાળ્યો હોય છતાં પોતાને માટે તો તે પરધર્મરૂપજ હોય છે; માટે તેજા ખીનએએ આચરેલા પરધર્મ કરતાં સ્વધર્મ એવાજ શુણ્ણવાળો હોય તો પણ તેજ પોતાને માટે શ્રેયસ્કર સમજવો કેમકે સ્વભાવનિયત કર્મ કરનારને પાપો લેખી સકતાં નથી; અને ઉપરુક્ત જ્ઞાન જેને છે તે શુણ્ણાતીત કહેવાય છે એવા (શુણ્ણાતીત) તથા એકનિષ્ઠ ભક્તિયોગ વડે પ્રભુપ્રાપ્તિ યચાને યોગ્ય છે.

વળી વૈરાગ્ય અને જ્ઞાનને ભક્તિના પુત્ર તરીકે નારદજીએ કહ્યાં છે તેજ પ્રમાણે જેમ દોષ પુરુષને લક્ષ્મી પ્રાપ્ત થઈ કે તેની સાથે તેના અનુધાપી તરીકે આદેશર, લોભ, કામ, મોહ, માયા, (પ્રકૃતિ) એ સર્વનો પ્રાદુર્ભાવ થાય છે. તેવીજ રીતે ભક્તિ કરવાથી તેની શેષજ જ્ઞાન-વૈરાગ્યનો પ્રાદુર્ભાવ થાય તે વાત શક્ય છે જ. જેમકે અમુક જામ જલું હોય તેના રસતામાં અમુક જામ આવવું હોય તો તે જામ જતા માટે ખીન રસતાની જરૂર પડતી નથી. તેથી ભક્તિ એ એક માર્ગ કહ્યો છે. અનુ-

કદાચ મહાપુરુષોનો સંગ થયા હતાં જીવ કૃતાર્થ કેમ થતો નથી ?—જવના વત્ કિચિત્ સદ્ભાવ્યે કરી મહાન પુરુષોનો સંગ થયો તો પણ પૂર્વના દોષના પ્રભાવે તેમાં અનન્ય નિષ્ઠા બંધાતી નથી અને મનોવૃત્તિઓમાં ફેર પડી જાય છે તેથીજ અકૃતાર્થ રહે છે. બે તેમાં ફેરફાર કરવો પુરુષના પોતાનાજ કર્મો (કામ્યમાં) છે. ઉપરુક્ત પ્રકારની પ્રાપ્તિ સમજ્યે કે વગર સમજ્યે પણ બે મનસા, વાચા, કર્મણ્યે કરી મહાપુરુષોની શરણાગતિ થાય તો કામ્યની સિદ્ધિ નિઃસંશય થાય છે. ક્યું છે કે મહાવિદ્વાનોનો સંગ કરો; અતિદિવસ તેની પાઠુકાનું સેવન કરો. તોજ પ્રભુને મળવાનો સપાટ અને ધોરી રસ્તો દેખાય અને પ્રભુપ્રાપ્તિ થાય. આ (ભક્તિ) પ્રકારે સમગ્ર અરે નિર્ભય સાધનો કલાં.

તમે આત્મિક કર્તવ્યોની સિદ્ધિઓ દૈદિક સંબંધીઓને વિદ્યરૂપ દેખાય છે તેથી તેનો ત્યાગજ ઘટે છે કેવી રીતે કે—તેમનાથી ઉદાસીન રહેવું છતાં પણ વિવ્રકતી પિતા, પુત્ર, માતા, માતા, બંધુ કે મોટા જન હોય તોપણ સર્વથા તેનો ત્યાગજ ઘટે છે. વળી શંકા થશે કે—ભગવાનને વિષે પ્રેમ-ભાવની દૃઢતા-રિચરતા યર્ષ નથી છતાં સાધનોનો અભાવ તથા કર્મ છોડી શકાય કે કેમ ? તો જણાવવાનું કે—શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્મામાં અતિશય માદ રનેદ રિચરતા યર્ષ નથી છતાં સાધનોનો અભાવ એ તો કેવળ દોષરૂપજ બળાય. ભાવની પરિપૂર્ણતાએ કરી સ્વતઃ સાધન છુટી જાય તો ભાવે પણ જાણીશુદ્ધને સાધન છોડવાં નહિ. શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માએ અર્જુનને સ્વપ્નમે કહ્યું છે તે—ગીતાપનિષદની ઉકિત મારે કર્મનો ન્યાં સુધી એની મેળેજ લોપ નથી થતો ત્યાં સુધી તો છોડવાંજ નહિ. બલકે સ્વતઃ છુટે તો કોઈ પ્રકારે હાનિકારક છેજ નહિ એ ગીતાક્રિયા પુરવાર થાય છે મારે સદાસર્વદા પ્રભુમા અનુગમી રહી તેનું સ્મરણ કરના રહી આત્મચિંતનમાં મુગ્ધમ્ભ રહેવું એજ સર્વોત્કૃષ્ટ છે.

કોઇપણ પ્રાણીની હિંસા ન કરવી, કોઈને દુઃખ ન થાય એવું વચન બોલવું, મન અને ધ્વનિયોને નિમગ્ન કરવો. દાન, દમ, દયા, દુઃખીનું રક્ષણ આ સર્વે સામાન્ય ધર્મો આદ્યણથી અત્યંત વધુ સુધીના સર્વના છે.

ઉપરુક્ત ધર્મોનું પાલન કરતાં આપણી પ્રત્ન શિખે અને અન્યને શિખવે એવું પ્રભુ પાસે થાયતો અત્રેજ વિરમીશ.

ચહા !

(લેખક:—ભગવતીદાસ ગોવિન્દદાસ દેસાઇ.)

(નીચેનો સંવાદ અ. સૌ. મુન્દરખાઇ તે શેઠ ગોકુલદાસ મોરારજીનાં ધર્મપત્ની શ્રીમાંગરાલ વૈષ્ણવ મુખોદધતી કન્યાશાળાની બાલાઓએ મેલાવણમાં 'ભજની બતાવ્યો હતો.)

સરસ્વતી—કાં દેવા શું કરે છે ?

દેવાકુંવર—બે ને બેન ! આ પીને પાઠ કરું છું.

સરસ્વતી—બેન હલુ તેં ચાને નથી મૂકી ?

દેવા—બેન ! મેં તો ચાને મૂકી છે પણ મને ચાહે નથી મૂકી.

સરસ્વતી—દેવા ! એવું અવશું શું કામ બોલે છે ? તું તો ચા પીએ છે; અને વળી એમ કહે છે કે “ મેં તો ચાને મૂકી છે. ”

દેવા—બેન સરસ્વતી ! મારો કહેવાનો આશય જરા પણ ખોટો નથી, હું કહું છું તે તદ્દન સાચુંજ કહું છું. સાંભળ !

સરસ્વતી—કહે જોઈએ શું કહે છે ? પણ થોડેથી પતાવજે હો, કારણ કે મને રોકાવાનો વખત નથી; મારાં માતૃશ્રી રાહ જોતા હશે.

રેવા—ભણે. સાંભળ; ત્યારથી આપણી બાઈએ આ પીવાથી પ્રભુસેવામાં આપણું પાક વગેરેમાં ખસેલ થાય છે; વિગેરે તુકાનો સમગ્રવ્યા પછી હું જરા પણ ચાલ પીવાનું મન કરતીજ નથી. પણ સવારે દાતણ કયું એટલે ગજેજ વળગે, માંડ માંડ નાહીએ. સેવા વિગેરે તો પછીજ. ! હું તો મારા મનને મનાવું છું અને સામું પણ જોવા નથી ઈચ્છતી પણ તે દોડતી દોડતી વળગે એમાં હું શું કરું ? હવે તું કહે કે મેં એને નથી મૂકી કે એણે મને નથી મૂકી ?

સરસ્વતી—(પ્રસન્ન થઈ) ખેન ! ખરેખર તેં તે એને તિશાંતિ આપી છે, પણ એ ચીજ એવી છે કે માણસને બહુજ હેરાન કરે છે; આપણી જાતને પણ ખામ, અને રોટલા ન ખાઈએ તેટલા પૈસાની તો મહિને દાડે આ જોઈએ. આ ઝાઝી વાત છે ? હવે તું એમ કર; ખેન !

રેવા—ખેન ! કહો, તમે કહો તેમ કરું.

સરસ્વતી—તું હમેશાં બે ટાણા આ પીએ છે તેને બદલે એકઠાણુંજ પીવાની ટેવ રાખ, એ ટાણા પીધા પિના ન ચાલે તો પંદર (૧૫) દિવસ પોણા પોણા ખાતો પીવો પછી અર્ધો અર્ધો પછી એકજ ટાણું પછી પાંચ પીવો એમ કરીશ તોજ તેનું વ્યસન છૂટશે.

રેવા—જેવી મોટાં ખેનની આગા. હવે તેમજ કરીશ. જય શ્રીકૃષ્ણ.

સરસ્વતી—ખેન ! જય શ્રીકૃષ્ણ.

“ અભ્યર્થના. ”

(લેખક:—શા. ઘનરયામલાલ મણિલાલ, પેટલાદ.)

જન્મવનની શોભિત વનકુંજોમાં—
કીર્તિ તારાં મીઠાં બંસીધવનિઓ—
વિલીન થયા છે આજ અહિંયાથી—પ્રભો !

હુરે છે હૃદય આજ વિરહથી તો—
વર્ષાવજે એ નાદશબ્દ હૃદયાકાશમાં,
એ અભ્યર્થના છે.

× × × ×
શાવનના હુરે હુરંતી મજસુવતિઓને—
આકર્ષિં મમુનાજીના મુંદર તટ ઉપર—
પાન કરાવ્યું મીઠાં વેણુનાદનું— પ્રભો !

× × × ×
આકર્ષજે આજ ભારત યુવતિઓને—
ભણાવી “ પ્રેમલક્ષિતના ” મુંદર પાસે—
એ અભ્યર્થના છે.

× × × ×
સરદાર સદસ ધારે ચંદ્રિકા વર્ષાવે—
કોકિલા ગગનભેદી ટહુકારાથી વનકુંજને ગજવે
તેમ ગજવજે—વર્ષાવજે. પ્રભો !

× × × ×
આ ભારતને તારાં મીઠાં મુરસી નાદાથી.
એ અભ્યર્થના છે.

× × × ×
ચંદ્ર મુધાકિરણથી વનકુંજને નવગાવે—
તેમ પ્રેમામૃતથી નવરાવજે—
આ યુવકને. પ્રભો

× × × ×
એ પ્રેમામૃતથી નદાએક ઉગતી પ્રેમની આરાઓને—
પૂર્ણ વિકસાવજે આ યુવકની.
એ અભ્યર્થના છે.

ચર્ચાપત્ર.

તંત્રી-શુદ્ધાદેવ—સચિવ દખાનું ને એક અસિકર્મા પ્રાસંગિક નેમમાં કનઠાભિષેકની વચ્ચે બાબત મ્હારી પાસે તંત્રીએ ખુલાસો માગેલો, મેં તે ખુલાસાના પ્રત્યુત્તરમાં એક ચર્ચાપત્ર મોકલ્યું હો. તે “નેન કેન પ્રકરેન મ્હારી ઉપર દોષાદોષપણ કરીને દેવપણ ચર્ચામાં ઊપવાની બંધ કરી છે, અતઃ તે ચર્ચાપત્રને રચાન નથી. એ મેં હજી ચર્ચાપત્ર લીધું નહિ. “મદરસ-રસાદય” નું ચર્ચાપત્ર ને તંત્રીનો વિરોધ દર્શાવનાર છે, તે મટે ખાસ રા. પેળા કાઢ્યો. પેલ કરીને ઊપવા બદલ તંત્રીને ધન્યવાદ થઈ છે. કારણ કે “નિઃશંકોત્તરે નવાળ અપવાની કે તે મટે કાઢ્યો કાળા કાવાની જરૂર નથી” એમ લખનાર તંત્રી તે ચર્ચાપત્ર ઊપી, અને કાથી ઊઠાવીને યુગ્મસાતમાં તેડાવનાર મિત્રના “શુદ્ધાદેવ” પ્રત્યેના રામદેવને હાથે મ્હારા ચર્ચાપત્રને રચાન આપે નહીં તે તો હીવા નેથી જાત છે. મ્હારો ખુલાસો (ચર્ચાપત્ર) તંત્રીએ ઊપેલ નહિ દેવાથી મુપ્રસિદ્ધ “શુદ્ધાદેવ” માં ઊપવા સામઢ વિરોધિ કરે છું.

મ્હારો ખુલાસો—અપના પુષ્ટિપીય અસિક વર્ ૨ નના અંક ૧-૨ માં પાને ૧૮ માં પ્રાસંગિક નેમ વરૂં મ્હારે ધ્યાન ખેંચાયું. તંત્રીજી પેલાની વિદ્વાતાની સ્વભામાં ખુશી રીતે મ્હારી ઉપર પુષ્ટિપીયને ઉવારી પાડવાનો આક્રમ કરે છે, તે ખોટો છે. ખેડ સાથે લખું છું કે અમદાવાદમાં આવી સભા મળી નથી છતાં અમદાવાદની સભા દોષી ખેસાદની એ પ્રશ્નર પંડિતની લુહિની બંધીદારી છે. તે સભા ક્યાં મળી છે, તે “શુદ્ધાદેવ” માં ઉલ્લેખીત બનીતો તેમજી ચરમા ચલાવીને લેવું રહ્યું. અને તે કાચો પણ સાથેસાથ જોઈ વાંચી વિચારીને સમન્યા દને તો ઉપરનો આક્રમ મ્હારી ઉપર દોષી ખેસાદવા પ્રચલ કરત નહિ. હજી પણ તંત્રી મદરસ મચળ ઉપર સમતોલપણ જાણીને જોયો તો જરૂર સ્વયં વરડવું બાન થયો. કાચ બીજે તો છુટાનું કારણ એ હતું કે સંપ્રદાય બદલના વરંધી સંપ્રદાય ઉપર આક્રમણ થાય એમ કે હમણા કનઠાભિષેક ઉપરના આક્રમણ વખતે શુદ્ધાદેવના વંત્રીજી થતા હુમલાઓ સામે લઈને સંપ્રદાયની ને સેવા બળવે છે તે બાદ અભિનંદન અર્પેલ મુકે અને પુ. પી. નું ધ્યાન ખેંચવા મટે કાચ ઉપર મેં વિચેષન કરું પણ પુ. પી. ને ઉવારી પાડવા મટે તો નહીં, તે ધ્યાનમાં રાખ્યો. અને પુ. પી. માં કનઠાભિષેકનો ઉલ્લેખ કર્યો નહિ એટલે તે ચર્ચામાં પુ. પી. નું ધ્યાન ખેંચી “શુદ્ધાદેવ”ને અભિનંદન આપું પણ કીપુત તંત્રીજીને “શુદ્ધાદેવ” પ્રત્યેના રામદેવને હાથે મ્હારી ઉપર પુ. પી. ને ઉવારી પાડવાનો આક્રમ છુટા નેકાર થવા છે. તેમાં પુ. પી. ને ઉવારી પાડવાનો પ્રયાસ નથી. રા. રા. હાલુતાર્થ પાસે વધાસ કરી તો તે ઊપાધેશ લેખની નકલો ફરેક વર્તમાનપત્રને મોકલાવેલ છે, તેમાં તંત્રી ઉપર પણ મોકલાવેલ છે, અને તે રા. રા. હાલુતાર્થ સાથે અંતર દેખાવવાને હાથે તે લેખ અપર તો રીંગુ લીધો નથી. “નવવચ મદન દહાર” શ્રીમદ્દેશ્વાચલના સિદ્ધાન્તોને નિરૂપણે ચર્ચાવાને બેકાર કરું પણ આ બૈત્તિદાસિક ચર્ચામાં બાન લે નહિ અને મોતાવલંબન રોવે એટલે મુંડી શ્રીમદ્દાપ્રજ્ઞાના પ્રસિદ્ધાન્તો ઉપર કઈ બોધા ઈતિદાસજી લેખો આક્રમણ કરે અને ઉપયુક્ત એકશર કરત અસિકના તંત્રીજી ચરમા ચલાવીને લેવા કરે! મુંડી આ સિદ્ધાન્તની ચર્ચા નથી! ફરેક વર્તમાનપત્રે તેમજ પ્રસિદ્ધ ઈતિદાસજી સાક્ષરોએ સાચા ઉચ્ચ અભિપ્રાયો આપ્યા કે “કનઠાભિષેક બૈત્તિદાસિક છે. સંપ્રદાયના વિરોધો અને સામુદાય અભ્યારે બૈત્તિદાસિક સમીક્ષા કરે છે. શ્રીમદ્દેશ્વાચી વિદ્યાવિગ્રામ વરંધી રા. રા. સાક્ષીજી નવાઈકરનાઈએ મદરસમાં કનઠાભિષેકની બૈત્તિદાસિક શોધખોળ કરીને મળતુવ પુણ્ય મેળવ્યા તે અસિકમાં પ્રસિદ્ધ કરવાના છે. અને વિદ્યાવિગ્રામ વરંધી સંપ્રદાય ઉપર અહતુવ પ્રકાશ પાડવા એ “સંપ્રદાયપ્રસિદ્ધ” નામના મદન મંચમાં એ બૈત્તિદાસિક સ્વયં ધરના આવેખાયો. ત્યારે આ વિદ્વાન તંત્રીજી સંપ્રદાયિક સાદિત્ય પ્રકાશ કરવામાં પેલાનો સામેા ધનવ્યય કરનારા પ્રશ્નર પંડિત મોતાવલંબન રોવે એ મુંડી સંપ્રદાયની સાદિત્યસેવા કહેવાય! મુંડી-પિનીલના મુદ્દામાં સારી રામની માદ થયેલી. જ્યારે શીખત મટે દીકરીનું કપો અને સંપ્રદાયના નિરૂપણને નિરૂપિત સાક્ષીજી વસંતરામનાઈએ દીક્ષાજી ઘડયો ત્યારે પુષ્ટિપીયના વિદ્વાન તંત્રીજી તેમજ નવાળ નહિ આપતાં કંડાનાર થયા. એ બધી બીતાબે માત્રી નજર સમજાવરવર્તી અને નિરૂપણી “શુદ્ધાદેવ”

ઉપરુક્ત ચર્ચા ચલાવી ઐતિહાસિક ક્ષેત્રમાં હુકમનું તે બદલ કરાવ બીજા અભિનંદન અર્થે ન મુકેલો. સિદ્ધાન્તની ચર્ચાનો ઉદ્દેશો પણ ન કરવામાં આવે તો અવશ્ય પ્રેટરેટ ઉઠાવી રાખય પણ સાંપ્રદાયિક (સાહિત્ય) માસિકને ઉતારી પાડવાનો પ્રયાસ હું ન કરી શકું. મારે સમજે નથી કે જોથી હું પુ. પી. ને ઉતારી પાડવા પ્રયાસ કરું ! હું આપને સવિનય જણાવીશ કે સિદ્ધાન્તની ચર્ચા સાંપ્રદાયિક માસિક નહિ કરે ત્યારે કોણ કરશે ? અને તેની ઐતિહાસિક ચર્ચા વગરનું અલ્પ સાહિત્ય (માસિક) આજના યુવક સમાજને નીન્દસ છે. અર્થાત અચિત્ર નથી. આ ઉપરિચિત થયેલી ચર્ચાએ સંપ્રદાયના મુખમાં કુદારાધાત કર્યા છે. તેથી યુવક હૃદયો ખગમળા ઉડ્યાં છે. હૃદયો વિદીછું બન્યા છે, તેમાં સાંપ્રદાયિક માસિકના તંત્રીના મીનાવણબનથી સખત આધાત થયો, અને તે આધાતનો પડયો તે કરાવ ઉપરની માત્ર ચર્ચા છે. બેતાલીશ રીમ જેટલા કાગળોનું સાહિત્ય લખવાનો ફક્ત રાખનારા શા માટે કનકાલિયેકની ઐતિહાસિક ચર્ચા માટે છ છ માસના વહાણી વાયા છતાં એક શબ્દ પણ લખતા નથી તેનું કારણ જણાવશો. સમજે છે. હોશને વાંચશો તો વરતરિપતિ સમજશે. લી. આપનો અમૃતલાલ હરજીવનદાસ પારેખ.

સાંપ્રદાયિક પ્રવૃત્તિ.

વિપયાક્રાન્તેદેહાનાં નાવેશઃ સર્વથા હરેઃ ।

તસ્માત્સર્વાત્માના નિત્યં શ્રીકૃષ્ણઃ શરણં મમ । વદન્નિરેવં સતતં સ્થેયમિત્યેવ મે મતિઃ ॥

શ્રીઅષ્ટાક્ષરજપયજ્ઞસમારંભ,

હે નાથ ! હું નથી કંઈ કંઈ પુણ્ય કર્યો, કીધો અનેક અતિપાપ ભર્યાલ કાયો, હું કુટ, પાપી, અપરાધી, પતિત પ્રાણી, ત્હોરોજ હું તકપિ કેશવ ! હે સુરારી ! !

શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય યુવક પરિવંદે આ આતુર્માંસમાં શ્રીગોવર્ધનધરણુ શ્રીનાથજીની કૃપાથી શ્રીઅષ્ટાક્ષર જપયજ્ઞનો સમારંભ કરવાનો નિશ્ચય કર્યો છે. કલિયુગમાં આધિભૌતિક, આધ્યાત્મિક અને આધિરેલિક કલેશોથી મુક્તિ મેળવવાનું એકનું એક સાધન જપયજ્ઞ છે. પુષ્ટિમાર્ગનું તો એ ખાસ સાધન છે. મહાનુભાવ આચાર્યવર્ય શ્રીમદ્ હરિરાયચરણ આજ્ઞા કરે છે કે 'જપયજ્ઞનામોચ્ચાર વિનાના એક નિમિષ નાથ તો આમુશવેશ થાય' પુષ્ટિમાર્ગનો આવિર્ભાવ નિઃસાધન જીવને તારવા માટે છે. જપયજ્ઞ સરવર્માં સરક અને કથાય સાધનની હેરા પણ અપેક્ષા વિના જીવમાનથી સાધી શકાય એવો છે છતાં એનું ફળ ઉત્તમોત્તમ છે. આજના કાણ કાળમાં ત્રિતાપને હરનાર નિઃસાધનોને માટે એક સાધન પ્રભુ-રમણ છે એમ વિચારી 'સર્વધર્મોન્વરતિયજ્ય મોમકં શરણં મમ' એ જગદગ્નાનુસાર શ્રીમદ્વાચાંજ મહાપ્રભુએ પુષ્ટિજીવોપર અનુમદ કરી "શ્રીકૃષ્ણઃ શરણં મમ" (શ્રીકૃષ્ણઃ શરણં મમ) જેવા ઉત્તમોત્તમ આજ્ઞાકર મહામંત્રનો ભૂતલપર પ્રાદુર્ભાવ કર્યો. એ સરવ છતાં અત્યંતિક મંત્રના પ્રેમપૂર્વક કીધેલા સતત જપથી જીવ ત્રિવિધતાપથી નિમેષપ્રમાણાં મુક્ત થાય છે એ નિશ્ચિત વાત છે. આ કારણથી આ આતુર્માંસમાં મુંબઈની શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય યુવક પરિવંદે આરંભેલા આ જપયજ્ઞમાં આજીવજીવ સર્વ પ્રેમપૂર્વક પોતાનો કળેલો આપે એ વાંચનીય હોવાથી એ માટેના નિયમો નીચે મુજબ સાદર રજૂ કરવાની રત્ન લઈએ છીએ.

૧. આતુર્માંસ (આપાદી પુષ્ટિમા ને ચક્રવાર તા. ૭-૭-૩૩ થી કાર્તિકી પુષ્ટિમા ને ચક્રવાર તા. ૨-૧૧-૩૩) દરમિયાન પ્રતિદિન શુદ્ધ ઉચ્ચારપૂર્વક અત્યંત પ્રેમથી યથાશક્તિ યથાભાવ 'શ્રીકૃષ્ણઃ શરણં મમ' નો જપ માળા ફેરવતાં યા આનંદસિંક રીતે કરવો. જપની સંખ્યા ઓછી થાય તેની ચિંતા નહિ પણ એ મન, વાણી અને ક્રિયાએ સંયમ અને શુદ્ધ ચિત્તાથી પ્રેમપૂર્વક યાવ એની ખાસ કાળજી રાખવી.
૨. આપના આસજનને પણ એ સદેશો પર્દેદીથી તેમને પણ જપયજ્ઞનો આરંભ કરવા પ્રેરો, આપનાથી એક પણ મનુષ્યને આ શ્રમકાર્યમાં પ્રેમપૂર્વક થોડા યશસ્વ તો બનજીને કે આપના જપ સફળ છે. ૩. જપની સંખ્યા અમને લખી મોકલવાની જરૂર નથી પણ નિયમ એકમાં જણાવ્યા મુજબ જપ કરવાનો અને જીમ્બોને એમાં પ્રેરવાનો આપે નિશ્ચય કર્યો છે એટલું પત્રદ્વારા અમને નીચેને સરનામે જણાવવા કૃપા કરશો તો બસ થશે. આ કામ મુશીબતનું નથી એ સદેને સમજી રાખાય છે. પશ્ચિમી 'કુરુચંદ્ર

નથી' એમ બ્રહ્મનું કહે છે પણ નયપદ્ધતિમાં એ બ્રહ્મનું ચાલે તેમ નથી. અમે ત્યાં ચાલતાં, પ્રેસતાં, હાતાં, સુતાં અમે તેવી રિયલિટીમાં પણ પ્રેમપૂર્વક એક મિત્રદેવી માંડીને ચોવીસ કલાક પર્યન્ત આ યજ્ઞ વાદ્ય રાખી રાખી છેજ એમાં કોઈ દલીલની જરૂર નથી. પુષ્ટિમંત અનમિત્ત જેવો પાપી 'નારાયણ' ના ભક્ત્યારથી તરી ગયો તો સમજપૂર્વક પ્રેમથી જીવેલા જીવનો મહિમા કયાંય વધી નય. અગ્રહારી આ પ્રેમપૂર્વક કૌંશિકી વિગ્રહિને આપ સાથે આપણો કે ?

નિવેદન—ગિરિધરલાલ જગજીવનદાસ શાહ અને દ્વારકાદાસ જેઠાભાઈ દાણી.

માનવ મંત્રીએ—શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય યુવક પરિવહ.

તા. ૬.—(૧) સૂચના કે પત્રવ્યવહાર નીચેને સરનામે કરવો 'શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય યુવક પરિવહ' કાયદિય ઠે. શ્રીલાલબાવાનું મંદિર બુલેથર મુંબઈ નં. ૨.

ગોવધ સામે વિરોધ—મુંબાઈની શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય યુવક પરિવહ તરફથી એક ખાસ સભા સોમવાર તા. ૧૦-૭-૩૩ ના દિને પૂ. પા. ગો. શ્રી ૬ શ્રીદ્વારકેરાલાલજી વિ. મહારાજ (કચ્છ માંડવીવાલા) ની અધ્યક્ષતા નીચે નં. ૪૨ ૪૩ ફેબ્રુઆરી ૨૪૨૮માં મળેલેલા દરબાર રીજ સાહેબે પોતાના રાજ્યમાં ગોવધની છૂટ કરી તેનો વિરોધ તથા આવરણક ઠરાવ કરવા મળી હતી. તે સમયે સંરચના સુખાસહો ઉપરાંત ચોરક્ષાપ્રેમી સમજીવોની હાલની સમારચના ચીકાર બરાઈ ગયું હતું. નિયત સમયે સંરચના મંત્રી ગિરિધરલાલ જ. શાહે પ્રારંભિક ઉપક્રમ કરી સભા પતિશી તથા અન્ય ગો. ભાવકોને પુષ્પમાળા ધરાવ્યા બાદ ગો. શ્રીજીનાથલાલ શ્રી. વિ. જ. શાહ મી. એમ. બી. મેડેલા અને પૂજ્ય સમાપતિ મહોદય પ્રમુતિના ચોરક્ષા ગોપાલનની આવરણકતા પરત્વે પ્રારંભિક વ્યાખ્યાનને ઉપરાંત નીચેની દરખાસ્તે શ્રીપુષ્ટિ ગિરિધરલાલ જગજીવનદાસ શાહે વચ્ચે કરી હતી. "રચનાય 'શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય યુવક પરિવહ' ની આજની આ સભા ઠરાવ કરે છે કે મંત્રિશોભના દરબાર નામદાર રીજ સાહેબે પોતાના રાજ્યમાં ગોવધ કરવાની છૂટ આપી છે તે હિન્દુ-વૈષ્ણવોની લાગણીને સખ્ત આધાર પહોંચાડનાર હોવાથી તેને માટે સખ્ત વિરોધ નહોતર કરે છે અને તે કાયદો સહીને માટે રહ કરવા ખાસ આમ્રક કરે છે અને આ ઠરાવ પાઠે રચણે પ્રોહવા આ સભા સમાપતિશીને વિનંતિ કરે છે. ઉપર્યુક્ત દરખાસ્તને શ્રીપુષ્ટ મયુરાદાસ ગોવિંદજી કોહીને ટેકો મળતાં મળકુર ઠરાવ સર્વાનુમતે પસાર થયા બાદ શ્રીપુષ્ટ દ્વારકાદાસ જેઠાભાઈ દાણીએ સમાપતિશી ગો. શ્રીજીનાથલાલજી તથા ચોરક્ષા પ્રેમી સમાસહોએ સંરચા તરફથી આભાર મંજૂર થઈ સમાપ્ત. કામચાલ પુર્ણ થતાં (રજા. ઠા.) દસ કલાકે શ્રીગોવર્ધનનાથજીના નયપોષ વચ્ચે શ્રી વિજાયાયા હતા.

વેશરાશ્ટ્રીને જવાબ—મુંબઈ વૈષ્ણવ બંધુઓ અગોએ વેશાળ અંકમાં જે ગોકળી પ્રદારણા લખી છે તેને અસલ ઠરાવી પોતાની પ્રામાણિકતા સાબીત કરવા નીકળેલા બર્ડ ફ્રાંમસીવાળા વજ્રમદાસજીની કેટલીક ધૂલતા છે તે અત્ર રચણકાંચને લીધે અફરવડઃ આપી રાખેતા નથી પરંતુ રા. શાસ્ત્રીજી વસંતરામભાઈને ઈશ્વરને વચ્ચે રાખી સર્વે સલ્લ હકીકત જણાવી દીધી છે. એમના પુરાવા ૩૫ બધા પત્રો અમારી પાસે મોલુદ છે તેમજ પ્રથમના પત્રમાં ચાર હજન લેનારને કમીયન લખેલ પરંતુ અગોએ એક હજનમાં મામલો કરી તે તેમજ કણુલ કરી લખે છે કે તમારા લખવા મુજબ ફોટા મોહકું છું. આ પ્રમાણે તેમજ બે કણુલ કર્યું-હેય તો અગોએ માલુદ તથા વધારે લીધેલાં નાલુની મામલો કરી લારે "તમારા લખવા મુજબ અમલ થયે. મારી ગેરદાલનીમાં ઠમોને અન્યાય થયો છે" વગેરે ચા માટે લખે ૧ વળી તા. ૧૩-૬-૩૩ ના પત્રથી "તમારા ગેવસ આના લાંબા ગોવર્ધનદાસ જવાનમાઈ પાસેથી લઈ લેશો તેમની પાસે અમારા પુસ્તકોના લેણા છે" આમ અમલો લેણા નથી તો ચા માટે લખે છે ૧ ખર. એ પણ હીક આપણે કમીયનની વાત બાલુ પર મુખી એમની નહોતરાવ મુજબ હીયાળ વપાસીએ. તેમજ કવાટર સાઈક પુર્કા પર ચોટરેલા ફોટા પાંચ અને વૈષ્ણવોને ઘેર બેઠાં આપવાનું નહોતર કરેલું તે તો પ્રિય વાંકોને યાદીમાં હતી. એ હીસાબે ૧૧ ફોટાના પંચાવન આના થાય ન્યારે અગોને પુર્કા વિનાનાં માત્ર અગીયાર વેષરોનું રૂ. ૪) નું વી. પી. કર્યું તે અન્યાય ખરો કે નહીં ? આટલું છતાં ચોર કોટવાલને રૂ.૩ એ ન્યાયે અમારું પર ને વિરોધણા લગાડ્યાં છે તે પ્રમુ કહી સંખરો નહિ. પ્રમુ સલ્લને બેઠી છે આ કાવ' માટે અંમત નથી તેમજ બે ઘઠો પહોંચાડ્યા છે તે આ ધાર્મિક સંરચાને જ પહોંચિલ છે. આવા તેમના અન્યાયમર્થા વલણને માટે પ્રમુ તેમને સદસુખિ આપો.

લી. શ્રીશ્રી પ્રાનજી તાગજીના શ્રીરમરણ-વ્યવસ્થાપક ભગવદ્ભંડળી-ધોરાજી-

ઉમેરવામાં આનંદ.

પૂજ્યપાદ ચતુર્થપંચમખીંદીશ્વર ગોસ્વામી ૧૦૮ શ્રી વલ્લભાચાર્યજી મદારાજ નવેમ્બર ૧૩ ના રોજ નવસારીથી નડિયાદ યથા મોટર દ્વારા ઉમેરેલ પધાર્યા. વૈષ્ણવ સૃષ્ટિમાં આનંદ ઉભયે ઉભયો. હંમેશાં રાત્રિના સભા થતી. શાસ્ત્રીજી વસંતરામભાઈ સંપ્રદાયિક વિષયો ઉપર વ્યાખ્યાન આપતા હતા. પેટલાદથી જન્મ દિન ઉત્સવનો લાભ લેવા શાસ્ત્રીજી ન્યેણરામભાઈ તેમજ રમણ શાસ્ત્રી આવી પહોંચ્યા. ચર્યાચારમાં બ્રહ્મ સંબંધ, પુષ્ટિમાર્ગ, સેવા વિગેરે જુદા જુદા વિષયો ઉપર વ્યાખ્યાનો થયા. શાસ્ત્રીજી ન્યેણરામભાઈ તેમજ રમણ શાસ્ત્રી પણ પ્રસંગોપાત્ત વ્યાખ્યાન આપતા. પૂજ્યપાદ ગોસ્વામી ૧૦૮ શ્રીવલ્લભાચાર્યજી મદારાજશ્રી પણ પ્રસંગોપાત્ત વચનસુધાનું પાન કરાવતા. આર પંચ વ્યાખ્યાન પૂછીથી જનતા વધવાથી મોટા મંદિરના નીચેના ભોજનમાં સભા થતી. આપાદ શુકલ ૩ ના રોજ આપશ્રીને જન્મદિન હોવાથી સુંદર વૈધારીએ યવા લાગી. આજનું પ્રભાત વૈષ્ણવ સૃષ્ટિને 'આનંદસાગર ઉલટ્યો રે લોહ' આ કડીને સાહોત્કાર કરાવેલું હતું. સહેરનજ જુદા જુદા લોકોએ વન પતાકા અને તોરણો દ્વારા શણગારાયા. આર વાગતાં શ્રીમાકંડેય પૂજન તથા કેસરનાન થઈ ગયા. અંબુપતિની વાણમાં પેટલાદ, કપડવણજ, વાકાસીનેર, જોડ, હાણવાડા વિગેરે ગામોના ૫૦૦ વૈષ્ણવોએ મહાપ્રસાદ લીધો. બપોરના બે વાગતાં ઉમેરેલી બજનમંડળીના સભ્યો આવી પહોંચ્યા. આર વાગ્યા સુધી બજન થૂન મચી રહી બીજ બાલુ વરણોડાની તૈયારી થઈ ગઈ હતી. ચર્યાચારમાં ડાકોરથી મંગલેશ ડંકા નિશાન રાખ્યાં બાદ બેન્ડ તેમજ દેશી વાજન ગોઠવાયાં ઉમરેડેડની બંને બજનમંડળીઓ બજન થૂન સાથે હથિયાર બંધ ચાલવા લાગી. મોટા પ્રમાણમાં પુરુષ વર્ગ ગોઠવાયો. પોલીસ અને ડેન્સાદી આગેવાનોના કોર્ટન વચ્ચે મદારાજશ્રી નવનાદપૂર્વક મોટરમાં બિરાજ્યા હુલહાર આપ્યા બાદ સરવસની ચર્યાચાર થઈ. પાછળ ૫૦૦ ની સંખ્યામાં સ્ત્રીવર્ગ કલ્પ અને યાગ લઈ ધોળ પદ ગાતાં ગાતાં ચાલતા હતા. મોટા મંદિરથી ગાંધી રોડીમાં થઈ સરવસ તડાં બજનમાં આવી પહોંચતાં ડેક ટેમણે આપશ્રીને હુલહાર થવા લાગ્યા. નવનાદથી સડક ચાલવા લાગી. બુંડેડાના આવાજ સાથે પંચવદી રમ્યે આવી પહોંચ્યા. ફર્યાનાતુર જનતાની વધુ કંડ નમેલી હોવાથી થોડો વખત રોકાયા બાદ લાટપીપથી તરફ પ્રમથલુ કહ્યું. બાદલોની સંખ્યા ફર્યાનાઈ અડી જમી હતી. ત્યાંથી બેડ બજનનજ શણમરિયા નવીન ફર્યાબમાં પ્રવેશ કર્યો પુષ્પવટિથી મોટર શણગારાઈ ન્યધ્વનિ પૂર્વક જણુ ધોળના રરેતે આવી પહોંચતાં વ્યવસ્થાબંધ લાઈટ ગોઠવાઈ ગઈ. પુનઃ પંચવદી આવતાં બજન મંડળી તરફથી બે સુન્દર પરીઓ શણગારાયલી મોટર આગળ ગોઠવવામાં આવી. કોર્ટના રરેતે કંસારાવાડમાં થઈ સરવસ રા કલાકે પાણું આવી પહોંચ્યા બાદ બજનમંડળીના ઉત્સાહી છઠીદોરે અને કીમતી છત્ર ધારણ કરેલા માણસો સાથે નવનાદપૂર્વક સરવસ વિખરાયું. જનસંખ્યા ૧૨૦૦ લગભગ હતી. શ્રીગોવિન્દ મદાપ્રભુજીને ઉત્સવ પણ ઉત્સાહપૂર્વક ઉજવાયો. કીર્તન સમાજે કયા. રાત્રિના બજનમંડળ તરફથી બીજ વખત મંદિરમાં થૂન ચર થઈ વચ્ચે સવા કલાક સુધી શાસ્ત્રીજી વસંતરામભાઈએ ન્યધ્વની નાવકનો ઇતિહાસ 'નવજનત સામ' નામક પુસ્તક દ્વારા ભેરદાર ભાષામાં વર્ણિત સંજગાઓ. પુનઃ બજન થૂન ૧૨૩૦ સુધી રહી. અડધે કલાક પૂજ્યપાદ આચાર્યશ્રીએ બજનમંડળને સુંદર બોધપ્રદ વ્યાખ્યાન આપી પોતાનો સતીષ જનુંદર કર્યો. રાત્રિના ૧ વાગ્યા બાદ ન્યધ્વનિ પૂર્વક સભા વિસર્જન થઈ. આપાદ સુદ ૬ ને પાટોત્સવ પણ અદી જ થયો. આપાદ શુકલ ૧૧ ના રોજ ઉમેરેલી આપશ્રી મોટર દ્વારા શણીયા ગામમાં પધાર્યા ત્યાં આનંદ જડ કલમ શું આલેખી રાકે! આમના મુખી તેમજ અમૃતલાલરાઈ વિગેરે આગેવાનોએ ૫૦ માણસો દેશી રરેતોએ દુરરેત કરાવ્યા હતા. શુદ્ધ હવા પાણી, નિષ્કામ પ્રેમ, અહિં સરળ ગ્રામ્ય ભાષા, નાના પણ રવચ્ચ અને શણગારાયલ મંજાનમાં નિવાસ વિગેરેએ સારી અસર કરી. સંજ્ઞાના ૫ વાગે પધરામણીમાં આપશ્રી પધાર્યા ત્યાંથી પાછા ફરતાં જનતા સરવસના ૩૫માં ગોઠવાઈ દેશી વાજન, બજનમંડળ, પુરુષવર્ગ, કમરા: ગોઠવાયા. આપશ્રી પગે ચાલતાજ પધાર્યા. પાછળ બંને કલ્પ યાગ સાથે બજન ગાતાં ગાતાં ચાલતાં હતાં. મુજમ પર પધારતાં સરવસ વિખરાયું. સંજ્ઞાના મહી નદીએ પધાર્યા. ત્યાં અનેરો આનંદ આંચો. રાત્રિના સભા થઈ. રમણલાલ ન્યેણરામ શાસ્ત્રીએ 'ભક્તિ' કૃત્ય વિષય ક્ષણ સંપ્રદાયિક વિષયોને સમાવતું સુંદર વ્યાખ્યાન કર્યું. બાદ આપશ્રીએ અડધા કલાક સુધી સુજરાતીમાં સુંદર 'ભક્તિ અને આપાર

વિદ્યાર' વિગેરે વિષયોને સમાવર્ત્ત પ્રવચન કરી ઉપદેશ આપે. જ્યનનાં પૂર્વક ૧૧ વાગે સમા વિજ્ઞાન યથા નેત્રવારના આપશ્રી નદીએ પધાર્યા અને સાંજ થીની સેવા, સંન્યાસવંદનાદિ કરી બ્રહ્મસંબંધ પણ નદીએ આપ્યાં. લોકોના આમંદથી ચાર વાગ્યા સુધી બિરાજી આનંદ આપે. મોટરમાં બિરાજી વખતે પણ બહેનોને દયાશમભાઈનાં પદ ગાવા તથા પુરુષવર્ત્તને મંદિર બતાવે તે સમયે નાનું પુરતકાલય બોલવા શુભરાત્રી વાપામાં ઉપદેશસુધાનું પાન કરાવ્યું. સહીયાથી સુન્દરપુર પધારતાં રસ્તામાં કોઠ અને દુધાપુરા ગામમાં પધાર્યાં. કોઠમાં મનસુખલાલભાઈની આગેવાની સાથે એક માઇલ દૂર લોકો આવ્યા હતા. અંદુકનાં આવજા અને સજન ધૂન સાથે કોઠમાં અડધો કલાક બિરાજી. ત્યાંના દેશી વાજન સુંદર હતી. દુધાપુરા ત્રિશુવનભાઈને ત્યાં પધારી ત્યાંથી સુંદરપુર પધાર્યાં. ગામ લોકો એક માઇલ દૂર રેલામાં આવ્યા હતા. દેશી વાજન, સજન મંદળ, કીર્તન સમાજ કમથા: ગોઠવાયાં. છઠ્ઠાદાર મોટર આગળ ગઈયા. પુરુષવર્ત્ત પણ ઠીક પ્રમાણમાં આવતો હતો. પાછળ બહેનો કલશ સાથે ચીત ભાર્તા ભાર્તા આવતાં હતાં. સાત વાગે લેકડાએ આવી પહોંચ્યા. રાત્રિના સમા થઈ. રમણલાલ જ્યેષ્ઠાસંભ સાંજીએ સેવા અને શ્રીસર્વોત્તમ 'સ્તોત્ર' ઉપર વિરુદ્ધ વ્યાખ્યાન કર્યું. પૂન્યપાદ મદ્દારાજશ્રીએ પણ અડધો કલાક સુધી સુધી વચનસુધાનું પાન કરાવી ૧૧ વાગે સમા વિજ્ઞાન યથા. આપાદ કુખલ ૧૩ ના રોજ ચોડ તરફ ફર્ય કરી. રસ્તામાં બસેડા ગામમાંથી જનતા બાગોળે દર્શનપૂર્વે આવી હતી. તેમને દર્શન દઈ આનંદ આપ્યો. ચોડ ગામ કલાક બિરાજી ચેટલાદ પધાર્યાં. મામંભાના વેમ્બુઓને એક કલાક લામ આપે. ફાતાર ચોડ રમણલાલ કેશવલાલના બંન્ને ત્રણ દિવસ બિરાજ્યા. લાલગાવા શ્રીગોવિન્દરાયજી પણ શ્રીઅંબ ઠીક નહિ હોવાથી અહીં બિરજો છે. ચાંચા, મહેલાવ, બાંધપૂરી વિગેરે ગામોને પણ કેમ બિરાજાય? આપાદ કુખલ ૧ રાત્રિવારના રોજ સાંજના પાંચ વાગે ચેટલાદથી ફર્ય કરી. ચાંચ, મહેલાવ, બાંધપૂરી ત્રણ ગામોના આનંદ પણ અવળુંનીવળ છે. મહેલાવના આગેવાન જોડાલાલભાઈ સચેજ દત્તા. સજન મંદળ અને વાજન ત્રણ ગામમાં રેલામાં આવ્યા હતા. મંદિરે લેકડ તૈયાર કરી હતી. ત્રણ ગામને આનંદનું દાન કરી આપશ્રી નવ વાગે નડિયાદ શ્રીયુત નાનાસાહેબ દેશાઈને ત્યાં પધાર્યાં. અડધો કલાક બિરાજી ત્યાંથી ચોડ તરફ પધાર્યાં. રસ્તામાં હાંબડા ગામને બીજી વખતે દર્શન આપી રાત્રિના ૧૦ વાગે ચોડ પધાર્યાં. આપાદ કુખલ ૨ રવિવારે રાત્રિના સમા થઈ. રશ્મ્યાવર્ત્ત રમણલાલ જ્યેષ્ઠાસંભ સાંજીએ 'નવવિધ ભક્તિ' પ્રમાણ અને દર્શનથી સમજાવી બાદ સાંજીજી વસંતરામભાઈએ એક કલાક સુધી વિરુદ્ધ વિવેચન કર્યું. ૧૧ વાગે સમા જ્યનનાં પૂર્વક વિજ્ઞાન યથા. બીજે દિવસે પણ સમા થઈ. ગામની સજન મંદળને પણ રાત્રિના સજન ધૂન પુરુષ ભવાથી મુડી. સજન પુરુષોત્તમનો શબ્દ પ્રેમ દરી આવતો. યંકાસમાધાનો થયા. પટેલ દીમાસાઈ, શાહ મગનલાલ, પટેલ હોટાલાલ, શેઠ બદાલાલભાઈ વિગેરે આગેવાનોને પ્રવલ પ્રસંસનીય છે. ખ. જ. બાંધલાલભાઈની પ્રેરિત નરમ દોનાથી આપશ્રી તેમને ત્યાં દરરોજ પધારી દર્શનનો લામ આપતા હતા. આપાદ કુખલ ૬ સુરવારે ચોડથી ૪ વાગે આપશ્રી મોટરદ્વારા ઉમરેક પધાર્યાં. સાડા પાંચ વાગે નજીકમાં ચામણા ગામે પધાર્યાં. ત્યાંની નેપાળી પ્રસંસનીય હતી. બેન્ડથી રવાનત થયું. કુલદ્વાર થયા. જનતાની ઈચ્છથી સાંજીજી વસંતરામભાઈએ હુંક વ્યાખ્યાન આપ્યું. એક કલાકમાં પાછા ઉમરેક પધાર્યાં. આપાદ કુખલ ૭ શુક્રવારના સાંજના ૬ વાગે આપશ્રી વેદાંતના અને વ્યાકરણ શાળાના વ્યવસ્થાપક, જેથી બાલકાંકરભાઈની વિનંતિથી પધાર્યાં. બેન્ડથી રવાનત થયું. કુલદ્વાર થયા. બાલકાંકરે મુશોરી અને પુરુષસૂત્રથી મંગલ ચરણ કર્યું. વ્યવસ્થાપકના આમંદ રમણલાલ સાંજીએ પાકસાળાનો લેવાવ અને કાપકમ વાંતો સંભળ્યો બાદ સાંજીજી વસંતરામભાઈએ વિદ્યા સંબંધી વ્યાખ્યાન આપી પાકસાળા આરવરકાદા સમજાવી મદ્દારાજશ્રી તરફથી રૂ. ૫૧) ની મદદ બહેર કરી હતી. શાળા તરફથી રમણ સાંજીએ અચાર્યશ્રીને અભાર માની મદદ રજીકારી હતી. આચાર્યશ્રીએ ઉપસંદર્ભમાં હુંક પણ અચરકારક પ્રવચન કર્યું હતું. આ.પ.દ કુખલ ૭ ના રોજ સાંજના સાત વાગે શ્રી ગણપતિની વાટીમાં બહેર સમા રાખવામાં આવી. રશ્મ્યાવર્ત્તમાં પુરાણીજી જ્યેષ્ઠાસંભ ધાર્મિક ઉપક્રમ કર્યો. બાદ રમણલાલ સાંજીએ સમાનાં જોર અને 'ધર્મ' એ વિષય ઉપર પ્રાચીન કાલની ધાર્મિક પરિસ્થિતિ રાખવાલુ મદ્દારાજશ્રીના દર્શનથી વ્યાખ્યાન આપ્યું. તેમજ અંધી બોળીયાદ બીખાસાઈએ પોતાનું જીવન રતાવ તેમાં સાદિલ વાંચનથી થયેલ પડેરા તેમજ 'શુદ્ધિ'.

‘બ્રહ્મવાદ’ એ વિષય ઉપર વ્યાખ્યાન આપ્યું. બાદ શાસ્ત્રીજી વસંતરામભાઈએ ‘ધર્મ’ એ વિષય ઉપર કાલીદાસના શ્લોકથી વર્ણીયમની વ્યવસ્થા સુંદર સમજાવી હતી. બ્રહ્મચર્ય અને ગોપીચત્રની મદત્તોના ચિત્તાર આપ્યો હતો. બાદ પૂજ્ય આચાર્યશ્રીએ અઢધા કલાક સુધી દિન્દી ભાષામાં સચોટ રીતે ‘ધર્મ’ એ વિષયનું સ્પષ્ટીકરણ કર્યું હતું. આદાર વિદ્યારની હિતમતા સમજાવી હતી. રાત્રિના નવ વાગે સત્તા જય થાપપૂર્વક વિખરાઈ. જન સંખ્યા લગભગ ૧૬૦૦ હતી. ૭ શકવારે રાત્રિના શ્રીરજીકુશાયણના પચલામાં ભજન મંડળના આગેવાનોની વિનંતિથી પધાર્યા. રાત્રિના છા થી ૧૨ સુધી બિરાગ્યા. શાસ્ત્રીજી વસંતરામભાઈએ ત્રણ પદ ભક્ત કવિશ્રી દયારામભાઈના ગદ્યગોષ્ઠી, ભજન મંડળને આનંદ આપી બાર વાગે ઘેર પધાર્યા. આપાદ કૃષ્ણ ૮ રાત્રિવારે રાત્રિના શાસ્ત્રીજી વસંતરામભાઈએ દયારામભાઈનાં પાંચ પદ ગાયાં અને રદરથ સમજાવ્યું. પૂજ્ય આચાર્યશ્રીએ તેમનાં કાવ્યોની મદત્ત આને તે ગાવાની બહેનોને ખાસ બલામણુ કરી હતી. દિન્દુ તરીકેનાં ચિન્દ માદી, રોદી, બેદી એ વિષયનું રદરથ સમજાવ્યું હતું. ઉમરેકમાં પટેલ સોમાભાઈ, તલાદી મંચુભાઈ ઉદે’ ગોપાળદાસ, ગોરધનદાસ, શાદ ભાઈજીભાઈ, શાદ ગોરધનદાસ, કોટવાળા પુલભાઈ, શાદ મૂળજીભાઈ, રા. મણિલાલ સદિલીયાળા વગેરેનો પ્રચલ પ્રસંગનીય છે. આપાદ વડે ૬ ના રોજ મદારાજશ્રી મોરાર ભારદ્વાજ ડાકોર યહને કપડવજુજ પધાર્યા. આ વખતે ઉમરેકના વેણુવોનાં હરિશોનો પ્રેમ અનુભવેકગોચર હતો. બધાની આંખો અશુભીની ઘટ હતી.

કપડવજુજમાં—ઉમરેકથી ડાકોરમાં શ્રીરજીકુશાયણના દરિયાળાનાં દર્શન કરીને મદારાજશ્રી ગોપૂર્ણ શુદ્ધવર્માં કપડવજુજ પધાર્યા. મદારાજના અગ્રેસરો ઉમરેક સુધી પધારાવવા આજ્ઞા હતા. વળી રેતરમાં પાંચ ૭ માઇલ સાથે મોરાર વારીમાં ફેટલાક વેણુવો આજ્ઞા હતા. બાળક વિદ્યાર્થીઓ તેા ત્રણ માઇલ દૂર સુધી સામા આવેશ હતા. કપડવજુજની સીમને દેખાવ તેા અવજુનીયજ હતો. વેણુવોએ મોદી સંખ્યામાં સામેયું કર્યું હતું. નાના બાલકથી લઈને જઢાવરયાનાં વેણુજ શ્રીપુરુષોથી ઇવાઈ રહેલા રાજા આગળું દરથ કાઢી અનેરી અસર ઉપજાવતું હતું. મેથરાલ પણ વેણુજવજોરયામાં અંતરાય નહિ નાખી ચંબી ગયા હતા. પ્રચંદ જયવરિ વચ્ચે અને વાજતે ગાજતે અસંખ્ય માનવ સમુદાય સાથે સમારંજ શ્રીગોકુશાયણના મંદિરમા રાત્રે આજ્ઞા. વેણુવોના ભારસમુદ આજે ભરપૂર ઉછળી રહ્યો હતો. શ્રીગોકુશાય મજુની સુષિતા આ ભાવરરરપને કાઠિ વાર વડેન છે.

એ કીંજુજ કોણ છે ?—‘શુદ્ધદેવ’ માં કીંજુજપુરાણના બે સ્મૃત અધ્યાયો ઉપાઈ ગયા. તે વિષે ફેટલાકો પ્રશ્નો પૂછે છે કે, એ કીંજુજ કોણ છે ? તેનો જવાબ એ પુરાણના લેખક નીચે મુજબ લખે છે:—“કીંજુજ એ કાઈ શાકસ છત્રી ભગવી !વ્યક્તિ નથી અને તેને ઉદેશીને પુરાણ પણ રાજે થયું નથી. તે વિષે વધુ અજ્ઞાતાની અભિલાષા સેતુરાર R. (રેવારાંકર ૧) માં (મેથલ ૧) P. (પુરોહિત ૧) ને નમ સચના છે કે કીંજુજ કોણ છે તે પટેલ ‘ભાટિયાપુરક’માં બદાર આવેલા જુનરાતના વેણુજ નિદાનના નીચે અપવિત વર્તન વિષે સવાશે પૂછો અને તેનું અધમ વર્તન કરનારને બદાર લાગેને. કીંજુજ પુરાણનો ત્રીજો અધ્યાય તેા ઉરવ બદાર પકરો અને એક જામના રમજાનમાં એ કીંજુજએ પેસા તથા યદ્ર મટે કેવી લયાનક મલિન મંત્રસાધના કરેલી છે તેનું વર્ણન આવરો.”

અનુપમ માન—વડોદરાના મુસ્તિસિદ્ધ સદેરી અને સદૃશદરથ રાજરેલ રોક ચીમનલાલ ત્રિખરલાલ (કવેરચંદ લક્ષ્મીચંદલા) ને નામદાર શ્રીમાયકવાડ નરેસે પોતાના મિત્રમંડળમાં ગળીને ને અદિતીય સન્માન મળું છે તે ચોખ વ્યક્તિની ચોખ કદર જ થઈ છે એમ કહી સકાય રોક શ્રી ચીમનલાલભાઈ ભાઈ એક ધર્મનિષ્ઠ અને લગવદ્ધમંપરચણ સદૃશદરથ છે. એમના પિતાશ્રી અમરાવાદમાં ધર્મપરચણ અગ્રેસર સદૃશદરથ તરીકે જાણીતા છે. રોક ચીમનલાલભાઈએ પોતાના કુળનું ગૌરવ મુસ્તિસિદ્ધ રાખ્યું છે. વડોદરામાં શ્રીકલ્યાણશાયણના મંદિરને છલેધિર કરવામાં તેમણે વિતાવ સેવા ઉપરાંત લગ્ન સેવા ધણી પ્રમાણમાં કરી છે. સંપ્રદાયની સેવા બધી રીતે તેઓ જાણે છે. વડોદરામાં શ્રીમંદિર પાસે એક પુરતકાલવ આજે વર્ષોથી તેઓ ચણવી રહ્યા છે, અને મંચુદરમાં પણ ઉતારલાપૂર્ણ સદાયતા આપે છે. એમને ને અસાધારણ સન્માન મળ્યું તે પુલિમાર્મને અને સનાતન ધર્મને મળ્યું છે એમ અગ્રે સમજીએ છીએ.

રાજરેલ—રોક સામગ બદેચરનું વેણુજ કુટુંબ જુનરાતમાં મુસ્તિસિદ્ધ છે. તેમના કુટુંબના વેણુજવા અધકર્તા હતા અને અસારે પણ સદૃશ રોક ચીમનલાલભાઈના સત્પુત્રો પોતાના કુળનું ધાર્મિક ગૌરવ

નળવી રહેલા છે. રોક ટાડરમલ એક વૈષ્ણવ દોષને સાહિત્યમાં ધાર્મિક ભાવનાવાળા લેખક છે. સાંપ્રદાયિક સાહિત્યના તેઓ હતોત્ક છે. હમણાં તેમણે પચીસ વર્ષનાં રૂપીઆ જેટલી નાદી બાદશાહી રકમ મળેલોની ચાલી બાંધવા આપી છે. તેમના આ સદ્ગુણોની કદર ના. મદારાન ગાયકવાડ સરકારે રાતરતનું સુવર્ણપદક આપીને કરી. છે ખચિતજ, આથી આવા ચોખ્ખા ધર્મપરાયણ નામરિકની કદર થઈ છે.

એક સુધારો—અણખાન આદિ અરપૂરોને બ્રહ્મસમજ સર્વથા ન્દોડું થયું તેમ કહેવું હચિત નથી. પણ તેમને આધુનિક પ્રકારે બ્રહ્મસમજ ન્દોડું અપાયું. એ વાત નિર્વિવાદ છે કે બ્રહ્મસમજ વિના ચોવાધિકાર નથી મળતો. અરપૂર વૈષ્ણવો સેવા કરતા દત્તા અને તેમના સેવ્ય સ્વરૂપો (શ્રીકા-કુચ) અત્યારે સાંપ્રદાયિક મંદિરોમાં વિરાજે છે એટલે તેમને બ્રહ્મસમજ ન્દોડું થયું એમ કહેવું અરવાને છે. લી. ગો. કીમળનાથલાલ. મુંબાઈ, વી. ૧૪-૭-૩૩.

નોકરી છોડી પણ તિલક ન છોડ્યું—બરેલીના પંડિત રામ આધાર એઓ ચોગવિદ્યા નહોતે છે અને દેશીક વર્ણોથી યોગીના જેવી છ'છો ગાળતા છતાં સમર્પિતરૂપે દરીકે નોકરી કરતા દત્તા, તેમને ત્યાંના હાલના પોલીસ સુપ્રીન્ટેન્ડેન્ટે ચોતાના કપાન ઉપર તિલક નહીં કરવા ન્હાળ્યું. પંડિતજીએ તિલક કરવાનો પોતાનો દક્ક દોવાનું તથા તિલક સાથે તેઓ ધણી વાઈસરોયો, અવનંદો અને પોલીસના ઈન્સ્પેક્ટર નરસોને મળેલા દોવાનું તથા કોઈએ પણ તિલક શ્રામે વધી નહીં લીધાનું ન્હાળ્યું હતું. પોલીસ સુપ્રીન્ટેન્ડેન્ટે આથી ઈન્સ્પેક્ટર નરસને રીપોર્ટ કર્યો હતો જેના નવાબમાં ઈન્સ્પે. નરસે તિલક ન કરવા ન્હાળ્યું હતું. પંડિતે આથી નોકરીનું રાજીનામું આપી ચોડાન દિવસે ઉપર અવધુત સાધુનો વેશ થઈ સુપ્રીન્ટેન્ડેન્ટની ઓફીસના કંપાઉન્ડમાં પોતાનો અડો ન્હાળ્યો. આ બનાવે ત્યાંની સનાતની જનતામાં ચક્રમાર ફેલાવી હતી અને ચોતાનાં ટાળાં આ સાધુનાં ટાળાંએ ત્યાં ન્હાયા થવા લાગ્યાં હતાં.

વઢવાણ સહેર—માં શ્રીમ્તાનયાત્રાના દિવસે સમામાં ભાવણ શ્રીયુત સુખીયાલ જીવનવાદ કૃષ્ણસ ત્રીવેદી એમનાવાળે કહ્યું હતું તે તો હુંક સાર નીચે પ્રમાણે શ્રી. પુ. વે મહાસમાના મે'બંદે તથા સમાસરો અને મહાસમામાં આનંદનો હાલ લેવા આવેલા સદ્મદરેય વૈષ્ણવ જનોનો ઉત્તમ લાગણીવાનો ભાવ જોઈ માફ થિત ધણી પ્રસન્ન થાય છે આવા ધાર્મિક પ્રવચનો વારંવાર ને થતાં દોષ તો નિર્વંતર ભાવની રૂઢિનું વેપણ થયા કરે. વર્તમાન સમયમાં અનેક પ્રકારની મિનમિન વાતાવરણે એવાં આધુનીક સુવર્ણનાં મન ધર્મ પ્રાપ્તો વ્યય થઈ ગયાં છે પણ વલવાણ સહેરમાં કેવળ કંસારા ક્ષાત્રિ સુવક સંધના બાવે શ્રીમદાપ્રમુખની દયાથી વિરોધ અભિવિષકપણું થોડું છે તે ઘણી દર્શની વાત છે. કાસલ કે એમના ધંધાથી કાચું નિમિત્તે હવેલીથી પર એમ ને ઉપર વાતાવરણ પ્રત્યે લક્ષ આપવાનો વખત બહુજ ઓછો મળે છે ને એમનું દ્રવ્ય ધણીજ મહેનતનું ને શુદ્ધ છે મારે શુદ્ધ દ્રવ્યના પ્રદાપે અન્ય દોષિત નથી બનતું મારેજ એમના લાવે ઉત્તમ અનુમાન છે. ધણે કેહાણે સમયને ઉત્તમ સંમતો અમાને કન્યાવિકેય લેવામાં આવે છે એ દ્રવ્યની તો પછી વાતજ ચી કરવાની? એ દ્રવ્યની અધમત્રાની વાત ફરેક ધાર્મિક પુરોહિને સંપ્રાપ્ત છે. પણ ને સારી રીતે નહોતે છે તેમાં એ લેરા દખાતો નથી. આપણા ઉપર શ્રીમદાપ્રમુખએ કેટલો અનુમદ કર્યો છે આ 'પુષ્કામ'ના છવો પર કેટલી દયા કરી છે આપણેએ કેટલો પરિશ્રમ લીધો છે ભક્તિમાંથી અંધને ઉત્તમ ભક્તવતીય સત્સંગ દરેકો આપણને ભાવ થાય તે સિવાય અદ્યત્થ છે પ્રમુખ માદામ્યજ્ઞાન સુદૃઢ સર્વો અધિક રનેદ નવારે થાય ત્યારે નિર્વંતર ફરેક વસ્તુમાં ભગવાનમાં રહિ થવી નેહએ નેમ નેમ ભગવાનથી હરપન્ન કરેલી આશ્વર્વાચ્ય વસ્તુ નેહને ભગવાન પ્રાપ્તે ઉપકાર દશા દશાઈ થઈ પણ આ દશા ક્યારે બને કે કેવળ શ્રીમદાપ્રમુખના આશ્રિત થઈએ ત્યારે શ્રીમદાપ્રમુખના આશ્રય સિવાય ભગવાનનો અનુમદ આદર થવો દુર્લભ છે. વિરોધમાં મહાસમા લેવા કેવો દરેકો નેહએ તથા વૈષ્ણવોને સમાસરોને તેમના મેન્જલે ઈલાહિને ધણીજ વાધ પાડ્યો હતો અને ઉપરમાં કહ્યું ને આવા આનંદિત કાર્યો દર સાહમાં મોટા પ્રમાણમાં થવા નેહએ નેથી હજીની પ્રબલે હાસાદ થઈ અને આનંદ આવે તેવા મુંદર રાજરાજાનીધી નાના બળોમાં માર્ગીય અંધ સંજીત સાથે શીખવવાની અરજ કરી હતી આ મુંદર વ્યાખ્યાનથી સમામાં આવેલ વૈષ્ણવોને ધણી આનંદ થયો હતો. અને પોતે પોતાનું ભાવણ શ્રીની નય વેપણ સાથે સમાસ કહ્યું. ત્યારબદ્ધ ચતુરદાસે ઉત્તમ રીતે વિવેચનપૂર્વક શ્રીશીષીસંગીતને અર્થ સરજ રીતે સમજાવ્યો હતો. અન્યપૂર્વ ને અન્યપૂર્વ એજ અત્રિક્રમાશે તેમજ

ગોપીભાગીતમાં ૧૬ પ્રકારના વ્યવસ્થા પ્રજ્ઞા અંતરધ્યાન યત્ન કરણ અને અગ્નિમાર્ગનું પૂર્વ જ્ઞાતિની અંતરગ્રહણ વેળાના કોને માટે દત્તો. આ સર્વે જ્ઞાતિ વિવેચન સાથે ધર્મી અસરકારક રીતે સમજવી અને પોતાનું વિવેચન પુર કર્યું હતું. ત્યાર બાદ શ્રી. પુષ્પાચાર્યે વેષ્ણુ મહાસમાના મંત્રી બાહ્ય ગોપાલદાસે પોતાના બાળ્યમાં કહ્યું કે પ્રિય વેષ્ણુએ આજે ધર્મી ન હવેની વાત છે કે રતના યાત્રાને કીવસે આવો ઉત્તમ આનંદનો કીવસ હોઈ તેમજ આપ સર્વે વેષ્ણુ, સમુદાય અને પધારેણુ ઉપર તેથી ધર્મી ન હવેની વાત છે આ મહાસમા રથાવવાનું કારણ આજ એ જ છે કે વિવેચ વેષ્ણુ જઈ આજે કે ઉત્તમ શિક્ષણ મળે અને અનેક વિદ્વાનદ્વારા સત્સંમનો લાભ મળે તેથી ભક્તિની વૃદ્ધિ થાય આ વર્તમાન સમયમાં દુઃસંગ વિશેષ પ્રબળ છે માટે દુઃસંઘથી ભચાવ કરવાના હેતુથી આવી સંરથાઓની જરૂર છે આ સમાના ઉદ્દેશને અનુસરીને દરેક શ્રી. પુ. વેષ્ણુ સમાસદ થઈ શકે છે આ સંરથામાં એક નાનું સરખું પુસ્તકાલય પણ રાખવામાં આવેલ તેથી દરેક પુ. વેષ્ણુએને અમારી ખાસ વિનંતિ છે કે પુસ્તકાલયના નીચમને અનુસરીને આપ પુસ્તકો લઈયા લઈ જવા દેવા કરો દરેક પુ. વેષ્ણુને વચિત લાભ મળે તેવા હેતુથી કઈ પણ ફી અમર તેવા કઈ ફાવે રાખવામાં આવેલ નથી. તેથી સર્વેને ઉત્તમ લાભ મળે તેમ છે આ ઉપરાંત મગવતીય બાણથી લલ્લુભાષ ઇત્યદિવાલ દેસાઈ (અમદાવાદ) વાળા તરફથી આ સંરથાને મળેલ કોટ શ્રીગોપીભાગીતના પુસ્તકો દરેક પુ. વેષ્ણુને ધર કીડ ૧ પ્રત કોટ તરીકે આપવામાં આવે છે તેા દરેક વેષ્ણુએએ લઈ જવા દેવા કરવી અને તે વાંશી અને ગ્રંથ કરવાની ભગામણ કરી અને પોતાનું બાળ્ય પૂરે કર્યું હતું અને આ સમામાં આવેલ વેષ્ણુ તથા મુખીયાલ ઇત્યદિવાલમાંને ઉપકાર માનવામાં આવેલો હતો. ત્યારબાદ બ. બાણથી ત્રીભોવનદાસે મુંદર રાજ રાજગીથી એક ઘોળ પેડીના સુર સાથે ખોડી અને આવેલ વેષ્ણુને લાભમાં ઉમેરેા કર્યો હતો. ત્યારબાદ શ્રીની જયપોષણ સાથે સમા વિસર્જન કરવામાં આવી હતી.

મોઢા મંદિર-મુંબાઈમાં—પૂન્યપાદ ગોસ્વામીશ્રી ૧૦૮ ગોડુજનાયલ મહારાજશ્રીની પ્રમુખપદ નીચે મોઢા મંદિરની વિશાળ પાઠશાળા શુદ્ધમાં થયું હતું. તે વખતે પાઠશાળાના મુખ્યાધ્યાપક પં. શ્રી. બહુનંદન જા., પં. શ્રીકૃષ્ણ માધવ જા. ન્યાયનીય, વ્યાકરણાચાર્ય, પં. ગોરોપાલ રામ, ચંદ્રશેખર જા. બી. એ. પં. મધોદત્ત જા. જ્યોતિષાચાર્ય ઇત્યાદિ ધર્મ પ્રતિષ્ઠિત વિદ્વાનો તથા વેષ્ણુ અધ્યુક્તોની તથા બહેનોની સંખ્યા કીડ પ્રમાણમાં ઉપસ્થિતિ હતી. વ્યાખ્યાન પહેલાં મહારાજશ્રીને મુખપ્રમાણ અર્ચન થઈ હતી. તદનંતર વિધાર્થી ગિરધરલાલ વજ્રમળ નેશીએ ભારતવર્ષમાં ધર્મની હાનિનું કારણ આ વિષય ઉપર એક સાઈ બાળ્ય આપ્યું હતું. આ બાળ્યથી જનતા ઉપર સારો પ્રભાવ પડેલો હતો. તદનંતર કાશીના રઘુનાથ શાસ્ત્રીએ વર્ણાશ્રમ ધર્મ ઉપર એક શ્લોક મુખી સાથે વ્યાખ્યાન આપેલું અને બોધી આશ્રી વગેરે નેતા લોકોની સારી રીતે યોગ્ય ખોડી હતી અને અંતમાં કહેલું કે પ્રતિદેશ નામધારી ગાંધી માદવી વિશેર નેતા હોડે.એ ભારતને પ્રત્યેક રીતથી નુકસાન પહોંચાવ્યું છે અને અંતે ભારતમાં રહેલા વર્ણાશ્રમ ધર્મને પણ ભારતથી છોડાડી દેવા છડે છે. પરંતુ આપ સમજનો તે નેતા લોકોની આચારમાં ન ફેરી જઈને પોતાના ધર્મમાં દૃઢ રહેવું. અને ધર્મમાં દૃઢ રહેલા મનુષ્ય પોતાના કાર્યમાં સિદ્ધિને પ્રાપ્ત કરે છે. વર્તિ આપ લોક ધર્મથી નર થઈ મથા તેા પછી દેશમાં મરતું તેા દેર રહું. પરંતુ આ લોક તથા પરલોક બંનેને બચાડેલો. એટલા માટે વર્ણાશ્રમ ધર્મને ન છોડવો. આવા પ્રકારનું સાશોભ્ય મુંદર તથા માર્મિક બાળ્ય આપેલું હતું. શ્રોતા લોક ઉપર સારી રીતે અસર થઈ હતી. તદનંતર રત્ને લા વાગે શ્રી. બાણજી પ્રમુખી તથા મહારાજશ્રીની જરૂરનિ સાથે સમા વિસર્જન થઈ હતી. વિધાર્થી ગિરધરલાલ ઇત્યાદિ આરંભમાં શ્રીભાગજી પ્રમુખી તથા શ્રીમદ્ આચાર્ય ચરણી ચરણમતિ મોડી હતી. તદનંતર સમાનું ધર્મ વાક્ય થયું હતું. પૂન્યપાદ સત્યાપતિ મહોદય ચરણ ઉપસ્થિત વિદ્વાન તથા વેષ્ણુ બાઈઓ તથા બહેનો આનંદાદ એવો સમય આવી ગયો છે કે ધર્મ ઉપરથી લોકોની શ્રદ્ધા ઇતી જાય છે. બીજી ઈશ્વીય ભણવાની તથા જણાવવાની પારિપાટી એવા પ્રકારની છે કે સત્યદત્ત ધર્મની શ્રદ્ધા તે લોકોના હૃદયમાંથી પોતાની એવે નિકળી જાય છે. શ્રદ્ધા હજી જાય તેમાં કહેવાની કઈપણ જરૂર નથી. કારણ કે સંસ્કૃત મંથ ભણાવતા પહેલાં ભગવદ્ગીતા ગોરખ ભગવાન પ્રાચીન તે ગ્રંથમાં પહેલી દેખ છે. સંજ્ઞ કે ઈશ્વર પ્રતીકમાં પહેલાથી જ દેખાઈ રહ્યા હતાં અરુઠ નામોની પહેલા પ્રાચીન સાથે છે. તદનંતર ઈશ્વીય જણાવતા આરંભમાંના બાલકોને નાની વયમાં નમસ્કાર પ્રજ્ઞા શિક્ષણવાને બંધે શુભોર્નિત સર જ્ઞાતિ શિક્ષણવામાં આવે છે. દવે જાપ સમજનો વિચાર

કરો કે જે બાહોને દબા કરવા પડેલા પુત્ર આવડાં નથી. તથા ઈય જડને દાષ-પત્ર ધોડા નથી આવડતા. આવા નાના બાહોના કામન હૃદયમાં યુદ્ધ અમેરિકા વિગેરે બ્રહ્મ પ્રતિભા બાહોની જેવી થાય છે. બીજું કહેવાનું તે એ છે કે ધર્મમાંથી બહારે તે સુરતમાં નહાય છે. ત્યારે દેખાડેપણી પેન પેન્સિલ્વ મોહામાં નાખવાનું પડેલા બહે છે, અને દિન્દુનો બાહક મુસલમાનની પેન-પેન્સિલ્વ મોહામાં નાખે આજુબો બાહક ધોળીની પેન-પેન્સિલ્વ મોહામાં નાખે આવી રીતથી નાનપણથી ખરાબ સંસ્કૃતિ થઈ તે બાહક મોટા દબા કરવા પડેલા. પણ ધોળાને ધર્મ શું છે. તે કદિયમ સમજવા નથી.

દરે આપ સમજાવો વિચાર કરો કે આ ઉચ્ચી શક્તિના બેઠકોનોએ પડેલા તે સરસુદ બાહા શક્તિ નહિ. અને સરસુદ બાહા પડેલા ન બહુવાથી ધર્મ શું વસ્તુ છે. તે લોહા બાંધી બહે અને બહે તેા બે બહે કે બેઠકીયા નિવ સી બેઠકીયા નામની ભવિત્ય મનુષ્યો થારે વસ્તુ થશેલા છે. અને એ લોહા ભારત વર્ષમાં આવ્યા તેના વંશમાં અમે દેખાવ્યું થયા બોલે. તથા તેની અંદરથી નીકળેલી બાહા સરસુદ બાહા તથા તેની અંદરથી નીકળેલા ખત સત્યાગત ધર્મ કહેવાય છે. આવી રીતની વાત તે લોહાની ભુજિમાં જલદીથી સમાઈ ગઈ. પરંતુ આપ વિચાર કરો કે નથી તે ભારત વર્ષમાં કે નથી અમરા પૂર્વે પર્વતે બે ભવિત્ય લોહાને ભારત વર્ષમાં લોહા મેચેલ કદીને પૂરું દેખાવ્યું. કરતા અને થઈ તેનો અભ્યુત્થા રપથે થઈ જતો તેા પ્રત્યેક વસ્તિ સદિત સ્થાન કરતા તે લોહા થઈ અપારા કુદ પ્રવૃત્તિ થઈ ગયા. આવા વિચારવાળા બાહોના હૃદયમાંથી દેવ દર્શન આજ વર્ષે લીધેલા પાતા પિતાની રોચા જોરે ઉપરથી આવા નજ થઈ નહય તેમાં વિશેષ કહેવાની આવશ્યકતા નથી. સત્ય રીતથી જોઈએ તેા તેમાં તે બાહોનો રોષ નથી. પરંતુ તેઓના માતા પિતાને રોષ છે. કારણ કે નાનપણમાં તેઓને સ્વધર્મના પુરવઠાનો અભ્યાસ કરાવવા જોઈએ તે વાત તેા બાળ પંચ રહી, પરંતુ બધા સમાજ સમા સત્ય જ વિશેષમાં અપણે તેઓને થઈ જતા નથી.

માઈ પુછે તેા કદિયે કે, કયા-સત્ય જ વિશેષમાં તેા અપારા સરખા રૂઝોના કામ છે. બાહોનું શું કામ છે? અને તારક સિનેમા ઉત્સાહમાં પોતાના બાહોને હથ જળને અને બેઠકાનીયે તથા આવા કાર્યોમાં તેઓને આપણે અનિત કરવા રદિયે બોલે. દરે આપ સમજાવો વિચાર કરો કે. બાહોના મોટા થવા દેવ દર્શન આજ વર્ષે પાતા પિતાની રોચા વિગેરે ન હરે તેમાં તે બાહોનો રોષ છે કે તેઓના ખતા પિતાનો કે આ ઉપરથી આપ લોહાને એવા પ્રકારનું અનુમાન ન કરી લેવાનું કે ઉત્તરીય બહેલા લોહાની ધર્મ ઉપરથી આરતા થઈ નહય છે. પરંતુ ધણા ખરા બહુજન નિહાળી પાત્ર ધર્મ ઉપરથી આરતા અસ્ત થઈ નહય છે. કારણ કે બહુજન ગઈલા બહુજા પુરી કચેરી વિગેરે પદોમાં તેા બહે તે બહુજન વિદેશોના મુરવધાં તેા પવિત્ર કુમવર છે તથા દોહલના રોડા ચોરર આ વિગેરે પદોને તે લોહા પાપ પવિત્ર જલ સમજે છે. આરકથી તે લોહાના હૃદયમાં સતિય ન થાયથી યુદ્ધપિત્ર લોહાનું અનુદાન કરતા સિખા મોચ જળને માદીથી દાષ ન મોચા સામુથી દાષ ધોવા બીજને પણ પાદીથી દાષ ન ધોવા સામુથી એવા પ્રકારને ઉપદેશ આપવો પરંતુ સમજાવો નથી આવડું કે તે લોહા થા માટે યુદ્ધપિત્ર લોહાનું સંપૂર્ણ અનુદાન નથી કરતા કારણ કે ઈય જળને જલ પણ ન થઈ જતું જોઈએ કારણના દુઃકામો તેા પડ્યા અને છે. પરંતુ (ધોળીનો કુરે નહિ થારેના નહિ) થારેના વસ્તુ આ લોહા નહિ દિન્દુ નહિ' યુદ્ધપિત્ર તેા આ લોહાને કેવા પ્રકારના સમજવા તે સમજાવું નથી. અને બહુજન હરે કે ત્યારે ભુજિને પવિત્ર કરવી દોષ તેા પવિત્રતા પાલો વમાસથી પવિત્રતા ન થાય સારા તે બીજારે જલ ન કરે આરક. આ ઉપરથી આપ લોહાને સમજાવો આવી વસ્તુ દરે કે ઉચ્ચી શક્તિના લોહાની ધર્મ ઉપર આરતા નથી રતી તે નથી કહેવાનું પરંતુ પશ્ચિમની સજ્જતા એવા પ્રકારની છે કે સરસુદ બહેલા લોહાની પણ ભુજિમાં ફેરફાર કરી લીધે છે. પરંતુ તેના ઉપર બહુજન તથા મુશ્કા ટરો તેા લોહાની ધર્મમાં ભુજિ નિષ્કારેલો. નહિ તેા પછી કદિયે જલ નહાય: અસ્ત. તેજલા અરે પ્રિય સમજાવો આપણા બાહોને ધર્મ ઉપર દર આરતા રખાવવી દોષ તેા તેને બાહુજનથી ન બાહુજન ઉપર આપવો પોતાના ધર્મના પ્રયોગે અભ્યાસ કરવો સમા કયા સત્ય જ વિશેષમાં હથ જળ તેા તેમની ધર્મ ઉપર આરતા રહેલે ઉદ્યારવામાં તમારી રોચા સંપૂર્ણ કરો. અને નાનપણમાં ધર્મનું જ્ઞાન ન મળ્યું તેા પછી થઈ રાખવાનું કે આ બાંધી પુત્રની રતન-તમામાં વધવા ન પુત્ર વધોને ન દુઃખ હોવા તરફ થઈ જશે. ઉત્તરિયમ.

પાંચ રૂપીયા પસંદગી—એા વેળાે કદિયેના અનુજ્ઞા સપાળ, મુ. જડપુત્ર મદિ પાંચ

જાહેર ખબર.

સર્વે આંખા સુખ સર્વે અમત્કાર—શ્રી. શ્રી. ૧૦૮ શ્રીમદ્ધારાજશ્રી આચાર્ય શ્રીવલ્લભવાનજી શ્રીમદગોકુલગાદી શ્રીમદ્ધામવન ગાદી જગત્પુર મહારાજશ્રી અપાડ વડી. ૭ ને શુક્રવાર કે દે દીવસ મહારાજશ્રી શ્રીમુખસે આતા લઇ આજ રાત્રી વરસાદ પાણી ખડોત આવેગો સાન્ત અમત્કાર નિરપેક્ષ નિરવાય અમત્કાર સકલ જીવનકો સુખ કો દેવેકે વારસે શ્રીમુખસે આતા ભઈ. એજે બીજે મારગ માયાવાદીનને અલ્પવેણા અમત્કાર કરે હે કેમકે પાણી કો કુષ ખૂના દે હે, પત્થરકી સાકર બનાવે હે. સો લોભ સ્વાર્થ કે લીધે બનાવે હે. શ્રી મહારાજશ્રી સકલ પ્રાણી માત્ર કે સુખકે વારસે અનુભવિ અમત્કાર તાતકાલીક સકલ જગતકે વારસે પ્રાણી માત્ર તત્તર રહી હતી જીવે દયા કરકે શ્રીમુખસે આતા ભઈ આજરાતે જન્મ-વરસાદ આવેગો. સાન્તી બચનસે આનંદ વચનસે સકલ પ્રાણી માત્ર કે વારસે બચન ઉચ્ચારણ કીયો અસાડ વડી ૭ કે રોજ કીયો સકલ વૈશ્વ જીવરેક, ઝોડ, પેટલાદ તથા ગોઝાસા, નડિયાદ, કપકપચુજ તથા આકારીનોર તથા દીગ્યા સખનકે બીચમે વચન ઉચ્ચારણ કીયો એઈ અમત્કાર અઘોડીક આપકી ઇચ્છાનુસાર બચન કીયો સખ પ્રાણી માત્રકુ સુખ પહોંચ્યો. આપશીને એસો વચન કીયો મીતિ ૧૬૮૯ ના અપાડ વડી ૮ ને શાનીવાર.

હી. વૈષ્ણવ કૃષ્ણદાસ પરમાનંદદાસ ગોવરધનવાસી.

ગિરિધરલાલ જગજીવનદાસ શાહ.

બુકસેલર અને રોશનર્સ.

કે. શ્રીલાલબાવાનું મન્દિર, બુલેશ્વર-મુંબઈ નં. ૨.

આમદારે ત્યાંથી વૈષ્ણવ ધર્મનાં સંસ્કૃત, હિન્દી, મજ, ગુજરાતી, મરાઠી, ઇંગ્રીશ ઇત્યાદિ દરેક ભાષાનાં છપાયેલાં (મુદ્રિત યથેર્થ) પુસ્તકો તેમજ અન્ય ધાર્મિક સંસ્થાઓનું ભક્તિવર્ધક એવાં સંસ્કૃતિમય સર્વ પ્રકારનું સત્યાદિલ તથા વીનાયકારા, ગોકુલ, મથુરા, કલકત્તા, મુંબઈ, અમદાવાદ વિ. ના સુપ્રસિદ્ધ ચિત્રકારોએ તૈયાર કરેલાં શ્રીનાથજી આદિ સાતે સ્વરૂપ અને શ્રીરામ-કૃષ્ણની વિવિધ પ્રકારની દિવ્ય કોશઓનું દિગ્દર્શન કરાવતાં સુન્દર ખનોરંગક વિવિધરંગી ચિત્રો, તથા શ્રીમહાપ્રભુજી, શ્રીગુરુમહાજી અને પુ. પા. ગો. બાલકોના દોટા-ચિત્રો તથા નવાં વર્ષનાં ફેન્સી કાર્ડ, કપર, અનિનંદનપત્રો, કેવેન્ડર, ન્હાનામ્હોટા રોજમેગ, ડાપરી, સામગ્રદાયિક પ્રતોઃસ્વની ટિપ્પણીઓ, શુદ્ધકર્તિકી અને ચૈત્રી ન્હાનામ્હોટાં પંચાંગો, ફૂલ ભરવાની સો.ય, તદુપરાંત દરેક પ્રકારનો રોશનરી સામાન યોગ્ય મૂલ્યથી મળી શકશે.

તે સિવાય દોટા-ચિત્રોને સોનેરી, નકશીદાર, સાદી ફેન્સી ફેગો, તથા પુસ્તકો, માસિકો વિગેરેને સાદુ, કપડાનું રેશમી, કંતાનનું યા સોનેરી ટકાઉ બાઇ-ડીંગ તથા દરેક પ્રકારનું છપાવવાનું કામ અને દોટાઓના બ્લોકો વિગેરે યોગ્ય કિંમતે કરી આપવામાં આવે છે.

વિશેષ રૂબરૂમાં મળેા યા પત્રવ્યવહાર કરો. પત્રોત્તર ખાટે જવાબી કાર્ડ યા પોસ્ટ સ્ટાંપ ચોકસવા.

દા. ગિ. જ. શાહ.

શેને માટે

તાકત-તાઝગીધી બરપૂર

સાગરતાર

ઝંડુ ક્રા. કા. સ. વ.

—વિના વિલંબે—

વાપરના માંડો

ખાસ શ્રીઓને માટે

તનકુરસ્તી-તાકઠધી બરપૂર

શ્રીઓની નખખાઈમાં
આખાં અરાર કરનાર

ઝંડુ અશોકારિષ્ટ

પ્રદશદિ રેશોનો

અકસીર ઇલાન

દુરેક ઘરમાં હોવો લેખ્યો

બાળકોનાં પેટનાં દર્દોમાં

આખાં કામ કરનાર

ખિલકુલ
દેક વગરનું

ઝંડુ બા. લ. શૂ. લા. ક.

—બાળકોવાળા—

દરેક ઘરમાં રાખવું લેખ્યો

—શીશી એકના આના બાર—

ઝંડુ ફાર્માસ્યુટિકલ વર્ક્સ લી. મુંબઈ નં. ૧૪

અમદાવાદના એન. ડ. બોગીલાલ અવધી, ૧૧૪, રીચીરોડ.

આધુનિક દવાઓનું સુવિધા આપેલ મંથરો.

ગુણાનુવાદ કેમ ગાશે ? શુદ્ધ સંગીતનાં દિવ્ય કીર્તનો.

સારંગી, ખીન, દીલરૂખા, હાર્મોનીયમ વગેરે વાજાંત્રોમાં સાંપ્રદાયિક કીર્તનો ઉતારવાનું આપું સાધનું સંપ્રદાયમાં એકેય નથી. મંગળાચી શયન પર્યંતના મુખ્ય કીર્તનો, વધાર્ધ અને ધમાર એ બધાંનાં ૮૦ રાગોના ખાસ નોંટેશનો આજ અંચમાં છે. પખાવજ સિંથનાર માટે તાલના બેલ પણ છાપ્યા છે, ગુજરાતી ભાષામાં સવિસ્તર સમજણ પાડી છે. નોંધાવર બે રૂપીઆ, પોસ્ટેજ પાંચ આના.

૬. ભગવાનદાસ નારાયણદાસ કોટડાવાળા.

સુ. ધંધુકા, (જી. અમદાવાદ.)

હિસ્ટરિયાદિ વાતરોગ દર્શન.

ખ્વોક ૩૦ હિસ્ટરિયા, મૂળી, ચકરી, ફેફર, ગાંડપણ અને બકવાદ રોગની અમેરીકન હેક્ષી શોધ મુજબ પાશ્ચાત્ય, યુનાની અને આયુર્વેદિક સિદ્ધાંતો, સમજુતી અને સાદા ઉપ-ચારોનું પુસ્તક વાંચેથી ઘણી રાહત મળશે. કીમ્બ ૧-૪-૦ પૈ. 'લુઈ', દેશીનામું. નવા અવધાર પ્રમાણે રચના ૦૧. શાળા માટે નવું મંજુર કો. ૦૧ પૈ. ૦)૦.

હિસ્ટરિયા રોગનીજ રામબાણુ,

પેટ દવા વાયુમુક્તાજ છે. ઉપરના દરદોમાં ૨૪ કલાકમાં ફાવેલ ગમે છે. સિનેન, આફ્રિકા, ધરાન અને રંચન સુધીના દરદોઓ વાપરી સુખી થયા છે. મેડીકલ સરજનો કુટથી મંગાવે છે. દવા મહિનાની, કીમત રૂ. ૫) પૈ. 'લુઈ'.

છગનલાલ લલ્લુભાઈ નામાવાળા. પેલેસ રોડના નાકે—વડોદરા.

વીસમી સદીની નવીન શોધ

સંપ્રદણી (ગળણી) માટે અમૃતમય ઉપાય.

પ્રતિષ્ઠિત અને વિદ્વાન વૈદ્ય કોટડેરાની દવા ખાદ્ય કંઠાળેસા સંપ્રદણી (ગળણી), મુંજાખના ઝાઝા, અતિસાર અને આંતરડાના દાષથી પીડાતી નિરાશાજનક દર્દોને આશીર્વાદરૂપ થઈ પડેલી ત્રીસ વરસના અનુભવની રામબાણુ દવા માટે રૂબરૂ મળેલા સવાલપત્ર મંગાવો. પત્રઅવધાર નીચેના સરનામે કહેવાઃ—

માસ્તર કે. જી. પટેલ એન્ડ સન્સ, રૂપે સ્પેસીઆલીસ્ટ—માણસાવાળા.

સંપ્રદણી—૨ રવિવારે, અમદાવાદ—ગ્રાહુપુર કાંઠીરાની પોળમાં તંબુચરાની

ખડકી ધર નં. ૨૫૧.

અમારૂં ખાલાનંદ બચ્ચાંઓને હૃદય પુષ્ટ આનંદી અને મુંદરે બનાવે છે. કી. ૦-૧૨-૦ પૈ. 'લુઈ'.

C. P. Ayurvedic Chemical Works

સી. પી. આયુર્વેદિક કેમીકલ વર્ક્સ રાયપુર.

(મધ્યપ્રાંતીય દ્વિતીય વૈદ્ય સંમેલન નાગપુર.)

તા. ૫, ૬, ૭ નવેમ્બર ૧૯૩૨ ના આયુર્વેદ પ્રેમી જનતા માંટે આહવાન પ્રદર્શનોમાં સુવર્ણ તથા રૂપાતું મેડલ સર્ટિફિકેટ મેળવેલ

આયુર્વેદિક દવાઓ

અવન પ્રાશ અવલેહ.

ખાલક, યુવક, સ્ત્રી, પુરુષ બધાને માટે અતિહિતકારી છે. વૃદ્ધને નવું જીવન આપીને સુવાનની સમાન બનાવે છે. લય, દમ, રક્ત, પિત્ત, ધાતુ ક્ષીણતા, અશક્તિ, અભ્રૂપિત્ત, શીર્ષશય, હાલ, ખાંસી, સ્વરભંગ, અરુચિ અને વીર્યવિકાર, પ્રમેહ, પ્રદર ઇત્યાદિ માટે અતિ ઉપયોગી છે. તોલા ૨૦ કી. રૂ. ૨૧. આ દવા અડધાથી એક તોલા દુધની સાથે પીવી.

કાન્તામૃત (સ્ત્રીઓ માંટે)

પોષિક, શક્તિવર્ધક તથા આરોગ્યને આપનાર છે. આના સેવનથી જનુ-શ્લ, વધારે રક્તનું પડવું, પ્રદર, ગર્ભસ્રાવ, કમરનો દુખાવો, હાયપગનું બળવું, વિકાર, પ્રસૂતિ, પાંડુ, સંશ્લેષી, ગર્ભજ્વર, જીર્ણજ્વર, પેશાબનું બળવું, માથાનો બ્યાધિ, દમ, ખાંસી, ઉલટી, અરુચિ, સોજો, હિસ્ટીરીઆ વગેરે રોગને જલદી કાયદો પહોંચાડે છે. કી. શીશી ૧ નો રૂ. ૧૧. સવાર સાંજ અરધો તોલા ગધ કે પાણી સાથે પીવું.

સ્વદેશી ગુલાબી ચાહ.

આ ચાહ પ્રાચીન આયુર્વેદિક ગ્રામ્યના આધારથી અને ગુજ વનસ્પતિના સરવથી બનાવી છે. રક્તરોધક, બુદ્ધિવર્ધક, ધાતુપોષિક અને પાચક છે. રંગ, સ્વાદ અને ગુણમાં ઉત્તમ છે. રોગી અને નિરોગી અવસ્થામાં પણ લઈ શકાય છે. તોલા ૫ ના ૦૮.

વીસ તોલા દુધ પાણીમાં એક આનીસાર નાખવાથી ચાહ લેવાર યાય છે.

દરેક પ્રકારની રાત્રિકા દવાઓ અમારે ત્યાં મળે છે. તેમજ દરેક રોગની ચિકિત્સા પણ અહીં યાય છે.

સી. પી. આયુર્વેદિક કેમીકલ વર્ક્સ, રાયપુર. (સી. પી.)

શ્રીગિરિરાજજીમાં વૃક્ષ રોપો !

વૈष्ણવો ! શ્રીગિરિરાજજીની તરહટીમાં પ્રાચીન વૃક્ષો તિરોધાન થઈ જવાથી સમગ્ર તટકાના પ્રતાપે ચળા પળ શેકાઈ જાય એવી ગરમ રજમાં ગ્યારે શ્રીવલ્લભકુલ, વૈष्ણવો, વ્રજવાસીઓ, સાધુ, મહાત્મા તથા ઋષિ-મહર્ષિઓને દંડવતી તેમજ સાદી પરિક્રમા સાત કોસની ફરતા જોઈએ છીએ ત્યારેજ આપણને વૃક્ષોની કેટલી આવશ્યકતા છે તેનો કંઈક અનુભવ થાય છે,

એવા સંજોગોમાં આવેલા વૈष्ણવો તરફથી પ્રેરણા અને સહાયતાના પરિણામરૂપે અત્રે ચાર વરસ થયાં વાવૂં જીવનાથજી દ્વારા અહીં વૃક્ષ લગાડવાનું કામ ચાલુ થઈ રહ્યું છે અને આશરે ૧૦૦-૧૦૦૦ આજ સુધી વૃક્ષો લાગી ચુક્યાં છે ।

સ્થલ:—તરહટી પૂલરીથી જતીપુરા ગાડ ૧ વૃક્ષ ૩૦૦ માઈલ ૧॥ (વહારની પરિક્રમા) પૂલરીથી, મુરમીકુળડ માઈલ ॥૧ વૃક્ષ ૨૦૦ । હરજી કુળડથી ગુલાલકુળડ માઈલ ૧॥, ૩૧૦ શ્રીગોવર્દન, દાનઘાટી વૃક્ષ ૮૦; શ્રીગોવર્દનથી ચન્દ્રસરોવર સ્તા ૧૦૦.

૫ પ્રમાણે અન્યાર સુધીમાં વૃક્ષો લાગ્યાં છે, હજુ ઘણાં વાકી છે, જો દરેક વૈष्ણવો પોતાનું, પોતાના પિતા, માતા વિગેરેના નામથી એક એક વૃક્ષ લગાડાવે તો સહજમાં ૬૦૦ વૃક્ષ તૈયાર થઈ જાય અને તરહટીની સેવા થાય, વૃક્ષો લગાડવાનું અને તેમાં વ્રજભૂમિ અને શ્રીગિરિરાજજીની પવિત્ર તરહટીમાં પોતાના તરફથી વૃક્ષ લાગે તેની શીતલ છાયા અને ફલ-ફૂલ હરિ, ગુરુ, વૈष्ણવો વ્રજવાસીઓ, પશુ, પંક્ષી વિગેરે ઓંગાર કરે એના જેવી વીંચી સેવા કરી હોઈ શકે ? અહીંના વૃક્ષો શાશ્વત્માં ભગવત્સ્વરૂપ કહેલાં છે । શ્લોક:—વૃક્ષે વૃક્ષે વૈષ્ણુધારી પત્રે પત્રે ચતુર્ભુજ । દોહા:—વૃન્દાવનકે વૃક્ષકો મરમ ન જાને કોય । હાર પાન ફલ ફૂલમેં શ્રીપદે રાપે હોય ॥

વૃક્ષોનું સર્વે દરેકને સરલ થાય તે માટે આ પ્રમાણે લેવાય છે:—

શરુઆતમાં રૂપૈયો ૧) વૃક્ષ, સામણું, કાંટા વિગેરેનો ત્યાર વાદ મહીનાનો રૂ. ૧) પ્રમ્ણે પાળી સિંચાઈ તે પાંચ વર્ષ સુધી લેવાય છે । પોતાનાં સવડ પ્રમાણે એક વર્ષે છ મહીને તે સર્વે સાલ સાલનું મોકલાવવું । નામ લગાવવા રૂ. ૧) [સાર્વેનવોર્ડના] .

ટિકાના:—શ્રીગિરિરાજ વૃક્ષલાપ્યા સુલ્લ સમાજ, જતીપુરા (પોસ્ટ ગોવર્દન જિલ્લા મથુરા.)

સહાયતા કરવાવાલાનાં નામ:—શ્રીસ્તિત્કાયત શ્રીનાથદ્વારા, શ્રીવ્રજમૂળપ્રમુ તથા વાવાસોદ્વ શ્રીવિહ્વલનાથજી કાંકોલી, શ્રીકૃષ્ણગદ્ગેશ, રામવાસાદ્વ પોરવન્દર, ૨૧, પેટ્ટાદના દાતાર સેઠ રમણભાઈ આ કાર્યને વારીક રીતે તથાસ કરી પાળીની અડચણ ડનાલમાં ન પડે ૫ માટે રૂપયા ૪૦૦) માં લોહાની ટાંકી તથા વલ્ડ જોડી તથા ૩૦૦ નાગદ આપ્યા છે ।

श्रीवाचस्पतिपादा निजयन्तान्तमाम् ॥

वर्ष ८.

अंक ८.

शुद्धादित

आधिन

अने

१८८८.

श्रीपुस्तकालय

४५५.

सहितमार्तः.

श्रीअष्टाक्षरमहामंत्रधारणप्रकार ।

अष्टाक्षरमहामंत्र जो है तारे अंग और उपअंगरूप धारण करने मंत्रके स्वरूपकी भावनामें अहर्निश निमग्न रहना आवश्यक है । कारण कि जीवतुं लौकिक वैदिक कदापि बाधा न करे और उनके जालमें न फसे, और निश्चय पुष्टिरसरी प्राप्ति होय, और पुष्टिचिन्तनो यथार्थ ज्ञान तथा अनुमंत्र तबही जीवके हृदयारूढ होय.

अत्र मंत्रके अंग और उपअंगरूप जानने सेनसे प्रकार व्यवहार करे सो लिखे हैं—

प्रथम अंग श्रद्धा है ॥ और याको उप अंग पूर्वसंयोग रसरी जो भासि ताके अभावको दुःख ॥

अत्र याको व्यवहार ॥ जो जीव शरण गयो है सो क्यों गयो है ? (कारण) जब कहे जीवकृ एसो महादुःखको संताप होय और वा नन्तापकी निवृत्ति अपने पुण्यार्थसु नहीं होय मन्त्रे, तब वा दुःखको तापसु तपायमान होय वाकी निवृत्तिके लिये कह महापुण्यकी शरण जाय है । तो विचाराय करे के मोह कोनसो हृदयरूप ताप तपायमान करे हैं ' जानी निवृत्तिके लिये अपन शरण आये है ' जो कदाचित् अपनकृ दुःख सो है नहीं तो शरण जानो वृथा है । और वाकी सिद्धि तथा फलकी ओर कैसे आशा करे ' याही कारणसु अपनकृ कष्ट फटकी प्राप्ति करी होय है । सो है विद्वद्भ्य अपनी शरणागतिक मित्र नरेके लिये महामंत्रके प्रथम अंग रूपसे स्वरूपको चिन्तन करना । वो केमे के-हाय में पुष्टिचिन्तनो जाय हू. भगवान् के श्रीअंगसु मेरी उत्पत्ति है । (वचसा वेदमार्ग हि पुष्टि कायेन निश्चय. ॥ ९ ॥) (पुष्टिप्रवाहमर्यादा) और प्रत्येकी ही उपयोगी मेरी शरीर है । (तस्मिन्नीमा पुष्टिमार्गे भिन्ना एव न संशय ॥ भगवत्पुण्यसार्थ तत्पुष्टिर्नान्यथा भवेत् ॥ १२) (पुष्टिप्रवाहमर्यादा) और अहर्निश लीलाहीमें मेरी उद्विग्न और मनकी वृत्ति लगी रहनी चाहिए । सो याको तो अभाव है और अपने स्वरूपको भी ज्ञान नहीं है ॥ तातुं या संसाररूप महासमुद्रमें प्राप्त होय प्रभुसु दूर

होय रहोहूं । सो हे नाथ मैं आपकी शरण हूं ॥ आपहीके संकल्पसु मेरे सर्व मनोरथ सिद्ध होयों ॥ या प्रकार पूर्व संयोगके अभावके पूर्ण दुःखसु तपायमान जो मैं हूं, वह भावना कर प्रभुको चिंतन करनी हे प्रभु ! मैं श्रद्धा करके आपकी शरण आयो हूं ॥ सो भगो दुःख और तापनयकी नियुक्ति करवेमें केवल आप ही निश्चय करके सर्वसमर्थ हे । या प्रकारसु या बातकी सतत चिंतन कर प्रभुकी सारन लेनी ये प्रथम अंग श्रद्धा और उपसंग याको भग्न हे ॥

॥ या प्रकार प्रथम अंग और उपसंगकी भावना संपूर्ण भई ॥

भगवात श्रीकृष्ण.

ધર્મપદાર્થ—આ જગત્ કોના આધારે રચિત છે છે? એ આગળનો વિચાર કરતાં જગત્નો કે (૧) એક પ્રકૃતિ અને (૨) બીજો ધર્મ. પ્રકૃતિ એ જગત્ની રચનાનો પટકાવવા છે. ત્યારે ધર્મ એ જગત્પ્રવાદને શાન્તિપૂર્વકે ચલાવનારી શક્તિ છે. સત્ય, દયા, પરાયણતા, અસ્તેષ, શીશ્ય, મૈત્રી, આત્મનિમ્ન, બુદ્ધિ તથા ઇન્દ્રિયનિમ્ન આ ધર્મ ધર્મનાર પ્રવેશ છે. આ બધાને પ્રકૃતિ અને ધર્મ-પદાર્થોની જગતને કેટલી ખરી જરૂર છે, એ આગળ એ બંનેના સ્વરૂપ-વિવેચનથી જ સ્પષ્ટ છે. આ બંનેમાંથી એકને જમ્ જગત્થી નુકસાન કરી નાંખવામાં આવે તો સંસારની સ્વરૂપરક્ષા થીજ અસંભવ છે. અર્થાત્ પ્રકૃતિ અને ધર્મ ઉપર સારાપે જગત્નો મહાર છે. ધર્મના વિવેચનમાં મદારાજ મનુ પોતાના ધર્મશાસ્ત્રમાં લખે છે કે—

ન ધૈરાગ્યં નં રાજાસીત્ ન દણ્ડો ન ચ દાષ્ટિકઃ ।

ધર્મેણૈવ પ્રજાઃ સર્વા રક્ષન્તિ સ્મ પરપરમ્ ॥

“સંસારના પ્રારંભમાં ન ક્રોધ રાગ દનુ, ન રાગ દનો, ન ક્રોધ પ્રકારનો. દણ્ડ દનો, ન ક્રોધ દણ્ડ દેનાર દનો. કારણ કે રોક પ્રત ધર્મપૂર્વકે ચાલતી હતી.” આ વાક્યાનુસાર વિચિત્ર થાય છે કે પૂર્વકાલમાં ક્રોધ રાગ નહોતો, પણ કેવલ ધર્મના આધારપર જ પ્રજા સારું જીવનવાળા બનીત હતાં હતી હતી. ધર્મના આધારપર જ જીવનવાળા-નિર્વાદની રીતિ સંસાર-રચના પછી પ્રજા સમય સુધી અજાણિત રૂપથી માત્ર રહી હતી. અને ક્રોધ ગર્વમોહની આકરૂપતા તે વખતે પડી નહતી. પરંતુ જેમ જેમ આધિક સમય વ્યતીત થયો ગયો તેમ તેમ પ્રજાના ચિત્તમાં ક્રોધ ક્રોધ રવાઈ પ્રવેશવા લાગ્યો અને તે રવાઈ જ ધાર્મિક અન્યને શિથિલ કરવા માંડ્યા. જેના પરિણામે એક મનુષ્ય બીજાના અત્યાચારનું દરખ કરવા લાગ્યો અને અન્યને ગુલામ બનાવતો એજ મનુષ્યકલ્પ સમયના લાગ્યો.

રાજ્યસ્થાપના—વિચાર કરવા સમજ થાય છે કે આ પ્રકારની અન્ય દુષ્ટતા પ્રજા કયે પ્રકારે સુધી રહી શકે? અતઃ તે સમયની પ્રજાએ પરામર્શ કરી એક નિયમ કયો કે એક રાજ્યની સ્થાપના થવી જોઈએ અને તે રાજ્યનો નિર્વાહ જરોરે જાય જોડતા માટે પ્રજાનુમોદિત એક ધાર્મિક રાજા હોવો જોઈએ અને તે રાજાને અધિકાર હોવો જોઈએ કે તે ધર્મવિદ આગવાર આગમાં લોકોને દ્રષ્ટ કરી ધર્મમાર્ગ પર ચલાવે કે જ્યાં ક્રોધ રાગ મનુષ્ય ક્રોધ નિર્ણયને અવધૂર્વકે ગુલામ બનાવી ન શકે. આ નિયમાનુસાર પ્રજાનુમોદિત તથા ધાર્મિક પુરુષને રાજા બનાવવામાં આવ્યો અને હુડોને શાસન કરવા આરમ્ભ કર્યો અધિકાર પણ તેને આપવામાં આવ્યો. અર્થાત્ ધર્મને સુરક્ષિત રાખવા માટે જ રાજાનીનો જન્મ થયો. પ્રાચીન સમયમાં રાજાનીનું આનું સ્વરૂપ તથા ભેદ સમજનારા અને તે પ્રમાણે રાજ કરનારા અનેક રાજાઓ રહ્યા ગયા છે. તેમાં મદારાજ સમગ્રનું નામ પણ ઉલ્લેખનીય છે. મદારાજ મગરો રજામાં પણ ‘પ્રજા મારા માટે છે’ એવી કુલુદિ થઈ નહતી. એનો પ્રજા પુરવો આપતો થયો છે કે મદારાજ સમગ્રનો પુત્ર અસમર્થતા દુષ્ટમંગલે લીધે અસમર્થ બની ગયો હતો અને પ્રજાના જાજોને પાછામાં હુણાદો દત્ત. થોડો સમય તે પ્રજાને રાજકુમાર સમજાવે તેના આભાસરોને કુદન કરી પણ ત્યારે અતિ ધન થઈ ત્યારે સમગ્ર પ્રજાએ મદારાજની પાસે જઈ પ્રાર્થના કરી. પ્રવેશાર પોતાના પૂતરા પુત્રિન કાષ્ઠને સાંભળીને મદારાજએ પુત્રમોહને દૂર કરી ‘હું પ્રજા કરનાં મારા પુત્ર અથવા રહી જોઈને શ્રિવ માનતો નથી.’ એમ પ્રજા આજણ જાહેર કરી પોતાના શ્રિવ પુત્રને દેવનિશાની કલિન સજા કરવાનો રીધો. અને પ્રજાને બનવાની આપ્ત

અધ્યયનમાં પોતે સોમવંશમાં જન્મ પ્રાપ્ત કરનાર હોવાથી મંત્રનું નામ કિરણ હરનાર જેવું
 પાનામાં વ્યવસ્થિતને ત્યાં પ્રકટ થઈ ગયાં અને પ્રકટ થું ચલાવું હતું. પોતે તો સર્વ પ્રકરણ
 છે પણ પોતાની માયાને કહને આપણે નેનાં ક્ષત્રિ કરી રાકતા ન દતા, એટલે વહુનેવંશીકની
 સમક્ષ માયાનો પડો દૂર ફેંકી દીધો અને તે જન્મને પોતે કેળવ્યા. અને જેલમ. જન્મ પ્રાપ્ત
 જન્મની આંદર એ પણ સિદ્ધાન્ત પ્રકટ થયો કે મર્મની જાનર જેમમાં પણ જનું પડે તે ને
 વખતે તે રથાનને જેલ ન સમજતાં માફ જન્મરથાન સમજવું. ત્યારનાર આપ નન્દ્યાવાનો પેર
 ગોદુલ પંચામાં અને ગોવંશની રક્ષા કરી કે જેના કારણે ભારતનું અસ્તિત્વ વિદ્ય છે અને.
 ત્યારનાર હુલ્મનાર રાજ્યઓનો નાશ કરી તેને રથાને પ્રતિદિનથી ધર્મોભા રાજ્યઓને નિવૃત્ત
 કરી રાજ્યનીતિને ધર્મોદ્ધારિકા બનાવી. રાજ્યઓનો વધ ભગવાને એ માટે નહિ થયો રંગ કે
 તે તેના દુસ્મન દત્તા પરનું રાજ્યનીતિ અને ધર્મ'ને પ્રમત્તની સિદ્ધિના સુખ્ય સ્તંભ છે તેને
 તે રાજ્યઓએ દુરુપયોગ થયો દતો તેથી દેહ અને ધર્મના નેનાં મગવાનું કૃષ્ણે તેનો વધ ક્યો દતો.
 આ જાગતમાં ભાગવતનીજ કથા પૂરાવો આપે છે કે અવતારનું કાર્ય સમાપ્ત થતાં જન્મ
 યુગી પ્રાર્થનાથી ત્યારે ભગવાને શેકુંદમાં પધારવાની નિષાદી કરી ત્યારે આપે કિરાયું કે
 પાંદવપંડારા મેં રાજ્યઓનો વધ ક્યો છે તે યાદવ પંડા અને તેના મોટા મોટા મગવાર ને
 દેહ પૃથ્વીપર વિલિખાન છે અને તેઓ એમ પણ માને છે કે ત્યારનારો મોટા મોટા પોધા-
 યોનો વધ નો અમેજ ક્યો છે તેથી ભગવાન કૃષ્ણ જુદાજ ત્યાજ ક્યો ન્દાના રાજ્યઓને ને કરી
 આપણેજ ભારતના સાસક રાજ્ય ઠાં ન બનીયે? આવે: ચિત્રા ધરાવતા ઉન્નત યાદવોને ન્દાવપર
 છોટી સાથા જનું એ તો અવતારના ઉદ્ધારથી સર્વથા વિપરીત દેખાય. અતઃ આપે નન્દ્યાવા
 દારા સ્વપંચનો પણ નાશ કરાવી પ્રતને નિષ્કંટક બનાવી દીધી. આ પ્રસંગથી જાણ થાય છે
 કે ભગવાન કૃષ્ણનો અવતાર શત્રુતા કિંવા મૈત્રી મુક્તક યનો નથી પણ રાજ્યનીતિ નથા ધર્મના
 ઉદ્ધાર માટેજ થાય છે. તે અવતાર કાલ વખતે અંગે કો વખતે દશા, ચિન્તિ, આલેખ
 તથા વ્યવસ્થે થાય છે. અને તેમા કૃષ્ણાવતાર એ પાંચેયથી વિશિષ્ટનું સ્વયં મંત્રેજ પ્રકટ થયા
 છે. તેથી શીમાગવતમાં કહ્યું કે દુતે ચાંદ્રકલા: પુત્ર: ક્રાવસ્તુ મગવાનું સ્વયમ્: અર્થાત્ કૃષ્ણ એ
 અવતારી સ્વયં છે કે જેના અન્ય અવતારો થાય છે અને ને જનું છે.

શ્રીહરિચરણ.

(આખ્યાના—શાસ્ત્રિયસુધાકર ગોસ્વામી શ્રીમદ્ગોપાલકાન્ધર્વ વી. મહારાજ મુંબાદ.)

શ્રીમદ્ગોપાલકાન્ધર્વનું પ્રકટ્ય સં. ૧૬૪૭ માં થયું હતું. આપણી મુદ્રણ ઉત્તર ૧૨૦૨ થી
 વિરાજ્યા તે દરમિયાન તેઓશ્રીએ સામ્પ્રદાયિક શાસ્ત્રિય ધણુજ કરાવું હતું. તેઓશ્રીએ એકજ
 જન્મમાં ગ્રન્થ લખ્યા હોય એમ લાગતું નથી, પરનું પ્રચલન. પણ પ્રમેષા: જન્માય છે. તેઓ-
 શ્રીએ શુદ્ધકૈત સિદ્ધાન્ત અને પુષ્ટિમાર્ગનું સમ્પૂર્ણ જ્ઞાન સિદ્ધાપરોમાં કરેલું છે. આનો રીતે
 પંચોદ્ધાર સામ્પ્રદાયિક જ્ઞાનનો ઉદ્દેશ્ય દરનાર પોતેજ દત્તા. અને સમાપ્તરો અવતારનાથી
 ભરેલાં દત્તાં વગેરે પ્રાસંગિક વિવેચન કરી તેઓશ્રીએ શ્રીહરિચરણપ્રણીત 'જન્મવૈદ્ય
 નિરૂપણ' ના આધારે સમગ્રનું હતું કે જેણે શ્રીવક્ત્રમાંથીતો આશ્રય ક્યો નથી, શ્રીમુખો-
 પિતીકના દર્શન થા શત્રુ કરેલ નથી, અને શ્રીસાધિકનાથ શ્રીકૃષ્ણની સેવા કરી નથી તેનો
 જન્મ આ મુદ્દાપર કયાંજ છે. વગેરે સમગ્રની શ્રીમદ્ગોપાલકાન્ધર્વપ્રણીત 'ચિત્રિ' માંથી

તેમની દીનતાનું મારી ગીતે નિરૂપણ કર્યું હતું અને તેનો ભાવ જોતાં તેઓને શ્રીગોવર્ધનધરણ્યને આશ્વાસન થયેલો જણાય છે. આગળ શ્રીહરિગણપથવિરચિત 'શ્રીમદુગાદકતાત્પર્ય' ઉપર વિવેચન કરતાં સમજાવ્યું હતું કે શ્રીમદ્ભક્તભાવ્યાર્થને જે જે લીલામધ્યપાત્રી અનુભવે તથા તેનું મર્યાદ વર્ણન શ્રીમદુગાદકની અન્દર તેમણે વર્ણવેલું છે. મંદુરાદક એટલે પ્રભુના સાક્ષાત્કારનું વર્ણન જેને તેમ માધુર્યની ગીતમાં હોય ? કારણ કે પ્રભુવરૂપ મસાત્મક છે તે ઉપોદ્ધવાત કેવું ખરી 'શ્રીમદુગાદકતાત્પર્ય' નામના અન્ધને જગજ્ઞ ઘણીજ મારી ગીતે સમજાવ્યો હતો.

ત્યાગ્યાદ તેઓશ્રીના જ્યેષ્ઠ ભાગ્યે શ્રીહરિદેવવાચી મર્યાદયે પ્રાતંગિક કેટલોક વિવેચન કરી નિર્ણાયક નામ વેષણે નિર્ણય કરવા ઝણી છીએ તે સમજાવ્યું હતું કારણ એવું એક પણ વાન નહિ હોય કે જે શ્રીહરિગણપથના ગિરોપવચી અમણ હોય ? શ્રીમદ્ભક્તભાવ્યાર્થએ અમાધ મસુદેશી જે મહિત્ય એવું તેમથી જેમ સગ તારાઓ મસુદે તળીયે જઈ સમુદ્રમાથી મોતીને બહાર એવી લાગે છે તેમ તે અમાધ સમુદ્રમા કુખડી મારી મોતીરૂપી તાત્પર્ય સાર શ્રીહરિગણપથએ તેમના ન્દાના ન્દાના અન્ધોમા પ્રદર્શિત કરેલો છે તેમના અન્ધોમાથી 'અમાર્ગીયમુક્તિ દ્વિવિધ નિરૂપણ' નામક અન્ધમાથી 'મુક્તિ' સન્દને માટે જુદા જુદા મતવાળાઓ જુદા જુદા અર્થ કરે છે જેમ જેવાં મુક્તિ એટલે એવું સમારના જન્મ મગગુમાથી છટવું એજ મુક્તિ એવો કરે છે પણ પુષ્ટિસન્દર્શયારાગા આરી મુક્તિને ધ્વજિતા નથી કારણ કે તેમ થયા બાદ ઉપનિષદમા દર્શાવ્યા પ્રમાણે જૂનિ ભગવતી દર્શાવે છે તે પ્રમાણે પરબ્રહ્મ, પરમાત્મા ભગવાનના ગ્નાનન્દનો અનુભવ કરનારો જાગી જાય છે અને તે કર્મનો અનુભવ તેજ પરામુક્તિ છે. જન્મ મનુષ્યો દેવ તો ભગવાન માથેનો સજન થતાજ છરી જાય છે અને તેથી આવી મુક્તિને જોણ માનના લોકને વિચિત્રપણ લાગે છે. વગેરે તે અન્તર્જડગતા અને ગસમ્ય ગોપીજનોનો દર્શાવતો આવી એવું ભગવતપ્રાપ્તિરૂપી મુક્તિના લક્ષણો જાણ સારી ગીતે સમજાવ્યા હતા નહોતે નહીં થાય કે પાપપુણ્યના લય વિના મુક્ત કેમ થાય તો તે પાપપુણ્યોનો ક્ષય પણ ભગવાન પોતેજ કરે છે. જેમ અન્તર્જડગતાનો કામ તેમના પ્રભુ પ્રલયે જેનાપને માટે પ્રતિજ્ઞાવક થયો તેથી તેમને જે દુઃખ થયું તેવું દુઃખ જીન દોષ પણ પાપોથી થાય નહિ તેવું હતું જેથી તે દુઃખથી તે પાપો ક્ષય થયા અરે પ્રભુના મર્યાગના આનન્દની જે પુણ્ય હતું તેનો પણ ક્ષય થયા વગેરે વિતાગી સમજાની પેનાનું વક્તવ્ય પૂર્ણ કર્યું હતું.

શ્રીપુરુષોત્તમજી.

(ગા. શ્રીમદ્ગોપાલકાવ્યનું વ્યાખ્યાન.)

આજના ચરિત્રતાપક શ્રીમદ્પુરુષોત્તમજીના પ્રાકટ્ય વિ. મં. ૧૭૨૪ (ઇ. સ. ૧૬૬૮) માં શ્રીમદ્ગોપાલકાવ્ય થયું હતું આપશ્રીના પિતાજીના નામ શ્રીપીતામ્બરજી હતું અને આપશ્રીના દિક્ષાગુરુનું નામ શ્રીનૃસિંહચંદ્રજી હતું અને વિદ્યાગુરુ પણ તેજ હતા પોતે વ્યાખ્યાનઆમાજ સુરત પંચાયો હતા. અને ત્યાજ વિદ્યાધ્યયન તથા અન્ધયેષનાદિ આપ્યું કર્યું હતું.

તેઓશ્રીએ નવ લાખ શ્લોકો લખી પુષ્ટિમાર્ગના સાહિત્યમા અત્યધિક વૃદ્ધિ કરી હતી. એમને વિદ્યાવ્યાસજી એટલો બધો હતો - તેઓશ્રી પ્રવાસમા ૩૨ ગાડાઓ ભરી અન્ધો રાખતા. આનામા વિરાજતી વખતે પણ સુમેધિન્દ્રાદિ અન્ધોનું મનન ચાલુ રાખતા. તેઓશ્રી નવ લેખગને

સાથ રાખના અને ત્યારે જે સુસ્તુ તે તેમને લખાવના જતા તેઓશ્રી એક જ સાથે ૪૫ શાસ્ત્રીય લેખ લખાવના એવી કુળાચ શુદ્ધિ અને એવું ગભીર પાંડિત્ય હતું.

શ્રીમત્પુરુષોત્તમજીના મમકાલીન શ્રીહરિરામચરણ સાધામેનીચ શ્રીવિદ્યેશ્વરજી થઈ ગયા. શ્રીપુરુષોત્તમજી તદ્વાગજનુ તારણ અને શ્રીદક્ષિણમચરણનું વાર્ધક્ય ઇતિહાસ કરે છે. શ્રીવિદ્યેશ્વર સાથે કદાચ શ્રીપુરુષોત્તમજીની વયના હોય, પરંતુ શ્રીપુરુષોત્તમજીએ નિત્યજીવાપ્રવેશ પ્દાર અને ઇતી વયે ત્યાં? એનો ઇતિહાસ હતું અપૂર્ણ છે. ગોલોકવાસી ભગવાય લતુભાષ પ્રાણપ્રલમ્ભ પાછેખ આલિનુ કથન છે - શ્રીપુરુષોત્તમજી ૪૫ વર્ષ જૂનપર વિરામ્યા અને ગોલોકવાસી નગવદીઃ શ્રીયુત્ત તેનીચાગાનુ કથન છે કે દર્શદિગ્મન્તિન્યા શ્રીમત્પુરુષોત્તમજીની કાર્યદિન્યા નેઈ તેઓશ્રીની અવન્યા અપ કપરી હીઠ નથી પણ ૧૦૦ વર્ષની દોષી નેઈએ તેઓ પોતાના મનની પુષ્ટિમા પુષ્ટિસુવાના એક બાક 'શ્રીપુરુષોત્તમજી' એ રીઈટના લેખમા જણાવે છે કે -

દિગ્મન્તર કરી આવ્યા પછી શ્રીપુરુષોત્તમજીએ નિર્ધનિવાસ સુગમ કર્ષે સુ તમા શ્રીમાય પૂજણના મન્ત્રિમા વગલગ રાનર્ષિ વિગજને શ્રીમાયપૃથ્વ્યપ્રભુની નામમંવા અને સ્વરૂપમેવા કરી વિપ્રયોગ મ્મ અનુભવી નિત્યમયોગમ્મ અનુભવવાને માટે સં. ૧૮૧૦ પછી અથવા જનનાય અમરજી શાસ્ત્રીના દેવા પ્રમાણે સ. ૧૮૨૦ પછી જે નિત્ય ગોકુલધામમાથી જૂન ઉપર પધાર્યા હતા તદાજ અને પવતી ગયા. શ્રીપુરુષોત્તમજીને કટનાક સંગન લ. પ્રા પારેખ પ્રસૂતિ ૮૧ વર્ષની વયે પનારી ગયાનું જણાવે છે, પરંતુ તે ઐતિહ્ય પ્રમાણ્યુત વાગતુ નથી ઉક્ત ઐતિહ્યના ચિત્રહમા બે સાર્ત્ત બ્યાનમા રાખવાની જે પ્રા મનનાય શાસ્ત્રીજી માથે પ' મુદ્દ વાટખો માન્ત્રપ્રાપ્તિક પુત્રક સમ્રદ જેવાનો વાસ મન્યા હતો, ત્યારે એક પુત્રક-નિમનવના ભાગવનાથ-મન્ત્રજીની દ્વારશરણવતી ગણિકા મ્દારી દષ્ટિએ પરી ઉક્ત પુત્રકથી ત્રણ વાર્તો માગ મજુવામા આરી (૧) એ કાન્ડિ સ. ૧૮૧૦ મા લખાયવી હતી. (૨) એ કાન્ડિકાનુ પુત્રક શ્રીપુરુષોત્તમજીનું હતું કાન્ડુ અન્ય ઉપર પુરોક્તવાનમ્ એમ તે મનનાય ન્યામીનુ નામ લખેલુ હતુ. અને (૩) એ કાન્ડિકાએ સામાન્ય રીતે શ્રીમદ્વાપ્રભુજીની કહેવાય છે તેમ નહિ કહ્યા ઉક્તમનના નીકાકર શ્રીમત્પુરુષોત્તમજી તેને શ્રીમત્પ્રભુચણ શ્રીયુસાર્થજીની કહે છે. પરિણે યેન્ય એવી રીતે મનનાય નદમ અદારેમા ટિપ્પણ કરેલુ હતુ. તે ઉપથી એટલુ મિદ થયુ હતુ કે શ્રીપુરુષોત્તમજીનું સ્વદેશાધિગ્નુ ટિપ્પણુ તે ન દોષ તો પણ એ પુત્રક ૧૮૧૦ ન સવનનું દોષથી અને એ પુત્રકના ન્યામી શ્રીપુરુષોત્તમજી દોષાથી સ. ૧૮૧૦ મા શ્રીપુરુષોત્તમજી જૂન ઉપર વિરાજતા હતા એ મિદ્દ થાય છે જનનાય શાસ્ત્રીના અન્ય સમયે તેમને મન્યા હતો મમપ્રદાય સમ્મન્ધી વાત કરતા અને ખાસ કરી શ્રીપુરુષોત્તમજી મમન્ધી વાર્તો કરતા એમણે કહ્યું કે શ્રીપુરુષોત્તમજીને સં. ૧૮૨૦ મા કાશીના વેણીમ્દ નેડે નાસ્તાર્થ થયો હતો જે વેણીમ્દના વરયો હાલ કાલીમા છે. આ બે વાનો ઉપગમ શ્રીપુરુષોત્તમજીની અગ્રાધ આદિત્ય-પ્રવૃત્તિપ્રતિ દષ્ટિ કરના દીર્ઘવનના અનુમાનને પુષ્ટિ મને છે (પુ સુ. પુ ૫ અ ૩, ૫ ૪૬-૫૦)

આવી રીતે બે નત છે ત્યારે એક ત્રીજો કે વાની વય હતી એમ કહે છે. મને તેજીવાગનુ કથન અન્યેના કરતા નીક લાગે છે શ્રીપુરુષોત્તમજીનું જીવનચરિત્ર અકાટ્ય ઐતિહ્ય પ્રમાણેથી ભરપૂર પ્રકટ થયુ નેઈએ. તેના અભાવમા કદા પણ વિચય નથી થઈ શકેતો

આવા હિસેવો સમાજોથી માત્ર ઉત્પાયા એમ ન માની લેવુ પરંતુ શ્રીપુરુષોત્તમજીનું જીવન 'શ્રીપુરુષોત્તમજીના' પ્રક, થવી નેઈએ અને તદ્વાગ શ્રીપુરુષોત્તમજીના મન્યોન

અવરિચન સુદૃષ્ય અને અનુવાદોત્તુએ પ્રકાશન થતું રહેતું નેહ્યં. ‘શ્રીપુરુષોત્તમચાંદ્રાણા’ દ્વારા તેમના ગ્રન્થોત્તુ પહેન-પાદન પણ થતું નેહ્યં. જે આવા રચનાત્મક કાર્યોને દિવાનું સ્વરૂપ અપાવે તોજ ખરો ઉત્સવ ઉજવ્યો કહેવાય. દશદિગ્તપિચિત્તી શ્રીપુરુષોત્તમજીના દેટલાક ગ્રન્થરત્નોત્તુ રચ્ય નામ આ પ્રમાણે છે:—

(૧) ભાવપ્રકાશ, (૨) સુવર્ણસ્તન, (૩) આપરણમંગ, (૪) મુખોદિતી પ્રકાશ, (૫) પ્રસ્થાન રત્નાકર, (૬) પોદશગ્રન્થવિવૃત્તિ, (૭) અવતારવાચવતી. (૧) પ્રહસન, (૨) પંડિતકરભિન્દિપાત્ર, (૩) સંપ્રિયેદવાદ, (૪) આયિર્ભાવ વિરોધાવવાદ, (૫) ખ્યાતિવાદ, (૬) પ્રતિબિંબવાદ, (૭) અન્વે-કારવાદ, (૮) શાદાલુત્વાદિભતિ અપહનવાદ, (૯) છવ્વ્યાપકત્વઅપહનવાદ, (૧૦) છવ્વપ્રતિબિંબત્વ અપહનવાદ, (૧૧) શિર્ષપુરુષનિર્ણયવાદ, (૧૨) તુલસીમાળાધારણવાદ, (૧૩) શંખચક્રધારણવાદ, (૧૪) સૂતિપૂરવવાદ, (૧૫) ખડાવપત્તિવિષ્ણુવાદ, (૧૬) ભાગવતશંકાનિરાસવાદ, (૧૭) ઉપદેશ-શંકાનિરાસવાદ, (૧૮) ભક્તિસુહર્ગવાદ, (૧૯) વસ્ત્રસેવાવાદ, (૨૦) બેદાબેદવાદ, (૨૧) અભાવવાદ, (૨૨) આત્મવાદ, (૨૩) સ્વદક્ષિણવાદ, (૨૪) ન્યયશ્રીકૃષ્ણોચ્ચારણવાદ આ સિવાય અન્ય પણ રચનાકાદ્મન્થો દશે જેનો સમાવેશ વાદાવતીમાં નથી.

(૮) ઉત્સવપ્રતાપ, (૯) દ્રવ્યશુદ્ધિ, (૧૦) ભક્તિદર્શનવિવૃત્તિ, (૧૧) ભક્તિદેવુવિવૃત્તિ, (૧૨) પૂર્વગીર્તાસાહાયવિવૃત્તિ, (૧૩) ન્યાસાદેશવિવૃત્તિ, (૧૪) ગાયત્રીકારિકાવિવૃત્તિ, (૧૫) વક્ષભાષ્ય-વિવરણ, (૧૬) ઉપનિષદસંગ્રહ, (૧૭) માંદગ્યદીપિકા, (૧૮) બાંદગ્યદીપિકા, (૧૯) મ્વેતાશ્વર-દીપિકા, (૨૦) અધિકરણમાસા, (૨૧) ભાવપ્રકાશિકા ઈલાદિ.

આવા સમર્થ સાર્વત્રિક વિદ્વાન ગ્રન્થકાર શ્રીપુરુષોત્તમજી મહારાજ પવિત્રતમકુંડલેશ્વર હતાં. એમાં સન્દેહ નથી. તેમના દિવ્ય જ્ઞાનમાંથી માત્ર સેવારસનો પ્રવાહ અને વિદ્યાદધિ ઉછળી નો છે. આને આપણે હૈમનો ગુણાનુવાદ ગાર્હ ઉત્સવ ઉજવી કૃતાર્થ થઈએ છીએ.

શ્રીપુરુષોત્તમજીના દિવ્ય જ્ઞાન ઉપરથી અમ્હારા ભોક્ષે માટે પ્રભુસેવા સાથે પ્રખરવિદ્યા-વિનોદ અને વિદ્યાધ્યયન સમ્પ્રદાય, પાદન કેષનાદિ કર્તવ્યજ રપટ થાય છે.

(રા. રા. તુનીલાલ પરીખનું વ્યાખ્યાન.)

આને પરમપૂત્ર દશદિગ્તપિચિત્તી ગોરવાગી શ્રીપુરુષોત્તમજી સતરમા સૈકામાં પધારી તેમ્ને જે જાનહદ આપાર આપણુ પર કર્યો છે અને તેમ્ને આને પણ સ્વદેશતાશરકારા, નામસંપ્રદાસ, ગ્રન્થોદ્ધારા આપની સમક્ષ ખિરાજ રહેલા છે. તેવા ગોરવાગીશ્રીનો પ્રાદુર્ભાવ આજના રણીઆમણા દિને આ ભૂતકપર થયેલો છે. તેમનાં ચારિત્ર્યથી આને અડી સદી થયાં જાણે હાલ ખિરાગત્તા ગોપ નહિ તેમ રપટ સમગ્રાય છે. તેમનો પ્રાદુર્ભાવ સંવત ૧૭૨૪ ભાદરુકલ એકાદશીએ થયો દનો. આપણે પણ આજનો દિન તે તિથિ હોવાથી ઉત્સવ ઉજવવા એકાં થયા છીએ.

ઉત્સવ દિને સજાઓ ધણી વખત લરી છે છતાં કોઈકજ સજા પિસર્ગન પડી સજામાં ઉચ્ચાશયેત્ર-મહાપુરુષોના ચારિત્ર્યનું મનન કરતું દશે ? ઉત્સવ ઉજવવાનું પ્રયોગન થું ? શામાટે એકાં થતું ? તે વિચારીયે તો દીવા જેવું રપટ છે જે તેમના ચારિત્ર્યમાંથી નેટકું વધુમાં વધુ અને તેટલું ચારિત્ર્ય આપણા જ્ઞાનમાં ઉતારી જે મહાન પુરુષોએ આપણે માટે અસાધ મહેનત લઈ શ્રમ વેડી જે સાહિત્ય આપેલ છે, તેનો ઉપયોગ કરી તેમના ધાણમાંથી મુક્ત થતુંજ નેહ્યં.

આ ચારિત્ર્યોનું શ્રવણ કરી આપણી છત્રાસા પ્રદીપ સાથે તે માટે આપણે એકાં થયા છીએ. જે તે છત્રાસાથી ન્યોત પ્રકટે નહિ તો આ સર્વ વ્યર્થજ જાય. હું આજા રાખું છું જે આને આપની સમક્ષ ગોરવાગી શ્રીગુરુનાથરાજ આપણે અને આશીષ દરિયકરજીએ તેમની વિદ્વા,

હવે તેમણે અગાધ શ્રમ લઇ જે સાહિત્ય આપણને આપ્યું તે શું, વધારે શું આપણે ફરજ તે લાલુવા લાલુવાની નથી. આજથી ૫૦-૬૦ વર્ષ પહેલાંના આપણા સંપ્રદાય માટેના વિચારો ત્યારે વાંચવામાં આવે છે ત્યારે રૂબે રૂબે ફરકે છે કે ક્યાં સાહિત્યસમુદાય અને ક્યાં નેચરની તે માટેની અજ્ઞાનતા. હવે પ્રભુકૃપાથી આ સમર્થ પછી ઘણા ખરા પ્રયોગો થયાં બન્યાં છે તે શું આપણે તે જાલ ન લઈ શકીએ? કદાચ કોઈ કહેશે જે તે માટે પ્રયોગ ક્યાં છે? ક્યાં લાલુવા બંધ છે? અરુ. જાહેર રીતે દાસ પુરેપુરો પ્રયોગ ન હોય તેથી શું ખાનગી રીતે તો તે જાલુવા, પૂરેપૂરો પ્રયોગ છે. જેમ અર્જુન સિંધુસેત્રેઈ રાધિ એમ કહીને બે હાથ જોડી શ્રીકૃષ્ણને સરણે ગયા તો તેમને ગીતામૃત અવશ્ય મળ્યું તો આપણે પણ ગાદ નિદાને ત્યાગ કરી અવશ્ય તે લગ્નનાનંદ-રસાનંદ રૂપી અમૃત મેળવવા પ્રયત્ન કરવો જોઈએ. મારી પોતાની ખાતરી છે કે જે જીવંતના આમ અને પ્રેમ હોય તો શ્રીમદ્દાપ્રભુજી જરૂરે તેવી સર્વ સમગ્ર કરી આપે છે તેમાં જરા પણ શંક નથી અને મને આજે પણ શ્રીસુખે વિનીજી તેમના વંશજદ્વારા તેમના વચનામૃતથી સાંભળવાનું ભાગ્ય પ્રાપ્ત થયું છે-ને જે સર્વે પણ નદિ પાનેશ તે કાર્ય પ્રત્યક્ષ અનુભવું છું, હવે એવા જમાનો નથી જે આપણું ભાગ્ય આંધળાની માફક દમણે અવશોષન કરે. હવે વિચારશક્તિના જમાનો છે તેથી આપણી પ્રથમ ફરજ સિદ્ધાન્તો જાલુવાની છે જે બાળકોને તે નાનપણથી નહિ જાણવાશે, અને તેમની શંકાએ દૂર નહિ કરીએ તો તેઓ નારિતક યશે તે હોય આપણો પોતાનો જ છે. બાળકોનો નથી. આલકને ઉચ્ચે પાસ બેસવા ન દેવો હોય, સદ્ગુણી બનાવવા હોય તો અવશ્ય આપણે જ સિદ્ધાન્તો જાલુવા જોઈએ. રાજ પ્રભુ તેમ કરવાને આપણ સર્વે શુદ્ધ હૃદયપૂર્વક સુદ્ધિ અર્પે અને શ્રીમદ્દાપ્રભુજી કૃપા કરી અનુગ્રહ કરી સર્વ સમગ્રો પૂર્ણ કરે એવું ઇચ્છી આજનું વ્યાખ્યાન સમાપ્ત કરું છું.

વડવાણમાં ભગવદીય ગોપાલદાસજીનું ભાષણ.

પ્રત્ય નેપ્પણે, આજે આપણી આ સભા આજના ઉત્સવનાયક દશદિગંતવિજયી પંડિત પુરંદર શ્રીમદ્ગોસ્વામી શ્રીપુરુષોત્તમજી મહારાજશ્રીના જન્મમહોત્સવ નિમિત્તે મળી છે. અને સાથે સાથે કવિશ્રી ભક્તશિરોમણિ શ્રીદયારામભાઈના પણ જન્મદિન નિમિત્તે છે. શ્રીપુરુષોત્તમજી મહારાજ શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીના વંશમાં સાતમા પુરુષ છે. શ્રીમદ્વિદ્વંશનાયજી (શ્રીશ્રીસાધજી) ના તૃતીય કુમાર શ્રીમાતૃકૃષ્ણજીના વંશમાં શ્રીપીતામ્બજી મહારાજના આ શ્રીપુરુષોત્તમજી છે. આ મહાન આચાર્યશ્રીનું પ્રાકટ્ય ગોકુલમાં સંવત ૧૭૨૪માં થયું હતું. આ આચાર્યશ્રીએ (શ્રીપુરુષોત્તમજી) એ નાની ઉંમરમાં વેદ વેદાન્ત સ્મૃતિઓ સારાં સારાં અભ્યાસ કર્યો હતો અને પોતાની લાયક ઉંમર થતાં તેઓશ્રીની મજૂરી સમર્થ પંડિતોમાં થતી હતી. આ આચાર્યશ્રીને પોતાના આલયુર શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજી અને તેમના રમેલા પ્રયોગ ઉપર ઘણો જ રુચી હતો. આ આચાર્યશ્રી વિંઝે એવું પણ સાંભળ્યું છે જે તેઓશ્રી બાદવાવરધામાં હતા. તેઓશ્રીને પ્રથમ રાજ્યોનું જ્ઞાન ન હતું. ત્યારે તેમના પિતાશ્રી પરદેશ પધાર્યા ત્યારે કોઈ પંડિત આ શ્રીપુરુષોત્તમજી સાથે વાદ કરવા માટે આવ્યો. ત્યારે પોતે શ્રીસર્વોત્તમજીના પાઠ કરી શ્રીમદ્દાપ્રભુજીનું સ્મરણ કરી પંડિત સાથે વાદ કરવા નેશ અને તેમાં પંડિતને નિરાસર કરી પોતે વિજયી બન્યા. ત્યાર પછી શ્રીમદ્દાપ્રભુજીએ તેમને દસન આપી પોતાના પ્રપણા પ્રયોગ વાંચવા જાણવું અને તે પ્રયોગ આપણી હૃદયારૂં યથા અને શ્રીપુરુષોત્તમજી પંડિતાને પાઠ થઈ આપણીએ નિર્ભય સાદિ પ્રયોગમાં ટિપ્પણ વગેરે લખીને મૂળ પ્રયોગમાં ભગી એના અન્ય લેખાનું પૃથક્કરણ કરી બતાવ્યું હતું.

આ ઠામ એમણે ઘણી બારીક દ્રષ્ટિ અને તીવ્ર યુદ્ધિથી કરેલું છે. આ શુભપરિણામને લીધે શ્રીમદ્વાપ્તુજીના ગ્રંથોમાં વધારો થઈ રાખ્યો નથી અને હવે પછી વધારો થવાનો સંભવ પણ નથી. કારણ કે અમુક ગ્રંથ શ્રીમદ્વાપ્તુજીના લખેલ છે કે નહીં એવી શંકા થાય ત્યારે તેનું નિરાકરણ એ ગ્રંથ ઉપર શ્રીપુરુષોત્તમજીની દીકા છે કે નહીં એ પ્રશ્નના નિરાકરણથી થાય છે. જો આ કાર્ય દશદિગંતવિજયી પંડિતપુરંદર શ્રીપુરુષોત્તમજી મહારાજશ્રીએ કર્યું ન હોત તો આપણુ વૈષ્ણવ ભારે મુશ્કેલીમાં આવી પડત. આચાર્યશ્રી વિદ્વાન કે પંડિત હતા એટલુંજ નહિ, પણ શ્રીમદ્વાપ્તુજીની માફક એમને સેવામાં પણ ધણીજ રસ હોતો. પોતા મંગળાથી સેવામાં પ્રવેશ કરતા અને શુંગાર આરતી સુધી રહેતા. વૈષ્ણવોમાં ભક્તિ અને જ્ઞાનનો વધારો થાય તેટલા માટે પોતે નિત્ય કથા કરતા. આ આચાર્યશ્રી ઉત્તમ વક્તા અને સમર્થ લેખક હતા. આ આચાર્યશ્રીના વિવિધ દશ દિશામાં થયે હોય અને પોતે ખનાવેલા ગ્રંથોમાં નવવક્ત્ર શ્લોક થાય છે. સુરતમાં મોટી આગના સમયમાં થયેા ગ્રંથો બચી ગયા તેથી એમના અધ્યયન સચો હોય લાગતા નથી. આ ધર્મધુરંધર આચાર્યશ્રીએ ચાર ધામની યાત્રા કરી અને કે પંડિતો સાથે વાદ કરી તેમાં પોતે વિજય મેળવ્યો હતો. આ આચાર્યશ્રી આપણુ આ પુષ્ટિ માર્ગમાં બીજા દિગ્વિજયી પુરુષ થઈ ગયા છે અને આ મહાન આચાર્યશ્રીએ પોતાની ૬૦ વર્ષની વયે લીલાપ્રવેશ કર્યો છે. વૈષ્ણવો આ દુરંધર આચાર્યશ્રીના નક્ષત્ર છે. આ આચાર્યશ્રી વિશેષ જ્ઞાનખાણ આપવાની જરૂર નહીં હોય. આજે હું મારી આપ યુદ્ધિઅનુસાર શ્રીસુરદેવની કૃપાપણે આપ સમક્ષ કાંઈ જોડી રહ્યો હતો. તે પણ આ આચાર્યશ્રીની કૃપાથીજ જોડાયો છું.

શ્રીતિલકાચત.

(૧)

શ્રીગોવર્ધનલાલ ! કહ્યાં જઇને નિવરણ કરો ? વૈષ્ણવજન આધાર, શ્રીહારતણા ધામી !

(૨)

કરણના અંદાર, કરણ કરી દેવી પર; હોડી આ મંસાર, વિમસો હો કઈ રાટિમાં..

(૩)

મુક્તમને કાન, હોડ્યાં શ્રીહના ચરણ; પાછા નાગ્યા આપ, શ્રી કરા સાન્નિધ્યમાં..

(૪)

હૃદય દે છે આજ, સમાચાર અવરો સહી; ક્યાં વિરસો મહારાજ ? કલી ઘા, કલી ઘા આપથી.

(૫)

તેવ્યા આસા તાર, હોડ્યાં બન્ધન જગતનો; નિવરણ શ્રીની પાસ, લીલા કરી ગયા ભૂતને.

(૬)

શ્રીગિરિધરના આસ, 'ગિરિધર' કરી અંબલિ; સ્વીકારજો શિરતાન, અદાંતસિ 'સચ્ચિદ્ર' તમી..

“સચ્ચિદ્ર”

કનકાભિષેકનો અનુભવ.

શુદ્ધદેવ ભક્તિમાર્ગમાં આડમા વર્ગના પાંચમા અંકમાં કનકાભિષેકનો શ્રેષ્ઠ શાસ્ત્રીય જટાશંકરભાષીનો વાંચ્યો. વાંચી તે સંબંધમાં અને મારો અનુભવ પ્રકટ કરવાનું મન થઈ ગયું. જટાશંકરભાષીને કનકાભિષેક સંબંધમાં તપાસ કરવાનું કાર્ય સોંપનાર અને મને સાક્ષાત્ કનકાભિષેકનાં દર્શન કરાવનાર એકજ અવતારી પુત્ર છે, તે તો મારો આ અનુભવ વાંચ્યા પછી વાચક અંતરમાં જાતેજ વિચારીને તેમાંથી શોધી શકે. ભૌતિક દૃષ્ટિએ કાંમ કરાવનાર લુદો દોલ ને આંતરદાક્ષિ પ્રેરી કામ કરાવનાર લુદો દોલ એ વસ્તુ અહીં ખૂબ સમજાવા જેવી છે. મુદા-કંતના ઘડા (કનકાભિષેક સંબંધના શેષના) પેર પર જે પદ આપ્યું છે તે પદની આરમી અને તેરમી વૃક્ક ભવિષ્ય વાણીની છે, તેની સાથે મારા અનુભવનો સંબંધ છે. મારે અહીં આપું છું તે એક નુક અહીં હું ફરીથી આપું છું. નરસિંહ મહેતા જેમ શ્રીકૃષ્ણમાર્ગના વર્ણક છે ને “શ્રીવલ્લભ વિદ્ય ભક્તે પ્રકટીને પુણ્યમાર્ગ ને વિદ્ય કરશે” ને ફરી નિરૂપાધન તરીકે આપ ઉદ્ધાર કરશે; એવું એક દર્શનમાં વર્તે છે. આજ પ્રમાણે આ લકુડિદાસ દાસના પ્રાકટ્યના આરમી વર્ષ પરના વચ્ચા છે એમ કહીશું તો જોડું નદિ કહેવાય. આ લકુડિદાસ કાણ કના તે સંબંધી અત્યારે ખુલાસો આપવામાં નદિ આવે. કારણ કે શેષ અહીં કાંજો થઈ ગયે, માટે મળે વાત પર આવીએ.

દેવદીપ્તસો વક્ત્રલ જન્મે મેરે અંશ કહાધા:

નભ દિર શ્રીહરિ ચમુનદૂપતે આપ પ્રકટ હોઈ ગયો, તુમ પ્રભુ ૧૨ શ્રીગુરુકી ભવિષ્ય આનિ મુનિ સકલ શિષ્ય મુખ પાવો;
કાસ લકુરિ પદરજ શિર ધરી શ્રીગુરુકે મુન ગાયો.

પ્રભુ તુમ વક્ત્રલનામ ધરાયો. ૧૩.

ઉપરની વૃક્કમાં “દેવદીપ્તસો વક્ત્રલ જન્મે” એવું જે કાવ્યમાં છે તેનો ભાવ એવો છે કે નિત્યક્રીડાત્મક પંચમણીકાંધીશ્વર જાપાશ્રી દેવદીપ્તદેવનાચાર્યશ્રી તે છે. આપશ્રીનું નામ “શ્રીદેવદીપ્ત” છે. આપશ્રીના કુમાર વિદ્યાનંદના અનુચર પંચમણીકાંધીશ્વર શ્રી ૧૦૮ શ્રીવલ્લભાચાર્ય છે ને “વક્ત્રલ જન્મે” આ વચનનો ભાવ છે. ભવિષ્ય વાણીનું કથન આ પ્રમાણે દોવાથી એ સાવચીત્તા યમુનાદૂપમાંથી નીકળેલી વસ્તુઓ તેમજ પ્રત્યુંત્તરવર્ષ અન્ય કોઇ આચાર્યશ્રી પાસે ન જતાં પોતાની પાસે પધાર્યું છે. એ દર્શક મળ શ્રીનંદાપ્રમુખને મીનાશ્રી રાણીએ પુટ કરવા એવવા આપેલું તે છે, ને એજ શ્રીવલ્લભાચાર્યશ્રી આ પ્રાકટ્ય દોવાથી ભવિષ્યવાણી પ્રમાણે પોતાને માથે પધાર્યું છે ને વસ્તુઓ પણ પોતાની પાસે આવી છે.

એ રામપ્રપન્નાચાર્ય છે અથવા રાજેન્દ્રનાથજી કાણ છે, તે ખુલાસો અત્યારે નદિ આપવામાં આવે, પણ તેમની આરમી આ વસ્તુઓ તેમજ કુદો પ્રકટ થયો તેનું કારણ પાંચ પ્રાચીન સંબંધ છે. જે તાડપત્રોનો નાશ કર્યો, તેનું કારણ પણ પ્રાચીન છે. જેમણે તાડપત્રોનો નાશ કર્યો તેમના (જેને) કાથે સંપ્રદાયના ઘણા ગ્રંથોનો નામ પૂર્વના જન્મોમાં થયો છે.

આની બીજી વૃક્કમાં (તેરમીનાં) “શ્રીગુરુકી ભવિષ્ય આનિ” એ શબ્દો લખ્યા છે તેનું કારણ એ છે કે શ્રીમદ્વપ્રમુખને એનેજોનો ઉપદેશ સમતાં ફરી તે વસ્તુઓની શોધ મારે ૭ મારે પ્રયત્ન કરવા છતાં કાલની માફક મુશ્કેલીના ગાનની શુદ્ધિ નદિ દોવાથી તે જગ્યા સાવચીત્તા યમુનાદૂપની જરી નંદિ મેથી તે અહીં પોતાના પુત્ર પ્રાકટ્ય સમયે પ્રકટ થશે એવી એમાં રાષ્ટ્ર

મંત્રા છે, એ તેજ પ્રાકટ્ય ચતુર્થપંચમપીઠધીશ્વર શ્રી ગો. શ્રી૧૦૮ શ્રીવજ્રભાગ્યપંથ મંદા-
રાશ્રી છે. આપશ્રી આપ સંસ્કૃતિના મહાન દરજે છે, ને તે કાર્ય લલિત્યમાં પણ આપશ્રીનેજ
યોરે પ્રમુખે ધર્યું છે. આપશ્રીની રક્તિએ તે કામ કરીજ નહી છે. આમાં જે સંસ્કૃત સિધિનું
'વિચારત્તમ સમર્પયેત' સુધીનું અખાલુ છે, તે શ્રીમદાપ્રભુજી પરિશ્રમમાં સાથે રાખતા કરણ્ય
પોતે વિદ્યાનગરમાં (પિત્રવનગરમાં) સર્વ ધર્મો પર સિધ્ધિવત્ય કરી મુદાકૃત ભક્તિમાર્ગનું
આપના કર્યું, ને તેથી કનકાલિંગક સાથે અન્ય અલિંગક યથા તેના પુરાણ તરીકે સુવરાજક્રમાર
પ્રયત્નસેનાનિ (ભવિષ્યની કૃષ્ણદેવ રાજ્યની) સહી સાથેનું સર્વિશિષ્ટ છે. તે સમયે સર્વજ ખખર
જાણનારા દાસના જેવા સાધનો નહિ હોવાથી તે સાથે રાખવાથી વારંવાર કાઢને સિધ્ધિવત્યની
વાતો આપવાની જરૂર ન પડે, માટે સાથે રાખવામાં આવ્યું. તે ઉપરવને કીલે કૃપનાં પવરાત્રી
પ્રેક્ષુ ને પોતે ઉપક્રમ સમતાં લઈ જવાનો નિર્ણય કરેલાં પણ લલિત્યના પુનઃ પ્રાકટ્યના પુરાણ
પર તે જગાં પ્રમુખે ન દેખારી ને તે વસ્તુ સ્પષ્ટ આપણે આપને અનુભવી રંગા છીએ.

સુવરાજકે પદેમાં ને આજે પણ સુદની તારીખે આપવા માટે મોટા લગ્નકરી દાંડા પર
આપના કરવામાં આવે છે. તેમ સુવરાજ કૃષ્ણદેવને સેનાનિ તરીકે રથાપન કરવામાં આવ્યા દગ્ગ
ને પોતાના પિતા વીર રસિદના સદ્ગત યથા પડી ગાદી પર આવ્યા. વીરનસિદ તે ધાર્મિક-
કેળવના વાદવિવાદને સમયે તથા કનકાલિંગક સમયે સખ્ત બીમાર દગ્ગ, તેથી સુવરાજ કૃષ્ણ-
વને સાથે કનકાલિંગક રનાન કરાવ્યું, પણ એથી વીરનસિદને સતોષ ન થયો તેથી નેમજો.
તીજે દિવસે પોતાની આરાગના મીનાકીને સાથે રજતનનાન (રજત અલિંગક) કરાવ્યું. એ
તેમ પિત્રવના પુરાણ માટે સાતેય દિવસ જુદી જુદી વસ્તુઓથી આલિંગક રનાન કરાવ્યું. જેમ
જાન્યે સાત દિવસ શિરિરાજ ધારણ કર્યો, તે માત્ર દિવસ નહિ પણ આવાગિયાના દિવસ
પાત વાર છે તે નિત્ય છે તેથી ભાવ એવો છે કે સાત દિવસ એટલે સાત વાર જેમ નિત્ય છે
તેમ પ્રભુ સાતેય વારે નિત્ય શિરિરાજ ધારણ કરે છે. તેથી શિરિરાજવરણની લીલા નિત્ય હોવાથી
આપણે શ્રીશિરિરાજવરણ કી જય હમેશી બોલાવે છીએ. આમ કનકાલિંગક સાથે રજત અલિ-
ક વગેરે સાથે સાત અલિંગક કરાવ્યા નિ શ્રીમદાપ્રભુજીના નિત્ય પિત્રવ માટેનું નિમાન છે.
તેકાપ્રાપ્તિ જય કરાવે છે.

મારો સાદ્ગત અનુભવ ખાસ નજરે લેએલો.

આ કનકાલિંગક મેં નજરે લેયો છે. તે હું કુંકાલુમ. અહીં જેટલું જરૂરી છે
તેહું આપું છું.

શિરાજમાન ચતુર્થપંચમપીઠધીશ્વર શ્રી ગો. શ્રી૧૦૮ શ્રીવજ્રભાગ્યપંથ કે જે શ્રીમદા-
પ્રભુજી પુનઃ પ્રાકટ્ય છે તેઓશ્રીને અપરાધ જ. ૩ નો પ્રાકટ્યદિવસ હોય. તે મનોદય કરવા
પોતાની પાસે ગયો. આગતે દિવસે રથયાતા હતી. તેથી રથયાગના ઉત્સવથી પવરાત્રી આપશ્રી ગાદીપર
મરાગ્યા. આ વખતે આપશ્રીને હું પોણા કરને હતા, આપશ્રીએ પોતાના ચરણરવિંદા બચતમાં તકોયે
તે માગે તરફ લાંબા કર્યા એટલે હું ચરણરવિંદાના ચિન્દ નિરખવા શરૂએ. ચિન્દન મને જ્યાં
પ્રિયમંઈકના ચરણરવિંદાનોજ મને દર્શન થયાં. પડી પોતાની પોતીમાં મારી દરિ મહ. આ
ખતે આપશ્રીના ચરણરવિંદાની પામીયાં મને મારું સમાન તેજ દેખાડું. આ તેજ મારી દરિમા
સહુમાં) જેમ સર્વનાં કિરણ પડે તેમ વચ્ચું. મને મારી દરિ તુમ્મ બાદગમણી લાગી. પોતાનું
અંત નિરણું છું. તે સાદ્ગત શ્રીમદાપ્રભુજીનાં મને દર્શન થયાં. મીઠાંજ તરફ કૃષ્ણ-કૃષ્ણ દર્શ-
ન આવ્યું. પીસ મિનીટ આ દર્શન થયાં. પડી પાછું શ્રીમદાપ્રભુજી વચ્ચે નિરખવામાં આવ્યું.

આ પછી થોડી વાર પછી આપશીએ અને શ્રીગોકુલેશ્વરે દર્શન આપ્યાં ને ઉપર નજી શ્રીહરિપદ સાક્ષાત્ ગિરાન્યા હોય તેવાં દર્શન થયાં. આમ સર્વ કલાકમાં આ બધું બની ગયું. આપશીના શ્રીઅંગનો વર્ણ (૨૦) સ્થાપ છે, તે વર્ણ શ્રીમદ્દાપ્રભુજીના શ્રીઅંગનો વર્ણ છે, છે શ્રીઅંગનો દેખાવ ને અંગ સાક્ષાત્ શ્રીગુણાંબુ છે. પછી રાતના ટું સુતેસો ત્યાં આની આ દેકાણા વગરની દશમાં અને સાક્ષાત્ શ્રીમદ્દાપ્રભુજીની ઝાંખી થઈ તેમાં આપશી નજી પાંચ વર્ષના ગિરાન્યા છે ને પાસે લક્ષ્મણભટ્ટ શ્રીગીતાજીનો અગ્રદમો અધ્યાય વાંચે છે ને સંસ્કૃતમાં તેના અર્થનો ભાવ વિચારે છે, તેમાં “સર્વધર્મોન્નપ્રિયઃ સ્વયં ભગવતઃ સર્વ પાપેભ્યો મોક્ષયિષ્યામિ મા શુચઃ” આ શ્લોક વિચારતાં શ્રીમદ્દાપ્રભુજી લક્ષ્મણભટ્ટને સંસ્કૃત ટીકા સમજતાં બૂલ ખતાવી ન્યાસાદેશ અર્થ સમજાવે છે. લક્ષ્મણભટ્ટ સંસ્કૃતમાં સમર્થ વિકાસ હતા. આ દરમિયાન બોમતી મીનિમાની શીત્રમની પેટેજ નેથું અને સાંભળ્યું ને શ્રીમદ્દાપ્રભુજીએ આ શ્લોક સમજાવ્યો તે પછી મેં પાસે બેસીને નજીને સાંભળ્યો.

પછી એકલા કનકભિરેકની અને ઝાંખી થઈ તેમાં મેં એક મોટી સુવર્ણની કથરોદ મોઢી આ કથરોદમાં કોઈ કોઈ જગાએ હીરા વગેરે નંગ જડેલાં હતાં, તેની અંદર મેં સુવર્ણના ચાર છોટા પછી મુંદર હાથી જોયા. આ ચાર હાથી પર ચાર સુવર્ણની પુતળીઓ હતી, તે દરેક પુતળીને ચાર ચાર લાથ હતા. બે લાથમાં કનકભિરેકના સિંહાસનના પાયા હતા ને બીજા બે લાથ વિજેતાને જોડેલા હતા. સિંહાસનના પાયા પુતળીઓના લાથમાં હોઈ તે સિંહાસનપર શ્રીમદ્દાપ્રભુજી ગિરાજેલા હતા. આ ચીત્રી કિશોરઅવસ્થા હોઈ મુંદરતાનો પાર નહોતો. કૃષ્ણદેવને મેં અંતર પ્રેક્ષાદિથી અભ્યંગ કરાવતાં નિરૂપ્યા, ને પછી સુવર્ણ કલશથી દેસરનાન કરાવ્યું. આભુજાણુ “શ્રીરત્નમાચાર્યં મહારાજકી જય” એવા યોગ પ્રદુક્ષિત ચિત્તે સર્વે ખૂબ ઉપજાઈથી બોક્ષતાં સંભળાતા હતા. શ્રીમદ્દાપ્રભુજીના મુંદર દરશનમાં માઈ ચિત્ત પ્રવેશી જ્યાંથી કનકાસન અને અભ્યંગ દેનાન કરાવનાર સિંચાય બીજું ન જોવાયું. પણ જયધોષ ખૂબ સંભળાતા. બીજા અભિરેક મેં નથી જોયા, પણ ઉપરથી રજત અભિરેકની વાત આવી ત્યારે અને તે સમયની વિશેષ સ્મૃતિ આવી. અને દરખોડા કૃત્તેક પછી પછ્યો. આ બાબત મેં મારા એક બે મુરખી વેંચુલોને જારેક માસ પર ખાનગી રીતે લખી હતી. અને આજે ત્યારે કનકભિરેકને માટે ખૂબ ચર્ચા બુદ્ધિપાટે થઈ, પણ તેથી કંઈ તેનો અર્થ આવે નહિ એટલે મેં માને ધારણ કર્યું પણ ત્યારે સાવકીના યમુનકુળનો સંસ્કૃત લેખ ને આ ભવિષ્યકીર્તન વાંચ્યું એટલે અને તે સંબંધી સ્પષ્ટ પ્રકાસો કરવાની આકાંક્ષા થઈ. કનકભિરેક થવાની વાત માનનારાને તો કદી શંકા થવાનીજ નથી, પણ નથી માનનારા તે તો નજરે દેખશે તો પણ નંદિજ માને. માટે જે વસ્તુ સાચ છે તેને પુરાવાની જરૂર નથી. અને અનુભવની વાતને પુરાવાની શી જરૂર છે? મિતરી ગણી છે પછી તેને ચાખ્યા પછી તેને માટે અંધોમાં ગણી છે એવું લખ્યું હોય કે ન લખ્યું હોય પણ ચાખનાર તો તે જાણે છે કે મિતરી ગણી છે. એક વાર એક વેંચુલે શ્રીવશ્ય (મોયા લાલજી શ્રીગુણાંબુજીના) ને કહ્યું કે રાજ, શ્રીમદ્દાપ્રભુજીને શ્રીગુણાંબુજી શ્રીકૃષ્ણ છે એવું પ્રાચીન ગ્રંથોમાં લખાયું છે. આ વખતે શ્રીગોકુલનાથજીએ કહ્યું કે લખાયું પ્રાચીન ગ્રંથોનું હોય કે ન હોય પણ જે વાતો નજરના અનુભવની છે, તેને પ્રમાણની શી જરૂર છે?

શ્રીમદ્દાપ્રભુજી નિદ્રિતો એ વાતો વિચાળ છે કે એક વાર આખું જગત તે માન્ય કરશે. અનુભવમય તે વસ્તુ છે. માટે તકથી અધિકૃત બાબતો વિચારી તે એક મદાન અશ્વાય છે. શ્રદ્ધાને અનુભવ એજ એજ સાબળ અધિકૃત બાબતો વાંચી રાકે છે.

આ ભવિષ્ય વાણીનું કીર્તન આ સંપ્રદાયના અનુયાયીનું મોઝેલું નથી. પણ મદાન્ત અમીર-પ્રસાદજી અન્ય સંપ્રદાયના છે, એટલે તે બાજતમાં કોઈ પણ પ્રકારની શંકા ઉદ્ભવવાને પણ રથાન નથી. પ્રભુની સાર્વત્રિક શક્તિ સર્વત્ર આ નિશ્ચયો ખેલી રહી છે ને તેથી શ્રીમદાપ્રભુજી જગતને સત્ય અનુભવાવે છે. એ સિદ્ધાંત ત્રિકાલ્યાપત ધાર્મિક ગ્રંથાદિકને પૂર્ણપરના સંખ્યે તપાસતાં સ્પષ્ટ જણાય છે, પણ જેના હૃદયમાં કૃષ્ણ કરીને શ્રીમદાપ્રભુજી ઉતરે તેનેજ આ વસ્તુ અનુભવમાં આવે છે.

દીનકંકર.

[આવા અત્યાદિક અનુભવો આરોપનાર દીનકંકરે મારા પર નોટીસ મોકલાવી છે અને કોટમાં મારી સામે ફોજદારી પગલાં બરવાલી દમગટી આપી છે. આ વસ્તુ પ્રભુનું શ્રીધારેશ્વર નહિ તો બીજું શું ? કદાચ શ્રીમદાપ્રભુજીએ આજ્ઞા આપી હશે ! તંત્રી.]

જનતા જનાર્દન !

(શ્રી. ધીરજસાલ પરમાર્જ સેઠ-અનૂપ મુંબઇ)

જનતાશ્રી જનાર્દન સાચા, તે 'જનદેવ' ને પાવ નમું;
'એક પ્રભુનાં બાજ સર્વ છે' એ સમભાવના ચિત્ત ધરું.
વસે-દેવ જે મંદિરમાં, તે અખિત્ર વિશ્વમાં દેખી રહું;
સર્વશ્રુતસ્થિત પ્રભુ સેષીને જીવન માદરૂં ધન્ય કરું.
દેખી ન શકું, પ્રભુ ! દુઃખ દુઃખીયાનાં, દુઃખ ટાળવા શક્તિ ચરું;
તારાં બાજ, ને મુજ બન્ધુ સમ, વિશ્વજનોનું ગુણ ચરું.
દુઃખ દશે દુઃખ તપોનાં તો મુક્તિનો નવ શોખ ધરું;
જનસેવા અને યત્નિચિત, તે ધૃદ-પર મોકળ બાજ ખરું.

૨. 'સેવા ધર્મ પરમ મહન છે' સંત જનો એમ પાણી વહે;
મહેન માર્ગને પચિક ચાલા ઓ પ્રભુ તું મુજને બળ દે !
તુજ કૃપાથી, કંટક-વેથો-માર્ગ, પુષ્પ-મય બની રહે;
તેમ છતાં યદિ સૂએ જ કંટક તોથે તે સુખરૂપ ખરે !

પ્રજાજન્ય મુગ્ધ પ્રસારે. ચંદન એવું મુગ્ધ ધરું;
જળી આપ, ને તિમિર નિવારે પરાપકારી રીત ખરું !
'સુગંધ ધરતાં ચુંદરો લોકો' કહી, ન ખોસે મુ પુષ્પ ખરે !
'અનૂપ' કહે જે જીવે પરાયે હોને મુક્તિ પરજ ખરે !

[આ કાવ્યના લેખક શ્રી. ધીરજસાલ પા. સેઠ. 'અનૂપ' ઉદશી (શ્રીસ્વામીનારાયણ) સંપ્રદાયના એક આદર્શવાદી અને સુસંસ્કારી યુવક છે. તેમણે પોતાના જીવનમાં ધાર્મિકભાવના ખીલવી છે એટલુંજ નહિ પણ તેને વિશેષ સુષત્વરિત કરવા અને પોતાના જીવનમાં ઉતારવા સસ્તાસાહિત્ય વાચન અભ્યાસનો દષ્ટિએ અવલોકી તેમાંથી સાર ગ્રહણ કરી, પોતાના જીવનને પ્રેમભવ બનાવી રહ્યા છે. તેઓ સદા, સરળ, ઉત્સાહી અને સદ્ભાવનાશીલ છે એટલુંજ નહિ પણ ધાર્મિક, સામાજિક પ્રતીતિસત્તાદિત્ય પ્રતિ અભિરુચિ ધરાવનારા છે. હૃદયે તેમને કાંઈ પ્રભુપત્ત, શક્તિ, પ્રદાન કરેલી હોવાથી તેઓ કેટલીકવાર, પ્રાસંગિક અનુવાદિત કે પ્રતિઅન્યાદિ લખી 'અનૂપ' ના નામથી સામવિદ્યોમાં પ્રકાશનાર્યે મોકલે છે.]

કે અંધી ચંદ્રાવલી તું જાન સાંન મુકીને તો આગે નથી આવી ! હા, ખરેખર તું આગે આંધળીજ થઈ છે, તારા હરતમાં પકડેલો કેળુ છે ! તે તો જરા નિહાળીને જો ! મારો આંધળુ તો મારી પાસેથી આગે કંઈ પણ ગયેલો નથી ! અને મારી ગોદમાં બેઠેલો છે. તું તારા પગે પકડી લાવી છે તે પણ જોતી નથી ! હર વખત તમે મુખાંજી મારા ભોળા બાળકને વગોવો છો ! ક્યાં પાંચ વરસનો મારો બાળકુળુ ને ક્યાં તમે આધેડ વયની વજ્રલક્ષ્મીઓ ! તમને આવા ભુલો આજ મુકતાં રાત્રી પણ નથી આવતી કે શું ! બીયારી ચંદ્રાવલીજ મદામુશીખને 'નેત્ર વિકાસીને પોતાના હાથમાં પકડેલા પોતાનાજ શ્રીદામાને જોતાં ખસીઆણું પડી ગયાં ! સર્વ ગોપીજનો મનમાં બોલ્યાં કે હે શ્યામ ! તારી લીલાની બહોલરી છે ! ગોપીજનો ચંદ્રાવલીની દુઃખરકરી કરી આનંદ કરવા લાગ્યાં ને આજ પ્રભુ પણ સર્વ સખા તરફ જોઈ હાસ્ય વિનોદ કરવા લાગ્યા. સુરદાસજી ગાય છે કે—

માખન કી ચોરી છોડ કનૈયા મેં સમજવું તોય, મેં સમજવું તેય કનૈયા મેં સમજવું તોય. (૧)
નવ લાખ ધેનુ નંદ બાપાકે ધર નિત્ય નયો માખજી હોય, જો આદે સો લેઓ મેરે લેખા હાંસી હમારી દોષર
ખરસાનેસે આઈ સગાઈ તેરી નિત્ય નઇ ચર્ચા હોય, બડે ધરનકી રાજ દુધારી નામ ધરીગી તોય. (૩)
ગોપીનકે સંગ ગાય ચરાઈ ગયો કદમ તરસોય, કાહુ ગાત્ર સો મેત્ર મીથો હે નેરી ગઈ કામદીપાં બોય. (૪)
ના છોડુ માખનકી ચોરી હોલી હોય સો દોય, સુરસ્યામ જ્યોતમતી કે આગે દિયો નેન ભર દોય. (૫)

અહા ! જે ગોટિ બ્રહ્માંડને કર્તા દોઈ જે વ્રજનો નાથ છે ! જેની પસંદ માત્રથી કાળ પણ ભય પામે છે, ને જેના બધે દેવ, સુર, ચંદ્ર, વાયુ, અગ્નિ સર્વ પોતપોતાનું નિયત કરેલું કાર્ય કરે બધ છે. શિવ, બ્રહ્મા, નારદાદિક જેના ચરણકમળમાં અર્પનિશ ધ્યાન મગ્ન રહે છે, ને જેનાં દર્શન દેવમુનિઓને પણ કુલંભ છે, એવા પ્રભુ હોવા છતાં તે ભક્તપાસલ દોદાધી જીજ્ઞાસુને આનંદ આપવા માટે વ્રજ બાળકો, ગોપીજનો સર્વ વ્રજવાસીઓ સામે આનંદના રમણ કરી પ્રેમબંધને પ્રત્યક્ષ દર્શન રસરંગ સુખ આપી ગ્રહેલા હતા ! ધન્ય છે એ વ્રજવાસીઓને કે જે પ્રભુ વ્રજજનો પામે પ્રત્યક્ષ માખજી જેની વસ્તુ નહીં મોગતાં તેઓના હિર કૃપા કરવા લૌકિક ચોરની પદવી પ્રાપ્ત કરી માખજી ચોર જેવી અનેક બાલકીલાઓ કરી ભક્તોને પરમાનંદ મુખમાં રસપ્રબંધ કરી રહેલા, એજ પ્રભુનું ભક્તપ્રીતિપણું બતાવી આપે છે. રાજા દુર્યોધનોને છપ્પન ભોગ ત્યાગીને વિદુરપત્નીએ ફેંકેલા કેળનાં છોડાં જ ફક્ત પ્રભુ યજ્ઞપ્રેમે આરોપ્યા, એ, તું મારાપે છે ! હજાર રૂપિય સ્વર્ણના રોજાપરે જ રજા છે પ્રભુ ત્રી સુખે કહે છે કે "હું ત્યાગી વસતો ચોગી તપસ્વી કે વૈકુંઠધામમાં પણ મારો જે પરમ પ્રિય પ્રેમાદર્શ બાન છે તેના હૃદય મંદિરમાં જ હું બિરાજુ" છું. ભક્ત અને અનિશ્ચય પ્રિય છે." અલૌકિક પ્રેમ એજ પ્રભુનું સ્વરૂપ છે, આ સર્વ તેના કૃપાબળે જ પ્રાપ્ત થાય છે. અને ભ્યારે પ્રભુની કૃપા થાય છે ત્યારે જ્યારે તેની માયામાં લુપ્ત બનેલો હોય છતાં તે પોતે તેને પોતાના ચરણમાં રાખે છે. ફક્ત જીવનું કંઈ સાધન પપમાં આવતું નથી. પ્રભુ સ્વમુખે આજી કહે છે કે "પોતાના કૃપાપાત્ર ભક્તનું, ચિત્ત પોતાનામાં રહેવા માટે તેનું સર્વ લૌકિક સંસારકાર્ય હું જગાડું છું, ધનમાં ચિત્ત હોય તો ધન હરી લઉં છું, પુત્રમાં ચિત્ત હોય છે, તેનો લય હૈં છું, તેમજ તેની લૌકિક વસ્તુના વિશેષ આસક્તિ હોય છે તે તમામ પ્રિય વસ્તુને હું હરી લઉં છું, અને એ રીતે ભક્તના ચિત્તનો નિરોધ મારામાં હૈં છું" એટલા માટે જ "જે ગોપીજનો અજાણાઓ હતાં પણ પ્રભુમાં અનન્ય નિષ્કામ પ્રેમવાળાં હોવાથી તેઓનું ચિત્ત શુદ્ધ સંસારમાં ચગન ન રહે તે માટે શ્રીકૃષ્ણ પોતે દુધ ની નયનીત આરોગી તેમ દરેક પ્રકારે હેરાન કરી તે દ્વારા અહર્નિશ તેઓના ચિત્તનો નિરોધ

પોતાનામાં નિયુક્ત કરતા હતા. " અને લૌકિક દૃષ્ટિએ જન્મ્યોતો માખણ ચોર તે વિચિત્ર ચોર છે ! કારણ તે માખણ ચોર નહિ પણ " શ્રીગોપીજનોનું જે માખણ રૂપી મન હજી તે ચોરી તેજોનો કૃપાકાર પોતાનામાં નિરોધ સિદ્ધ કરતા હતા. " આવી આવીના આગમને કરેલી અનેક આવલીલા તેમજ નિદોષ રાસલીલાને લૌકિક દૃષ્ટિથી પીળાં ચરમાં ચરતી દોપરપ ત્રેતા અત્યંતીએ શ્રીકૃષ્ણને ભણે અન્ય રૂપે દેખે પણ " ગાત્રી ભક્ત જનના તો તે શ્રીવચનિદારી આગમન સ્થાન એતોક્તનાય પૂર્ણ પુરોહિતમ શ્રીકૃષ્ણચંદ્ર છે. "

~*~*~

કચ્છારે ?

૧.

આપી છે નિરાશા બધે, મળતો મુખન્ય નહિ; હૃદ તો મચ્છાવી રહ્યા, ભોમ, મોદ, દોષ, કામ, પૂર્વ-જ્ઞાન દોષક થયો છે મન્દ ક્રુમ સમ; પશ્ચિમી પવન જ્ઞાન આવી રહ્યો અભિગમ દીન દીન નિજ દેશમાં ન લવચેત સુખ; પેનું વંદ્ય નાશ થઈ રહ્યો દીનમન્ય ! રથામ ! લેશો સુધિ કચ્છારે દે અનાયના સનાય નાય ! દેશો કચ્છારે હવન નવીન પુનઃ પુનઃ થામ !

૨.

મજ-રજમાં આભોડી, હવન સદૃશ કરી; જન્તાવન વિધન સ્ત્રોત વિચરેશો કચ્છારે ! પમુના પુલિનમાં સુરતેદયો પેકાર કરી, માનમ પરત પુષ્પને ઉરાડતો કચ્છારે ! ગીતા-ગાનરસની પીપાસા નૃપ્યાતી તીવ્ર; પચારી શ્રીનાયકમ્ભ ! શેઠને દરેશો કચ્છારે ! હિલવની પાંચે ગોપીયોનો પ્રેમ-યોગ મળી; આંસુઓથી બનવને નીલવ કરેશો કચ્છારે !

સે. ગિરધરલાલ જ. શાહ, મુંબઈ.

શરદ્ ચંદ્ર.

શાન્ત સુન્દર રજની આ, રસગાજ અનન્ત રેખનો

મજરાજ રંતાવનમલો, રસકુંજ માંડી ખેડનો. ૧

રસગાન સુન્દર આદર્શ, વેણુ દણા રજકારમા;

ભર લીધમાંથી જમણી કૃષ્ણ, રાત્રી રથા એ લાલમા. ૨.

પશુ પક્ષીઓ કડરવ કરે, પુખ્ત થઈ એ નાદમા;

મજનાર મન્મથ આરણ્ય નિમંત્રી મોદક ભાદમા. ૩

રવજોડાલાલ કેશવલાલ પારેખ.

ચર્ચાપત્રો.

૧. તમરછત તત્રીની દષ્ટિ.

‘પુષ્ટિપીયુષ’ પા. ૨= કામવનમાં પાકરાણા એ મયાના નીચે ‘હરિય’કર શોજીએ તેલડી લાખમાં ચતુર્થપંચમપીઠાધીશ્વર મહારાજની તરફ હે કથણ કર્યો છે, તે આદે વૈષ્ણવોની સાજી દુખઈ છે તેના જવાબમાં નીચેની દર્શીકત આપના માસિકમાં પ્રકટ કર્યો. ક્રમ સાજીએ મહિમાદેની દરદરમાં સાજીએ વસંતરામ તરફને કુરસો કાઢી, મહારાજશીને અપયન કરી સંસ્કૃતમાં બાપણ કરવા ફરવે છે. એ પોતાની મદાન પરિતાઈની લિમિર બરેલી દષ્ટિના કારણ સિવાય બીજું શું કોઈ કોઈ અહીં પુષ્ટિમાર્ગમાં તે “તેહો દરિ અખનથો ન જનાવે” તોહો સકલ સિદ્ધાંત મારગો પટે કુને નહીં આવે” એ પદ સાજી આંખો કપાકરને લેઈ જયો તેા જણ્યો કે આ કૃપામાર્ગમાં તેા એક સાધારણ વૈષ્ણવ પણ તમારી સંસ્કૃતની ટોચ પદેચિલી પંડિતાઈને મદ પણ કૃપાબળથી સદેશમાં ઉવારી શકે છે, તેા શ્રીવલ્લભકૃપનાં આજક તરફ કથણ કરવામાં તમારી વિદ્વતાનો આડબર જણાવો છે, પણ તરફ આમે પણ નાખવાથી કંઈ વળવાતું નથી. મજે પંડિતાઈનો ઉપયોગ વસંતરામ સાજી સામે વધારા તેા તમને જવાબ પણ મળે.

“આસેતુદિમાયક પંડિત” તત્રીએ અને પ્રમાણે હે નોંધ લખી અને પ્રકટ કરી, તે વિષે યોગ્ય બરેલીનું ઉપજનું અર્થાંત છે. એ નોંધ કેવળ બાલિશતાપૂર્ણ નથા ક્રેપપૂર્ણ છે, કેમ કે “આમેતુદિમાયક પંડિત” આદે શ્રીમત્તામી બાલકો પાસે રહી આવ્યા, પણ તેમના સહવાસથી કેટલા સંસ્કૃત બાળમાં વધામ્મ લા ચલા તે તેા બહુટી વાત છે. છતાં આખરે “આસેતુદિમાયક પંડિત” ની આંખો કપાકર છે અને એની મંદી નોંધ પોતાના માસિકમાં પ્રકટ થવા બદલ શ્રીચતુર્થપંચમપીઠાધીશ્વર મોક્ષામી શ્રીવલ્લભાચાર્ય મહારાજની રેખી મારી તથા રમ્મ જામ યાચના કરવાતું તેમને શરેલા સૂચ્યું છે. એટલે આ વર્ષ અદ્વૈતીય અટકે છે તત્રી.

૨. લંપટનયંતી કે શુદ્ધ-શતાબ્દિ.

આદે કેટલાક શુભશાયીએ અને સહારો કવિ નમંદની ‘શતાબ્દી’ ગાંધ બની જઈ ઉત્તરી રહી છે. તેનું શું કારણ હશે તે સમજાતું નથી. કવિ નમંદના મન્યા જોતાં એ મદાન નિંદક નારિતક દત્તો એ રમ્મ તરવરી આવે છે પૂજ્ય અચાર્યશ્રીએ સામે તેનું એક ખરાબ લખી માફુ છે કે તે તેના પિત્રાચપણનું સખળ પ્રમાણ છે કવિ નમંદે પહેલાં પુષ્ટિમાર્ગની તથા શ્રીમદ્દાપ્રયુક્તની ‘તારનિકા’ કરી છે, પણ એ કેઈ બદવાની શીખવણીથી અને હાંચ લઈ કરેલી જણાય છે, અને તેના નિંદક બરેલા લખણોમાં સ.સ રૂપાયા મળે એ સંભવિત છે. અને એ લખ્યા પછી કેટલાક વર્ષો બાદ પુષ્ટિ માર્ગની બાદે રહી કરી છે તેનું કારણ કવિએ પાછા પૂજ્ય મહારાજશ્રીએ પાસેથી રૂપીયાની લાંચ લઈ કવિને કેમ ન કરી હોય. કવિ નમંદે કુદ જુદિવાલો દત્તો. આવા શુદ્ધાબ્દીની શતાબ્દિએ જામવાથી રનાબ્દિ શબ્દનું યોગ્ય થઈ જવા સંભવ છે. કવિ મદાન આવાવાની નિંદક નારિતક દત્તો, બલિયારી દત્તો. બધા કુદિસિને જાહેર દત્તો. તેનું વ્યક્તિત્વ તે કાચમાં કંઈ પણ ન્દેતું. લા, જામવાની બાપ જામવા તેને મદેનત સારી કરી દત્તો ખરી, પણ તેણી તેની કુચર નથી મટી. બધેરાને ખંખાળનાં જામવાયંથી કો તે પોતા થયો.

લી. વગાતે શુનેમ્મક,

એમ. એન. મીઠાણી—કે. ઉત્તવારી બલર નામપુર સોરી.

નોંધ—એક બલિયારી લંપટને કુધારક કવિ તરીકે જાનીને શતાબ્દી જામવાનો આખરે આજ સમય (૧) શુ બલિયારપૂજક અને જાનીલિ-કેમ્મક રૂપીયા મળે છે તે પછી અને રિપી નમંદની શતાબ્દી ઉત્તારીને આજના સાક્ષર મનને અચિયની પ્રભ મટિ થો વારનો આખરો છે તે નમંદે રાંધે શુદ્ધરણ કવિ દત્તો. એટલે આજે તે. તે કહેવ, પહેલ દોર લેવા દત્તો. તેની શતાબ્દીએ ઉત્તારીને લંપટમાળ તે પહે શું વિચરવા મળે છે મહાત્મા શ્રીચતુર્થપાચાર્યના કાચ સાક્ષર યોગ્ય અંગત કાચ માં જાની (૨) એ સનાતની પણ છે) શું એને કુનેસર બધા હશે કે પુષ્ટિમાર્ગવાને વિશી કહીને

શ્રીનાથદાશમાં લાગી અધેતાં સીક—લા. ૨૨ મીના દિવસે સવારના ૭ વાગે એક તાર ધોનાથ-દાશમાં ફૂલુ બેઠાર પર સીમલાથી આવેલો, તેમાં મો. વિવેકાચલથી એવર્ધનવાલજના લીલામાં પધારાના મુદયરેક સમયગાર આવતાં વડા મહેલારી પં. રમાકન્દ મહેલિયા શોરજીવાર સજ અધિકારી તથા ફોન જરો અંગવાલજ તથા ફોનિયર પન્દવાલજમે મદદાલજના રહેવાના મોટી મહેલના બંગલામાં ભળને ખાનથી મહાનને સીક માર્યા દતાં, તેમજ ધોનાથજના અગ્રણી વિંદે જોખમી હોરાત પર પાવુ ફૂલુમંદાર નાગજીરાના નામનાં સીક માર્યા છે.

શ્રીમં વિવેકે સંભળા ૪ વાગે ઉદેપુરથી હોરીમાં રાખીના સવારો તથા ખીલ મોટામાં પં. મદન-મોહનજ તથા બંધીરસિંદજ આગળ દતા તેમજે ન્યાં સીકે. દતાં તેની બીજાં ઉપર સીકે મરી ફોનજરોની સદી લીધી હતી. કુલે ૧૮ ન્યામે સીક વાળ્યાં છે, અને ફૂલુમંદારના ફોન આમલનીના તથા ખર્ચના રાષ્ટ્રગણની આખરી મીતિની મોંઘાંવણ તે કુલ ગોપડાએ અધિકારીને મોંઘીને સદી લીધી હતી. ફૂલુમંદારમાં તે વખતે રૂ. ૭૦,૦૦૦ ના સીકમાં દતા.

દંકારામાં રોડ સજા—શ્રી ૧૦૮ શ્રીગોવર્ધનવાલજ શ્રીવિવેકાચલધોના અચાનક લીલાપ્રવેશથી રાંધારા સહેરમે વેળુવ નરનારીઓમાં બારે યોગની લાગણી ફેલાયી હતી. લા. ૨૫-૬-૧૯૩૩ ના તેજ આખા સહેરમા પૂર્વે કરી નહીં તેથી દળગાલ પડી હતી, શ્રીમદ્વારમાચાર્ય કુલ રહેવાથી ખાસ પ્રશ્ન પ્રાચીના કરવામાં આવ્યાં હતી. અને રોડ પ્રદર્શિત કરવા સમરત વેળુવોની એક સમા સાત રેશપની દવેલીમાં યાજ્ઞવતમાં આવી હતી. તે સમામાં નીચેના કસોડે થયા દતા ૧ દંકારાની સમરત માલજુ સુઝીની તેરમ્ને દિવસે મારાથી જમાડતી. ૨ મીચરમાં થાંસ આપવું ૩ ચક્રા પારવાના ચુખમાં બંદ આપતી. ઉપર મુળ કસવ સર્વાનુમતે પાસ થયે દતો અને વખતે ફંદ કુલુ દર્દ જેમાં કરાં વેળુવેએ થાતાની સાત અનુસાર મંદાવ્યુ હતું.

સાવડીમાં રોડ—શ્રીમદ્ ૧૦૮ ગોસ્વામી શ્રીગોવર્ધનવાલજ મદારાજી લીલાપ્રવેશ કર્યાં બજાર મળતાં વેળુવ સમાજમાં ફેલાયેલી યમનીનીથી તેમજાના ખાનમાં જાનરમાં અડતાલ પાડી રા. શા. ફોર્સાઈ જલમાફ છપ્પમાઈ સાદેલના પ્રમુખવળાં નીચે બહેર સમા થઈ રોડ પ્રદર્શિત કરવામાં આવ્યો. કલ્યાણમાં રોડ—ગુલાઈ પાસેના કલ્યાણમાં પાવુ વેળુવ જવાપારીએમે દડતાલ પાડી હતી.

મુરતમાં રોડ—પૂળપાદ ગો. શ્રી ૧ શ્રીગોવર્ધનવાલજ મદારાજીના પ્રમુખપરે એક રોડ સમા મળે હતી, તેમાં યોગનો કાવ પસાર થઈ દતો.

માણસામાં—રોડ પ્રશ્નથીયાર ગેરામના પ્રમુખપરે સમા મળે હતી, અને યોગનો કાવ થયે.

ગોરામાખમાં રોડ સમા—નાથદાશીય ગોસ્વામી શ્રી ૧૦૮ શ્રીગોવર્ધનવાલજ મદારાજીએ નિલચીવાપ્રવેશ કર્યો તે માટે રોડ બલાવચા અનેના વેળુવોની એક બહેર સમા મદ આસો મુદિ મોહરથી યજ્ઞવારના બજારના ચાર વાગે મળી હતી. સમાર્ણ પ્રમુખરેવાન વે. સાંઝવંદ છમનલાલ રાંઢે રતીમાળુ દર્ડે સરખાડમાં સમા યોજાવવાનો ઉદેશ રા. મોહનગાલ માંધીએ સમભળી પછી નીચે મુળ કાવ ૨૫ થઈ દતો. કાવ—એક કોડ વેળુવોના સમાર વડા આચાર્ય શોનાવડારાધીય ગોસ્વામી શ્રી ૧૦૮ શ્રીગોવર્ધનવાલજ મદારાજીએ નિલચીવાપ્રવેશ કર્યો તે માટે આ સમા રોડ પ્રદર્શિત કરે છે અને વેળુવોના પ્રાણામાર શોનાવજની સેવા મટે થોડા મદારાજીની મેલના થાય એમ આ સમા ઉદ્દે છે. તે માટે તેજ પ્રશ્ન શોનાવજ સત્તર થોડા પ્રેમ્મા કરે એમ પ્રાચીના છે. કાવ ઉપર રા. મોહનગાલ માંધીએ વિચેચ કરતાં નિલચીવાપ્રવેશ મદારાજીએ કુલ છત્ર ચરિત અંદાજુ દર્ડું. અને શોનાવજની સેવા માટે સત્તર થોડા પ્રતિજ્ઞ થાય, વહેરે જળુનું દર્ડું. પછી કાવને થોડા રેકા મેરવા પછી સર્વેએ સમા થઈ કાવ પસાર થઈ દતો. પછી સમા વિસર્જન થઈ હતી.

મદ જળજીના નિલચીવાપ્રવેશ માટે આસો મુદિ અટકી મંચનવારે પાછી પાડવાની હતી. પરંતુ મદો વેળુવોમાં ને તડ દોવાથી વિચારવિનિમ્બ થયો. તેમાં મહેલાના બેઠાગણના દાવાલાઓએ, ઉકારે દડદાજ પાડવામાં આવે નો સદકાર મદ જળુનું. તે મુળ યજ્ઞવારના દિવસે દડદાજ માટે મહેલામાં આવ્યું. પરંતુ ખર્ચના સંરેમશે જેમના મન ઉપરથી થી મહેલા તેવા આ યોગે દડદાજ પાડ નહિ. બાકી એક પસારમાં બધી દુકાનો બંધ હતી. આ પાવુ વેળુવોની બઢીદારીલ મળ્યું.

गुह्यादित् अने लक्षितमात्तु.

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

શ્રીનાથદાસાદીશ તિલકાયત ગોરનાથે શ્રીગોવર્ધનનાથાલ મદારાજશ્રીના નિલાધીવાપ્રદેશ માટે આ સભા શોહ નહેર કદ છે. તેઓશ્રીની સંપ્રદાયના હનનતિ માટેની અનેક પ્રવૃત્તિઓ માટે પૈથ્થવા તેમના કળણ છે. તેઓશ્રીની જાંત તે આદિએ ચોગ્વ આચાર્યશ્રી, બીસાઇ પૂરે એમ આ સભા કીર્તિ છે.

પ્રયાસને ખલે પ્રયાસ—અથા અંકના મુખપ્રેમ હપર પ્રો. ને. ગો શાહની સહાયતાનાં “પ્રયાસ રૂપીયા” ભૂલથી ઉપાયા છે. પશ્ચિમ રૂપીયા સહાયતાનાં અથા છે. તા’ત્રી.

નરીયાદમાં અપૂર્વ કિસ્સાદ—શાક્ષી વચ્ચે તમને બરાબર ૪ થી ૫ દિવસ સુધી જેદ શાસ્ત્રનાં પ્રમાણો આપી બહાસબંધ રીસા લુદા લુદા પ્રકારે પણ અનાદિથી થોડું આવેલી તેને સમયને અનુસરી શોધકને જોવાના અધિકાર મુજબ આ રીસત આપવી સાર કરી છે તે સિદ્ધ કરી બતાવું હવે અને ખીન પશુ ખામીએ જવના પુષ્ટિમાં સમત્વની નકીયાઈની પ્રત્યેક મણી આનંદ આપે—દત્તે તદ્દ કપરાંત શ્રીપુષ્ટિમાર્ગેય પુરતકાલયની જગ્યા ધણીએ સંકાયવાળી જેઈ હિંદુસ્તાનમાં એટલું નહિ, પણ યુરોપ-સુધીમાં જેની પ્રશંસિત છે એવી આ એક જ પુષ્ટિમાર્ગેય પુરતકાલયની જગ્યા ધણીએ સંકાયવાળી જેઈ દીક્ષાગીરી દર્શાવી તે માટે વિચાર કરવા વૈષ્ણવોને મુશ્કા કરી હતી, તેમજ સંપૂર્ણ સમપ્રાપ્તિમાં પ્ર. પા. મદ.રાજસીએ પણ વખતોવખત પોતાની વચનસુધાનું પાને વૈષ્ણવોને કરાવી અત્યંત આનંદ આપેલી દત્તે અને આ પુરતકાલયના મકાનની સંકાયવાળી જગ્યા જેઈ ધણીએ દીક્ષાગીરી દર્શાવી હતી અને તે મકાન મોડું કરવા વૈષ્ણવોને મુશ્કા કરીને તેની સંકાયવાળી મંજરાસુચક ૨. પગ ૧) આવી પોતે મકાન ફેંડ ખાતે બક્ષીસ આશીર્વાદ સાથે આગ્યા હતા. બાદ ને તે રકમો બરાબર હતી. લખતલ ૧ દિવસ સુધી અત્રે વિખ્યાત મહારાજશ્રીનાં વચનસુતોની શરૂ થઈ હતી, તે દરમીયાન અત્રેના વૈષ્ણવોમાં પણ રા. મોદનદાસ લક્ષ્મીદાસ તથા રા. શિરપરદાસ તારલદાસ તથા રા. અંબાદાસ જમનાદાસ તથા રા. મણિદાસ સરેલા વગેરે પણ તે અનુસર્યું જોઈયા હતા.

૬૭-૩. ૫૦૧) (શિક્ષક) મહારાજશ્રીના, ૫૦૨ શા. મગનલાલ બાપુજીભાઈ, ૫૦૩) શા. મોતીલાલ ગિરધરદાસ કાનપુરવાળા, ૧૦૪ શા. જનનલાલ ગિરધરદાસ કાનપુરવાળા, ૧૦૫ શા. ગોરખનંદનસિંહનીલાલ, ૩. ૧૦૬) ભરનારા-(શિક્ષક) દેસાઈ દીરાલાલ યુનીલાલ, વેરા માણેકલાલ જનનલાલ, ૧૦૭) સોમચંદ ત્રીકમલાલ, સરદાર બહાદુર ગોપાલદાસ પિંદારીદાસ દેસાઈ, ૩. ૧૦૮) ભરનારા-શા. દીરાચંદ ગિરદાસ શ્રીવાળા, તલાલી રણજીભાઈ શ્રેરદાસ, ૩. ૧૦૯) ભરનારા-શા. મુલાલાઈ નરેશમંદાસ, ગાંધી યુનીલાલ હામેદારની દીકરી બાઈ જડાને શિક્ષક આખ્યા, ૩. ૧૧૦) શિક્ષક ભરનારા-શા. દરિલાલ બાપુજીભાઈ, શા. જોડાલાલ જનનલાલ, ૩. ૧૧૧) શિક્ષક ભરનારા-શા. યુનીલાલ લક્ષ્મીદાસ અણીદાસના, શા. મુજાલાઈ બહેચરદાસ કાવડાવાળા, તલાલી દરિલાલ મયુરદાસ, શા. મગનલાલ બાપુજીભાઈ, ૩. ૧૧૨) (શિક્ષક) શા. ગોકુળદાસ બેળીસનદાસ, ૩. ૧૧૩) (શિક્ષક) મગવંદીય મંગલબહેન તે. શા. રમણલાલ પુલેષાપત્તમદાસના મહાલ, ૩. ૧૧૪) (શિક્ષક) મગવંદીય ગોરખલાલ મનકુખલાલ, શા. નાંદલાલ સહજુભાઈ, ગાંધી યુનીલાલ હામેદાર, પરી. સોમચંદ ગોલ્લપદાસ, શા. મોતીલાલ વનમાળીદાસની દીકરી બાઈ જડાલ, શા. યુનીલાલ નાયાલાઈ, શા. કૃષ્ણદાસ ગોરખનંદનના માતૃશ્રી, શા. બાલુભાઈ યુનીલાલના માતૃશ્રી બાઈ દીવાળીયા, દેસાઈ ઇશ્વરદાસ મોતીલાઈ, પા. સંકરભાઈ મનોરમાઈની દીકરી બહેન ડાહીબા, શા. મગલાલ વનમાળીની દીકરી બહેન મહાલક્ષ્મી, શા. ત્રીશોવનદાસ બહેચરદાસ, શા. રામજીદાસ જનનલાલ ગોરદર, બહેન પારવતી મુજાલાઈ જનનની દીકરી, શા. મગનલાલ પીતંબરદાસ, બહેન રંધ મોહોલાલ, ગાંધી મોહનલાલ મગનલાલ, શા. મોહનલાલ રણુભાઈદાસ, ગોરધરદાસ બાઈજીની દીકરી બહેન મહામૌર, ૩. ૧૧૫) (બાળીવાળા) બહેન ડાહી, શા. ભરચંદદાસ યુનીલાલ, શા. જોડાલાલ માણેકલાલ જોડાલાઈ, શા. બાપુજીદાસ ગોરધન, સોની વાસચંદ નસરામ, વેરા પરોષાપત્ત શીવલાલ, સરેલા મણીલાલ ગોરધન-દાસ, ૩. ૧૧૬) (બાળી) બાઈ પરસન ગાંધી પાંચવંદની દીકરી, ૩. ૧૧૭) (શિક્ષક) પા. રણજીભાઈની પુત્રી બહેન દીવાળી, શા. મનસુખ પાનાવંદની દીકરી બહેન નમ્યા, મોહનલાલ જનનલાલની પુત્રી બાઈ દરિયા, યુનીલાલ જોડાલાઈની પુત્રી ચંચંગા, બહેન રંધીબા, બહેન ડાહીબા, બહેન ચંચંગા,

ગુણનુવાદ કેમ ગણો ? શુદ્ધ સંગીતનાં દિવ્ય કીર્તનો.

સારંગી, ધીન, દીલરૂખા, હાર્મોનીયમ વગેરે વાજત્રોમાં સાંપ્રદાયિક કીર્તનો ઉતારવાનું આનું આધન સંપ્રદાયમાં એકેય નથી. મંગળાધી સયન પર્યંતના મુખ્ય કીર્તનો, વધાઈ અને ધમાર એ બંધાનાં ૮૦ ગણોના ખાસ નોટેશનો આજ અંથમાં છે. પખાવજ શિષ્યનાર માટે તાલના બોલ પણ છાપ્યા છે, ગુજરાતી ભાષામાં સવિસ્તર સમજણ પાડી છે. નોંધાવર એ ફીઆ, પોસ્ટેજ પાંચ આના.

ડૅ. ભગવાનદાસ નારાયણદાસ કોટડાવાળા.
સુ. ધંધુકા, (જી. અમદાવાદ.)

હિસ્ટરિયાદિ વાતરોગ દર્શન.

ખ્લોક ૩૦ હિસ્ટરિયા, મૂર્છા, ચક્રી, ફેફર, ગાડપણ અને બકવાદ રોગની અમેરીકન છેલ્લી ગોધ મુજબ પાશ્ચાત્ય, યુનાની અને આયુર્વેદિક સિદ્ધાંતો, સમજૂતી અને સાદા ઉપચારોનું પુસ્તક વાંચેથી ધણી રાહત મળશે. કીમન ૧-૪-૦ પૈ. જુલું, દેશીનામું. નવા બ્લવડાગ પ્રમાણે રચના ૦૧. શાળા માટે નવ મંજુર કી. ૦૧ પૈ. ૦)૦.

હિસ્ટરિયા રોગનીજ રામખાણ,

પેટ'ટ દવા વાપુમુકતાજ છે. ઉપરના દરદીમાં ૨૪ કલાકમાં દાપદો મળે છે. સિલોન, આફ્રિકા, ઇરાન અને રચન સુધીના દરદીઓ વાપરી સુખી થયા છે. મેડીકલ સરખનો છુટથી મંગાવે છે. દવા મહિનાની, કીમન ૩. ૫) પૈ. જુલું.

છગનલાલ લલ્લુલાલ નામાવાળા. પેલેસ રોડના નાકે—વડોદરા.

વીસમી સદીની નવીન શોધ

સંગ્રહણી (ગજણી) માટે અમૃતમય ઉપાય.

પ્રતિષ્ઠિત અને વિદ્વાન વૈદ્ય કોટડેરાની દવા ખાઈ કંટાળેલા સંગ્રહણી (ગજળી), મુગાષના માડા, અતિસાર અને આતરડાના દાપથી પીડાતા નિરાશાજનક દર્દીને આશીર્વાદરૂપ યથ પડેલી ત્રીસ વરસના અનુભવની રામખાણ દવા માટે રજૂ મળેા મા સવાલપત્ર મંગાવો. પત્રવ્યવહાર નીચેના સરનામે કરવો:—

માસ્તર ડૅ. જી. પટેલ એન્ડ સન્સ, ૨૨ સ્પેસીઆલીસ્ટ-માલુસાવાળા.

જોખેળાપ—દર રવિવારે, અમદાવાદ—દાહુપુર જાડીજરાની પોળમાં તંજુનરાની

મડાળી ૫૨ નં. ૩૫૬.

અમારે ખાલાનંદ બચ્ચાંઓને હજુ પુટ આનંદી અને મુંદર બનાવે છે. કી. ૦-૧૨-૦ પૈ. જુલું.

દુર્લભભાઈ ચુનીલાલની કું,

વસંતની ડાહી પાસે, ભરૂચ.

તમારું વિમાનું દરેક ટામ આપતા પહેલાં ઉપલી કંપનીમાં પુછવું.

અમે દરેક બાતનું વિમાનું ટામ-એવું કે આગ, દરિઆઈ, અંદગી, મોટર, વડંમેન ડાંખતમેશન-અને એકસીડન્ટનું ડફ્ટર છેએ.

એજન્ટસ અને રિપ્રેઝેન્ટેટીવસ:-

ન્યુ બીલાંડ ઇનસ્યુરન્સ કું. લીમ. (આગ તથા દનીઆઈ)

ગ્રેશામ ફાયર એન્ડ એક્સીડન્ટ ઇન્સ્યુરન્સ સોસાયટી લીમ. (આગ)

લુપીટર જનરલ ઇનસ્યુરન્સ કું. લીમ. (અંદગી તથા આગ)

ન્યુ ઈન્ડીઆ ઇનસ્યુરન્સ કું. લીમ. (અંદગી તથા આગ)

એલાયન્ડ એન્ડ સ્ટર્ટગાર્ટર લીમ. (આગ)

પ્રોડેન્સીયલ એસ્યુરન્સ કંપની લીમીટેડ.

ભરૂચના બાણીતા વૈખલ્લવ મદમ્હસ્ટ્યે આ કું. પ્રામાણિકતાથી ચલાવે છે. દરેક

વૈખલ્લવ આજ વીમા કું. લાભ લે એવી આશા છે.

ગિરિધરલાલ જગજીવનદાસ શાહ.

ધોળા દીવસે તાર.

શ્રી ગિરીરાજ આશુ તથા ગિરિનારના મહાત્માજી પાસેથી ધોળા દીવસના પ્રવાસથી મેલ્દાન પ્રવર્તે દિવ્ય વિદ્યા મેળવી આવનાર વૈચરાજ ભોતીલાલ મહારાજકર ભટ. L. W. T. રાજકાવાલા કે જેમની પાસેથી નીચે બતાવેલા કૃત્તિઓ અત્રી પ્રકાશ છે.

૧. જેઓ શેતાન શત્રુઓના નાસથી કંઠાગા ગયા હોય.
૨. વેપારની ઉચ્ચ પાયાઓમાં નુકસાનીમાં આવી ગયા હોય.
૩. યાત્રીઓ પછાતા મેળા રાણાંથી હુલ્લ કહળો ઉઠ્યા હોય.
૪. તથા દરેક પ્રકારની સુંઝવણ, નમણા વીચરો ઉપર વિચર્ય મેળવી ધન, પુત્ર, માન, આનંદ, શ્રદ્ધા, વેપારમાં લાભ, કાર્ટે કસમાં ફતેહ, સારા પ્રકાર નોકરી, શત્રુ વિચર્ય તથા ત્ત્રી પુરુષમાં અણુ બનામ રહેતો હોય તો અગ્નિ પ્રેમ કાગી આપનાર તથા દમરો દવા વાપરતો પ્રતાપ બલકર દલીલા દીને નરહરના કેદની કારણોથી ન મરતાં હોય તેમણે ક્યારે મહી ખુશાઓ મેળાઓ.

ફક્ત પાંચજી ગીનીટમાં રૂપરૂ મળવાથી તમારૂ આશુ ભવિષ્ય ફળ હાટી દેવામાં આવશે. એક પ્રકારના રૂ. ૧-૪-૦ પાંચ પ્રકારના રૂ. ૫-૪-૦ આખા ભવિષ્ય ફળના રૂ. ૧૦-૩-૦ ઉપરાંત મુઠ, ચોટ, ચક્રણ, સાકણ, અલગદાન પીગે નરહરના કારણો પોતાના દેવી પ્રયોગોના બજાથી અગ્નિ રીતે ફર ફરી ફરી પ્રકાશ છે. મળો તા તમે,

વૈચરાજ ભોતીલાલ મહારાજકર ભટ. L. W. T.

(મંમદગીના ખામ પદ)

કે. શકીયાની પોળ સામે, પુરાણીનીવાસના મે. સારંગપુર-અમદાવાદ

દશી કારીગરીને ઉત્તેજન આપી

દેશનું ધન દેશમાં રાખો !

અમારે ત્યાં ચાંદી અથવા ચાંદી ઉપર સોનાનું ગિલીટ કરેલું મીણાકારીનું દરેક કામ જેનું કે નરહરન, સાદીપીન, હેયરપીન, રાષ્ટ્રીય મંજ. માથાના ચાક, એરોંગ, પોન્ડીયો, બંગલીયો, ૧૬, ચીંટીયો, પાંદરીયો, લોટીટ, ચમચા, જા.ત. કમીઓ અને પ્રમુખા શ્રીઅંગ માટે ચાંદી તથા મોનાના અશ્રુપણ, મેચ, મણકા વિગેરે બહુજ કિંમત લાગતી મળશે. તેમજ આપના નાનકા સુશોભન મોનોગ્રામના જટન જોડેથી દરેક સુવર્ણમાં બનાવી આવવામાં આવશે.

તમારા ભગવાનો ગેલેરીઓ દુકાનો વિગેરે દાથ કથમના ચિત્રોથી રાખાશે અમારે ત્યાં દાથકથમના સુંદર સિનસીમેરીના તથા રામાયણ મહાભારતના તથા મનવર્ણના તથા દરિયાના દર્યાના ચિત્રો ગમે તેવી સાઈઝના સારા કથમનાં મળશે. કથમના પદાર્થો વિચારણાઓ અને બીનાયજના દરેક સુંબાર વિગેરેના ચિત્રોના સરક નેપાર મળશે અને સારાનાં સારા કથમનાં નમ પસંદ પડે એવી રીઝાઈનનો એલબર્ન વગેરે દરેક મુદતમાં જોડેથી બનાવી આવવામાં આવશે. નેટ કરવા સાથે દાયાદોતરી નાંવંડીઓ તેમજ શ્રીની મેવાના ઉપધોગી સમકામ વગેરે જેવાં કે વૃષભ, મમરી, કપલ, ચરખા દોતર, બેઠમૂચ્છ શ્રીઓ, કમીઓ, જરન, ગુર.ખદાની, કંકાની, બંદો મુઠાની, ચીંટીઓ, પેપરકટ થડીઆગની મેંકે, કાદનપેન, સાદીપીન, દાયાના ખોયા. બનવરોના લાકાટ તેમજ દરેક ધાર્મિક મૂર્તિના વગેરે વગેરે નેપાર મળશે.

વેચવાની છે—મહાત્માની એક પીઠાઈ મરોના દરેક તેમજ સાંખી પદ દુટની, કિં. ૨૫૦૦ની.

—આજેજ એક પોરકાર લખી આઈર્લેંડી કાગલો :—

પારિતોષિક પરીક્ષાઓ.

શુદ્ધાદૈત વૃદ્ધિસંપ્રદાયના અનુયાયીઓ—ખાસ કરીને યુવાન વર્ગ આંત્રિકાધિક સ્થિતિના અભ્યાસમાં વિશાળ દૃષ્ટિએ પ્રવૃત થાય એવા શુભ ઉદ્દેશથી આ છતામી પરીક્ષાઓ યોજવામાં આવી છે.

પ્રવેશપરીક્ષા—દીનકંકર કૃત બાલશિક્ષાં બાળ પાંચમો સંપૂર્ણ, પુષ્ટિમાર્ગનો ઇતિહાસ પૃષ્ઠ ૧૦૮, ચતુઃશ્લોકી, કૃષ્ણાચર્ય, મધુરાદિક, સર્વોત્તમરતોત અને મંગલચરણ. આ સંપૂર્ણ સ્તોત્રો કંઈક કરવાના છે. (આ સ્તોત્રો “આટલું તો કરજે” નામના પુસ્તકમાં છે.)

મધ્યમાપરીક્ષા—રસેશ ધીરૂજી, પોદરા ગ્રંથ, શ્રીનાથજીનો ઇતિહાસ તથા ભક્તિપોષણ અર્થ સ્થિતિ. ઉત્તમાપરીક્ષા—શુદ્ધાદૈતમાર્તક, શુદ્ધાદૈતસિદ્ધાંત, ગુજરાતી (વૈષ્ણવમહાસમાધાનો), શ્રીહરિરાયજી કૃત શિક્ષાપત્રમાંથી પૃષ્ઠ ૨૦, શ્રીપુરુષોત્તમજીનું જીવનચરિત્ર (શાસ્ત્રી હરિશંકરજી પ્રખેપ્ત ગુજરાતી અથવા ગ્રન્થભાષામાં).

વિશિષ્ટપરીક્ષા—પ્રથમ વર્ષ—શ્રીમદ્ભુજાખ્ય અધ્યાય ૧ થી ૨ જો, વિદ્-મંડન, આધિર્ભાવ-તિરોભાવવાદ સુધી, અલ્પવાદસંપ્રદમાંથી શ્રીહરિરાયજીનો અલ્પવાદ સરીકે અથવા મુખ્યોપનિષદ જન્મપ્રકરણ અને તામસ ફલ પ્રકરણ, ભક્તિપદ્ધતિનિર્ણય પૂરો, ભક્તિરસત્વવાદ પૂરો અને અલ્પવાદ સંપ્રદમાંથી શ્રીવજરાયજીનો અલ્પવાદ.

દ્વિતીય વર્ષ—શ્રીમદ્ભુજાખ્ય અધ્યાય ૩ જો અને મોઘો, વિદ્-મંડન અપરિણામ લીલાનિવૃત્તવાદ સુધી, અને અલ્પવાદસંપ્રદ પૂરો, શુદ્ધાદૈત પરિષ્કાર સાથે; અથવા શ્રીમુખ્યોપનિષદ દ્વિતીય સ્કંધ પૂરો તથા તૃતીય સ્કંધ ૧૫ થી ૨૪ અધ્યાય, ભક્તિપદ્ધતિ, આધિર્ભાવતિરોભાવવાદ, અલ્પવાદ સંપ્રદમાંથી શ્રીહરિરાયજીનો અલ્પવાદ અને શુદ્ધાદૈતપરિષ્કાર, સાંખ્યકારિકા અથવા બેલગેદ, સંક્ષિપ્તપરિણામવાદ ગીતા ૧૫ થી અધ્યાય વસ્તુતીકિકા સાથે, તથા વિદ્-મંડનમાંથી નિત્યલીલાવાદ.

આ પરીક્ષાઓમાં ઉત્તીર્ણ થનારાઓને વૈષ્ણવ મહાસભા તરફથી થોડા પ્રમાણસર પદ્મિનોગિક વસ્ત્રો અથવા આપશે.

સામાન્ય નિયમો.

(૧) આ પરીક્ષાઓમાં પુષ્ટિમાર્ગની આંત્રિકાધિક દીક્ષા લેનાર કાંઈ પણ વૈષ્ણવ ઓ કે પુરુષ જોસી ચક્રો. પરીક્ષાખ્ય જોસનાર ઉમેદવાર ગમે તેટલી ઉંમરના હશે તો પણ તેને માટે દરકત આવશે નહિ. (૨) પરીક્ષાનો સમય સં. ૧૯૯૦ ના માર્ગશીર્ષ વદ ૯ થી મુસાંછડના દિવસનો હશે. પરીક્ષાનું પરીણામ સં. ૧૯૯૦ ના માઘ સુદ ૫ વસંતપંચમી ઉપર જાહેર કરવામાં આવશે. (૩) બધી પરીક્ષાઓ લેખી લેવામાં આવશે. (૪) પ્રશ્નપત્રો તે ગામના નીમાવસા પ્રતિષ્ઠિત નિયામકોને પહોંચાડવામાં આવશે. (૫) પરીક્ષાનાં સ્થલ આદિની તજનીજ પહેલેથી નિયામકો સાથે કરીને તેમના દ્વારા તે તે ગામમાં પહેલેથી જ જાહેર કરવામાં આવશે. (૬) ઉમેદવારોએ અરજીમાં પોતાનાં નામ કામ સાથે અરજ લખી મોકલવાં તથા કય પરીક્ષામાં જોસનાર છે તે પણ સ્પષ્ટ રીતે જણાવવું. (૭) પરીક્ષા માટેનું અરજપત્ર મોકલ્યાં મોકલે સં. ૧૯૯૦ ના શક્તિક સુદ ૧૫ સુધીમાં જ સ્વીકારશે.

મંચીઓ,

શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય વૈષ્ણવ મહાસભા, ૧૧૦-ગીરીરામ, અમદાવાદ.

મહાશક્તિ વીર્યગુટિકા.

શક્તિની સર્વોત્તમ જડીબુટ્ટી આજકાલની શક્તિની દવાઓમાં પહેલે નંબરે પૂરવાર થઇ ચુકેલી વીર્યવર્ધક આ દવા છે. શરીરની નબળાઇ પર વિજ્ઞાપક અસર કરનાર અને આનંદ આપનાર આ દવા ખરડાના પહાડોની અમરકાંઠિક વનસ્પતિઓમાંથી બનાવેલી છે. ગોળી ૫૦ ના પાંચ રૂપીઆ. ટપાલ ખર્ચ જુદું નમૂનાની ગોળીઓ માટે આઠ આનાની ટીકીંગ બીડા. શ્રીબક્ષ આયુર્વેદિક ફાર્મસી, સુ. પોરબંદર (કાઠીયાવાડ).

નિરાધાર બાળકો માટે સારામાં સારો માગી કથો ?

તેમની સંભાળ લઈ, સારી રીતે ઉછેરી તેમને આદર્શ નાગરિક જનારવાં તે. આ કામ વધુ ઉત્સાહથી

નડીઆદ હિન્દુ અનાથાશ્રમ

કરી રહ્યું છે. આવાં નિરાધાર બાળકો ઉપરંત તત્ત્વવત્તાં બાળકો, નિરાધાર અધકા અને અર્ધગ્રામી-પુરો વગેરેની સંભાળ લેવાનું કામ આજ વર્ષે થયાં આ સંસ્થા કરી રહી છે. આ સંસ્થાને તમે અને તેટલી મદદ કરો. રૂ. ૧ અને તેથી વધુ દાન આપનારના નામ વાર્ષિક રીપોર્ટમાં છપાય છે.

મંત્રી—હિન્દુ અનાથાશ્રમ નડીઆદ. (ગુજરાત)

અત્ર પાવન માટે અજબ તુરંજો, સ્વાસ્થ્ય શુદ્ધ મુંદર

હજમાહજમ ચૂર્ણ.

આ ચૂર્ણ વૃદ્ધ યુવાન બાલક વગેરે દરેક સેવન કરી શકે છે. આથી કબજવાત, અપચો, પેટનો દુખાવો, આક્રોશ, દાહ, મંદાસિ, ઉલટી, ઝાડા, બોળ, અજીર્ણ, અશક્તિ વગેરે તેમજ હાથ પગની તૃટ, વીર્યસ્રાવ, સ્વપ્નદોષ, શરદી, અજેષ્ઠમ વગેરે શરીરની વ્યાધિઓમાં અકસીર છે. ડિ. બા. ૧ નો રૂ. એક, ટપાલ ખર્ચ જુદું. નમુના માટે બે આનાની ટીકીટ મોકલો.

૬. ખરડા ફાર્મસી, પોરબંદર.

શ્રીપુષ્પિમાર્ગીય વિશ્વવિદ્યાલયોગી.

શ્રીમક્તિમાર્ગીય દર્શનીય ચિત્રસમૂહ

ચિત્ર સંખ્યા ૩૧

અવાપિ પર્યન્ત પ્રકટ થયેલ કાર્ડ શક્તિ વિચિત્રગી. (શ્રીનાથજી આદિ આર્ક સ્વરૂપ, શ્રીમદાંત્રપ્રભુજી, શ્રીગુરુસંપ્રદાય, શ્રીગોકુલેશ અને શ્રી શ્રીગોકુલન ચણ મહારાજ શ્રીપ્રભૂતિના) ચિત્રઓ અપૂર્વ સંમદ ખીસામાં રહી શકે એવો પોકેટ સાઈઝ સુંદર ટકાવ અને સોનેરી પાકે મુંદરો નોખાવર એક રૂપિયા. 'શુદ્ધદિત' ના ગ્રામ્યને શ્રાદ્ધ આનામાં આપવામાં આવશે બદારગામથી મંગાવનારે માર્ગવ્યયના બે આના વધારે મોકલવા.

મળવાનું ટેકાણું [ગાંધીનગર-૯ જ. શાહ. બુક્સેલર.

૬. શ્રીલાલભાવાણી મંદિર, ભુલેશ્વર. મુબાઇ નં. ૨.

તા. ૬.—અમદારે ત્યાં વેચાણ સમગ્રવચના સ્વયં પ્રતિષ્ઠા અને ચિત્રો મળે છે.

નં.	વિષય.	પૃષ્ઠ.	નં.	વિષય.	પૃષ્ઠ.	નં.	વિષય.	પૃષ્ઠ.
૧	ચલાકરમહામંત્ર ...	૨૩૧	૫	શીતિવ્રતશિલ્પ ...	૨૪૧	૬	ક્યારે ૧ ...	૨૪૬
૨	મનમાં શીકૃષ્ણ ...	૨૩૨	૬	કનકાનિષેકનો અનુભવ ...	૨૪૨	૧૦	શરદ્. ચંદ્ર ...	૨૪૬
૩	શીકૃષ્ણશિલ્પ ...	૨૩૫	૭	કનકમળાઈન ...	૨૪૫	૧૧	ચર્ચાપત્રો ...	૨૫૦
૪	શીકૃષ્ણોત્તમ ...	૨૩૬	૮	નિશ્ચિત ચાર ...	૨૪૬	૧૨	સાંપ્રદાયિક પ્રવૃત્તિ ...	૨૫૧

આ કપરાંત ૧૭ થી ૩૨ પૃષ્ઠો પ્રવૃત્તિ વિચારપ્રથાના છે.

સુપરસંચારકુંડળની મજા સર્વજ્ઞાદારની વાચવલ્લિ સોપાન જાતના વર્ણનાં કિંમતો

શ્રીકૃષ્ણ

જન્મ પ્રસિદ્ધ પૌષ્ટિક મધુર્ક અને લહેતતદાર પીંડ ખોરાક પચાવનાર જૂઝ લગાડનાર લોહી માંન વધારી તાકાદ લાગી બાકનાર કિંમત જાતની નાનીનો રૂ. ૧) એડીના રૂ. ૨)

અયમપ્રાર

અષ્ટવર્ગ ઔષધિ મીઠિત જીવન વધેક ખોરાક સર્દી, ખાંસી, સ્તેષ્ઠ અને છાતીના દોઈ પણ રોગોની પ્રસિદ્ધ દવા. કિં. તોડા ૨૦ નો રૂ. ૧૧

માલકુલ

દુખળા પાતળા અશાભ બાળકોને કષ્ટ પુષ્ટ અને સ્વસ્થિમય તાકતવાળા બનાવનારી મીઠી દવા. કિંમત ૧૨ આના

દેહકુલ

જડન અને ગાસ નિવાય દોઈ પણ જાતની દાહર-ને રજ કસાકમાં આરામ આપનારી દવા. કિંમત દિખાટલી એકના ૪ આના

સુધારક

કફ, ખાંસી, હમ, યજ્ઞ, કેલેરા, સંધકાંઠી, અતિ-આર, વમન થવું, બાધ, વગેરે એવાજ રોગોની અનુપામ વચરની દવા. કિં. બા. એકના ૮ આના

આ સુપરસંચારકુંડળની મજા સર્વજ્ઞાદારની વાચવલ્લિ સોપાન જાતના વર્ણનાં કિંમતો

પ્રશ્ન ૧૦૭—મનુષ્યનારે ધર્મનો કિયો સર્ગ અવશ્ય સંપ્રદ કરવા યોગ્ય છે ?

ઉત્તર—ક્રમ, ક્રમ, તપ, તિથિ, શીવ, બ્રહ્મચર્ય, અદિત્યા, આદિક સમગ્ર એવો જે ધર્મનો સર્ગ તે સંપ્રદ કરવા યોગ્ય છે.

પ્રશ્ન ૧૦૮—ત્યાગ કરવા યોગ્ય અધર્મનો સર્ગ કિયો છે ?

ઉત્તર—ક્રમ, ક્રોધ, લોભ, મોહ, કલ, મદ, મત્સર, ધ્રુવ્યો, અનિમાન આદિક સમગ્ર અધર્મનો જે સર્ગ તે ત્યાગ કરવા યોગ્ય છે.

પ્રશ્ન ૧૦૯—સર્વ કાળને વિષે શ્રવણ કરવા સાંભળવા યોગ્ય શું છે ?

ઉત્તર—શ્રીપરબ્રહ્માના જે અદિત્ય તે સર્વ કાળને વિષે સાંભળવા યોગ્ય છે.

પ્રશ્ન ૧૧૦—પંડિતને પણ ભણવા ને ભણાવવા યોગ્ય શું છે ?

ઉત્તર—જેણે કરીને શ્રીકૃષ્ણ ભગવાનને વિષે ભાદાત્મ્યનાને યુક્ત ને દૃઢ અનન્ય પ્રીતિએ અદિત્ય બક્ષિ થાય તથા જેણે કરીને પોતાના ધર્મને વિષે અનન્ય નિષ્ઠા થાય એવું જે મત શાસ્ત્ર તે તો યદ્યપિ પંડિત હોય તેમણે પણ ભણવું તથા ભણાવવું.

પ્રશ્ન ૧૧૧—વિચાર કરવા યોગ્ય શું છે ?

ઉત્તર—જગતમાં જે સંદેહતામતામદ્વેષ જે મિથ્યા પ્રપંચ તેને વિષે આશંકિત કરી પણ ન થાય એ વિચાર કરવા જેવું છે. તથા હાલે હાલે આયુષ્ય મર્યાદાને કાળ ભરી છે જાણી પરબ્રહ્મોપાસના કરવા કાળજી રાખવી.

પ્રશ્ન ૧૧૨—નગવદર્મ પાઠ કરનારે શ્રેષ્ઠ કિયાં મત પાઠવું કરવા યોગ્ય છે ?

ઉત્તર—અધિક પુરુષોત્તમ નાન અને બારે ગાયત્રી આવનારી બને પણ (શુક્રત, ને કૃષ્ણ પણ) ની એકાદશીઓ અને મુજલાયે કરીને આર જ્યોતીઓ શ્રીકૃષ્ણજન્મભદ્રમી, શ્રીરામનવમી, શ્રીવામનદ્વાદશી અને શ્રીનૃસિંહચતુર્દશી એ ઉત્સવોનાં મત અવશ્ય પાઠવું કરવા.

પ્રશ્ન ૧૧૩—ત્યાગ કરવા યોગ્ય તે કિયો છે ?

ઉત્તર—જેનાં વચન પચ્ચરની પેઠે વા વચ્છણણ જેવાં પદ્ધતાં હોય. ને અશ્રુનાં જોતાનારો હોય, હરિશુર આચર, મદાવ પુરુષની આત્માનો વિશેષ કરનારો (હરિતાં આત્મા યદી અવજો અલનારો) ને ત્યાં ત્યાં મનુષ્ય ગાયે પેરને કરનારો ને ક્રોધ કરીને - પછી કામકામ કરવાનો આરંભ અનાદરે કરીને કરતો હોય, ને અમારો કરીને રદિત, ને પોતાનાં યુજનાં વખાણ પોતે કરતો હોય એવો જે પુરુષ તે ત્યાગ કરવા યોગ્ય છે.

પ્રશ્ન ૧૧૪—ઉત્તમ પુરુષ તે કોને કહાય ?

ઉત્તર—સર્વ પ્રાણી માનવ દુઃ સાચ એવું ઈચ્છતો હોય ને કોઈનું હુકમ સાચ એવું તો ક્યારે પણ ઈચ્છતો ન હોય ને ભગવાન દ્વારા હોય ને કોઈનું સ્વર્ગાવવાનો હોય એવું જે પુરુષ, તેને ઉત્તમ કહાય.

પ્રશ્ન ૧૧૫—માનવ પુરુષ તે કોને કહાય ?

ઉત્તર—કર્મ કરીને, મને કરીને, તથા વાણીએ કરીને તથા દેહે કરીને જેને વિષે જે પ્રકારે વર્તેલો હોય તેને વિષે પણ તેજ પ્રકારે જે પુરુષ વર્તેલો હોય, ને શુભને શુભ, ને દોષને દોષ; એ ગુણને ગુણ કરનારો એવો જે પુરુષ હોય તે મધ્યમ જાણવો.

પ્રશ્ન ૧૧૬—કનિષ્ઠ પુરુષ તે કોને કહિયે ?

ઉત્તર—કર્મા (કૃત) (કરેલા ઉપકારને) ન જાતો, ને કોઈ મિત્ર હોય તેનું મિત્રપણું પણ કોઈ રાગે નહિ, ને પરથકી પોતાની શંકાનો કરનારો ને પોતાના હિતની વાર્તામાં પણ અદ્વાગહિત, અને કરવા યોગ્ય ને ન કરવા યોગ્ય જે કર્મ અકર્મ વિકર્મોદિ તેને જાણે નહિ ને કેવળ પારકાના દોષનેજ દેખતો હોય એવો જે પુરુષ તેને કનિષ્ઠ પુરુષ જાણવો.

પ્રશ્ન ૧૧૭—સકામ પુરુષ તે કોને જાણવો ?

ઉત્તર—શ્રીભગવાન વિના ધર્મ, અર્થ, કામ, ને મોક્ષ; એ પદાર્થને જે ઇચ્છે છે પણ એ આરેથી અતીત ઘર્ષ કેવળ શ્રીહરિના હિતાર્થની સેવા તેનેજ હરિપ્રાન્નતાર્થ કરવા ઉપર દૃઢમતિપૂર્વક આસક્તિ ઘર્ષ ન હોય તેવા જના અતુલ્ય લોક ભોગના મુખને ઇચ્છનારા જેવાને સકામી જાણવા.

પ્રશ્ન ૧૧૮—રાત્રિ દિવસ અતિશય ચિંતન કરવા યોગ્ય તે શું છે ?

ઉત્તર—પ્રત્યક્ પુરુષોત્તમ શ્રીકૃષ્ણ નારાયણ તેમનાં જે શુભ અરણ્યરવિંદે તેથી આરંભીને તે મસ્તક પર્યંતનું શુદ્ધ રમાત્મક આનંદમય અપ્રાકૃત દિવ્ય સ્વરૂપ તેજ અતિશય ચિંતન કરવા યોગ્ય છે.

પ્રશ્ન ૧૧૯—નિરંતર જીવવાએ કરીને ઉચ્ચારણ કરવા યોગ્ય તે શું છે ?

ઉત્તર—મત્ ચિન્ આનંદરૂપ શ્રીકૃષ્ણ, નારાયણ, માધવ, મુકુંદ, જોષિદ, હરે, હે હરિ, હે ભક્તવન્દ્ય, હે હેશવ, હે કરુણામિત્ર, હે દીન જાન્યુ, હે અશરણ-ગરણ, હે પતિતપાવન, હે અધમોદ્ધારણ ઇત્યાદિ શ્રીપદ્મહરનાં નામો અનંચિત છે, તે નામોનું ઉચ્ચારણ નિરંતર કરવા યોગ્ય છે.

પ્રશ્ન ૧૨૦—મનુષ્યે કોના યદી નિરંતર જપ પામયો ?

ઉત્તર—જીવની હિંગ્યા આદિક જે અધર્મ તે યદી, તથા નાસ્તિકરૂપ જે કાળો નાગ તેથી, તથા ઉપર ઉપરથી દેખ્યા પામે તો ધર્મનો આભાસ જેવું આચરણ જણાતું હોય ને અદરથી તપામેલો તે પાપે ભરેલો એવો જે પાપથી પુરુષ તે યદી, તથા પતિ જીવના છતાં પરપુરુષ યદી ઉત્પન્ન થયા એવા જે વર્ણસંકરે પુરુષ તેમના મંગ યદી, તથા સુરાપાનને તથા માંમલક્ષણ કરનારા એવા અધર્મમાર્ગી પુરુષોના અંગ યદી તથા પોતાની અપદ્વીનિ યદી, અતુલ્ય તેમણે નિરંતર લય રાખવો ને સર્વ દુર્લભ પણ અધિક ભય મહાન સાર્વભૌમ ચક્રવર્તી રાજાના પણ સંભરૂપ પરાતર પૂર્વ પરિશ્રમ તે સદા મર્ચદા સર્વ સ્થળે અપદિન ભારાજમાન છે એમ જાણી અધર્મમાર્ગે ન પડવાનો ભય વિશેષ રાખવો.

પ્રશ્ન ૧૨૧—નાસ્તિક કોને જાણ્યો ?

ઉત્તર—જે સર્વ અખિલ જગતમાત્રના કર્તા પતિ એવા મૂળ પરબ્રહ્મ જે સાયિક ગુણોથી સદા રહિત એવા, અને અમાયિક (અપ્રાકૃત દિવ્ય) ગુણે સુક્રાંત એવા ને સદા દિવ્ય અપ્રાકૃત આકાર મૂર્તિ એવા જે દૃષ્ટુ નારાયણ; તેમને દેવજ ચૂન્યરૂપ આકારરહિત કહેનારા તથા તેજ જગદેર્તા કોઈ છેજ નહિ એવું કહેનારા, અને જગતની ઉત્પત્તિ સ્થિતિ અને લયને કરનારું તે માત્ર સ્વતંત્ર કર્મજ છે, કર્મના ફલદાતા ઈશ્વર છેજ નહિ, એ પ્રકારે કહેનારા જાણનારા જે દેવજ કર્મજ નહિ અજ્ઞાની જનો તેને નાસ્તિક જાણવા.

પ્રશ્ન ૧૨૨—નિષ્કામ પુરુષ તે કોને જાણ્યો ?

ઉત્તર—શ્રીપરાત્પર પરબ્રહ્મ પુરુષોત્તમ ભગવાન વિનાની પ્રગતતા પૂર્વકની સેવા તથા ધર્મોદિક ઋ પદાર્થને (પુરુષાર્થને) પણ ન ઇચ્છે ને જેમાં શ્રીહરિને સુખ, શ્રીહરિની પ્રસન્નતા, એ જે વસ્તુતા ઉપરજ પ્રાધાન્યપણે અંતઃકરણની વૃત્તિથી આશ્રય હોય તેવા જન તેજ નિષ્કામી પુરુષ છે.

પ્રશ્ન ૧૨૩—નિત્યપ્રલય તે કોને જાણ્યો ?

ઉત્તર—જેમ રાત્રિદિવસને વિષે નિરંતર ન દેખ્યામાં આવતી એવી જે ફલપુષ્પની વૃદ્ધિ તે ચતી જાય છે, ને તેની પૂર્વ અવસ્થાનો લય થતો જાય છે, તેમ જોળન આદિક જે અવસ્થા તે આવતી જાય છે ને જાણપણાદિક જે અવસ્થા તેનો નિરંતર ઘણુ અધશણે વ્યતીતરૂપ લય થતો જાય છે તે નિત્યપ્રલય જાણ્યો.

હાંત—જેમ પ્રજ્વલિત દીપકમાંથી મૃત તેજાદિક ખજી જતું રહે છે. નદીઓમાં નિરંતર જળનો પ્રવાહ વહન કર્યો કરે છે. જળાશયમાત્રમાંથી પવન તાપાદિકદ્વારાએ નિરંતર જળનું શોષણ થતું જાય છે ઇત્યાદિ હાંતો અને છે. સર્વનો સાર સિદ્ધાંત એ દે-દરદેજ ઘણુ ઘણુ કાળ બદલાય છે ને ગયેલો કાળ ફરી આવતો નથી. એમ અવસ્થાઓ દેહની બદલાયા કરે છે તેમ નિત્યપ્રલય ઉપર હાંત સૂક્ષ્મ વિવેકી જનનીજ હોય છે.

પ્રશ્ન ૧૨૪—નૈમિત્તિક પ્રલય તે કોને જાણ્યો ?

ઉત્તર—બ્રહ્માની રાત્રિને નિમિત્ત કરીને પાતાળથી લેઈને તે સ્વર્ગપર્વત ૧૦ દશ લોકોનો જે લય, અતળ, સુતળ, તળાતળ, વિતળ, મહાતળ, રચાતળ, પાતાળ, ભૂલોક, ભુવલોક, સ્વર્ગલોક, એનો જે લય તેને નૈમિત્તિક પ્રલય જાણ્યો.

પ્રશ્ન ૧૨૫—આત્મતિક પ્રલય (મહાપ્રલય) કોને જાણ્યો ?

ઉત્તર—શ્રીપુરુષોત્તમના ધામરૂપ જે અક્ષરબ્રહ્મનું તેજ, તેને વિષે જ્યારે પ્રકૃતિપુરુષથી આરંભાને સર્વ લીન ચઈ જાય ત્યારે તેને આત્મતિક પ્રલય જાણ્યો.

પ્રશ્ન ૧૨૬—આસ્તિક કોને જાણ્યો ?

ઉત્તર—સર્વ લોકના કર્તાને સર્વજીવમાત્રને કર્મના ફલપ્રદાતા અને દિવ્ય અપ્રાકૃત છે. મૂર્તિ જેમની એવા જે મૂળ પરબ્રહ્મ તે, તેમના જે દિવ્ય અનંત

અવતાર તે સહિત માગીને તથા મૂળ એક બ્રહ્મ તેમ અગણિત સ્વરૂપે થઈ અસ-
ચર સર્વ પ્રાણી માત્રમા બિરાજે છે એવું જ્ઞાન ધરાવીને જે પુરુષોત્તમ પરબ્રહ્મને
સર્વોત્તમાવ રાખીને ભજતો હોય ને તેમના વચન (વેદશાસ્ત્ર, ગીતા, ભાગવતાદિ
પુરાણ સહિત-ઉપનિષદ-શ્રુતિ-સ્મૃત્યાદિની આજ્ઞાદૃષ્ટા) તેને વિષે દૃઢ વિશ્વાસ-
યુક્ત હોય તેને આસ્તિત્વ જાણવો.

પ્રશ્ન ૧૨૭—હૃલ્લ વસ્તુ કયી છે ?

ઉત્તર—જગતમા શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્મા તેજ હૃલ્લ છે ને જેવા તે હૃલ્લ છે
તેવાજ તેમના પરમ એકાતિક લક્ષ્ય મહાનુભાવ ભગવદીય અને શ્રીસદ્ગુરુ પણ
હૃલ્લ છે. એટલુજ નહિ તે કદાચ મેળવ્યા હોય પણ તેમને આજખીને સેવા
વિષે દૃઢ પ્રીતિ રાખવી, એટલુજ નહિ પણ તે કહે તે પ્રમાણે સદા સર્વદા
વર્તણુ, એ પણ અતિશય હૃલ્લ છે ને સર્વથી હૃલ્લ તો એ છે કે એ મૂળ
પરબ્રહ્મની નિષ્કામ અચલિત પંરાલક્ષિ પ્રાપ્ત કરવી તે છે.

પ્રશ્ન ૧૨૮—જન્મ થવાનું મૂળ શું છે ?

ઉત્તર—અત કરણને વિષે ઝઢેલી એવી જે શુભ અશુભ વાસનાઓ તેજ જન્મ
લેવાનું મુખ્ય કારણ છે

પ્રશ્ન ૧૨૯—વાસના તે કેને કહિયે ?

ઉત્તર—સર્વજ્ઞાને વિષે કર્મની અધિ (ગાઠ) રૂપી જે વિષદ્વેષરૂપ વૃષ્ટા-
ઓની વૃત્તિ રૂપી જે વાસના (ઇચ્છા, અભિલાષા) અતન્મા જડાયા જેવી હોય
તે વાસના કહે છે.

પ્રશ્ન ૧૩૦ મોટા ઈવિ તેમણે મનુષ્યને કરવા ચોખ્ખું મુખ્ય કર્મ શું કહ્યું છે ?

ઉત્તર—જે કર્મ કરીને શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્મા પ્રસન્ન થાય તેવું કર્મ તેજ કરવા
ચોખ્ખું કહ્યું છે. અનેક પ્રકારની ચતુરાઈ કહાપણુ હોય તો પણ જો શ્રીકૃષ્ણ પરમા-
ત્માને ન રીઝવ્યા ત્યારે તો એ સર્વ કહાપણુ અને ચાણુક્યપણુને પણ ધિક્કાર છે

પ્રશ્ન ૧૩૧—તમોશુષુ તે કેને કહિયે ?

ઉત્તર—અજ્ઞાન છે સ્વરૂપ જેતું, ને જેને વિષે મૂઢપણુ રહ્યું છે, ને હા અને
દેનારો, ને જીવોને સુઝાવનારો એવો જે શુષુ તેને તમોશુષુ જાણવો

પ્રશ્ન ૧૩૨—રજોશુષુ તે કેને કહિયે ?

ઉત્તર—ગંગ (આસક્તિ પ્રીતિ) છે સ્વરૂપ જેતું, એવો ને ચચળ એવો ને
નાના (વિવિધ) પ્રકારની ક્રિયાને વિષે આસક્તિનો કરાવનારો ને વિષયને વિષે
જીવની વૃત્તિઓને ચોટાટી દેનારો એવો જે શુષુ તેને રજોશુષુ કહિયે

પ્રશ્ન ૧૩૩—સત્વશુષુ તે કેને કહિયે ?

ઉત્તર—રૂઢું છે જ્ઞાન તે જેને વિષે એવો તે પ્રકાશનો કરનારો ને આનંદનો
જ્ઞાને ને નિર્મળ પ્રસાદરૂપ એવો જે શુષુ તેને સત્વશુષુ કહિયે.

પ્રશ્ન ૧૩૪—સાત્વિક તપ તે કિયું જાણવું ?

ઉત્તર—શ્રીભગવાનને પામવાનું અર્થે કર્યું હોય ને પછી તે શ્રદ્ધાભક્તિએ તા હોય ને શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માની મૂર્તિને શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માની પ્રાપ્તિ માટે બા-કાંઈપણ ફળની ઈચ્છાએ રહિત એવું જે તપ હોય તેને આત્મિક તપ કહિયે.

પ્રશ્ન ૧૩૫—રત્નોગુણી તપ તે કોને કહિયે ?

ઉત્તર—પોતાની કીર્તિ વધારવાને અર્થે કર્યું હોય, ને લોકને વિષે પૂજાનું જ છે એક ફળ તે જેનું એવું જે તપ તેને રત્નોગુણી તપ બોલવું.

પ્રશ્ન ૧૩૬—તમોગુણી તપ તે કોને કહિયે ?

ઉત્તર—શત્રુ આદિક કોઈકે જીવના નાશ અર્થે અથવા બીજાને દુઃખાદિ ઉપદ્રવવાને અર્થે (જેમ કે મારણ મોહન ઉચ્ચાટન વશીકરણાદિ કરવા સાદું) કર્યું હોય તે દેવળ મૂંઝવણિયે કરીને (કોઈપણ પ્રકારના જ્ઞાનરહિતપણે કરીને) કર્યું હોય, ને પોતાને દુઃખરૂપ ફળનું દેનારું એવું જે ફળ, જેના થકી પ્રાપ્ત થાય, ત્યાં પ્રકારનું જે તપ તેને તમોગુણી તપ કહિયે.

પ્રશ્ન ૧૩૭—ચતુરુપોનો નિરંતર મત જગતમાત્રના જીવોને માટે કેવી તે વર્તેલો હોય છે ?

ઉત્તર—પ્રવાહી જીવોનું જન્મમરણ સંચુતિ ટૂંકી બીજા અને અજ્ઞાનતાની રૂપધિ પ્રાપ્તિ થાય તે સારું હરકોઈ જીવને શ્રીભગવાનની સન્મુખ કરવાને વિમુખ મોથી અલગ કરવા, ને આ લોકમાં તથા પરલોકમાં એ જીવનું અત્યંત કુદૃષ્ટિય એવા હિતોપદેશનું કહેવું તે રૂપી જે સહાનુ પદાપકારનું દાન દેવું એજ ચતુરુપના હૃદયે નિરંતર અભિપ્રાય રહેલો હોય છે. પોતે જેનું પ્રદાનનું મુખ હોલે છે તેનું સર્વ કોઈ પામે એવો આશય નિરંતર વર્તેલો રહે છે.

પ્રશ્ન ૧૩૮—સત્ શિષ્ય કોને કહિયે ?

ઉત્તર—પરમ એકાંતિક નિત્ય મુક્તજનો જે પ્રમાણે ભગવદ્દર્શનેજ વિષ્ણુજાંડિત વર્તે છે તેવા ધર્મને વિષે કુશળ એવા જે સદ્ગુરુ તેમની શિક્ષાને અનુસરેલ નિરંતર વર્ત્યો કરે તેને સત્ શિષ્ય કહિયે.

પ્રશ્ન ૧૩૯—ચતુર પુરુષ કોને સમજવો ?

ઉત્તર—સીના કટાણે કરીને અને કાંચનાદિને દેખીને જે મોહને ન પામે તેજ પુરુષ જન છે. જગતમાં રીત પ્રસિદ્ધ છે કે, સ્ત્રી સર્વ વ્યવહારે ચતુર હોય પણ જેને પોતાના સ્વામીને રીઝવી તેની પ્રશન્નતા (કૃપા) ન મેળવી તો તે સર્વ પ્રકારવા યોગ્ય ગણાય તેમ સર્વ ઉપાયે કરીને પ્રભુને રીઝવવા એજ છે.

પ્રશ્ન ૧૪૦—વિશ્વાસ કરવા યોગ્ય નહિ એવો દીયો પદાર્થ છે ?

ઉત્તર—વિષ કરતાં પણ અધિક ઝેરરૂપ વિષય અને તેના નિવાસરૂપ સ્થાનની જે નારી તેનો કદિ પણ વિશ્વાસ ન કરવો.

પ્રશ્ન ૧૪૧—કયી તૃપ્તિ જીવ (બુદ્ધી) ચતી નથી ?

ઉત્તર—દેહની અર્ધ, પુદ્ગલ, જનવસ્થા ને તેમજ મૃત્યુની છે પણ તે સંમીપમાં આવ્યા છતાં પણ ધનાદિકની આશા, તથા અવવાની આશા તે તો કદી પણ અર્ધ થતીજ નથી.

પ્રશ્ન ૧૪૨—જગતમાં લાભહીન કોણ છે ?

ઉત્તર—શ્રીહરિ થકી વિમુગ્ધ હોય તેને લાભહીન બાણવો.

પ્રશ્ન ૧૪૩—સાચો લાભ તે કિયો બાણવો ?

ઉત્તર—શ્રીહરિની જે પ્રાપ્તિ તેજ ખરો લાભ બાણવો.

પ્રશ્ન ૧૪૪—સર્વગુણી કર્મ તે કોને કહિયે ?

ઉત્તર—રાજદેવાદિથી રહિત એવું ને રૂઢી યુદ્ધિયે કરિને કર્યું એવું ને પોતાના વર્ણશ્રમને યોગ્ય એવું કર્મ કર્યું હોય ને શ્રીભગવાન વિના ધીબા કોઈપણ દેવના અનુસધાને રહિત જે કર્મ તેને સર્વગુણી કર્મ કહિયે.

પ્રશ્ન ૧૪૫—રત્નેશુણી કર્મ તે કોને બાણવું ?

ઉત્તર—દેવની અભિલાષાને વિષે યોગ્ય એવો જે ઉપાય તેણે યુક્ત, ને પ્રીતિએ સહિત એવું જે કર્મ તેને રત્નેશુણી કર્મ કહિયે.

પ્રશ્ન ૧૪૬—તમોશુણી કર્મ તે કોને બાણવું ?

ઉત્તર—હિંસામય એવું ને પોતાને દુઃખ થાય એવું હોય તેને ન જીવે, તથા પોતાનો નાશ થાય એવું હોય તેને ન જીવે, તથા પોતાનું જે ષળ તેને ન જીવે, એ પ્રકારે જોયા વિના ને તપામ કર્યા વિના જે પુરુષ કર્મ કરે છે તેને તમોશુણી કર્મ કહિયે.

પ્રશ્ન ૧૪૭—સર્વગુણી કર્તા તે કિયો બાણવો ?

ઉત્તર—ઉત્પાદે યુક્ત, અને ધીરતાયે યુક્ત, ને પોતાનું ધાર્યું થાય તથા ન થાય તો પણ તેને વિષે હર્ષ શોક ન પામે એવો, ને અહંકારે રહિત એવો, ને દેવની ઇચ્છાયે રહિત એવો જે કર્તા તેને સર્વગુણી કર્તા બાણવો.

પ્રશ્ન ૧૪૮—રાજસી કર્મનો કરનારો તે કિયો બાણવો ?

ઉત્તર—નિરતર પથ વિપથને વિષે આસક્ત એવો ને કિયાના દેવની ઇચ્છાવાળો જે પોતાના સ્વાર્થને અર્થે ધીબાને પીડાનો કરનારો એવો ને હર્ષ શોકને પામનારો એવો જે કર્તા હોય તેને રત્નેશુણી કર્તા બાણવો.

પ્રશ્ન ૧૪૯—તમોશુણી કર્તા તે કિયો બાણવો ?

ઉત્તર—પારદામાં યદ્યપિ ચદ્મશુભના બંધાર હોય છતાં તેને વિશે દોષશુદ્ધિએ કરીને ભેતું તેનું નામ અમૂળા કહે છે.

પ્રશ્ન ૧૫૧—ધૂધ્યાં કોને કહે છે ?

ઉત્તર—બીજાની જે ન્દોટમતા તેને દેખી ન ખાયાય તેનું નામ ધૂધ્યાં કહે છે ?

પ્રશ્ન ૧૫૨—કામના ઉદ્ભવ થવાનું મૂળ કારણ શું છે ?

ઉત્તર—મનને વિશે પંચ વિષયના અનુભવનો કરનારો એવો જે ધારૂપ સંકેતે તેજ કામનાનું મૂળ છે.

પ્રશ્ન ૧૫૩-૧૫૪—ચાતું મરણું અથવા ભવણું કોને જાણવું ?

ઉત્તર—જેનો પુનઃ જન્મ ક્યારે પણ ન થાય, એટલુંજ નહિ, પણ જે માતાએ જન્મ આપવા માટે ગર્ભરંધનમાં રાખી પ્રસન્ન્યો તે માતાને પણ ફરી ગર્ભવાસનામાં આવવું ન પડે એવા ચાચા ભગવદ્ભક્તોનું મરણ તેજ ચાતું મરણ. અથવા અખંડિત જીવ્ય ગણાય છે.

પ્રશ્ન ૧૫૫—જન્મ્યો કોને જાણવો ?

ઉત્તર—જેનું ફરીથી મરણ ન થાય ને જેણે જન્મીને મનુષ્યદેહ ધરાવું ત્યાંકર્ય ચાર્યકર્ય પોતાનું કરી બીજા જન્મને પણ એવા ભગવદ્ભક્તે માર્ગે સજાડ્યા એજ ચાતું ભવન જાણવું.

પ્રશ્ન ૧૫૬—જન્મ ધર્મનું ચાર્કર્યપણું તે ક્યારે સમજવું ?

ઉત્તર—દેહને વિશે આત્મશુદ્ધિ તેનો ગર્વ પ્રકારે ત્યાગ કરીને અને અસારૂપ એવો જે ભવામા તેને પોતાનું સ્વરૂપ માનીને પરમેશ્વરનો હૃદ આગ્રય કરવો એજ જન્મ ધર્મનું ચાર્કર્યપણું છે, કેમકે ગર્વ પદાર્થ માત્ર વિશે પોતાની સત્તા ન માનતાં હું કર્તૃપણું ને આ મદારૂ એ જે વાતની અહંતામમતાના ત્યાગપૂર્વક સર્વના કર્તા ભર્તા ચંદર્તા પરબ્રહ્મનેજ ગર્વ આત્મનિવેદન અમ્યક રીતે અર્પો દેવું તે પરમાત્માનો અંશરૂપ આત્મા તેણે અંશીરૂપ બ્રહ્મ તેમને ઉદ્દેશીનેજ તે પરબ્રહ્મન વિતાર્થે નિઃકામ શુદ્ધિએ ભગવદ્ભક્ત્યરણ ચદ્મશુ રત્નપુરુષોના ચત્વરંગમાં ફરીને કરવું એજ ખરેખર જન્મ ધર્મનું ચાર્કર્ય છે.

પ્રશ્ન ૧૫૭—અત્તશુભી શુદ્ધિ તે કયી જાણવી ?

ઉત્તર—પ્રવૃત્તિકર્મ ને નિવૃત્તિકર્મ, તેના સ્વરૂપને જે યથાર્થપણે કરીને જે શુદ્ધિ જાણતી હોય તથા કરવા યોગ્ય અને ન કરવા યોગ્ય તથા ભયને અનુસર તથા અધનને મોશ તથા ન્યાયને અન્યાય એ ગર્વના સ્વરૂપને યથાર્થપણે કરીને જે શુદ્ધિ જાણતી હોય તે શુદ્ધિને અત્તશુભી જાણવી.

પ્રશ્ન ૧૫૮—અભેશુભી શુદ્ધિ તે કયી જાણવી ?

ઉત્તર—ન કરવા યોગ્ય અને કરવા યોગ્ય એવું જે કર્મ તથા અધર્મ તેમને યથાર્થપણે કરીને જે શુદ્ધિ જાણતી ન હોય તે અભેશુભી શુદ્ધિ જાણવી.

પ્રશ્ન ૧૫૯—અભેશુભી શુદ્ધિ તે કયી જાણવી ?

ઉત્તર--જે બુદ્ધિ અધર્મને વિષે ધર્મને માનતી હોય તે જે અર્થ હોય તેને અનર્થ કરી નાખતી હોય તેવી બુદ્ધિને તમોશુણી જાણવી

પ્રશ્ન ૧૬૦--તમોશુણી લક્ષિત તે કયી જાણવી ?

ઉત્તર--પોતાના ગતુનો નાશ કરવાને અર્થે અથવા ખીલતુ અહિત કરવાને અર્થે શ્રીલક્ષ્મીપતિનુ જે લજન કરવુ તથા દલો કરીને જે લજન કરવુ તથા ગીલો ડોઇક દેવપૂજન કરતો હોય તેને દેખીને તેના ઉપર મત્તર લાવીને જે પૂજન કરવુ તેને તમોશુણી લક્ષિત જાણવી

પ્રશ્ન ૧૬૧--રજેશુણી લક્ષિત કયી જાણવી ?

ઉત્તર--રાજ્ય ધન આદિઃ ઐહિક માયિક સુખાદિની પ્રાપ્તિને અર્થે જે મકામપણે લગવાનની લક્ષિત કરવી તથા સાલોક્ય ગાયુલ્ય મામીખ્ય અને સાધિ એ આ મુક્તિની પ્રાપ્તિને અર્થે જે લક્ષિત કરવી તથા લોકને વિષે પોતાની કીર્તિ વધાવવા સાફ જે લક્ષિત કરવી તેને રજેશુણી લક્ષિત જાણવી

પ્રશ્ન ૧૬૨--સર્વશુણી લક્ષિત તે કયી જાણવી

ઉત્તર--પોતાના પાપોનો નાશ કરવાને અર્થે સમગ્ર પાપને નાશ કરનાર એવા જે શ્રીહરિ તેમની જે લક્ષિત કરવી તથા આ વસ્તુ શ્રીભગવાનને જાહુ પ્રિય છે ને આ પદાર્થ શ્રીભગવાનને અતિશય ગમે છે એવા પ્રકારે શ્રીહરિના સુખ મતોપને ગણપણનાજ સદરૂપે કરીને અતિશય શ્રદ્ધાએ સહિત શ્રીભગવાનનુ અપાર માહાત્મ્યજ્ઞાન જાણીને શ્રીભગવાનની અનન્યલક્ષિત કરવી તેને સર્વશુણી લક્ષિત જાણવી

પ્રશ્ન ૧૬૩--દર્શના અગ્ર સરખી ઝીલી બુદ્ધિ જેનો હોય એવો પુરુષ કેને જાણવો ?

ઉત્તર--પાતાલલોક થકી કરીને તે મૂળ પ્રકૃતિ પુરુષના લોક પર્યંત મર્વ લોકના વૈલવમાત્રને અગ્નિર જાણીને જે શ્રીહરિનેજ નિખામબુદ્ધિએ અખડિત લજે તેને દર્શના અગ્ર સરખી તીક્ષ્ણ બુદ્ધિવાળો જાણવો

પ્રશ્ન ૧૬૪--મોલાગ્ર જેવી અથવા મૂસળતા અગ્ર લાગ સરખી સ્થૂળ બુદ્ધિ વાળો કેને જાણવો ?

ઉત્તર--શ્રીપરબ્રહ્મ પગતપર પૂર્ણ પુરુષોત્તમ વિના ૧૪ શાદ લોક લઈને પ્રકૃતિ પુરુષ પર્યંતના નાશવત સુખને વિષે સત્યપણાની બુદ્ધિ કરીને તેવા સુખોને જે મુજે છે તેને મોલાગ્ર અથવા મૂસલાગ્ર જેવી જડબુદ્ધિવાળો જાણવો.

પ્રશ્ન ૧૬૫--સત્ય વિષય તે કિયા જાણવા ?

ઉત્તર--યદ્યપિ પચપર્વાતમક અવિદ્યા સખધી જે પચવિષય તે જાદ્યમાન કેજ, તથાપિ શ્રીકૃષ્ણ ભગવાનનોજ જેમા સલમપણે હઠ સખધ ચાહુ હોય તેવા એટલે પરમાત્માને ઉદેશી તેમના સખધી જે શબ્દ, સ્પર્શ રૂપ, ગં ને ગંધના જે ભગવતપ્રમાદી તુલ્યના જે પાચ પ્રકારના બ્રહ્મરસના વિષય તેજ માત્ર સત્ય છે ને

આતિપૂર્વક કૃષ્ણપ્રપત્તિવાળા તે જે જે દેશને વિષે વિચરતા હોય અથવા વાસ કરીને વિરાજતા હોય એવા જે દેશ, તથા ભગવદ્વત્તારે અથવા શ્રેષ્ઠભક્તિજ્ઞાનાદિ પંચના વૈષ્ણવાચાર્યોએ પધારીને પોતાના ચરણારવિદે કરીને અંકિત એવો જે દેશ, તથા શ્રીયમુનાલ, શ્રીગિરિરાજાલ, યૃદાવન, ગોધુલ, મથુરા, દારિકા આદિ સમ પુરીનાં મહાધામો તથા શ્રીવિષ્ણુપાદોદકી શ્રીગંગાલ આદિ લઈને સર્વ તીર્થો, તથા શ્રીકૃષ્ણ ભગવાનનાં મંદિર સંબંધી સમીપ એવો જે દેશ, શ્રીહરિ શ્રીસદ્ગુરુ અને વૈષ્ણવોના મંથનને પામ્યો એવા જે તે સર્વ દેશને તે ઉત્તમ સુદેશ જાણવો ?

પ્રશ્ન ૧૭૨—અસત્ દેશ તે કિયો જાણવો ?

ઉત્તર—આરે વેદ તથા શ્રીમદ્ભાગવતાદિક પુરાણ તથા ચારુવલ્ક્ય પરાશરાદિ મહાન ઋષિપ્રણીત સ્મૃતિ આદિ લઈને લગ્નવદ્ધર્મપ્રતિપાદક સર્વ સ્મૃતિઓને વિષે જ્યાં એવા જે વર્ણ આશ્રમના ધર્મપૂર્વક ભગવદ્ધર્મ તે થકી આવળા એવા જે પાપકર્મના આચરણ કરનારા જે દેશના રહેતા હોય એવો જે દેશ તે અસત્ દેશ જાણવો.

પ્રશ્ન ૧૭૩—સત્ કાલ કિયો જાણવો ?

ઉત્તર—શ્રીકૃષ્ણ, શ્રીરામચંદ્ર, શ્રીનૃસિંહલ, શ્રીવામનાવતાર આદિક જે શ્રીભગવાનનાં ઉત્સવ દિવસ તથા ૨૪ એકાદશીઓ શુદ્ધ ભાગવતધર્મપ્રણાલિકા ગિદ્દાંતાનુસાર વર્તન થતું હોય એવો જે કાળ તે સત્ કાળ જાણવો.

પ્રશ્ન ૧૭૪—અસત્ કાળ તે કિયો જાણવો ?

ઉત્તર—જે કાળને વિષે મનુષ્યોની મતિઓ મલિન વર્તતી હોય ને કેવળ અધર્મ તેજ સર્વ પ્રકારે વર્તતો હોય એવો જે કાળ તે અસત્ કાલ જાણવો.

પ્રશ્ન ૧૭૫—સત્ક્રિયા તે કયી જાણવી ?

ઉત્તર—આ લોક અને પરલોકને વિષે પોતાને સર્વ સુખને પ્રાપ્ત કરનારી એવી અને સ્વધર્મ જ્ઞાન ને વૈરાગ્ય એ ત્રણે અંગે કરીને યુક્ત એવી જે પરમેશ્વરની નવધા પ્રકારની ભક્તિ જેમાં દશમી પ્રેમલક્ષણાત્મક વરુદ્ધ સંયોગાનુભવ રૂપની મ્નેહાસક્તિપ્રધાન એવી ભક્તિ શ્રી ભગવાનને પ્રસન્ન કરનારી જે ભગવદ્ધર્મપણી સર્વ ક્રિયા તેજ સર્વ પ્રકારે શુદ્ધ નિર્ગુણ સત્ ક્રિયા જાણવી.

પ્રશ્ન ૧૭૬—અસત્ક્રિયા તે કયી જાણવી ?

ઉત્તર—આ લોકને વિષે અને પરલોકને વિષે પોતાનું ભુકું કરે એવી અને જેણે કરીને શ્રીહરિ શ્રીસદ્ગુરુ કે સત્ગુરુષ સહ નહિ એવી જે ક્રિયા તે અસત્ક્રિયા જાણવી.

પ્રશ્ન ૧૭૭—સત્સંગતિ તે કયી જાણવી ?

ઉત્તર—શ્રીહરિને વિષે તથા ધર્મજ્ઞાન અને વૈરાગ્યાદિક પદ્મપતિ શુભે કરીને યુક્ત એવા જે શ્રીહરિના ભક્તજન તેમને વિષે પ્રીતિએ કરીને જે પ્રસંગ કરવો તેનું નામ સત્સંગતિ જાણવી.

પ્રશ્ન ૧૭૮—હુસંગ કેને જાણવો ?

ઉત્તર—સત્ધર્મે રહિત એવા જે અસત્પુરુષ તેમને વિશે જે પ્રસંગ તેને હુસંગ જાણવો.

પ્રશ્ન ૧૭૯—સત્ શાસ્ત્ર તે કિયું જાણવું ?

ઉત્તર—શ્રીરામકૃષ્ણાદિક લગવદ્વતારની દિવ્ય એવી ભૂતિઓ તથા જેમાં પરબ્રહ્મ ને તેમના અવતારોનું પ્રાકટ્ય, લીલા, ચરિત્રચુક્રત ધર્મ જ્ઞાન ને વેદાંશ્યાદિક ગુણચુક્રત એવી જે શ્રી લગવાનની અચલ સ્નેહાત્મક નિષ્કામ શુદ્ધિરૂપની લક્ષિત તેનું પ્રતિપાદન કરનાર એવું જે શાસ્ત્ર તે વેદાદિક સમાન ઉત્તમ સત્ શાસ્ત્ર છે એમ જાણવું.

પ્રશ્ન ૧૮૦—અસત્ શાસ્ત્ર તે કિયું જાણવું ?

ઉત્તર—જે શાસ્ત્રને વિશે શ્રીપૂર્ણપરબ્રહ્મ શ્રીકૃષ્ણ લગવાનનું ને ધર્મનું સુદ્ધિએ કરીને ખરું કર્યું હોય એવું જે શાસ્ત્ર તે સકલ, અસત્ શાસ્ત્ર લક્ષીને તેને સર્વથા અનાદર રૂપે ત્યાગ કરવો.

પ્રશ્ન ૧૮૧—સત્ દીક્ષા તે કંઈ જાણવી ?

ઉત્તર—વેદ શાસ્ત્ર પુરાણ ઇતિહાસ પંચરાત્રાદિ તત્ત્વ ગ્રંથ લાગવત ગીતા ઉપનિષદ વ્યાસસૂત્ર ને લગવદ્લક્ષ્મ્યાચો રચિત ભાષ્યો સ્મૃતિઓ આદિકમાં સ્થાપન કરેલો વર્ણ આશ્રમ ને ઉચિત મહાભાગ્યસંસ્કારપૂર્વક પરબ્રહ્મની પ્રાપ્તિ માટે સુમુક્ષુ દેવિનાં લક્ષણે ચુક્રત થઈ શુદ્ધ વૈદિક લક્ષિતમાર્ગના પ્રાચીન અનાદિસિદ્ધ સત્સંપ્રદાયોમાંથી પોતપોતાના રચિ અતુલ્લભતા પ્રમાણે શુભ વૈષ્ણવી દીક્ષા સ્નેહાત્ પૂર્વક લેવી-કે જે ઉપાયે આલવાથી બ્રહ્મનો સાક્ષાત્કાર સંબંધ થાય. મંત્રાર્થપૂર્વક થકણ કરી મંત્રના શબ્દો પરત્વે લક્ષ્યપૂર્વક બ્રહ્મસ્વરૂપના ધ્યાને પ્રવર્તમાન થઈ તેમના સ્મરણે સંયુક્ત થઈ અહિંસા આદિક રૂપ સત્ધર્મે પ્રવર્તમાન થઈ બ્રહ્મની શરણાગત પૂર્વક સર્વોત્તમનિવેદન કરી, જીર્ણપુરુ તિલક દાદશ સ્થાને ધરી, શુદ્ધનિર્ગુણ કરી શ્રીનુલસીલના ઢાળની લગવત્રસાદી એવડી કંઠી કંઠે ધારણ કરી તથા લગવદ્સુધાદિ પદ સુદ્રાચે ચુક્રત જોખીચંદનનાં ચિન્હ ધારણ કરવાં. સર્વ દીક્ષાઓમાં ઉત્તમ દીક્ષા આત્મધર્મની તો વૈષ્ણવ દીક્ષા તેજ છે ને તે સર્વોપરી છે.

પ્રશ્ન ૧૮૨—અસત્ દીક્ષા તે કયી જાણવી ?

ઉત્તર—જેનું વિધાન વેદશાસ્ત્રાદિ શુદ્ધ સત્ત્વ પુરાણ ઇતિહાસ સ્મૃત્યાદિ પંચરાત્રમાં ન હોય એવા પાપકર્મરૂપની કોઈ પણ દીક્ષા ન લેવી. જે અસત્ દીક્ષામાં આગળ વેશ ભુજા કુરૂપ થઈ જતો હોય, જેમાં વાંભમાર્ગી કુઠાં પંથી કોલ માર્ગી આદિમાં અધર્મોચરણ માર્ગે દોરવતા હોય તેવી દીક્ષાએ કરીને શાંતિ તો થાય નહિ, પણ ઉલટો ઉદ્દેગ થાય ને વિષ્ણુલગવાનનું ચિન્હ રહિત એવી જે દીક્ષા તે તો અસત્દીક્ષા જાણવી.

પ્રશ્ન ૧૮૩—સત્ મંત્ર તે કિયો બહુવો ?

ઉત્તર—મંત્રનો જે બહુનારો તેની બુદ્ધિને શાંતિનો કરનારો એવો ને શુદ્ધ સંસ્કૃતબોલી નિશુભ્ધ એવા પરબ્રહ્મ ને તેમનાજ અવતારાદિક સ્વરૂપના ચતો નામે યુક્ત-તમ અથવા દાસધર્મે શરણાગતિપૂર્વક સર્વાત્મનિષેદન બ્રહ્મસંબંધ થાય એવો કહેનારો જે મંત્ર તેજ સત્ મંત્ર બહુવો. ઉત્તમ બ્રાહ્મણાદિકને માટે પ્રણવબીજ મંત્રોચ્ચારસંયુક્ત તે પરબ્રહ્મનો મંત્ર તેનું ગ્રહણ કરવું તેજ અમંત્ર છે.

પ્રશ્ન ૧૮૪—અસત્ મંત્ર કિયો બહુવો ?

ઉત્તર—રજોગુણી અને તમોગુણી વા મલિન હૃદ્ દેવતાદિકના મંત્રો મારણ, મોહન, ઉચ્ચાટન, વશીકરણાદિક ખીબને ઉપદ્રવ કષ્ટ કે હાનિ દેનારા તેવા મંત્રોને સદા અસત્મંત્ર બાળી તેનો અનાદર કરી ગ્રહણ કરવા નહિ.

પ્રશ્ન ૧૮૫—સત્ધ્યાન તે કીયુ બહુવું ?

ઉત્તર—મૂળ અનાદિ સ્વયંસિદ્ધ જે પરાત્પર ત્રિગુણાતીત પરબ્રહ્મ પુરુષોત્તમ અને તેમના અવતારો અને તેમની ૮ પ્રકારે શિષ્ટ પુરુષોએ સિદ્ધાંત સ્થાપન કરેલી મૂર્તિઓ તથા સ્વયંભૂ ભાવી મહા અવતારો (જેવા કે શ્રીજગન્નાથરાયજી, શ્રીનાથજી, શ્રીરંગજી, શ્રીજગદ્ગીરનાથયજ્ઞાદિ) તથા ભક્તિમાર્ગના આચાર્યોએ નિરૂપણ કરેલી રીતે પૂર્ણ પરબ્રહ્મની અપ્રાકૃત દિવ્ય વેદ શ્રુતિસ્મૃત્યાદિપૂર્વક પ્રતિ-પાદન કરેલી રીતે તેમનું એકાગ્રચિત્તે સંલગ્ન મનબુદ્ધિ વૃત્તિ તાદાત્મ્યેકપણે જોડીને તદ્રૂપ રસાત્મક ભાવે ધ્યાન કરવું.

પ્રશ્ન ૧૮૬—અસત્ ધ્યાન કિયું બહુવું ?

ઉત્તર—મનઃકલ્પિતપણે સત્શાસ્ત્રના સિદ્ધાંતોથી વિરુદ્ધપણે અથવા ઉપાસન ધ્યાન કહ્યું તેથી ઉલટ કિવા વિપરીતપણે માયિક પ્રાકૃત ધ્યાન અન્ય છવાદિકનું કરવું તે તે અસત્ ધ્યાનજ સમજવું.

પ્રશ્ન ૧૮૭—શાસ્ત્ર શું હોય તે કહેવાય ?

ઉત્તર—ધર્મ, અધર્મ, કામ, ને મોક્ષ અથવા ધર્મ, અર્થ, કામ ને મોક્ષ એ પદાર્થના બોધને જે કરતું હોય તે શાસ્ત્ર બહુવું.

પ્રશ્ન ૧૮૮—જે પુરુષ પોતાના આત્મતિક કલ્યાણની વૃત્તિવાળો હોય અથવા પોતાની વૃદ્ધિ થાય એવું જે ઈચ્છતો હોય તેણે શું કરવા યોગ્ય છે.

ઉત્તર—પૂર્વે કહ્યા એવા જે મત્ દેશ સત્કાલ, સત્ક્રિયા, સત્સંગ, એ આદિક જે આરાં આઠ વાનાં તેમનો જોગ રાખવો, એ કરવાથી ત્યાં આત્મતિક કલ્યાણ તથા સર્વ શુભવૃદ્ધિ જરૂર થાયજ.

પ્રશ્ન ૧૮૯—ધર્મનો સર્ગ તે કિયો ?

ઉત્તર—શમ તથા મત્ય, શૌચ તથા દ્વંષા, તપ તથા દાન, દયા તથા દમ, એ આદિક મર્વે ધર્મનો સર્ગ બહુવો.

પ્રશ્ન ૧૯૦—અધર્મનો સર્ગ કિયે બાણુવો ?

ઉત્તર—ખોદું બોલવું તથા ક્રોધ કરવો તથા અવહિંસા તથા મતિનપણું તથા ઇદ્રિયોનો નિગ્રહ ન કરવો એ આદિ સર્વે અધર્મનો સર્ગ બાણુવો.

પ્રશ્ન ૧૯૧—શમ તે કેને કહ્યો ?

ઉત્તર—શ્રીભગવાનના સ્વરૂપને વિષે સ્થિરતાએ કરીને બેઠાયલી જે શુદ્ધિ તેને શમ કહ્યો.

પ્રશ્ન ૧૯૨—દમ કેને કહ્યો ?

ઉત્તર—પોતાનો જે ઇદ્રિયોને સમૂહ તેમને વિષય ક્ષત્રી પાછાં વાળી તે સવ મનોનિગ્રહ કરીને નિયમમાં રાખવો તેને દમ કહ્યો.

પ્રશ્ન ૧૯૩—ધીરજપણું તે કેને બાણુવું ?

ઉત્તર—શિશુ ઇદ્રિય અને અબુદા એ બન્નેને વિશેષપણે કરીને જે અતણું તેને ધીરજ (ધૈર્ય) બાણુવું.

પ્રશ્ન ૧૯૪—તિતિક્ષા કેને કહે છે ?

ઉત્તર—દેહને વિષે દુઃખ આવી પડે તે સહન કરવું તેને તિતિક્ષા કહે છે.

પ્રશ્ન ૧૯૫—શૌચ કેને કહે છે ?

ઉત્તર—શુદ્ધ પવિત્રતા આચારપૂર્વક દર્મને વિષે અંગપણે કરીને જે વર્તણું તેને શૌચ કહે છે.

પ્રશ્ન ૧૯૬—અત્ય કેને કહે છે ?

ઉત્તર—અત્ય પરબ્રહ્મ છે, જે તેનાંજ અણિલાત્મક ચરાચર સર્વસ્વરૂપ છે, તે એકજ સત્ય પરબ્રહ્મ સર્વમાં કાર્યકારણપણે વ્યાપક અનુસ્મૃત રસા છતાં તે અલિપ્ત નિર્વિશર શુદ્ધ અદૃત વ્યતિરિક્ત (બુદ્ધ) પણ છે. તેજ અણિલાત્મક બ્રહ્મનો અંશરૂપ આત્મા છે તે પણ સત્ય છે. તેમાં આત્મશુદ્ધિનિષ્ઠ, સ્પષ્ટ નિઃસંદેહ, જેનો જીજ્ઞે અર્થ ન થઈ શકે એવું સત્ય ધર્મ નીતિયુક્ત જે વચન બોલવું તે અત્ય કહેવાય છે.

પ્રશ્ન ૧૯૭—તપ કેને કહે છે ?

ઉત્તર—કાયાવડે કરીને, વાત્સલ્યવડે અને મને કરીને તપ થાય છે. દામનો જે ત્યાગ કરવો તે પણ તપનુંજ (અંગ) લક્ષણ છે.

પ્રશ્ન ૧૯૮—ઐષ દાન કેને કહ્યો ?

ઉત્તર—મોંઘાના અને કાળના ભયે રંધિત એવું જે આત્મીય કલ્યાણનું જે મોહરૂપ અથવા મોહાધિક દીકુષ્ણના ભગવાનને સ્વરૂપાનંદનું જે દાન કરવું તે સર્વથી ઐષ દાન બાણુવું.

પ્રશ્ન ૧૯૯—સ્વર્ગસ્થાનરૂપ સ્થિતિ તે આને આ દેહમાં ક્યારે થઈ શકે ?

ઉત્તર—ક્યારે ક્યારે ચતુર્વિધનો ઉદય થતો હોય ત્યારે ત્યારે સ્વર્ગસ્થાન મનિરૂપ કહ્યો.

પ્રશ્ન ૨૦૦—શ્રોત્રવાન કોને કહિયે ?

ઉત્તર—કોઈક જાતનો જુઝો સ્વભાવ પડી ગયો હોય તેને જીતવો તેજુ નામ શ્રોત્ર કહેવાય.

પ્રશ્ન ૨૦૧—મમત્ર જગતને કોણ જીતી શકે ?

ઉત્તર—જે પોતાના મનને જીતી લે તેણે અખિલ જગતને જીત્યું એમ કહેવાય.

પ્રશ્ન ૨૦૨—માહાત્મ્યે મહિત જ્ઞાન તે કોને કહ્યું છે ?

ઉત્તર—શ્રરાક્ષર અને લોકલોકાદિ પર્વતથી ઉદ્ભૂંધીને આગળ જતાં સ્વેતદ્રોષ ત્રીરાષ્ટિ અને બદરીકાશ્રમાધિપતિ નરનારાયણાદિ અનંત કોટિ બ્રહ્માંડે બ્રહ્માંડે બિરાજતા શ્રોહરિનાં અગણિત સ્વરૂપોથી પણ પર, રમાવૈકુંઠાદિ રૂપાનથી પણ શ્રેષ્ઠ, અપરામત્ક નારાયણ વિષુ પ્રધાનપુરુષ આદિ ત્રિવિક્રમ વિરાટ સ્વરૂપાદિથી પણ શ્રેષ્ઠ મર્વ ધામને મર્વ સ્વરૂપોની ઉત્પત્તિનું મૂળ સ્થાન, ને સર્વ અવતારના અવતારી ત્રીરાષિકારમણ શ્રીવેદ્યુતિરૂપ શ્રીગોપીજનોના પ્રાણુવલ્લભિય જોલોકે અધિષ્ઠિત વિરાજમાન શ્રીકૃષ્ણચંદ્ર સ્વયંપ્રકાશિત, જેમના એક એક નખચંદ્રને વિષે કોટાનકોટ સૂર્યસમપ્રભાંરૂપ તેજની કાન્તિએ કરીને સર્વ પ્રકાશમાત્રને ઝાંખાં કરી નાખે એવા અગણિત પ્રકાશવત પરમાર્નવ છતાં ભકતોને શીતળ કોટાનકોટિ ચંદ્રના મમાન મધુરામૃતથી વૃષ્ટિરૂપ અદેયદાનકર્તા ને સર્વ કારણના પણ કારણ, મહોકારણના પણ મૂળ સ્વેચ્છાએ સર્વ કરનાર એવા જે મહા નિત્ય મહાન દિવ્ય અમાયિક મૂર્તિ શ્રીકૃષ્ણ ભગવાન, તે પોતે જીવોના કલ્યાણને અર્થે દેવી જીવોને નિજ સ્વરૂપની પ્રાપ્તિ કરાવી આનંદદાન વાસ્તે, તથા ધર્મના સ્થાપનને અર્થે અધર્મનું છેદન કરવા સારૂ, તથા માધુ, ગાય, પૃથ્વી આદિક દેવીજનો ઉપર અનુગ્રહ કરવા, તેમને મુખ દિતાર્થ કરવા આદિ અનેક કારણને અર્થે પોતાના અનંત પ્રકારના અભાવ નિત્ય પ્રતાપને મતાડીને પ્રાદૃતવત માનુષી લીલા ચલા કરતાં મહા નિર્દોષ પૂર્ણ સદ્ગુણ વિશદ દિવ્ય મૂર્તિ શ્રીકૃષ્ણ જેવા ભગવદવતાર બિરાજમાન છે તેને મહા મર્વદા નિત્ય અખંડિત છે એ પ્રકારે જે જાણુને તે તેને માહાત્મ્યે મહિત જ્ઞાન દહીએ.

પ્રશ્ન ૨૦૩—અત કરણની શુદ્ધિ થવાનો શ્રેષ્ઠ ઉપાય તે કયો છે ?

ઉત્તર—મત્ર અને અસત્ર એવા જે ભોગ તેમને યથાર્થપણે જાણીને સત્સાચ તેમણે પ્રતિપાદિત એવા જે સત્ર વિષયના ભોગ તેમને ભોગવવા તે સત્સાચ તેમણે પ્રતિપાદન કર્યા એવા જે અસત્ર વિષયભોગ તેમને મર્વથા ત્યાગ કરવો એ અતંકરણની શુદ્ધિ થવાનો ઉપાય છે. અથવા શીભગવાન મળથી જે વિષયને ભોગવવા, તે ભમવાનના સંબંધથી ગદિત એવા જે મર્વ અસત્ર પંચવિષયભોગ તેનો મર્વથા ત્યાગપણે છોડવો એ અતંકરણની શુદ્ધિ થવાનો ઉપાય છે.

પ્રશ્ન ૨૦૪—શુદ્ધનું શું લક્ષણ છે ?

ઉત્તર—અર્થમાત્રનું આશયપણ ને સર્વ વ્યવહારનું હેતુપણ જે જોલનારી સત્તિ સ્વરૂપ એ આદિકર્તું જણાવી દેવાપણ ને અકાશને વિષે રોકાપણ ને આકાશની માત્રાપણ એ શુદ્ધનું લક્ષણ છે,

પ્રશ્ન ૨૦૫—રૂપાનું શું લક્ષણ છે ?

ઉત્તર—ઉત્તમપણું ને શીતળપણું ને કઠલાપણું ને દોમળપણું ને ત્વચ્ચા ઇન્દ્રિયે ક્ષીને પ્રદણ કરવાપણું ને વાયુનું માત્રાપણું એ રૂપાનું લક્ષણ છે.

પ્રશ્ન ૨૦૬—રૂપનું શું લક્ષણ છે ?

ઉત્તર—અર્થ પદાર્થમાત્રના આકારનું જગ્યાવી દેવાપણું ને દેશ કાળ ને જાતિ ને ગુણ તેમજે ક્ષીને અન્ય અવસ્થાને ધામવાપણું ને નેત્રે ક્ષીને પ્રદણ કરવાપણું ને તેજનું માત્રાપણું એ રૂપનું લક્ષણ બાણું.

પ્રશ્ન ૨૦૭—રસનું શું લક્ષણ છે ?

ઉત્તર—જળનું માત્રાપણું ને માધુર્ય ને તીજાપણું ને કથાયતાપણું ને ખારાપણું ને કંદવાપણું ને જીરુ ઇન્દ્રિય ક્ષીને પ્રદણ કરવાપણું એ રસનું લક્ષણ છે.

ઉત્તર—પૃથ્વીની માત્રાપણું ને સુગંધપણું ને દુર્ગંધપણું ને પ્રાણુ ઇન્દ્રિય ક્ષીને પ્રદણ કરવાપણું એ જે તે ગંધનું લક્ષણ બાણું.

પ્રશ્ન ૨૦૯—પૃથ્વીનું લક્ષણ શું છે ?

ઉત્તર—સ્થાવર જંગમ પ્રાણિમાત્રના ધરીરનું પ્રસવવાપણું ને લોકે ક્ષીને સ્થાનકપણું ને દેહધારિમાત્રને ધરી રહેવાપણું ને આકાશાદિક જ જનને વિભાગ કરવાપણું એ પૃથ્વીનું લક્ષણ બાણું.

પ્રશ્ન ૨૧૦—જળનું લક્ષણ શું ?

ઉત્તર—પૃથ્વી આદિક દ્રવ્યનું પીંચીભાવ કરવાપણું ને પૃથ્વી યમ બંદુપણું ને આદ્ર કરવાપણું ને તૃપ્તિ કરવાપણું ને મૃદુતાનું હેતુપણું ને તરરયાને તાપનું સરવાપણું પ્રાણિમાત્રનું જીવવાપણું એ જળનું લક્ષણ છે.

પ્રશ્ન ૨૧૧—તેજનું લક્ષણ શું ?

ઉત્તર—પચાવવાપણું, ને પ્રકાશ કરવાપણું, ને રચાવિનું પાત કરવાપણું, ને સુધાપણું ને તૃપાપણું ને કાષ્ઠાદિકનું લક્ષ કરવાપણું ને સુકાવી નાંખવાપણું ને જીવ દ્રવ્યનું રૂપરત કરવાપણું શીતને સરવાપણું એ તેજનું લક્ષણ છે.

પ્રશ્ન ૨૧૨—વાયુનું લક્ષણ શું ?

ઉત્તર—તૂલપણું એ આદિકને ભેંતું કરવાપણું ને વૃદ્ધાદિકને કેષાવવાપણું ને શબ્દાદિક પાંચ વિષયનું જાનેન્દ્રિયાદિ પ્રત્યે પગાડવાપણું એ વાયુનું લક્ષણ છે.

પ્રશ્ન ૨૧૩—આકાશનું લક્ષણ શું ?

ઉત્તર—અગ્નિમાત્રને દેહની માદીત્રી કાર ને દેહની લક્ષણની કાર અવકાશ દેવાપણું એ આકાશનું લક્ષણ છે.

પ્રશ્ન ૨૧૪—કલ્યાણનો હેતુ કોણ છે ?

ઉત્તર—અનુભવ સંસ્પર્ષી મુર્તિને ધારણ કરનારા જીવા એ ઇન્દ્રિયાદિક મગવત-વનાર તે વધા તે શીદ્યુની જાનેન્દ્રિય પદાર્થોને પ્રવર્તી વિરતાર કરી રતવ

વર્તન કરી બીજાને ઓઘ લેવા યોગ્ય આચરણની છાપ જણીત બેસાડનારા એવા સંપ્રદાયના આચાર્યો શ્રીસદ્ગુરુ તથા એવા શ્રીહરિને શ્રીઆચાર્યોના કૃપાપાત્ર પરમ એકાંતિક લક્ષ્મણો તથા એવી શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માની અને તેમના એકાંતિક ધર્મ પ્રવર્તક આચાર્યોની પ્રતિમા એ સર્વે કલ્યાણના હેતુરૂપ છે.

પ્રશ્ન ૨૧૫—વૈરાગ્ય ત્રણ પ્રકારે, ઉત્તમ, મધ્યમ અને કનિષ્ઠ હોય છે તેના આ લક્ષણો છે?

ઉત્તર—ઉત્તમ વૈરાગ્યવાન હોય તે ભગવતની ઇચ્છા વાં આજ્ઞા અનુસારે કે પોતાના પ્રારબ્ધ કર્મવશે કરીને વ્યવહારમાં રહે પણ તેમાં જનક વિદેહીની પેઠે તે વ્યવહારમાં આસક્તિરહિત રહે અને પોતાના પ્રારબ્ધાનુસારે પંચ વિષયના ભોગ પ્રીતિયે રહિત ઉદાસીયુક્ત ભોગવે અને વિષયને વિષે નિરતર દોષનેજ દેખતો રહે ને વિષયને ગત્રુ જેવા બંધને અને સંત, સત્સાચ અને ભગવાનની સેવાનો નિરતર સંગ રાખે અને કદાચ દેશકાળ પાત્ર ક્રિયા સંગ આદિ વિપરીત વિષમાપત્તિ આવી પડે તો પણ એની ઉપર કદી સમજણ તે નિરતર દૃઢ કાયમ રહે તે ઉત્તમ વૈરાગ્ય છે મધ્યમ વૈરાગ્યવાળો ઉપરનાં લક્ષણોવાળો દેશ, કાળ, ક્રિયા, પાત્ર, સંગ મળે ત્યાં સુધીજ તે દૃઢપણે રૂપણ કંઠણ વિષમાપત્તિમાં વૈરાગ્ય મંદ પડે તેને મધ્યમ જાણવો. કનિષ્ઠ વૈરાગ્યથી તો ચારા પાંચ વિષય પાત્ર ચાચ ત્યારે તે ભોગવવામાં આસક્તિયુક્ત બંધાઈ જાય તેને મદ વૈરાગ્યવાન જાણવો.

પ્રશ્ન ૨૧૬—મત્પાગમાં વિવેકીજન કેવી રીતે વર્તે છે?

ઉત્તર—દિનદિન પ્રત્યે પોતાના અવશુભને દેખે. અને શ્રીભગવાન આચાર્ય અને લક્ષ્મણે વિષે સદાજ સદ્ગુણીજ દેખે અને સંત મહાત્મ પુરુષો સંગત કરાવે તેમાં ગર્વના ધર્મ હિતને સાફ કંઠણવચન કહે, તો તેથી માત્ર ન દુહોતા અતિશય ચાલુ થાય અને એથી અધિક કંઠણ વચન કહેતા જાય એવી વાંછના રાખી શ્રવણ કરી પરમ, અનુચલ માને, પ્રપચથી વૈરાગ્યનિષ્ઠ રહી માન-લડાઈ-અરિયા આદિ દુશુભનો ત્યાગ કરી લોભ, લાલચ, પ્રતિષ્ઠામાનને રચ પણ ન ઇચ્છે, અને મહાત્મ પુરુષો જેને કહે તે સર્વ વચનો ઉપર દૃઢ વિશ્વાસ પ્રીતિ સંયુક્ત રાખે.

પ્રશ્ન ૨૧૭—વારંવાર જીવને જન્મ લેવો પડે છે તેનું કારણ શું?

ઉત્તર—પ્રીતરૂપ રહેલી વાસના તે વડે જન્મ થાય છે.

પ્રશ્ન ૨૧૮—વાસનાની અકુરીઓ કયાથી સ્ફુરે છે?

ઉત્તર—મનથી સફરૂપ ત્રિકરૂપ હોય થાય છે તેમાંથી વાસના સતત ચાલુ રહે છે.

પ્રશ્ન ૨૧૯—જ્ઞાનનાનું રૂપ શું છે?

ઉત્તર—પહેલાં જે જે પ્રકારના પાંચ વિષયને ભોગવ્યા હોય દીઠા હોય કે આભળ્યા હોય તેની અંતઃકરણને વિષે ઇચ્છા મર્તે તે વાસનાનું રૂપ છે અને જે ભોગવ્યા નથી એવા ઉત્તમ ભોગ ભોગવવાની અંતરમાં તૃષ્ણા ઉદભવતી હોય તે પણ વાસનાનું રૂપ છે.

॥ श्रीविभुवदनगचार्यचरणं विजयन्तान्तमाम् ॥

विद्यया तारुण्येन श्रीमदभ्युदयाना विद्योदयः निरुत्तमाने
अपार इत्यु नन्विने भासि

શ્રુદ્ધાદ્વૈત-ભક્તિમાર્તંડ.

२५५

— કાર્તિક, મં. વત ૧૯૬૦.

અંક ૮.

આવતો અંક.

પહેલી જન્મવત્સાને બચામાં પુરુષો નથી. વિશ્વોત્ત્વં સામુદય
આકર્ષણ આપીને, ચિત્રો વિશે મેં જોયો જાણે પુણ્યને અદ-
ને વૈવશ્યાનીને સંવાજન વનન દેનાતી દેશ બાવની નથી. ફળ
અર્થે નુ સ્વપ્નને ઉદાહરણ થી દુનુ વી. વી. રૂઢ નથી આપારા
દરજાન આદર્શ ઉપર અખરે પૂર્વિ ગિયામ છે. પૂર્વે આદર્શને
વશજન દરજીને કયસ માલ્યા કે ન મોક્ષ લાય તેમને મેક-
લસ વિનિ છે આપના અક્ષત અભ્યાસથી રખાજ કરવા નથી
દાયમા આવે ત્યારે અદર્શ અભિપ્રાય દર્શાવે એ અકે વશજન
નારિ મોકલવા નર્વિ આદ ને વી પૂર્વ થી જશે તે ૪ ૨-૫-૦
સરીને સીકરવા વિનિ છે પાવ આન વધારાના તો મોક્ષવાળે
ત્યં માય છે

जगवर्दीयांक—आप नरना सुद र ना शेय प्र ममरायि
अ नुमाय श्री (ने-राम दग्गा पीता न्वाभेष्टोत्तम जे मेयी न
मामेले अह उका तनवदिपिनी व नामोधी म्मभूत जनश्री

नान्तो

ન ૧૦૨૮, ઝાઝામજીની પે.મી
અમદાવાદ.

नमो भगवते वासुदेवाय
नमो भगवते वासुदेवाय

વાર્ષિક લગભગ બે રૂપિયા. (દવાઓ અને શુદ્ધિ)

લેખાનુક્રમ.

ક્રમિક સ. ૧૯૯૦.

વિષયો.	પૃષ્ઠ.	વિષયો.	પૃષ્ઠ.
૧. મનતામુપૈતિ . . .	૨૬૩	૯ શ્રીકૃષ્ણજયંતી ..	૨૭૪
૨ ચિરંતનો ...	૨૬૩	૧૦. શ્રીકૃષ્ણનાથ .	૨૭૪
૩ મગલપણને પામે છે ...	૨૬૫	૧૧ વિપરીત દશા ...	૨૮૧
૪. યુગોનો ધર્મ	૨૬૬	૧૨ વજ્રવેદને આપી ન	૨૮૭
૫. એવા અને પૂજા ...	૨૬૯	૧૩ ચર્ચાપત્રો ..	૨૮૫
૬ ભગવત્સંગ ...	૨૭૦	૧૩. શ્રીનાથદ્વારા પ્રકટ	૨૮૮
૭ માહાત્મજીના ...	૩૭૧	૧૫. સાપ્રદાયિક પ્રવૃત્તિ	૨૯૦
૮ ભક્તને પ્રાપ્ત્ય હોય ...	૨૭૫	૧૬. પિતૃ મન્થનની	૩૫૫ ૨

“ પિતૃમન્થનજલિ ”

પુનિત વિનાશ પ્રેમાયુ અનિન્યા વિદસિત યગેના,
 પોતાના જનકના આનાકિત વ્યાવહારિક જ્ઞાનમા અપેવા,
 શુદ્ધદેવ ભાગ્યના સુપ્રતિષ્ઠિત સ્વારૂઢ નિમગ્ન બનેના,
 સુધ્ધુ વે વિહિત આગા પાળીને મેટામા આણુમૂના મહેના
 દયારામભાઈ કૃત દેવી પ્રમદી જનતાને સુધ્ધુ સંભળાવના,
 નવીનતામા જનતાને પ્રામાદિક વ્યાપ્તિનુ યથાગ્રિથન દાન કૃત
 અભ્યર્ચના સહિત શુદ્ધદેવ બલરાદનું પાલન-પોષણ કરતા,
 આર્થિકસુખમા પકાઇને દર્શાવતી વંજીરી જનતાને હમાનત
 શુ વિશે, એવા વિચિત્રાણુ પુરુષને માનિધ્યમા જોવાથી,
 સુધ્ધુ પામે રાખી, દલિતતી વેળીની કુનીન હીરો મળી,
 પ્રેમાયુ નયન પટખમાથી ઝરમરતા સ્ત્રીઓ રેનાથી,
 પ્રેપિસત ભાણીની પ્રેપિસતા યજ્ઞાસાને શેકમય કરી નથી ?
 અરે ! વિશે, અમ રક આપની મામામા ગોદરાખના,
 એક સામારિક ત્રિયિત્રી જનતા સમક્ષ સંગઠન કરાવના,
 શ એઓથી ॥ સુધ્ધુને પ્રેમાયુમા બીજીએ ને બસા,
 શુ પિતૃસત્વ યના અભિનયોને મલ રીએ ન રાખના ?
 શ આપના અકિત વ્યાધિને ધનવતરી પહોચતા નહિ હોમે
 શ જવર-ખાસીનો એવો પ્રતાપ કે માનિધ્યમા અવાપ,
 શ આપની મયામા ગોદવાપના એવો એ મમજતા હમે,
 શુ દર્શાવતી જનતા કાળે પ્રેમાયુ-રેડી રેનાનું નહીં કર્યું .
 હે વિશે અમ પામર જીવન કૃપાદાન આત્મદાન કરો,
 પૂજ્ય પિતાશ્રીના આચાર-વિચારને અનુસરનારો બનાવી,
 પૂર્ણ કૃપાથી વેદિન-સચિત કિંવાવાનાનિ અનુસરત કરી,
 પાતુ આપની પાસે આસંગો ન રાખતા સ્વાચ્છ મળી
 આપના સરોજ સુમયગળમા પિતૃમન્થનજલિ અર્પુ છુ
 જીવજીલાલ જગનલાલ જોષી, હોમો-મનાપેર ચક્રત
 (માર્ગના પરિચિતના પ્રધાન)

श्रीवाक्पतिपादा विजयन्तान्तमाम् ॥

चप ८.

अं ८.

शुद्धाद्वैत

अने

शक्तिः

१८८०.

श्रीयज्ञसाम्

४५५.

सहितमार्तः.

अमङ्गलं मङ्गलतामुपैति ।

दैवी निशा याम्यादिशं गतोऽर्कः शेते हरिर्माप्रलिके निषेधः

कपालिमासः समलं दलं च कायाग्रभी पङ्गुगतिर्विषयः ॥१॥

निर्दोषकालः शुभकर्मवर्ग्यः कारागृहं कंसमहासलस्य ।

प्राफट्यतः कृष्णविभोः स्म सर्वम्-अमङ्गलं मङ्गलतामुपैति ॥२॥

यद्विद्वत्तं नाम जना विदन्ति यत्परतः तान्ति सर्वेयमायाः ।

यामे प्रयाणे ज्वनितं सरस्य यमङ्गलं मङ्गलतामुपैति ॥३॥

स्वनेऽपि यदर्शनतोऽशुभं स्याद् यदावृतिर्ना जनतोपदेतुः ।

श्रीरामकल्या स्म कुले कर्पणान्-अमङ्गलं मङ्गलतामुपैति ॥४॥

रथोदकं यन्मलिनं सदैव क्रमेव्यगतादलसङ्गदुष्टम् ।

भागीरथोसङ्गनतः पवित्रम्-अमङ्गलं मङ्गलतामुपैति ॥५॥

धारं जलं यद्ववणान्धुरारोः स्वादुभवेदास्यगमन्नुदानम् ।

स्याजीवनं रथावरजङ्गमानाम्-अमङ्गलं मङ्गलतामुपैति ॥६॥

यदोर्ध्वापानरतं कुलं यद् यथातिना शतमराग्ययोग्यम् ।

प्राफट्यतन्तस्य जगन्निघन्तुर्-अमङ्गलं मङ्गलतामुपैति ॥७॥

चिरन्तनेन.

(१) यद् "द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया" युतौ तु सम्बन्ध उदात्तस्ते ।

रे जीव ! तेनैव कथान मेरी स्वस्तीयमिमेग चिरन्तनेन ॥१॥

पितामर्हा देवगतिं प्रयातौ मुस्तेद्वन्ती पितरौ च यातौ ।

रे जीव ! कृपेन कथान मेरी स्वस्तीयमिमेग चिरन्तनेन ॥२॥

वामाङ्गभूता गृहिणी गता चां गता अनेके गुरवश्च मान्याः ।
 सार्धं सदा संव्यसतात्र मैत्री वधान मित्रेण चिरन्तनेन ॥३॥
 विहाय याता यद्वयो भवन्तं विहाय यातासि तथैव शेषान् ।
 सदा स्थिरेणैव वधान मैत्री श्रीकृष्णचन्द्रेण चिरन्तनेन ॥४॥
 कथा शुभा भागवते पुराणे स्कन्धे चतुर्थेऽस्ति पुरञ्जनस्य ।
 हंसोक्तिमाधाय वधान हंसेन मित्रेण चिरन्तनेन ॥५॥
 विद्युच्चलं जीवनमस्ति जन्तोरात्रलोकालोककलं चलं च ।
 सख्या सदा पूर्णतमेन तेन वधान सख्यं तु चिरन्तनेन ॥६॥
 य ईक्षते त्वां न तमीक्षते त्वं नुहत्तमं सर्वजनस्य नित्यम् ।
 भजस्व तं, तेन वधान मैत्री मित्रेण कृष्णेन चिरन्तनेन ॥७॥
 यः सर्वरूपोऽपि विलक्षणश्च सर्वेश्वरः सर्वगतश्च कृष्णः ।
 सदा स्वकीयार्तिहरेण मैत्री वधान तेनैव चिरन्तनेन ॥८॥
 नेत्रस्य नेत्रं मनसो मनश्च यत्प्रेरिता वागसवश्चरति ।
 नूर्याग्निचन्द्रादिषु यस्य तेजः सदा सुखं तेन चिरन्तनेन ॥९॥

(२) रामारमे यौवनजीवने च वपुःसुखे शक्तिमदाव्यक्ते च ।
 स्वार्थान्धभर्तुः करुणाद्य तेन दत्त पदं, ते तु चिरन्तनेन ॥१॥
 क्षोतोऽप्यनया विषयान्प्रसम्पद् चेश्यामजाशक्तिमपात्रमैत्री ।
 राज्यं प्रजापीडयितुः सुखं च कदापि लोकेऽत्र चिरन्तनेन ॥२॥
 पक्वं फलं यत्कमलं प्रफुल्लं विरक्तिरज्ञस्य रतिश्चलायाः ।
 विद्युत्प्रभा दर्शनमाद्यमिन्दोः कदापि लोकेऽत्र चिरन्तनेन ॥३॥
 चिरन्तनः कोऽपि न कृष्णचन्द्राद् रे चित् ! सञ्चितय शब्ददेनम् ।
 भातादिदं कृष्णकृपावलेन सतां प्रसादेन चिरन्तनेन ॥४॥

नन्दाष्टनन्दचन्द्रैश्च मिते धैरुनहायने ।

जयन्त्यां कृष्णचन्द्रस्य राचिता कृष्णसूनुना ।

स्यादियं कविता तुष्टयै गुणज्ञानां विपश्चिताम् ॥५॥

(ले.—कृष्णान्मज्ञकाशोरामशास्त्री—मांगरोलचन्द्र,)

મીલાગવતના ચતુર્થરેકન્ધમાં સુન્દર સુરંજન રાગની કથા છે તથા “સ્ત્રિયેવં માનસો હૃષો હસેન પ્રતિવોષિતઃ” આ હંમે ભગવાનની વચનને મનમાં ધારણ કરીને મિત્ર એવા હસેલી માથે મિત્રના બાંધ. (૫)

પ્રાણી માત્રનું જીવન વિગળી જેવું ચંચલ છે, અને બ્રહ્મલોક સુધી જઈ ચલ છે, માટે સદા પૂર્ણરૂપ ચિરન્તન મિત્ર એવા શ્રીકૃષ્ણ પ્રભુ સાથે સમ્બન્ધ બાંધ. (૬)

જે સાથે રહેલ અન્તર્યામી પ્રભુ તને લુપ્ત છે પરંતુ તુ તેને જોઈ શકતો નથી જે પ્રાણી માત્રના સુહૃત્તમ છે, તે પ્રભુનું ભજન કર, અને મિત્ર શ્રીકૃષ્ણ પ્રભુ સાથે મૈત્રી બાંધ. (૭)

જે સર્વરૂપ છતાં પણ સર્વત્ર વિલક્ષણ છે. સર્વના હૃદય, સર્વવ્યાપક શ્રીકૃષ્ણ ભગવાન, છે. હમોશ પોતાનાઓની પીડાને હરનાર, મિત્ર, તે પ્રભુ સાથે જ મૈત્રી બાંધ. (૮)

જે નેત્રનું નેત્ર અને મનનું મન છે. જેથી પ્રેરણેના વાણી અને પ્રાણ પોતપોતાની ગતિમા વિચરી રહ્યા છે. સૂર્ય-અગ્નિ અને ચન્દ્ર વગેરેમાં જેનું તેજ છે, તે ચિરન્તન પ્રભુથી જ જન્મ-તમા સદા સુખ છે. (૯)

પ્રભુ સિવાય ખીજું ચિન્તન નથી.

સ્ત્રી અને લક્ષ્મી, યૌવન અને જીવન, શરીર અને મુખ, શક્તિ અને મહાન્ધના, સ્વાર્થાન્ધ ધણીની દયા અને તેણે આપેલું પદ તે ચિરન્તન નથી. (૧૦)

સુદ નદીનો પ્રવાહ અને વિપયાન્ધ પુષ્પની સમ્પત્તિ, કુલદાસુતાનું સ્ત્રીય અને આપાત્ર સાથેની મિત્રતા, પ્રજન-ખીડક રાગનું રાગ્ય અને સુખ કહી પણ આ લોકમાં લાંબો કાળ ટકતા નથી. (૧૧)

પાકેલુ ફલ અને ખીસેલુ કમળ, મૂર્ખનું વંશ્ય અને ચંચળ સ્ત્રીના એક, વીજળીની કાન્તિ અને ચન્દ્રનું પ્રથમ દર્શન આ લોકમાં કદિ પણ ચિરન્તન નથી. (૧૨)

માટે હે ચિત્ત! શ્રીકૃષ્ણસમાન કાઈ પણ ચિરન્તન નથી માટે નિરન્તર આ પ્રભુને યજ કર. આ કાવ્ય ચિરન્તન એવા સપુત્રોની કૃપાથી અને શ્રીકૃષ્ણ ભગવાનની કૃપાના બગથી શોભે. (૧૩)

યુવકોનો ધર્મ.

(આખ્યાત્ય—શ્રીપુષ્ટિમાર્ગાબ્જમાર્તેડ શ્રીકૃષ્ણનાથસાસજ મહોદય, મુંબઈ.)

પ્રભુએ નિર્જેગથી દમોડદ વહુત્તવામ પ્રજાલેય આ વચનાનુસાર અખિત બ્રહ્માનું નજન કર્યું અને રવધ વિધમા અનેક વ્રતો લેણમાત્રમાં ચર્ચ ગયા. સર્વસમર્થ શ્રીકૃષ્ણચંદ્રના ક્રોડભાગ આ વિશ્વની રચનામાં મર્વ પ્રાણીઓથી મનુષ્યોમાં કાઈક એવા બે ત્રણ તત્ત્વોની પ્રધાનતા દેખાય છે કે જેની સહાયતાથી અન્ય પ્રાણીઓથી મનુષ્યપ્રાણીનું પૃથક્કરણ રહેજે થઈ શકે છે. તે તત્ત્વોમાંથી પ્રધાનતત્ત્વ સનાતન ધર્મજ છે. અત એવ ધર્મહીન પશુ અને ધર્મવાન મનુષ્ય એ રૂપજ છે આઓમાંયે ઉદ્દેશ છે કે ‘વર્મેણ હીનાઃ પશુસમાના.’ આધિદેવિક ધર્મથી મનુષ્યને અબુદ્ધ્ય કરનારી સમગ્ર મિદ્ધિઓ હરનામવકવન થઈ જાય છે. અન્ય દેશો કરતાં ધર્મનું વર્તિકચિત્ર વ્યવસ્થા પ્રભુકૃપાએ ભાગતવર્તમા જળનાથ રહ્યું છે. એજ ભારતના અબુદ્ધ્યની ક્ષીણ આશા છે. ભારત વર્ષને ધર્મપ્રાણનું જે અભિમાનસૂચક વિશેષણ અર્પાય છે તે ઉપરથી એ નિશ્ચિત થાય છે કે આર્થો પૂર્વે અત્યન્ત ધર્મમય જીવન વિગાડના હતા. આ નગ્ન મત્ત છે, માત્ર કવિઓની કથાવકરવતા નથી, આપણા પૂર્વજોમાં ધર્મનું અત્યધિક અભિમાન હતું. એની

ભારતભાવનો એકત્વભાવનાથી પરાવાધ ગણા દેતા. પ્રથમ વિવાર્થાઓને અધ્યાપક મુખ્યત્વે ધર્મ અને નીતિનું શિક્ષણ આપતા હતા. અને ત્યારપછીજ અન્ય વિષયોના શિક્ષણો અપાતાં હતાં. તંત્રીય ઉપનિષદમાં વિવાર્થાઓને ધર્મ અને નીતિના ઉપદેશનો ઉદ્દેશ્ય મળે છે.

સત્યં વદ ધર્મં ચર, સ્વાધ્યાયાન્ મા પ્રપદઃ સત્યાન્ન પ્રમદિતવ્યમ્, ધર્માન્ ન પ્રમદિતવ્યમ્, સ્વાધ્યાયપ્રવચનાન્યાં ન પ્રમદિતવ્યમ્ ।

દુર્ભાગ્યે સામ્રાટમાં કરાલ ક્ષયિકાળમાં આપણા રાષ્ટ્રમાંથી ઉત્ક્રાંત પ્રકારના ધર્મ અને નીતિના શિક્ષણોનો હાસ રાને રાને આરંભાયા અને તેની સાથેજ ધાર્મિક સંગઠન પણ નાટ થતું ગયું. એના કટુ ફલસ્વરૂપે આજે આપણા ભારતનો સાચાનીય દશા દષ્ટિગોચર થઈ રહી છે. આધુનિક ભારતીયોએ અત એવ ધર્મ અને નીતિ પરંતુ ભવિષ્યમાં ભારતનિર્માણકાર્યમાં વિશેષ લક્ષ આપવું જોઈએ. અને ધાર્મિક સંગઠનનું કાર્ય પણ નિઃસ્વાર્થ બુદ્ધિથી શીઘ્ર કરવું જોઈએ.

ભગવાન શ્રીકૃષ્ણચંદ્રની આચારુણી “કર્મવેવાચિકારસ્તુ મા ફલેષુ કદાચન ।” નિષ્કામ કર્મ કરવું જોઈએ અને તેવું નિષ્કામ કર્મ શીઘ્ર ક્ષવિત થાય છે.

આપણા યુવક વર્ગ કંઈ નિર્ધન નથી. માત્ર તેમાં એકત્વભાવનાનો અભાવ છે. મહે ગુર્જર સાહિત્યના પ્રસિદ્ધ ‘કુમાર’ માસિકના એક અંકમાં ‘રાષ્ટ્રીય યુવક દલની શક્તિનો લેખ’ વાંચેલો તેમાં ઉલ્લેખ હતો કે ભારતવર્ષમાં પ્રતિ દસ દબારની વસ્તીમાં પંદરથી પચીસ વર્ષની વયના ૧૬૬૨ યુવક તથા યુવતીઓ છે. પ્રજાનો આ હોજી લાગે ધારે તો કંઈનું કંઈ કરી નાંખે. યુવક દલની શક્તિ એક સમાદમાં સંસારની રાતે વસ્તુઓ ચીનની ભીતિ, અમેરીકાનું ધોજી, તાજમહાલ, પીસાની મીનાર, દીલ્હીનો લોહનો તંત્ર, પીરામીડ અને મેગેલીનના કુશળ ઉદ્યોગો ખનાવી રાકે છે. એટલુંજ નહિ પણ એક સમાદમાં સંસારના સમગ્ર ખેતરોને યુવક દલ ખેડી રાકે છે. માત્ર સંગઠનના તિરોધાનથીજ યુવકમાં નિરુત્સાહ અને નિરાશા દષ્ટિગત થાય છે. માટે પ્રભુ શ્રીકૃષ્ણચંદ્રના ઉપદેશાત્મક શબ્દોમાં કહું તો અરથાને નહિ જણાય કે “હુરં હૃદયદાઈલ્લં. ન્યક્તોસ્તિ પાંતવ ।” હૃદયદાઈલ્લને સમૂળ નષ્ટ કરીને ઉડવું જોઈએ, કર્તવ્ય પંથે પડવું જોઈએ. પાશ્ચાત્ય સંસ્કૃતિના મોહમાં અંતર્ધન જેવું જોઈએ, આર્થ સંસ્કૃતિ જીવનની જરૂરીયાતો ઘટાડે છે અને પશ્ચિમની જાલવાદની સંસ્કૃતિ જીવનની જરૂરીયાતો વધારે છે. માટે આપણને આપણા જીવનની બધી જરૂરીયાતોને ઘટારી દેવી જોઈએ. સ્વદેશી વસ્તુઓને અને સ્વદેશને ઉત્તેજન આપવું જોઈએ. પશ્ચિમના લોહી કાંઈ દિવસ પોતાના ધર્મને કે. દેશની વસ્તુઓના અભિમાનને ત્યાગતા નથી. ભલે તેઓના જીવન એનાથી મોંઘાં ઘર્ષ જતાં હોય. તો પણ તેઓ પોતાના તેવા ધર્મને વળગી રહે છે. અતઃ આપણને પણ એમની પાસેથી સ્વદેશપ્રેમનો આવો ગુણ ગ્રાહ્ય છે. આપણું બધું સાફ અને સ્વચ્છ છે. યદિ કાંઈ વિચારે તો ભારતમાં ઝોંઝામાં ઝોંઝા ખર્ચે પોતાનું જીવન ગુપ્તથી નીભાવી રાકે છે. માટે આર્થ સંસ્કૃતિનેજ અપનાવવી જોઈએ. “તમાફે તે તમાફે અને અમાફે એ તમાફે” એ આર્થ સંસ્કૃતિના ઉદાર સત્યનો હૃદયમાં કોતરી રાખના જોઈએ. પાશ્ચાત્ય સંસ્કૃતિ આપણી નથી એ વાત ન જુલાવી જોઈએ. આપણા માટે બધી વાતમાં એ સંસ્કૃતિ તાનકારક છે. સદાચારપૂર્વક આયોની આર્થ સંસ્કૃતિ અને આદર્શ સિદ્ધાન્તોનું પાલનજ આપણા ઉદ્યોગના સાધનો છે. ધર્મોપદી બનવું, સ્વદેશભિમાની બની રાષ્ટ્રના ઉદાર કાર્યમાં ભોગ આપવો, એટલુંજ નહિ પણ ભગવાન શ્રીકૃષ્ણચંદ્રની નિર્મળ પ્રેમભક્તિ દ્વારા જીવનને સંજોગ બનાવવું. એજ આપણો ધર્મ છે અને એજ આપણી નીતિ છે. પ્રભુ સર્વેને સદ્બુદ્ધિ અર્પો !!!

શીજ-માણનીના પવિત્ર દિવસના આ મહોત્સવે શ્રીકૃષ્ણના વૈષ્ણવ સમાજને આથી વધુ શું સંદેશ હોય ?

સેવા અને પૂજા.

(લેખક:—શ. રા. પ્રજાવલ્લભ રતનલાલ પરીખ.)

દોમેશચંદ્ર—હેર ભાઈ પૂજા કર્યા બેઠા છો કે ?

ભગવતીપ્રસાદ—દલુએ તુ સમજ્યો નરિ કે ? મઈ કાને તને ભાગ્ય સાંભળવા યજી મયો દતો ત્યાં તે મું સાંભળ્યું ?

દોમેશચંદ્ર—કોણ જાણે. હું તો ભાઈ બ્રહ્મી એવા, એવું કાંઈ આપણને યાદ રહેતું નથી.

ભગવતીપ્રસાદ—ત્યારે તને મું યાદ રહે છે ? નાટક, સીનેમા અને દેરીઓમાં મરવા જાયતો, કેમ ખડુંને ?

દોમેશચંદ્ર—હા ! હા ! હવે મને યાદ આવ્યું. પૂજા અને સેવા વિગે મઠ કાને કર્યું હતું.

ભગવતીપ્રસાદ—ત્યારે તો તને યાદ દશે કે સેવા એટલે શું ? અને પૂજા એટલી શું ?

દોમેશચંદ્ર—ના ભાઈ એવું કાંઈ યાદ નથી.

ભગવતીપ્રસાદ—ત્યારે તો તું ખરેખર તમારો જીવને આવેશ દોષ એમ કાને છે.

દોમેશચંદ્ર—ના, ના. એમ કાંઈ દોષ ? મારો સ્વાભાવ જરા ભુલકો છે એટલે ભુલી જવાય છે. ખરું લાંબુ લાંબુ યાદ રહેતું નથી. તને આપ કૃપા કરી મને મમજવડી તો તમારો પળો આભાર માનીય.

ભગવતીપ્રસાદ—હીક તારી છત્ત છે તો સાંભળ, પૂજા કરેમાં એકજ પ્રકારથી થાય છે અને સેવા તમેશાં ભાવથી થાય છે.

દોમેશચંદ્ર—એકજ પ્રકાર એટલે શું ?

ભગવતીપ્રસાદ—રૂઝઆત્મી જે પ્રમાણે વિગે ચાલતાં દોષ અમર પટેશ દિવસે આપણે જે પ્રમાણે પૂજા કર્યું દોષ તે પ્રમાણે ખાંર દિવસ ક્યાં કરવું તેનું નામ એકજ પ્રકાર.

દોમેશચંદ્ર—વાર ! આ ભાગતો મને ખુલાસો મળવાથી મલો આનંદ મયો છે પણ તલુ એક સંકા છે તે દર કરેશ કે ?

ભગવતીપ્રસાદ—હા ! મું છે, બોલો.

દોમેશચંદ્ર—ત્યારે સેવા કાને કહેવી તે જતા સમજાવો.

ભગવતીપ્રસાદ—સેવા એ ભાવનાથી થઈ ગયે છે. ચિવાળામાં કંઈ દોષ છે માટે પ્રત્યુજને મદદ ધરવામાં આવે છે અને દેવતાની સમીક્ષા આજુમાણ મુકવામાં આવે છે. વગેરે ઉત્સાહમાં મરમીને લીધે ઝીજા વગેરે મરમવામાં આવે છે તેમજ રૂબના મુંમારે વગેરે કરવામાં આવે છે જન્માટમને દિવસે પ્રત્યુજને પારણે મુસાવવામાં આવે છે અને તે વખતે જુદી જુદી તરેલનાં જુદી જુદી ભાવનાથી જનુ અનુસાર લાઠ લખાવાય છે. યાવળ માસમાં દિશિતે મુસાવવામાં આવે છે અને તે વખતે જુદી જુદી તરેલનાં વગેરે તેમજ આજુમાણે મસાવવામાં આવે છે. વગેરે ભોજન પણ જનુ અનુસાર મસાવવામાં આવે છે. આથી રીતે જુદી જુદી ભાવનાથી જનુ અનુસાર લાઠ લખાવાય છે તેને સેવા કહે છે.

દોમેશચંદ્ર—ભાઈ ભગવતીપ્રસાદ તમે મજા ઉઠા ઉતરેશ લાગો છો. આપે મને આનંદ કૃપા કરી આ વિષયને સ્પષ્ટતાથી સમજાવ્યો તે માટે હું આપનો મલોજ આભારી છું. હવે પૂજા થઈ જતાથી રતન લઉં છું.

ભગવતીપ્રસાદ—હીક, ત્યારે ! જયમીદુખ્ખ.

દોમેશચંદ્ર—જયમીદુખ્ખ.

જેનાથી સરવાત કરી છે તે) એકસો આઠ ઉપનિષદોનાં શુદ્ધકાનાં પૃષ્ઠ ૫૨૧ થી ૫૨૩ સુધી આપેલું “દૃષ્ટ્વાપનિર્વત્” મૂકું છું. તેની સરવાત ન્દપિરશી-ગોપીઆની ઉપનિષદો તથા રુદ્રાદિની માગણીથી કરીને જે જે લીલા-સામગ્રી તરીકે તથા લીલોપયોગી દેહો ધારણ થયા તે ગણવીને “ગોપસ્વો હરિઃ સાક્ષાત્” શ્રીકૃષ્ણપરમાત્માને માટે સન્નોથી અર્થ શ્રુતિ માય છે અને તેના માહાત્મ્યનું જ્ઞાન એથી પણ વધુ યાદ રાખવા લાયક સન્નોમાં ગાય છે (બુલો ન્દયા ૧૧-૧૨). “વદો યન કૃતો વંશઃ” ઇત્યા કનકાસન-સુગનિન્દઃ ઇત્યાદિ એવા સમર્થ “કૃતો પ્રલૈવ સાક્ષતં” ૥૧૨૥ એ પ્રમાણે મહાદેવજી, બ્રહ્માજી, ઈન્દ્ર ગિરોએ લીલોપયોગિ, સેનાપયોગી દેહો ધારણ કર્યા છે તેમ “યઃ શંકઃ સ હવં વિશ્વુના ૧૬” “રાઘ્વહો મંદશરઃ ૥૨૦૥ નદા ચ કર્ણલકા સાક્ષાત્ ૥૨૩૥ વિશેરે લીલા અને મેરાઉપયોગી દેહો તેમને અંગસંગો લાલ આપ્યો છે અને વેદન્યાઓ; ઉપનિષદો, મુક્તિ, લક્ષિત, પરમાન્દ, વેદાર્ય, સરસ્વતી, ધરા વગેરે સ્વરૂપ ધારી સર્વનાં વર્ણન તથા ગોકુલસ્વદાયન વગેરે વર્ણવીને “મ્નાયુતાપરિતં સર્વં વૈશુંડં સ્વર્ગગતિનાં એમ વર્ણન સમાપ્ત કરીને ફલશ્રુતિમાં એ જાણવાથી સર્વતીથે ફળ મળીને દેહુઅંધનમાંથી વિમોચન માય છે એમ શ્રુતિ અનુવાદ કરે છે. એ સર્વ લંબાણથી સંસ્કૃત ભાષામાં છે. પરંતુ તેનું શોડુંક “પદાત્મક” ગુજરાતી ભાષાના (નંદકુનાં પુર્વજીનાં) આદિકવિનરસિંદ મહેતાજીએ કર્યું છે તે તેમના કાવ્ય સંગ્રહ પાન ૪૮૭ ઉપર છપાયું છે તે અત્રે ઉતાર્યું છે, અને ઉપરના શ્રીકૃષ્ણોપનિષદ મૂળ સાચેજ સરખાવ્યાથી ખાત્રી થશે કે નરસિંદ મહેતા પોતાનું મનઃકલ્પિત જોડી કાઢ્યું નથી પણ વેદપતિવાદિ શ્રીકૃષ્ણમાહાત્મ્ય જ નીચે પ્રમાણે બહુ ટુંકમાં વર્ણવ્યું છે:—

રાગ પ્રલાતિયું.

“ધન્ય રે ધન્ય મહાપુરુષ જ્ઞેષ્ઠાદાતણું પુત્રભાવે પરિશ્રવ ગિરાળે, “નંદનો નાં નાન્દ થય” અવતર્યો (સરખાવે “પ્રજાનં આન્દ બ્રહ્મા” “જાનન્દમ્વે ડમ્યાસાત્” પ્રિયાદિ) “શેષ બલિભદ્ર સંગે બિરાળે” ૥ ધન્ય ધન્ય ૥૧૥ “અપર (દેવતાઓ) આઠી અધ્યાગ ગોપાંગના વધુવેશી સર્વ ન્દપિરશી “મક્તિ” તે સધિકા (મળમાં “વન્દા લક્ષિતઃ” છે) મુક્તિ જ્ઞેષ્ઠામતિ મન્વકુંઠ તે વેદવાણી ૥ ધન્ય રે ધન્ય ૥૨૥ નિગમ વસુદેવજી ગાય ગોપી ક્ષાપ દેવકી વ્રજાવિલા કલાવે, બ્રહ્મા કરે લાકડી જેણુ મહાદેવજી પંચ વદને કરી ગાન ગાવે ૥ ધન્ય રે ધન્ય ૥૩૥ ઇન્દ્રે અર્જુન અહંકાર દુર્બોધન, દેવે તો સર્વે અવતાર લીલા; ધમ તે રાપ મુષિધિરો જાણ્યો, દાસનો દાસ નરસંદને ડીલો ૥ ધન્ય રે ધન્ય ૥૪૥ ઉપરાંત ગોપાલતાપિની શ્રુતિ ગાય છે કે “દૃષ્ટ્વા વૈ પરમં દૈવતં. ગોપિન્દાત્ મૃત્યુભિન્નિતિ ગોપીજનવલ્લભાદાનેન એત દિનાત્ લવતિ.” ૥૧૥ ચિન્તયન્ ચેતસા કુર્ણં મુકો ભવાત ઇન્દ્રોઃ ૥૩૥ આગળ ચાલતા “કુર્ણં તં વિદ્મા વહુધા યજન્તિ ગોવિન્દં સન્તં વહુધા આરાધયન્તિ ૥” તેમજ વાયુર્ધેકો મુવનં પ્રવિદો જન્યે જન્યે પંચકુરો વશ્યન્ પુણસ્તરેકોડપિ જગદ્ધિતાર્થ શઘ્દેનાસૌ પંચપદો વિમાતિ.” “एको વશો તર્વેગઃ કુર્ણ દેહ્યન્ નર્મમયેકં તસ્ય દેવ્યો રિમાતિ તં પઠિયન્નમજન્તિ ધીરાઃ તેષાં ચિદ્ધિઃ શાશ્વતો મેતરેય”

અર્થ:—અથા શાસ્ત્રની અચાથી શ્રુતિ કરીને “તસ્મપકુર્ણ એવ પરમો દેવઃ તં ધ્યાયત્ તં રમયેત્ દેવકીના પુત્ર શ્રીકૃષ્ણ એજ પૂર્વતાપિની પૂરી યાય છે પછી ઉત્તરતાપિનીમાં પ્રેષઃ ભાવના, અગેષ્ઠા રી સેવા એજ કર્મ છે. અર્થ સમગ્રવી ન્દઅં શ્રીકૃષ્ણની બાર મૂર્તિઓ છે તેમાંની એકનું રૂપી આ કાળ આપણને ઉઠીનું બ્રહ્માજીના પુત્રો, ગોથીનું મન્દુહરજી, માંચમીનું વિનાયક, બીજું

પ્રજનવસુઓ, સાતમીનું કાપિઓ, આઠમીનું ગન્ધર્વો, નવમીનું અમ્બરાઓ, દસમી વૈ જાતાપાને તિથિ, દસમી સ્વપ્નાતુળા, દ્વાદશી મુખ્ય તથા તો દેવે વ્યગ્નિ તે મૃત્યુ તરંગિ એવી પણ આદ્ય ક્ષેત્રી છે ઉપરાંત યોગ યોગ હર્યોષો છંદોષ્ય, મહાનારાયણ, વાસુદેવ, ગોપીચંદન વિગેરે ઉપ નિહોમાં છે. જુજ હોવાથી લંબાણ કરવા કરતાં પુષ્ટિકવિ દયાસમભાંડની મરખીઓ નીચે આપો છે તેથી ભાવિક જગ્યા સંતુષ્ટ થશે. તેમનાં મન્દુર પુરાણ ઇતિહાસમાથી પણ લાધેલા છે.

૫૬.

સર્વના શિરોમણિ શ્રીનાથજીને લોચ,

- આપના સ્વરૂપ વિશે સર્વે મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે સેવાયું તમને સેવતાં રે લોચ. ૧
- સગે આશુપાણ આપુષ છે રે લોચ સેવામાં રહે તજ મર્વે મ્હારા વ્હાલાજી હો, સર્વે સેવાયું. ૨
- અત્યલોક કુકુટ મહારાજનો રે લોચ, સંખચોય કુંડલ જેઉ કર્ણ મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે ૦ ૩
- જન છે વૈકુંઠ ચમર ધર્મ છે રે લોચ પિંજન જમરૂપ શિરશરણ મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે ૦ ૪
- મહુ સરજ ચંદ્રમા છે મન વિષે રે લોચ, ભૂકુટી યમરાજ કુંડે એન મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે ૦ ૫
- ગૃહ્ય અથો અપર, લગ્ન, લોલ છે રે લોચ, દંતકાનિ તત્ત્વ કમરનેન મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે ૦ ૬
- મળ્યા વનમાળા દારપને વિશે રે લોચ, વૈજયન્તી ભક્તિઓ નિવાસ મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે ૦ ૭
- કેસ મેષ, હિસા અવજુને વિશે રે લોચ, વદનવલ્લિ નાસાવાયુ વાસ મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે ૦ ૮
- પ્રેમજન તો જ્યોત્ષ્ઠ પ્રાણનાથજી રે લોચ, પાતાંગર સ્વર હદ સાત મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે ૦ ૯
- શ્રીવત્સલાંબન મહાનકમીજી રે લોચ, યજ્ઞતત્ત્વ કૌસ્તુભ સાસાત્ મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે ૦ ૧૦
- વેદ ગાય, તત્ત્વ છે ગરુડજી રે લોચ, મેષ સંધ્યારૂપે કરે સેવ, મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે ૦ ૧૧
- કામુકી ગદા મહાકાળા છે રે લોચ, મુરલીનું સ્વરૂપ મહાદેવ મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે ૦ ૧૨
- છે ખૂડ જ્યૈષ્ઠ્યકળા કમળમાં રે લોચ, મુદ્રિકા છે અસપ વરદાન મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે ૦ ૧૩
- ચક્ર તેજ સાર, સલિય શંખ છે રે લોચ, કમળ વિશ્વ, ધનુષ કાલરથાન મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે ૦ ૧૪
- અન્ન, જ્યૈષ્ઠિકાને યુંગી ધન્વ છે રે લોચ, તિલક શુદ્ધ સ્નેહનું સ્વરૂપ મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે ૦ ૧૫
- નખ શિખ આશુપાણ સહુ ભક્ત છે રે લોચ વનસ્પતિ સૈમાવરી રૂપ મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે ૦ ૧૬
- વીર છે સમુદ્ર નદી નાહીઓ રે લોચ, પર્વત છે પતિ ધરા અરત મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે ૦ ૧૭
- અમણિય જ્ઞાંતર રોમરૂપમાં રે લોચ, હિર વિને જગત છે સમસ્ત મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે ૦ ૧૮
- શુદ્ધ ભક્તિરૂપ રાણી રાધિકારે લોચ, જ્યોત્સના મુક્તિ જ્ઞાનિયાન મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે ૦ ૧૯
- ગોપી સયા વેદ મંત્ર ગોપ છે રે લોચ, રામ, શેષ, સાસ્ત્ર કરે જ્ઞાન મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે ૦ ૨૦
- નિગમ પદ્મવદનને જાણીધેરે લોચ, અલ્પવિદ્યા દેવપ્રીત માત મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે ૦ ૨૧
- કૃત્યાદિ સ્ત્રવ સંદિત દીર્ઘરિરે લોચ, દાસ દયાના પ્રમુ વિખ્યાત મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે ૦ ૨૨

આ ૫૬ ધરનાં તમામ માણસો મોદે યાદ કરીને રાતે કામકાજ પદવારીને એકાં થઈને મોડે સ્વપ્ન લયકારવાનો એટલે કે ઉદ્દેશમાં કમ્પસ કહે છે તેમ મુર મિથાવીને. ગાયનો રીવાજ છેક વૈષ્ણવ કુંડલમાં પાડવામાં આવે તો દેવો આનંદ આવશે એ કરી જોયા પછી કોઈ અનુભવી વર્ણવશે તમા આપના માનિકમાં લખી મોકલશે એમ આચારા રાખી હવે સવારને મોડે દવારામજી તે પાત કુંડામાં આપે છે તે પણ ઉપર આવી ચળેલા મન્દુરોનો જુજ. દેશકારવાળો સાર છે તે સર્વે વૈષ્ણવોને વ્યાખ્યાન સંચાળના મહાકમમાં લખાઈ ગઈ મને તેથી અગ્રે આપો હ

પ્રથમ પ્રમાણે શ્રીકૃષ્ણનું સ્મરણ કરીયે રે, ત્રજ્જીવા અગ્ની દરિની સગે ધ્યાન ધરીયે રે. ૧
 દરિનો મુગટ તે તો પેકુંદો સાર લહીયે રે, દરિનાં કુળ તે તો આંખ યોગે નિશ દહીયે રે. ૨
 દારને નાકે મોતી ગાંધિકાનું રૂપ છે રે, અંધપત્રી ચિત્તુક આભરણનું સ્વરૂપ છે રે. ૩
 વેરિનું હસલું તે તો મોહિની આપા કહેવાય રે, મુરલી શિવજીનું સ્વરૂપ એનું વેદ ગાય રે. ૪
 લગિનું તિલક શુદ્ધ પ્રેમને પ્રમાણિયે રે, કૌસ્તુભવણિ હૃદયે ત્રય તત્ત્વ જાણીયે રે. ૫
 શ્રીયત્સર્વાંશન તે મણિની છાય, જાણ્યોને રે, વનમાળા યુગ્મ છે તે બકનો ઉર આણ્યોને રે. ૬
 માયા પીતાંબર ને છઠી બ્રહ્મારૂપ લણું રે, ઈંદ્ર ગુંડી મેઘ દેશનું સ્વરૂપ કણું રે. ૭
 સંજે ગોપીજન તે ક્રાંતિએ છે વેદનરિ, ગોપ મંત્ર નેની વાત કહું બેદનરિ. ૮

શ્રીરાધાજી કૃષ્ણ આત્મરૂપ પ્રેમભક્તિરે, નંદજી તો અદ્વૈતબ્રહ્મ, જસોદા જાણે મુક્તિરે,
 શ્રીગોકુળ તે વ્યાપી પૈકુંદો આક્ષાત છે રે, કર્કમાં કર્મજ વિચરૂપ વેદે વાત છે રે. ૧૦

એનું ધ્યાન સદા શ્રીકૃષ્ણનું પ્રીતિ ધરીયેરે, ત્રજ્જી વાસ મળે, ભવસાગરને ઘણામાં તરીયે રે. ૧૧
 સરવે વિસ્તારીને કહેતા ગીન વધી જાય રે, માટે દાસ દ્યો, કાંઈ એક, દરિના યુગ્મ ગાય રે. ૧૨

અને એથી પણ થોડાક દુઃકામા જોઈએ તો નરસિંહ મેતાજીનું પ્રમાતિયું પહેયું આપેયું
 છે તે તો રાગદારીમાં ગાળેને સ્વાચરમાં મર્વ કુટુંબીઓનાં મનરંજન કરી ગદો તેવું છે. નેમા
 માથ મોઢાનુંજ કાપ કરવાનું નથી પણ નેની સાથે શ્રીકૃષ્ણનું ધ્યાન હૃદયમાં નજર આગળ
 સ્વરૂપ ખડું થાય તે રીતે ખાસ સાથે આપ કરવાની ખામ રેવ પાપી નજરની છે એથી દેવ
 પ્રાણ ઈન્દ્રિયધર્મો દ્વારા આગાર પુત્ર આદિ બધાના દેવ અને મનસુદ્ધિ ચિત્ત પણ રંડેલ ધર્મજ
 યદો. અજમાવીને અનુભવ લેવા વિનંતિ છે.

આ રીતે વિવેચન કર્યું અને હજુ પણ વેદરૂપી માક્ષાત પરબ્રહ્મના શ્રીમુખમાયી નીકળેથી
 શ્રીમદ્ભગવદ્ગીતા, જે હૃદયપ્રેરિત પ્રસ્થાંતી વાળી (વેદ) નીજ પૈખી અવરજ છે, એટલે
 પૂર્ણપણે વેદરૂપજ છે અને લેશમાત્ર પણ ન્યૂન નથી તેમાંથી માહાત્મ્ય સમજાવનારા વાક્યો
 વિવેચનસંહિત આગળ લખાશે. તેનું કાગ્ય સહેલાઈથી સમજી ગણાય તેવું છે કે હરદાસ મનુષ્યને
 ત્રણ નામથી જાણતા હોઈએ તેના કરતા તેનાં વખાણ બીજાને મોટેથી માલખો હોય નેમજ
 પ્રતિપક્ષી તરફથી આલેખો પણ સાંભળ્યા હોય તો ખરું શું છે તે જાણવાની વ્યાપારિક હિંમત
 થાય. અને તેથી વિશેષ પ્રયત્ન કરીને તેનું ખરું માહાત્મ્ય જાણે સ્વરૂપ શું છે એ ઉપા
 ઉપર ઉપરથી અટકાવ કરનારા માખીની જે રે મંદજીજ ગોધનારા પ્રતિપક્ષીઓ (જેના કે
 જૂનાં વખતના શિશુપાદાદિ અને આજના અપાખ્યાયીઓના મિથ્યા આલેખો, તથા વૃથા આલા-
 પોના ખંડન આજે નહીં પણ હજારો વર્ષો પહેલાં તરૂં લોકોએ તેમજ દેવી દૃષ્ટિનાળા ક્રમિ
 મુનિઓએ, શાસ્ત્રોએ તેમજ યુગે યુગે અને કવ્યે કવિ પ્રમંગાનુસાર આ વર્તન થનારા
 અવતારોનાં માહાત્મ્ય અતાવનારા ઉપનિષદાદિ ગ્રંથોએ કરી રાખ્યાં છે) તેનાં રહસ્ય નમજીને
 ઝોળખવામાં આવે તો બધી રાંકા તથા સાંભળેલા આલેખો દૂર થઈ ખરું માહાત્મ્ય જાણાય. ત્યાર-
 પછી જે અધુમાન જે પ્રેમ વાંકું ભોપવાવાળા સામે લડવાની વૃત્તિ, આદરભાવ, નેમની મેવા શી
 રીતે હું કે ? એવી ભાંડત વગેરે જનન થાય આ રથજે જગા કામા માગીને વધીય તરીકેની
 દલીલ એકે બે વખત જાહેર સભા આગળ મેં કરી છે (સનાતન ધર્મખંડન અમરેશીના
 પ્રમુખ તરીકે) તે સર્વ વાયકો આગળ રજુ કરે છું. કેમકે યુવકોને તે જાણવાની નજર છે,
 એમ ધારે છું. એ કે (૧) શ્રીકૃષ્ણપરમાત્માને દોષ આપનારા લોકોને જાતબાદિતી તો નથીજ.
 ૨) ત્યારે દોષદષ્ટિ તેમનામાં આવી ક્યાંથી ? પાદગીઓ, ઇતરનારિવડો, અથવા આગ્રિક વિરોધીઓ

પાસેથી સાંભળીને પણ (૩) જે સ્થળે લીલાઓ વર્ણવી છે તે સ્થળે વાપરેલા શબ્દોના અર્થો સ્વતઃ અભ્યાસ અને પૂર્વોપદ સંબંધ વક્તા-શ્રોતા કોણ છે. પ્રસંગ ઉત્પન્ન, વર્ષ, દૈનિકાદિ વિગેરે સમગ્ર વિચાર કર્યા વિના-તેવા યોગ્યતાના પુરાવાના કાયદા પ્રમાણે જિન ભરોસેદાર છે. (૪) (Expertdirect નથી, knowledge નથી.) આંખમાં ક્રમેણ (prejudice) કિંવા દિવ્યદષ્ટિદોષ છે. (૫) તેઓ જે પુરાણુગ્રાહ્યોના અનર્થ કરે છે તે પુરાણુવાક્યો લખ્યાં અને રચ્યાં કોણે ? તે વિચારતા નથી, આશ્ચર્યોએ રચ્યાં છે. શ્રીકૃષ્ણાવતાર પછી તે બ્રાહ્મણોને આખા દિ-દુસ્તાનમાં રહેનારાને એક દારકાંના ખુણામાં યદ વસેલા અથવા ગરમાં વસેલા શ્રીકૃષ્ણને પરમેશ્વર તરીકે વર્ણવતા, માનતા, પૂજતા, ખીન પાસે પૂજવવા, તેની-કથાનું નિત્ય અધ્યયન કરવાની બદલ આસેતુદિમાયત પ્રદેશ સપળામાં શું બદલ દે ગરબ દત્તી ? (૬) મદાસ દંધાદા, મલખાર, દ્રવિડ તેલંગણુ વિગેરે દેશોના બ્રાહ્મણ, આચાર્યોએ એકદંદ એ જોપપાસક અને રાત્ર્ય વગરના યુવકને પરમેશ્વર તરીકે કમુક્ત રાખવાની શી બદલ દત્તી ? કાલી ખુશામત ખાતર ? તેનો તો વિચાર કરો. શ્રીમદ્ભગવદ્ગીતાજી ઉપરની કીકામાં વાપરેલા દરેક આચાર્યના શબ્દો વાંચો. આતિ ઉચ્ચ ગણ્યતા બ્રાહ્મણો એજ પાતળી યોગજ્ઞા કરે છે કે જે શ્રીમદ્ભગવત્પાદિ પુરાણમાં તથા શ્રીમન્મહાભારતમાં શ્રીકૃષ્ણપરમાત્માની સંમતિ તે વંખતના ઋષિઓ ભતમાહિનીથી તથા દિવ્યદષ્ટિયો કહેતા હતા અને તેમની પહેલાંના વેદવાક્યો (ઉપનિષદો) જેની વાનગી આજે આ લેખમાં આપના વાચકોને મેં આપી છે, તે વેદવાક્યોથી તથા શ્રીકૃષ્ણાવતાર પહેલાંના ઋષિ-મુનિઓ, મર્ગચાર્ય, નારદજી આદિ ગણના હતા અને આનુક્રમથી વાદ નેઈ રહ્યા હતા. તેવા ત્રિકાળગાની, ત્રિકાળદર્શી મહાત્માઓએ સ્પષ્ટ શબ્દોમાં અદ્વિતનિવારણ કરી તે ઉચ્ચારી હતી. મારે ભાઈઓ, ઉપરચોટીયા જ્ઞાનવાગ્યાના શબ્દોથી નહીં ભરમાત્તા લક્ષ્યપર્થી વિચારક બનેા તો સંપૂર્ણ ખાતરી થશે કે “કુર્ણસ્તુ મગવાતુ સ્વયં” જેને મારે આપણા સંપ્રદાય સિવાયના એક આચાર્યથી ગાય છે કે—

સ્વમાવગોડપાસ્તસમસ્તદોષ, ચરોપકન્યાણુગૈકરાણિ ।

બૃહાદ્ગિર્ન, વ્રણપર્, વરોણ ધ્યાયેમ કૃષ્ણં કમલેશ્વરં હરિં ॥

એ પ્રમાણે ગાયત્રી મંત્ર તથા “જન્માયસ્વ ચતોડ્યવચાત્” ઇત્યાદિ શ્રીમદ્ભગવતના મંત્રગણ ચરણમાં અનુક્રમે મર્ગ અને હરણ એવા મોખમ શબ્દો વાપરેલા છે તેને ખાસે સ્પષ્ટ “કુર્ણ” વાપરેને જગત્ આગળ ગાયત્રીદ્વારા અને શ્રીમદ્ભગવતદ્વારા પ્રતિપાદિત શ્રીકૃષ્ણજી છે એમ ખ્યાલી તે વ્યાપ્ત તે સર્વેવેદ તે મજેવે જેની શી જો. તા. યુતિની આજ્ઞા છે તે મુજબ તેનું જ્ઞાન કરીએ છીએ. કેમકે તે પરદેશ છે, તે પરચલ છે, ખીનત મધા તેના બેઠા છે. શ્રીકૃષ્ણ પોતે “પર” છે તેમાં દોષ તો સ્વભાવથી (શ્રીકૃષ્ણનું સ્વઃ પોતાનું ભાવ એટલે અસ્તિત્વજન એવું છે કે આપોઆપ) દૂર કે દાઈ જાય. નહીજ આવી શકે નહીં તો આજના કે વળગવાની તો વાતજ રાત્રી ? તમામ યુષ્માનો દગલો છે અને દોષોના પ્રતિષેધી (anti) છે, એવું માદાત્મ્ય છે.

મંત્રને પ્રારવ્ય હોય કે ?

(લેખક—પરમ ભગવદ્વીય વેલજી નયુભાઈ મીશ્રી.)

વિચાર કરીએ તો ભગવદ્ભક્ત કરણીને પણ દોષ એ સંભવિત બન્યું નથી. કારણ એવું છે કે જે કોઈ પ્રારવ્યને ઉત્પન્ન થયેલા સાધનો છે તેનો તો અનુમાં સંબંધ નેહી તેનો વિનિયોગ કરી આપ્યો છે, તો પછી પ્રારવ્યનો પણ તેમાં વિનિયોગજ તત્સમગ્રધોજ તેથી જે કોઈ જન્મમરણના ભોગ પ્રારવ્ય સિવાય બનતા નથી તો દેદ કૃતે પ્રારો (કરણીને પણ ન

હોય તો) રહી શકે? આ શંકાને ઝાન છે. પરંતુ એ સાધનો (કર્મો) કર્મોથી ન માંરી પ્રવાહી જીવનાં હોવાથી તેને જન્મમરણના કારણરૂપ અવરૂપ દોષ શકે ખરાં, પરંતુ ભગવદ્ભક્તોને ભક્તિના પ્રભાવે જેના હૃદયમાં પ્રભુનો વાસો હોય, તે કર્મોથીન કેમ બની શકે? પ્રારબ્ધનું વિધાન દેહાભિમાની દ્વારમાંસના વ્યાપારવાળાને માટે જણાય છે. ભક્તોને દેહ તો, જગતના જીવવત્ પંચમહાભૂતનો છેજ નહિ, અને કર્મ તો જક છે, (તેમાં ક્રિયાશક્તિનો અભાવજ દોષ) એ કાર્ય જન્મમરણાદિની યોજના, અનાકાશજ કર્મ કેવા પ્રકારની શક્તિએ કરવા મર્મ્ય છે? એ તો ચૈતન્યનું કાર્ય ગ્યું, તો જકમાં ચૈતન્યપણાની ભાવના માનીએ તો, દેહાદિકનું રક્ષણ ને પોષણ કેવે પ્રકારે કરી શકે છે? ભક્તને તો એનું (અત્રીકિક જીવન છે) તે વડેજ એના દેહાદિનું રક્ષકને પોષક માની શકાય. કાંઈ પ્રારબ્ધ તો નહિજ, કારણ કે જેને શુભથી સીધી મંત્રી હોય તેને અન્ય કોઈ ભક્તિનું વ્યવધાન જરૂરનું નથી રહેતું. પ્રારબ્ધ તો અત્તાન અંધકારનું કાર્ય છે, પણ ગ્રેટિસ્યર્વત્ પ્રકાશિત હૃદયમાં એ અગાનગનક અંધકારનું કાર્ય (પ્રારબ્ધ) કયે સ્થાને રોકાઈ રહે છે? અવરૂપ જગત તરફ દષ્ટિ કરીએ તો પ્રાણ રોકાઈ જવાથી માધારણ પ્રવાહી નદિને મરતાં દેખીએ છીએ. અને યોગી લોકો પ્રાણને રોકી શકે છે, તો તેનું આયુષ્ય અનિયમિતજ રહે છે માટે સાધારણ મનુષ્યને એ ધરે છે કે પ્રારબ્ધ ચિન્તા રહેવું અમંભવિત છે. પરંતુ યોગશક્તિથી ક્રોટિ ગણી શક્તિવાળા પુરોષોત્તમ છે, તે જે શક્તિનું તેજ ગ્રેટિ પ્રદર્શાવે પ્રકાશે છે, ને રક્ષણ પણ કરે છે, એ શક્તિ સાક્ષાત્ ધીમધુમાનકુમારીજ છે, કે જે યુગ્મ સ્વરૂપના આતર વત્ત્વમાં ભક્તના હૃદયતરુઓ ઓતપ્રોત યધનેજ રહે છે, હાં પ્રારબ્ધનો લાગ કયે પ્રકારે લાગી શકે? દૃશાન્ત લઘ લો—જેમ તેવ છે તે ન્યોતમા પ્રવેશ કરી ભય છે, તેમ ભગવદ્ભક્તોનું સર્વ કર્મ પણ પુરોષોત્તમમાં લય યધ બવાથી પ્રારબ્ધની ઉત્પત્તિ કેવે પ્રકારે થઈ શકે?

વળી ભગવદ્ભક્તોમાં કોઈ દુઃખ સુખનો અનુભવ કરતું હોય તો એ કરનારનું અગાનજ છે, વરતુતત્ત્વથી તો એ ભગવદ્ભક્તો દુઃખ અને સુખથી, વિવક્ષણ યધ જાય છે, ભગવદ્ભક્તો તો જીવનસુક્રમ છે જેને શાસ્ત્ર મનાધિ કહે છે તેમ ભક્તોની પ્રભુ પ્રત્યેની વત્સલતાગ્રા માનસી મિદ્ધિ છે, તેથી તેને સુખદુઃખની ગણના કરી હોતી નથી. એ ગણના તો જગતમાં ઉપાધિરૂપે સુખ દુઃખનું ભાન રહ્યા કરે છે, સિદ્ધાન્તદષ્ટિ કરીએ તો અત્તાની જીવ દુઃખ સુખનો ભાગી બને છે. પણ ભગવદ્વિદ્વારૂપ દાંડએ જ્ઞેનારા ભગવદ્ભક્તો મર્મ ઉપાધિઓ ભગવદ્વિદ્વારૂપ માને છે, જગતના જીવો સુખદુઃખનો અનુભવ કરે છે, તેમાં માત્ર માથાનું કારણ પ્રબલ છે, શ્રીહરિની ઉત્પન્ન કરેલી નેત્રી પોષણ કરેલી વરતુમા પોતાનો આત્મમંત્ર જોઈ પણ મમતાના બંધનમાં આપી દુઃખસુખનો અનુભવ કર્યો કરે છે.

જે વરતુનો મંચ યાય તેના વિયોગ યવા સંભવ છે, અને તેથી કરી દુઃખની ઉત્પત્તિ પણ યાય છે. આપણે હનરો સ્ત્રી પુરુષ, બાળકોને દુઃખી દેખીએ છીએ. તથાપિ તેનું દુઃખ આપણે આત્મામાં સંકેપણે યતુ નથી; પરંતુ એમાંથી જેની માથે મંબંધ છે તેનું દુઃખ યાય છે. જેટલે દરનલે સ્નેહનું વધતાઓછાપણું તે પ્રમાણે દુઃખ પણઓછા વધતું યાય છે. પરંતુ સંગઠિતને માટે કોઈ પ્રકારનું દુઃખજ નથી. કેમકે તે મમત્વના બંધનથી દૂર છે, માટે મંચજ દુઃખ રૂપ છે. તે બહારના મંબંધની વાત થઈ, પરંતુ આન્તરીય ભાવના સ્વાર્થને લહીને શરીરના મંચનું પણ દુઃખ પેદા યાય છે, પરંતુ બહુતા-મમતાનાએ સર્વવા નિરહજતી આ વચન પ્રમાણે ભગવદ્ભક્તોની ભાવના હોવાથી, તેને આન્તરીય દુઃખ મનોજન્ય તે પણ યતું નથી. કેમકે જેણે સંગ અને સંમોહને જીતી લીધેા છે અને મોહરૂપી પાશમાંથી મુક્ત થએલ છે, તેને સુખ વા

શ્રીકૃષ્ણજયંતી.

(લે—રા. રા. રમણલાલ સાકરલાલ શાહ, વાણસીનાર.)

ભગવાન શ્રીકૃષ્ણની જયંતી દરેકે ઉજવાય છે. આખા ભારતની અંદર આ મહામહોત્સવ મનાય છે, ભગવાન શ્રીકૃષ્ણચંદ્રની અણુભાંસી જાંસીના નાદ તમામ પ્રગળે કાને લાગ્યો છે, ભારતની પ્રગ્ન ઉપરાત પાઘાલોને પણ તેનો અવાજ પહોંચ્યો છે, અને તે પ્રગ્ન ભગવાન શ્રીકૃષ્ણના ચરણોમાં સિંઘ ઝુકાવતી માલમ પડે છે તેમજ તેની ચીતાની મુક્ત કંઠે પ્રસંસા કરી તેનું ધ્યેય સ્વીકારે છે. સારાય ભારતની અંદર આજ તેનું યજ્ઞોગાન થઈ રહેલું જેવામા આવે છે ભગવાન શ્રીકૃષ્ણની જાંસીએ આ જગતને મુગ્ધ બનાવી દીધું છે અને આખું જગત તેની દિવ્ય પ્રતિમા પ્રતિ આકર્ષીધ તેના સ્વરૂપમા તક્ષીન થઈ રહ્યું છે, ભગવાન શ્રીકૃષ્ણના ભગ્નરમરણથી હૃદયના તાપો નાશ પામે છે. અને તેના અસૌક્રિક સ્વરૂપનું જ્ઞાન થાય છે. ચોગી લોકો તેના દર્શન માટે હજારો વર્ષ સુધી તપશ્ચર્યા કર્યા કરે છે. ત્યારે તેમને દર્શન થાય છે. આ કળિયુગમા તેની તપશ્ચર્યા કરવાનું નથી ફક્ત ભક્તિથી પ્રસન્ન થઈ પોતે દર્શન આપે છે, અને તે હૃદયની પ્રેમરૂપી ભક્તિજ. ગોપીજનો વગેરે તેની પ્રેમભક્તિથી પ્રભુને મેળવી શક્યા છે તે વિના ધણી દાખલાઓ મોલુદ છે. એ ભક્તવત્સલ ભગવાન પોતાના ભક્તોને તાપ જોઈ દર્શન આપી કૃતાર્થ કરે છે. માટે કળિયુગની અંદર કંઈ પણ સાધન કર્યા સિવાય વલ્કે કેશવકીર્તનાદ એ મુગ્ધનુસાર ભગવતપ્રાપ્તિ માટે તેનું ભજન. રમરણ, કીર્તન, હૃદયના પ્રેમરૂપી ભાવવડે કરીને કરવામા આવે તો પ્રભુભક્તોની મનોવાચનાઓ પૂર્ણ કરી પોતાના ચરણારવિન્દમા સ્થાન આપી પોતાની લીડનો આભારકાર કરાવેજ. તેટલા માટે શાસ્ત્રકારોએ નવધાભક્તિ કરવાનું કહ્યું છે:—

શ્રવણ કીર્તન વિષ્ણોઃ સ્મરણ પાદસેવનમ્ । અર્ચનં વન્દનં દાસ્ય સત્સ્યમાત્મનિવેદનમ્ ॥

એની રીતે નવ પ્રકારની ભક્તિ આ કળિયુગમા કરવામા આવે તો જરૂર ભગવતપ્રાપ્તિ થઈ શકે

ભગવાન અવતાર ક્યારે લે ?—પ્રથમ તો અવતાર એટલે શું તે સમજવું જોઈએ. અવતાર એટલે ઉપગતી તત્ત્વનીએ આવવું એટલે કે ભગવાન જગતના કલ્યાણ અર્થે પૃથ્વી ઉપર જન્મ ધારણ કરે છે. તેને અપણે અવતાર કહીએ છીએ. ભગવાને જે શ્રીગીતાજીમા કહ્યું છે કે, યદાયદા હિ ધર્મસ્થ । હે અર્જુન ત્યારે જ્યારે આ પૃથ્વી ઉપર અધર્મ વધી જાય છે અને ધર્મ જાણો પડી જાય છે, ત્યારે હું મહારા દેહને સજી છું. મતવળ કે હું મનુષ્યકારે પ્રકટ થાઉં છું. સાધુમંત પુરુષાનુ ગ્રહણ કરવાને અને કુટ પાખંડી લોકોના નાશ કરવાને હું યુગેયુગે અવતાર લઉં છું. એની રીતે આ પૃથ્વી ઉપર અનેક જાતના જુલસો વધી જાય છે, લોકો અધર્મી બની જાય છે, ગોચાલણો અને ભક્તો ઉપર ત્રાસ પર્ને છે અને પૃથ્વી ઉપર કુટ વાતાવરણ પથરાઈ જાય છે, ત્યારે ભગવાન અવતાર ધારણ કરી ગોચાલણ અને માધુ-પુરુષોનું રક્ષણ કરે છે. ઉપર પ્રમાણે પૃથ્વી ઉપર જુલમ વધી ગયો ત્યારે ભગવાન પ્રગટ થઈ મોટા મોટા દેવો જેવા કે અનાસુર, ગકાસુર, ચાણુર તથા કેસ જેવા ગદ્ગદોનો સહાર કરી ભારતમા સર્વત્ર શાંતિ સ્થાપી, પોતે અવનવી બાળકીડાઓ કરી, ગોપીજનો તથા ભક્તોને આનંદના રસનું દાન કરી તમામ ગોકુલવાસીઓનો ઉદ્ધાર કર્યો અને ભગવાને પોતાની જાંસીના ચરે સમગ્ર ભારતવાસીઓનું મન દરી લઈ, જાંસીના મીઠા ચરોથી હૃદયના રોગો દૂર કરી, પોતાના સ્વરૂપનું દાન કર્યું ભગવાને તમામ ત્રણવિંતાઓને નિષ્કામ વૃત્તિથી ચસકીડા કરી પ્રેમામૃત પાઇ પોતાની અસૌક્રિક

દિવ્ય લીલાનો સાક્ષાત્કાર કરાવી પોતાની લીલામાં હંમેશને માટે રચાવે આપ્યું છે. એ ભક્ત-
વત્સલ ભગવાનનો આજ પ્રાકટ્યમહોત્સવ છે. તેનું સ્મરણ હીતન કરી ભારતની પ્રજા ભક્તિ
રસની અંદર તહીન થઈ ગઈ છે. ભક્તિસંપ્રદાયોમાં તેના પ્રાકટ્યનો મહામહોત્સવ ઘણી ધામ-
ધૂમથી ઉજવાય છે. પુણિસંપ્રદાયમાં તો એ બાળકૃષ્ણ પ્રથમે પડને ઝુલાવી પુણિમક્રો આનંદ
આનંદ માને છે. એ વચ્ચેના રક્ષણાર કનૈયાને એવો કથો ભારતવાસી દરો કે તેના ઉત્સવને ન
માને ? આજ એને પ્રકટ થયે દરેકરો વર્ષ પીતી ગયાં છે. પરંતુ આજ એ મંત્રગતિયિ
હોવાથી જાણે એ કનૈયા આજે પ્રકટ થયો છે એવો અનુભવ માથમ પડે છે. એ કનૈયા પ્રકટ
થઈને ભારતની અંદર ભક્તિની રેઝમહેલ વહેવડાવી છે, વન્દન હો એ નંદનંદનને, જય હો
એ ભક્તવત્સલની.

શ્રીયમુનાજી.

સેતું સદા હું થમને પવિત્ર ! તારાં લસનાં મધુ પાદ-પદ્મ;
તું પાર પાડે જનવાંછનાઓ, તું છે ભગિની મમદેવતાની. ૧
તારે તરે કાનનકુંજ શોભે, મ્હેકંત લેરે મધુરા સમીર;
તારા જળે પુષ્પરમ્ભો દબેથી, ભાગીરથીનાં પદ્ય રહેજ દારે. ૨
જન્મી ક્ષિત્તિને જીવને વહે તું, મંજા વહેલી શિવની જટાથી;
મંજા મણિયે મુરતી ધુતી ને, તું કૃષ્ણની પાદરજે પવિત્ર. ૩
ત્યારે પદ્યાર્થ હૃષીકેશ રાગે, રસાધને વામુકિની રણાએ;
ને તાત સાથે નિર્મલ, નંદજેડે, ત્હેં માર્ગ દીધા પગમાં જ ત્યારે. ૪
ધારી રૂં માનવરૂપ આજે, સંદારવા દાનવટંદ કાગે;
સાક્ષાત્ પદ્યાર્થ પરમલ અત્રે, તે જાણુનારી પ્રથમા જળે તું. ૫
કાશિન્દિ ! કૃષ્ણે વિપિને ચરાવી, ગોપાલ સાથે નિત ખેલી ધેન;
સંદારવા પ્રસસ રૂંદ જાણે, આમર્ષ પામે જન મુગ્ધ ભાળી. ૬
હે સ્વર્ગપુત્રી ! તુજ પાટ ખેસી, તેણે જનની કલનાદ ખેસી;
મૂળે જનને એ પશુપંખી ગીઠો, આગાલટદો, વનિત્ય મનુષ્યો. ૭
તારે નિહાળી નિત કાંન કાળા, ગોપાલ જાણા નયનો નચાવે;
કુંજે વળા આદિરતી વધૂનાં, ચાખ્યાં દરો માખણુ દૂધ મીઠાં. ૮
તારા પુલ્કિને રસરાસ ખેલ્યા, વિશુદ્ધ ભક્તિ ઉજળા અનતે,
ને પ્રેમકોળો ઉજળા દિગતે, રાધા રમે ત્યાં નિત સ્થામ સાથે. ૯
પ્રેમે ન તે વૈભવના વિદ્યાસે, ના વાસના ત્યાં જરિકે તલસંતી;
ના ભોગ તૃષ્ણા, નદિ ત્યાં વિકારો, ને પીડતા આ જનના જનોને. ૧૦

રાધાનો સ્થામ સાથેનો, પ્રેમ દેતી સદા ખંડો,

કળે ના રમૂજ ચમુ જો, કામના ના વિકાર ત્યાં. ૧૧

અનંજા કાશિનાં ધારી તેજ સિન્ધવ મૃદતા;

ગાદને કામદેવો ત્યાં પાદ-અજળે દળાં પડે. ૧૨

ઉઠાડે અક્ષિઓ મીઝી પ્રભુના નેત્રની પ્રતિ,
 પુરારિ મમ અર્પે ના કદાચે દેહ દન્ધ જે ૧૩
 'એસ્થા'તા વ્યભુરેણુમા રાસ રડા રસિકડે,
 ચરના ચંદ્રની સાથે લાખે એવું જગે જનો ૧૪
 રમ્યા વળી આહિર બાળ સાથે, તારા પુનિતે યમુને ' સદા તે,
 નીરે પડ્યો કન્દુક, ધીર ઉડા, લેના પડ્યા બાળક કૃષ્ણ વાસે ૧૫
 ધારા સખાના નયનેથી વહેતી, વહેતી યસુના ધનસ્થામ ચબી,
 ચબ્યા વળી વાયુ દશે દિશામાં, ને મેધ છાયા ગગને અગણ્યે ૧૬
 રોધા યશોદા નિજ પુત્ર કાળે, ચોધાર આસુ ઢળતા નદીમાં,
 ને નદનેટો વરસે અબજસ્રમ્, મેધે રુડો ત્રાવણુ માસ જાણે ૧૭
 મનુષ્યો આપડા જાણે ના કદા જન્મદેવને ?
 ગયા શ્રીકૃષ્ણ નાનાશા, નાયવા કાલિ નાગને ૧૮
 કાલિન્દિ તાગ જળમાં જઈને, કૃષ્ણે જગાડ્યો અદિરાજ સુતો,
 કાલિય પત્ની વિનવે દમરો, લેણે ન માને, હરિ તો ઠકીતા ૧૯
 ફેણો દમરો ફરડાની સાથે, જાગ્યો તહો કાનીય નાગ કાળો,
 ફેણે ફેણે ત્યા મણિરાજ ભામે, તેજે મણિના અરિને નિહાળો ૨૦
 ને બાળ લાળી હસતો વહે તે, 'શુ' બાળ નીરે ત્રિપુરો પડ્યો તુ ?
 તારે શરીર લમતી પ્રજા છે, લેણે તુ માનો અગ્રખામણો છે ? ૨૧
 છુ બાળ નાનો હલુ દૂધ પીતો, કા બીરના સાદમ આદરે તુ ?
 લાગી અહોંથી ફૂગ લાગી જાને, કા તુ ખુલે જીવન તોડ સાડ ? ૨૨
 વાકા ઉભેના, હસતા મધુક, શ્રીકૃષ્ણ બસી મધુરી મનવે
 ' છુ બાળ નાનો હલુ દૂધ પીતો, લેણે સદા આયર માહમો હુ ૨૩
 હુ લાડીને છુ મુજ માત દાનો, જૂ થો ન ઉડા જળમાં ! આજે,
 આઘ્યો અહોં તુજ પ્રાણુ નેના, તુ આ નદીમાં પિર નિત્ય વેરે ૨૪
 સૂણી ઇશિના વચ્ચે, નાગને ઝાગ લાગી ત્યા,
 પઝારી દેહ આખોયે, ઉઘળી ઝેર પુ કતો ૨૫
 તફકયો કૃષ્ણની મામે, નાગણો ત્યા ખસી ગઈ,
 જળે દહો રૂઠા જનમ્યા, બાહુના બગાયા લહે ૨૬
 પઝારી હસ્તથી ઝાલી, આપતા પાદ શ્રીહરિ
 હરાયો દર્ષ કાળીનો. મોહ પામી ઢગી પડ્યો ૨૭

(દુતવિલંબિન.)

કરુણુ કહ્યો નાગણુ વિનખી, વિનતિ તે કરતી કર નેહીને
 ' નહિજ આજખીયા જનનાથને, દગિયુ ઝસરી માથ સદા મરે ૨૮
 નમન વદન નાથ દમર છે, નહિજ પ્રાણ હરો અમ નાથના
 લઈ ગમે પતિને વસીશુ દૂરે, નહિ કેલ વિપ તે જળમાં ફુંકે. ૨૯
 વિપત વાદળ છે પ્રભુ ઝેક તે, દગિ ' સદા/દગલે, મુખ આપળે.
 ગરડ તો અમને નિત લખતો, ગરડથી અમને નિત રક્ષજો. ૩૦

જાણે તેમને અને પુષ્ટિમાર્ગને કંઈજ સંબંધ ન હોય તેમ આ પાઠમાં એક પણ પુષ્ટિસિદ્ધાંતો અથવા તેમના આગ્રયુરુ શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજી માટે એક સખ્ત પણ સખવામાં આવ્યો નથી. તે હું ઘાટે જુ કે વૈષ્ણવ વિદ્વાન વર્ગ આ પ્રત્યે હવે જરા પણ દુર્લક્ષ કે દીવ નહિ કરશે અને સત્ત્વ પ્રધાન ગણુ ગણશે. આને માટે એક ચોક્કસ લખાણ લખી અને તેના પર સોંક્યો સહીઓ લઈ નામદાર ગવર્નર સાહેબ પાસે એક ટેપુટેશનની મારફતે આ અરજી લઈ જવાની ખાસ જરૂર છે. ટાઇ પણ રસ્તે વિદ્વાનોએ આ વસ્તુ ધ્યાનમાં લઈ ગવર્નમેન્ટમાં લાગતા વળગતા અધિકારીઓ સાથે મસલન ચલાવી આ લડતને અનેક રીતે પૂર્ણ પણે ઉપાડી લઈ પ્રાયશ્ચિક શાળાઓની વાચનનાળાના ઉપસા પુસ્તકોમાં શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીના શીર્ષક નીચે તેઓશ્રીનું છવનચરિત્ર અને તેઓશ્રીના સિદ્ધાંતોને મિશ્ર કરી એક રચના પાઠ મુકાવરાવવો જોઈએ. શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યશ્રીની કૃપાર્થી લડત ઉપાડતા આપણે તેમાં જરૂર ફગીબન ચર્ચિત્ર અને પુષ્ટિસિદ્ધાંતથી અત્યંત સમાજ દરજ્જાની ઇતલીક મુજબણમાંથી મુક્ત ચર્ચિત્ર

તા. ક.—ઘૈન ધમ, જોહ ધમ, સંકરાચાર્યજી, મુમલમાન, પારસી
માતમી ચોપરી માતમી ચોપરી સાતમી ચોપરી પાચમી ચોપરી પાચમી ચોપરી
પાઠ ૬૦ પાઠ ૫૯ પાઠ ૬૫ પાઠ ૫૬ પાઠ ૫૭

ઉપરાંત પાચમી ચોપરી પાઠ ૨૦ અને પાઠ ૯ સાતમીમાં પાઠ ૬૪ છઠ્ઠીમાં પાઠ ૨૧ પચીસ અનેક ગ્રંથો જુદા જુદા ધર્મોનું સ્પષ્ટીકરણ કરેલું છે.

નોંધ:—રા. ચીમનલાલભાઈનો આ એક પ્રેરક સૂચના છે—કહો કે અર્ધ જાગૃત લાખો વૈષ્ણવોના હૃદય સુધી પહોંચનારો દુર્દુલિનાદ છે. મુનાઈ ઇલાહમાં લાખો વૈષ્ણવો છે અને તેઓ ધનાદય દોષને મોટી લાગવગ ધરાવનારા છે તેમના અદ્યક દ્રવ્યના દાનથી અનેક ઇતિર સંસ્થાઓ પોષાય છે. પણ સંપ્રદાય તરફ તેઓનો આત્મવિશ્વાસ જુગાતા દીવો જણાયો છે, એટલે તે દીવાને સંતોરોને તેજ પૂરવાની જરૂર છે. જો તેઓ આ કામમાં અગ્રેસર બને તો ? ધણું થાય. ખીલું કેળવણીખાતાઓના આપણા પુષ્ટિમાર્ગો વિદ્વાનો છે, તેઓ પણ આ દિશામાં પ્રગતિ કરી શકે છે જો તેઓ મોટા મોટા ઓહાઓપર દત્તા અને છે, તેથી બાલમનોદશાના અનુભવોના અભાવે તેમણે ઉપેક્ષા કરી છે, જના હવે નો તેઓએ જાગૃત થવું પડે છે. આવી લડતની આગેવાની લેનાર પુષ્ટિમાર્ગના એક ચરવીર ચોક્ષ નડિયાદવાળા લગવદીય રા. રા. મોહનલાલ લલુભાઈ શાંદ એ કામ દાચ ધરી સં, પણ તેઓ હાલ લામા (મોતીયા ઉતરવાથી) જુની ગયા છે. મું પુરક મંડળ આ લડત નહિ ઉપાડી લે ? તંત્રી.

મુંસાફરી, ઘર અને દવાખાનાને ઉપયોગી

આયુર્વેદિક ગૃહચિકિત્સક બોક્સ.

મોટી પેટીની કી. રૂ. ૨૬. નાનીના રૂ. ૧૫.

આ પેટીમાં જુદા જુદા રોગો ઉપર આપવાની ૩૦ જાનની દવાઓ સખવામાં આવી છે વિવિધ માટે ક્ષમસીને લખો—

હર પ્રકારની શાઓકા
ગાઓ અગમે.

} મી. પી. આયુર્વેદિક કેમિકલ વર્ક્સ (લેબોરેટરી)-
રાયપુર. સી. પી.

ચર્ચાપત્રો.

૧. છંદોભંગદોષ !

૩. રા. શીમાનું “શુદ્ધાદિત” ના અધિપતિ આદેશ, વિ. “બીરુપત્રિકા” ના પ્રથમ પુસ્તકની નવમી સંખ્યામાં અમારો મોકલાવેલો અભિપ્રાય પ્રકટ કરી તે નીચે ટિપ્પનીમાં “છન્દોમદ્ગદોષઃ” એવું લખ્યું છે, તે જોતામાં અત્રેથી “છન્દોમદ્ગદોષઃ” સંબંધે ખુલાસો થીમી મોકલવા પ્રયત્ન પત્રો લખાયા પણ કોઈને જવાબ નહીં મળ્યાથી અમે “શુદ્ધાદિત” ન્યાયનું અવલંબન કર્યું હતું. પણ ક્ષિત્રેઆએ આપના સાતમા વર્ષના ૧૦ મા અંકમાં તે સંબંધે પ્રકટ થયેલું “ચર્ચાપત્ર” આણુ આપારીઆમાં અમારા લેવામાં આવ્યું છે. જેથી ખરી દરખાસ્ત તરફ દેખી જવાબ આપવા ફરજ પડી છે. સગવડ આ નીચેના લેખને આપના માસિકમાં સ્થાન આપી આભારી કરશે અને આ જાગન જે અંકમાં આવે તે અંક અમને મોકલાવી અપવા તબીબ કરશે.

“ચર્ચાપત્ર” માં “વાસ્તવિક પંક્તિ આ મુજબ છે. હરિશંકર શાસ્ત્રીવરપ્રાહિતા “બીરુપત્રિકા” પ્રાપ્ત ઉપર જણાવેલી પંક્તિ તદ્દન અશુદ્ધ છે.” એવું લખીને “છન્દોમદ્ગદોષઃ” એ ટિપ્પનીને નિર્વાહ કરેલો છે. ટિપ્પનીમાં તેમ દેખા “છન્દોમદ્ગદોષ” લખીને માત્ર છન્દશાસ્ત્રની જ નિપુણતા પ્રતીતી હતી. હવે વળી આ ચર્ચાપત્રમાં “હમન્ત” શબ્દ સમાસમાં દીર્ઘ કેમ થાય એવું લખી જ્ઞાતકર્ણ ની હોંશીયારી તરફ દેખી છે, પણ એ બંધી જુકી બનાવટ છે. કેમકે અમારા લેખકો અભિપ્રાયમાં શાસ્ત્રિયર એવો દ્વિતીયકારવાણો શબ્દ છે. “બીરુપત્રિકા” માં લખવા મુજબ અને “ચર્ચાપત્ર” માં લખવા મુજબ શાસ્ત્રિયર એવો દીર્ઘકારવાણો શબ્દ હજી નહીં. જેથી દીર્ઘકારવાણો ખોટો આશ્રય લઈને જેટલું “ચર્ચાપત્ર” માં લખવામાં આવ્યું છે, તે બધું તરફતરેલું છે અને “શુદ્ધાદિત” નું અવલંબન કરી તદ્દન જુકી ચર્ચા કરેલી છે.

“બીરુપત્રિકા” માં લખાએલા અમારા અભિપ્રાયમાં મોટી બૂધો ૫ અને ન્હાની બૂધો ૭ મળીને બાર બૂધો કપટ લેવામાં આવે છે, તે ઉપરથીજ પ્રક્રિયાસનારની હોંશીયારી સોવજ જોનોને સુવિધિત થાય છે. વધારે લખવાની જરૂર રહેતી નથી.

“હમન્ત” શબ્દસમાસમાં દીર્ઘ કેમ થાય તેવું આલેખકોએ સમાધાન કરવાનું રહ્યું એમ જે લખ્યું છે તે આકાશકુસુમ જેવું છે, કેમકે રા. નરોત્તમ શાસ્ત્રીએ હમન્ત શબ્દનું સમાસમાં દીર્ઘ થવાનું કે દીર્ઘકારવાણો શબ્દ શુદ્ધ હોવાનું જણાવેલું જ નથી.

“સાધેજ જે આ પ્રમાણે દરદોષ માની લેવામાં આવે તો દ્વિતીય યત્ન કેટલી માત્રાએ થાય છે તે આપેજ ગણી લેવી.” એ પ્રમાણે લખીને ચર્ચાપત્ર લખનારે જે શાસ્ત્રિયર એવો દ્વિતીયકારવાણો શબ્દ હોય તો પણ છન્દોમદ્ગદોષ કાયમ રહે છે નિરૂપ થતા નથી, એવી માન્યતા જણાવી પોતાનો “દુત્તવોષ” નો અભ્યાસ અને માત્રાએ જણવાનું વિગત કું છે તે સોવજ પછી વિદિત કરી આપ્યું છે. જે દ્વિતીયકારવાણો માનીને શાસ્ત્રિયર એવો દ્વિતીયકારવાણો શબ્દ માની માત્રાએની ગણતરી ગણાય અને “દુત્તવોષ” ની ઉપસ્થિતિ બરાબર હોય તો “વચ્ચાઃ પાદે પ્રથમે દ્વિતીયકારવાણો” એ પ્રમાણે પ્રથમ પાદમાં બાર માત્રાએ બરાબર થાય છે. પછી છન્દોમદ્ગદોષ કે જ્ઞાતકર્ણોષ કેવી રીતે રહે છે ? તેમજ “આપેજ ગણી લેવી” એમ લખ્યું છે તો દ્વિતીય માત્રાની લીધા પછી નિર્દોષ બનેલા તરતે પ્રશ્ન લેવાની શી જરૂર રહે છે ? બાર માત્રાએ બરાબર

અર્થ ગયા પછી શું ગણવાનું બાકીમાં રહે છે? તેનો ખુલાસો ચર્ચાપત્ર લખનારે પોતાની સમગ્ર મુજબ જાહેર કરવાનો બાકી રહ્યો છે.

“ઉપર જણાવેલા સંમતિપત્રની અસર પ્રત મારી પાસે મોલુદ છે. જે રા નરોત્તમ શાસ્ત્રી તેનો બંધોક બનાવવાનું અર્થ સદન કરે તો તેમને ખરચે અસાધ્ય પ્રત વિક્રોની દૃષ્ટિમાં આવી શકે તેમ છે.” એ મુજબ ખરચનો જોતો બતાવેલો રા. નરોત્તમ શાસ્ત્રીને અને “આ પ્રમાણે જે હસ્તદોષ બાની શ્રેવામાં આવે તો હસ્ત યતાં કેટલી માત્રાઓ થાય છે તે આપેજ મળી નેથી.” એ મુજબ માત્રાઓ ગણી જોવાનું જણાવી આપને પણ હાવાની આલાપી વાપરીને “નિર્વિવેનાયિ ચર્ષણ કતંભ્યા મહતી ફળા” એ વચનનો પરિપૂર્ણ ઉપયોગ કર્યો છે. બંધોક બનાવવાનો અર્થ સદન કરવા અમો તૈયાર છીએ પણ તે સાથે “લક્ષ્યમયમયમૂલકારણમ્” એ વચનનો અનુભવ થવાથી વિશેષમાં જણાવીએ છીએ કે “જેમની પાસે સેકેડે વિદ્યાર્થીઓ ઉચ્ચોમ્ન્ય અને વ્યવસ્થા ભણી ગયા છે, અને લાક્ષમ્યા ભણી રહ્યા છે તેવા પાઠશાળાના અધ્યાપકોની કમીટી નીમીને તેમાં અમારી અસહ પ્રત રજુ કરી બંધોકની સાથે અધ્યાપક કમીટીનું પ્રમાણપત્ર પણ જાહેર કરવું.” તે સંબંધે જે ખરચ થશે તે પણ સદન કરવા અમો તૈયાર છીએ, પરંતુ તેમ કરતાં પહેલાં જે અમારા લખેલા અભિપ્રાયમાં શાલિવર એવો હસ્તવર્ધકારવાળોજ શબ્દ હોય અને અમારી લખેલી “જાર્ચી” દોષ વિનાની હોય તો “ચર્ચાપત્ર” લખનારે બંધોક અને અધ્યાપક કમીટી બાબત જે ખરચ થાય તેથી બમણી રકમ આપવાની પ્રતિજ્ઞા જાહેર કરવી જોઈએ.

“ચર્ચાપત્ર” માં જે સંકુલ પત્રની ત્રણી આપી છે તે પત્ર અમોને મળ્યો નથી. જેથી તા. ૨૦-૧૦-૩૨ નો પત્ર લખવાની ચેષ્ટા સ્વભાવસ્થામાં થયેલી લાગે છે. જે જાગ્રદસ્થામાં સદરજુ પત્ર પોરટ થયો હોય તો અમને મળ્યા વિના રહેજ નહીં, અને, અમારે અગ્રેથી જા. નં. ૧૧ થી (૩૦-૧૦-૩૨) જે પત્ર લખ્યો પડ્યો હતો તેની દરકાર પછી રહે નહીં.

સંકુલ પત્રના જવાબમાં જણાવવાનું કે—

નાસ્ત્યેવાસ્મલોપિતે પત્રે સમ્બોધનાન્ત પદં દુષ્ટમ્ । નહિ સર્વેષાં સર્વત્ર સર્વદા સમ્ભવન્તિ પ્રમાદાઃ । શાલ્વિશ્વન્દસ્ય સમાસાન્તર્ગતવાદેવ દોષર્ણાલ્પરસ્યાપ્રવૃત્તૌ, હસ્તેન્કારવસ્ત્વે, નૈવ સમ્ભવન્તિ કથાશ્ચિદ્વપિન્દોમહદોષઃ । મવતુ નામ દિપ્તની યસ્ય કસ્યાપિ, દોષધેત્તદાવિકરણે કીદશઃ સ્યાન્કસ્યચિદપિ. વિરોધઃ ? કિન્ત્વભિપ્રાયસ્વસ્મામિઃ સ્વયમેવ લિલિત ઇતિ નૈવાસ્તિ તસ્મિન્દોષ-તદ્વાવકાશ ઇતિ દૃઢં વિશ્વસિમ્.

“ચર્ચાપત્ર” માં “શિષ્યોના પત્રની ઉપેક્ષા કરી” એમ લખ્યું છે, પણ અમોએ અગ્રેથી જા. નં. ૧૧ નો (૩૦-૧૦-૩૨) છેલ્લો પત્ર મોકલાવેલો હતો તે મળતાં તેનો જવાબ આપવા પુરતું પણ સૌજન્ય વાપરી શકાય નથી, હાત્તર્થ સુધારો છે કે સ્વયંચાલો છે, અને ગુરુત્ક્રાંતિ ગુમાવ્યું છે કે પાલન કર્યું છે, તથા દિપ્તનીમાં લખેલો “છન્દોમદ્દોષ” જ્ઞાનપૂર્વક છે કે અજ્ઞાન-પૂર્વક છે. તેમજ “ચર્ચાપત્ર” વાસ્તવિક છે કે અવાસ્તવિક છે, અને દુઃખાદસ કાનું અને કેના પ્રકારનું છે. વિગેરેની સદર મુજબ બંધોક સાથે અધ્યાપક કમીટીને અભિપ્રાય પ્રકટ થવાથી પદ્યોક્તિ ખાતરી થઈ જશે. અસત્ય બાજબમાં મોન મેવનું કે ઉપેક્ષા કરવી સન્માર્ગ જણાય નહીં.

ગોપાલકૃષ્ણ શાસ્ત્રી, શ્રી સં. પા. મુસ્તયુગ.

અહીં છે અને અમે માનીએ છીએ (અધ્યક્ષાધી નહિ) છીએ. માનો કે ન માનો તેથી અમેને શું ? બીજાઓ ન માને તેથી કંઈ આચાર્યશ્રીની કીર્તિ જાંખી પડે તેમ નથી. કદરવાન વિદ્વાનો તો કદર હરી રહ્યા છે અને કહે છે. સૂર્યની સામે ગમે તેટલી ધૂળ ઉડયો તે કંઈ જાંખી પડવાને નથી. તેવી રીતે આ સૂર્ય સમાન તેમજની સંપ્રદાય ઉપર અમે તેટલી ધૂળ ઉડયો, જમે તેવા અણિયો પડો, તેથી કંઈ સંપ્રદાયને હાનિ થવાની નથી. જૂન્યપાદ આચાર્યશ્રીઓ તથા સંપ્રદાયના વિદ્વાનો પ્રત્યે અહારી પ્રાર્થના છે કે આચાર્ય શ્રીમદ્વાપ્તજીના “કનકામિયક” ની વધુ શોધખોળ કરી આચાર્યશ્રીના નિષ્કલંક ચરિત્ર ઉપર વધુ પ્રકાર પાઠવાની ખાસ આવશ્યકતા છે. હાલના આચાર્યો ધારે તો ને કામ પાર પડ્યા વિના રહેશે નહિ, વિદ્વાનો શોધખોળને માટે તૈયાર છે. પરંતુ નાણાંને અભાવે કરી શકતા નથી. તે ખરેખર સારમાથા જેવું છે. આવા રહેલા સંપ્રદાયને શોભાસ્પદ નથી. લેઘનિક વેષ્ણુવો, તમ્ભરા દ્રવ્યનો સદુપયોગ પ્રભુની સેવામાં કરી કૃતજ્ઞ થશે એવી આશા છે અને વેષ્ણુવોને પ્રાર્થના છે કે આત્મા કલ્પિત વાતાવરણમાંથી બચવા માટે શ્રીમદ્વાપ્તજીના સિદ્ધિતાનું ગાન કરશે તો પ્રુદ્ધિમાર્ગનું રહસ્ય સમજશે. એજ વિજ્ઞાનિ. લી. વાડાસીનોરવાસી શા. રમણલાલ સાંસ્કારલાલના દીરંભરજી.

૩. રાધાકુંડના મુખ્યા.

લી. દાસાનુદાસ વૃષ્ણવૃષ્ણ વહીવટાસ રાધાકુંડના મુખીયાજી તમેને તસરી આપવામાં આવે છે કે, શ્રુતિ બાઈ આ રેવા ન્યાય છે ? હમોને શ્રીકૃત્વવારથી તો હમોને રાધાકુંડ શ્રીવેદકાંડની સેવા ટેહલ કરવા મોકલ્યા તે બે વરસ આનંદથી ને બની તે ટેહલ કરી પેટ ભરું છું. પરંતુ હવે હમારી સાથમાં ઘણી બનીવિથી ચારત્ત લેવાયો. શ્રુતિ ને અણુસ પડેલાં રહેનો હનો જેના બારમાં તમે પડેલાં છાપું દઈ, તે ઘાસીરામ ઉર્ફે કીસનદાસ પાછા કમંચારીઓને સમજાવી હઈ પાછા રહો છે ને મારાથી એકામિકી સંભાલી લીધો, ન તો મને ઉત્થાપન કરવા દીધાં ને ચાર પાંચ સીપાઈ કામદાર આવી ઘેરીને અને ધમકાવીને બધા સંભાલી લીધો તેમાં કઈં વખું કઈં ના લખું ને આપસમાં મોટીઆ કેટલા વાંદી લીધાં ને મને બોલવા ના દેય. હું કેવા જઈ તો મને ધમકાવે. બાર ફરવાન પર સીપાઈ બેસાડી દીધા કે કોઈ આને ન્યાય નહિ. ને જખર મારાથી દસદત કચલી લીધા ને મને પાછી રસીદ પાંદડી આપી નહી. માગી ત્યારે રેવા લાગ્યા કે તમકું કીસ બાતકી રસીદ મીલે એવી રીતે મારા માથે શુભરી છે, ને મારા પાસે પાઈ નથી. હવે માદે રૂં કરવું ? તમેને સૂચના આપી છે કે ગાયે જવા આવી રહી છે. બીજું ચોડાસ પાનાં છાપીને મને મોકલો તો હું જવામાં બધા વેષ્ણુવોને વેથો દઈ પછી તો આપની મરજી માફે કેકાનું શ્રીમદ્ગોડવલ શ્રીકૃત્વવારનાથજીના મંદિરમાં કોટડીમાં ફરમ મોકલો તો કાકાજીના મંદિર પર અખર શ્રીકૃત્વવારનાથજીના મંદિર પર મોકલવેને આપને તસરી આપી છે તે માફ કરો.

નોંધ—વેષ્ણુવો તરફથી ઘણી સખત ફરીયાદો થયા પછી રથળે રથળે પ્રસિદ્ધ યદી મયલા રાધાકુંડના મુખ્યા ઘાસીરામ ઉર્ફે કૃષ્ણદાસને શ્રીનાથદ્વારાધીચરે શ્રીવેદકાંડમાંથી કાઢી મૂક્યા હતા. પણ પાછા તેઓ તે રથળે જાખલ થયા છે. શ્રીનાથદ્વારાપ્રકરણ જલવાયું છે. નવી વ્યવસ્થા ચાલુ છે. હવે બહુ અધિર નમશે નહિ અને ઘાસીરામો બાગ્યેજ ફાળી જશે. ચોડા વખત માટે બલે ઘાસીરામજી ફાંફર કરી લે. તંત્રી.

શ્રીનાથદ્વારાપ્રકરણ.

શ્રીનાથદ્વારાની અદ્યક્ષ દુન્યવી સંપત્તિની નવી વ્યવસ્થા ઉદયપુરનરેજ કરે તો તેમાં બાજ લેવાની ઇચ્છાથી કેટલાક માણેદુનર ધનાઢય વેષ્ણુવો ઉદેપ્રર જઈ પહેંચ્યા હતા. તેમાં મુંબાઈથી ૧. સર મનમોહનદાસ રામજી, ૨. શેઠ લાલજી નારજી, ૩. શેઠ વહીવટાસ કરસનદાસ નાથા, ૪. શેઠ દેવીદાસ મહાવલ કામરડી, ૫. શેઠ ભજાનદાસ મનમોહનદાસ, ૬. શેઠ જમનાદાસ રતનચંદ, ૭. અમદાવાદથી—શેઠ શ્રીમનલાલ ગીરધરલાલ, ૮. શેઠ ગોવિન્દદાસ માણેકલાલ, ૯. શેઠ હરિદાસ બચરતલાલ, ૧૦. શેઠ જીવજીલાલ ગિરધરલાલ, ૧૧. શેઠ શ્રીમનલાલ ગીરધરલાલ પટોદરા, ૧૨. શેઠ મંજારામ ખાંડવાળા સુરત, ૧૩. મદ્રાસથી દિ બા. ગોવિન્દદાસ ચતુર્જીનાદાસ, ૧૪. શેઠ પુરુષોત્તમદાસ ગોડગદાસ, ૧૫. રામજીલાલ નારાયણદાસજી ભર્મન

૧૬૭૫, ૧૬. શેઠ નવલકિશોર ડાંગા કલકત્તા, અને દિવાન સાહેબ પટવારીજી એ મુદ્રણે લખાં. અર્થાં શ્રીગોસ્વામી બાળક, 'મદ્વચ' વિદ્વંસ અને સાધારણ શિવલિના તથા ગરીબ વેપારી; જેઓની લાખિનો સંખ્યાનો કોઈ પ્રતિનિધિ નથી એ આધારલેખ છે ! આ મુદ્રણે સાથે વાટચટ્ટ કરીને મદદાચ્છાએ તા. ૧૦-૧૨-૩૩ ના રોજ દુકમ નં. ૨૮૬૮ થી એનો દુકમ ફરમાવ્યો કે, શ્રીનાથદાસના મીલિતલાલિત તરીકે ચિ. શે. શ્રીગોવિન્દલાલજીને ભદેર કરવા. સગીર લાલબાબાની મીલકતના વલીવટદાર દેરીકે (Court of wards ની રૂબે) પંડિત રમાકંત માલગીચ અને પંડિત મનમોહનલાલજી (કારમીરી)ને નીમ્યા છે. આ કપરાંત એક વ્યવસ્થાપિકા સૂચના બતાવી છે. તેમાં કપરાના એ અધિકારીએ કપરાંત મદેતા કુતોદલાલજી, પારેખ રતનલાલજી ચેતીવાળા તથા શેઠ લાલજી નારાયણજી, શેઠ દેવીરાય આશવજી કાકરશી, શેઠ વલ્લભદાસ કરસનદાસ નાથા, રામભાણુ નારાયણજી, શેઠ મોવિન્દલાલ માતોલાલ, શેઠ મોમનલાલ ગીરધરલાલ, શેઠ રણછોડદાસ જ્ઞાનવંદાસ પટવારી, શેઠ પુરુષોત્તમદાસ મોકુનદાસ, એ મુદ્રણની વ્યવસ્થાપિકા સમિતિ નીમાઈ છે. પ્રશ્ન એ છે કે, તે આદેશ કે છે. છેલ્લાં દોઢ વર્ષથી વેપારીઓમાં સળગી રહેલી જ્વાળા પર એક રીતે કાંઈક શીતલતા પ્રસરી. કમીટીના સદ્યમુદ્રણને પ્રશ્ન સદ્યુદ્ધિ અર્થે અને એ અટકાવ દ્રવ્ય ત્યાં છે તેનો સદ્યુપયોગ કરવા માટેની વિગ્મત પ્રેરો. મનાદેવો એ ડબ્બેને વધારવા માટેના મિચ્છામોદમાં નહિ પડતાં સંપ્રદાયની ઉત્તાત માટેની એક ચોખ્ખા કરીને તેનો સદ્યુપયોગ કરી એવી આજ્ઞા છે. શ્રીયુત પટવારીજીને આ મૂલના બાળેજ કરવાની દોષ.

ઉક્ત સદ્યુદ્ધરથોમાંના કેટલાક તો ગમે ગમે શ્રીનાથદાસીધરના સામ્રાટ આમંત્રાણથી ઉદયપુર ગયા હતા અને ત્યાં તેઓની એક કમીટી નીમવામાં આવી હતી. પણ પાછલથી એ કમીટીને ઠરાવી દેવામાં આવી હતી. આ પગલાં સાથે મેં ભદેરમાં વસી ઉઠાવ્યો હતો. આ ગમે તો ઉપર જણાવેલા સદ્યુદ્ધરથો રહેઠાણથી ઉદયપુર ગયા હતા. ત્યાં જવામાં તેમનાં બે હેતુઓ દોઢ રાત્રે. એક તો આવી પહેલી વિકટ પરિસ્થિતિથી સંપ્રદાયને દારવારપદ થતો અટકાવવાની ધન્ય અને બીજી શ્રીનાથદાસના અટકાવ દ્રવ્યની સુવ્યવસ્થા થાય તેવી મુશ્કેલી. આ બે મુખ્ય ઠરાવા સંભવી શકે. મદદાચ્છાએ નીમેલી કમીટીમાંના સદ્યુદ્ધરથો એવા મનાદેવો છે કે તેઓને પોતાની મીલકતોને વલીવટ કરતાં પછી પીવાની પણ દુરસ્ક મળે નહિ : તેઓ રાજપ્રવંચથી ઉઠાવતા શીશુપ્તમંદારનો વલીવટ કેમ કરી શકશે ? સમયનો કોમ્પ ક્યાંથી આપી શકશે ? અલગત, ત્યાંની કસોટીની રોકડ રકમોનું બાજ મેળવવા માટે તે સદ્યુદ્ધરથોની સદાયતા આજરથક જણાશે. સંપ્રદાયની ધન્ય માટે ત્યાં એ મનાદેવ મંડળ ઉદયપુર સુધી મળું હોય તો તેને અમે તો શુભ ચિદ્વન જાણીએ છીએ. ત્યાં ગયેલા સદ્યુદ્ધરથોમાંના સંપ્રદાયનું મમં સમજનારા અને સંપ્રદાયના મદાનુ વિશાળ આદરોથી વિરહ જતી લાલ આલવી અચળ રૂઢિમાને સમજીને તેને દંભથી દેવાની હાંમલ પ્રવાવનારા કેટલા છે એ જ સવાલ કાઢ કરે તો ખરેખર, માયુજ અજ્ઞાતાનું પડશે; કેમકે ત્યાં ગયેલા આયેલનર સદ્યુદ્ધરથો શ્રીનાથદાસની તેમજ પોતાના જ જામોમાંના મોરાં મોરાં જણાતાં મંદિરોની એવી રૂઢિમાની બરલાસ કરી રહ્યા છે કે તે રૂઢિમા સંપ્રદાયિક આદરોની કસોટીએ યથાવર્તા થીર જતી જ સાબીત થાય. ખેર, "અબ્બા તારી સવાર" એ કહેવત પ્રમાણે શ્રીનાથદાસનો વલીવટ મુધારણ ગયલા સદ્યુદ્ધરથોની ધન્યને મમિ અનેક વંદન કરીએ છીએ અને એ ધન્ય શિરથાલ છતો અને અગ્નિરૂપિ પામી એવી આંતર આંતર અભિલાષા છે. આજ્ઞા છે કે, સંપ્રદાયને નિષ્કલંક બનાવવાની ધન્ય ધરવનારા સદ્યુદ્ધરથો સંપ્રદાયનું મમં સમજીને, પોતાનાં ધર્મો અને કુટુંબમાં સંપ્રદાયને નામે આલવી અનેક રૂઢિમાને નેકતાનુદ કરીને, પોતાનાં જામોનાં મંદિરોને પણ આદરે મંદિરો બનાવવા માટેના પ્રયાસોમાં હવે પાછળ નહિ જ ખડે. નહિતર આ રોડાદોશીઓ અર્થે બલિબંધમાં કાંઈ જોડો જ પરી !

શ્રીનાથદાસપ્રકરણની આ ઉદાગ્રહ વખતે કેટલાક નિલચીલારથ શ્રીનાથસ્વામિભાગોનાં રમણ થાય છે. એ તેઓશ્રી અત્યારે ગુલબર બિરજળા દોરે તો આ સ્થિતિ ન જ આવડ. શ્રીનાથજીનું વિઠામલિત પદ લદાગી રહ્યું છે. શ્રીચિત્રસેનપ્રજ્ઞના નચેક પુત્ર શ્રીનિરિધરજી પટેલા વિઠામલિત થયા. તેઓશ્રીના આસુરખ્યમોદ પછી સાત ધરના અન્ય પાંચ ભાગોએ-મોં-વિંદજી આદિએ-અનુપ પુત્ર મીમે-કુટુંબજી પ્રમુને વિઠામલિત પદ અર્પ્યું. આ એવિદલિલ સત્તરી અત્યારે પણ માર સાત ધરના શ્રીનાથસ્વામિભાગો.

પણ આવી ગયેલા, બહુ પોડું થવા લાગ્યું, ત્યારે આપ (શ્રીમદ્બુલ્લુ) બેઠકમાં પધારી હુમમ પધરાવી લાવી અને તાર્ણા ખુલાવી સંજનાઈ કર્યો, એવામાં સંજનાઈ સંભળીને તિલકાયતશ્રીની નિદ (ઉઠ) ઉઠી ગઈ, ભયૂત થયા. અને ખવાસને ખૂણે કે અમારા કદા સિવાય ચાલીને હુમમો કોણે પધરાવ્યા ? ત્યારે ખવાસે વિનંતિ કરી, ને દુષાનાથ ! શ્રીકાંકરોલીવાળા બ.લક પધાર્યા છે તે હુમમ પધરાવી ગયા છે. તેણે સંભળીને શ્રીતિલકાયતશ્રી ચૂપ થઈ ગયા ! પછી આપશ્રી (શ્રીમદ્બુલ્લુ) સ્નાન કરી મંદિરમાં પધાર્યા અને રાજભોજ આપી કરી હુમમ લઈને આપના મંદિરમાં (શ્રીનાથદાસ-માના શ્રીદારકાધીયના મંદિરમાં) પધાર્યા, પછી ઉત્સાહપનસમયે હુમમ પધરાવીને શ્રીનાથજીના મંદિરમાં પધાર્યા, સેન પચેત સેરા પહેલો શ્રીદાસરાજને પેટાડી, અનોસર કરી, પછી તાળામંચગ કરી, હુમમ લઈને પોતાના મંદિરમાં પધાર્યા આમ આપશ્રી બે દિવસ સુધી ખીરાળ્યા, ત્યારુપી હુમમ આપનો પાસેજ રહ્યા, એક વખતે રાત્ર સમયે ભોજ ધરીને આપ ખીરાળ્યા હતા ત્યારે શ્રીતિલકાયતશ્રીને કહ્યું કે શ્રીનાથજીના મુખાર્થ સર્વ શ્રીગોસ્વામિજાલકોએ મળીને આપને શ્રીનાથજી સોંપ્યા છે; અને આપને ભગવામાં કોઈ કોઈ વખતે બહુ પોડું થય છે, અને શ્રીનાથજી બિરાજ રહે છે, માટે હુમમ પ્રસાદી બંડારમાં રાખવા, એવી આજ્ઞા કરી. તે વખતે તિલકાયતશ્રીએ કહ્યું કે આપ તે મોટા છે, આપ એવી શિષ્ટા ન કરો, તે કોણ કરે ? અને અમારી આ કચેલી બૂઝ, કશુરને, આપશ્રી ક્ષમા કરો, અને આપની આજ્ઞા પ્રમાણે હુમમ પ્રસાદી બંડારમાં રહેશે, અને પ્રસાદી બંડારી મુખીયાએ આવતાની સાથેજ આપી દેશે અને અનોસર વખતે સંભાળી દેશે. એ પ્રમાણે કહી શિખામણ આપી. પછી તિલકાયતશ્રી આપની બેઠકમાં પધાર્યા બેઠકમાં પધારી વખતે અધિધારીએ વિનંતિ કરી ને દુષાનાથ ! જરો શુભો ? ત્યારે આપશ્રીએ આજ્ઞા કરી કે જયો સેનો ? એ તે ભૂવ ચૂની વાત છે. અને જોડા ન કહે ત્યારે કોણ કહે ! અને પહેલેથીજ બઝચૂની વાત કાંકરોલીવાળા બાળક કહેતા આવે છે. તેમાં કાંઈ નવી વાત નથી, એમના ચિત્તમાં શ્રીનાથજીની વત્સલતા આવી એટલે તેમણે અમને શિખામણ આપી, એમ કહી બહુ સહાઈના કરી. શ્રીદારકાધી નિમ્ન કરી બંડે તાતજી શ્રી કાંકરોલી પધાર્યા એક વખત ઉચ્ચપુરનદેશ શ્રી સરદારસિંહજી અને તિલકાયતશ્રી ગોવર્દિંજીને જયો યથેવ તેથી શ્રીનાથજીને ભક્તતા આર ધરીની વાર લાગી, ત્યાં શ્રી દાદાજી મહારાજ સંજાર કરવા પધારેલા હતા, તે જયો ભક્તને આપશ્રી શ્રીનાથજીને જગાવી સેવા સંજાર કરીને શ્રી ગોવર્દિંજીસથળે કહ્યું કે તરફદાર જયમાં શ્રીનાથજીને કેમ કું.ખ આપો છે ? આવી રીતે શ્રીનાથજીના ઘરમાં વ્યતિક્રમ થયો ત્યારે સર્વ શ્રીગોસ્વામિ-જાલકો મળીને કહેતા તે તિલકાયતશ્રી કણુવ રાખતા. અત્યારે તે શ્રીનાથજીના ધર્મ શ્રીતિલકાયત શ્રીગિરિધારીજી મહારાજની એવી ઈચ્છા થઈ કે સર્વ બાળકોને દર ઉઠાવી દીધો, તેવી (પ્રજ્ઞાલિખા વિરુદ્ધ) મરજી થવાથી તેમને પ્રત્યક્ષ રૂળ મળ્યું અને તે આપણે સર્વેએ બેથ કે મનવાસે કરવે પડ્યો. તેથી શ્રીનાથજીને અભિમાન શુદ્ધ નથી, આગળ જેમણે જેમણે અભિમાન કર્યો તે બધાનું અભિમાન નિવૃત્ત કર્યું જેમ કે આહુનાદિક બધાને, માટે શ્રીગુહિમાર્ગમાં પ્રથમે "જવ" સારો લાગતો નથી—"

રોક્ષસભા—રાયપુર (સી પી) તા ૨૧-૯-૩૩ ના રોજ શ્રીનાથદાસના તિલકાયત ગોત્રવામી શ્રી ૧૦૮ શ્રીગોવર્ધનવાલજી મહારાજના લીલાપ્રવેશના અત્યંત ખેદયુક્ત ખબર પેપરોમાં વાંચતા અહીંના શ્રીવલ્લભાશ્રિત વેળુવ સમાજમાં ધણીજ દીલ્લીરી દેવાઈ મઈ હતી અને શ્રીગોકુલચંદ્રમાળના મંદિરની દેખરેખ કરતા બે કસં રોક્ષ જાલગિરાન નવાનીજીએ સમસ્ત વેળુવાને રોક્ષસભા ભરવા નિવેદન કર્યું હતું. સંજે ૪ વાગે શ્રીગોકુલચંદ્રમાળના મંદિરમાં રોક્ષસભા ભરવામાં આવી હતી

(૧) પ્રારંભમાં રોક્ષસભા બોલાવવાનું મારજી વૈવર્યાશ્રી દારકાંકસભાધમે કહી સંભળાવ્યું હત અને સમાજ પ્રમુખરયાન રાયજહાદર રોક્ષ બંસીલાલ અગીરચંદ્રજી અનેની પેટીના મુનીમજી બો. ચેલરડો રોક્ષ જગનાથજી મુંદાને આપવા દરખાસ્ત કરી હતી તેને રોક્ષ સીવદાસજી ડાલા બેંકર ગોવર્ધનદાસ મોહારી તથા રાયસાહેબ નંદલાલના સાદાણીજી તથા ગોવરધનદાસભાજીએ ટોઠા આપ્યા હતા. (૨) ત્યારબાદ રોક્ષ રામક્રીરાજજી નવાનીજી તરફથી પ્રવેશ રાખવામાં આગ્યો હતો કે સમસ્ત વેળુજી આપવી કાણે પાતાનો કારભાર બંધ (હટાવ) રાખે તેને રોક્ષ સુરદાસજી દમાણી, મોતીભાઈ લાલજીભાઈ દારકાં-

પાસમાં, દેવકરનમાં જોવામાં વગેરે અનુભાવ આપ્યું હતું અને સર્વાનુમતે ઠરાવ પાસ થયો હતો. (૩) બાદ દ્વારદાસમાં એક ઠરાવ એવો રજૂ કર્યો હતો કે આપશ્રીના લીલાપ્રવેશ માટે કેવલ બમણા નામોચ્ચાર (૧૫) તથા શ્રીમદ્વેદમંથિત મંથનું પઠન કરવું જોઈએ તે ઠરાવ સર્વાનુમતે પાસ થયો હતો તેમ ગાયોને પાસ નાંખવા પ્રબંધ થયો જોઈએ. (૪) બાદ સભાપતિ તરફથી આપશ્રીના શુભાનુવાદનું સ્મરણ અને આપશ્રીની ઉત્તમ સેવા પ્રવૃત્તિ અને આપશ્રી અને પ) સાથે પેલાં શ્રીચંપારમ્ય પદ્યાર્થો હતા તે વખત વેંધુવો. પરની કૃપા ભદેર કરી અને પરિચય લતાળ્યા હતા આપશ્રીની સંપ્રદાયમાં મોટી ખામી પડી છે તેની શોકદેખાર કર્યા હતા અને વેંધુવોએ અગિયારમાં જન્મ બરાઈ આપ્યાં હતાં બાદ આપ્યાં ગાયોને પાસ નાંખવામાં આવ્યું હતું અને સભા વિસર્જન થઈ હતી.

અભિનંદન—સુપ્રસિદ્ધ સાક્ષરવધ્ શ્રીયુત અંબાલાલ જુલાખીરામ ભની બી. એ. એએએ ‘શુભરાતી’ પત્રદ્વારા મહાશુભરાતની જે સેવા બાંધી, તેને પચાસ વર્ષ પૂર્ણ થાય છે. ‘શુભરાતી’ પત્રની મોટામોટ કાર્યકર્તાઓ, લોકપ્રિયતામાં શ્રીયુત ભનીજીને મદદન દીરસો છે. એક પત્રકાર તરીકે, એક સાહિત્યસેવક તરીકે અને ધર્મનિષ્ઠ તરીકે શ્રીયુત ભનીજીને અમારાં અનેક અભિનંદન છે અને તેઓના જીવનમાં મુલ્યમં મહોત્સવ ઉજવવાનો અવસર પ્રાપ્ત થયો એવી આંતર અભિલાષ સાથે મહાશુભરાતને અથવા એક વિદ્વાનને આ શુભ પ્રસંગે સત્કારવા નમ્ર વિનંતિ કરીએ છીએ.

નૂતનવર્ષાભિનંદન—નીચે નજીવેલા વિદ્વાનો, સાહિત્યરસજ્ઞો, વેંધુવોએ અમને નૂતન વર્ષાભિનંદન પાઠવ્યું છે જેને માટે અમે પૂર્ણ કૃતજ્ઞ છીએ:—૧. ‘શુભરાતી’ ના સંદર્ભની શ્રીયુત અંબાલાલ જુલાખીરામ ભની બી. એ., ૨. આસેતુદિમાચલ પંડિત મીમસાભૂષણ, વેદાંતવિચારક, મીસાસિક વગેરે વગેરે શા. શા. દરિયાકર મોનારજી સાક્ષી M. R. A. S. (મશીનાળા ગા. શ્રીમુરશીધરલાલજીના અને ગા. શ્રીમનલાલજી મદારાજ તથા ગા. શ્રીવશીભાચાર્યજી મદારાજના બૃતપૂર્વ સાક્ષી અને દાહમાં ગા. શ્રીઅનિલભાચાર્યજી મદારાજના સાક્ષી) ૩. પુરાણમૂલ્ય સાક્ષી નરનામ મીતીરામજી, ૪ રોડ લક્ષ્મીદાસ બીમજી મચ્છી, ૫. શા. શા. ગિરિધરલાલ જી સાહ, ૬. મંત્રી શ્રીગોપાલકૃષ્ણ બ્રહ્મચાર્યશ્રમ સિદ્ધપુર, ૭. મુખ્યાલ અમૃતલાલ ગિરિધરલાલ પંડ્યા, ૮. શા. શા. મોહનલાલ રવચંદ વેળીચંદ, ૯. શ્રીયુત પ્રમુશમ પ્રાગજી ઠાકર, ૧૦. રોડ સુંદરલાલ પ્રમુશમ મણીયા, ૧૧. કીર્તનીયાલ ધીરજલાલ બમરાનદાસ, ૧૨. શં. શા. મોહનલાલ લક્ષ્મીભાઈ સાહ, નડીયાદ, ૧૩. બમવદીય મીસી પ્રાગજીભાઈ નાનજીભાઈ, ૧૪. રોડ મણીલાલ મુનીલાલ, ૧૫. દેસાઈ ચંદુલાલ જોગજીલાલ ૧૬. શા. કાનિલાલ મનજીલાલ સાહ, ૧૭. શા. ધીરજલાલ જોગજીલાલ સાહ, ૧૮. રોડ ધરમસી કેલવજી મરચંદ, ૧૯. શા. શા. હોદાલાલ મનજીભાઈ.

નિરાધાર બાળકો માટે સારામાં સારો માગો કયા ?

તેમની સંભાળ લઈ, સારી રીતે ઉછેરી તેમને આદર્શ નાગરિક બનાવવાં તે. આ કામ બહુ ઉત્સાદથી

નડીઆદ હિન્દુ અનાથાશ્રમ

કરી રહ્યું છે. આવાં નિરાધાર બાળકો ઉપરાંત તબીબનાં બાળકો, નિરાધાર અરાકત અને અપંગ સ્ત્રી-પુરુષો વગેરેની સંભાળ લેવાનું કામ આજ વર્ષો થમાં આ સંસ્થા કરી રહી છે. આ સંસ્થાને તમે અને તેટલી મદદ કરો. રૂ. ૧ અને તેથી વધુ દાન આપનારના નામ વાર્ષિક રીપોર્ટમાં છપાય છે.

મંત્રી—હિન્દુ અનાથાશ્રમ નડીઆદ. (ગુજરાત)

શુણુનુવાદ કેમ ગાશો ? શુદ્ધ સંગીતનાં દિવ્ય કીર્તનો.

સારંગી, ખીન, દીલરૂખ, હાર્મોનીયમ વગેરે વાજીત્રોમાં સાંપ્રદાયિક કીર્તનો ઉતારવાનું આનું સાધન સંપ્રદાયમાં જોઈએ નથી. મંગળાચી શયન પર્યંતના મુખ્ય કીર્તનો, વધાઈ અને ધમાર એ બધાંનાં ૮૦ રાગોના ખાસ નોંટશોનો આજ અંથમાં છે. પખાવજ શિખનાર માટે તાલના બોલ પણ છાખ્યા છે, શુભરાતી ભાષામાં સવિસ્તર સમજણ પાડી છે. નોંધાવર બે રૂપીઆ, પોસ્ટેજ પાંચ આના.

ડે. ભગવાનદાસ નારાયણદાસ કોટડાવાળા.

સુ. ધંધુકા, (જી. અમદાવાદ.)

હિસ્ટરિયાદિ વાલરોગ દર્શન.

ખેાક ૩૦ હિસ્ટરિયા, મૂળી, ચકરી, ફેફસે, ગાડપણ અને બકવાદ રોગની અમેરીકન છોટો શોધ મુજબ પાશ્ચાત્ય, યુનાની અને આયુર્વેદિક સિદ્ધાંતો, સમજૂતી અને સાદા ઉપ-ચારોનું પુસ્તક વાચેથી ધણી રાહત મળશે. કીમન ૧-૪-૦ પો. જુડું, દેશીનામું. નવા અવધાર પ્રમાણે રચના ગા. શાળા માટે નવું મંજુર કી. ગા. પો. ૦)૨.

હિસ્ટરિયા રોગનીજ સમજાણ,

પેટ'ટ દવા વાયુમુક્તાજ છે. ઉપરના દરદેમાં ૨૪ કલાકમાં ફાપદો મળે છે! સિયોન, આફ્રિકા, ધરાન અને રંગેન સંધીના દરદેઓ વાપરી સુખી થયા છે. મેડીકલ સરજનો છુટથી મંગાવે છે. દવા મહિનાની, કીમત રૂ. ૫) પો. જુડું.

છગનલાલ લલ્લુભાઈ નાઆવાળા, પેલેસ રોડના નાકે—વડોદરા.

વીસમી સદીની નવીન શોધ

સંઘદણી (ગળણી) માટે અમૃતમય ઉપાય.

પ્રતિષ્ઠિત અને વિદ્વાન વૈદ્ય ડોક્ટરોની દવા આજ કંટાળેલા સંઘદણી (ગળતી), મુંઝામના ઝાડા, અતિસાર અને આતરડાના દામથી પીડાતા નિરાશાજનક દર્દીને આશીર્વાદરૂપ મધ પટેલી ત્રીસ વરસના અનુભવની સમજાણ દવા માટે રૂબરૂ મળેા યા સવાલપત્ર મંગાવો. પત્રબ્યવહાર નીચેના સરનામે કરવો:—

માસ્તર કે. જી. પટેલ એન્ડ સન્સ, રમ્પે રપેરીઆલીસ્ટ—માણસાવાળા.

જો મેળાય—દર રજિવારે, અમદાવાદ—કાલુપુર હાડીપરાની પોળમાં તંજુગરાની

મહડી ધર નં. ૪૫૬.

આમાં જીલાનંદ બચ્ચાઓને હૃદય પુષ્ટ આનંદી અને સુંદર બનાવે છે. કી. ૦-૧૨-૦ પો. જુડું.

પ્રશ્ન ૨૨૦—એકાંતિક લક્ષ્મી કોને કહિયે ?

ઉત્તર—જેને શ્રીહરિ વિના બીજી કોઈ પણ પ્રકારની વાસના કદિ સ્વપ્નાદિકમાં પણ નથી થતી તે પોતાને શ્રીહરિના અંશાંશ વિભૂતિ દાસરૂપ માનીને જે પરબ્રહ્મની ભક્તિ કરતો હોય તેને એકાંતિક લક્ષ્મી જાણવો.

પ્રશ્ન ૨૨૧—વિવેકી હર્મિલક્ષ્મીમાં શાં લક્ષણો હોય ?

ઉત્તર—સત્ય, અસત્ય, સાર અસાર, નિત્ય અનિત્યને જાણતો, પોતાના અવ-ગુણોને પોતે જાણી તેના વિચાર કરી તેને સારી રીતે ત્યાગ કરતો હોય, બીજા મહાન પુરુષોમાં સદા ગુણજ દેખે ને ગુણભાવને શ્રદ્ધા કરે, નિરંતર પોતામાંજ અવગુણ જુએ, પરબ્રહ્મને સદા નિર્દોષ જાણી તેમની સર્વ લીલા જન્મ કર્મ અસ્તિ-દિવ્ય પ્રભુવત્ નિર્દોષ જાણે, શ્રીહરિ અને મહાપુરુષ ધર્માચાર્યો જે જે હિતકારી વચન કહે તે સર્વ પરમ સત્ય હિતકારી ગણી, પરંપૂર્ણ સ્નેહયુક્ત શ્રદ્ધા કરી, તદ્વત્ વતે, તેમાં લેશ માત્ર સંશય ન રાખે, દેહાદિક પ્રપંચ અહંતા મંમતાથી સદા દૂર રહે, પોતાને જાંબન થાય એવું કોઈ પણ કંઈ નહિ, લગવદ્-ધર્મમાં પ્રતિબંધ કરનારા પદાર્થો ને અસત્સંગતિ તેને મન કર્મ વચને ત્યાગ કરી હંમેશાં શરણ અને સીધો વિચાર હોય તેનેજ અનુસરે.

પ્રશ્ન ૨૨૨—પ્રભુ પ્રસન્ન થવાનાં સાધન કીધાં ?

ઉત્તર—સ્વધર્મયુક્ત થઈ પ્રભુનું યથાર્થ માહાત્મ્ય જાણીને પ્રેમપુરઃસર ધર્મ જ્ઞાન વંશાચ્ચ ભક્તિ સત્સંગતિમાં દૈવ ચુસ્તપણે સર્વથી અધિક સ્નેહ રાખે અને સદા સર્વદા (સર્વકાળે સર્વ ક્રિયા કરતાં) અખંડિત શ્રીભગવાનના સ્વરૂપમાંજ વૃત્તિ રાખી ભજન કીર્તન સ્મરણમાં તો અવરથ કરીને પ્રભુની સ્મૃતિ ક્ષણે ક્ષણે રાખવી.

પ્રશ્ન ૨૨૩—કયાં વાસનાને બીજરૂપ જન્મ લેવાના કારણરૂપ માનવી ?

ઉત્તર—અનેક સંકલ્પવિકલ્પો થાય તેમાંથી જે દૈવ નિશ્ચયાત્મકપણાની વાસના કે જે ટાળી ટાળી શકાય નહીં એવી મજબુત અંધિરૂપ ગંધાઈ જાય છે તે જરૂર અંતકાળે મતિમાં સજ્જડ ક્ષેત્રી સ્કુન્ધમાન થઈ આવેજ, ને તે દૈવાસનાએ કરીને અંતકાળે થયેલી મતિ પ્રમાણે ગતિ થાયજ.

પ્રશ્ન ૨૨૪—અંતકાળે (મરણસમયે) વાસના ન રહે આવા ઉપાયની શી સુક્તિ ?

ઉત્તર—અહંતામંમતારૂપ સંસાર (પ્રપંચ) ની નિવૃત્તિ જનક વિદેહીની માફક સર્વ કાર્ય કરતા છતાં હું અને મહાઈ એ ગ્રેધી રહિત થાય. પરમાર્થનેજ સ્વાધર્મરૂપ જાણે. પ્રાપ્ત થયે હવે ન હોય ને વિયોગ થયે કદ ન થાય. એવી રીતે ગૃહસ્થાશ્રમમાં રહ્યા છતાં વતે ને સર્વમાં કાર્યમાં તથા કારણાદિમાં એક પરમાત્માનેજ જાણે તો વાસનાથી રહિત થવાયજ.

પ્રશ્ન ૨૨૫—અમુક મનુષ્ય સુધર્મી છે એમ શી રીતે જાણાય ?

ઉ. ૨—જે સ્વતઃ પોતે સદાચાર પાળી, સ્વધર્મયુક્ત રહી, પ્રભુને ઉપાસે તે તો પ્રત્યક્ષ રીતે સુધર્મી સમજી શકાય તેમ છે. પણ જેનાથી તે પ્રમાણે કદાચ આચરાય

નહિ તો પણ જે કોઇ સુધર્મનું આચરણ કરતા તેને વિષેજ પેલાનું નિરંતર વહાલ પૂણે રહેલાનું જણાતું હોય એટલે તે એવું બંધુ જે મહારાથી તો સદોદિત તેમના જેવું વર્તન થતું નથી, પણ એ સુધર્મને બહુજ આરી રીતે સંભાળીને પાળે છે, આ પ્રમાણે સુધર્મી ઉપર વહાલ રાખે છે કે સુધર્મ પાળનારની પ્રશંસા કરે છે તે પણ સુધર્મીની કોટિમાંજ ઉત્તમ પ્રતિભા થઇ જશે, કેમકે પોતે પોતાથી સુધર્મ ન પળાયાનું હીનપણું માની સુધર્મ પાળનારના ધર્મ ઉપર જેને અંતઃકરણથી વહાલ છે.

પ્રશ્ન ૨૨૬—ગુરુ કોને કહેવા ?

ઉત્તર—તત્ત્વવેત્તા અસ્તાં પ્રાણિમાત્રનું ઉત્તમ હિત કરવાને નિરંતરે તત્પર રહેતા હોય તેમને.

પ્રશ્ન ૨૨૭—મનુષ્યત્વે પથ્ય રૂપ તે શું છે ?

ઉત્તર—સ્વધર્મયુક્ત ભક્તિનિષ્ઠ સદાચાર.

પ્રશ્ન ૨૨૮—પવિત્ર કોણ ?

ઉત્તર—શાશ્વત્તુદ્ધિ પૂર્વક જેનું અંતઃકરણ નિર્મળ (શુદ્ધ) વર્તનનું હોય તે.

પ્રશ્ન ૨૨૯—પંડિત કોણ ?

ઉત્તર—સુબુદ્ધિવાળો વિચારશીલ પુરુષ.

પ્રશ્ન ૨૩૦—મહોદો ભય કોનો ?

ઉત્તર—જન્મમરણાદિ સંસારિ આલુ છે, તેને મટાડનાર સર્વોધીશ કાળના કાળરૂપ પ્રભુની આજ્ઞા કે મર્યાદા ન પળાય તેનો.

પ્રશ્ન ૨૩૧—શરો કોને ભણવો ?

ઉત્તર—જેણે અંતરના પડ રિપુને ઝીટ્યા છે, અને તીવ્ર વેરાગ્યયુક્ત છે, અને અનેક પ્રકારની આપત્તિ આવ્યા છતાં ભગવદ્ધર્મકાર્યમાં જે લેશ માત્ર પણ ભોળો પડતો નથી તે.

પ્રશ્ન ૨૩૨—ભગૃત કોને ભણવો ?

ઉત્તર—સદા સારાસાર નિત્યાનિત્યનો વિવેક તારતમ્યપૂર્વક ઉત્તમ સારનેજ ઝોળે છે, ને તે શ્રેષ્ઠસારરૂપ માર્ગ અનુસારે જે નિરંતર વર્તે છે તે.

પ્રશ્ન ૨૩૩—શ્રવણ કરવા યોગ્ય શું છે ?

ઉત્તર—જેણે કરીને સંસારની અહંતામમતાનો પ્રપચ ટળી અખંડ પૂર્ણ પરમાનંદ પુરુષોત્તમનું યથાર્થ માહાત્મ્યજ્ઞાનપૂર્વક સારી રીતે હૃદ અને અચળ શુદ્ધ નિષ્કામ સ્નેહ પરબ્રહ્મ વિષે ઉત્તમ પ્રકારે ધ્યાય એવો મહુપદેશ.

પ્રશ્ન ૨૩૪—નિદ્રાસ્થ કોને બહુવો ?

ઉત્તર—જે નિત્યાનિત્ય સારાસારને ન સમજે એવો મૂર્ખજન.

પ્રશ્ન ૨૩૫—અંચળ શું છે ?

ઉત્તર—તારુણ્ય, મંપત્તિ, આયુષ્ય અને મન; ક્રીટથી આરંભીને તે બ્રહ્માણી

પ્રશ્ન ૨૩૬—ઉત્તમ અલંકાર કીયો ?

ઉત્તર—સુશીલપણાંથી સુકન સત્ વિદ્યા (બ્રહ્મવિદ્યા) ના જ્ઞાનપૂર્વક મહેબુલુરૂપી આભરણનેજ ધારણ કરે છે તે.

પ્રશ્ન ૨૩૭—પક્ષ કેની કરવી ?

ઉત્તર—ધર્મન્યાય માર્ગની.

પ્રશ્ન ૨૩૮—જય, પરાલવ (પરાજય) વિષે શી રીતે સમજાવ કરવી ?

ઉત્તર—ન્યાયમાર્ગે કદાચ પરાલવ (પરાજય) થાય તે તો બહેતર પક્ષ અન્યાયે (અધર્મમાર્ગે) કરીને જય મેળવવાની ઇચ્છા ન રાખવી. પરાપકાર કરતાં કદાચ દુઃખ આવી પડે તો વિચારે કરીને આનંદ માનવો.

પ્રશ્ન ૨૩૯—સદાચરણ પ્રાપ્ત થવાને શું કરવું ?

ઉત્તર—મત્પુરુષો પાસેથી સુશિક્ષણ લેવું.

પ્રશ્ન ૨૪૦—જગતમાં મનુષ્યે જન્મીને શું સદા કરવું ને શું ન કરવું ?

ઉત્તર—પોતાને અને સર્વને ઉત્પન્ન કરનાર જગદીશસંબંધી પૂર્ણ જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરીને તેમની કીર્તિ પ્રતિપાદક ભક્તિ સંબંધી પ્રાર્થનાદિક ગુણગાન કરતા રહેવું અને જે બાબત અચ્છ સર્વસારમય અને સકળ સુખની સીમારૂપ અવિનાશી ન હોય તેની કદી પણ વાંછના ન કરવી.

પ્રશ્ન ૨૪૧—અત્યંત અલભ્ય (દુર્લભ) અપ્રાપ્ય વસ્તુની પણ શું કરવાથી મંદ પ્રાપ્તિ થાય ?

ઉત્તર—સદા સર્વદા સ્વતંત્ર અને સંપૂર્ણ મત્તાધીશ પરબ્રહ્મ પરમાત્માની કૃપાથી ગમે તેવી અસાધ્ય દુઃપ્રાપ્ય હોય એવું સકળ સાહિત્ય અનાયાસ અને અદ્ય સમયમાં શીઘ્ર પ્રાપ્ત થાય છે.

પ્રશ્ન ૨૪૨—પરમેશ્વર તરફથી જેને જેને શિક્ષા કરવામાં આવે છે તે તે પ્રભુને કૂર વા સદોષ વા વિષમ દોષલાવની બુદ્ધિવાળા માને છે તે યોગ્ય ગણાય કે ?

ઉત્તર—ના, સર્વને સન્માર્ગવર્તી કરવાને માટે અને તેના ઉપર પરમાત્મચક્ર કરવાને આટું પરમહિતાયે સદા નિર્દોષ બુદ્ધિથી પરમ દયાળુપણે નિરંતર કાયમ રાખીને તેના હિતનેજ અર્થે પ્રભુ કરે છે.

પ્રશ્ન ૨૪૩—દરેકજ નિત્યનિયમપૂર્વક કઈ કઈ બાબતનો વિચાર કરવો ?

ઉત્તર—હું કોણ છું ? મને શા આટું જગતકર્તાએ અલ્પ છે ? હું શું કરું છું ? આજે મહારે હાથે કાંઈ પણ પાપાચરણું કૃત્ય બન્યું છે કે મહારે કર્તવ્ય કર્મ આવશ્યક ધર્મરૂપ ફરજનું સુકથી કરવું રહ્યું છે કે કેમ ? બુદ્ધિપૂર્વક ને એકાદ કર્તવ્ય કર્મ ત્યાગ કર્યું છે કે શું ?

પ્રશ્ન ૨૪૪—ગૃહસ્થાશ્રમમાં કેવી રીતે વર્તીએ તો પરમાર્થ સધાય ?

ઉત્તર—સુધાર લોકોનો વાંસુલો રહો ને કેરવત તે સર્વ કોએ ભયં હશે. પણ તેની કૃતિ ઉપર વિચાર કરીને ધ્યાન આપનારા યોગી જનો હોય છે. (૧)

વાંસલાની કૃતિ કેવળ સ્વાર્થપરાયણજ હોય છે. સર્વ કાંઈ છોત્તેલું પોતાના જોના-
માંજ જોયી લે છે. તેમ સર્વ કાંઈ સ્વાર્થ અને કુદ્દગીનું જ પોષણ કરવું
એટલુંજ સમજે છે તેવી કૃતિ ન કરવી, (૨) રહેા સર્વ ગહાર આપી દે છે તેમ
પણ ન કરવું. (૩) જેવી રીતે કરવત ખન્ને ગાળુ તરફ સરણુ નાખે છે, તેવી રીતે
કુદ્દગનું પોષણ પણ કરવું ને કુદ્દગ વરામાં પરોપકાર રૂપ ધર્મવરો (ખર્ચ) પણ
કરવો. આથી કરીને ગૃહસ્થાશ્રમમાં રહ્યા છતાં પોષ્ય વર્ગનું પોષણ કરીને, પ્રદ-
્યારી, સંન્યાસી, સંત સાધુ, આચાર્યોદિતું પણ તન મન અને ધને કરીને સન્માન કરવું.

પ્રશ્ન ૨૪૫—કઈ કઈ વસ્તુની શુદ્ધતા રાખવાની જરૂર છે ?

ઉત્તર—ગાદ્યોપચારિક સર્વ પદાર્થો તથા શરીર અને આંતઃકરણ (મન) એ
૩ વસ્તુ સદા પવિત્ર રાખવી.

પ્રશ્ન ૨૪૬—સચરાચર વાસુદેવ શી રીતે જાણીને વર્તાવું ?

ઉત્તર—સમગ્ર જગતને ઇશ્વરના અંશરૂપ વિભૂતિ જાણી પ્રભુથી પૃથક કોઈને
પણ ન જાણવા. જે પ્રમાણે આપણને ટાઢ તડકો સુખદુઃખાદે લાગે છે એજ
પ્રમાણે સર્વે પ્રાણિમાત્રને થતુંજ હશે એમ જાણી કોઈ પણ પ્રાણીને ન, દુલવવાં.
તથા પોતાથી બને તેટલું યથાસંપત્ શક્તિ અતુસારે પરગણુ (પરમાર્થ) પણ રાખવું.

પ્રશ્ન ૨૪૭—કેવું બોલવું અને કિયું ન બોલવું ?

ઉત્તર—સદા સત્ય, પ્રિય અને હિતકર લાપણુ કરવું. લગવતનામસ્મરણ કરવું,
પરમાર્થરૂપની સર્વ સત્કૃતિ થવા અર્થે લગવતસંબંધ જોડાયેલી ગાખતોમાં બોલવું.
આમ્યવાતાં ન કરવી. અસત્ય, અપ્રિય ને અહિતકારક કડવું કે મર્મસ્થાન લેદાય
તેણું વક લાપણુ કે અપશબ્દથી ન બોલવું.

પ્રશ્ન ૨૪૮—ગૃહસ્થાશ્રમ સાર્થક ક્યારે ગણાય ?

ઉત્તર—ગૃહસ્થાશ્રમ કેવળ લગવતસેવા સધાય અને આતિથ્યનો સંસ્કાર થાય.
દેવ ઋણ, મનુષ્ય ઋણ, પિતૃ ઋણથી મુક્ત થવાય તે માટે શ્રીહરિને સર્વોત્ત-
મિવેદનપૂર્વક લગવત શરણાગતિ એ લગવત્કાર્ય સાધી શકેમ તોજ તે સાર્થક.
રૂપ સાધ્ય શુણાય. ને તેથી વિપર્યય (ઉલટું) થાય તો બાધક થઈ પડે. ગૃહ-
સ્થાશ્રમમાં રહ્યા છતાં તેમાં અહંતામમતારૂપ પ્રાપ્ત્યેક આસક્તિ ન હોય ને જનક
વિદેહી જેવું જળકમળવત્ રહેવાય ત્યારે તો તે બાધક ન થાય. પણ જો અહંતા-
મમતાયુક્ત રહે ત્યારે તો તેને ગૃહસ્થાશ્રમ બાધક થાયજ.

પ્રશ્ન ૨૪૯—પંડિત કોણ ?

ઉત્તર—જેમાં અપાર વિદ્યા છતાં તેનો રત્ય માન પણ ગર્વ ન હોય તે.

પ્રશ્ન ૨૫૦—જ્ઞાની કોણ ? ઉત્તર—જેને સર્વ સમજાયું હોય તે.

પ્રશ્ન ૨૫૧—તપસ્વી કોણ ?

ઉત્તર—જેને કદી પણ કોઈ પણ પ્રકારનો સંતોષ ન હોય તે.

પ્રશ્ન ૨૫૨—યોગી કોણ ? ઉત્તર—જેણે હુવાંનનાને જીતેલી છે તે.

પ્રશ્ન ૨૫૩—શ્રેષ્ઠ કોણ ?

ઉ ૨ ધર્મ ન્યાયને અનુસરીને યોજનારા ઉપરાંત તે પ્રમાણે વર્તન હોય તે.

પ્રશ્ન ૨૫૪—કીર્તિ કંથી ?

ઉત્તર—શ્રીભગવાનનો જ્ઞાની ભક્તજન એવો થાય કે જે સાંભળીને સત્પુરુષને પણ શીસ હલાવવું પડે, તેવા પુરુષને ધન્ય છે.

પ્રશ્ન ૨૫૫—પુણ્યવાન કોણ ?

ઉત્તર—પરોપકારજ જેને સદા પ્રિય છે એવી કૃતિવાળો.

પ્રશ્ન ૨૫૬—ધનવાન કોણ ?

ઉત્તર—દીન માણસને યથાશક્તિ સમજ અનુસારે મદદ કરે તે.

પ્રશ્ન ૨૫૭—મોટો કોણ ?

ઉત્તર—પારકું હુઁખ જાણીને તેને પોતાની શક્તિ પ્રમાણે કષ્ટમાંથી મુક્ત કરે તે.

પ્રશ્ન ૨૫૮—સર્વમાં આશક્તિ ઉઠાડી દેઈ ભગવાન ઉપરજ પ્રીતિ આશક્તિ કરવાનું શું કારણ ?

ઉ ૨—સંસાર અસારરૂપ છે. માથેક પદાર્થોમાં અહંતામમતા રાખવાથી જન્મમરણરૂપ સંસૃતિના જંધનપણને પમાય છે. સંસારમાં વાસ્તવિક રીતે કંઈ પણ સુખ છેજ નહિ. સુખરૂપ લાસે છે એજ માયા છે. ક્યોએ એ કાંઈ છે કે મહારા આગળ અનેક પ્રદાનો પણ લય થયો. એટલી મુદ્દતનો હું ચિરજીવી જેવો છતાં મેં તો સર્વત્ર હુઁખ હુઁખ ને હુઁખજ જોયું છે. જે સુખ હુદ્દ વળી જેમાં અનેક પ્રકારના અનંત હુઁખો ભેડાયલાં હોય છે, તેને સાચું સુખજ કેમ કહેવાય ? યદ્યપિ ૧૪ ચોક લોક પર્યંતનું સુખ ભૂતળ કરતાં અધિકાધિક વૈભવ ભોગ સગાદિનું કહેવાય છે. તથાપિ તે પણ માયાવેષિત છે. માટે હુદ્દ ને નાશવંત જાણી તેને વિષે પણ આશક્તિ ન રાખવી. કલિયુગમાંજ નહિ પણ સર્વ યુગમાં નિર્ભય સ્થાન તો એક અખંડાનંદ પ્રદનુંજ સર્વ સત્પુરુષોએ નિર્ધાર કરેલું છે કેમકે તેજ એક નિર્ભય સ્થાન છે. તે સિવાય સર્વત્ર હુઁખ ઉપદ્રવ ભય હાનિ વા ગણિત અસ્થાનંદ ને પતન થવાના ભયવાળું અસાર રૂપનું છે. માટે સુમુક્ત જને નિર્ભય પરમાનંદ પદમાંજ ૧ સર્વ પ્રકારે સ્નેહાશક્તિ જોડવાની છે.

પ્રશ્ન ૨૫૯—કીયું કામ સર્વ વહું ને સર્વ આશ્રમીએ કરવું જરૂરનું છે ?

ઉત્તર—શ્રીમૂલાચાર્ય પરબ્રહ્મથી આરંભીને શ્રીસદચરુ પર્યંતને વંદન નમન સેવન કરી, તેમના કૃપાપાત્ર પરમ વૈષ્ણવોનું પણ તેજ પ્રમાણે પ્રીતિભક્તિપૂર્વક સર્વ પ્રકારે સન્માન કરવું એ અવશ્ય કર્તવ્ય છે.

પ્રશ્ન ૨૬૦—ભગવત્પ્રી પ્રાપ્તિનું મૂળ શું છે ?

ઉ ૨—સત્પુરુષનો સદા સત્સંગ કરવો અને અસત્ પુરુષથી દૂર રહેવું એજ મુખ્ય ઉપાયે કરીને ભગવન્નાર્ગ જણાઈ તેથી અજ્ઞાન ટળી જ્ઞાનભક્તિ પ્રાપ્ત થાય છે.

પ્રશ્ન ૨૬૧—સંતુરુપ કે અસંતુરુપ કેમ ઓળખાય ?

ઉત્તર—પરોપકાર કરવામાં પ્રીતિ ને નમ્ર ડોમળ વાણી હોય ને પરમ પ્રીતિ શ્રીલગવાન ઉપર હોય તેને સંતુરુપ કહેવા ને નિર્દય ને કેવળ આપ સ્વાર્થી હોય ને લગવાનથી વિમુખ હોય તેને અસંતુરુપ કહેવા.

પ્રશ્ન ૨૬૨—મોટામતાનો નાશ ક્રિયા ક્રિયા કારણથી થાય છે ?

ઉત્તર—પોતાની મેળે પોતાની પ્રસંસા (વખાણ) કરે ને અન્યની નિંદા કરે ને વગર પ્રયોજને બહાર વગર અસત્ય કે મિથ્યા ભાષણ કરે કે કંઈ અપ્રિય બોલે તેણે કરીને મોટામતાનો અસ્ત થઈ જાય છે.

પ્રશ્ન ૨૬૩—સંસારમાં ઘણા પ્રસંગોએ ઘણા માણસો જીંદ જીંદ કહે છે તેમાંથી સાર રૂપ કીયું વચન ગ્રાહ્ય કરવું ?

ઉત્તર—કેવળ સંસારાસક્ત જનોનું ટોળું જાડું મોટું હોય પણ તે જ્ઞાનથી રહિત હોય તો તો તે મૂર્ખોના જીંદનું વચન પણ લ્યાગ કરવું ને જ્ઞાની વિવેકી સંતુરુપ કદાચ એકાદ હોય તોપણ તેનું વચનજ પરમાર્થતત્ત્વનું સ્વીકારવું, કેમકે લક્ષાવધિ મૂર્ખોથી કંઈ શાણપણું ન આવે, ને જ્ઞાની તત્ત્વદર્શી વિવેકી પુરુષનોજ સંતોગ કરવો.

પ્રશ્ન ૨૬૪—સંસારમાં સુખી શી રીતે વત્યાથી રહેવાય ?

ઉત્તર—ધર્મ ન્યાય નીતિએ કરીને દ્રવ્યોપાજ્ઞન કરવું, ધર્મે કરીનેજ અર્થ સાધવો, તે અર્થ સાધવામાં સુખ્યત્વે પરમાર્થનેજ શ્રેયસ્કર બાણવોઃ વિવેક દેરાએ કરીને આમકામ (સંતોષી થવું) સંતોષે કરીને પૂર્ણ કામનો લાભ થાય છે. અર્થાત મોક્ષાદિનો શ્રેષ્ઠ સ્વાર્થ આમકામ યથા વજર સધાતો નથી. ન્યાય લગી કુદ્ર પંચ માસિક વિષય પર લાલચ રૂપ તૃષ્ણા હોય ત્યાં સુખી પરમ પદના સુખની આશા રાખવી નિષ્ફળ છે.

પ્રશ્ન ૨૬૫—વાણીનો ઉચ્ચાર શી બાળતમાં કરવો ?

ઉત્તર—લગવદ્ધર્મસંબંધી કાર્યોમાં તથા લગવત્તામસંકીર્તનાદિમાં કરવો. અથવા પરોપકારાર્થે પ્રીતિપૂર્વક મૃદુ વાણી સ્પષ્ટ સત્ય ને સર્વના હિતકરપણાની બોલવી.

પ્રશ્ન ૨૬૬—આપતકાળે હુઃખાદિ સમયે શું કરવું.

ઉત્તર—ધૈર્ય અને સહનશીલતા રાખી સર્વને સુખદાતા શ્રીહરિની ઈચ્છા વાણી પુરુષોત્તમને અનન્યચરણાગત સર્વોત્તમનિવેદન કરવું.

પ્રશ્ન ૨૬૭—સદા સર્વદ્ર સુખ્ય ધર્મ ક્રિયા બળવવો ?

ઉત્તર—પરમ ધર્મ તો શ્રીપરબ્રહ્મની ભક્તિજ છે, તથાપિ પરોપકાર, દયા-કૃપિ એ યથાશક્તિ પ્રમાણે વાણી માત્રનું ઉત્તમ હિત થાયે તેમ કરવું.

પ્રશ્ન ૨૬૮—સુસુદુ જને સાર સિદ્ધાંત શો ગ્રહણ કરવો ?

ઉત્તર—સદ્ગુરુની જે-જે આજ્ઞા રૂપી વચનો નીકળ્યાં હોય તે સર્વ.

પ્રશ્ન ૨૨૬—આગ કરવા યોગ્ય શું ?

ઉત્તર—જે કરવાને યોગ્ય તેવું અવિદિત નિયંત્રણરૂપે આગ કરવું.

પ્રશ્ન ૨૭૦—હાના, ધર્મ, અહનશીલતા ધેર્યપણે રાખવાનું શું કામ છે ?

ઉત્તર—કોઈક અસહ્ય વચન મર્મસ્થાન બોધાય એવું કંઈક કુવેણ કહે છે નિંદા કરે યા તિરસ્કાર કરે કે તાડન કરે કે દુઃખ દે તો પણ તે રાહન કરવું, પણ તેના સામે કોઈ ન કરવો અને તેનું પણ બહું થાય એમ ઇચ્છવું એ સુખ ચતુરુપે રાખે છે. તેમાં હેતુ એ સમાયક્ષો છે કે જે નિંદક જન કે દુઃખ દેનાર જન કે અપરાધથી ખોટું ભાવણ કરનાર જન તેની કુદૃતિથી હણાયલા જેવો જ છે. તે નીચ ગતિ બોગવીજ રહેલો છે. ત્યારે એવા હણાયલા જનને વિશેષ દળવો એ સાધુ પુરુષોને ન ધાળે. વળી નિંદા તિરસ્કાર કે અપરાધ કરવાથી તે જન પેલા ચતુરુપથી જે કંઈ અધર્મોદિક આચરણરૂપ દોષારૂપ કૃતિ થઈ હોય તે નિવૃત્ત થઈ કાળ તે અહિંત કરનારને થાય, વિભાગી થઈ ભોગવવું પડે છે, અને ચતુરુપે ચાલન કરી લેવાથી રાહન કરનારના જે કોષાદિક હુણ્ણો તે પેલા તિરસ્કાર કરનાર અસત્પુરુષને બાળી નાખવા રૂપ થાય છે. એટલું જ નહિ, તે તિરસ્કાર કે નિંદાદિક કરનારનું સર્વ સુકૃત્યકર્મ પણ તેજ રાણે હણાઈ જાય છે. માટે અપકાર કરનારને પણ સામે પ્રત્યુપકાર ન કરવો, પરંતુ તે અપકાર કરનારા જનો પુનઃ કોઈ ચાચે એવું ન વર્તે તે આરંભે તેમાં સુગુણ આવવા આરંભે શ્રીભગવાનની પ્રાર્થના કરવી. અને પોતાથી અને ત્યાં સુધી પોતાની અપેક્ષા સક્તિ અનુચાર તનમન અને ધનથી તેનું હિત થવાને સદા પ્રવર્તાવું. આ પ્રમાણે કરવાથી ભગવદ્ભક્તમાં શ્રીભગવાનના સુહૃદ પ્રવેશે છે. આવું હ્રમાધર્મમાં ભ્રેષ્ઠ કાળ અપાયકું છે અને આવા પુરુષો તે દેવોને પણ માન્ય કરવા યોગ્ય ગણાય છે.

જે ચતુરુપે ક્ષતિ કરવાથી હર્ષને પામતો નથી, અને નિંદા કરવાથી ઉદ્વેગને પામતો નથી અને સદા દ્વેષપ્રપંચથી રહિત રહે છે, તે ચતુરુપેનો આદર સર્વ કોઈ કરે છે અને તે સદા નિર્ભય રહે છે. હ્રમાધર્મ અર્થને ચોલાવૃદ્ધિકારક છે. અને અસમર્થને સુખકારી છે.

પ્રશ્ન ૨૭૧—અચત્ પદાર્થને વિષે વાસના કેમ બંધાઈ જાય છે અને તે કયો ઉપાય કરવાથી ટળે ?

ઉત્તર—વાસના ઉદ્ભવ થવાનું કારણ મનની રુચિના સંકલ્પરૂપ મનોરથ છે. પણ જનમથી લાગેલા અધ્યાયથી વાસના જડીત થઈ જાય છે. જેને નિત્ય નિત્ય પદાર્થનો વિવેક અત્તાને કરીને હોતો નથી તેવા જનને અચત્ પદાર્થને વિશે મોહાસક્તિ થઈ વાસનાનું મૂળ બંધાય છે, સુવોને, સોભરી ઋષિ યરખાને તમ વ્યવન ઋષિને સ્પર્શ શરીર કરીને તો વાસના જણાતી ન હતી, પરંતુ અંતરમ વાસના હતી, જેથી બન્ને તથા વંદાવી બન્ને પરસ્પર હતા. જે સારાસાર અને

નિત્યાનિત્ય પદાર્થને યથાર્થ રીતે સમજે અને તેનો અર્થ, રીતે અંતઃકરણના સાચા વશગતે કરીને ત્યાગ કરે અને નિરંતર છાતું ચિંતન જનન સમજી ધ્યાન બાહ્યાં-બ્યંતર સર્વત્ર પ્રદાદદિની મત રાખે તો સદજમાં તે વાસના નિર્મૂલ થઈ જાય. જેહને નિત્ય પદાર્થનું અને ઉત્કૃષ્ટ સાર પદાર્થનું અવિચ્છિન્ન જ્ઞાન છે અને જે સદા સત્પુરુષોની સંગતિમાંજ રહી અત્પુરુષોના પ્રસંગથી દૂર રહે છે, તેને માયિક પાંચ વિષયની સર્વ વાસના સ્વપ્ને પણ ઉદ્ભવતી નથી. જેની વાસના અંતઃકરણમાં બંધુ તરીકે જડાયલી નથી તેવા જનની મલિન વાસના તો સત્પુરુષનાં સમાગમે કરીને જ્ઞાન પ્રાપ્ત થતાં તરતજ નિવૃત્ત થઈ શકે છે. દૃષ્ટાંત (૧) જેમ પક્ષીઓ ઈંડા મુકે છે તે ઈંડાં જ્યાં સુધી કાચાં હોય ને તે પક્ષી જાય તો તરતજ તે ફેટી જાય ને તેમાંનું પાણી બહાર સર્વી જાય. પરંતુ જે ઈંડુ કાંઈક આકાર રૂપનું પાકુ થઈ ગયું હોય ને તે જો કોઈ ફેડે તો તેમાંથી બધું નિસરે કેમકે તેમાં ઈંડાં મુકનારની આકૃતિ બધાઈ ગયેલી હોય છે. માટે જડીત વાસના રૂપનું ઈંડુ આકારવાળું સમજવું અને કાંઈક વાસનાવાળા રૂપનું ઈંડુ તો કાચું સમજવું.

પ્રશ્ન ૨૭૨—અખંડ વૃત્તિ લગવાનમાં રહે તેનાં કાંઈક દૃષ્ટાંત કહો ?

ઉ ૨—જે પ્રમાણે નદીઓ નાળા વગેરે જળાશયોમાં મેળવું, અદુર પાણી આવ્યાં છતાં તેનો કાંઈ પણ ભાર તે નદી પોતાના વિષે ન રાખતાં પોતાના પતિ સમુદ્રને મળવાને આજે કેટલા બધા તીવ્ર વેગથી વહન અહનિશ કર્યા કરે છે, તેને રોકવા માટે વચમાં મહોટાં મહોટાં વૃક્ષો અને પહાડ પથ્થર વગેરે પ્રતિબંધ કરે છે, તથા પે તેથી ન રોકાતાં તે જાડ પહાડ પથ્થર આદિનાં રોક્યાં ન રોકાતાં તેને તોડી ફેંદીને માર્ગ પાડીને પોતાના ધારેલા નિશાને પોતાના સ્વછેદ સમુદ્ર તરફ પહોંચવાને માટે સદા આતુર રહે છે, તેમ શ્રીલગવાન અપણુ સર્વેના સ્વામી છે, તેમના મિલનને માટે ચોપ ગણવી. (૨) જેમ વરકન્યા હોય ને તેમના માતા પિતા તે તો જુદે જુદે દૂર વસતાં હોય તોપણ જો બન્નેની અખંડ સ્મૃતિ પરસ્પરમાં કેટલા બધા સ્નેહથી પ્રોવાયલી રહે છે. ભલે તે વેગળે છે તથાપિ અને તે પોતપોતાનાં અન્ય સર્વ કાર્યો કરે છે તથાપિ નિઃસીમસ્નેહ સહિતની મનોવૃત્તિ તે તો અરસપરસ એકમેકમાં કેવી રીતે જોડાયલી રહે છે જો દૃષ્ટાંતના સિદ્ધાંતે પ્રાણાધિક પ્રિયશ્રી પુરુષોત્તમને વિષે અખંડ સ્નેહ વૃત્તિ સર્વ કરતાં અધિક સંહોદિત રાખવી.

હૃદા—જલમેં ખસે કુમાદિની, ચંદા ખસત અકાસ;

જો જા કે મન ખસે, સો તારી કે પાસ.

શ્રીમજ્જલ્લ સુખ્ય શ્રીગોપીજનોની સ્થિતિ વિચારો કે જુઓ. પ્રભુએ મધ્ય રાત્રે વેણુનાદ કર્યો, તો તે શ્રવણ કરતાં માત્રમાં પોતાના સર્વ પતિ પુત્રાદિકના સુખ ભોગરાગ ઐશ્વર્યોદિ પદ જૂવણ વસ્ત્રાલંકારનું કાંઈપણ લાન ન રહેતાં માયિક સર્વ બાધકરૂપ ઉપાધિનો ત્યાગ તત્ક્ષણ કરી કોઈની લેશ માત્ર પણ પરવા કે

મયોદ ન રાખનાં અર્થ રાત્રિએ જે જેવી સ્થિતિમાં હતાં તે તેવીજ સ્થિતિમાં ઉઠી દોડીને ગયાં. કોઈનાં રોક્યાં ન રોકાયાં, અને ત્યાં પ્રભુની સમીપમાં પણ બોલ્યાં કે—સંત્યજ્ય સર્વવિપયાન્. ન સત્ત્વ ગોપંકાઠ સન્મનમ્દાસદાચવાઃ એવી ગતિ થઈ ગઈ હતી. હાંત ઇંદ્ર અને ચંદ્ર જ ને જલ્દીએ પેતાનાં ગુરુ શૃંગરપતેનાં પત્ની (ગુરુપત્ની કે જે માતારૂપ થાય) તેમની સાથે ગમન કર્યું (૫) વ્યવન ઋષિ એટલા બધા સમર્થ હતા કે બીજાના દેહની નાડીઓને પણ બધ કરી શકે તેવા હતા, તથાપે તે પણ શ્રી વરવાનાં આસ્ર જેન થઈ પરણ્યા હતા. (૬) એકવચગી સુનિ, કે જેહને શ્રી કે પુરુષનું બાન પણ ન હતું, એવા સમર્થ છતાં તે પણ કામમાં આખરે બદલાયા (છેનરાયા) છે (૭) સૌમરી ઋષિએ પૃથ્વી ઉપર માથાનું વિશેષ આકર્ષણ થાય છ તેથી દૂન રહેવાને શ્રીયમુનાઇનાં જળમાં પેચી ૬૦ સાઠ હજાર વરનું તપ કર્યું તેવા ઋષિ એકવાર મત્યનો અંગ દ.૯એ પડતાંજ કામથી વિહવલ થઈ માંધાતા રાતનં ત્યાં જઈ પ. કન્યા પરણ્યા. (૮) પરાશર સુનિ, તેમણે શ્રીગંગાજના મધ્યપ્રવાહમાં દિવસે સૂર્ય વિષમાન છતાં દીમરની કન્યા (કુમારિકા કન્યા) સાથે ગળા બેઠીથી બરકર્મ કર્યું હતું. ઈત્યાદિ અનેક દાષણો છે કે પુરાણ અને (મહાલક્ષ્મી રામાયણ, કે) અથ પ્રસિદ્ધ છે. જ્યારે એનિકાનિક ઉપર લખ્યા સમર્થ પુરોહિત પણ માવાઅ ઝીત્યા ત્યારે પ્રાકૃત મનુષ્યને તે માયા હુન્નય થાયજ. એ માયાના રૂપ અનેક પ્રકારે છે. કંચન-કામિની-ગૃહાદિ માયિક વેલવના ભોગરાગના મોહક પદાર્થો (પાંચ વિષયના પદાર્થો) માન ગણાઈ અભિયા છત્યાદિ માટે શ્રીમદ્ભાગવતે કહ્યું છે કે ગદરીકાશ્રમવાસી શ્રીનરનારાયણ જઈ શિવાય બીજો એવો કોઈ પણ ધોર પુરુષ થયો છે કે જેણે સંપૂર્ણપણે કામને ઝીતો હોય ?

પ્રશ્ન ૨૭૩—જેહને સ્વપુરુષનો દુર્લભ સ્વસ્વંગ પ્રાપ્ત થયો હોય તેવા સુમુહુ જને શુ શું કરવું અને શુ શુ ન કરવું ?

ઉ. ૨—વર્ણાશ્રમના સ્વધર્મયુક્ત શ્રીપણ્ડિતનું મહાત્મ્યજ્ઞાનપૂર્વક અને સારી રીતે હૃદ (કદિપણુ ન હોય તેવો સંપૂર્ણ) પરાતપર પર્યતનો મહેમા બાલ્યુતો અને સર્વ કરતા આંધિક સ્નેહે કરીને તે પુરુષોત્તમને પ્રવક્ત કરવાને અર્થે નિષ્કામ ભાવે પ્રેમત્વજ્ઞા લક્ષિ કરવી. અહંતામમતારૂપ સાંસારિક પ્રપંચનો ત્યાગ કરવો હૃદ વૈરાગ્ય તીવ્રપણે રાખી તેનો સમ્યક રીતે ત્યાગ કરવો. વેદશાસ્ત્રાદિકમાં કહ્યા પ્રમાણે વિહેત પદાર્થનું જ ખાનપાન કરવું અને નિષિદ્ધ વસ્તુમાનનો અદા ત્યાગ કરવો. સદાચારવિચારસંપન્ન થઈ શિષ્ટ પુરુષોએ આદા કરેલા શિષ્ટાચાર પ્રમાણે વર્તવું. નિત્યાદિકકર્મ કર્તવ્ય કર્મ સમજીને અનાસક્તથી પ્રદા પ્રત્યે કરવાં અને નેગિક કર્મપણ પ્રસંગાનુસાર કરવાં પણ કામ્ય કર્મ તો નિષિદ્ધ બાલ્લી ત્યાગ કરવાં. સારરૂપ ક્ષેત્રોપયોગી જાતનો શીખવવામાં વયભાદિ ન વિચારવાં. શ્રીભગવાનના પરમ એકાંતિક ભક્ત થવા માટે અધર્મસર્ગ માત્રનો ત્યાગ કરવો. જ્યારે વિશેષ દેશગાળનું માન પ્રવર્તવું હોય ત્યારે, એટલે આપત્તિકાળે ધર્મ અંકટ

પ્રસંગે પણ સ્વધર્મરૂપ પરબ્રહ્મસંબંધી કર્મ જ્ઞાન ને ઉપાસનાનો કદિ પણ લોપ ન કરવો. વળતે કાલલોપ થાય તો તેની ચિંતા બહુ કરવી નહીં. અર્થાત્ કદાચ કાલ-લોપ થાય પણ કર્મનો લોપ તો સર્વથા ન કરવો. પરબ્રહ્મથી વ્યતિરિક્ત કોઈપણ પદાર્થને વિષે આસક્તિ ન રાખવી. આપત્તિ કાળે લગવત ભરોસે દૃઢ ધૈર્ય રાખવું.

પ્રશ્ન ૨૭૪—સત્યભાગમે કરીને અવરય બાંધવા યોગ્ય અને કરવા યોગ્ય સાર રૂપની કઈ કઈ બાબતો છે ?

ઉત્તર—અંતરમાં રહેલા પરિચુ (કામ, ક્રોધ, મદ લોભ, મોહ, માત્સર્ય) ને પોતાના સ્વાધીન કરવા. યમનિયમાદિ પાળી પરબ્રહ્મનું ધ્યાન ચિંતન સ્મરણ સેવન કરવું. આસ્તિકબુદ્ધિથી દૃઢ શ્રદ્ધાએ કરીને સત્પુરુષનાં લક્ષણ શિખવાં ને તે પ્રમાણે વર્તવા ઉપર દૃઢાશ્રદ્ધ રાખવો. શ્રીભગવાનની ભક્તિ વગર વ્યર્થ કાળ દાણાધર્મ પણ ન શુભાવવો. સર્વમાં અત્યંત સારરૂપ પરાતપર પુરુષોત્તમ છે એ ભગવાનની અને તેમના રૂપ તાદાત્મ્યપણાને પ્રાપ્ત થયેલા આચાર્ય સદ્ગુરુની અને વેદશાસ્ત્ર પુરાણાદિકમાં કહેલી આજ્ઞાઓ તે પણ ભગદત્તનુલ્લેખ શ્રેષ્ઠ પ્રમાણી તેમનાં વચનોનો કદી પણ લોપ ન કરવો. સર્વના મૂળ પ્રાચાર્ય ધર્મ છે એ ધર્મની બાબતો બાંધીને ધર્મનો સદા સર્વદા સંબંધ કરવો અને અધર્મને તિલાંજલી આપવી. સર્વ મુખ માત્રનું મૂળ ધર્મમાં રહેલું છે એમ બાંધીને કદી પણ ધર્મનો ત્યાગ ન કરવો. એકાદ પણ ધર્મનો ત્યાગ કરવાથી સર્વ અધર્મનો સર્ગ પ્રવેશ કરે છે. જ્યાં ધર્મનું પાલન હોય ત્યાં જ ભગવાન અને ભગવાનની ભક્તિ વારસ કરીને રહે છે અને નવ પ્રકારના ભેદે કરીને મુખ્ય ગણાતી નવધા ભક્તિ ને ૧૦ દશમી પરા (અથવા પ્રેમ-લક્ષણા સ્નેહાત્મકપણાની ભક્તિ) પરબ્રહ્મની કરવી એ અત્યંત સારરૂપ છે અને સર્વ કામમાં શ્રેષ્ઠ કર્મ શ્રીકૃષ્ણપરમાત્માની સેવા એજ છે એમ શ્રીભગદીય પ્રભુની પણ આજ્ઞા છે. एकं शब्दं देवकीपुत्रगतिं वगेरे निर्माण भने કરીને શ્રીભગવાન વિષે તથા તેમના અંતરંગ આચાર્ય અને ભગવદ્ભક્તો પરત્વે નિષ્કાંમ લાવ રાખી તેમને સેવવા એમ કરવાથી પ્રભુ શીઘ્ર પ્રસન્ન થાય છે. શ્રીમદ્ભાગવતમાં શ્રીભગવાનનું વચન છે કે મહારા ભક્તજન્મેને હું આરે પ્રકારની સુક્તિ પર્યંતનું દાન આપું છું છતાં મહારા તે નિષ્કામી ભક્તજન્મે મહારી ભક્તિ સિવાય અન્ય કોઈને પણ ઇચ્છતા નથી; ને હું પણ સર્વ કોઈને મહારી ભક્તિનું દાન આપતો નથી. કેમકે હું સ્વતંત્ર છતાં ભક્તિવદે કરીને તે ભક્તને પરાધીનવત્ થઈ જાઉં છું એવો મહારી ભક્તિનો અત્યુત્તમ પ્રભાવ છે. જુઓ શ્રીમદ્ભાગવત ૩-૧૧ સ્કંધ અને ૯ સ્કંધ. સર્વ સાધનો વડે કરીને કલાત્મક શ્રીકૃષ્ણની ભક્તિ કરવી એજ અંતિમ સાર છે.

પ્રશ્ન ૨૭૫—અંતઃકરણ મલિન રહે છે તેનું શું કારણ અને તે ચિત્તવૃત્તિ શુદ્ધ થવાનો ઉપાય શો ?

ઉત્તર—માયિક પાંચ વિષયના મનોરથો (સંકલ્પો) ભરી રહે ત્યાં સુધી અંતઃવૃત્તિ મલિન રહે છે વળી દેવાદિકનો કે સત્પુરુષનો અવશણ અંતરમાં આવે

તો તેણે કરીને પણ અંતઃકરણ દોષવંત થાય છે. એ ચિત્તમાં (અંતઃકરણમાં) જરાયલા મલિન દોષવાળી વૃત્તિઓ ટળવાનો ઉપાય પરબ્રહ્મપ્રીત્યર્થે નિષ્કામ કર્મ ભક્તિયુક્ત કરવાં એ છે તેમાં અત્યુત્ક્રમને સુચંગ કરવાથી પણ મરણને કરીને મરેલી કુષુદિનો સમ્યક્ રીતે નાશ થાય છે તથા શ્રીભગવાનનું અપરિમિત જ્ઞાન થાય છે તેણે કરીને પણ અવિદ્યા નિવૃત્ત થઈ અંતઃકરણ શુદ્ધ થાય છે.

પ્રશ્ન ૨૭૬—અનુભવભતાત્મકપણાનો પ્રપંચ ત્યાગ કરવામાં એક પ્રકાર છે.

ઉત્તર—ના. અનેક પ્રકાર છે. કેટલાક તો ચંપત્તિનો નાશ થઈ દરિદ્રપણાના કારણથી (નિર્ધનતાથી) કેટલાક ઓપુઆદિના મરણથી અને અલસપાદિ કુશુંભોથી અને ક્રોધથી કેઈ અજ્ઞાનથી ને કેઈ વિચારપૂર્વક ત્યાગ કરે છે.

પ્રશ્ન ૨૭૭—શ્રીભગવાનનું યથાર્થ જ્ઞાન શી રીતે સમજી શકાય ?

ઉત્તર—પ્રથમ અત્યુત્ક્રમદાર ભગવત્કથાવાતીનું શ્રવણ કરવું. શ્રીભગવાનના યશ અને લીલા શરિત તથા તેમનામાં રહેલું કર્તુમ્, અકર્તુમ્, અન્યથાકર્તુમ્ણણાનું અને તેમાં રહેલી અશય સર્વ પ્રકારની ઐશ્વર્યાદિક આમર્થ્યનું તથા પ્રભુના અપાર અદ્વુત્તોનું જ્ઞાન થાય છે. કેવલ પોતાની મેળે સદ્મયો વાંચવાથી અપૂર્ણ યથાર્થ જ્ઞાન થતું નથી, માટે વિજ્ઞાની જેને પરબ્રહ્મનું અવિચિત્ત જ્ઞાન પ્રદાના આદ્યાત્મક અનુભવવાળું પ્રત્યક્ષાનુભવતું જ્ઞાન પ્રાપ્ત થયું હોય તેવા અત્યુત્ક્રમ ભક્તિભાના સદુપદેશ વડે શુદ્ધ જ્ઞાન જેવું છે તેવું યથાર્થ થઈ શકે છે. જેમ જેમ ઉત્તમ દરજ્જાના વજ્રાનો ચંગ મળે તેમ એક ચમજવું. વિદુર નીતિમાં કહ્યું છે કે માદૃષ્ટિઃ સન્નિવસતિ જેવા પ્રકારના સંગતું સેવન કરે તેવા પ્રકારના રંગનું તેને જ્ઞાન થાય છે. શ્રીમદ્ ભાગવતે પ્રસંગમગ્નઃ પામ્યાન્નઃ ઇત્યાદિ.

પ્રશ્ન ૨૭૮—ભગવદ્ભજાને તીવ્રતર વૈરાગ્ય યવાળી ક્રિયા હેતુથી જરૂર છે ?

ઉત્તર—અનુદંચ લોક પર્યતના (૭ સાતે પાતાળથી આરંભીને તે ઉપરના ૭ માટે લોક સુધી પ્રદ્યાલના સત્ત લોક સુખીના સર્વ રચાનો તેના) જોગ ઐશ્વર્ય નુશ્ચ અને અચારરૂપના અને અનિત્ય છે એમ જાણી માયિકના ક્રોધપણ પદાર્થમાં કદિ પણ મોહાસક્તિ ન થાય તો અનન્ય પરબ્રહ્મમાં નિષ્કામે હતાશક્તિપણથી સ્નેહ બંધાય. વળી નાશવંત પદાર્થો પ્રભુની પ્રાપ્તિ થવામાં બાધક રૂપ છે એમ મમભાવ. વળી સર્વ વસ્તુમાયને પરમરૂપાએ સરજી છે માટે ખરેખર સર્વ પદાર્થના તેજ માલીક છે એમ જાણે અને તેનો વિનિયોગ પરમ પરમાર્થ રૂપ બ્રહ્મપ્રીત્યર્થે થાય, નિત્યાનિત્યવિવેક સમયે તો સાર અજ્ઞાન અતપ સાર અને સારમાં પણ વિશેષ સાર જોગથી અજ્ઞાન તથા અજ્ઞાનને કાઢી સારના સારરૂપ (આયુષ્માન સાર) ને વિશેષ આસક્તિ સ્નેહ બંધાય એ હેતુથી ત્યાગ, વૈરાગ્યનો સ્વાત્મનિવેદન ભક્તિ કરાવવા ઉપર તરફખિંદુ રહેલા સમબાધ છે. માટે હું તો સત્પાત્રને જ્ઞાન દેવું. (પરમાર્થ કષ્ટ કરવાં) યા ઉત્તમેષામ અત્પાત્ર

પરબ્રહ્મને જાણી જે માલીક છે તેનાજ વિનિયોગમાં તે આવે એ સાર તે પર-
બ્રહ્મને સર્વ સમર્પણ કરવું. પ્રાકૃત લોગ રાગ ઔદ્યય ઇત્યાદિકનાં સુખ તે તે
કહેવા પૂરતાં છે. (કથનમાત્ર છે) કરણ કે કુદ્રાનંદ છે વળી અનૈત્ય છે. (નાશ-
વંત છે) અને તેમાં અનેક પ્રકારના કષ્ટ વિધની રેવાઓ ચાલુ રહે છે. અસરરૂપ
છે માટે બાહ્ય સુખોને નાશવંત ને નિરાનંદ જાણી શ્રીભગવત્સંગ્રાંથી અત્યંત સાર
રૂપ અને પરમાનંદ નિત્ય છે તેનેજ વિષે સાચું સુખ માનવું. ધર્મશાસ્ત્રમાં પણ
કહ્યું છે કે-ચોન્તઃ સુલોન્તરાગમઃ

અશ્વ ૨૭૯—સારની વાતો ગ્રહણ કરવામાં વ્યાદિનો વિચાર ન કરવો એમ
કહ્યું છે તેનો સ્પષ્ટ પ્રોષ સમજાવો.

ઉત્તર—મોક્ષને ઉપયોગી વાતો આરરૂપ કહેવાય છે, તેની શ્રેષ્ઠ વાત જો
ન્હાનઃ બાળકમાથી મળતી હોય તો તેની પાસેથી પણ શીખવી, જુઓને, શ્રીશુક-
દેવજી મહારાજ પરીક્ષતે કરેલી શ્રેષ્ઠ પુરુષેની સલામાં પધાર્યા ત્યારે શ્રીશુકદેવજી
કરતાં પણ વચે કરીને મહારા એવા શ્રીશુકદેવજીના પિતા શ્રીવેદવ્યાજજી આદિ
અનેક મહર્ષિ વયોવૃદ્ધ બિરાજેલા હતાઃ છતાં તેમનાથી વયમાં નાના એવા શ્રીશુક-
દેવજી જ્યારે પધાર્યા ત્યારે તે સર્વ વૃદ્ધ ધર્મંડળે પણ હઠીને તેમને ઉચ્ચ
સિંહાસન ઉપર પધરાવી પૂજા સ્વાગત કરી અને તે સર્વ ઋષિઓએ પણ પરીક્ષત
રાજાની સાથે શ્રીમદ્ભગવાની કથા વણુ કરી માટે વયોવૃદ્ધતાના કારણથી કોઈ
શ્રેષ્ઠતા ન સમજવી. પણ તપોવૃદ્ધ કે જ્ઞાને વૃદ્ધ હોય તેનીજ જયેષ્ઠતા ગણવી. વૃદ્ધ
થયા છતાં પણ પર જ્ઞાના સ્વરૂપને જાણતા ન હોય ને ન્હાની વયના કોઈ જ્ઞાને
કરીને સંપન્ન હોય તથા પ તે બાળક જ્ઞાનવંત હેવાથી મહેટા સમજવા. વળી
જ્ઞાન ઉકરકામાં રત્ન પડયું હોય તો પણ તે શુદ્ધ કરીને ગ્રહણ કરી શકાય છે
તેમ કોઈ કદાચ જાતેજે કરીને નીચ હોય તથાપિ જો તેમાં જ્ઞાન વિશેષ હોય
તો તે જ્ઞાન તે દ્વારાજે ગ્રહણ કરવું. જુઓને સૂતપુરાણી લોભશ જાતિના હતા
તથાપિ તે શ્રીભગવાનનું જ્ઞાન જાણવામાં પુરાણ ઇતેહાસાદિમાં પ્રવીણ હોવાથી શીન-
કાદિ અનેક ઋષિઓએ તેમની કથા શ્રવણ કરી તેમનાથી જ્ઞાન પ્રાપ્ત કર્યું હતું,
પ્રવ, પ્રહલદાદિ ભગવદ્ભક્તો ન્હાની વયના હતા ને તેમણે તે અવસ્થામાં
શ્રીભગવાનની જ્ઞાને સંહિત ભક્તિ કરી તો તેમના વર્તનનું અનુકરણ
અથાપિ અર્થત શિષ્ટ પુરુષોની માફક સર્વ સજ્જનો કરે જાય છે માટે
જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરવામાં વય કે જાતિની લઘુતાનો વિચાર ન કરવો. જો
શ્રેષ્ઠ જ્ઞાન દાતા વજ્રાને વિષે અતિશય હેન ને તેમનાં વચનને વિષે
અતિશય દૃઢ શ્રદ્ધા અને તેઓ જ્ઞાનાના સ્વભાવ સુકાવવા કઠણ વચન કહે તે
હતકારી સમજી સહન કરી વર્તે તો સાર સમજાય. જેમાં જેટલું વિશેષ જ્ઞાન
હોય તેને ભગવાન સંગ્રાંથી કોઈ અટપટી લીલા જોઈને કુતક વિપરીત સંભાવના
ન થાય તે સદા સંશયરહિત નિર્દોષ ભાવ મનાય.

સહસ્રદશાનુ ત અહણુ ન કરે ન તમ ન વરતે ચા તે સતપુરુષ ઉપર અભાવ આદે
ત્યારે પણ તે સતસંગતિને છોડીને કુપયેજ નથે. આવા જનો તો સતસંગ શ્રવણ
કરવાના પણ અધિકારી નથી. જે કોઈ અવણાધિકારી જન પોતાની અશુદ્ધ
વાસનાઓ રૂપ કુબુદ્ધિને સહપદેશ પ્રમાણે સુધારવાને સાડ ત્રીસ લાગણીથી
વારંવાર છેદન કરતો જાય તો કાળે કરીને કુભાવ, કુર્તક, કુવાસના કુસ્મિત દૃતિની
જડ મૂલસંહિત તદ્દન નાશ થાય. દષ્ટાંત—જેમ વૃક્ષનાં ડાળાં પાદ્યં પાંચડીને
વારંવાર કાંપ્યા કરતો રહે તો તે વૃક્ષનો મધ્ય ભાગ અને ધરીયું હળવે હળવે
સુકાઈ જાય છે. ને જે વચ્ચમાંથીજ કાપી નાખે ત્યારે તો થડ અને ડાળાં પણ
સુકાઈ જાય છે, તે મૂળમાંથી કાઢી નાખે ત્યારે તો મધ્ય ભાગ ને ડાળાં સર્વ
સુકાઈ જાય, માટે સતપુરુષનાં વચ્ચનો ઉપર ૬૬ વિશ્વાસ રાખી તેમની આરા
પ્રમાણે વર્તવાનો દહાથહ રાખવો. દષ્ટાંત (૧) સંગસંબંધે કરીને સંયોગમાં
મિશ્રણ થવાથી મૂળરૂપ બદલાય છે, જેમકે તાલને કુલમાં વસાવીને પછી તેને
ધાણીમાં પીલે છે. તો તે તાલનું મૂળ સ્વરૂપ ન રહેતાં પ્રુલેલજ સુગંધીવાન થાય
છે. તેમ સંગની વાસ જરૂર લાગે છે. દષ્ટાંત (૨) જેમ કોઈ નદીના ધરામાં અતિથય
મલિન (અશુદ્ધ) જળ ધણા દિવસનું કહેાચલું ભરાઈ રહેલું હોય પછી તે જળમાં
ચોમાસાનું શુદ્ધ સ્વરૂપ આકાશી જળ પુષ્કળ પડે ને તે નર્તુ પાણી જુના મલિન
પાણીને સારી પેઠે ધોઈને વહેવડાવી નાખે ત્યારે તે ધરામાંનું પાણી પણ શુદ્ધ
સ્વરૂપ નિર્મળ જણાય છે તેમ મલિન અંતઃકરણવાળો જન સ્વરૂપ સમાગમે
કરીને સુબુદ્ધિવાળો બની જાય છે. જે જનો મૂળથીજ આસુરી સંપત્તિવાળા હોય
તેવાની કુબુદ્ધિ જડમૂળથી ટળી બદલાય નહિ પણ જે મીઠા જળની નદી જેવા
સમુદ્રના બરાના સંયોગ મિશ્રણે કરીને સારવાળા થયા હોય તે તો અસતપ્રસંગ
થી મુક્ત થાય તો સુધરી શકે.

પ્રશ્ન ૨૮૧—સતપુરુષમાં સુખ્ય શાશ્વ શુભો જોઈએ ?

ઉત્તર—૧ સ્વધર્મ, ૨ ધર્મ, ૩ જ્ઞાને સંહિત ભગવદ્ભક્તિ, ૪ ભગવાનનો
દહાથય, ૪ વૈરાગ્ય, ૫ પ્રપચ્ચને વિષે અનાસક્તિપૂર્વક પરમાત્માને વિષે સ્નેહાસક્તિ.

પ્રશ્ન ૨૮૨—સતપુરુષને સુખ્ય રૂપણરૂપ બાધક દર્તા ક્રીયા શુભો છે ?

ઉત્તર—૧ કામક્રોધાદિ પટરિયુનો સંગ્રહ, ૨ અસતપુરુષનો નિરંતર સંગ,
૩ માન, ૪ ગણધ, ૫ અરીષ્યા, ૬ અશ્રદ્ધા, ૭ અવિવેક, ૮ કંચન અને કામિનીનો
પ્રસંગ, ૯ જીન્હા ઈન્દ્રિયની લોહપત્તા, ૧૦ સત્ય હિતકાંડી ઉપદેશ દેવામાં કોઈ
પણ પ્રકારની સ્પૃહા કે ધરમ રાખવી.

પ્રશ્ન ૨૮૩—ભગવદ્ભક્તમાં સુખ્ય ક્રિયાં લક્ષણ બાધકરૂપનાં ગણાય છે.

ઉત્તર—કપટ, માન, લોભ, છલ, ઇર્ષ્યા, હાંસી, નિંદા, દ્રોહ.

પ્રશ્ન ૨૮૪—ભગવદ્ગીતામાં શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માએ પોતાની દ્વી આંખને

હરત્યય કરી તેથી સુદા યદનો ઉપાય પ્રભુની અનન્યશરણાગનિને કહેલો છે. એ માયાનો એટલો શો પ્રભાવ તે સમજવા રૂપ કંઈ દાખલા કહો.

ઉત્તર—(૧) જુઓ બ્રહ્માણ કે જે સર્વ પ્રભાતી. પિતામહરૂપ કરેવાય છે તેમજે કામદેવને ૫ પાંચ બાણ આપ્યાં હતાં. તે કામે મોહરૂપ બાણ બ્રહ્માણ ઉપરનું મુક્યું તો તેણે કરીને તે બાણ આપનાર બ્રહ્માણ તે પણ પોતાની પુત્રી સરસ્વતીજીના રૂપ ઉપર મોહાચક્ત થઈ તે કન્યાની પાછળ કામવાહનાથી દોડયા બ્યાકુળ થઈ ગયા. (૨) જેણે એ કામદેવના આધિભૃતિક શરીરને આગીને ભસ્મ કર્યું તેવા શ્રીમહાદેવજી તે પણ શ્રીભગવાનના મોહિનીજી સ્વરૂપમાં અર્પત તંપટ-પણાને મોહથી પામી ગયા, ને ચિવજી અરખાનું વીરંપતન યથાથી નનબંધ થયા. (૩) બ્રહ્માના માનસી પુત્ર દેવર્ષિ કે જે નૈમિક બ્રહ્મચારી એવા નારદજીપિ તેમને પણ કન્યા સાથે પરણવાનું (વરવાનું) મન થયું. ને તેમાં લંગ થયાથી શ્રીવિષ્ણુ-ભગવાનને પણ શાપ દેવા લાગ્યા. સૂર્ય અરખા દિવ્ય દેવને પણ મોહ્યા નામનો દૈત્ય સૂર્યોદય અમે દુઃખ દેવા આવે છે અને અંદ્ર તથા સૂર્ય ઉભયને શત્રુ ગણવાને માટે આવે છે. ત્યારે અન્ય પ્રાકૃત સામાન્ય જીવોને કામક્રોધાદિ રિપુ કનકગળ કરવા આવે એમાં કાંઈ નવાઈ ન કહેવાય.

પ્રશ્ન ૨૮૫—મુખદુઃખાદિ દંદપણું કેમ મનાય છે ? અને દંદપણુંથી સ્થિત કેમ વર્તવાથી થવાય ?

ઉત્તર—અર્ષની કાંચળીની પેઠે જ્યાં મુખી દેહબાવને ત્યાંથી આત્મજનારૂપ ન થાય, એટલે જ્યાં મુખી જીવ પોતાને દેહરૂપે કરીને માને છે, ત્યાં મુખી તેને મુખદુઃખાદિપણું ચાલુ રહે છે. પરંતુ એ પોતાનું સ્વરૂપ દેહરૂપ નથી. પરંતુ આત્મરૂપ પોતે છે, એમ જો દેહાભિમાનથી રહિતપણે વર્તે તો તેને કાંઈ પણ પ્રકારનું દંદપણું ન રહે. દેહને ગ્રાંખ્યયોગના વિચારે કરીને અનિત્ય નિજીવરૂપ ગણે. મુખદુઃખનો આધાર મને માનવા ઉપર છે માટે આત્મજાની થયું. સ્વલ્પ મુદ્ધ અને કારણ એમ દેહનાં કે પ્રકારનાં શરીર છે, ને તે અસ્થિર છે. આ માધિદેહ પાંચમહાભૃતિક (પંચતત્ત્વનો) છે એમ જાણી શરીરને પોતાનું રૂપ ન ગણતાં આત્મરૂપે માનવું. માટે દેહાભિમાનને ગતત કરવું. અનિત્ય શરીરને વિષે નમત્ત્વ અજ્ઞાને કરીને અહંતામમતાથી રહે તે દેહથી આત્મા પૃથક છે એવું જ્ઞાન થાય તો દંદપણું સહજ મુકાય માટે આત્મરૂપે વર્તવું. જેથી રીતે આત્મજ્ઞાને કરીને શાંતિ તેવી શાંતિ કેવલ વૈરાગ્યે કરીને કે વૈરાગ્ય સાથે પુરાણના થવળે કરીને પણ થવી નથી. માટે વિગાની ભગવાનજીના સમાગમે કરીને દેહાતીતપણાનું જ્ઞાન મેળવી આત્મકામ થઈ સ્વાત્મજાલપણારૂપ આત્મજ્ઞનારૂપે વર્તે તો જરૂર દંદપણુંથી રહિત થાયજ ત્યારે દેહનું જરૂરપણું જાણી આત્માનેજ ચિત્તનાત્મ માની નિત્ય જાણે ત્યારે દંદપણું ટલે.

પ્રશ્ન ૨૮૬—નિત્ય નૈમિકિક કબે કયાં મુખી કરવાની જરૂર છે ?

ઉ ૨—સારી રીતે અંતઃકરણની શુદ્ધિ થઈ પ્રજ્ઞાનો સાક્ષાત્કાર થાય ત્યાં મુખી કર્મ કરવાની જરૂર છે. સદાકાળ પ્રજ્ઞાપગયણ તાદાત્મ્ય પ્રજ્ઞામય થાય ત્યારે એટલે જેને શોચાદિકનું પણ ભાન ન રહે એવી રીતે સર્વ પ્રકારે જેહને પ્રપંચની વિસ્મૃતિ થઈ ગઈ હો તેવા પરમહંસ જેવા વિજ્ઞાની ભક્તોને કર્મ કરવાની જરૂર નથી, કર્મનું પ્રયોજન ચિત્તશુદ્ધિ છે.

પ્રશ્ન ૨૮૭—સંચિત ક્રિયામાણ અને પ્રારબ્ધ કોને કહે છે અને તે મુક્ત થવાનો કાંઈ ઉપાય છે ?

ઉત્તર—અનેક જન્મ પર્યંત સુકૃત અથવા દુષ્કૃત જે કર્યા હોય તેવાં એકઠાં થયેલાં કર્મને સંચિત કહે છે. ક્રિયામાણ એટલે કર્મ કાંઈ પણ ક્રિયા કરવી તેનું ક્રિયામાણ. પૂર્વજન્મનાં એકઠાં થયેલાં સંચિત કર્મોમાંથી જન્મ પર્યંત ભુક્તમાન થઈ શકે તેટલાં ઈ રચણાથી જે નિર્માણ થાય તેનું નામ પ્રારબ્ધ અથવા ભાવી અથવા અદૃષ્ટ અથવા દૈવ અગર ભાગ્ય એવા બુદ્ધા બુદ્ધા નામથી કહેવાય છે તેનું નામ પ્રારબ્ધ સંચિત અને ક્રિયામાણ શ્રીહરિને ચરણે અનન્યપણે શ્રીસદ્ગુરુદ્વારા જવાથી તથા વિજ્ઞાની થવાથી ટળી જાય છે. પરંતુ પ્રારબ્ધરૂપ ભાવી ફળ તે તો અવશ્ય ભક્તમાન કરવું પડે છે. અદૃષ્ટરૂપ ભાવી પદાર્થ ફેરવવાને સામર્થ્ય સર્વેશ્વર પર પ્રજ્ઞામાં છે તથા તેમના પરમ એકાંતિક સ્વાત્માતુલવી મહાત્મા સતપુરુષોને છે કર્મફલપ્રવાતા સર્વેશ્વરની ઈચ્છાનુસાર નિમિત્ત થયેલા પ્રારબ્ધને ફેરવવાને કર્તુમંકર્તુમન્યથાકર્તુમ સ્વતંત્ર પરાતપર પરબ્રહ્મ અને તેમના પરમંકાંતિક વિજ્ઞાની ભગવદ્ભક્તો સિવાય અન્ય કોઈપણ દેવદેવી કે મનુષ્યા દેકને લેશ માત્ર પણ સત્તા કદિપણ છે જ નહિ. મંત્ર યંત્ર કે ઔષધાદિકે પણ તેમાં ફેરફાર થઈ શકતો નથી વિવેકી પુરુષો પ્રારબ્ધ કર્મને ફેરવવાને કદિપણ પ્રભુને કહેતાજ નથી. પ્રારબ્ધ સંચિત ક્રિયામાણને અનુસરીને ઈશ્વરે નિર્માણ કરેલું હોવાથી તેને ફેરવવાને તે પુરુષોત્તમ કે તેમના કૃપાપાત્ર અંતરંગ મહાતુલાવ ભગવદ્દીયોજ સમર્થ છે. તથા પે તે વિવેકી ભગવદ્ભક્તો તે ઈશ્વરેચ્છા માનીને ફેરવવા રહતા નથી.

પ્રશ્ન ૨૮૮—કેટલાક ભગવદ્ભક્તોમાં દોષ પણ રહે છે, તેનું શું કારણ ?

ઉત્તર—દોષનાં નામ તે ન થાય તેના ઉપાય શા ?

- ૧ અજ્ઞાન= { જેને પ્રજ્ઞાનું સાક્ષાત્ જ્ઞાન હોય તેવા વિજ્ઞાની ભક્તો સદા સમાગમ રાખે તો ટળે.
- ૨ મોહ= { તીવ્ર વૈરાગ્ય પ્રપંચને વિષે આવી સાચો એવ પ્રભુમાં યાપ તો ટળે.
- ૩ પ્રમાદ= { શુદ્ધ અચિન્તિત જ્ઞાન સદા રાખે તો ટળે.
- ૪ આળસ= { ન્યારે તીવ્ર ભક્તિએ કરીને પ્રભુની આનંદ જગે સ્વારે ટળે.
- ૫ નિદ્રા= { પોતાને પરમ પ્રિય એવી ભગવત્કથાકીર્તનાદિમાં રૂતિ ભેડે તો ટળે.

આ પ્રમાણે ૫ દોષને ઓછીને સદાકાળ ભગવત્પરાયણ રહે તો સર્વ દોષ ટળી

પ્રશ્ન ૨૮૯—જાતો દોષ જાણતા છતાં પણ કેમ તેને અંદણ કહે છે ?

ઉત્તર—દોષમાં પણ ૧૪ જાતને શુભલાવ રહેલો દોષ છે. તે શુભને આ તે અંદણ કહે છે. જુઓને કેમ ત્યાંહિ વિષ પદાર્થો વિષમકારક છે. તથા કોઈ કોઈ પ્રયોગે અગ્રાધ્ય રોગ મટાડવાને ધનવંતરી જેવા વૈદ્યો સરખાપણ તે ઔષધમાં તે વિષને મારીને દવા આપે છે. તો તેજુ કરીને અગ્રાધ્ય રોગ પા મટે છે. તેમ અનંત અવગુણોમાં પણ એકાદ મહાન શુભ દોષ તો તેટલા શુભને ખાતર દવા લાવીને તે વિષમ છતાં તેને જરૂર પૂરતાં સ્વીકારે છે. વળી જુઓ શ્રીમહાદેવજીએ ચંદ્રને શુરેષ્ઠલીંગમનના દોષવાળો જાણ્યા છતાં તેમાં શીતલતા શુભ જાણી તેને પોતાનો અરણ્યગત જાણીને સ્વીકારી પોતાના બાલને વિષે સાર રાખ્યો છે. વળી શ્રીમહાદેવજીએ ચંદ્રમંથનના પ્રયોગે નિકળેલા વિષને સ્વ પ્રલને વિષમ દુઃખદાયક થઈ પડ્યો એમ જાણીને દેવ દાનવ કે મનુષ્ય કોઈને પણ તે ઉપદ્રવ ન કરે એમ જાણીને શ્રીભગવાનની અંમલિથી અમર્થભક્તિદાતા શ્રીમહા દેવજીએ પોતાના કંઠને વિષ રાખ્યું હતું. મહાન પુરુષોના અભિપ્રાય બહુજ ઉત્તમ છતાં તેનું કારણ તેમજે પ્રકટ કરેલું ન હોવાથી દુષ્ટ સમજવામાં આવતું નથી તેટલા કારણથી કાંઈ તે જાતો દોષિત છે એમ કહી શકાય નહિ.

પ્રશ્ન ૨૯૦—અર્ધકાર શાથી થાય છે અને તેથી રહિત યવાના ઉપાય શા ?

ઉત્તર—જાનિ (વર્ણન), આશ્રમ. કુળ. રૂપ, શુભ, સામર્થ્ય અધિકાર, માન, રાજ્ય, યશ, (કીર્તિ) દ્રવ્યાદિ વૈભવ સંપત્તિ કુટુંબની વૃદ્ધિ હંત્યાદિ મરોટમતા-પણીને લીધે અર્ધના થાય છે માટે આ સર્વ ઉપાધિથી રહિત યવાથી અથવા તે ઉપરની મોહાદિ તૃષ્ણા તરી નિર્માન થઈ મહાપુરુષની મન કર્મ વગેરે કરીને તનમન અને ધનથી સેવા કરે તો તેમના સત્સંગ અને પ્રસાદ (દુષા) થી અર્ધ-કારની નિવૃત્તિ થાય. ત્યાં સુધી દેહાભિમાનની પ્રતિ હોય ત્યાં સુધી નિર્માનીયનું ચાતું પ્રાપ્ત ન થાય માટે દેહાભિમાનથી રહિત થઈ આત્મચત્તારૂપથી થતે તો જરૂર અર્ધકાર નિવૃત્ત થાયજ. જેવી રીતે નદાના બાજકને માનાપમાન કે પૂજા કરે થા પૂજા નાંખે તે સર્વે સમાન બાલે છે, તેમ વરતે, નીચી ઉંચી તમામ પ્રકારની સેવા શ્રીકૃષ્ણે સંબંધ જાણીને પોતાનું બાળ્ય માનીને કરતો રહે તો તે જરૂર અર્ધકારદોષથી મુક્ત થયેજ.

મુનિશ્રી ભક્ષ કવિશ્રી દયારામદત્ત પ્રરોત્તરવિચારમય અંપૂર્ણ.

૫૬.

કામજ્ઞાન કામજ્ઞ કીર્ત્તિ રે, હો કામજ્ઞાન, બંસીમાં કામજ્ઞ કીર્ત્તિ રે;—૨૩.
વેણુ વળી બાલે નગમાં તેડ્યાં, ચિત્ત ચોરીને કાંઈ લીધું રે. હો કામજ્ઞાન. ૧
એરે ચોરીએ મહા સર્વ વણગાથું, મદુદી દોરીને મદી પીધું રે. હો કામજ્ઞાન. ૨
યેલી કીધી એકલની નારી, ચોરીને નાદે મન વિંધું રે. હો કામજ્ઞાન. ૩
દયાના નાથે મને દયા કરી છે, આજ સર્વે કારણ મહારે સ્વીધું રે. હો કામજ્ઞાન. ૪

ઉત્તમ ભગવદીય.

સર્વ ઉપર કૃપાવંત રહે. ક્યારે પણ કોનો દ્રોહ ન કરે.

કોઈ અપરાધ કરે તો પણ તે સહન કરી ક્ષમા રાખે પણ તે ઉપર ક્રોધ ન કરે.

ભગવદીય દી ક્રોધ કરે અથવા દુર્વચન બોલે તો તે વેળાએ પણ તેમનો ન ગણે, ને પોતાનો અપરાધ માની (વિચારી કાઢી) તેમનું ખુરું ન કરે.

ઉલ્લુકું તેમના પગમાં માથું મૂકી મધુરાં વચન બોલીને પોતાના અપરાધની કરાવે. ભગવદીય તથા પ્રભુથી અને ગુરુથી સદાચાર રહે.

તેમના ઉપર સદા નિર્બળ મન રાખે. પોતાની ત્રીપુત્રાદિક ઉપર પણ ભગવત ધ જાણીને મન સમાધાનપૂર્વક સમજ રાખે.

સર્વના ઉપકારમાં રહે. અનધિકારી આગળ માર્ગ રહસ્ય પ્રકાશ ન કરે.

હરિ ગુરુ ભગવદીય, ઉપર મદા ભર લાવ રાખે, મન ડગવા ન દે.

મન કોમળ રાખે. અશ્રદ્ધાતુ પ્રભુને કામ ન આવે.

ભગવત્નિવેદિત પ્રસાદી માથે રાખી અહોભાગ્ય માની અંગીકાર કરે.

ઘણો પ્રસાદ સીધામાં આગસ-નિદ્રા રોગાદિ થાય ત્યારે ભગવત્સેવામાં રાય થાય. મન વિહવલ થાય તો પણ મનનો ભરોસો ન રાખે.

સદા ભજનમાંજ આવધાન રહે. મકલ કારજ કરતાં મન પ્રભુના ચરણકમલમાં રાખે.

જહિમુંજ લોક ચર્ચા કરે ત્યારે મૌન ધારણ કરી રહે. લોભાદિને વશ ન થાય.

ભગવદીયને માથે પ્રભુ વિરાળે છે, તેનો સદા ભય રાખે.

અનુચિત કર્મ ન થવા માટે પ્રભુજીની ખીક રાખે.

સદા ચિત્ત શ્રીજીતુ ચિત્તન કરે. પ્રભુ સ્વામી ને હું દાસ એ ભાવ કદી ન છોડે.

સર્વોત્તમભાવ સહેળે હોય. બ્રહ્મવર્ચસ, બ્રહ્મ તેજ બ્રહ્મનું જાણે.

પ્રભુથી વ્યતિરેક અન્ય દુષ્ટિએ ન પડે.

(પરમભગવદીય શ્રીદયારામભાઈના જુના હસ્તલિખિત સંગ્રહમાંથી)

(૫૬.)

ત જા હરિપદ પંકજ ચિત્ત જા જા.

ટેક.

માત્ર સમીર રવિ ચક્ર સ્વયાં, વિધિ નાલિ અંબુજસર જા જા.

હરિપદ. ૧.

કુરસનકાદિ પાર ન લહે, જેણે કામક્રોધ વરજ્યા.

હરિપદ. ૨.

૧૬ અંબરીપ શુક વ્યાસ પરાશરે, પ્રેમભક્તિથી લજ્યા.

હરિપદ. ૩.

નદયાલ કૃપાનિધિ કેશવ, ઓ ગાતાં લજ્યા.

હરિપદ. ૪.

જ દયા હરિ ભજન તજે નહિ, રંક અથવા રાજ.

હરિપદ. ૫.

અપ્રતિદ્ધ પદો.

(૫૬, રાગ બિભાસ.)

ભજ સદા શ્રીકૃષ્ણ ચરણ, મૂરખ મનરે.—ટેક.

મૂઠ કાં યયો યો અબાણુ; મન વિષે યુમતિ આણુ;

કૃષ્ણ ચરણ અર્પણ કર, તું તન મન ધનરે.

૧ ભજ સદા.

કાળ દાઢમાં નિવાસ, કાં કરે વિવશ વિલાસ;

ચેત ચેત બદ્ય, હરિ ભજન વિના દનરે.

૨ ભજ સદા.

ચકલ ઘટમાં ય્યાપન કોણ ? હરિ વિના અવર ન જાણ;

કૃષ્ણ ચરણ કરે કદણ, અવર આ કરે અન્યરે.

૩ ભજ સદા.

હૃદે કપર કાઢ્ય બહાર, જ્ઞાન પાણ ખડગ ધાર;

કામ ક્રોધ લોભ મોહ, માર ચોર જનને.

૪ ભજ સદા.

દયા કે પ્યારે શ્રીકૃષ્ણચંદ્ર, સબ કે મન ભયોં આનંદ;

ભવતારણ કૃષ્ણ નામ, કૃષ્ણ પંકજલોચનરે.

૫ ભજ સદા.

(પ્રભાતીક.)

ચરણ ત્હારા વિષે જન્મ જન્મ સદા, લભ રાખે હરિ મન મદાર;

દીન જાણી તુને કરે કૃપા એટલી, નિવસ રચના કરે રતણ ત્હારે.

૧ ચરણ.

શિવચનકાલિક શેષ આગરચુના, ચરણપંકજનું સેવન કરે છે;

હરિચરણ હરિચરણ તુલ્ય કે અન્ય નહે, વદત વાણી સદા એમ કહે છે. ૨ ચરણ.

નાભિ અંબુજ યદી જાગ્રા ને પ્રકટીયા, તે ચરણભાદાત્મ્ય વરણી ન જાણે;

સહસ્ર જીભા યદી શેષ ગાં રાદા, વેદ પુરાણ નિગમ વખાણે.

૩ ચરણ.

ચરણ અમૃત તણું પાન કીધા યદી, દોરિ કલિમલ કપર દલેશ બાંધે;

હરિચરણસેવના ને કરે તે તણા, સંગથી હરિચરણ પ્રાપ્તિ યાચે.

૪ ચરણ.

મુરનર મુનિજન પાર પામે નહિ. ચરણ જયા વળુંવા કોણ ચણિ ?

ભણે દયો દીન તુને જાણું જહુપતિ; સદારે આપો ત્હારી ચરણભક્તિ.

૫ ચરણ.

કૃષ્ણ દીર્ઘન કયા કૃષ્ણના નામની, યવણ કરતાં ચક્ર પાપ બંધે;

બવ જન્મ મરણની ચાતના નવ અટે, લશ મોરાશીમાં નવ ખણાય.

૧ કૃષ્ણ.

મૂઠ માયા વિષે કાંકાં યયો મજ તું, કોણ છે તાત ને કોણ માય ?

પ્રેમયુક્તે પ્રભુચરણ આશ્રય કર્યો, ને યદી અખિલ આનંદ યાય. ૨ કૃષ્ણ.

નરણી તન ધનથી મન દાહાડી કરી, કૃષ્ણ દીર્ઘન સદા એ ન બાચ.

અદ્ય આયુષ્ય દંજ ક્યાંકાં તું લેહેતો નથી ? ચેતરે ચેત દણ બંડ કાય. ૩ કૃષ્ણ.

ગંગ તરંગ જલ બન્દવીને તણ, અદ્ય જલમાં જઈ શીદ ન્હાયે ?

કુખ કરવા સુખાતુલ્ય ભોજન મહે, તે તણ રેતુકા શીદ ખાયે ? ૪ કૃષ્ણ.

દેહ અભિમાન તુજ મન છે અતિ ઘણું, વદન મદ વાણી કહી સુખ્ય સ્કાયે;
 જોરે લંકાપતિ કાળ કર આવીયો, મૃત્યુ મન કો નહી રંક રાયે. ૫ કૃષ્ણ.
 કામ જોસે નહીં શ્રમ પહોંચે નહીં, વદનથી કૃષ્ણ કહેતાં શું થાય ?
 મણે દયો દીન હરિનામનોકા વિના, હુષ્ટ ભવ પાર તે નહીં પમાયે. ૬ કૃષ્ણ.

(પદ, પ્રભાત ગુજરી મિશ્રિત.)

હરિ ભજન કર્યં બહેલો પ્રાણી, જન્મ જાય છે એજેરે;
 ઘડી પલકની વાત ન જાણે, જે શું નીપજશે કાલે રે. ટેક.

જેઆ મંદિર માળ રચીરે, ખેઠા મોજે મહાલેરે;

વરણગીમાં વાંકા કરતા તેને સાદ્યા કાલેરે.

૧ હરિભજન.

મદરૂપી મધપાન કરીને, પરદારા શું નિહાલેરે;

સ્વપ્નતુલ્ય સુખ દેખી પ્રાણી, શું પડ્યો મોહની જાલેરે ? ૨ હરિભજન.

સાણુ સાણુ રથ હસતી ને ઘોડા, આગળ અતુચેર ચાલે રે;

તે જન કાલ તણે કર આવ્યા, જે જેસી કર્યા સુખપાલેરે. ૩ હરિભજન.

કુત્સિત કર્મ કરી ધન લાવે, નિજ કુટુંબને પાલેરે;

અંતે કો તહાડ નહિ પ્રાણી, જ્યારે ચમકિંકર લઇ ચાલેરે. ૪ હરિભજન.

માત તાત ને સગાં સહોદર, કો બેલી નહીં અંતકાલેરે;

દયો ભણે પારકું શું પડ્યું છે ? તું તહાડ સંભાલેરે ? ૫ હરિભજન.

(પદ, ઉપરના જોડાનું.)

હરિ નામનું નાવ ઘડીને, ભવસાગર પાર ઊતરનીરે;

અનેકવાર અવતરવે મરતું, તે ભયથી તું ટળનીરે. ટેક.

હુલ્લ મનુષ્યદેહ પામ્યો છે, હાવાં હરિભજન તું કરનીરે;

ચેતી લે નિશદિન ગોવિંદ ગા, પ્રેમે પ્રભુને મળનીરે. ૧ હરિનામનું.

લોભ મોહ મદ મત્સર સુકી, પરનિંદા પરહરનીરે;

અખંડ અદ્ભુત અવિનાશીનું, ધ્યાન હૃદયમાં ધરનીરે. ૨ હરિનામનું.

અહંકારે તું અંધ થઇને, વાત કરે છે આડંબરનીરે;

પણ કાળ ખમ્પર કોઇ નહિ મૂકે, કૃષ્ણચરણ સ્મરનીરે. ૩ હરિનામનું.

અશ્વગજની સુકી સ્વારી, કયાં કરે છે ખરનીરે ?

દયો ભણે હરિચરણ તણ, કયાં જમણુ કરે અવરનીરે. ૪ હરિનામનું.

(પદ, ઉપરના જોડાનું.)

અનેક લક્ષનાં કામ કર્યા પ્રભુ, લક્ષવત્સલ તમો કાહાવોરે;

દીનદયાળ કૃપાનિધિ દેશવ, માટે દારા કરે છે હાવોરે. ટેક.

નરસૈયાને હારજ આપ્યો, સાચી લક્ષિત જાણીરે;

ત્રિલોચનને મંદિર બહાલા, તમો ભર્યું છે પાણીરે. ૧ અનેક.

ચંદ્રહાસ ત્રણ વાર ઉગાર્યો, વિષ ફેડી વિપયા કીધીરે;

સળીનાં ણદરી (ખાર) આરોગ્યા, કુળજની આર્યા લીધીરે. ૨ અનેક.

(૫૬, શ્રીવલ્લભ શ્રીવિકૃલ શ્રીજીસ્વામી સામળીયા બહાલા તં પદની તરફ.)
 શ્રીહરિ વાહાલા જેહને કહીયે, સાહેલી માહારી; વૈષ્ણવ વાહાલા તેહને કહીયે, ૧.
 નીકર પાખંડ પ્રમાણો, સાહેલી માહારી; શ્રમ કરે તે ઠાઠો બાણો, ૨.
 હરિ સેવે હરિજનને તરછોડે, સાહેલી માહારી, પગ પૂજે ને મસ્તક મોડે, ૩.
 નિર્મળ ભાવેથી સત્સંગ કરીએ, સાહેલી માહારી, દોષ કોઈના ના ઉર ધરીએ, ૪.
 જેહમાં બાનુ શ્રીહરિનું દેખો, સાહેલી માહારી, પ્રભુ સરીખા તેહને પેખો, ૫.
 હરિજન જેહેણે સંતોખ્યા, સાહેલી માહારી, પુરુષોત્તમ તેહેણે પોખ્યા, ૬.
 અંતરની વાત તે તો બાણે, સાહેલી માહારી, હરિ ભાવે હરિ રસ માણે, ૭.
 ભક્ત ભગવંતની તોલે, સાહેલી માહારી, કયો કહે એકાદશમાં બોલે. ૮.

(૫૬, રાગ કાફી.)

પ્રેમ રસ તે પિયેરે જેહમાંરે અતિ અનુગ્રપણું;
 ઓઠાઈ ઘણી માહીરે, સમજ ન રાખે ક્ષણું. ટેક.
 સુંદર સ્વાદ શકરમધ્યે, દીકી વેલુમાં વેરાઈ
 હસ્તી હુતા તે હારી ખસ્યા પાછા, તેને ગઈ પિપીલિકા ખાઈ;
 ઓઠમ રખે રાખોરે. જે હું મહોટો બણું. પ્રેમરસ. ૧
 મહોટા વૃક્ષને ઘણું વિટંબણ, પીડાય બહુ પેરે કરી;
 સ્વપ્ને દુઃખ દેખે નહીરે, દૂર્વા સદા રહે હરીની હરી;
 સમજુ વિચારોરે, મુખ છે શામાં ધણું. પ્રેમરસ. ૨
 કમલતણા મકરંદ તે મધ્યે, જે ભુકતે જે સમીપે હોય;
 શુરદલ દૂર નિકટ દલ નાનાં; તેહ વિચારો સહુ કોય,
 પ્રકટ જઈ પેખો રે, જો હું ભુકું ભણું. પ્રેમરસ. ૩
 એક સિદ્ધાંત સમજવા માટે, કહ્યાં સર્વ ઇષ્ટાંત;
 શ્રીહરિ પણ દીનજંધુ કહાવે, નથી નથી મિત્ર મહાંત,
 માટે દયા યાનીરે તું તો નાહાનો અણુથી અણુ. પ્રેમરસ. ૪
 પ્રજ્જલાપાકે ૫૬.

મુરલીકે નાદ નાર પ્રજ્જલી બસ ગઈ હો; બંસીકે નાદ નાર પ્રજ્જલી બસ ગઈ હો-ટેક.
 બંસરી બગઈ નાથ, અકિત બયો સકળ સાથ;
 પ્રજ્જનનિતા વ્યાકુલ ભઈ, સાન ખિસર ગઈ હેરી. બંસરી. ૧
 બંસીકો સખી સુન્યો રહોર, બૃંદાવન આઈ દોર;
 કદમ છાંય ઠાડે હરિ, બંસરી બને હેરી. બંસરી. ૨
 બૃંદાવન રમ્યો રાસ, બિંધબિંધ કિયો બિલાસ;
 નાચત મુરલીધર, સખી મુખસે તતથે હેરી. બંસરી. ૩
 દયાકે ખ્યારે શ્રીકૃષ્ણચંદ, સખકે મન કરત આનંદ;
 મેં મુખયેં કહા બરનોં, ગતિ ગોકુલ નિત્ય ને હેરી. બંસરી. ૪

કામણુગારી ત્હારી વાંસળી, કામણુ કીધું છે લારી રે.-૨૬.

મોરલીને નાદે મન મોહી રહું છે, માંદે ગિરિવરધારી રે;

ધરધધો ગમતો નથી, હૃદે સુને લાગી છે ત્હારી રે.

કામણુગારી. ૧

મોર સુકુટ સિર સોહિતો, કુંડલકી છળી ન્યારી રે;

ચતુરા અપળ સુકી ધણું ધણું, મોહી રાધે પ્યારી રે.

કામણુગારી. ૨

સુરલી નાદ મધુરો સુણી, સુકયા શ્રીત્રિપુરારી રે;

સુરનર સુનિજન મોહી રહ્યા, કોણ માત્ર પ્રજનારી રે.

કામણુગારી. ૩

તનમનધન અપણુ કહે, અરણે કુંજ ગિહારી રે;

દયાના સ્વામી તમે શામળા ઝીત્યા ને અમો હારી રે.

કામણુગારી. ૪

આરતી (ઓ પૂર્ણપુરુષોત્તમની.)

(ભક્ત કવિશ્રી દયારામભાઈ કૃત.)

જય જય શ્રીત્રજરાયા ગોપીનાથ ગિરિવરધરા હો,

શ્રીયશોદોત્સંગલાલિત નંદાત્મજ શ્રીરાધાવરા હો.

જય જય.

નવાંબુદાનીક ચાર ત્રિલોક સમોહન શ્રેયસ્કરા હો,

ખડોપીઠ વિભુનાથ, મકરાકૃતિ કુંડલ સુંદરા હો.

જય જય.

પ્રકૃત્તરાજીવલોચન, આનન મદનાધિક મનહરા હો,

વેળુરવામૃત મોહક ગોકુલ રસમય રસિકેશ્વરા હો.

જય જય.

તિલક સુ લલાટ પટલે રાજીત કસ્તૂરીકેસરા હો,

નાસાગ્રે વરમુક્તા અમલ પ્રતિબિંબિત બિંબાધરા હો.

જય જય.

વક્ત્રસ્થળ કોસ્તુભમણિ શ્રીવત્સાંકિત શ્રી શ્રી ધરા હો,

વૈજયંતી વનમાલ વૃંદા શુભદિક આદરા હો.

જય જય.

લસતાંગદ કંકણ કર સુદ્રિકા કટિતટ પીતાંબરા હો,

કટિમેખલાપદાંબુજ નૃપર કલરવાદિ વિચરા હો.

જય જય.

ગોપસ્ત્રીપરિવેષિત ગાન તતર્યેઈ શમ્ભોચ્ચરા હો,

નંદસ્મિત મધુ ભાષણુ વિલેકન પરમાનંદાકરા હો.

જય જય.

ત્રિલંગલલિત મનોહર અગણિત મહાહર સ્મરા હો,

દિભુજ સદા પ્રભુ ગદા, પદ્મ, રયાંગાહિણુપ્રધરા હો.

જય જય.

ભક્તાતિહર શરણુગતવત્સલ હરિ અધમોહરા હો,

હરિ ઇચ્છા ભગવાન અનાદિ અચ્યુત વિશ્વેશ્વરા હો.

જય જય.

વેદ વિદ્યા શિવ શેષાદિ વંદિત પૂર્ણ સર્વેશ્વરા હો,

ઇતિ સ્તવ કૃષ્ણ નીરાજનસમયે ચે પદંતિ સ્ફુટ સુમહરા હો,

જય જય.

દયાનાથ સુપ્રસિદ્ધ ભવેદ્ધ દુવ સુરાધિકેશ્વરા હો.

અલૌકિક શિક્ષા

(કવિશ્રીના શિષ્યપૌત્ર બોલોડવાસી ભેખીજી નાથાલાલએ કવિશ્રીના અંશમાં તારવેલી શિક્ષા.)

દરોજ નિરંતર ભગવદ્ધર્મસંબંધી મુખ્ય બાબોમાં સ્મરણમાં રાખી વર્તન કરવા આ વિશેષ રીતે લક્ષમાં રાખવાની તે—

૧. શ્રી પૂણું પુરુષોત્તમ જે પરબ્રહ્મ પરાત્પર અનિર્વચનીય સર્વના આવાદ્ય તેમનોજ આશ્રય સદોદિત રાખવો. એ ઈશ્વરેશ્વર અનેક દ્વારા (દોષપણું નિમિત્તે યા બદનાયી સર્વનું હિત કરે છે. માટે કદી પણ અન્યનો આશ્રય ન માનવો.
૨. સર્વના કર્તા સર્વના ભક્તી સર્વના નિર્ણતા એ ઈશ્વર સર્વના સ્વામી માલીક છે. તેજ તેમની સમગ્ર ચીજ હોવાથી તેમને નિવેદન યત્ના બ્રહ્મસંબંધ શ્રીચુરુદેવ કરાવે છે. માટે પરબ્રહ્મના અર્થે સર્વનો વિનિયોગ યત્ના આગ્રહ રાખી પાછલ પ્રસાદી (ઉચ્છિષ્ટ) લઈ દાસ પદવી લેવી. જસ પ્રશંસા માટે સમર્પિત કરવાનો પણ ઉપયોગ અંશમાં ન કરવો. પણ ઔપધ કંઠવટ અને નિર્બેધ કરેલી અમલ્ય વસ્તુ શ્રીને કદી પણ ન ધરાવવી. કેમકે શ્રીદર્શિ સર્વ ઉત્તમમાત્રથી પણ ઉત્તમ હોવાથી તેમને ઉત્તમોત્તમ અંગીકાર થાય છે. જેથી સર્વ ઉત્પન્ન તે તેમના ઉત્પન્નકર્તાને આપવાની દરજ છે, રાખાડું નથી. ન આપ્યાથી દોષ થાય છે.
૩. ભગવદ્ધર્મો અનેક પ્રકારના છે. એ સર્વમાં શ્રેષ્ઠ ધર્મ એ શ્રીહરિની સેવા કરવી. એજ છે. પણ એ સેવામાર્ગનું રૂપ લક્ષણ ક્રિયાવત્ પૂજનમાર્ગદિકથી અત્યંત લિન્ન છે. તેથી નિરૂપણ થયું પણ અસમ્ભવત છે, તેમાં પણ પ્રથમ તો પરબ્રહ્મનું માહાત્મ્યજ્ઞાનપૂર્વક સ્વસ્થ અનુસંધાનમાં વિસ્મૃતિ કે અજ્ઞાનતા ન થાય એ માટે મહદ્દ્વારા સ્મરણનું, પછી તેની પ્રાપ્તિ અને તેમનું જ હિત થાય, એ કૃતિમતિથી અતિ આતુરતા થાય. એ માટે પશ્ચાત્તાપ ક્ષમા સ્તુતિ વિગતિ કરવી, અને એમાં મુખ્ય રોહ રસ અને તેથી અદતી પાયરી શ્રીહરિસંબંધી તાપકલેશવિરહાદિ વિપ્રયોગાત્મક સયોગાત્મકની સમગ્ર પડે એ માટે આ લક્ષણ છે. પ્રમાદ બ્યવસાય અન્યાસકિત ઈલાદિ પ્રતિબંધક માત્રો ત્યાગપૂર્વક પ્રયત્ન કરવો. અને તેમાં નેટલી કસર પડે અગર અસકયપણું આવે, તે માટે પણ શ્રીહરિનું શરણ (આશ્રય) ગ્રહેવું. (લેવું).
૪. સત્કાર્ય ઇશ્વરપ્રેરણાનુંજ માની કુટુબને નિજ કૃતિ (હવકૃતિ) માની અપરાધપરિહારાય સદા ભગવદ્દામોચ્ચારણ કરવું, યા મન શ્રીહરિમાં સંલગ્ન કરી અપરાધક્ષમાસ્તોત્ર સ્તુતિ વિગતિ કર્યા કરવી.
૫. નિરંતર શ્રીહરિનું ચિંતન કરવું. લક્ષ્યાર્થ પણ ભગવદ્ધર્મનું વિસ્મૃતિ ન થવા ધ્યાન રાખવું.
૬. બીજી બાબતમાં વિશેષ ખુલાસો. શ્લોકસૂત્રાદિ પ્રસંગો અસમર્પિત ભોજન કરવું પડે ત્યારે શ્રીહરિચરણામૃત પધરાવીને પ્રસાદવત બણી પ્રત્યેક આસે અને પ્રત્યેક હુટકે ભગવદ્દામા લાય કર્યા જવો.

॥ श्रीविद्यानराचार्यवर्णा विजयन्तान्तमाम् ॥

सर्वोद्धारप्रयत्नात्मा, विश्वना तारुण्यद्वार जगद्गुरु आचार्यसभा
विश्वधर्मस्थापक श्रीमद्वल्लभाचार्यजना विश्वमान्य सिद्धांताने
प्रकाशनात्

शुद्धाद्वैत-संकितमार्त.७५.

पुष्टिभागीय-संतिहास-प्रकाशनात्

आस अंक.

पृ. ८,] श्रीवल्लभाचार्यः ४५५ भागीयः अं. १९८०. [अंक ८.

प्राचीन-कीर्तन.

सहेरो ॥ अब गंध लवोरी मालिनीवां सहेरो । शुभ घरी शुभ दिन शुभ मुहूर्त लगे बनाने
नेहरो ॥ हरी चमेली गूलान निवासे महेकत आवे केसरो । बना बन्यो नवलपिय श्रीगोकुल में रोहरो ॥
दमाले । अति दूबी देत दमाले सीस ॥ मन्मथ मान हरत हस चितवत आज
बनेहे गोकुल ईस ॥ टाढे सिंगपोर अपने राग सग सखा दसवीस । दिने सिरान चतुर्भुज
प्रभु लम् जीयो कोटि वरीम ॥

टीपारो । श्रीगिरधर बनते नामत सोहत ॥ पीत टीपारो सीस रगो फव छत्रीली
चाह मन मोहत ॥ गायनके पाउं पाछे आवत चन्नी दीखाउ तोय ॥ छीनस्वामी सबको मन
मोहत चहंधा दृष्टि करि जोय ॥

श्रीहरिरायजीकृत श्रीयमुनाजीके छप्पय.

अंस बंस अवतंस परम रसाह प्रसंसित । वरकल्लिगिरी पतन शिलर सुरहृद विषोसित ॥
सेविन तट वटानिकट चेद सुरी नरमुनि झुडन । सहज परम सुख करन धरन भुव मंडल मंडन ॥
सदृक्पत्रगोकुलकर्णपत्रावितपत्र भविचरचरना । लाटिनी श्रीगिरिधरन मुखद सुजयनय श्रीयमुनावरन ॥
तीर समीर गंभीर चिर प्रफुल्लित व्रत मुनि सुर । सारस हंस बकोर मोर शुक्रापेक अति फलवा ॥
विशेष भौत रस पुज लुख रस पुजसो वरखत । सहज बदत निज धर्म पन निर्मल मुन हरखत ॥
परम हंस मुनिगन गुनत मड फल स्वैदानन । लाटिनी श्रीगिरिधरन मुनद सु जयनय ॥

शुद्धादित्य भग्ने लक्ष्मिभारतः

एकद्विकट भवस्य पर नैकद संकटाविनाशन । वारन दुरित हरन इदं जन उपप्रदाशन ॥
 जीत शक्ति अध हरन, ते तेही नाहि । जे अघशेकप्रसिद्ध भीटत मुन नीर प्रगढ़ ॥
 सुधामाधुरी करुणाकरन कृपासिंधु तारन तरन । लाडिली श्रीगिरिधरन सुखद सु जयजय०
 श्रीहरिपद अम्बुज जन्म सुभग हर जटा निहानी । घन भागीरथी विषय पितर उदेशे वस्तानी ॥
 जिनकारन कृपि अंश घंस अवतंस प्रसंसित । जगत पावन भद्र गंग सो तव संगत जस बर्नित ॥
 सो तव प्रतापवल माधुरी वरनन कोउ समरकरन । लाडिली श्रीगिरिधरन सुखद सु जयजय०
 भोम विषोसित नील कमलदल निर्मल बेनी । किथो मदन तूत संग लता शुभ धाराधरेनी ॥
 किथो क्रांत दुप वसन रसन खुर तट लह तनी । चलत फिरत तुम बेज किथो रतीरंग परनी ॥
 श्रीवृंदावन कंठमाळ किथो इंद्र नीलमन विस्तारन । लाडिली श्रीगिरिधरन सुखद सु जयजय०
 तटनिकुंज रसपुंज धरन सिरतरंग मुशोभिज । कर पुलिन रसधाम धीर सुरभजेनी जुग कल्पवर ॥
 निविडलता गतिमंद पद्मोप सुगंध मुरभार । सीतलजलनि परसि पवन सेवतसो मानसर ॥
 इंदनी चीख मुख सहचरी सो लखितादिक नैनाभरन । लाडिली श्रीगिरिधरन सुखद सु जयजय०
 मेघघटा भ्रम भ्रमिन मोर नाचन तट कुंजनी । घन तमाल पत्र घन वसवत रस पुंजनी ॥
 कृष्ण कान्त भ्रम जुगत विधु तरंग भुजनी । नैनकमलदेखनी शोभित अमल विमलनी ॥
 रसलोभित इंदनील चोतरा तापर मुरलीधुन करत । लाडिली श्रीगिरिधरन सुखद सु जयजय०
 नारदमुनि वचन कमलही लुटि करे रतन । भीटन भक्त अपराध परमि जलकर सावन ॥
 सप्तसिंधु जलभेद सरस रविमंडल सरनी । सहज सहज पटा सप्तधारा वृंदावन धरनी ॥
 अन्य द्वार वैभव लसत अचल वाम वज्र विस्तारन । लाडिली श्रीगिरिधरन सुखद सु जयजय

१४६ :- राजगोत्र भगवानंदान चतुर्भुजदाम, भाष्यनगर

श्रीसर्वोत्तमस्तोत्रका हिंदी अनुवाद ।

साकृत्-धर्माश्रय-सहित, धर्म अर्थोक्ति नर ।
 स्तवन करूं निगम-कथित, साकृत्नि गूढ-स्वरूप ॥
 ज्ञाना पुरुषोंकी भी समझें, काश्चिद्-तम से आच्छादित हैं ।
 उनके माहात्म्य से दस कारण, सब प्राण आन अषगुणित हैं ॥
 तब प्रगटानेकी निज-महाम, हरि दयान्त्य दृष्ट करके ।
 ओं पदुने भूतों के ऊपर अमृत का रूप बना करके ॥
 अब उनका कहा कठिन अति है, जिन से नुबोध कर सकते हैं ।
 एक सौ आठ शत-अव-हरी, उनके नामों को कहते हैं ।
 स्तोत्र अग्नि सुत, अपि वर्णन, कर रहे हैं जगती में है ।
 श्रीकृष्ण देवता करुणावतः प्रभु हमके बीचस्थ से है ॥
 विनियोग भक्ति के लिये और, प्रतिबंध-विनाशक है हमस ।
 इसमें कोई संदेह नहीं, वस अपराधन फल है इसका ॥
 आनन्द, परम-आनंद स्वतः ही है श्रीकृष्ण, कृपासागर ।
 देवी-उदार-प्रयत्नामा, आतिथ्य केवल स्थिति भर ॥
 गूढार्थ-प्रकाशन-पारायण तपर हो श्रीभागवत करें ।
 भाषन-कर्ता माकार-प्रत्यय-के, वेदका पार भें ॥
 मायावाद के नाशकर्ता, सब वादी किये पराजित हैं ।
 भक्ति-पथ-कमल के मूर्ध, नारिश्चर्यादि जहां उजाड़ित हैं ॥
 कर अंगीकार गुरुओं का बलभी किये गोपीश शिष्य ।
 मर्यादा सहित प्रहृष्ट कर्ता, अग्रंत कारजिक, वैभवमय ॥

सुखसेव्य, दुःख से आराधित, दुःख है चरणकमल जिनके ।
 हैं उग्रप्रतापी, पूर्ण करें सब सेवक वाणी—अमृत से ॥
 पीयूषसमुद्र श्रीभागवत मथने की क्षमता रखते हैं ।
 तत्सार रास—गोपिका—भाव अति भरे आप में रहते हैं ॥
 श्रीकृष्ण—प्रेम साविध्यमात्र दे दान, विशेष—मुक्ति देने ।
 तात्पर्य रासलीला में रख, तत्कथा कृपा—प्रदान करते ॥
 अनुभव वियोग का करने को उपदेशक सर्व—याग के जो ।
 उपदेश किये आचार भक्ति के, कर्मपथ—प्रवर्तक हैं जो ॥
 उपदेश करें 'ज्ञानादि कर्म वन रहे भक्ति के साधन भर' ।
 हैं पूर्ण—आनंद, पूर्णकाम, वाणी के अधिपति, विबुधेश्वर ॥
 वक्ता हैं कृष्ण—सहस्र—नाम के आप, परायण भक्तों में ।
 आचार भक्तिका रचा रूप जिनने है नाना वाक्यों में ॥
 अर्प निज हेतु अखिल उनके प्राणप्रिय, तादृशी बीच धीरे ।
 साधन समग्र करने वाले दास हेतु, सब शक्तियां धरे ॥
 पृथ्वी में भक्ति प्रचार हेतु जिन किया बंश निर्माण, पिता ।
 है भरा स्वकुल में सब महान्म अपना गर्व के नाशकर्ता ॥
 पतिव्रता—नाथ, परलोक लोक—भू के पदार्थ देने वाले ।
 अति गुप्त हृदयवाले, अनन्य जन्म से आशय कहने वाले ॥
 जो सुग्ध उपासन आदि कर्म में उनका मोह मिटा देते ।
 सब पंथो बीच भक्ति के मार्ग को बलक्षण्य दिखा देते ॥
 उपदेश शरणपथ प्रथक किया, ज्ञानी श्रीकृष्ण हृदय के हैं ।
 पल पल निकुंज में जो लीला पारंपरित उसके रस से हैं ॥
 व्याकुलचित भगवत्कथा बीच, विस्मृत सब और जिन्हें ब्रज प्रिय
 प्रसवास जिन्हें प्रिय करें, करें पुष्टि लीला, एकांतवास में प्रिय ।
 भक्तेष्टानुरक लीलाज्ञान न सबको जिनका, अति मोहन ।
 हैं अनौसक्त सब में, केवल हैं भक्तासक्त, पतितपावन ॥
 अपना यश गाकर खिले हृदय करने वाले उनमें आसन ।
 यश—अमृत—लहरी से सब रम त्रिन किये तुम्ह, सबमे उत्तम ॥

अति भिगो दिये हैं भक्त देह सबहां लीज-अमृत-इनमें ।

गोवर्धन-दास-उत्साही हैं, मिथिबिद्या के प्रज्ञ से भरे ॥

यज्ञ के भोक्ता, यज्ञ करें चारों पुरुषांशों में पट्ट हैं ।

हैं सत्य प्रतिज्ञ, परे हैं गुण तीनों से नीति विशारद हैं ॥

बर्द्धक स्वकीर्ति के, तत्त्वज्ञ की टीका करनेवाले हैं ।

मायावाद-तुल्य हेतु अनल, अमरवाद रचने वाले हैं ॥

सज रहे अत्यंतिक दृग्गणों से सारे, सहज हाव्यवाते ।

भूषण त्रिलोक के, भूमिपान्य, स्वाभाविक तुंदरनावाले ॥

रज-धन जिनके चरणाब्जोंमें चाहते अशेष भक्तजन अति ।

ऐसे आनंद समुद्र रूप के नाम कहे अष्टोत्तर शत ॥

भक्तों से बुद्धि विशुद्ध बना जन पाठ करें प्रतिदिन इमका ।

एकाम चित्त से रिससंदेह यह सिद्धि प्रथम वर्णन जिसका ॥

यह मिले बिना है मोक्ष वृथा मिलने पर मोक्ष निरर्थक है ।

इस से स्तोत्र सर्वोत्तम का कृष्ण-रस-चाखों को जप है ॥

दाते वनस्यामदास जीहरी की जयभीरुत्पन्न घोषिये.

वीकानेकरमें कनकाभिषेक.

सं. १९४० के ज्येष्ठ कृष्ण ३ कूं कामवनस्थ गोस्वामी श्री १०८ श्रीगोविन्द महामधुने आमुखायामोहलीला करी, ताके पहले आपके ज्येष्ठ लालजी श्रीदिवकीर्नन्दन-मधु (वांपाश्री)ने अपने पितृचरण को विषोग होने ही गृहत्याग कर अरण्य निर्जनवन में विरहानुभव, जो सुष्टिमार्ग को महाफल है, ताको आम्वाद देनेको विचार कर राख्यो हो, ताकी खबर आपके पितृचरणों पर पड़ गई । ताही समय आपने वि. श्रीदेवकीर्नन्दनलालकों पास बुलाय श्रीमस्तकपर आपको श्रीहस्त धरके आज्ञा करी जो नेने हमारी आज्ञा को उल्लंघन कर्मा नहीं कीनों, तागुं हम अत्यंत प्रसन्न हैं । और जो छेली आज्ञा करें ताहें अवश्य पालन करेगा, एसा हमकें पूर्ण विश्वास है । एक तो हमारे पधारे पीछे हैं घर छोड़ जायेंवेको विचार करे है सो सर्वथा न अपने राम-विहारी की सेवा छोड़कें मत जाइयो । दूसरी आज्ञा विवाह करकें श्री पितृदण्ड चुकाय-कें श्रीचंदबाबा की सेवा के लिये वन स्थापित करियो । यह मुनिकें आप अत्यंत खिन्न होकें पिनानि सिंगे, जो मेने विना तो रांभा ये दोनों की कान्छे न

हो, पर आप या बखत आज्ञा करें हैं तो मोंहूँ शिरोधार्य है। अनंतर थोड़ी देर में ही आपने लीलामवेश कियो। आपके उत्तरकर्म से निवृत्त होते ही आपके छोटे भाई श्रीगोपाललालजीने श्रीमदनमोहनजी के मंदिर की कब्जा कर लीनी।

तब आपके छोटे भाई श्रीजयदेवलाल अति खिन्न भये। तिनहूँ देख आपने श्रीजयदेवलालमें आज्ञा करी जो मेरो तो घर में रहिवेको ही विचार नहीं हो, पर श्रीपितृचरण की अंतिम आज्ञा को पालन करनो सो मैं परदेश फिहूँगो, ओर ये श्रीचंदबाबा की सेवा और सब वैभव मैंने तेरे सुपर्द कर दीनो। ऐसं कहकें चाचीनको झमका तथा आपकी मोहर सब आपहूँ सँभाल दीनी।

इन बातनकी खबर बीकानेरनरेश महाराज श्रीहंगरसिंहजी हूँ पड़ी। तब आपने अपने निज कृपापात्र भले मनुष्य और राज के नगरा निशान डेरा तबू सर राज्य विभूति संग देकें कामवन भेज दीने, और कही जो जैसे दूने तैसँ वेग महाराज हूँ बीकानेर पधराय लावो। खरचको कोई विचार मत करो। वह लवानमा और भले मनुष्य कामवन पहुँचे।

वहाँ पहुँचकर तुरंत सब मध्ध करकें थोड़े ही दिनन में आपहूँ बीकानेर सं. १९४० के श्रा. सु. ११. हूँ पधसँय लाये और आपको मंदिर श्रीराजस्तनविहारीजी को है तामे आनंद सों विराजमान करे। पर आपको मन वैराग्य और विरहानुभाव करवे को हतो और दिन २ इड होतो गयो। यह देख मंदिर के अधिकारी जो महाराज के परम कृपापात्र और दरबार के भी कृपापात्र भोगीलाल उत्तमराम बडौदा जिला के सावली गाम के रहवेवारेने दरबार हूँ कही जो आप जैसे श्रीमहामुक्तो कनकाभिषेक राजा कृष्णदेव ने कियो तैसँ ही आप श्रीमहाराजको कनकाभिषेक करो और विवाह करवे की गाढ़ी विनति करो, तो मैं इन को व्याह कर लाऊँ, और जैसे महामुज्जनि दिग्विजय कियो तैसँ ही दक्षिण दिशा प्रभृति परदेश में डका बजवाय लाऊँ। सो दरबार ने स्वीकार कर लीनी और आश्विन शुक्ल १० विजयादशमी के दिन शुभ मुहूर्तमें आपको कनकाभिषेक को निश्चय कियो। और शंख, चक्र, छत्र, सिंहासन, पादुकाजी तथा पादुकाजी के विराजवेकी चौकी ४ छड़ी तामें २ सोने की तथा २ चाँदी की २ दीवी ये सब सामान चाँदी, सोने को सिद्ध करायकें सुवर्ण के पुष्प बहुत सेवा तथा पूजा के सब पात्र चाँदी के सिद्ध होय गये। तब वा साल विजयादशमी को उत्पन्न ९ को हती सो सब आनंदसों करकें श्रीचंदबाबा की विजयादशमी के साँझ के ४ बजे बीकानेर से २॥ कोस श्रीठाकुरजीकी ७०० गायें रहती

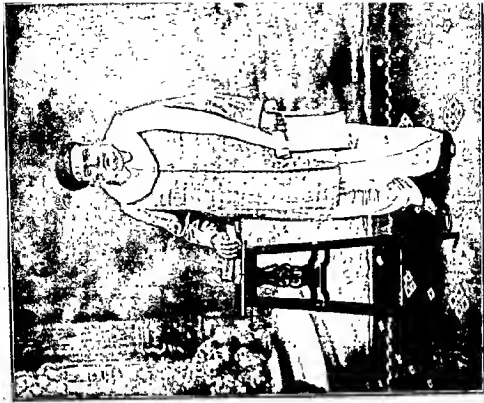
हती, तो गाम की नाम चीछवाल, तथा बाके पास जो कृओं बाकों नाग जीवनसर प्रसिद्ध है, तहाँ महाराज श्रीहंगरसिंह बड़ी सवारी सहित पथारकें शांडिल्यमहिता के स्तोत्र में महाराज कें स्तान करवायो । जरी को केसरी पीताम्बर धराय भापकूं सिंहासन में पथराय दैव विभूति शंख, चक्र, छत्र, मुरज आदि राजविभूतिपुक्त आपको पोडशोपचार पूजन करकें, आचार्यतिलक करकें, पाँडे आपके पादुकाजी को पूजन हरि गुरु पीठ स्तोत्र में करके, स्वर्णपुष्पसों आपको तथा पादुकाजी को अभिषेक करके, कृष्णदेवके समान आपमें उपदेश मुनकें भेट न्योछावर करकें गाम चीछवाल सों सवारी कर बीकानेर के किले में दाखिल हूए । बाही दिनमें शहरमें वा अपने मंदिरमें पथारं ! वा कोई भी वैष्णव के यहाँ पथारई में पथारं । तब आप केवल धोती उपरना धारन करके म्याना में विरामें और आपके आगे राजविभूति नगारा, निशान खासा घोडां ४ ताके पीछे ४ घोडान पें ४ छडीदार जामें माचीन पाग कमरबंद। और मोने की छडी ताके पीछे २ छडीदार चौड़ी की छडी जियें “ क्षम्यतां, इतरत्र कमलकोमलचरणां मृदतया निर्धयितां ” इत्यादि संस्कृत अनेक गद्य तथा पद्य ऊँचे तथा मधुर स्वरीके स्वर सों पढ़त चलें । उनकी पीछे शंख चौड़ी के बटे ऊँचे दंडपर तामें रेशमी ध्वजा, तामें हनुमानजी को चित्र ऊपर चक्रराज को चित्र फहरातें चलें । और सब में आगे राज के बाजा बजतें चलें । या रीति में जहाँ कहीं भी पथारं आपकी पथरामनी होय वा अद्भुत सवारी की झांकी जयजंगलधर बादशाह महाराजा श्रीहंगरसिंहजी की कृपा-से बीकानेरवासीन कों दर्शन भए ।

पीछे थोड़ेही दिनन में मंदिरवारे अधिकारी भोगीलाल कों दरबारने हुकम दियो कि—“ अधिकारीजी, मेरो मनोरथ युगलस्वरूपकी झांकी अग्नि दहन करत समय की करये को मनोरथ है, और यही श्रीगोविन्दमंथु की छैली भाजा भी है, जो आप स्वाक्ष करो. सो यह पालन करवेको यही मौका है । सो आपकूं मेरी तरफ से विनति करकें स्व. डाटमाट में दक्षिण पथरावे । और जैसे श्रीमदाचार्यजीने दिग्विजय गान्धार्य किया ताही प्रमाण देवाटन करो और आपको ग्याह करकें पीछे बीकानेर पथराय लावो, तब मेरो मनोरथ पूर्ण होय । स्वर्च को प्रबंध राज के खजाने से होयगा । ” यह हुकम दरबार की मुजते ही परम वैष्णव श्रीबीकानेरनरेश को मनोरथ तथा श्रीगोविन्दमहाप्रभु की आज्ञाको पालन करना अपना परम कर्तव्य समझकें भोगीलालने ५ तो पंडित जों आपके पासमें ठहरतें, और सब शास्त्रन में निपुण

हते, उनमें से कन्हैयालालशास्त्री, जो राजके सरस्वती भंडारके संरक्षक, नारायण शास्त्रीजी दत्तिया के प्रखर विद्वान् उनके शिष्य मदनमोहनशास्त्री तथा कन्हैयालालजी शास्त्री के छोटे भ्राता पद्मगेन्द्र शास्त्री इनके संग लीने, और बीकानेर में लवानमा तथा अपने गुरुज परदार व सिपाही आपके सुपुत्र करके बड़े ठाटमाट में मद्रास पधार। वो आपका खटला ७६ आदमीन से खाने होके प्रथम नागौर मुकाम भयो। वहाँ पंडितन ने यह प्रश्न कियो जो कोई श्रीवल्लभकुल के बालक सिंहासन पे विराज अपने पादुकापूजन ही करावे और आपके साथ में जो यह राज तथा देवविभूति साथमें रखी जाय है याको कदा प्रमाण है? वही प्रश्न कु महाराजने और शास्त्री कन्हैयालालजी प्रभूतिनने वेद पुराण श्रुति स्मृति आदिसो पादुकापूजन सिद्ध करके नागौरके विद्वान की पादुकापूजन में संमति कराय लीनी। आगे मूडवा में भी ऐसे शास्त्रार्थ कर वहाँसे भी सम्मति कराय आप गुजरात पधार और वहाँ एक लक्ष श्रीमदष्टादशाक्षर गोपालमंत्र को पुरश्चरण करके बाके होम कमल के पत्रान में खीर भर कर तर्पण तथा ब्राह्मणभोजन कराय अजमेर तक पंगरस्ता पधार। पाछे रेलद्वारा अमदावाद बंधई होते हुए मद्रास पधार मगधर मुद में श्रीभोगीरथीजी बहूजी से विवाह करके दक्षिण की सय यात्रा करके शास्त्रार्थ करते, पादुकापूजन पे संमति कराते पंडितन को सत्कार करते भये दक्षिण हैदराबाद पूना होके बम्बई पधार।

पीछे बीकानेर सं. १९८२ में पधार महाराज श्री हंगरसिंहजी को युगल स्वरूप। झाँकी कराय दरबार के मनोरथ निर्विघ्नता से पूर्ण कियो पादुकापूजन को शास्त्रार्थ व सय देशन के पंडितनकी सम्मतिको पादुकापूजनको ग्रंथ भेरी प्राप्त है। यदि कोई देखो चाहे तो देखे। और भी देवकीनंदनार्यजी के अनेक दिव्य चरित्र है सो मेरे जैसो पामर कहा समझे? और लिख सके? १ छोटेमो चरित्र कृतकामिषेकको लिखकर अपनी जिह्वा पवित्र आप समस्त वैष्णवन को कृपा में करी है। यामें प्रमादमं अशुद्धि या झुटि होय तो आप कृपा करके सुधारेंगे। और या संबंधमे गोस्वामी श्रीदेवकीनंदनार्यजी महाराज तथा आपके मुख्य सेवक बीकानेरनरेश श्री हंगरसिंहजी के चित्रनके दर्शन करके नेत्रन को सफल करें।

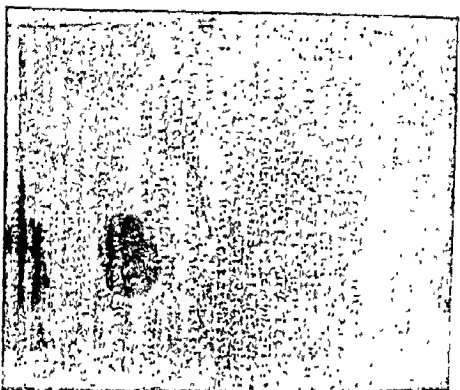




સુપ્રસિદ્ધ રાદેરી શેઠશ્રી ગોવિન્દરાય માણેકલાલ
(કલિંગસરના અગ્રણી દેવાળી)



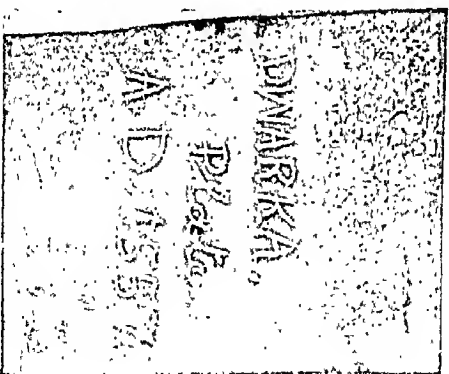
ભગવદ્ભૂપરાયણ શેઠશ્રી ગિરિધરલાલ હરિલાલ

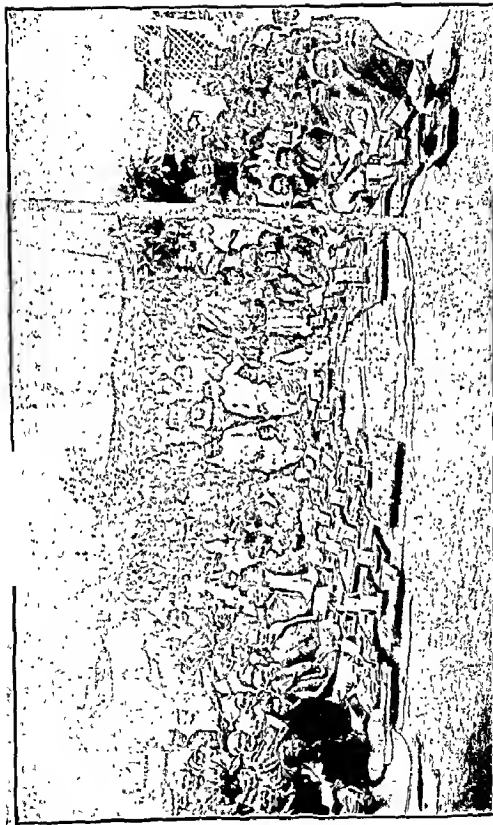


शान्तिदक्षिण मञ्जुशरणि। द्वास्ताना

गुणानि काव्योने अविष्टं लक्षणम्.

Samiti Mahatma. Narayan





ધાર્વીના મહાન પ્રતોદય.

પુષ્ટિમાર્ગનો ઇતિહાસ.

શ્રીમદાચાર્યચરિત્ર.

[નોંધઃ—શુદ્ધાર્થ-પુષ્ટિમંત્રિમાર્ગના પ્રકટકર્તા અખંડબ્રહ્મસ્વાચાર્ય જ્ઞાનપુર શ્રીમદાચાર્ય-ચાર્યચરણના ચરિત્રવિષયક અનેક સંસ્કૃત-પ્રાકૃત મંચરત્નો વિરાજે છે, તથાપિ એ પ્રયોગમાં આધુનિક દષ્ટિએ ઇતિહાસનું જે પ્રાધાન્ય રહેવું જોઈએ તે રહ્યું નથી, માટે તે આધુનિકોની રચિતે પાત્ર થતા નથી એવો ખવનિ ધવો સમય થયા ક્ષણપિય થાય છે. જો કે જનારસવાળા પરમ ભગવદ્ભક્ત ભારતેકું આશુ હરિચન્દ્રએ શ્રીમદાચાર્યચરણનું ચરિત્ર ઇતિહાસની દષ્ટિએ લખવું શરૂ કરેલું, પરંતુ તેને લગતા સંપૂર્ણ સાધનોને અભાવે તે અસંપૂર્ણ રહ્યું હતું. ત્યારબાદ સદ્ગત રા. જ. લલિતભાઈ પ્રાણવલ્લભદાસે એ કાર્ય હાથમાં લીધું અને ઉપરિયત સાધનોને આધારે શ્રીમદાચાર્યશ્રીનું ચરિત્ર તૈયાર કરીને પ્રકટ થયું અને તે લોકહારને પાત્ર પળ થયું. જો કે એ મંચ, ધવો પ્રાચીન તેમજ નવીન મંચો અને કેટલાક અનુભવી સાંપ્રદાયિક વિદ્વાનોની સલાહવાળી લખાવેસો છે, તથાપિ સાધનોના અભાવે તેમાં ઇતિહાસનું અપેક્ષિત પ્રાધાન્ય સર્વોચ્ચ વ્યાપ્ત થઈ રહ્યું નથી. એ દિશામાં સાંપ્રદાયિક વિદ્વાનોએ એક મદાનુ પ્રયાસ કરવાની જરૂર છે અને તે સ્ત્રી શોધયોજા કરનારી એક સમિતિ નીમવાની પણ ધવો અગત્ય છે. આ કાર્ય કામ પ્રગતિપ્રાપ્તિની સંરથાથીજ થઈ શકે તેવું છે, અને તે આવાચરયક છે. ખેદની વાત છે કે 'શ્રીવંચાર્યચરિત્ર' નું તે તરફ ખ્યાન પણ ખેંચાયું જતાનું નથી અને તે દિશામાં તેજી સારી પ્રગતિ કરી દેવા તે પણ જરૂરમાં આવ્યું નથી. ખેર, સાંપ્રદાયિક વિચોમાં રસ લેનારા વિદ્વાનો ફેલુપણ જાળવ થઈ એ દિશામાં પોતાની રચિતો વ્યવ કરવા કટિબદ્ધ થશે તો સંપ્રદાયના એક મદાકારીના પ્રારંભ થયેલો મળાશે. જો કે આ કાર્ય અતિપ્રયત્નસાધ્ય છે અને તે માટે લાંબા સમયનો બોમ આપવો પડે તેમ છે, જ્યાં ઉપલબ્ધ સાધનોને આધારે શ્રીમદાચાર્યશ્રીનાં ચરિત્રના પૂરક પૂરક અંશો અને ઉપર જતાવેલા શીર્ષક નીચે પ્રકટ કરવાનો નિમય કયો છે. મોટે ભાગે ઐતિહાસિક પુરાવાને આધારેજ લખાય તો ઉત્તમ, એવો ઉદેશ રાખવામાં આવ્યો છે. આ આચરયક કાર્યમાં મદાવન્ય કરવા માટે અને અનુભવીઓને આમંત્રણ કરીએ છીએ.]

વંશાદિપરિચય.

શ્રીમદાચાર્યચરણના વંશાદિ તરફ દષ્ટિપાત કરતાં આ પ્રમાણે નિઃકથ ઉપર અવાચ છે. આપશ્રી જે કુલમાં પ્રકટ થયતા તે કુલ ધવું ઉત્તમ અને ધર્મનિષ્ઠ હતું. આપશ્રીના એ સહાચારપરાયણ પૂર્વજો દક્ષિણ સિંહમાં આંધ્ર-તેલંગ-દેશમાં રહેતા હતા. એઓનું નિવાસસ્થાન કાંકરવલીમાં હતું. કેટલાકે એને કાંકરવાડ, કાંકુલકર વગેરે નામોથી ઓળખે છે. 'આ ગામ વ્યોમરથંબ પર્વત પાસે કૃષ્ણા નદીની દક્ષિણે હતું' એમ લખીને, તેની નીચે એક ટિપ્પણ લખતાં સદ્ગત રા. જ. લલિતભાઈ જણાવે છે કે:-"આ ગામ નિત્રાગ સરકારની હાલેની સરહદમાં હતું એમ અનુમાન થાય છે." વસ્તુતઃ એ વિરે હાલ કાંઈ ચોક્કસ પ્રમાણ નથી કે

એ આમવાળો પ્રદેશ હાલ કયે ઠેકાણે છે ? હાલ ગિરાજતા સંપ્રદાયના આચાર્ય-શ્રીઓ તેમજ સાંપ્રદાયિક વિદ્યાવિદ્વાસીઓ દક્ષિણુયાત્રાવેળાએ એ સ્થલ વિષે શોધખોળ કરીને કાંઈ નવો પ્રકાશ પાડશે એવી આશા રાખીશું. વૈષ્ણવધર્મપતાકાના પ્રકાશક શ્રીયુત આચર કે જેઓ એક તૈલંગ દેશના નિવાસી છે, તેઓના કહેવા ઉપરથી એમ જણાય છે કે એ ગામ ગોદાવરીના પૂર્વ કાંઠે હતું, પરંતુ હાલ તેના સ્થલમાં અને નામમાં પરિવર્તન થઈ ગયું છે. સંભવિત છે કે એવાં નાનાં ગામો કાંઈ સદીઓ સુધી એકજ સ્વરૂપમાં સ્થિતિ કરતાં ન હોય.

કુલ, ગોત્ર, આદિ.

આચાર્યશ્રીના વંશના મૂલ પુરુષ ગોવિંદાચાર્યજી હતા. જાતિ તૈલંગ બ્રાહ્મણ. વેદ-કૃષ્ણયજુર્વેદ. શાખા-તૈત્તિરીય. ગોત્ર-ભારદ્વાજ. કુલ વેલનાડું કે વેલનાટી એવા નામથી ઓળખાતું અને તે પ્રભુજી ઉચ્ચ ગણવામાં આવતું હતું. એ કુલની અવટક 'ખંભપટ્ટીવાર' હતી. કુલની દેવી રેણુકા મનાતી. પરંપરાપ્રાપ્ત વૈષ્ણવદીક્ષા અહિં કરવાનું એ કુલમાં પ્રચલિત હોવાથી એ કુલ વૈષ્ણવ તરીકે ઓળખાતું હતું. યજ્ઞયાગાદિનો પ્રચાર તે વેળાએ ધણોજ હતો. વસ્તુતઃ વેદના કર્મકાંડનો પ્રચાર દક્ષિણમાં વિશેષ હતો, અને અંત્યારે પણ છે. વર્ણશ્રમધર્માનુસાર વેદિક કર્મો આમરણાંત આશ્રય એ હિંદનું ઉત્તમ આરિચ્ચ દક્ષિણમાં વિશેષ જળવાઈ રહેલું છે. આચાર્યશ્રીના પૂર્વજોમાં યજ્ઞયાગાદિ વેદિક ધર્મ કેટલો વિશેષ હતો, તે નીચે આપેલાં કોષક ઉપરથી જણાશે.

નામ.

કેટલા સોમયાગ કર્યા ?

૧. યજ્ઞનારાયણજી.

૩૨*

૨. ગંગાધર સોમયાજી.

૨૮

૩. ગણપંતિજી.

૩૦.

૪. વલ્લભજી કે બાલજી.

૫

૫. લક્ષ્મણજી.

૫

૧૦૦

સો સોમયાગ પૂર્ણ થયે તે કુલમાં પ્રભુ અવતાર ધરે છે એવી શાસ્ત્રીય માન્યતા છે. તદનુસાર સો સોમયાગ પૂર્ણ થયે શ્રીમદ્ભક્તિઆચાર્યજી પ્રકટ થયા મેટલે તેઓશ્રી ભગવન્ના અવતાર તરીકે મનાયા.

શ્રીલક્ષ્મણજી.

શ્રીલક્ષ્મણજીનું પ્રાકટ્ય ક્યારે થયું તેનું કાંઈ ચોક્કસ પ્રમાણ મળતું નથી. લક્ષ્મણજીના બીજા એક ભાતા હતા, તેમનું નામ જનાર્દન ભટ્ટ હતું. ભારતેન્ડ

* મૂલ પુરુષ ગોવિંદાચાર્યના પુત્ર વલ્લભદીક્ષિત, અને તેમના પુત્ર યજ્ઞનારાયણજી, યજ્ઞનારાયણજીના પુત્ર ઉત્તમ પૂર્વજો ક્રમશઃ વેદ, ગણેશ, સુષો, શોષ, એમના અવતાર ગણાતા.

બાપુ હરિશ્ચન્દ્ર લખે છે કે:-“ લક્ષ્મણલટ્ટની નાની અવસ્થામાં જ એમના પિતા પરલોકવાસી થયા. એથી એમનું લાલનપાલન એમનાં માતાના પિતાએ કર્યું. લક્ષ્મણલટ્ટના માતામહે લક્ષ્મણલટ્ટને વિદ્યાધ્યયન કરાવ્યું હતું.” એ રીતે લક્ષ્મણલટ્ટ એક સમર્થ વિદ્વાન હતા. પ્રસન્નચર્યનું પાલન કરીને વિદ્યાધ્યયન પૂર્ણ કર્યા પછી પોતે ગૃહસ્થાશ્રમમાં પ્રવેશ કર્યો. વિદ્યાનગરના મુશમાં નામના તે વેળાના પુરોહિતની કન્યા શ્રીયત્તામાગાજીની સાથે શ્રીલક્ષ્મણલટ્ટના લગ્ન થયાં. ગૃહસ્થાશ્રમના સ્વીકારને પરિણામે લક્ષ્મણલટ્ટને ૩ પુત્રરત્ન અને ૨ કન્યારત્નો પ્રાપ્ત થયાં. પ્રથમ પુત્રનું નામ નારાયણલટ્ટ, ઉપનામ રામકૃષ્ણલટ્ટ હતું. એઓએ યોગ્ય સમય પછી-સંન્યાસ લીધો હતો અને તપોમય જીવન ગાળવાનો આરંભ કર્યો હતો. સંન્યસ્તાવસ્થામાં એઓનું નામ કૃષ્ણપુરી પડ્યું. તપોમયથી એમણે એવી મિદિ પ્રાપ્ત કરી હતી કે તેઓ પગમાં પાંદુકા પહેરીને ગંગાજીના પ્રવાહ ઉપર સ્થળની પેઠે ચાલી શકતા હતા !

એક સત્યનો પ્રકાશ.

શ્રીરામકૃષ્ણલટ્ટના આ ચરિત્રનો આરોપ શ્રીમદ્દક્ષિણાર્ચજીના ચરિત્ર ઉપર કરીને, “ તેઓશ્રી પ્રથમ સંન્યાસી થયા અને પછી ગૃહસ્થાશ્રમી થયા ” એવા મનમાનતા દેખમૂલક આરોપો આધુનિકો તરફથી થાય છે. એ આરોપો ઇતિહાસ-વિરુદ્ધ અને મનઃકલ્પિત હોવાથી ઉપેક્ષ્ય છે. શુદ્ધ ભાવે વસ્તુરિયતિનું અન્વેષણ કરનારને તો ઉપર જણાવેલો જ ઇતિહાસ મળ્યો અને તેના ઉપરથી તે ઉક્ત નિશ્ચય ઉપરજ આવશે. જેઓને તેમ કરવાની ઇચ્છા નથી, જેઓને અશ્વત્થ આરોપરૂપ પાપપંકને ખુંદવાની ટેવજ પડી ગઈ છે, તેને માટે કહેવાનું શું હોય ? રામકૃષ્ણલટ્ટજીએ ગૃહસ્થાશ્રમનો સ્વીકાર ન કર્યો, અને યદ્યદ્દેવ વિરજેત્તદ્દેવ પ્રવ્રજેત્ એ શુલ્ક-નુસાર શ્રીશંકરાચાર્યજીની પેઠે તેમણે સંન્યાસ સ્વીકાર્યો, તેમાં તેમણે યોગ્યજ કર્યું. તેમનાં એ ચરિત્રને શ્રીમદ્દક્ષિણાર્ચજીના ચરિત્ર સાથે સંકલનવાની પ્રૃથક્કા અને તેમ કરીને એક મહાન ભ્રમિમાર્ગના ચંર્યાપક ઉપર ગમે તેવા રોપો પડી કાઢવાની તત્પરતા ઉક્ત ઇતિહાસથી તદ્દન ખુલી પડે છે અને સત્યચોધકોને સત્ય વસ્તુરિય-તિનું ભાન કરાવે છે.

શ્રીમદ્દાક્ષિણાર્ચજી ઇલક્ષ્મણલટ્ટના ખીલ પુત્રરત્ન છે. ત્રીજા પુત્રરત્નનું નામ રામચંદ્રલટ્ટ હતું. રામચંદ્રલટ્ટ મહાપંડિત હતા, અને વેદાંત, મીમાંસા, વ્યાકરણાદિમાં એમની વિદ્વતા અપૂર્વ હતી. લક્ષ્મણલટ્ટના મામા પોતાને પુત્ર ન હોવાથી રામચંદ્રલટ્ટને પોતાને ત્યાં લઈ ગયા હતા એમણે જગજગુરુક મોવારસીયમહાકવ્ય આદિ અનેક અન્યરત્નો રચ્યાં છે. એઓ અયોધ્યામાં રહેતા હતા. એવા સમર્થ વિદ્વાન અને પારી હતા કે તેમને પરાસ્ત કરવાની શક્તિ તત્કાલીન પંડિતોમાં ખમિતજ હતી નહિ. લક્ષ્મણલટ્ટનાં તે કન્યારત્નોનાં નામો અનુક્રમે સરસ્વતી અને સુવદ્રા હતાં.

અનુવાદ.

૧. વિધાનગર, શ્રીનૃસિંહવર્મા ચક્રવર્તી કલ્યાણકારી સાંચાલ્યમાં, મીન માસમાં-ચૈત્ર માસમાં-એકાદશીના રોજ લોકગુરુ આચાર્ય ચક્રવર્તી શ્રીપ્રભુવલ્લભને સુવર્ણલિપેક થયો.

૨. સાત દિવસ સુધી ભદ્રારકને (આચાર્યશ્રીને) અલિપેક થયા પછી પૃથ્વી, દેવ, દક્ષિણા, સવા લાખ સોના, ચાંદી અને તાંબાના શિલ્પો નિવેદન કર્યા.

૩. ગાય, હાથી, બળદ, घोडा એ કર્મ કરનારાઓને આપ્યું.

૪. દ્વાદશીના રોજ અંરુણોદય વેળાએ-વહાણામાં-મહારાણી, મુખ્ય પટ્ટરાણી મીનાક્ષી દેવીએ પોતાના હાથે અલિપેક કરાતા આચાર્યશ્રીને ચાંદીવડે અલિપેક કર્યો.

૫. આચાર્ય ચક્રવર્તી પોતાના કાકા સાથે રાજપરિષદમાં બિરાજ્યા.

૬. હાથી-૧૬, घोडा ૨૧, બળદ ૨૫, કુમારિકા ૧૬, વાછરડા સાથેની અને દાગીનાથી શણગારેલી ગાયો-૨૭.

૭. સોનાના ઘડા-૧૦૮, ચાંદીનાં ૧૨૧, તાંબાના ૧૩૧, કાંસાના ૧૭૫, માટીના ૨૪૦.

૮. સોનાનાં અને ચાંદીનાં કૃમીસન અને ભદ્રાસન, સોનાની પાલખી, છત્ર, આમર, નક્ષત્રમાલિકા, (૧) કૃત્તિકા, (૧) પંખાઝારી.

૯. કડાં, બાણુળાંદ, કુંડલ, રત્નના અલંકાર સાથે. રાયલું સેનાપતિ, શંભે સ્વામી શાસ્ત્રી, આચાર્યકૃષ્ણમૂર્તિ, અમાત્યવેંકટ, નૃસિંહદેવ.

૧૦. વાલ્મિકી (રામાયણી) લોકેશ્વરી ટીકા, આચાર્ય ચક્રવર્તીએ રચેલી વિજયાદશમીના રોજ પૂર્ણ થઈ. શ્રીરામલીલા કૃપા સમક્ષ પ્રેરણાથી લોકગુરુ આચાર્યચક્રવર્તી શ્રીમહાભાગવતનો નિત્યનો પાઠક્રમ પંચસપ્ત (પાંચસોમી કે પોણીસોમી) આવૃત્તિ પૂર્ણ થઈ. કાર્તિક શુકલ-૧૫મી ૧૫૬૫.

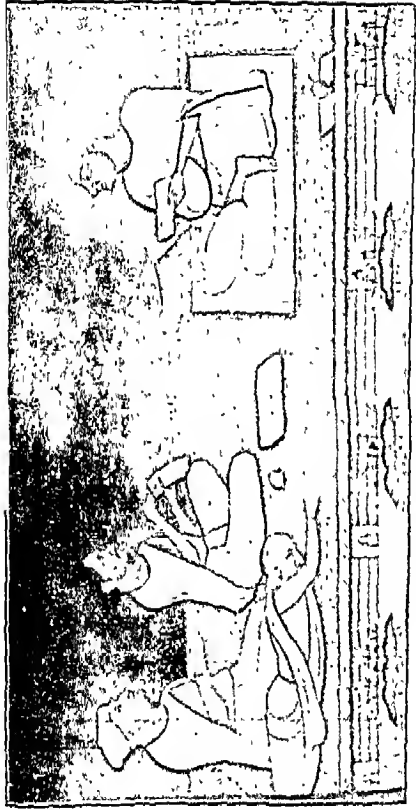
૧૧. પટ્ટરાણી.

૧૨. પોતાના ઈષ્ટ જાલારામ (જાલાલ ૧) સાથે આચાર્યચક્રવર્તીને અલિપેક કરીને પોતાના ઈષ્ટગુરુને સમર્પવા.

(આ લેખ પ્રાચીનમાર્ગના સ્થાપક શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યચરણનાં જીવનચરિત્રમાંના એક મહાન પ્રસંગનો ચિતાર આપે છે.)

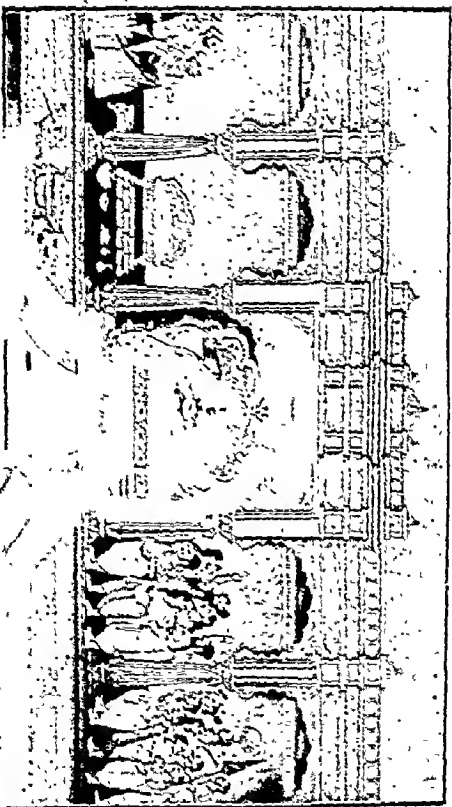
નોંધ:-આ જોદકામમાં મળેલી મૂર્તિઓ તથા બીજી બધી પ્રાચીન વસ્તુઓ ચાંદીના ખીલોના, ચાંદીના હોમકુંડ આદિ નિઠિયોદવાળા સુપ્રસિદ્ધ વૈષ્ણવ સરદાર દેસાઈ જોષાલદાસ વિહારીદાસ મારફત મળી અને તે કામવંતમાં શ્રીદેવકીનંદના આચાર્ય પ્રાચીન સંગ્રહાલયમાં જળવી રાખવામાં આવી છે.

૧. આ મહાન પ્રસંગ એટલે શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યે કરેલા કનકાલિપેક સમજવો.



જગદગુરુ શ્રીમદ્દત્તભાગ્યાર્યેભ્ય મહામયુષ્ય.
(શ્રીકૃષ્ણગદ્યાના ચિત્રની પ્રતિરૂપિ.)
પ્રાચીન મં. ૧૪૩૫ એવ તલ ૧૧

५. म. शिखर २



श्रीवह्नीयसर्वस्व.

दक्षिण में तैलङ्ग देश में आंध्र प्रान्त में आकलीडु जिला में, स्वम्म, काकरिपल्लि ग्राम में यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा भारद्वाज गोत्र में महादेव पात्र के वंश के आश्रय रहते थे। इसी वंश में रामनारायण भट्ट के पुत्र यज्ञनारायण सोमयागी हुए। ये वेद के अवतार थे, इन पर वेद पुरुष अत्यन्त ही प्रसन्न रहते थे। जब इन को वेद में कोई संदेह होता तब स्नान कर के वेद पुरुष का ध्यान करते और वेद पुरुष प्रत्यक्ष हो कर संदेह नाश कर देते।

एक बेर मायावादियों ने हँसी में इन से कहा कि आप वेद के अवतार हो तो वक्रे से वेद पढ़वावो। तब यज्ञनारायण जी ने वक्रे की ओर देख कर कहा "भट्टिलय त्वं वेदानुचारय" इतना सुनते ही वह वक्रे वेदपाठ करने लगा। ऐसे ही दक्षिण में उन ने अनेक समझकार दिखाये। ये श्री रामानुजाचार्य मत के बड़ पण्डित थे।

जब यज्ञनारायण जी ने पहिला सोमयाग किया तब अग्निकुण्ड में से यह शब्द सुन पड़ा कि ऐसे सो सोमयाग के पाँछे भगवान का अवतार होता है। बीस सोमयाग करके ये देवलोक पधारे।

इनके पुत्र गङ्गाधर भट्ट सोमयाजी साक्षात् शिव जी के अवतार थे। जिन्होंने अवस्थ-स्नान करती समय लोगों की प्रत्यक्ष अपने केश में से जलधारा निकलती दिखाई। अष्टादस सोमयाग कर के ये देवलोक गये।

इन के पुत्र गणपति सोमयागी थे, काशी में पण्डितों की सभा में इन्होंने गणेश की भाँति दर्शन दिया और इसी से सभा में इन का प्रथम पूजन होता था। एक बेर सय प्रसिद्ध नगरों में जाकर शास्त्र का दिग्विजय किया था। तीस यज्ञ करके ये देवलोक सिधारे।

इन को तीन खी थीं उन में ज्येष्ठ स्त्री के ज्येष्ठ पुत्र बल्लभभट्ट साक्षात् सूर्य के अवतार थे, क्योंकि एक बार इन्होंने यज्ञ करते करते सायंकाल की समय प्रहर दिन चढ़े के सूर्य की भाँति दर्शन दिया था, पाँच यज्ञ करके ये भी देवलोक गये।

इनके पुत्र लक्ष्मणभट्टजी बड़े विद्वान साक्षात् अक्षरवत्स शेष जी के अवतार हुए। इन की छोटी ही अवस्था में इन के पिता का परत्येक हुआ था। इससे इन के मातामह ने स्नान-पालन कर के इन को विद्या पढ़ाया था। इन की खी देवकी जी का अवतार श्रीहनुमान् जी थी। इन के तीन पुत्र हुए। बड़े भाई का नाम नारायणभट्ट खपनाम रामकृष्ण भट्ट। ये कुछ दिन पाँछे संन्यासी हो गये तब केशवपुरी नाम पड़ा। यह ऐसे सिद्ध थे कि खटाऊँ पहिने गङ्गा पर स्थल की भाँति चल्ते थे। मझले श्रीमहाप्रभु जी और छोटे रामचन्द्र भट्ट जी। ये महाभारी पण्डित थे। वेदान्त, गीर्वासा व्याकरण, काव्य और साहित्य बहुत अच्छा जानते थे।

लक्ष्मणभट्टजी के मातुल वसिष्ठ गोत्र के ब्राह्मण अपुत्र होने के कारण इन्हें अपने घर ले गये थे। कृष्णकुतुहल गोपाललीला महाकाव्य इत्यादि कई ग्रन्थ इन्होंने बनाये हैं। ये श्री महाभूषजी के विद्या में शिष्य थे और प्रायः अयोध्या में रहते थे। वादी ऐसे भारी थे कि प्रायः उस काल के सब पण्डितों को जीता था, यहां तक कि इसी वाद के लाग पर इन को विष दे दिया।

लक्ष्मणभट्टजी के पूर्व पुरुषोंने पञ्चानवे सोमयाग किये थे, सो इन्होंने पांच और कर के सौ पूरे किये। अन्त के सोमयज्ञ का आरम्भ चैत्र सुदी ६ सोमवार पुष्य नक्षत्र अभिजित् योग में संवत् १५३२ में किया। जब यज्ञ समाप्त हुआ तो कुण्ड से यह अलौकिक वाणी सुन पड़ी कि तुम्हारे कुल में पूर्ण पुरुषोत्तम का प्रागव्य होगा, यह वाणी सुनते ही यज्ञ में सब को बड़ा आनन्द हुआ और लक्ष्मणभट्टजी ने उसी समय काशी में सवा उष्ट्र ब्राह्मण भोजन का सङ्ग्रह किया। उसी समय में संयोग से दक्षिण में कुछ यवनों का उपद्रव भी हुआ इसे लक्ष्मणभट्टजी कुटुम्ब को ले कर और बहुत सा द्रव्य साथ ले कर काशी की ओर चले।

विदित हो कि श्रीलक्ष्मणभट्टजी संवत् १५३२ के चैत्र के अंत में बहुत से विद्यार्थी और ब्राह्मण भोजन के हेतु बहुत सा द्रव्य ले कर काशी चले और कांकरवार से सात मन्त्रिण पर भृत्यसार्थक तीर्थ में जहां सर्वसोभद्रकुण्ड में राजा चरुण ने अपने यज्ञ का अवस्यस्तान कियों है, तीन दिन तक रहे। वहां वैशाल वदी ११ की अर्द्धरात्र को श्रीठाकुरजी ने श्री रामिनीजी सहित दर्शन दिया और आज्ञा किया कि जब तुम काशी से लौट कर चम्पारण्य आओगे सब तुम्हारे यहां हमारा प्रागव्य होगा। यह आज्ञा कर के एक उपरना, एक तुलसी की नाला, एक कण्ठी, दे कर श्री मुख में कहा कि जब बालक हो तब उसको यह उपरना उडा देना, यह कण्ठी माला पहना देना और यह बीडा जन्म घोट्टी में पीना देना। इतना सुनते ही जब लक्ष्मणभट्टजी नींद से चौक पड़े तो इन वस्तुओं के सिवा और वहां कुछ न देखा।

लक्ष्मणभट्टजी भीमरथी, उज्जैन, पुष्कर, इत्यादि तीर्थ होते हुए प्रयाग आये। वहां भारद्वाज ऋषिके आश्रम में आकाशवाणी हुई कि तुम हमारे गोत्रमें धन्य हो, जिसके घर साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम का प्रागव्य होगा।

प्रयाग से भट्टजी काशी आये। वहां गङ्गा स्नान काशीविधेधर का दर्शन करके एक स्थान लेकर उत्तरे और वेद का पारायण अग्निहोत्र और ब्राह्मणभोजन प्रारम्भ किया और थोड़े दिनों में सवा लाख ब्राह्मण का भोजन समाप्त किया। इसी समयमें दिल्लीके यवन राज्य में सुगरी और पठानोंके विरोधके कारण बड़ा उपद्रव उठा और भारतवर्षके पश्चिमोत्तर प्रान्तमें चारों ओर हल चल पड़ गई। लोग नगर छोड़ कर गांवमें बसने लगे। लक्ष्मणभट्टजीके जातिके लोग भी काशी छोड़ कर डगर उधर चले गये और लक्ष्मणभट्टजी भी क्रदम्ब लेकर दक्षिणकी ओर चले।

सात महीनका गमश्राव हुआ सां-माताजीने केले के पत्तेमें वह गर्भ लपेट कर शमीके लोदरेमें रख दिया । यहांसे ये लोग चोंडा नगर गये और वहां सुना कि देशोपद्रव सब शांत हो गया । यहां एक रात्रि निवास करके जब लक्ष्मणभट्टजी फिर काशीकी ओर फिरे तो उसी शमीके वृक्षके नीचे चालीस हाथके लंबे चौड़े अग्निकुण्डमें बालक खेलता देखा । श्रीहृदमगारूजीके स्तनसे दूधकी धारा उस समय निकली, श्रीमहाप्रभुजीके मुखारविन्दमें पड़ी । तब श्रीलक्ष्मणभट्टजीने वेद-मन्त्रसे और माताजीने अपनी भाषामें अग्नि और वरुणकी स्तुति किया और अग्निने हृदमगारूजीको मार्ग दिया । माताजीने बड़े आनंद और वात्सल्यसे पुत्रको गोदमें उठा लिया । उस समय आकाशसे पुष्पद्युष्टि हुई और देवताओंने प्रत्यक्ष ही कर वै जैकार किया । सबके चित्तमें अकस्मात् नन्दमहोत्सवके आनन्दका आविर्भाव हुआ ।

श्रीलक्ष्मणभट्टजी बाग्यको लेकर काशी फिर आए और श्रीठाकुरजीकी आज्ञा प्रमाण कण्ठी, माला, उपरना और धोड़ी श्रीमहाप्रभुजीको दिया । तत्पश्चात् शास्त्रके अनुसार नाग-करणादिक सब संस्कार बड़े आनन्दसे हुए और जब श्रीहृदमगारूजी गङ्गा पूजनेको गईं तब श्रीगङ्गाजीने माताकी गोदही में श्रीमहाप्रभुजीका चरणस्पर्श किया और त्रियों सहित माताजीके बरदान मांगनेपर जलमें से शब्द सुन पडा कि तुम्हारा पुत्र सब बादियोंको जीतेगा ।

अथ जन्मपत्री ।

स्वस्ति श्रीमन्पतिविक्रमार्क सम्यग्दे १५३५ शके १४०० वैशाख मासे कृष्णपक्षे तिथौ १० रविवासरे घ० १६ प० १४ परच ११ तिथौ घनिष्ठा नक्षत्रे घ० ३८ प० ४६ शुभयोगे घ० ३८ प० २ चवर्गणं श्रीगुर्योदयान् इष्ट घ० ३७ प० ४२ अधिक लग्नादये श्रीलक्ष्मणभट्टपत्नी पुत्र रत्नमजीजनत् ।

सूर्य० १२।२२।११ लग्न ७।१०।१९।३१ दिनमान ३०।२८ रात्रिमान २९।३२। एक बेर श्रीहृदमगारूजी की व्रजयात्राकी इच्छा हुई और आपने अपने पतिसे निवेदन किया कि कृपापूर्वक व्रज चलिये, परन्तु भट्टजीने कहा कि पुत्रको यत्रोपवीत करके चले। यद्यपि श्रीहृदमा-गारूजीने पतिकी आज्ञाका कुछ उत्तर नहीं दिया तथापि व्रजयात्राकी आपकी चर्चा ही दृष्टा थी यहां तक कि एक बेर श्रीमहाप्रभुजीको गोदमें लिये आप बैठी थीं सो व्रजका स्मरण करके उनके नेत्रोंमें जल भर आया । सर्वान्तरजामी श्रीमहाप्रभुजीने माताकी इच्छा पूर्ण करनेको जम्हाई लिया और मुखारविन्दमें चौरासी कोस व्रजका दर्शन कराया । श्रीहृदमगारूजीको यह देख कर बड़ा ही आश्चर्य हुआ और आपने लक्ष्मणभट्टजीसे सब वृत्तान्त कहा । भट्टजीने कहा कि एक बेर हम अग्निशायनमें भूमिपर शयन करते थे तब अग्निने स्वयं हमसे आज्ञा कि तुम इस बाग्यको विषयों सन्देह मत करना सो यह बाग्य अलौकिक साक्ष्यत् नारायणका स्वरूप है ।

एक बेर श्रीविश्वनाथजीने यह विचार किया कि श्रीठाकुरजीने हम को तो माया मत फैलानेकी आज्ञा दिया है और आप अपने संप्रदाय फैलानेको क्यों प्रगट हुए हैं ? इससे एक बेर दर्शन तो करना चाहिये कि आपने कैसा वेप लिया है और क्या इच्छा है । यह विचार कर योगी बनकर एक सोनेका बघनहां हाथमें लेकर श्रीलक्ष्मणभट्टजीके द्वार पर आये । श्रीमहाप्रभूजी उस समय बलान्त रुदन करने लगे और कोई प्रकारसे चुप न हो । तब लक्ष्मणभट्टजीने अपने पास बैठे हुए शिष्योंसे पूछा कि आज कल बालकके ग्रंथ कैसे हैं ? ब्राह्मणीने उत्तर दिया कि ग्रंथ तो अच्छे हैं परन्तु एक बघनहां इसके गलेमें पड़ा रहे तो अच्छा है । श्रीलक्ष्मणभट्टजीने अपने शिष्योंको आज्ञा किया कि अभी बघनहां गोल लेकर सोनेसे मढ़ाकर पोहवा लाओ । शिष्य लोग जैसे ही बाहर निकले वैसे ही देखा कि एक योगी बघनहां लिये सड़ा है । बड़े हर्षसे शिष्य लोग योगीको भीतर ले गये । श्रीमहादेवजीने श्रीमहाप्रभूजीको कटुला पहनाकर पूछा “ भगवन् कोयं वेपः ” श्रीमहाप्रभूजीने उसी क्षण उत्तर दिया “ सर्वेश्वर सर्वोपा निजेष्टतः करिष्यति ” यह सुनकर सब लोगोंको बड़ा आश्चर्य हुआ कि इतने छोटे बालकके मुखसे शब्द स्पष्ट और फिर संस्कृत कैसे निकल ? किसीने कहा योगी बड़े सिद्ध हैं, किसीने कहा नहीं बालक ही बड़ा प्रतापी है । उस पीछे श्रीमहादेवजी कई बेर योगीके बेपमें खिलौना लेकर प्रायः मिलनेको आते थे ।

संवत् १५४० चैत्र बदी ९ अर्थात् श्रीरामनवमी रविवारको लक्ष्मणभट्टजीने वेदविधिसे आपका यज्ञोपवीत किया । सोरोंजी नामक प्रसिद्ध बाराह क्षेत्रमें केशवानन्द नामके एक बड़े सिद्ध योगी वैष्णव संप्रदायके थे, सो जब श्रीमहाप्रभूजीका चम्पारण्यमें प्रागट्य हुआ उसी समय उन्होंने अपने शिष्योंसे कहा कि इस समय गृध्वीपर कहीं पुरुषोत्तमका अवतार हुआ है उनके सेवकोंमेंसे कृष्णदास मेघन नामक एक सेवक थे सो वह गुरुका वचन सुनते ही यह विचार करके घूमने निकले कि जो पुरुषोत्तमका प्रागट्य कहीं हुआ होगा दरगज होहीगे । और जो हमको नाम लेकर मुकौरंगा उसीको हम पुरुषोत्तम जानेंगे यह कृष्णदास मेघन फिरते फिरते श्रीमहाप्रभूजीके उपवित समय काशीमें आये और भीड़ देखकर जो श्रीलक्ष्मणभट्टजीके घरमें गये तो उनको देखते ही श्रीमहाप्रभूजीने आज्ञा किया “ कृष्णदास तू आयो ” उन्होंने दण्डवत करके उत्तर दिया “ जै मैं आयो ” और एक अंगूठी श्रीमहाप्रभूजीके यज्ञोपवीत भिक्षा में दी और तबसे ये आजन्म श्रीप्रभूजीके साथ ही रहे ।

उपवीत धारण करके पहले और पीछे जब आप खेलते तो ब्राह्मणके उडकोंको शिष्य बनाते और आप गुरु बनकर उपदेश करते ।

लक्ष्मणभट्टजीके घरके पास समुनदास नामक दाढ़ी रहते थे उनको श्रीमहाप्रभूजीके दर्शन साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तमके होय इससे उनका नेम था कि नित्य आपका दर्शन करके तब जब

पति । तो जब श्रीमहाप्रभुजी चरणारविन्दसे चलने लगे तब आप उनके घर पधार कर दर्शन देते सो एक दिन श्रीलक्ष्मणभट्टजीने आपसे आज्ञा किया कि शत्रुके घर आप गत पधारा करो इस पर श्रीमहाप्रभुजीने यह वाक्य पढा "क्षियो वैद्यास्तथा शत्रास्तेपि यान्ति पराङ्मति" यह सुनकर लक्ष्मणभट्टजी श्रीमहाप्रभुजीको सगुनदासजीके यहाँ जानेकी आज्ञा दिया ।

यज्ञोपवीतके पीछे श्रीमहाप्रभुजीको लक्ष्मणभट्टजी घरहीमें वेद पढाते थे परन्तु आपको बुद्धि बड़ी तीक्ष्ण थी इस हेतु असाढ़ सुदी २ पुष्यार्क योगमें माध्वानन्द स्वामीके यहाँ लक्ष्मणभट्टजीने आपको पढनेको बैठाया सो चार ही महीनेमें चारो वेद, वहाँ शाय पढकर सबको बड़ा आश्चर्य उत्पन्न किया, गुरुदक्षिणामें माध्वानन्द स्वामीने श्रीठाकुरजीकी सेवा मांगी तब आपने आज्ञा कि जब श्रीनाथजीको प्रगट करेंगे तब आपको सेवा देंगे । इन्हीको और ग्रन्थोंमें माधवेन्द्रपुरी करके लिखा है और ये मध्व सम्प्रदायके आचार्य थे । और विद्याविलास भट्टाचार्यसे आपने न्याय, पातञ्जल और काव्य पढा । श्रीमहाप्रभुजीकी विद्या देख करके लक्ष्मणभट्टजीको फिर सन्देह हुआ परन्तु श्रीठाकुरजीने स्वयमें पुनःदर्शन देकर वह सन्देह निवृत्त कर दिया । यही माधवेन्द्रपुरी श्रीकृष्णचैतन्यके मन्त्रगुरु हैं और इसी कारण श्रीमहाप्रभुजी और श्रीकृष्ण चैतन्यसे गिरभाव था और आपने उनको श्रीगोवर्द्धनकी कन्दरासे लाकर कृष्णप्रेमामृत ग्रन्थ दिया था और ऐसे ही निम्बार्क सम्प्रदायके आचार्य केशव कास्मीरीजीसे भी आपका बड़ा संग रहता था । विदित हो कि कि चैतन्य सम्प्रदायके ग्रन्थ बृहद्गौरांगणोद्देशदीपिकाके श्रीमहाप्रभुजीको चौंसठ महानुभावोंकी गिनतीमें अनन्त संहिताके ७५ वें अध्यायके प्रमाणसे श्रीशुकदेवजीका अवतार लिखा है ।

एक समय श्रीलक्ष्मणभट्टजीने मायावादी संन्यासियोंको अपने घर भोजनको बुलाया था सो श्रीमहाप्रभुजीने ऐसा शरार्थ उठाया जिसे मायावादका खण्डन होय तब लक्ष्मणभट्टजीने कहा जो अपने पर आवे उसका अपमान नहीं करना इसे आपने उनसे शरार्थ नहीं किया पर वैष्णवधर्मप्रचारकी आपको ऐसी उत्कण्ठा थी कि फासीमें जहाँ शरार्थ होता वहाँ आप जाते और वैष्णव मतका मण्डन और अन्य मतका खण्डन करते । वहाँ तक कि लक्ष्मणभट्टजीके पास लोग उराहना देने आते कि आपके पुत्रने भरी सभामें हमारा अपमान किया, तब लक्ष्मणभट्टजी आपको निषेध करते तब जिन पण्डितोंसे आप निषेध करते उन पण्डितोंसे शरार्थ न करते, उस कालमें विधनाथके सभामण्डपमें पण्डितोंकी सभा निय होती थी और ये लोग एक बात पर निर्णय करके तब उठते थे । सो श्रीमहाप्रभुजी उस सभास्थानकी भीति पर एक श्लोक नित्य लिख आते और जब पण्डित लोग उसका एक दिनमें निर्णय करते तो दूसरे दिन दूसरे श्लोकसे उनका सब निर्णय खण्डित हो जाता । ऐसे ही तीस दिन तक आपने यह खेल खेला और उसीसे पत्राव-तन्मय ग्रन्थ बन गया । एक प्रसंग यह भी है कि आपसे बहुतसे पण्डित शरार्थ करनेको आते थे और समय बहुत थोड़ा था इस लिये आपने पत्रावतन्मय ग्रन्थ करके विधेयके द्वार पर निपना

दिया था, और नगरमें चारों ओर विघ्नार्थके द्वारपर भी डगडुंगी फेर दी थी कि जिसको हमसे शास्त्रार्थ करना हो वह पहले जाकर वह पत्र देख ले। यह सुनकर जो पण्डित वह पत्र देखने जाते वह सब अपने प्रश्नका उत्तर पाकर चले जाते और इससे पत्रावलम्बन प्रथम बना।

श्रीलक्ष्मणभट्टजीको श्रीमहाप्रभुजीके इस घोर शास्त्रार्थ करनेमें बड़ा धोम हुआ और आपने वात्सल्यभावसे यह सोचा कि ऐसा न हो कि द्वेष करके जादूसे कोई पण्डित हमारे पुत्रको मार डाले यह विचार कर अपने देश जानेका मनोरथ किया क्योंकि, बारह वर्षकी काशीमें रहनेकी आपकी प्रतिज्ञा भी पूरी हो गई थी। यह सब बात विचार कर आप सहकुटुम्ब काशीसे दक्षिण चले।

वहाँसे सात मंजिल पर यह सुन कर कि विष्णुस्वामी संप्रदायके कोई पण्डित लक्ष्मणभट्टजी अपने पुत्र सहित काशीमें अनेक पण्डितोंको जीत कर यहाँ आते हैं, बहुतसे पण्डित मिल कर एक साथ लक्ष्मणभट्टजीके डेरे पर शास्त्रार्थ करने गए और जब श्रीमहाप्रभुजीने उनकी शास्त्रार्थमें जीता तब लक्ष्मणभट्टजीने प्रसन्न हो कर कहा कि 'वरदान मांगो, तब आपने दो वरदान मांगे प्रथम तो यह कि आप हमको शास्त्रार्थ करने जानेसे कहीं रोको मत और दूसरे यह कि शास्त्रार्थमें कोई हमारा तेज पराभव न कर सके। लक्ष्मणभट्टजीने बड़ी प्रसन्नतापूर्वक दोनों वरदान दिए।

लक्ष्मणभट्टजी साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तमके धाम अक्षर ब्रह्म रोपजीके स्वरूप हैं, इससे आपको त्रिकालका ज्ञान है सो जब आपने अपना प्रयाग समय निकट जाना तब कांकरबासे गडे पुत्र रामकृष्णभट्टजीको बालजीमें बुलया और वही आपने डेरा किया। पुत्रोंको अनेक शिक्षा देकर रामकृष्णभट्टजीको श्रीयज्ञनारायणके समयके श्रीरामचन्द्रजी पधराय दिए और कहा कि देशमें जाकर सब गांव और घर आदि पर अधिकार और बेछिनाट तैतद्ध जातिकी प्रथा और अपने कुल अनुसार सब धर्म पालन करो। ऐसेही श्रीयज्ञनारायणभट्टके समयके एक शालिग्रामजी और मदनमोहनजी श्रीमहाप्रभुजीको देकर कहा कि आप आचार्य होकर पृथ्वीमें दिग्विजय करके वैष्णव मत प्रचार करो और छोटे पुत्र रामचन्द्रजीको जिनका काशीमें जन्म हुआ था अपने मातामहको सब स्थावर जङ्गम संपत्ति दिया * और श्रीमहाप्रभुजीके ग्यारह वर्षकी अवस्थामें लक्ष्मणबालजीका

* ये रामचन्द्रभट्ट बड़े पण्डित थे। गोपालबीरामहाकाव्य, कृष्णकुतूहलमहाकाव्य और शृङ्गार वेदान्त ये तीन ग्रन्थ इनके मिलते हैं। अयोध्यामें ये रहते थे और श्रीमहाप्रभुजीको विद्यागुरु करके मानते थे। वैष्णव दीक्षा श्रीमहाप्रभुजीसे इन्होंने पाई थी कि नहीं इसमें संदेह है। और रामकृष्णभट्टजी कुछ दिन पीछे सन्यासी होकर केरवपुरी नामसे खड़ाक पहन कर जल पर चलनेवाले बड़े सिद्ध विख्यात हुए। इन लोगोंके सम कालके प्रसिद्ध पण्डित ये थे, गङ्ग नतमें व्यासतीर्थ, निम्बार्क मतमें केसरभट्ट, रामानुज मतमें ताताचार्य और न्यदुटाध्वरि, शंकर मतमें आनंदगिरि, स्मार्तों में बा अन्य मतमें सुकुंदानन्द, केवलानन्द, माधवानन्द, वरदराजके महन्त हस्त नवार् और शतनाथजीके महन्त आनंदराम।

शृङ्गार करने दुर्गमसमेत उगरे मन्त्रपौं लय हो गए । उनके पुत्रोंने दक्षगामद्वीपके यगदा
लौकिक संस्कार बड़ी धूमधामसे किया और श्रीमद्वाल्मीकीने एक वर्ष तक यथामादयिनि सप्त
रीतिका बरताव किया ।

काशीमें वैष्णव तन्त्र, शैव तन्त्र, कौमारिक ब्राह्मण, सौतपथ इत्यादि नवके मत और
शैव, पाशुपत, काला मुस, अथौर, ये चार शैव संप्रदाय और विष्णुत्तमाई इत्यादिक चार वैष्णव
संप्रदायके ग्रन्थ नहीं मिलते थे इस हेतु दक्षिणके सम्भवती भण्डारमें जाकर इन ग्रन्थोंको अपने
अवलोकन किया और वेदकी ३६ सूक्तोंकी संदिग्ध नामका इत्यादिक कम्प्रास किया । फिर जब
दक्षगामद्वीप पतिके हेतु विलय करती तब आपको दुरा होता । इसी श्रीवाल्मीकीने स्वयं दक्षगाम-
द्वीपको विलय करनेका निषेध किया ।

जब आपको पृथ्वी परिक्रमाकी इच्छा हुई तब मातृचरणको अपने नामाके पद्म पांशुधानेको
आप विद्यानगर पधारे और मार्गमें अपने अन्तरङ्ग दामोदरदासजीको सेवक किया ।

श्रीमहाप्रभुजी अपने मामाके घर उतरे और वहीँ यह सुना कि राजा कृष्णदेवको सगामें आज फल नित मत मतांतरका बाद होता है, यह सुनके आपने इच्छा किया कि हम भी चलो। दूसरे दिन प्रातःकाल स्नान-संध्या होम करके ब्रह्मचारीका भेषकर आप राजाकी सगामें पधारे। इनका दर्शन पाते ही सब सभा तेजोव्रत हो गई और राजा कृष्णदेवरायने बड़े आदरसे इनको बैठाया। तब आपने राजासे सभाका वृत्तान्त पूछा। राजाने हाथ जोड़ कर निवेदन किया कि आज छ महिनेसे सब मतमतान्तरके पण्डितोंसे यहां शंखार्थ हो रहा है सो मायामतवालोंको अब तक किसीने जीता नहीं है। यह सुनकर आपने पण्डितोंसे प्रश्न किया और शंखार्थ प्रारम्भ हुआ। चौदह दिन तत्त्व विचारमें बारह दिन स्थानवाददेश इस सूत्रसे आरम्भ होकर व्याकरणमें और एक दिन जैन बौद्धब्राह्म विचारमें इस तरह सब मिला कर सत्ताइस दिन शंखार्थ हुआ और जितने वादी सगामें उपस्थित थे सब निरुत्तर हुए। तब राजाने सब पण्डितोंसे जयपत्र लिखवा कर उसपर अपनी मुहर करके इनको दिया और सब पण्डितों और मतके आचार्योंने मिलकर आचार्यपदवीसे महाप्रभुजीको पुकारा। राजा कृष्णदेवने कनकाभिषेकसे आपकी पूजा किया और सपरिवार क्षरण आकर सेवक हुआ। + इस अभिषेकके सोनेकी श्रीमहाप्रभुजीने दीन ब्राह्मणोंकी बांट दिया और अनेक ब्राह्मणके लड़कोंके यज्ञोपवीत और लड़कियोंके विवाह और अनेकका ऋण शोधन इससे हुंवा। इस सुवर्णके सिवा एक थाली भरकर मुहर राजाने आपको भेंट किया था। तब सात मोहर आपने अङ्गीकार करके उसका श्रीगणेशकी मूर्ति बनाया। फिर राजाकी

व्यङ्कटपतिराय, द्वितीय तमधराय, द्वितीय रामदेवराय और द्वितीय व्यङ्कटपतिराय हुए। द्वितीय व्यङ्कट मुगलोंसे हार कर चन्ददेवगिरिमें बसे। इनके पुत्र रामराय उनको हरिदास (१६९३), चक्रदास (१७०४), त्रिमदास (१७२१), रामराय (१७३४), गोपालराय व्यङ्कटपति, त्रिमल्लराय, वीर व्यङ्कटपति और रामदेवराय क्रमसे राजा हुए। इस वंशके अन्तिम राजा रामदेवराय जिनको सं० १८७५ (१८२९) ई० में टीपू मुल्तानने मारकर राज्य नाश कर दिया।

+ विधानगरके, कृष्णगढ़के और नवानगरके राजा लोग उसी कालसे इस मतके सेवक होते आते हैं किन्तु विधानगरका वंश अब नहीं रहा उस कालमें दक्षिण प्रान्तके सब राज्य बने हुए थे। विधानगर जानेके पूर्व आप हेमाचल गोआ इत्यादि होते हुए चोंडा गए थे। चोंडाके राजाने एक म्याना और दो प्यादा साथ देकर आचार्यको विधानगर पहुंचाया था। यहांपर एक बात और जाननेके योग्य है कि श्रीमहाप्रभुजी विधानगरकी सगामें श्रीविष्णुस्वामीकी गद्दी पर विराजे। इसी समय श्रीनिधिमङ्गलजीने श्रीविष्णुस्वामीके और मतभेद सब आपकी देसकर विलक किया था। यह भी अनुश्रुति है कि श्रीमहाप्रभुजीने सगामें योगबलसे अपना कमण्डलु कँका जो सर्वका सा सगामें प्रकाश किया। तदनन्तर आप सगामें गए।

और वहाँके अनेक ब्राह्मणोंको बृहस्पतिसब वाजपेय आदि यज्ञ और अनेक महादान कराया और उससे जो द्रव्य एकत्र हुआ उसका तीन भाग किया। एक भागसे श्रीविठ्ठलनाथजीकी कटि मेखला बनी दूसरे भागसे पिताका ऋण शोधन किया और तीसरे भागको करणीय यज्ञके व्यय निर्वाहार्थ माताको सौंप दिया। और अनेक दिन तक ज्ञान भक्ति वैराग्य वत यज्ञादि धर्मका उपदेश करते हुए आप विद्यानगरमें विराजे।

कुछ दिन तक विद्यानगरमें निवास करनेके उपरान्त मानासे आज्ञा लेकर पृथ्वीपारिकमा करनेको संवत् १५४८ वैशाख वदी २ को आप नगरसे बाहर चले। उस समय जनचर्य्य मतके कारण सीआ हुआ बख नहीं पहरते थे इससे धोती उपरना पहनकर दण्ड कमण्डलु ब्रज और पादुका धारण किए हुए आप चलते थे। (इसी जनचर्य्यके दण्डधारण पर भ्रमसे बहुतसे मूर्ख आक्षेप करते हैं कि श्रीवल्लभाचार्य पहले दण्डी थे फिर गृहस्थ हुए) दामोदरदास और कृष्णदास ये दो सेवक आपके साथ थे। पहले भीमरथीके तटपर पण्डरपुरमें आए, वहाँ सप्ताहपरायण करके बैठक स्थापित किया। (आगे जिस तीर्थके वर्णनमें पा० वै० स्था० यह संकेत देखो यहाँ समझो कि पारायण करके बैठक स्थापन किया) फिर नासिक त्र्यंबक पञ्चवटी गोदावरी तीर्थमें आए। वहाँ त्रयाह पा० वै० स्था० वहाँसे उज्जयिनीमें आए वहाँ सीमा और अज्ञपात कुण्ड (जिसमें भगवान् जय सान्दीपनीजीके यहाँ पढ़ते थे तब पाटिया धोते थे) स्नान करके महाकालेश्वरका दर्शन करके नगरके बाहर एक पीपलकी डाल गाड़कर उसपर कमण्डलुका जल आपने छिड़का जिससे वह तत्क्षणात् एक वृक्ष हो गया और उसके नीचे सप्ताह पा० वै० स्था० (यह पीपलका वृक्ष अबपि वर्तमान है) वहाँसे पुष्करजी की यात्रा कर आप वजकी ८४ फोसकी परिक्रमा करनेके हेतु संवत् १५४८ के भाद्रपद कृष्णाष्टमी अर्थात् जन्माष्टमीके दिन श्रीगोकुलमें पधारे। तब श्रीनाथजीकी यमुनाजलमें स्नाना करते देख आप भी उनके समीप जाने लगे, तब तो श्रीनाथजी गिरिराज उपर आए, वहाँ भी आप उनके पीछे पीछे गये, इसीसे श्रीभगवानने प्रसन्न हो यह वरदान दिया कि “यावत् यमुनाजीमें गङ्गाजल गहेण, तावत् तुमारी संपत्त्य अचल रहेगी” ऐसा कहकर श्रीनाथजी अन्तरव्यान हो गये। तब आप जिस मार्गसे पूर्व में गए थे पूर्वगत मार्गसे अपने व्याकुल शिष्योंसे मिलकर आसनपर आए। तदनन्तर श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी वजकी यात्रा करने चले, और उसका निर्णय करके अनुक्रमसे वर्णन किया है। और जिस जिस स्थलमें आपने श्रीमद्भागवतका पारायण कर बैठक निवस की है, जो अब पर्यन्त प्रसिद्ध हैं उस जगो ऐसा चिह्न किया है।

पञ्चावतंभन.

इक्षिणुभा अस्थि दीक्षित नाभना जेठ विद्वान् यथ गथा छे. सुप्रसिद्ध दीन-
मतवादी अष्टाध्यायीक्षितना वंशभाण आ विद्वान् यथा छे जेभ भागी शशाय.

અર્થથી દીક્ષિતે સં. ૧૫૮૫ માં “વ્યાસતાત્પર્યનિર્ણય” નામનો એક નાનો ગ્રંથ લખેલો હશે, તે “વાણીવિલાસ” ગ્રંથ તરફથી પ્રકટ થયો છે. સદ્ગત તેલીવાલાએ નાના સરળા પુસ્તકની નીચેની પંક્તિઓ પર મારું ધ્યાન ખેંચ્યું હતું.

નનુ પવંસતિ વ્યાસતાપર્યવિપરીપ્રતાર્થનિર્ણયકુતુહલિનઃ પુરુષધૌરેયસ્ય પ્રમુશિરોમણેઃ સમા-
માગચૈકદિનપ્રમૃતિ માસાવધિ દ્વૈતાદૈતવિચારે સતિ તત્પક્ષયોર્મધ્ય એકસ્ય પ્રામાણ્યમિતિ મધ્યસ્થમુસેત
નિશ્ચિત્ય, તન્મતપવેશ એવાહ્નીક્રિયતે હિતિ પત્રાવલંબનપૂર્વકં સમયવચ્ચનં કૃત્વા, તત્સમાપ્રવિષ્ટમધ્ય-
સ્થવિદ્વત્સન્નિધાનચલેનાસ્મદાદિમિરેવ શ્રુતિપુત્રિવલ્લસ્વારસ્યચલાનુસારેણાયમેવાયો વ્યાસતાત્પર્યવિવચ
દ્યત્યવસાતું શવયત હિતિ ચેત, ન ।

ઉપરની પંક્તિઓ પૂર્વપક્ષરૂપે લખાયેલી છે. એનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે:-

પ્રભુશિરોમણિ અને પુરુષધ્રેષ્ઠ શ્રીકૃષ્ણદેવરાજાએ • જગવાનુ વેદવ્યાસજીના તાત્પર્યમાં કયો અર્થ સમાયેલો છે, એનો નિર્ણય કરવાની ઇચ્છા કરીને એક સભા કરી. એ સભામાં આવીને પત્રાવલંબન-કરારપત્ર-સાથે અમુક સમય નક્કી કર્યો અને ચોક્કસ કરાર એ કર્યો કે, “એક દિવસથી લઈને એક માસ સુધી દ્વૈતાદૈત ચાલે, તેમાં બંને પક્ષોમાંથી એકનું પ્રામાણ્ય મધ્યસ્થ હોય તે કહે એમ તટસ્થના મોઢાના નિર્ણય પછી તે મતમાં પ્રવેશ કરવો રહ્યો.” આવો કરાર કરીને મધ્યસ્થ વિદ્વાનોના સન્નિધાનગણથી અમોજ શ્રુતિ અને શ્રુતિનું બલ, તેમ રહસ્યના બલને ધારે આજ ભાવાર્થ વ્યાસજીના તાત્પર્યમાં રહેલો છે એમ નિર્ણય કરી શકીએ ને ને હોય તો તે અમે સ્વીકારી શકતા નથી.”

ઉપરના ભાવાર્થમાં આપણે પ્રવેશ કરીશું. શ્રીકૃષ્ણદેવ રાજાએ વિદ્વાનોની સભા કરેલી, તેનો ઇસારો તો ઉપરની લીટીઓમાં સ્પષ્ટ જણાય છે. તે પછી ત્યાં જઈને પત્રાવલંબનપૂર્વક કરારપત્ર લખાયો એવો ઉલ્લેખ છે. ગ્રંથકારે આપણા આચાર્યશ્રીનું નામ લખ્યું નથી. આચાર્યશ્રીના દિગ્વિજયરૂપ મહાપ્રયાસને અધ્યયુ દીક્ષિત પૂર્વપક્ષમાં ગાઠવે છે, ને એમ કહે છે કે, તમે કૃષ્ણદેવ રાજાની સભામાં આવીને, કરારપત્ર લખી વેદવ્યાસના કથનનું રહસ્ય આજ છે એવો ને નિર્ણય મધ્યસ્થો પાસે કરાવ્યો તે અમે સ્વીકારી શકીએ નહિ. એટલે સભામાં તમે વિજય મેળવ્યો તેથી શું થયું ? એમ કહીને આ વિદ્વાન આપણા સિદ્ધાંતોને પકકારે છે. આપણા આકર ગ્રંથો અર્થથી દીક્ષિતને મળેલા હોય એમ જણાતું નથી. એના નાનાશા ઉક્ત ગ્રંથમાં આપણા સિદ્ધાંતોનું શુદ્ધ અનુવાદપૂર્વક ખંઠન પણ નથી. માત્ર આચાર્યશ્રીના વિજયને એ વિદ્વાન સહન કરી શક્યો નથી. જેથી માત્ર ઠટાક કરીને તે વિરમે છે. શ્રીકૃષ્ણદેવ રાજાની સભામાં આપણા આચાર્યશ્રી પધાજી, ને ૨૮ દિવસ સુધી શાસ્ત્રાર્થ થયો એ વાતનો આપણે ત્યાં ઉલ્લેખ છે. પરંતુ આપણે એ ઉલ્લેખ બીજું કોણ સ્વીકારે ? બીજા સંપ્રદાયના પુરાવાથી તેને વધુ મજબૂત બનાવવો રહ્યો. અર્થથી દીક્ષિતની ઉપરની પંક્તિઓ આપણા ગ્રંથોનાં કથનને મજ-

ખૂત પુષ્ટિ આપે છે. કૃષ્ણદેવ રાજાની આજુ સલામાં ખીજા કોઈ આચાર્ય ગયા નથી. તેમણે કરારપત્ર કરી મધ્યસ્થ વિદાને પાસે નિર્ણય કરાવ્યો નથી. એમ કરનારા માત્ર આપણો આચાર્યશ્રીજ છે. વળી આપણે ત્યાં પત્રાવલંબનનો ઉપયોગ કોશીવિશ્વનાથના ધારણા પર થયો છે એવો ઇતિહાસ છે. આ પુરાવો કૃષ્ણદેવ રાજાની સલામાં પત્રાવલંબન થયું એમ કહે છે. કહાચ એજ પત્રાવલંબનનો ઉપયોગ જાનને સ્થળે થયો હોય અથવા વધુ સ્થળે પણ થયો હોય એમ પણ સંભવે છે. ગમે તેમ હોય, પણ આ પંક્તિઓ કાંઈ ઘોરા મહત્વની નથી.

દક્ષિણમાં આંધ્રદાયિક સ્મરણો.

છેલ્લા મદ્રાસ તરફના પ્રવાસમાં આપણાં હેટલાંક પ્રાચીન આંધ્રદાયિક સ્મરણો મને મળ્યાં છે, જેનો પ્રચલિત ઉલ્લેખ “પતાકા” માં કરવા ધાકે છું.

મદ્રાસથી પપ માઈલ દૂર શ્રીવિષ્ણુકાંચી તીર્થ છે છે. ત્યાં શ્રીવરદરાજસ્વામી ખિરાળે છે. મૂર્તિ મહાભવ્ય છે. વળી આ સ્થળે શ્રીવલ્લભાધીશ્વરની બેઠક છે. બેઠક ઘણી રમ્ય અને મોહક છે. વળી તે વિદ્વાન આચાર્યવર્ધ ગો. શ્રી ૬ શ્રીગો-કુલનાથજી મહારાજશ્રીની માલીકીમાં હોવાથી ઘણીજ સુંદર જાની છે વિષ્ણુકાંચીના આ તીર્થસ્થળની યાત્રા પછી હું સફળતે તેલીવાળા ગાયે :શ્રીલક્ષ્મણબાલાજી ગયો. શ્રીમહાપ્રભુજી આ સ્થળને શ્રીવેંકટેશ્વરધામ કહે છે. અહીં એ વેળાએ ગો. શ્રી ૬ શ્રીગોકુલનાથજી મહારાજ ખિરાજતા હતા. એઓશ્રીનીજ છાયામાં અભારે જાધાને નિવાસ હતો. એક દિવસે આપણીએ કૃપા કરીને નીચે જણાવેલું આંધ્રદાયિક સ્મરણ સ્પષ્ટતાપૂર્વક વર્ણવ્યું, જેનો ઉલ્લેખ અત્રે કયો વિના હું રહી શકતો નથી.

શ્રીમહાપ્રભુજી વિષ્ણુકાંચીમાં જ્યારે શ્રીવરદરાજસ્વામીનાં દર્શન કરવા માટે પધાર્યા ત્યારે આપણીએ પગથીયા પર ગીતગોવિંદમાંની અષ્ટપદી તેલુગુ અક્ષરોમાં કોતરણીની ભેદ, જાધા તો તે પગથીયાપર પગ મુકી ઉપર જતા હતા, પણ આપણી તેના પર ચરણ મુકી શક્યા નહિ, તેથી શ્રીવરદરાજસ્વામી ઉપરથી નીચે પધાર્યા, અને તે પગથીયાપર શ્રીમહાપ્રભુજીને દર્શન આપ્યાં. આ દિવસ હજુ પણ ત્યાં નોંધાયેલો છે, અને ત્યાંના પૂજારીઓ તે દિવસે તે પગથીયાપર શ્રીવરદરાજસ્વામી પધારે છે એમ માનીને ત્યાં ભોગ ધરે છે. આ એક આપણું ઉત્તમ આંધ્રદાયિક દર્શનક છે.

આ ભોગને અગે થતું ખરચ આંધ્રદાય તરફથી મળતું, તે જંધ થયું હતું, તે ગો. શ્રી ૬ ગોકુલનાથજી મહારાજશ્રીએ આજુ કરાવ્યું છે, અને આપણું આ સ્મરણ કાયમ રાખવાનું ઉમદા કાર્ય કર્યું છે.

આપણું પ્રાચીન તિલક.

શ્રીલક્ષ્મણ બાલાજીમાં ચાર પાંચ પૂતળાં છે. તે પંચ પાતુના કોઈ આપણી પ્રાચીન કળાઓના આદર્શરૂપ છે. તેમાં પેશતાં જગણી જાણુનાં ત્રણ તો શ્રીકૃષ્ણદેવ રાજા અને તેની બે સત્તીઓનાં છે. પેશતાં ડાબી જાણુએ શ્રીકૃષ્ણદેવ રાજાના પ્રધાન

તિરુગલ આદિનાં છે. તિરુમલના કપાળમાં સુંદર તિલક છે. તિરુમલ શ્રીમહાપ્રભુજીના સેવક હતા. એ તિલક નીચેથી ગાંધેલું છે. ગરોળર આપણે કરીએ છીએ તેવુંજ છે. કૃષ્ણગઢમાં ગિરાજતાં શ્રીમહાપ્રભુજીનાં પ્રાચીન ચિત્રમાં પણ તેવુંજ તિલક છે. તેથી સાબિત થાય છે કે, શ્રીમહાપ્રભુજીના સમયમાં તો આપણે કરીએ છીએ તેવુંજ તિલક હતું. માત્ર શ્રીનાથજીની આસાથી શ્રીગોકુલનાથજીએ દિરેળ એ નામથી છુટી એ લાંટીનું તિલક કર્યું, અને તે પછી તેઓશ્રીના ઘરમાં તે ચાલુ થયું. પણ શ્રીમહાપ્રભુજીના સમયમાં તો આપણું તિલક હતું, તેનો પુરાવો આનાથી વધુ ખીજો શો હોય ?

વિદ્યાનગરમાં શાસ્ત્રાર્થ.

ચાલુ ઐતિહાસિક શોધખોળ પછી શ્રીમદ્વાચાર્યશ્રીનું ચરિત્ર કાંઈ ચોરજ આલેખાશે. હાલ જેમ જેમ ગ્રન્થો મળતા જાય છે, તેમ તેમ આપશ્રીના ચરિત્રપર અનેરોજ પ્રકાશ પડતો જાય છે. શ્રીયુત તેલીવાલાની સૂચનાને આધારે એક ભાટિયા લેખક લગવદીય ભાઈ ગોવર્ધનદાસે “ મુખર્ધ સમાચાર ” માં છેલ્લા કેટલાક માસથી આચાર્યશ્રીના ચરિત્રના ઐતિહાસિક અંશોપર ધણેજ સારો પ્રકાશ પાડ્યો છે. એમના બધા લેખો શ્રીમદ્વાચાર્યચરિત્રને ઇતિહાસ-દ્રષ્ટિએ જોવા ઇનછનારને ધણા મદદગાર થઈ પડે તેમ છે. તેમાં પણ એક વાતપર તો તેમણે ધણેજ સારો પ્રકાશ પાડ્યો છે. આપણા વાર્તાના તેમજ ખીજા કેટલાક હસ્તલિખિત સંસ્કૃત ગ્રંથોને આધારે આપણી માન્યતા એવી હતી કે, વિદ્યાનગરમાં શ્રીકૃષ્ણદેવ રાજાની સભામાં જ્યારે શ્રીવલ્લભાધીશ્વરે ૧ માસ પર્યન્ત શાસ્ત્રાર્થ કયો, ત્યારે આપશ્રીની ઉમ્મર માત્ર ૧૧ વર્ષની અથવા તો તેથીજ નહીની હતી. શ્રદ્ધા કે ભાવનાની નજરે આચાર્યશ્રીમાં તેવા અદ્ભુત સામર્થ્યનાં અસ્તિત્વની શંકા નજ સંભવે, છતાંજ, જ્યારે મનુષ્યનાટયનોજ આરંભ હોય ત્યારે તો તેને બાંધખેત્તી લીલા દેખાડેજ છુટકો. એટલે ભાઈ ગોવર્ધનદાસે શ્રીકૃષ્ણદેવ રાજાનો ઇતિહાસ મેળવ્યો. હવે કૃષ્ણદેવ રાજા લગલગ સંવત ૧૫૬૬ માં ગાદીનશીન થયાનું ઇતિહાસલેખકો કહે છે. તે પછી બીજેજ વર્ષે શાસ્ત્રાર્થ યચાના પ્રમાણે પણ ઝાંખા સ્વરૂપમાં મળી આવ્યાં છે. હવે શ્રીમહાપ્રભુજીનું પ્રાકટય તો સં. ૧૫૩૫ માં થયું. એટલે શાસ્ત્રાર્થ ગ્રમ્યે આપશ્રીનું વય ૩૦-૩૧ તુંજ સંભવે છે. તેથી શાસ્ત્રાર્થ અને સર્વ પરિતોને જીતી લેવાનું કાર્ય આપશ્રીએ ખીજા પરિક્રમા વખતેજ કર્યું હોય એમજ સંભવે છે. આ વિષે છેલ્લા મદ્રાસના પ્રવાસ વેળાએ શ્રીયુત તેલીવાળાએ ત્યાંના વિદ્વાનોને ધણીજ પૂછપરછ કરી હતી; તેથી એમનો મત તો હવે ચોક્કસજ છે કે, શાસ્ત્રાર્થ આપશ્રીએ ૩૦ વર્ષની ઉમ્મર પછીજ કયો છે. હાલમાં શ્રીગોકુલેશ્વરપુસ્તકલઢારમાંથી આચાર્યશ્રીના ચતુર્થ પૌત્ર શ્રીગોકુલનાથજીના ૧૫૦૦ વચનામૃતો પ્રાચીન લખેલાં ગળ્યાં છે. તેમાં એવો સ્પષ્ટ ઉદ્દેશ છે કે વિદ્યાનગરવાળો શાસ્ત્રાર્થ ખીજા પ્રદક્ષિણા વખતે થયો હતો. એ વચનામૃત આ પ્રમાણે છે:—

“ એક દિવસે કહ્યું ને, જાણ વિધાનમંડળે શ્રીઆચાર્યજી દ્વસરી એર પરિક્રમા કરત પધારે, તળ બ્રહ્મવાદ સ્થાપન ઉપરાંત વહાં એક મધ્વાચાર્યમાંગી સંન્યાસી (વ્યાસતીર્થ ?) હતો, ઉનકે મનમેં આયો ને મેરો શિષ્ય હોય તો લક્ષો, એ આચાર્યજી સોં મનુહારિ કરિકે કહ્યો: એ સળ સંપ્રદાય તુમકો સોપૂં અરુ તુમ યહાંહી રહો; તળ રાત્ર શ્રીઠાકુરજીને શ્રીઆચાર્યજીસોં કહ્યો, જો તુમ યા માંગેકો અંગીકાર મત કરિયો. ”

કનકાભિષેકના પુરાવા.

માલાપ્રસંગની યાદ—ચિદ્રૂપ નામના એક માયાવાદી દંબી દંડી સંન્યાસીએ ત્યારે ત્યારે જહાંગીરી અમલનો આશ્રય લઈને, પુષ્ટિસંપ્રદાયના આજ ચિન્હો માલાતિતક ઉપર હુમલો કર્યો ત્યારે તેની સામે જગદગુરુ શ્રીએકુલનાથજીએ જે સત્યાગ્રહના સંપ્રદાયે આજે એતિહાસિક સત્ય ઉપર પણ કુતર્કો યમા આ જ્ઞાનામાં શું નથી યતુ ? હવે તો મેટલુક ને અમે કે તમે અમારા કે તમારા બાપના અંશ દીકરા છીએ તેમાં પુરાવો શો છે ? આવા ન્યાયો હવે જહેરમાં થવાના છે ! માલાપ્રસંગની ઐતિહાસિકતા ઉપર એવા આક્ષેપો થયા તરી ને વિશે એક સંગીન વિચારણીય લેખ રા. રા. રમણદાસ મુનીશામ મોદીએ લખ્યો અને ત્યારબાદ એ વિષેના આક્ષેપો બંધ થયા. હવે કનકાભિષેકનો વારો આવ્યો છે. કહે છે કે, તે વિશે સ્વતંત્ર (બીજાઓના) પુરાવો કયાં છે ? જો કે માલાપ્રસંગ વિશે પણ બદારના સ્વતંત્ર પુરાવા નહિ એવા જ મણુાય. મતસંગ કે, યરના પુરાવા ન આવે, બદારના, બીજા સંપ્રદાયના પુરાવાઓ લઈ આવે. કનકાભિષેક માટે ધરના પુરાવા નહિ આવે. સંકરાચાર્યના જન્મ માટેના પુરાવા તો ધરના જ આવે, તેમનાં માબાપ વિષેના, તેમના આરિય વિષેના, તેમના દિગ્વિજય ! ; વિષેના પુરાવાઓનું ચલુતર તો લક્ષેને ધરતી ચાર દીવાલો ઉપર જ ફમ ન થયું હોય ? પાતાના ધરતી ગમે તેવી દયા છતાં અહીં તો પારકાના ધર ઉપર જ હુનકા કરવા છે ! બીજાઓને હલકા પાડવા છે ! જોલો હવે કાંઈ કહેવું છે ? સંકરાચાર્યની કેતપતિના બદારના પુરાવાઓ ઘણા ખરાબ હોય તેથી અમને શું ? અમારી શ્રદ્ધા ધરવાની નથી. અમારે તો વેચ્છસેની જે અગ્ર શ્રદ્ધા છે તેની ઉપર હુમલો કરવો છે. ધીવડવઆચાર્યજીના કનકાભિષેક વિશે બદારનો પુરાવો લખિા. કાંઈ દિગ્વિજય, લાલપત્ર કે બીજું કાંઈ બતાવો, નહિતર એ બંધને કિષ્કિત ગણીશું. આવી પોકલ પોકરાણ ચર્ચ રહી છે. આનો જવાબ આપીએ તે પહેલાં ધરના એકપક્ષી મજબૂત સંગીન પુરાવાઓથી ઇતિહાસનો નિર્ણય થાય કે નહિ તેને માટે જે મજબૂત દલીલો ઇતિહાસર રા. રા. મોદીએ કરી છે તે અહીં ઉતારીશું. રા. રા. મોદી લખે છે કે—

ઇતિહાસમાં એકતરફી પુરાવો પ્રાપ્ત છે—એકપક્ષી પુરાવો પણ જો વિશ્વસનીય હોય તો તે ઇતિહાસમાં પ્રાપ્ત થઈ શકે છે. એવા ઇતિહાસમાં ઘણા દૃષ્ટાંતો છે. ૧. મહાન સિકંદરની હીંદની ચલાઈ સંગેથી કેઇપણ હીંદી મેખનું પ્રમાણ નથી, છતાં ઘીક મેખડોના પુરાવા ઉપરથી એ બીના ઐતિહાસિક દરી છે. ૨. મેદમ્બદ ગજનવીની સોમનાથની સ્વારી સંબંધી કેઇપણ પ્રાપ્ત જોન મંચમાં નિર્દેશ નથી, દારસી ગ્રંથોના પુરાવાઓ ઉપરથી જ એનો ઇતિહાસમાં આદર થયો છે. ૩. અઘાઉદ્દીન ખૂત્તિને કરણનો પ્રધાન માધ્યમ મુલ્તાતમાં લાવ્યો હતો એ માટે મુસલમાન લેખકોએ કંઈ લખ્યું નથી. પરંતુ ધર્મરૂપ અને કાન્તકે પ્રગથે; એ પ્રાપ્ત

અંધો ઉપરથી અને તત્કાલિન જૈન અંધો ઉપરથી એ વાન સિદ્ધ થઇ છે. ૪. સાધી વધારે વધારે અગત્યની આવૃત્તિ તો સર શેખસ રોની જહાંગીરની મુદ્રાકાત સંબંધી છે. તે ઇંગ્લાંડના એક્સપી તરીકે આવ્યો હતો, અને જહાંગીરને અજમેર મોકલે ઈ. સ. ૧૬૧૬ ના જનવરીની ૧૦ મી તારીખે મર્યો હતો. છતાં જહાંગીરે તુઝકમાં એ સંબંધી ઇશારા સરખાએ નથી.

ઉપરના પ્રબલ પુરાવાઓ ઉપરથી સાબીત થાય છે કે, ઇતિહાસમાં એકતરફી પુરાવાઓ પણ સ્વીકારાય છે. શ્રીમદ્ધલાચાર્યજીના કનકાલિષેકના પુરાવાઓ, તે પ્રસંગના ઝારવના ઇતિહાસો સાંપ્રદાયિક અંધોમાં ન જળવાય તો શેમાં જળવાય ? જીજ્ઞાસુ એ ઝારવપૂર્ણ ઇતિહાસો ટાંકવાની શી ગરજ હોય ? તેથીજ સંપ્રદાયના અનેક સંસ્કૃત પ્રાચીન અંધોમાં તેનો ઉલ્લેખ છે. વળી આધુનિક વિદ્વાન્ પુરાતત્ત્વવેત્તા ઇતિહાસર લેખકો પણ કનકાલિષેકની ઐતહાસિકતા સ્વીકારે છે. હાથમાં મોઘાસામાંના જંતુઓની પેઠે ઉભરી નીકળેલા, ચર્ચાપત્રીઓમાંનો એક પણ એવો ઇતિહાસનો અભ્યાસી નથી. અરે અહીં જે પુરાવાઓ ટાંકવામાં આવશે, તે અંધોના લેખકોના ઝારવની શતાંશમાં પણ બરાબરી કરી શકે તેવો હમણાંનો એક પણ ચર્ચાપત્રી નથી. આ વાન વૈષ્ણવોએ હૃદયમાં કોતરી રાખવી રહી. હવે આપણે પુરાવાઓ જોઈએ.

૧. શ્રીગદાધરદાસજીની દીપિકા—શ્રીગુણકવિજીના સેવકો પૈકી જન્મવાનના દિવદી ગદાધરદાસજીએ પિ. સં. ૧૬૧૦માં સંપ્રદાયપ્રદીપનામનો એક ગ્રન્થ લખ્યો છે, તેમાં લખે છે કે— શ્રીવશ્નમે ભાવાવાહીને અસ્થ પ્રયાસથી થયો. તે પછી શ્રીવશ્નલાચાર્યનો કનકાલિષેક થયો. પછી રાત્રીએ એમને વિનંતિ કરીકે “હે સ્વામિનં! આ દ્રવ્ય તમારે લઈ જવું” ત્યારે શ્રીવશ્નભા-ચાર્યજી બોલ્યા કે “આ દ્રવ્ય અમારે અંગીકાર કરવા યોગ્ય રહ્યું નથી.” જેમ સ્નાન કરેલું પાણી પુનઃ અંગીકારને યોગ્ય નથી તેમ.” એટલે શ્રીવશ્નલાચાર્યની આજ્ઞાથી એ દ્રવ્ય તેમની પૂર્વે જે જે જળ્યાઓ વિચાર કરી રહ્યા હતા તેમને આપ્યું.

૨. સાવલી (ગુજરાત-વડોદરા રાજ્યના તાળાનું ગામ છે) તેમાં જોદકામ કરતાં મળી આવેલો લેખ (મુબારક-ગુજરાતી પત્રના સં. ૧૯૭૬ ના દીવાળીના અંક ઉપરથી) તેમજ “પુષ્ટિમાર્ગના ઇતિહાસ” (લેખક શાસ્ત્રી વસંતરામ) નામના પુસ્તકમાંથી.

સં. ૧૯૭૬ ના આસો માસમાં સાવલી ગામમાં એક કુલો જોદકાં કેટલાક પ્રજાણુ જેણે મળી આવેલા હતા જેની સર્વિસ્તર હકીકત ગુજરાતી પત્રના દીવાળીના અંકમાં સં. ૧૯૭૬ માં છપાઈ છે. તે ઉપરથી શાસ્ત્રીજી વસંતરામે શ્રીપુષ્ટિમાર્ગના ઇતિહાસ એ નામે પુસ્તકમાં છપાવે છે. જેમાંથી કેટલીક હકીકત આપીએ છીએ.

“સાવલી ગામમાં નારાયણ મઠ નામની જગ્યામાં પાંડિત શ્રીધુત રાજેન્દ્રનાથ રહે છે તેમણે કુલો જોદ્યા માંડ્યો. એક શ્રીમાલકૃષ્ણદાસજીની મૂર્તિ—સ્વરૂપ તથા કેટલેક ચીજો તાડપત્ર ઉપર લેખ, અરણ્યપાદુકા વગેરે મળી આવેલું.

તાડપત્ર ઉપર સંસ્કૃત લેખ છે. તેમાં લખે છે કે—

૧ વિદ્યાપત્તનમ્ શ્રીનૃસિંહવર્ય સાર્વભૌમ સ્થપિત શ્રી સામ્રાજ્યે મીન માસે ૧૧ લોકગુરુ-આચાર્ય ચક્રવર્તિ શ્રીમંતુ વલ્લભદેમાભિષેકમ્.

આ સિવાય સંસ્કૃતમાં ઘણા લાંબો લેખ છે. (જુઓ શ્રીપુષ્ટિમાર્ગના ઇતિહાસ પા. ૧૯) એ આખા લેખનો ગુજરાતી અર્થ:—

વિવાનગર—શ્રીનૃસિંહ વર્મા ચક્રવર્તિ કલ્યાણકારી સામ્રાજ્યમાં મીન માસમાં—

એકાદશીના રોજ લોકગુરુ આચાર્યચક્રવર્તી શ્રીમંતુ વલ્લભદેમાભિષેક થયો.

આન દિવસ સુધી ભક્તકર્મે (આચાર્યશીર્ષે) અભિષેક થવા પડી પૃથ્વી, દેવ, દક્ષિણ, ગંગા સાથે મેળા, આદી અને ત્રીજાના ચિહ્નાઓ નિવેશન થયાં.

ગાય, હાથી, બગદ, ઘોડા, એ હર્ષ કરનારાઓને આપ્યું.

હાડથીના ઘેર અરણ્યોદય વેળાએ વદાણમાં-અદારાણી મુખ્ય પદ્માણી મીનાણી દેવીએ પાતાના હાથે અભિષેક કરાના આચાર્યશીર્ષે આદીવડે અભિષેક થયો.

ખાદશમ કરનાં મહેસી સીએ બધી કામવનખાં શ્રીદેવકીનંદનાચાર્ય પ્રાચીનસંપ્રદાયમાં મળતી રાખવામાં આવી છે. આ પ્રાચીન લેખનો પુરાવો તાડપત ઉપરનો છે તે ઉપરથી આચાર્યશીર્ષે દનકર્મિલેક થવાનું સિદ્ધ થાય છે. આથી ત્રણેયશીના પુગવા લ્હન નકામા-પાપ પિનાના મર્દ થાય છે.

૭. શ્રીવદ્ધભાષ્યાનકતાં—પરમ ભગવદીય મહાનુભાવી ગોપાલદાસજી જેઓ લ્હન મુંગા દત્ત, પપ્પ શ્રીગુસંઈછની દૃપાથી વાચાળ થઈ ગયા અને લલકારજ પેને નવ વદ્ધભાષ્યાન ગાયાં તેમાં વદ્ધભાષ્યાન બીજામાં—

કનકજ્ઞાન શન મજુ સુવર્ણે, કરામ્યું મદીપાળ;

તે મુજી તેજે આતીથા, ગાય દષ્ટિ ન પાછી વાળ.

આ વદ્ધભાષ્યાન શ્રીગુસંઈછનાં સંનિષ્ઠમાંજ પોતે ગાયાં છે તેથી તે પુરાવો વધારે મજબૂત માની શકાય. તેમજ આ નવવદ્ધભાષ્યાન જે રચેને વખાણ છે તે રચકને તે મહાન પપ્પ અન્ધારે ગોલુદ છે, અપદારાક પાસે અમાર્યા છે. ત્યાં શ્રીગુસંઈછની બેઠક પપ્પ છે. તે સં. ૧૧૧૩ થી ૧૧૧૬ થી આસપાસ મળાયા છે. વળી આ વદ્ધભાષ્યાનના કરોડો વૈષ્ણવો પાક કરી ગયા તે દલુ પપ્પ કરે છે.

આ મ-યની વિશેષ સમજવા એ છે કે એ ગુરુગીતી બાવાના કામ્ય મન્થ ઉપર શ્રી ગો. શ્રીવદ્ધાચજી મદારાજની સંસ્કૃતમાં ૫૦૯ પાનાની લીકા છે. આ મન્થ ફરકો બાવવાદી દશે તે આ ઉપરથી શ્રી. રંધીચાણ જેવ સમજી શકી કે ! વળી આ ગુરુગીતી આખ્યાનો ઉપર મન્થમાંમાં એક લીકા શ્રીહજનવાચજી (મુંગાઈમાં ગોરા મંદિરવાજ) એ લખેલી છે અને તેની નીચે સચિત્તર દિપ્પજી બારનખાનં પદ્ધિત ગુરુગીતીએ કરેલું છે.

૮. મુરલીધરદાસકૃત શ્રીવદ્ધભાષ્યાચરિતમ્—આ મન્થ સંવત ૧૧૧૦ લખતલ ભખાયો મનાય છે. મુરલીધરદાસ શ્રીગુસંઈછના મેવક દત્ત. તેમણે લખેલો આ મન્થ મદારદાસ સમકાલીન છે. બ્યારે મદારદાસ જન્મ કરે છે કે કનકકર્મિલેક થયો છે અને આ મુરલીધરદાસ પપ્પ કનકકર્મિલેક થવાનું રહીકારે છે. એક આખ્યાલિકા મારે એ મન સરખા પડે છે.

“ સિન્ધેન સદ્ધ વિશ્વસાનગરે મલમમાં પ્રવિવેશ, સનગુમારગુકાદિવન્ સ્વનેજસા રાજમર્મ મલમવાસ, અસાદગ્ધો માતુષેઽપિ મ્માલીનજનઃ સર્વેર્મુપાઞ્ઞેત પાત્થવરો મુજા પ્રગુભાય શાન્તનવાસાસ, મહા મુદાં મલિતો મુજા રજામત ટાલિવેશ. લક્ષ્મી નત મિદત્તનઃ જનવર્ધાભાર્યજવલ્લભમગુનોન્ । સર્વં સદ્મહમાનો મજા ન પ્રાર્થિતઃ મ્મામન્ વચ્ચેવ દૈવ મામવત રાગાર્થવર્ધના મિમનુદ્ધે શિવા કૃપારાખનામકેત તેન મુષ્ટેત જનસામિતેર્મ પ્રાપ્તોતિ સ્વમન-માતમર્મવિજયમોજનાય મલકદિલગનિશ્ચૃષ્ઠે વિસદ્ધાંતીર્થવાગ્ધ્યાં પ્રવિતઃ ।

भारतमें पञ्च राजाओं में से एक सर्व ज्ञान और राजा साधे परवश थे। उनमें से एक सन्मान कर्तुं राजाओं के अत्यंत सन्मान करेवाला ऐसा होता रहता। सिंहासन के पर गिरा जाता। ते पक्षों का त्याग करके विद्वानों का शास्त्रार्थ में अवैष्णवों को विजय (अने वैष्णवों को पराजय) साबित होता। होता ते न सहन था। और राजा की प्रार्थना थी जलवेष्टवत् श्रीभागवतशास्त्रार्थ की व्यर्थ थी प्रतिपक्षी को हारने राजाओं के करेवाला कनकाभियेकने पागल पक्ष मान होता था। मने न स्थापना के अयोग्य होवा थी लगवान सिंहास पीछे वस्तुओं होता था। निरुद्ध पक्ष प्रकट करता होता ते छोड़ने तीर्थयात्रा में पड़ा था।

५. प्राचीन ग्रंथों पुराणों—श्रीमद्विष्णुधर प्रभुना छद्म कुमार श्रीमदुनाथजी महाराजों के श्रेया श्रीवल्लभविजयग्रंथ ग्रंथों (सं. १६५८ ईस्वीन सुद भीमना राज रत्नायका), आ प्रमाणों के अंग्रेजों के—

अन्यपक्षा का आदिथी अक्षरों में मंडपों में होता था। कनकाभियेकना अतुल्यार्थों का पाठित कनककेशरा तथा सत्ताना साहित्यने संभाषणने भाटे, "पक्षों में... वैष्णवार्थों तथा अन्य पक्षों की संभतिथी श्रीमदाचार्यवरणुने छोड़ने अतिविक्रमों का पाठ तथा राज सन्मुख शुद्ध सुवर्णों का पाठ का उपर गिरा जाता। कथा... यथाविधि पूजन करी, पवित्र तीर्थ जलोथी महाभियेक तथा साम्राज्याभियेकना भद्राधी आपने आचार्य साम्राज्याभियेक कथों."

६. निजवाताः—आ ग्रंथ श्रीगुसांठिना अतुल्यार्थों का श्रीगोकुलनाथजी के संभेदों के। तेषां विद्वानगरो प्रसंग ४ थे। पानु ७ थी १३ में आपकी लगे थे के—राज कृष्णदेव की धर्मराजाओं धर्मा दिससथी वादविवाद साधे थे। आधी आपकी सत्ताओं पड़ा था। राज आपने परवश आया। आपकी सिंहासन के पर गिरा जाता। वादविवाद था यथा। तेषां भाषावादीओं का "विद्वानानंदगिरि" नाम का महासमर्थ भाषावादी पंडित होता। तेनी साधे भाषावाद और ब्रह्मवादना प्रश्नों में २७ दिवस वाद आया। अते ते भाषावादी निरुत्तर थे। ते उपरथी ओके ओके विद्वानों ने पुछतां तेको पक्ष वादों का दारी गया। आ सत्ताओं में, "पक्षों, नानकपंथी, निरंजनी, कपीरपंथी वगैरे धर्मा विद्वानों होता ते सधना निरुत्तर थे। गथां। आधी आ प्रश्नों विजय थे।

" पाछे वैष्णव संप्रदायों के रामानुज संप्रदायों के हनुमंताचार्य, निम्बार्क संप्रदायों के केशवभट्ट काश्मीरी, और मत्त्व संप्रदायों के न्यासतीर्थ स्वामी इत्यादि आचार्य सतमहंत हुने विन सज्जनने कही जो हम श्रीआचार्यजीको तिलक करेंगे । जो आजसे हमारे वैष्णव संप्रदायों के ब्राह्मण सज्जनने ये राजा भये । और आचार्यपदवी दीनी जो हमारे सज्जनने सिरामानि ये हे जिनने हमारी वैष्णवता और वैष्णव मार्ग राख्यो । यह सुनिके राजा चहोत प्रसन्न भयो और कबो जो बहोत आछो, तुम सज्जनने ऐसे विचार्यों हे तो मैं श्रीआचार्यजी महाप्रभुनको कनकाभियेक करूंगो। तब सब वैष्णव संप्रदायों के आचार्य महंत प्रसन्न भये तब राजा कृष्णदेवने आछो मुहूर्त देखीके आपको शतमण सुवर्ण जलमें डालके कनकाभियेक करांयो, ब्राह्मण सज्जनने तिलक कीयो। सब कोट श्रीवल्लभाचार्यजी कह्ये लगे। एसों नाम का दिनानें प्रसिद्ध भयो।

(પચાસંબનગ્રન્થ) ૨૭ દિવસ વાદ કરી સમર્થ પડિતોને હતી માયાવાદનું ખંડન કર્યું. પછી વધાનગર કૃષ્ણરાયની સભામાં ૧૬ દિવસ વાદ કરી પાખંડ મતનું ખંડન કરી, અહમદનું સ્થાપન કર્યું. સર્વ પડિતોને સ્તેષ્ઠાદથી હત્યા. રામ કૃષ્ણદેવે સતોષ પામવાથી સુપર્યુનો આલોક કર્યો. આ સુપર્યુ ધણું હોવા છતાં સ્નાનોદક ગણી ત્યાગ્ય કર્યું.

આ કંડોલ નામનો ગ્રન્થ શ્રીગુસાંધીના સેવક ખંભાલીયાના રહીસ ગિરિનારા અહમદ કથાણુભટ્ટનો લખેલો છે. તેથી આ ગ્રન્થનો પુરાવો સગળ માની શકાય. તેમ આ લેખના લેખક પોતે વિદ્વાન સ્કોલર છે તેથી તે પ્રમાણે ગણાયજ.

૧૧. શ્રીવલ્લભવેલ—શ્રીગુસાંધીના ચતુર્થલાલજી શ્રીગોકુલનાથજીના એક સેવક “ કૃષ્ણદાસ કવિ ” યદિ ગયા જેઓ શ્રીગોકુલનાથજીના ખાત્ર લાગ્યો સેવક છે. તેઓએ શ્રીવલ્લભવેલ નામનું કાવ્ય રચ્યું છે તેમાં પોતે જણાવે છે કે:—

ખંડી માયાવાદ પોતે, સાકાર અહમ્ને સ્થાપીયા;

ફરી માયાવાદી હતવાને, વિદ્વાનગર પાકિંધારીયા.

ત્યાં તત્ત્વવાદી માયાવાદી, વાદ કરે તેણીવારે;

રામ કૃષ્ણરાય આગળ યાતાં, સોળ દિવસ થયા ત્યારે.

ફરી પોતે વાદ માયા, હતી ખંડ પાખંડ;

અહમવાદ તે સ્થાપ્યો નિર્ભય, મહાપ્રતાપ પ્રચંડ.

રીતી નુપમણિ જ્ઞાન કનકે, કરાવ્યું કર બેઠી;

સોળ સદસ તે મોહાર યદિ, તેના પૂર્વા મનના દોડ.

અંગીકાર ન કર્યો દ્રવ્યને, પાદોદકવત્ જળણી;

આ કૃષ્ણકાવ પછી શ્રીગોકુલનાથજીના સમકાલીન હતા એટલે આ લેખ રાષ્ટ્રમાણુ માની શકાય, પુષ્ટિમાર્ગમાં લાલની પદ્ધતિ મુજબ વિગતવાર ઇતિહાસ લખવાનું કાર્ય શ્રીગોકુલનાથજી (૪ થા લાલજી) ના અનન્ય સેવકોએ કર્યું છે. આવી તવારીખ તો ઘણી પછી સપ્રેક્ષમાં લખેલી મળી આવશે નહિ. શ્રીકથાણુભટ્ટ આદિ શ્રીગોકુલેશજીના સેવકોએ સર્વ સ્થળે શ્રીવલ્લભાચાર્યજીના કનકાભિષેકનો મહાન પ્રસંગ માનીને ગોંધી લીધો છે. માત્ર તેઓ શ્રીવલ્લભાચાર્યજીનાં પ્રાકલ્યની સાથ સં. ૧૫૩૫ ને બદલે સં, ૧૫૨૬ માને છે અને આ કનકાભિષેક ૩૦ વર્ષની ઉંમર પછી, લગ્ન થયા પછી થયો છે એવો સ્પષ્ટ ઉલ્લેખ એ ગ્રંથોમાં મળે છે. વિજયનગર અને કૃષ્ણદેવરાયના ઇતિહાસની સાથ સરખાવતાં આ વાત બંધનેસતી થાય છે. કનકાભિષેક તો બધા રીકારે છે.

૧૨. શ્રીમૂલપુરુષ:—(કર્તા ગો. શ્રીદારકેશજી મહારાજ) આપશ્રી આજ્ઞા કરે છે કે:—

છંદ:—કાંડે સખ સ્તુતિ કરે જળ, કિયો માયામત ખંડન;

રાખ્ત જે જે હોત સખ મુખ, લાકપર્ચંય જુવમંડન.

સ્તુતિ કરે દિગ્દ દાય બેરે, રાય મરતક નાવલી;

પરમ મંગળ હોત હે, કનકાભિષેક કરાવલી.

પાછે જલસોં ન્દાય વિરાજે, વિનતિ કરી રાયે મનં સાજે.

દ્રવ્ય સખે અંગીકૃત કરીયે, પ્રભુ ભોલે યહ નોંહી મહીયે.

૧૩. શ્રીવલ્લભવિલાસ ગ્રન્થ જાગ ૧ લે, પા. ૧૨ કાશીમાં લખાયેલો પ્રાચીન ગ્રન્થ છે. તેમાં પછી લખે છે કે:—

“ શ્રીમદ્ભગવાત્કાર્યજી અનેક દેશાંતરમે માયાવાદીઓકોં પરાસ્ત કરિ, વિચાનગર રાજા કૃષ્ણદેવકે સભામેં પધારિ, માયાવાદરૂપી અંધકારકો નાશ કરી, અને ભક્તિમાર્ગકે સિદ્ધાન્તરૂપી તેજકો પ્રકાશ કરીયો. અર્થાન્ માયાવાદકો સ્વંડન કરી વ્રહ્મવાદકો સ્થાપન કરીયો. ઔર વૈષ્ણવ-સંપ્રદાયકી ઝઙ્ઙુષ્ઠતા વતાઈ તા સમેં ચહું ઔર તેં વડે જેજેકાર શબ્દ હોત મયો, રાજા સાઘાંગ દંડવત્ કરી કનકાભિષેક સૌ. ૧૦૦ મળ મુવર્ણ તેં કરાયો. સમાકે પંડિત મહંત આદિ સવ ઠાડે હોય અચંત ગદગદ હૃદયસો શ્રીમદ્વાત્કાર્યજી મહાપ્રમુનકો મુતિ કરત હે. x x x પાછે સ્વ આચાર્યનને શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રમુનકો તિલક કિયો.

૧૪. ભારતભાર્તિ: શુ' કહે છે ?—ભારતમાં મુખ્યત્વે અને જન-માન્ય વિદ્યાન ભારત-ભાર્તિ: પંડિત વેદાંતમહાશય શ્રીગદ્ગુણાચાર્ય તત્ત્વાર્થદીપનિષાધની સંસ્કૃત પ્રસ્તાવનામાં લખે છે કે—

તુંગમત્રાતેરે વિચાનગરે સકલવૈષ્ણવવિચારવાકાન્ વદ્ધપણાન્ વાદિગણાન્ વિજિત્ય સાયણ-માધવદ્વારા વેદભાષ્યકારાયિતુર્વાર્ણુકરાજસ્ય પૌત્રં કૃષ્ણદેવચર્માર્ણ મહાદેવમુદ્ધાત્ય,....

૧૫. એજ ભારતભાર્તિના મહાન્ શિષ્ય સદ્ગત શ્રીશ્રી કવીશ્વર શ્રીનંદકિશોરજી લખે છે કે—

દક્ષિણાપથપ્રધિતં તુંગમત્રાતેરર્વાર્તિવિચાનગરાધિપતેઃ કૃષ્ણદેવચરેન્દ્રસ્ય સદાસિ સકલ્લવાદિ-હૃન્દવિજયાભિષોતકકનકાભિષેકવિશેષિતવૈદ્યુપ્પાતિશયવિસ્માપિતસકલજનસમાજાઃ....॥

૧૬. નિત્યશીશારૂપ ગોસ્વામી શ્રીગોકુલાધીશજી મહારાજ પથ લખે છે કે—

રાજા પ્રાજ્ઞાભિમાતિભરિતોદામદુર્વાદિજેતા વાચાં નેતાં શુભિ વિજયતે કલ્પપ્રદેમાભિષેકઃ ॥

આ શ્લોક ઉપરની દીક્ષામાં ભારતભાર્તિ: લખે છે કે—

રાજા કૃષ્ણદેવાલ્યેન કલ્પપ્રદેમાભિષેકઃ રચિતઃ કનકાભિષેકો યસ્ય તાદૃશઃ । અથાભિષેક-મુવર્ણમેતદંગીકાર્યમિતિ વિજ્ઞાપિતે સતિ ત્વાનસલિલસદૃશં નાસ્માભિરિદ્મમાદીયેતે દ્યુત્યન્તંતઃ ।

૧૭. હિન્દી ભાષાના જનકશામા ભારતેન્દુ શુ' કહે છે ?—જેમને ભારતવર્ષ રાષ્ટ્રીય ભાષા-હિન્દી ભાષાના પિતા માને છે. જેઓ એક પ્રખર ઇતિહાસજ્ઞ અને પુરાતત્ત્વવેત્તા, અંગ્રેજી ભાષાના પદ્મ અધ્યાપકશ્રી વિદ્યાન, તે ભારતેન્દુ બાપુ દરિયેદેશ પોતાના ‘શ્રીવત્સભીષ સંસ્કરણ’ નામના લેખમાં ૨૫૮ લખે છે કે—

“ ત્વ રાજાને સવ પંડિતોસે જયવત્ ઊલ્લાસ કરે ઉસ પર અપની મુદ્ર કર કે દન કો દિયા ઔર સવ પંડિતો ઔર મનકે આચાર્યોને મિલકર આચાર્યપદવીમે મહાપ્રમુજીકો પુકારા । રાજા કૃષ્ણદેવકે કનકાભિષેકકે આપકર્ષ પૂજા કિયો ઔર સપરિવાર શમ્ભુ આકર સેવક હુઆ ॥”

૧૮. સંપ્રદાયના આગ્રગય વિદ્યાન, ધર્મશાસ્ત્રઅન્યોમાં મહાન નિપુણ, પુના કેમ્બ્રિજ કોલેજના સંસ્કૃતના પ્રોફેસર શાસ્ત્રીજી મમતાલા ગણપતરાય M. A. શુ' કહે છે ?

અનશિષ્ટ આઠ દિવસમાં સાંખ્યમીમાંસાની સમીક્ષા કરી, સર્વ આચાર્યો સમક્ષ વાગ્દીક્ષત્ય પ્રકટ કરી, નિર્મલ કર્મભાર્ગ, શુદ્ધ જ્ઞાનમાર્ગ અને નિરુપાધિ ભક્તિમાર્ગનું સંસ્થાપન કર્યું. તેથી સર્વ આચાર્યોએ વિનયનિમિત્તક કરી, શ્રીવત્સભાષાએકેને વિનયપત્ર સુમયું. પોતાના સર્વ અંશયની અગતિ નિગતિ થઈ વ્યાપી રાખીને કેન્દ્રાભિષેક કરાવેલ. સર્વેથી દક્ષિણામાંથી સમનિષેક

માનનો અંગીકાર કરી, રાગને શરણે લઈ, તેણે આપેલા છત્ર, ચામર, આદિ આચાર્યચિહ્ન ગ્રહણ કરી પાંદુરંગ-વિદ્યનાથ પધાર્યા.”

૧૯. સંપ્રદાયના સુપ્રસિદ્ધ વિદ્વાન અને ‘વિદ્વાન્-ડન’ જેવા મહાન અધ્યાના અનુવાદ કરનારા ગ. રા. નાનુલાલ નારાયણદાસ ગોંધી M. A. LL. B. ‘પુષ્ટિપાદાવલી’માં લખે છે કે:—

“શ્રીવલ્લભ દક્ષિણમાં વિદ્યાનગર પધાર્યા. ત્યાં વિદ્યાનગરમાં માથાવાદીઓને સંદેશથી દરાવ્યા. તેથી સંતુષ્ટ થઈ ત્યાંના રાગ કૃષ્ણગણે તેમનો સુવર્ણચિહ્ન કર્યો. અભિષેકવાણું સુવર્ણ સ્નાનગ્રંથ હોવાથી શ્રીવલ્લભે તેનો અંગીકાર ન કર્યો.”

૭ સાંપ્રદાયિક પુરાતત્ત્વવેદના શું કહે છે ?

‘પુષ્ટિમાર્ગ’ના મહાન અધ્યાપી અને અધ્યપકટકથી તેમજ વિશ્વવિદ્યાલયનું વેદાંતપારિવાયિક મેળવનાર ઇતિહાસક તથા પુરાતત્ત્વવેદના સદ્ગત સાક્ષર શ્રીયુત તેક્ષીવાલા એક અંગ્રેજી ભાષણમાં કહે છે કે:—

૨૦. “વિદ્યાનગરના રાગ કૃષ્ણદેવે શ્રીવલ્લભાચાર્યજીને કનકાભિષેક કરીને ભારતવર્ષના તે સમયના સુખ્ય આચાર્યશ્રીનું પદ સમર્પ્યું.”

આ ઉપરાંત તેઓ રશ્મિનાથક શ્રીમદ્દલ્લાખની ‘પ્રકાશ’ નામની દીકાની દીકા પ્રકટ કરતાં, શ્રીમદ્દાચાર્યશ્રીનું અંગ્રેજીમાં હવનચરિત્ર લખતાં એ જ દર્શાવત દર્શાવે છે.

તે ઉપરાંત ‘સિદ્ધાંતરહસ્ય ગ્રંથ’ની અંગ્રેજી પ્રસ્તાવનામાં લખે છે કે:—

“મને તેમ હો. પણ એટલું તો નિઃસંશય છે કે શ્રીમદ્દલ્લાચાર્યે કૃષ્ણદેવરાય, વ્યાસતીર્થ અને તત્ત્વચિંતકોના મન ઉપર અતીવ પ્રભાવ હાથ પાડી હતી. આ અધિવેશનના અંતમાં કૃષ્ણદેવરાયે ચાતમણ સુવર્ણથી આચાર્યશ્રીને કનકાભિષેક કર્યો, પરંતુ એવું કહેવાય છે કે આચાર્યજીએ આ સુવર્ણનો સ્વીકાર ન કર્યો, અને ત્યાંથી આગળ પ્રયાણ કરવાની તૈયારી કરી. શ્રીમદ્દાચાર્યચરણના આવા પ્રકારના ત્યાગથી ત્યાં ઉપસ્થિત યોગી સર્વે એકત્રિય થઈને તેમને મારે માનની સાગલી વૃદ્ધિ પામી. માત્ર વ્યાસતીર્થે તો પોતાની પાછળ પોતાના મહત્ત્વ આધારિત ચલાને આપઘાતે વિનંતિ પણ કરી. વ્યાસતીર્થે કૃષ્ણદેવરાયની સાથે પુનઃ શ્રીમદ્દાચાર્યચરણની પાસે જઈને અમુક વસ્તુઓની ભેટ કરી. એવું કહેવાય છે ‘કે’ આ બંધી ભેટમાંથી શ્રીમદ્દાચાર્યજીએ હીરા, પત્તાદિથી વર્ણિત એક સુવર્ણ મેળવ્યા તેમાર કરાવી વિજયનગરના વિદ્ય સ્વામીના મંદિરમાં શ્રીવિદ્યલેખને સમર્પણ કરી, અંતમાં એમ લાગે છે કે આચાર્યશ્રી સ્વયં અદ્વૈતી હોવાથી કદી વ્યાસતીર્થની વિનંતિ ન સ્વીકારી શક્યા. ‘પરંતુ’ તે સમયથી તેઓશ્રીની એક મહાન આચાર્ય તરીકે ગણના થવા લાગી.

તમે માત્ર વ્યાસયોગિચરિત્ર કે જે વિશ્વસનીય મનાતું નથી તેજ ફક્ત એક જ અંધ સામે દષ્ટિ કરી મીટ માંડી રહ્યા છો. પણ આજુબાજુ નજર ફેરવનાજ નથી. વેણુનાદ માસિક વર્ષ ૨ નું અંક ૬-૭ ૫૯ ૧૪૨-૧૪૩ વાંચો તો જરા શ્રી. તેક્ષીવાલા શું કહે છે ?

“દક્ષિણમાં વિદ્યાનગરમાં કૃષ્ણદેવરાયને ત્યાં વિષ્ણુચમાર્ગીઓ અને માયાવાદીઓ વગેરે બહુવાદીઓ વાદ કરવાને બધા દના. તેમાં કોઈના જય પરાજય ન થયો. તેથી રાગને ખેદ થયો. આ સમયે આચાર્યશ્રી ત્યાં પધાર્યા. વેદાન્ત વગેરેની સુક્તિઓથી સર્વે વિદ્વાનોનો પરાજય કર્યો. ત્યારે સર્વસામર્થ્યથી સંયુક્ત શ્રીવલ્લભાધીશને રાગએ કનકાભિષેક કરાવ્યો અને એ દ્રવ્યનો સ્વીકાર કરવાનું રાગએ કહ્યું ત્યારે આપઘાતે સ્નાનનું ઉચ્છિદ્ર દ્રવ્ય આપણ છે એમ કહેતાં રાગએ ફરીથી બહુ દ્રવ્ય નિવેદન કર્યું. તેમાંથી પ્રથમે સાત લેખમુગ સ્વીકારી” વગેરે.

૨૨. શ્રીવલ્લભચરિત્ર—સદગત રા. બ. લક્ષ્મીભાઈ પ્રાણુવલ્લભદાસ પારેખ, રમોલકેશ કોટના ૧૪૮૪ દત્તા. તેમણે ધણા મથો મુગ્ધાની બાપમાં રખ્યા છે. સંપ્રદાયના હિતમોક્તમ મથો તથા સિદ્ધાંતો મુદ્દ મુગ્ધાની બાપમાં લખવાનું પ્રારંભિક માન એવ સદગત મુદ્દમને પડે છે. એમણે ધણે પ્રવાસ કરીને શ્રીવલ્લભચરિત્ર એક ઐતિહાસિક દ્રષ્ટિએ લખેલું છે. તેમાં નેચો 'સમે છે કે:—

“તે પછી પુરોહિત અને ત્રેપાંચે હતું કે કનકાભિષેકનો સમય છે, તેથી રાગની આચારી પુરોહિત અને ઉપાધ્યાયે આચાર્યશ્રીને ત્યાં કનકાભિષેક માટે મંડળ રચું હતું ત્યાં એક મુદ્દ પાટ ઉપર પધરાવ્યા. તે વખતે રાગ અને બીજા આચાર્યો આચાર્યશ્રીને વિંટાઇ દિમા. તે પછી દેવી તેજવાળા વૈષ્ણવ બ્રાહ્મણો અને સંલુ આદિ સિપ્તોને નવન રાગવિભૂતિઓ અને દેવ વિભૂતિઓ કૃષ્ણદેવ રાગને આપીને આચાર્યશ્રીનું પૂજન કરાવવાનો સંકલ્પ કરાવવાનું પોતાના પુરોહિતને હતું. તેથી પુરોહિતે પ્રથમ અભિષેકનો સંકલ્પ કરાવ્યો; પછી રાગને પાછ, અર્ધ આચમન આદિ કરાવીને વિધિપુરસ્કર તીર્થોમાંથી આંલુવા જળથી મદાભિષેક અને સામાન્યાભિષેક મંત્રો પઠે અર્ચિત અને પુરોહિતની સાથે આચાર્યશ્રીને અભિષેક કર્યા.”

૨૩. કલકતામાં મળેલી સર્વ ધર્મોની પરિપદ—ઈ. સ. ૧૯૦૬ (સંવત ૧૯૬૫) માં આચાર્યના સર્વ ધર્મોની પરિપદ દલકતા ખાતે મળી. તે વખતે રવ. રા. બ. લક્ષ્મીભાઈ પ્રાણુવલ્લભદાસ પારેખ એમો અમદાવાદ રમોલકેશ કોટના માલ જમ્જ તથા મદાન તત્ત્વવેત્તા દત્તા. પોતે એ પરિપદમાં મળેલા ત્યાં તેમણે “શ્રીવલ્લભાચાર્યનું જીવન અને તેમનો તત્ત્વબોધ” એ વિષય ઉપર અંગ્રેજીમાં વ્યાખ્યાન આપેલું છે.

૨૪. શ્રીગોકુલેશજીનું જીવન ચરિત્ર—(લેખક-ગગનલાલ વામજી ગાંધી B. A. પ્રકાશક-લક્ષ્મીભાઈ જનનલાલ દેસાઈ.) બા લેખકે પોતે શ્રીગોકુલનાયજીનું જીવન ચરિત્ર આપાર સુધી કોઇ પણ કેશણે લખાયા નથી તેથી બચીરય પ્રવલ લેખક અને પ્રકાશકે ધણાં શ્રામો કરીને શોધ કરી જાણ્યું છે. શોધખોળમાં શ્રીગોકુલેશજીના અનન્ય બાતો બરૂની વૈષ્ણવ સમાજ પાસેથી પ્રાપ્તિન મળ્યો મેળવી તે ઉપરથી મુદ્દરુ મન્ય બનાવ્યો છે તેમાં લેખક જણાવે છે કે:—

“આ વખતે આચાર્યશ્રીએ વૈષ્ણવ ધર્મનું દક્ષણ કર્યું અને પાદમાં વેદવિરુદ્ધ તથા વેદનું ખાઈ રદમય નદિ સ્તમજનાર સર્વ ધર્મોના પરાજય કરી એતન્માર્ગની જયપતાકા ઉઘાડી. તે મતામાં આચાર્ય પાસેથી સાથે શ્રીઆચાર્યજીએ લગભગ ૨૭ દિવસ સુધી વાદ કર્યો અને તે દ્વારા પોતાનું અપરિચિત શાસ્ત્રગાન જાહેર કર્યું રાજા કૃષ્ણદેવ સરણે આવ્યો ને તેણે તે કનકાભિષેક કરાવ્યો.”

ઉપરે નનુલું ભક્તિમાર્ગનું મંડન કર્યું. ત્યારપછી કૃષ્ણદેવરાજને સોનાના પુત્રોથી અને જળથી સ્નાન કરાવીને રાજાએ વિનંતિ કરી કે આ દ્રવ્ય અંગીકાર કરો ત્યારે આપશ્રીએ કર્યું કે આ સ્નાનનું જલ છે તેથી હમોને ખપે નહિ. તે દ્રવ્ય જ્ઞાતજોને વહેતી આપો. તે પ્રમાણે રાજાએ કર્યું. અને આપનો સેવક બનાવો એવી વિનંતિ કરી. તે પ્રમાણે સેવક બનાવ્યો. બેટમાં સુવર્ણના યાત્રામાં સુવર્ણની મહોરો મુકી તેમાંથી ફક્ત ૭ સોના મહોર દેવી હોવાથી તેનો અંગીકાર કરીને બાકીની મહોરોને જ્ઞાતજોને વહેતી આપવા આજ્ઞા કરી ત્યાર પછી પંદરપુર શ્રીવિઠ્ઠલા રૂપમાર્ગની યાત્રાએ પધાર્યા.

- ૨૭. શ્રીમદ્દલ્લભાચાર્યશ્રી-અચરિત્ર—તેજક:-સંપ્રત્યયા પ્રાચીન ગ્રંથોની શોધ કરી પ્રસિદ્ધ કરનાર શ્રીયુત રત્ન. ગોરખનદાસ લક્ષ્મીદાસ. સૌથી પહેલાં શ્રીવલ્લભાચાર્યજીના જીવન ચરિત્ર સંબંધમાં ઘ્રષ્ટ લેખ પ્રસિદ્ધ નહીં થયેલો તેથી તેમણે શોધ કરી ઉપયુક્ત ગ્રંથ જેવો છે તે સં. ૧૯૫૪ માં છપાવ્યો છે. તેમાં તેઓ લખે છે:—

“ખીન્ને દિવસે પ્રાતઃકાળે રાજાએ ધણા તપ્તથી પ્રણામ કરીને જળથી કંચનસ્નાન (કનક-ખિષેક) કરાવ્યું ને તે દ્રવ્ય તેમને આપવા માંડ્યું. ત્યારે તેમણે ના. પાડી. પછી રાજાએ મોહરોનો એક થાળ બેટ કર્યો તેમાંથી દેવી દ્રવ્યની સાત મોહરો દત્તી તે આપશ્રીએ લીધી અને તે મોહરોનાં શ્રીનાથજીને રૂપર કરાવ્યાં છે. આપશ્રી ત્યાંથી આગળ યાત્રાર્થે પધાર્યા.”

૨૮. શ્રીમદ્દાચાર્યશ્રી-મુંગાછમાં રા. સા. શેઠ ખીમજી કુંવરજી ૧૭. પી. તરફથી નીકળતા શ્રીમુખોધિનીજી માસિકના ગ્રાહકોને બેટમાં મળેલું પુસ્તક. બનારસમાં ગોપાલમંદિરમાં શ્રી. ગો. શ્રીગિરિશંકરદાસજીના પ્રમુખપણા નીચે થયેલી સભામાં અપાયેલાં આજ્ઞાનનો સાર:—

આપને સુના કી વિશાનગર કે કૃષ્ણદેવરાજાને ધર્મસભા એકત્ર કી હૈ જીસમેં સમસ્ત ધર્મ ને જો નિમન્ત્રિત કીયા હૈ ઔર જીસકા શાસ્ત્રાર્થદારાં જય હોગાં ડસીકા સ્વયં અનુયાયી મી હોના ચાહતે હૈં । આપ વહાં પધારે ઔર શાસ્ત્રાર્થ મેં જય સમ્પાદન કીયા । આપને વેદાદિ શાસ્ત્રોકે પ્રમાણદ્વારા જ્ઞાનવાદ શુદ્ધાદૈત વાદકા પ્રતિપાદન કીયા । વહાં પર ઉપસ્થિત સમસ્ત સમ્પ્રદાયકે આચાર્યોને આપકા વિજય સ્વીકાર કીયા ઔર કૃષ્ણદેવ રાજા સમેત સમી પંડિતોને આપકો નિમ્ન આચાર્યકી પદવી પ્રદાન કી.

“શ્રીવેદવ્યાસવિષ્ણુત્વામિ સમ્પ્રદાય સમુદ્ધાર સંમૃત શ્રીપુરુષોત્તમ વદનાવતાર સર્વાન્નાય સત્ચાર ધૈન્યવાન્નાયપ્રાચુર્ય પ્રકાશ શ્રીચિત્તમંગલાર્પિત સમ્રાજાસનાત્વંડમ્મંદલાચાર્ય વર્ય જગદ્ગુરુ મહાપ્રભુ શ્રીમદાચાર્યા: ॥

ઔર રાજા કૃષ્ણદેવ દારગાગત હુઆ । રાજાને કનકામિષેક કીયા ઔર બહુત મેટ ધરી પરન્તુ નિરપેક્ષ આચાર્યચરણને કેવલ શ્રીઠાકુરજીકે લીયે ૭ મુદ્રાવે સ્વીકાર કર અન્ય દ્રવ્યકો વટવા દીયા, ધ્યાન દીજિય કી હસે અધિક નિરપેક્ષત્વ કયા હો સકના હૈં ?

૨૯. વૈષ્ણવ માસિક રાજકોટ—(તત્રી-આખુંદજી વેતજી પરમાર) પોને જાતિગે ગોત્રી દતા તેઓ ચુસ્ત મરનલી વૈષ્ણવ દતા. મહેસાણામાં સુધી પહેલાં એજી માસિકપત્ર કદાહતા દતા. તેઓ પોતાના પત્રમાં જણાવે છે કે:—વિતાંગરમાં કૃષ્ણદેવ રાજાએ વેદિક સિદ્ધાંતોને નિર્ણય કરાવવા યજ્ઞશાસ્ત્રના સાંકર્યતિવર યજ્ઞદેવતિ, માખ

આવતી કાચે શ્રીમદ્દાપ્રભુજીને કનકાભિષેક કરવાનો ઉત્સવ કરવો છે માટે નગરમાં ૩૭ વંગગાયત્રીને પ્રગ્લને સૂચના આપો કે સદુ લોકો પોતપોતાના ઘરના દાર ઉપર કેળના ચંચોનાં તોરણોનાં, ધ્વજોનાં અને મંગળકળશોનાં સ્થાપન કરે. રાત્રીમાંથી પહુ એવાજ પ્રકારની રચના કરાવવી. આ ઉપરથી રાત્રીથી લોકોએ નગરમાં સૂચના આપેતાં તે પ્રમાણેજ નગરને શણગારવામાં આવ્યું. કૃષ્ણદેવ રાજ્યએ પ્રાતઃકાળમાં ઉઠી નિત્યનિયમ પોહોંચી લઈ ઉત્તમ વસ્ત્રોને તથા ઉત્તમ અન્નકારીને ધારણ કરી બ્રાહ્મણમંડળીને તથા મંત્રી આદિ લોકોને સાથે લઈ રાત્ર વૈભવના ભપકાથી શ્રીમદ્દાપ્રભુજીની પાસે જઈ. કનકાભિષેકની વિનંતિ કરીને તેમને પધરાવી ગયો. શ્રીમદ્દાપ્રભુજીને પ્રથમ કનકાભિષેકની શાળામાં ગિરાજમાન કરી પછી સો બાર સોનાની પાટ ઉપર પધરાવી સદસ્ય હિરણ્ય સુભોજિત કરેલા સુપર્ણના પાત્રમાં અભિષેકનું જળ ભરીને કૃષ્ણદેવ રાજ્યએ શ્રીમદ્દાપ્રભુજી ઉપર અભિષેક કર્યો. તે સમયે બ્રાહ્મણો ચારે વેદના મંત્રો ભણવા લાગ્યા, સ્ત્રીઓ મંગળ ગાયન કરવા લાગી, સઘળા પ્રકારના વાજત્રો વાગવાં લાગ્યાં અને સર્વે લોકો ‘જય જય’ રાજ્ય ખેલવા લાગ્યા. આ પ્રમાણે અભિષેક કદી દિવ્ય વસ્ત્રો તથા દિવ્ય અન્નકારીનાં ધારણ કરાવી કૃષ્ણદેવ રાજ્યએ શ્રીમદ્દાપ્રભુજીને લુદાં લુદાં આચાર્યતિલક કર્યા. આ સમયે શ્રીમદ્દાપ્રભુજી ‘વલ્લભાચાર્ય’ એ નામ પ્રગટ થયું.

૩૪. શ્રીરામાનંદી પંડિત શું કહે છે ?—શ્રીરામાનંદ સંપ્રદાયના સુમસિદ્ધ વિદ્વાન અને વૈષ્ણવ તથા સત્યાગ્રહી દેશભક્ત પોતાના ‘સાધુસર્વસ્વ’ નામના સાપ્તાહિક પત્રના ક્લાંકમાં લખે છે કે—

ખાસાજકા દર્શન કરકે આપ વિદ્વાનગર પહુએ. વિદ્વાનગરકે રાજ્ય કૃષ્ણદેવકે દરબારમે રીવ જીર વૈષ્ણવોમે એક જખરદસ્ત સાર્થક હુઆ. સાર્થકમે વસલને રીવેકો ખરી તરફ પરાસ્ત ક્રિયા જીર વૈષ્ણવ ધર્મકી કાક જગાઈ. વડોમે વસલ ‘આચાર્ય’ પદમે વિશ્વપિતૃ હુએ.”

૩૫. “શુજરાતી” પત્રના આવૃત્તી શું કહે છે ?—શુજરાતી સાહિત્ય સમૃદ્ધિમાં અદિતીય કાળે અર્પનાર સ્વર્ગરથ તંત્રી સાક્ષર ઇન્દિરામ સ્પર્શમ દેસાઈ શ્રીભાગવતની પ્રસ્તાવનામાં શ્રીમદ્દક્ષિણાચાર્યજીનું જીવનચરિત્ર લખતાં લખે છે કે—

“મહારાજ શ્રીકૃષ્ણદેવ વિદ્વાનોની સભામાં આવ્યા, અને કર્મવાદીઓનાં પરસ્પર વાદયુદ્ધ ઘર થયું છે, એટલામાં શ્રીવલ્લભાચાર્યજી પણ સભામાં આવ્યા. તેમણે પણ સારસ્વત્યમાં ભાગ લીધો. ભારે વાદ ૨૮ દિવસ સુધી ચલ્યો. ખંડન મંડન ચર્ચા....શ્રીકૃષ્ણ દેવરાજ શ્રીવલ્લભાચાર્યજીની વાદસૈલી તેમજ તેમની વિદ્વત્તા ઉપર મોહિત થયો અને તેમનો સેવક થયો. અને જે સિંદાસન માટે માયાવાદીઓ તરફી રચ્યા હતા તે સિંદારાજ ઉપર શ્રીમદ્દક્ષિણાચાર્ય ગિરાજમાન પછી ચાર સંપ્રદાયના આચાર્યોએ તેમને તિલક કરી શીશિયુસ્ત્રવાળીની ગાદીએ બેસાડી આચાર્ય પદે સ્થાપ્યા.”

ઉપરની પ્રસ્તાવનાને દાસના તંત્રી રા. રા. નટવરલાલ દ. સ. દેસાઈએ પણ મંજુર રાખી છે.

૩૬. જે વિદ્વાન બ્રાહ્મણોનો અભિપ્રાય—મહેતા ભાઈશંકર તથા ઉપાધ્યાય કુંદભરામે સં. ૧૯૨૮ માં છપાવેલા ‘વૈષ્ણવધર્મપ્રકાશ’ ગ્રંથમાં આ પ્રમાણે લખ્યું છે—

ત્યારપછી પ્રાતઃકાચે શ્રીમદ્દાપ્રભુજી, રાજ્ય કૃષ્ણદેવની સભામાં ગયા. ત્યારે તેણે યજ્ઞ દર્શની પ્રણામ કરીને જલમાં સતમણ સુવર્ણ નાંખીને તે જગથી તેમને કંચનસ્નાન કરાવ્યું.”

૩૭. શ્રીસુરતની શ્રીબાલકૃષ્ણ સેવાસભાજ તરફથી નીચેની પત્રિકામાં લખે છે કે—

અને તે દિવ્ય પ્રકાશ પ્રસરાવનાર નો કોઈ હોય તો ભક્તિમાર્ગના છેલ્લા મહાન આચાર્ય શ્રીમદ્ભૂભાચાર્યજી છે, એમ હિન્દોના ઇતિહાસ કહે છે. તક અને યુક્તિઓના આંદોલનથી કઠોર બનેલાં હૃદયોને ઉપનિષદ્ગ્રંથ સુધાના સેચનથી કોમલ બનાવીને તકયુક્તિના મોહથી છોડાવનાર તરીકે શ્રીમદ્-ભૂભાચાર્યજીનું પુનિત નામ આખા જગતના ઇતિહાસમાં યાદગાર રહી જશે. જગતને મિથ્યા માનવાના મૂળ રહસ્યને ઓળખીને, પ્રભુસ્વરૂપ આ જગતને મિથ્યા માનીને ગૃહસ્થાશ્રમનો ઉચ્છેદ કરવાને પ્રવૃત્ત થયેલા અવૈદિક પથો, નીતિ, ધર્મ, વર્ણાશ્રમ વગેરેથી આતરાઈને કેવલ પાપમય બનેલા વામભાગીદિ નાસ્તિકમતોના વળગાડથી દેવી સૃષ્ટિને બચાવનાર તરીકે શ્રી વલ્લભપ્રભુનું નામ ભારતવાસીઓ કંદી નહિ જ ભૂલે. વેદાદિપ્રસ્થાનોની પ્રતિષ્ઠાનું પુનઃ સ્થાપન કરનારા, જ્ઞાનીઓને અનન્ય ભક્તિમાર્ગની દીક્ષા આપનારા, ભક્તોને પ્રભુરસમાં ભરત બતાવી દેનાર શ્રીવલ્લભાધીશ્વરની વધુ ઝાળખાણ શી હોય ? હા બે વસ્તોથીજ પોતાના દિવ્ય દેહને આરંભાદિત કરીને તીર્થાટનના

• અને ત્યાગના વાતાવરણથી પૂર્ણ ગૃહસ્થાશ્રમ અને વર્ણાશ્રમધર્મરૂપ આર્યસંસ્કૃતિને આખા દેશમાં જળકેળતી રાખનારા ચિત્રમાં ગિરાજતા શ્રીવલ્લભપ્રભુ પાસે કયા પ્રેક્ષકનું શિર નહિ નમે ? શ્રીવલ્લભાધીશ્વરનો આથી વધુ પરિચય શો હોય ? તેથી જ હું પ્રસ્તુત વિષયને અનુસરું છું.

ચારસો વર્ષ પહેલાંનું ચિત્ર.

આ ચિત્ર ચારસો વર્ષ પહેલાંની ભારતીય ચિત્રકલાનો આદર્શ નમુનો છે નતુસ્થિતિનું ચિત્ર ખેંચતી આજકાલની ફોટોગ્રાફી કરતાં આ હાથની ચિત્રકલા કોઈ પણ રીતે ઉતરતી નથી એટલુંજ નહિ પણ હાલની ચિત્રકલાને પણ ઝંખી કરી શકે છે. આ ચિત્ર અત્યારે પણ અજમેર પાસે આવેલા કૃષ્ણગઢ રાજ્યમાં ગિરાજે છે અને તેની સેવા પ્રભુ શ્રીકૃષ્ણનાં સ્વરૂપની જેમ કૃષ્ણગઢના રાજવીઓ કરી રહ્યા છે. આ ચિત્ર અને તેને લગતો ઇતિહાસ જાણવા જેવો છે, એટલું નહિ પણ હૃદયમાં કોતરી રાખવા જેવો પણ છે. આ ઇતિહાસ પુષ્ટિમાર્ગીય આંધ્રધિક પુસ્તકોમાં નહિ મળે. આ ઇતિહાસ કોઈ પુષ્ટિમાર્ગીય ભક્તોએ આલેખી નાંખ્યો નથી. આ ચિત્રનો ઇતિહાસ તો શ્રીકૃષ્ણગઢના મહારાજાઓના જીવનચરિત્રોમાં લખી ગયલો છે અને તેમાં કોહીનૂરની જેમ પ્રકાશી રહ્યો છે. શ્રીકૃષ્ણગઢ રાજ્ય તરફથી બહાર પાડેલા ઐતિહાસિક કાવ્યમય પુસ્તકમાંથી આ ઇતિહાસ હું ‘શુલશતી પંચ’ ના વાચકો પાસે રજુ કરું છું. આમાં ઐતિહાસિક પરતુસ્થિતિ વિના ધીનું કંઈ પણ માહુમ પડશે નહિ.

આચાર્યશ્રીના આ ઇતિહાસ-મથૂર ચિત્રનો શુદ્ધ ઇતિહાસ શ્રીકૃષ્ણગઢના જૂના પૂર્વ મહારાજા શ્રીસાવંતસિંહજીએ કવિતાના રૂપમાં લખીને ઇતિહાસરસિકોને અમિતજ ઉપદ્રુત કર્યો છે. મહારાજા સાવંતસિંહજીનો જન્મ સં. ૧૭૫૬ માં થયો.

હતો. તેઓ એક શરવીર ક્ષત્રિય મહારાજ હતા. પંદર સોળ વર્ષની ઉંમરમાં તેઓ મહાકુદમાં પણ સામેલ થઈને પોતાના બાહુબળનો પરિચય કરાવી શક્યા હતા. મહારાજ આવંતસિંહજી શરવીર હોવા સાથે એક ઉત્તમ કોટિના પ્રભુલક્ષ્મી હતા. ભક્તિરસથી એમની કવિત્વશક્તિનો વિકાસ પણ અનુપમ રીતે થયો હતો. તેઓ વ્રજભાષાના એક મહાન કવિ હતા. તેમણે વ્રજભાષામાં પ્રભુલક્ષ્મિ વિષે લગભગ ૫૦ ગ્રંથો બનાવ્યા છે. હલ્લુ પણ એમનું સુપ્રસિદ્ધ સાહિત્ય કૃષ્ણગદમાં મોજૂદ છે. તેઓ સં. ૧૮૦૫ માં ગાદીનચીન થયા. તે પછી રાજકાળમાં તેમનું મન લાચરું નહિ. લક્ષ્મીદેવ એ પ્રપંચોમાં કદી પડેજ નહિ. તેઓ તો સં. ૧૮૦૮ માં શ્રીવૃન્દાવન પધાર્યા અને વિરક્ત ભક્તના દેશમાં રહીને કેવળ વ્રજપતિ શ્રીકૃષ્ણના ગુણગાનમાં મસ્ત બન્યા. આ વખતે તેઓએ પોતાનું નામ નાગરીલાક્ષ્મી ગ્રંથનું હતું. એમણે રચેલા ગ્રંથોનો સંગ્રહ નાગરસમુચય એ નામથી એમના વંશજ મહારાજા શ્રીશાહજીસિંહજીએ પ્રકટ કરાવ્યો છે. એજ સંગ્રહમાં આચાર્યશ્રીનાં આ ઐતિહાસિક ચિત્રનો સુંદર ચિતાર છે.

આચાર્યશ્રી પોતાના પવિત્ર પાદારવિંદથી આ પૃથ્વીને જે વખતે સનાથ કરી રહ્યા હતા તે વખતે દીલ્હીની ગાદી ઉપર પ્રખ્યાત બાદશાહ સિકંદર લોદી હતો. તે ધર્માધ અને ક્રૂર હતો. પોતાનો મજબૂત સ્થાપવાની ધૂનમાં તેણે ભારતવાસીઓ પર સાધારણ અત્યાચારો નહોતાં કર્યાં. હિંદુ ધર્મ સાથે દુશ્મનાવટ બાંધી દ્વેનાર એ બાદશાહ હિંદુધર્મના આચાર્યો સાથે કયાંથી સદ્ભાવના સાધી શકે? તોપણ જગદ્ગુરુ શ્રીવૃન્દાચાર્યજી મહાપ્રભુજીની દીર્ઘ તેના કાન સુધી પહોંચી ગઈ. આચાર્યશ્રીના સદ્ગુણો અને પ્રભુતાથી પરિચિત થતાંની સાથે સિકંદર આચાર્યશ્રીનાં દર્શન કરવાને લલચાયો. એક વખતે ગુપ્ત રીતે, કંઈ પણ કાઠમાઠ વિના, ચોક્કસ ચરદારો સાથે તે આચાર્યશ્રીનાં દર્શન માટે ગયો. શ્રીવૃન્દાપ્રભુનાં દર્શન કરતાંની સાથેજ તે મુગ્ધ બન્યો અને તેનું બાદશાહી તાજ એઓશ્રીના ચરણારવિન્દમાં ઝુકી ગયું. આચાર્યશ્રીનાં સ્વરૂપદર્શનથી તો તેને એકિની લાગી ગઈ! ઘેર આવીને તુરતજ પોતાના મુલકમથાહુર હોનકાર નામક ચિત્રકારને એ મહાપુરુષનું ચિત્ર વ્રજમાં જઈ આલેખી લેવાનો દુક્રમ કર્યો. આ વાતનો ઉલ્લેખ કરતાં મહારાજા આવંતસિંહજી લખે છે કે:—

(દોહા) શ્રીલક્ષ્મણ ભંટ ગૃહ લયે, શ્રીવૃન્દા દિવસાજ;
પનરાચેર પેતીસયે, ભક્ત ઉધારન કાજ.
શાહ સિકંદર લોદી હો, દીલ્હીપતિ બાહાગ.
પ્રભુતા^૧ સુનિ લખિ હિય લયે, સરસ શ્રવન અનુરાગ.

૧ દિવસાજબાદજોમાં એવ, દિવસ કુલીન પ્રાંતજી. ૨ સં. ૧૫૩૫ ની સાતમાં આચાર્ય-ધાનું પ્રાકટ્ય છે. ૩ બો-ચો. ૪ ભાગ્યશાળી. ૫ આચાર્યશ્રીની પ્રભુતા સંભળીને, બનવીને, દેશમાં એઓશ્રીના ગુણો સાંભળવા માટે ગ્રેપ. દિવસન થયો.

પુષ્ટિમાર્ગના ઇતિહાસ.

લયો શ્રવન અતુરાગ તેં, દર્શનકો અતુરાગ.
તવ દીલ્હીપતિ ચિત્ત ભઈ, ચિત્ર કરાવન લાગ;
'હોનહાર' નામા હુતો, ચતુર મુન્નવર^૧ વિસ;
તબ તાકો હુકમ દિયો, દીલ્હીપતિ મુઅલિસ.

ઉપરના દોહરા સ્પષ્ટ છે. દીલ્હીપતિ સિકંદર શાહે આચાર્યશ્રીનું 'ચિત્ર' બનાવવા માટે હોનહાર નામના ચિતારાને હુકમ કર્યો એવો ઉલ્લેખ ઉપરના દોહરામાં છે, તો આપણે હવે હોનહાર કોણ હતો એનો વિચાર કરીશું. સિકંદરલોદીની પેઠે હોનહારનું નામ પણ ઇતિહાસમાં લખાઈ ગયું છે. એ એક મહાન ચિત્રકાર હતો. તે વખતે ભારતવર્ષમાં હોનહાર બીનહરીફ હતો. એ કેવો મહાન ચિત્રકાર હતો તેનું વર્ણન અચ્છી તરેહથી કરવામાં આવ્યું છે. હોનહારે ચિત્રકલાનો સંપૂર્ણ અભ્યાસ કરીને પોતાની કળાની કદર થવા માટે બાદશાહ સિકંદર લોદીની પાસે હાજરી આપી. બાદશાહ આગળ પોતાની કલાનું નિવેદન કર્યું. તેમાં એક અદ્ભુત કળા બતાવી. પહેલાં તો તેણે એક લાંબી પાઘડી મંગાવી લીધી. એ પાઘડીના બે છેડા બે માણસોના હાથમાં આપીને, પાઘડીની લંબાઈને અંતરે તે બન્ને માણસોને ઉભા રાખી દીધા. હોનહાર પોતે તો એક પવનવેગી અથ્થ ઉપર બેસી ગયો અને હાથમાં આંગળીનો કોયલો રાખ્યો. તે પછી ઘોરાને પૂર વેગમાં દોડાવ્યો અને હાથમાંના આંગળીના કોયલાથી પેલી પાઘડી પર એક લીંટી ખેંચી કાઢી. પાઘડીનો છેડો પૂરે થતાં ઘોરાનો વેગ રોકીને પોતે બાદશાહ પાસે આવ્યો ને પેલી પાઘડી લઈને બાદશાહને બતાવી. તેમાં એ ખુબી કે, પાઘડીમાં ઘણાં તાંત-ણાઓ હતા, પણ તેમાંનો એકજ તાંતણું એક છેડાથી તે બીજા છેડા સુધી કાઢ્યો થયેલો હતો. દોડતે ઘોડે ચઢીને હાથ સ્થિર રાખીને, બારીક તાર પર છેલ્લે મુઠી એક સરખી પીંછી ફેરવવી એ કંઈ સાધારણ કલા નજ ગણાય. હોનહારના આ મહાન ગુણની બાદશાહે કદર કરી અને તેને પોતાના ચિત્રકાર તરીકે પોતાની પાસે રાખ્યો. મહારાજ સાવંતસિંહજી લખે છે કે:—

(દોહડા) હોનહારકો કહત હોં, અબે. ચકલ ઇતિહાસ;
તાકે મુનતહી હોત હે, ચતુરનિ ચિત્ત હુલાસ.
ચિત્ર લિખનકે ઇલમકોં, સીખ મુખુદિ અથાહ;
ગયો હાજરી દેનકો, દીલ્હીપતિ દરગાહ.
હોનહાર તબ થોં કરી, ઇક ઉખ્તીયર મંગાવ
દે - નર દો ઠાટ કરે, ચિહ્નાકો^૨ પકરાય.
હોનહાર હયથે ચરયો, કરમેં લઈ લુ ગાલ;
ઘોરાકોં રપટાયકે, ખેચી રેખુ અટાલ.

વહ ઉષ્ણીપ મંગાયકે, હોનહાર કિય અર્જ;
યાદો સૂત્ર કઢાયકે, લખહુ રેખકો મર્જ.
દીક્ષીપતિ ઉષ્ણીપકો, દેખ્યો સૂત્ર કઢાય;
રેખ એક વહી સૂત્રપે, આદિ અંત સરસાય.
યા ગુનકો લખિકે બહુત, દિયો ઢાન સુન્માન;
હોનહાર સુ ખિતાબ દે, ગુનકો કિયો બખાન.

હોનહારની ચિત્રકળાનો આ પરિચય છે. દોહરા રૂપે હોવાથી તે પર વિવેચન કરવાની કંઈ અગત્ય જણાતી નથી.

ચિત્રકલાના આદર્શને પહોંચીને બાદશાહી માન પ્રાપ્ત કર્યો પણી હોનહારના અભિમાનનો પાર રહે ખરો કે? દિવસે દિવસે બાદશાહને પોતાની કળાથી સુગ્ધ બનાવીને, ઉચ્ચ પદવીને પ્રાપ્ત કરનાર હોનહારના દ્વંદ્વમાં મગરૂખી સમાતી ન હતી. તેટલામાંજ બાદશાહનો હુકમ થયો કે, “શ્રીમદ્વૃક્ષાચાર્યજીની એક મુંદર છબી તૈયાર કર.” મહારાજા આવંતસિંહજી એક દોહામાં લખે છે કે—

શ્રીવૃક્ષ આચાર્યકો, લાવહુ ચિત્ર બનાય.

લેઉ યથાજ મિલાયકે, પ્રજામંડલમેં જાય.

હોનહારના મનથી તો કાચું સુરકીલ હતુંજ નહિ. એ તો એકદમ મજામાં આવ્યો અને આચાર્યશ્રીનાં દર્શન કરીને ચિત્ર આવેખવા લાગ્યો. જેનું વર્ણન—

હોનહાર કરતારસોં, ગર્વ ધારિ મજ જાય;

શ્રીવૃક્ષ મહારાજકે, મુંદર દર્શન પાય.

પણ હોનહારને ખબર નહોતી કે, આજે હું કેની સાથે કામ લઈ રહ્યો છું? પ્રભુની સાથે ગર્વ ક્યાંસુધી ટકવાનો હતો? શ્રીવૃક્ષપ્રભુનાં મુંદર દર્શન કરીને હોનહારે પીંછી ચલાવીને એક ચત્ર તૈયાર કરી નાંખ્યું. એ ચિત્ર લઈને આચાર્યશ્રીનાં સ્વરૂપ સાથે સરખામણી કરી, તો જણાયું કે તેની બધી મહેનત છુટી પડી હતી. તુરત જીલ વારં ચિત્ર લીધું. તે પણ સરખાવતાં તદ્દન નફામું લાગ્યું. એનું વર્ણન નીચેના દોહરામાં મહારાજા આપે છે:—

ચિત્ર બનાયો ચિત્ત દે, અતિઆતુરતા ધાર;

મિલ્યો કછ નાહીં તમે, ફેર રચ્યો ચિત્ત ધાર;

દ્વિતીય ચિત્ર દૂ નહિ મિલત, હોનહારકે ચિત્ત;

દીક્ષીપતિકી દહરકો, પ્રજટયો પ્રલય અમિત.

બાદશાહો કેવા તુમાખી. મીનજના હતા અને એમની સંગતો કેવી અમાતુષ હતી એ આપણે જાણીએ છીએ. હોનહારની સ્થિતિ કેવી જાની હશે એની કાંઈક અટકળ આપણે આ ઉપરથી કરી શકીશું; હોનહાર પાસે બીજો કંઈ ઇલાજ ન હતો. આચાર્યશ્રીની પાસે રહેવાથી તેને એઓશ્રી માટે ઘણાજ પૂજ્યભાવ ઉત્પન્ન થઈ ચુક્યો હતો. વળી આચાર્યશ્રીની પ્રભુતા પણ તે અતુલવી શક્યો હતો. તેથી આખરે આચાર્યશ્રીને ચરણે ગયો, અને ચરણકમલમાં માથું નમાવીને દીનતાથી તેણે વિનંતિ કરી, જેનું વર્ણન નીચે મુજબ છે:—

તબ શ્રીવલ્લભરાજકે, ચરન વંદિ છલ ઘોર;
કીની વિનંતિ દીન બહે, હોનહાર કર જોર.
દીક્ષીપતિકે હુકમતે, હો આયો ત્રજમાંહી;
લિખન રાવરે ચિત્રકોં, પૂરન ચિત્રે મિલાહી.
મો મતિકે અભિમાનતે, કીને ચિત્ર સુ દોય;
કહુ ન મિલે નિજ રૂપમેં, દેખે બહુવિધ જોય
જો નહિ મિલિહું ચિત્ર તો, દીક્ષીપતિ તકરાર;
કરિકે પુન કરિહું કહા, કહા જાનો તિહિ વાર?

શુદ્ધ અંતઃકરની વિનંતિથી દીનજંઘુ આચાર્યશ્રીનું હૃદય દ્રવે તેમાં આશ્ચર્ય શું? આપશ્રીને હોનહારની કોશી સ્થિતિપર દયા આવી અને તેના જેવા ઉત્તમ ચિત્રકારની એ દશા થાય તે આપશ્રીને કેમ રહે? એટલે તેને નવેસરથી ચિત્ર લેવાની પોતે આજ્ઞા કરી. મહારાજ આવંતસિંહજી લખે છે કે:—

દીનજંઘુ કરુણાનિધિ, શ્રીવલ્લભ દિવસાય;
તબ કરુણા કરિકે પ્રભુ, નિજ પ્રભુતા હરસાય.
અબ તુ ચિત્ર જાનાયકે, લેહુ જાવ ધરિ ધીર;
ચહ વચનામૃત સુન મિટી, હોનહાર હિય ખીર.

આચાર્યશ્રીની આજ્ઞા ચતાંની સાથેજ હોનહારનું દર્દ દૂર થઈ ગયું. આચાર્યશ્રીની આજ્ઞા મુજબ તે ચિત્ર લેવા બેઠો.

સાચંકાલનો સમય હતો. પ્રભુને પોદાડીને સેવામાંથી આચાર્યશ્રી બહાર પધાર્યો. નિજ મંડલી સાથે શ્રીમદ્ગોકુલમાંના શ્રીઠકુરાણીઘાટ ઉપર આપશ્રી બિરાજ્યા. નિજ સેવકોને પોતે શ્રીભાગવતની કથા કહી રહ્યા છે. શ્રીભાગવત જેવા મહાપ્રસ્થાન પર લાઘ્યરૂપે પોતે લખેલી શ્રીસુબોધિનીટીકાનું રહસ્ય સેવકો પાસે પોતે પ્રકટ કરી રહ્યા છે. અદિતીય વિદ્વાન અને પરમભક્ત માધવલદ્દ કારમીરી સામે બેસીને આપશ્રીનાં વચનામૃતરૂપ શ્રીસુબોધિનીજી લખે છે, એમની પાછળ ગુરુદેવમાં પૂર્ણ પુરુષોત્તમના સ્વરૂપને અતુલવત્તા શ્રીકૃષ્ણદાસ મેઘન નામના સત્રિય વીર સાથે ભેટી બિરાજેલા છે. નિજ ગૃહાદિનો ત્યાગ કરીને શ્રીમહાચાર્યપરિચર્યાનેજ

પરમ કર્તવ્ય સમજીને સર્વોત્તમાયે આચાર્યશ્રીનીજ પવિત્ર છાયામાં જીવન વ્યતીત કરતા મહાનુભાવી શ્રીદામોદરદાસ હરસાની આચાર્યશ્રીને સાધાંગ દંડવત્ પ્રણામ કરી રહેલા છે. ઉનાળાના દિવસો છે. સંવત્ ૧૫૬૭ની સાલમાં ઉક્ત વર્ણનવાળું ચિત્ર હોનકારે લીધું, જે ચિત્ર હાલમાં શ્રીકૃષ્ણગદમાં બિરાલ છે. કેવા સુંદર ચણદોમાં તેનું વર્ણન મહારાજ સાવંતસિંહજી આપે છે, તે આપણે જોઈએ:—

પાય અનવસર સમયકો, શ્રીયમુનાતટ ધામ;
કહત ભાગવતકી કથા, શ્રીમુખાધિની નામ.
તહાં ભટ માધવદાસ જી, હાજર રહત હમેશ;
શ્રીમુખાધિની લિખત હે, શીખ સુશુદ્ધ વિશેષ.
કૃષ્ણદાસ^૧ મેઘન જહાં, હાજર દે કરજેર;
લીન દિવસ કાટો રહ્યો, પુરુષોત્તમ કે જોર.
દામોદર હરસાની જહાં, કરત દંડવત્ આય;
શ્રીધમ ઋતુ કે સમયમેં, એસો સમય મુપાય.
પતરાસે સરસક લખો, સંવતકો અનુમાન;
સંપ્રદાયકપદુમસુ, પુસ્તકમાંહિ પ્રમાન.

ઉપર પ્રમાણે હોનકારે ચિત્ર લીધું. આચાર્યશ્રીની ઇચ્છાથી એ ચિત્ર લેવાયું, તેથી તેમાં બીલકુલ ફરક પડે નહિ. આજની ફોટોગ્રાફી પણ ભાગ્યેજ એવું ચિત્ર લઈ શકે. ચિત્રમાં ખાસ ખુબી એ છે કે, આચાર્યશ્રી કથા કરી રહ્યા છે, એ વખતે આપના વિકાસ પામેલા મુખારવિન્દમાંની દંતપંક્તિ સ્પષ્ટ રીતે અસલ ચિત્રમાં દ્રષ્ટિગોચર થાય છે. હોનકારે તે ચિત્ર કરીને પાછું સરળાવી લીધું. અવયવોના ગંધાં ચિન્હો મેળવી લીધાં, જાણે શ્રીમહાપ્રભુજીનાં સ્વરૂપનું પ્રતિબિંબજ ન હોય તેવું તે ચિત્ર બન્યું. એ ચિત્રને લઈને હોનકાર દીદહીપતિ પાસે આવ્યો અને તેના મુખારક હાથમાં એ ચિત્ર એણે મૂકી દીધું, ચિત્ર જોઈને સિકંદર મુન્ધ બની ગયો. સિકંદરને આચાર્યશ્રીની પ્રભુતાનો ખ્યાલ તો હતો જ, તેથી તેઓશ્રીનું આવું સ્વરૂપ ચિત્રમાં આવેલું જોઈને તેને તાજુબી થઈ. તુરતજ તેણે હોનકારને પૂછ્યું કે; “હોનકાર! આવું સુંદર ચિત્ર તું કેમ ઉતારી ગયો?” ત્યારે હોનકારે બધી આપવીતી કહી સાંભળાવી, જે સાંભળી જાદુશાહના આનંદનો અવધિ થયો. તે પછી એ ચિત્ર પોતાના ખાત્ર મહેલમાં જાદુશાહે રચાવી દીધું. મહારાજ કૃષ્ણગદનરેશ લખે છે કે—

મુની વૃત્તાંત નૃપેશ લખિ, પ્રભુદી દો અવતાર;
૬૯ કરિ લીનો ચિત્તમેં, ચહ વિચાર નિધાર.

૧ શ્રીકૃષ્ણદાસ મેઘન આચાર્યશ્રીનાં સેવક હતા. આચાર્યશ્રી ત્યારે બદરીનાથ પધ્યામાં, ત્યારે કૃષ્ણદાસને રહેલું કે તમે અહીં ઉભા રહેજો. તેથી તેઓ ત્યાં ત્રણ દિને સુધી એમને જોમ ઉભા રહ્યા. તુરંતજ આગાના એવા પાલક જગતમાં વિરચાન હોય છે.

પૃથિમાગ્નીના ઇતિહાસ.

નિજ ચિત્રાલયમેં ચહે, દિશે ચિત્ર ધરવાય
દર્શન રુચિ જળ ચિત્ર બદે, તખ્તી લેત કંઠાય.

એ ચિત્ર કૃષ્ણગદમાં કેમ આબું ?

હવે એ પ્રાચીન ચિત્ર કૃષ્ણગદમાં કેમ આબું એ વિષેનો ઇતિહાસ અસર-કારક છે. કૃષ્ણગદના સિંહાસન પર ભકતરત્ન મહારાજ રૂપસિંહજી ચર્ચ ગયા છે. આ મહારાજનો જન્મ સંવત ૧૬૬૫ માં વૈશાખ સુદ ૧૧ ના રોજ થયો હતો. વિષ્ણુતિથિએ જન્મેલા મહારાજ પરમ વૈષ્ણવ થયા હતા. આ મહારાજ અતુલ-ખલશાલી અને પરાક્રમી હતા. સુદૃઢલામાં તેમની પ્રવીણતા અજળ હતી. તે વખતે દીલ્હીનું રાજતંત્ર શાહજહાંના હાથમાં હતું. શાહજહાંને તારીફ સાંભળીને મહારાજ રૂપસિંહજીને લખ્યું કે, તમે પોતે કાબુલ તરફના સુલક પર હુમલો લઈ જાઓ અને હુસ્મનોને મહાત કરો. તમારા મુજબર રજપૂતનું સુદ નૂર ચમકે છે, તો તમેજ આ કાર્ય કરી શકશો.” આ શાહી ફરમાનને તાજે થઈને મહાશૂરવીર મહારાજ રૂપસિંહજી દીલ્હીપતિની ફેજના વડા સેનાધિપતિ અફસર ખાનીને કાબુલ પર ચડાઈ લઈ ગયા અને પોતાની લડાયક કુનેહ અને બહાદુરીથી હુસ્મનોને મહાત કરીને આખો કાબુલ રેશ તેમણે સર કરી લીધો. તે પછી તેઓ દીલ્હી આવ્યા. શાહજહાંની ખુશાલીનો પાર ન રહ્યો: તેણે ખુદા દીલથી જે જોઈએ તે માગી લેવાનું રૂપસિંહજીને કહ્યું. પણ રૂપસિંહજી કંઈ હુન્યવી હોલતને પોતાનું સર્વસ્વ માનતા ન હતા. એમના હૃદયમાં તો કોઈ અલૌકિક પ્રેરણા સમાયલી હતી. મહારાજ રૂપસિંહજી આચાર્યશ્રીના પ્રાચીન ચિત્રના ઇતિહાસથી સારી પેઠે વાકેફ હતા. એ ચિત્ર મેળવવા માટે તેઓ તલપી રહ્યા હતા. એ ચિત્ર માટે તેમની તપશ્ચર્યા અદ્વિતીય હતી. એવો અવસર તેઓ કેમ ચૂકે ? તુરતજ દીલ્હીપતિ શહાજહાંને વિનંતિ કીધી કે:—

શ્રીવલ્લભ આચાર્યજી, હોનહારકે હાથ;

ચિત્ર કરાયો પ્રીતિકર, શાહ સિકંદર નાથ.

વહી ચિત્ર અતિ મહર કર, કર દીજે બક્ષીસ;

ઉપર મુજબ માગણી કરી. રૂપસિંહજીને ખબર હતી કે, સિકંદર લોદી પછી એ ચિત્ર-ખજાનો અકબર પાસે અને તે પછી તેના વારસ તરીકે જહાંગીર અને શાહજહાં પાસે આવ્યો હતો. એટલે રૂપસિંહજીએ પોતાનાં સર્વસ્વરૂપ એ ચિત્રની માગણી કરી. શહાજહાં તો આલોજ બની ગયો ! મહામહેનતે કાબૂલ જેવા બેશવર દેશની છતના બદલામાં માત્ર એક ચિત્રનીજ માગણી ! ગરીબ બિચારો શાહજહાં ! ભકતહૃદયની પ્રેમમસ્તીને ક્યાંથી ચમત્ શકે ? એને શાની ખબર હોય કે; ભકત લોકો પોતાના પ્રેમપાત્ર પ્રભુની પાછળ ચોદે બ્રહ્માંડને નોટાવર કરીને ફેંકી દે છે ! છતાંજે એ પ્રાચીન મહાચિત્ર યોડીક આનાકાની સાથે મહારાજ

રૂપસિંહજીને માથે ચક્રાવલોકિ પધરાવી આપ્યું. મહારાજા રૂપસિંહજીને તો ત્રણે લોકના વેલવ કરતાંજે એ ચિત્રથી વિશેષ આનંદ થયો, છતાં ચક્રાવલોકિને તૃપ્તિ થઈ નહિ. એનો તો મોટી બગીર જણવી હતી, એટલે ફરી કહ્યું કે તમે આટલું શું માગ્યું ? ફરીને માગ્યો. ત્યારે રૂપસિંહજીએ પોતે પોતાના સ્વાર્થને માટે કંઈ ન માગતાં પોતાના માર્માના દીકરા ભાઈ મુળસિંહજીનું જે સલામતીરનું રાજ્ય ખાલસા થયું હતું, તે પાછું તેમને ગળે તેણું માગ્યું. બાદશાહને મહારાજાના અપૂર્વ સ્વાર્થ-ત્યાગ અને પ્રભુભક્તિ માટે અદ્ભુત માન ઉદભવ્યું. એ રીતે એ વિશ્વવિખ્યાત ચિત્ર શ્રીકૃષ્ણગદમાં આવ્યું તે હજી મુખી ત્યાજ ગિરાજે છે. શ્રીકૃષ્ણગદના મહારાજા ઉત્તરોત્તર એવાજ વૈષ્ણવ થતા રહ્યા છે. હાલના મહારાજા પણ સુસ્ત વૈષ્ણવ છે. અને છેહા મહાશુદ્ધ વખતે તેઓ જ્યારે કાન્સમાં ગયા હતા, ત્યારે પણ પોતાના ગુરુનાં તથા પ્રભુનાં ચિત્રો પોતાની પાસેજ રાખતા હતા. તેઓ કહે છે કે, એ ચિત્રોના પ્રતાપે વિમાનો પરથી પડતાં બોંબ કેં મશીનગન વગેરે મારો વાંજ પણ વાંકો કરી શક્યાં નથી. પ્રભુ એ વંશમાં એવીજ વૈષ્ણવતા કાયમ સ્થાયો ?

કૃષ્ણગદમાંના એ ઐતિહાસિક ચિત્રપરથી શ્રીનાથદારાના એક મથાદુર ચિત્ર-રાએ એક મહિનાના લાંબા સમય પછી એક ચિત્ર તયાર કર્યું, જે હાલમાં અહીંના વૈષ્ણવ મથાદુરેસ્ય ચેક અચાભાઈના પરમાં છે. એમના સત્પુત્ર ચેક હરિદાસભાઈની ઉદારતાથી એ ચિત્રનો ફોટો લીધો છે, ને તેને જોઈક છાપ્યો છે.

પ્રિય વાંચક વર્ગ ! ફરીને એ દિવ્ય ચિત્ર તરફ જો ! એ ચિત્રના ઉપર્યુક્ત ઇતિહાસમાં દૃઢ્યને અવગાહન કરાવી દે, એની ભાવનાનો વિચાર કરીને ભક્તિરસની દિવ્ય લહેરીઓનો આનંદ લે ! અને મહારાજા સાવંતસિંહજીના છેહા આ છાપ્યને દૃઢ્યમાં કોતરી રાખો :—

શ્રીલક્ષ્મણ ભટ ગેહ પ્રભુ અવતાર લિવાયો,
શ્રીવલ્લભ આચાર્ય મહાપ્રભુ નામ કહાયો;
માયાવાદ વિખંડ ભક્તિપથ પુષ્ટિ બધાયો,
દેવી જીવ ઉદાર હેતુ યહ માર્ગ બતાયો.

ભટ માધવ કૃષ્ણ હિ હાસ જી, દામોદરકેં કર સુચિર,
ધરિ વિચરૂ રૂપ મુચિત્રમય, જયતિ જયતિ નૃપરૂપ ગિર.

[શ્રીકૃષ્ણગદના રાજપીઓના કાર્યપૂર્ણ અને ભક્તિરસથી છલકાતાં ચરિત્ર વાંચવા હોય તો રા. રા. લક્ષ્મણાઈ હમનગાલ દેરામજે પ્રકટ કરેલા શ્રીસૂરદાસજીનું ચરિત્ર વાંચવાની સૂચના વાંચકોને હું કરીશ. આ લેખમાં પણ એજ અંચનો આધાર દેટલેક સ્થળે લીધો છે.]

પ્રકીર્ણ પ્રસંગો.

[શ્રીગોકુલેશ પ્રભુના અનન્ય સેવકોએ આપશ્રીની વચનપ્રધાનું અદર્શ પાન કરીને, ભવિષ્યની વૈષ્ણવસુદિના કલ્યાણ માટે અનકલ પ્રયત્ન કરીને એ વચનામૃતો

લખી રાખ્યાં છે, જેમાંથી શ્રીવૃક્ષભાષીન્દર વિષે જે કેટલીક ઐતિહાસિક આત્મકો આપશ્રીએ કરેલી છે તે અહીં ઉતારવામાં આવે છે.

આચાર્યશ્રીના ત્રણ ભાઈઓ.

૧. એક દિવસે શ્રીગોકુલેશ્વરપ્રભુએ આજ્ઞા કરી કે, શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના ત્રણ ભાઈ હતા. તેમાં એક મોટા નારાયણ અને તે પાંછળથી સંન્યાસી થઈ ગયા. સંન્યાસતાવસ્થામાં એમણે પોતાનું નામ કેશવપુરી રાખ્યું. એક વખતે કેશવપુરી સંન્યાસી પોતાના માતાજી પાસે આવ્યા અને નમસ્કાર કર્યો. સંન્યાસીએ માતાને નમસ્કાર કરવા બોધ્યો એમ શાસ્ત્ર કહે છે. ત્યારે પોતાના મોટા પુત્રને સંન્યાસી તરીકે બોધને માતાજી શ્રીવૃક્ષભાગ્યજીને બહુ જ દુઃખ થયું. ત્યારે કેશવપુરી સંન્યાસીએ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીને દેખાડીને કહ્યું કે—“તમારા આ પુત્ર એવા છે કે બીજા પુત્રની તમને અપેક્ષા નહિ રહે. તો પણ માતા તે માતાજી કહેવાય એટલે કલેશ કરવા લાગ્યાં. વળી આચાર્યશ્રીના બીજા એકભાઈ રામકૃષ્ણજી નામના હતા, તે મહાન પંડિત હતા. (એમના રચેલા ગ્રંથો હાલમાં મોબૂદ છે) તેઓ બાંધવગદ શહેરમાં ગયા.....આ વાત સાંભળીને માતાજીને બહુ જ દુઃખ થયું.

સાર—આ વચનામૃત ઇતિહાસ પર મહાન પ્રકાશ પાડે છે. આચાર્યશ્રીના મોટાભાઈએ સંન્યાસ લઈ લીધો એ ઇતિહાસચિદ વાત પરથી આંજકાલ કેટલાક નિંદાઓરો આચાર્યશ્રીની વ્યર્થ નિંદા કરે છે અને આચાર્યશ્રીના મોટાભાઈની વાતને શ્રીમહાપ્રભુજીનાં નિર્મલ ચરિત્રમાં લેગવીને જેમ તેમ બદલે છે.

૨. એક દિવસે મંગલાનાં દર્શન સમયે હોમધરમાં શ્રીગોકુલનાથજી તેલગાદીએ બિરાજેલા હતા તે વખતે નિજસેવક પંચોલીજીને કહ્યું કે, “શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીએ ત્યારે પૃથ્વીપરિક્રમા કરી ત્યાર આપશ્રીની સાથે ચાર સેવક રહેતા હતા. તેઓ શિક્ષા માગીને નિર્વાહ કરતા હતા. શ્રીઆચાર્યજીએજે સેવકોને આજ્ઞા કરી કે, શિક્ષા માગજો પણ કોઈને માલાતિલક બતાવશો નહિ. આપશ્રીની સાથે જે સેવકો રહેતા, તેમનાં નામ આ છે—ગોવિંદ દવે, જગન્નાથ બેપી, ચિદંદરપુરીના રામદાસભાઈ, અને કૃષ્ણદાસ મેઘન. આ ચાર સેવકોમાંથી વચનામૃત તો કૃષ્ણદાસ મેઘનને આપે સંભળાવ્યું છે.

સાર—માલાતિલક દેખાડીને કાંઈપણ ચાચના કરવાથી ધર્મ નાશ છે, અને લાલપૂળ માટે પ્રયાસ કરનારની કોટિમાં પ્રવેશ થાય છે, માટે ધર્મને નામે વેષ્ણુવધી એક પાઈ પણ મગાય નહિ અને લેવાય પણ નહિ. આ વાર્તા હાલના વેષ્ણુવોએ આસ હૃદયમાં કોતરી રાખવી ઘટે.

૩. એકવાર શ્રીગોકુલનાથજીને સમાનંદસસ્તવતી શ્રીપાતે પુછ્યું કે, “મહારાજ! શ્રીઆચાર્યજીનું નામ શું લગવાનું છે?” આ પ્રશ્નના જવાબમાં આપશ્રીએ આજ્ઞા કરી કે, “નહિ.” ત્યારે ફરી શ્રીપાતે પુછ્યું કે, “એ નામ સંભવે અરે?” તો

આથે જવાળ આથો: “હા, ચંભવે, પણ જેને એણેદુષ્ટિ હોય તેને ચંભવે. (શ્રીઆચાર્યજીમાં અને શ્રીકૃષ્ણમાં જે લેશ પણ ભેદ ન જોતા હોય તેને એ વાત સંભવે.) જેને ભેદબુદ્ધિ છે તેને એ વસ્તુ દેખાય નહિ. એજ નિશ્ચય છે. શ્રીગુણ-દંડજીએ પણ શ્રીવલ્લભાષ્ટકમાં “વસ્તુતઃ કૃષ્ણ એવ” (ખરી રીતે જોતાં તો શ્રીઆચાર્યજી શ્રીકૃષ્ણ જ છે) એમ કહ્યું, પણ તેથી આપનું નામ શ્રીકૃષ્ણ નં રખાય. (માત્ર જેને એવી ભાવના હોય તેને એવો અનુભવ થાય.)

સાર—કેવું સચોટ વચનામૃત છે? શ્રીઆચાર્યજી પોતે પૂર્ણપુરુષોત્તમ ખરા; પણ તે કંઈ ગધાને માટે નહિ, પણ અનુભવીઓને માટે. તેથીજ આપશ્રીનું નામ શ્રીકૃષ્ણ તરીકે પ્રસિદ્ધ થયું નહિ. એટલે કોઈ અનુભવી પોતે શ્રીઆચાર્યજીમાં પૂર્ણ પુરુષોત્તમનાં દર્શન કરીને તેનો આનંદ લીધા કરે, પણ તેથી તેવી દષ્ટિ વિનાનો ખીન્ન લોકો ‘ભગવાન’ એ નામે શ્રીઆચાર્યજીને ઓળખાવી શકે નહિ.

૪. એક દિવસે કહ્યું કે; “શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીએ જ્યારે સંન્યાસ ગ્રહણ કરવાનો વિચાર કર્યો ત્યારે પોતાનાં ધર્મપત્ની શ્રીઅક્ષાજીની પાસે એ વિચાર આપશ્રીએ પ્રકટ કર્યો. પણ શ્રીઅક્ષાજીએ સંન્યાસ લેવાની આજ્ઞા આપી નહિ. ત્યારે ભગવદ્દિશાથી એક દિવસે ઘરમાં અકસ્માત્ આગ લાગી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજી પુસ્તક વાંચતાવાચતા ઊંચાજી રહ્યા. ત્યારે શ્રીઅક્ષાજીએ ત્યાં જઈને કહ્યું કે, “અહીંથી જલદી બહાર નીકળો, બહાર નીકળો; અહીં કેમ બેસી રહ્યા છો?” ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીઅક્ષાજીને પુછ્યું કે, “બહાર નીકળવાની (ઘરનો ત્યાગ કરવાની) તમારી આજ્ઞા છે?” ત્યારે શ્રીઅક્ષાજીએ કહ્યું કે, “હા જાઓ, જાઓ,” ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ તો ઘરનો ત્યાગ કર્યો. શ્રીઆચાર્યજીનો એક પ્રાદાણુ સેવક હતો. તે એવો દુષ્ટ અને બહિષ્કૃત હતો કે, કોઈ કંઈ જો કહે તેમ કરી નાંખે, કયો વિચાર કરેજ નહિ. તેને કહે કે ઉપર ચઢ, તો ઉપર ચઢી જાય. તેજ પ્રાદાણુને ઘેર સંન્યાસ લેવાની પહેલેથી ગાંધી તૈયારી કરી ગાંધી હતી, પણ તેણે કોઈને તે વાતની ખબર સુદ્ધાં આપી ન હતી. પછી આચાર્યશ્રી પેલા પ્રાદાણુસેવકને સાથે લઈને સોમેશ્વર પધાર્યા; અને ત્યાંજ સંન્યાસ ગ્રહણનું વિધિ પ્રારંભી રીધા. હવે સંન્યાસ ગ્રહણ કરતી વખતે ત્યાં પુત્રની જરૂર પડે છે, તેથી આપશ્રીએ પોતાના જ્યેષ્ઠ પુત્ર શ્રીગોપીનાથજીને ત્યાં બોલાવ્યા, પણ શ્રીગોપીનાથજી તો એ વાત સાંભળીને ઘણાજ ખેદ પામ્યા; એટલે ત્યાં પધાર્યા નહિ. પછી શ્રીગુણદંડજીની અવસ્થા નાની રહી. તેથી આજ્ઞા મતાં ત્યાં પધાર્યા. આ વાત સાંભળીને આચાર્યશ્રીના માતાજીને ધણુંજ દુઃખ થયું. આખરે એ વૃદ્ધ માતાજી ત્રણવાર ગંગાજીમાં પડ્યાં અને દેહત્યાગ કરવાનો પ્રયાસ કર્યો. પણ ત્રણ વખતે ગંગાજીએ તેમને બહાર કાઢી રીધાં. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું કે, “ભુજો, આ મારા માતાજી છે, અને ત્રણ વખત ગંગાજીએ તેમને બહાર

કાઠી લીધાં છે.” માતાજીનું આ હુકમ અને કલેશ શ્રીઆચાર્યજી સહન કરી શક્યા નહિ. તેથી આપ વારાણસી-કોશી પધાર્યા. ત્યાં જઈને માધવ સરસ્વતીજી નામના એક સંન્યાસીને પોતે નમસ્કાર કર્યો. તે વખતે બીજા સંન્યાસીએ માધવેન્દ્ર સરસ્વતીને પુછ્યું કે, “તમે સંન્યાસનો ઉપદેશ આચાર્યશ્રીને કર્યો છે?” ત્યારે માધવ સરસ્વતીએ કહ્યું કે, “એ તો ઇશ્વર છે, હું કોણ જે એમને ઉપદેશ કરે?” ત્યારે પેલા સંન્યાસીએ વળી પાછો પ્રશ્ન કર્યો કે, “ઉપદેશ વિના સંન્યાસ કેમ લેવાય?” ત્યારે માધવ સરસ્વતીએ જવાબ આપ્યો કે, “મને તે વાત પૂછવાનો અધિકાર નથી. તમે પૂછી શકતા હો તો પૂછ.” શ્રીઆચાર્યજીએ સંન્યાસીઓમાં થતા આ ગરબગટને-ધુસપુસને સાંભળી લીધી. તે વખતે તો આપશ્રીએ કંઈ જવાબ આપ્યો નહિ, પણ “સંન્યાસનિષ્ઠ” અથવા લખીને પેલા ગરબગટ કરી રહેલા સંન્યાસીઓને મોકલી આપ્યો, વળી લખ્યું કે, “યદહરેવં વિવ્રજેત્ તદહરેવ પ્રવ્રજેત્ જે દિવસે વૈરાગ્ય આવ્યું, ઘર છોડ્યું, ત્યારથીજ સંન્યાસ લઈ લીધો ગણાય. આ અર્થ પેલા સંન્યાસીએ બધાને બતાવ્યો અને કહ્યું કે, “આનું નામ તે સંન્યાસ, બંદી બીજું બધું તો વિડંબન-ફારસ છે” શ્રીઆચાર્યજીએ, તે પછી ૪૦ દિન મૂતલપર પ્રકટદર્શન આપ્યાં છે.

આ વચનામૃતપર કંઈ પ્રભુ વિવેચન કરવાની જરૂર નજ હોય.

૫. એક દિવસે શ્રીગોકુલનાથજીએ કહ્યું કે, “શ્રીઆચાર્યજીના સેવક ગોવિંદ દવેએ શ્રીઆચાર્યજીમહાપ્રભુજીને વિનતિપત્ર લખ્યો કે, “સેવા કરીએ છીએ પણ મનની વિશિષ્ટતા-આમતેમ ભટકવાની વલણ-જતી રહેતી નથી, મનની મુનમાંજ રહે છે.” આ વિનતિપત્રના ઉત્તરમાં આચાર્યશ્રીએ નવરત્ન અર્થ લખીને મોકલી આપ્યો અને જણાવ્યું કે, “આ અર્થનો પાઠ કરજો, મનની વિશિષ્ટતા રહેશે નહિ.

એક દિવસે શ્રીગોકુલેશપ્રભુએ આજ્ઞા કરી કે, આચાર્યજી મહાપ્રભુજી ન્યારે બીજા વાર શ્રીદારિકાજી પધાર્યા ત્યારે ગુજરાતમાં થઈને પધાર્યા. તે વખતે ગુજરાતમાં બાદશાહ મહમદ બેગડો રાજ કરતો હતો. મહમદ બેગડાની એવી ધાક હતી કે તેની પાસે થઈને તેના દેખતાં કોઈ પાલખીમાં બેસીને નીકળી શકે નહિ. શ્રીમહાપ્રભુજી તો તે વખતે પાલખીમાં ધિરાજીને પધારતા હતાં. પાલખી ચધરાવનાશ સેવકોએ દૂરથી જોયું કે મહમદ બેગડો સામે ગોખમાં-છળમાં બેઠેલો છે. દુરતજ પાલખી ઘોલાવીને સેવકોએ વિનતિ કરી કે જે “મહારાજ! આ બાદશાહની પાસેથી કોઈ પાલખીપર બેસીને નીકળી શકતું નથી.” બીજા સાથેના લેખકોએ પણ તેવુંજ કહ્યું. ત્યારે શ્રીમહાપ્રભુજીએ આજ્ઞા કરી કે, “હું પોતે પોતાની મરજીથી આ પાલખીમાં બેઠો છું એમ તમે સમજો છો કે શું! તમે પાંચ જણાએ મળીને મને બેસાડ્યો છે તેથી હું બેઠો છું” વળી આપશ્રી આજ્ઞા કરી કે “તમે રજો નહિ. શ્રીકૃષ્ણજીએ જે અધિકાર આપ્યા છે, તો તે માટે

બીજો શું કરી શકનાર છે ? ” એમ આજ્ઞા કરીને પાલખી આગળ ચલાવી. સવારી ગાદશાહ પાસે આવી પહોંચી. એ વેળાએ. ગાદશાહ પાસે ઉભેલા એક સરદારે કહ્યું કે. “ આ કોઈ હિન્દુ તમારી સામે પાલખીમાં બેસીને જાય છે ” ત્યારે ગાદશાહે પોતાના સરદારને જવાબ આપ્યો કે “ મારી આજ્ઞાથી કોઈ મનુષ્ય તો એવી રીતે જઈ શકે જ નહિ, પણ આ તો કોઈ પરમેશ્વરનું તેજ છે. ”

સાર—શ્રીવલ્લભાધીશ્વરના પ્રકટ પ્રતાપનું વર્ણન શ્રીગોકુલનાથજીએ ઉપરના વચનામૃતમાં કર્યું છે. ગમે તેવા વિધર્મીઓ પણ આપના તેજ સામે નમી પડતા એનું આબેશ્વર વર્ણન આ વચનામૃતમાં છે.

એક દિવસે શ્રીગોકુલનાથજીએ આજ્ઞા કરી કે, શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજી ત્યારે અટેલમાં ગિરાજતા હતા ત્યારે સંમિશ્રાં પોતે કયા કંરતા. આ કયાનું શ્રવણ કરવા યજ્ઞા વેળુવો આવતા. તેમાં એક દિનકરદાસ ચેઠ નામના દુનિય પણ આવતા. ચેઠ અત્યંત વિરજા દશામાં રહેતા હતા. એટલે માત્ર લોટ માગી લાવીને પોતાનો નિર્વાહ કરતા હતા. પોતાની પાસે એક પણ વાજણ રાખતા નહિ. લોટ લાવીને તે શ્રીયજુનાલના તટપર શ્રીયજુનાલથી જાંધી લેતા અને તેના ટીકડા (રોટલા) ચિલ કરીને, પ્રભુને ધરાવીને લેતા. એક દિવસે લોટ માગતા કાંઈક વાર થઈ અને પોતે ઉતાવળથી શ્રીયજુનાલના તટપર લોટ જાંધવા લાગી ગયા. તેટલામાં એક જલભરીઓ ત્યાં આવ્યો, તેને દિનકર ચેઠે પૂછ્યું કે, “ શ્રીમહાપ્રભુજી શું કરે છે ? ” ત્યારે જલ ભરનારે કહ્યું કે, “ પુસ્તક ખોલ્યું છે અને કથાનો આરંભ કરે છે. ” આ સમાચાર સાંભળતાવિંતજ દિનકર ચેઠ લોટમાં વધારે પાણી ફેરીને, તેને ધોળીને પી ગયા, રોટલા બનાવવા રહ્યા નહિ. તરતજ કથામાં આવીને બેસી ગયા. ભગવતકથામાં લેખકે એવી આસક્તિ હતી; તેમજ અનુસાગ હતો. કથા થઈ રહ્યા પછી રાત્રે જલભરીઆએ શ્રીમહાપ્રભુજીને વિનંતિ કરી કે, “ કૃપાનાથ ! દિનકર ચેઠ તો લોટ ધોળીને, પીને કથામાં આવ્યા છે. ” આ વાત સાંભળીને શ્રીઆચાર્યજીએ દિનકર ચેઠને કહ્યું, “ તું લોટ ધોળીને પીને કેમ આવ્યો ? ” ત્યારે દિનકર ચેઠે વિનંતિ કરી જે “ રાજ, અંગારખી (રોટલા) તો રોજ ખાઉ છું અને ખાઉં છું પણ આ ભગવતકથારસ કયાં મળવાનો છે ? ” ત્યારે શ્રીમહાપ્રભુજીએ આજ્ઞા કરી કે, “ સંવેથી તું રોટલા કરીને આવજે. તું આવીશ ત્યારેજ હું કથા કરીશ. મારો શ્રોતા તુંજ છે. ”

સાર—કથામાં આસક્તિ દેવી લેવી જોઈએ તેનું હૃદયભેદક ઉદાહરણ આના વિના બીજો કંઈ નહિ મળે. ‘ ચેઠ ’ છતાં ‘ વિરજા ’ રહીને દિનકરદાસ શ્રીવાક-પતિની વાકસુખાના રમધાનમાં કેના આસક્તિ રહેતા એનો ખ્યાલ આ વચનામૃતમાં છે. મર્યાદાધનવળ ભક્તિમાં જેમ પરીક્ષિત રાજાનું નામ લખાયુ તેમ પ્રતિની શ્રવણ ભક્તિમાં ચેઠ દિનકરદાસનું નામ લખાયું છે. શ્રીવલ્લભાગિના વચનામૃતમાં અહીં આસક્તિ રહે એ તો અપરોપિ પ્રતિજ્ઞા કરાજીને.

એક દિવસે શ્રીગોકુલનાયલની પાસે પુત્રપુત્રી વિષે વાત ચાલી. શ્રોતાઓ કહેવા લાગ્યા કે, છોકરો અવતરે તો બધા સુશ યાય' અને છોકરી સાંપડે તો કોઈ રાજ થતું નથી. આ વખતે શ્રીગોકુલેશપ્રભુએ આજ્ઞા કરી કે, છોકરી અવતરે તો 'ગોદુ' શું થયું? બધા લોકો છોકરા માગે છે પણ છોકરી માગતા નથી. પણ અમારા શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુલનાં માતાજીએ તો પોતાનાં કુલદેવી વેણીની પાસે પ્રમના કરીને એક દીકરી માગી છે. મૂળે પુરુષ ચતનારાયણ બદલથી લઈને શ્રીમહાપ્રભુજી સુધી કોઈને પુત્રી થયલી નહિ. મંગળ પ્રસંગે આરતી કરવા માટે બીજા કોઈને બોલાવાને આરતી કરાવવી પડતી. આચાર્યશ્રીના માતાજીએ કહ્યું કે, એટી વિના કુલ શા કામનું? રોજ ઉઠીને બીજાને બોલાવવું એ શું? ત્યારે આચાર્યશ્રીનાં માતાજીએ કુલદેવી વેણીની પાસે પ્રાર્થના કરી કે મારા પુત્ર ને ત્યાં પુત્રી થાઓ. ત્યારે વેણીદેવીએ કહ્યું કે તમારા પુત્રને તો પુત્રી થશે નહિ, પણ પુત્રના પુત્રને ત્યાં પુત્રી થશે. તે પછી ગુણાંધરજીને ત્યાં બેઠીજનાં પ્રાર્થ્યો થયાં.

માર—વેણુવ ગૃહસ્થાશ્રમમાં પુત્ર અને પુત્રીનો વિનિયોગ પ્રભુસેવામાં થાય એટલે પુત્રીના પ્રસવથી અપ્રસન્ન બનવાનું ક્યાંથી હોય? પ્રભુસેવાનાં, તત્તર હોય તેવાંજ પુત્ર અને પુત્રીની સંતાન તરીકે ગણના થાય, બીજાં તો ભારમૂલજ ગણાયા.

દૌકિક સંબંધમાં અતૌકિકતા.

એક દિવસે શ્રીગોકુલેશપ્રભુએ આ પ્રમાણે આજ્ઞા કરી: 'અમારી કાકીની (પોતાની માતાને કાકી કહેતા) માએ (નાનીએ) કહ્યું કે મને બે પુત્રીઓ સાંપડી છે, તેમાં એક દૌકિક સાથે છે અને બીજી અતૌકિક સાથે છે. કાકીએ (અમારાં માએ) ૧૮ બાળકોને જન્મ આપ્યો છે. તેથીજ અમારા ગોવિંદમામા કહેતા હતા કે, બે શ્રીગુણાંધરજીને બે ભાલક બીજા થાય તો હું શ્રીરુકિમણીવહુજનાં લગ્ન બીજવાર શ્રીગુણાંધરજી સાથે કરે. વળી અમારાં માતામહા (નાના) વિશ્વનાથ લટ બાગરોટી હતા. તેઓ તો મહાન વેણુવ હતા. એમની પાસે શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીગુણાંધરજીને વેરે કન્યાનું માગું કર્યું ત્યારે બાગરોટી વિશ્વનાથ લટ સાંભળીને બેસી રહ્યા, પણ ઉત્તર દીધો નહિ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ વિચાર કર્યો કે મને ઉત્તર આપતા નથી તે શું? ફરીને શ્રીઆચાર્યજીએ જવાબ ન આપવાનું કારણ પુછ્યું, ત્યારે અમારા નાનાએ, કહ્યું કે, તમારા પુત્ર શ્રીગુણાંધરજી જેરે મારી પુત્રીનાં લગ્ન કરીને હું મારે સેવક ધર્મ, શું શુભાવી દઉં? કેમ કે અત્યારે તો હું આપનો સેવક છું, પછી વેવાઈ થઈશ, એટલે આપ મને નમસ્કાર કરશો, મને આવતો બેઠીને ઉભા થઈ જશો, તેથી મારો સેવક ધર્મ નષ્ટ થશે. હું બે શરતે શ્રીગુણાંધરજી સાથે મારી પુત્રીનાં લગ્ન કરી દઉં. તે એ કે આપ મને નમસ્કાર ન કરો અને હું આપું ત્યારે ઉભા થાઓ નહિ. આ શરત શ્રીમહાપ્રભુજીએ કબુલી અને કહ્યું કે હું તેજ પ્રમાણે વર્તીશ. એટલે વિશ્વનાથલટજીએ પોતાની પુત્રીનાં લગ્ન શ્રીગુણાંધરજી સાથે કરી

હીમાં. ત્યાર પછી તો વિશ્વનાથલટલએ વેષ્ણુવો પામેથી એક કોડી પણ લીધી નહિ. પોતે દહેતા કે વેષ્ણુવોનું ધન તો મારી પુત્રીનું છે, તો પુત્રીનું ધન પિતાને કેમ ગપે ?

માર—વચનામૃતમાં ઘણાજ સુદ્ધ સંભાવકા છે. શ્રીગુણાંધલ સાથે જે પુત્રીનાં લગ્ન થયાં તે પુત્રીએ અલૌકિક સાધુ એમ એમનાં માતાપિતા માનતાં. આમાં એક ઐતિહાસિક બીના એ છે કે શ્રીરુકિમણીવહુલએ ૧૮ બાલકોને જન્મ આપ્યો છે. અત્યાર સુધી આપણે એમ સમજતા કે શ્રીરુકિમણીવહુલના ૬ પુત્રો અને ૪ પુત્રી છે, પણ આ વચનામૃતથી નવે પ્રકાશ પડે છે. વળી શાસ્ત્રમાં એવી મર્યાદા છે કે, એકજ સ્ત્રીથી ૨૦ સંતાન થાય તો એજ સ્ત્રી સાથે ફરીને વિધિપૂર્વક લગ્ન કરવાં. તેથીજ શ્રીગોકુલનાથલના મામાએ ૨૦ બાલકોનાં પ્રાકટ્યની આશા રાખી હતી. શ્રીગોકુલેશ્વરપ્રભુના નાના ભટ્ટ વિશ્વનાથ બાગદોદીની વેષ્ણુવતા તો એક આદર્શરૂપ છે. આચાર્યશ્રી ઉપરનો તેમનો ભાવ અફલુત છે. લૌકિક સંબંધ છતાં અલૌકિક ભાવની મુખ્યતા કેમ જાળવવી તેનું ઉદાહરણ આનાથી સ્પષ્ટ બીજુ કંઈ નહિં મળે. તેમાંએ વેષ્ણુવોની પણ પાઈ ન લેવામાં જે રહસ્ય છે તે તો આપણા હૃદયમાં કોતરી રાખવા જેવું છે. પ્રદક્ષિણા પછી વેષ્ણુવના સ્વર્ણવની માલીછી કોની હોય તેનો ઉકેલ આ વચનામૃતમાં છે.

લુહું તહોમત—એક વેળાએ એક વેળાએ એક સંન્યાસીએ આચાર્યશ્રી પાસે ફરીયાદ કરી કે, તમારા સેવકે મારા શાલિગ્રામલ ચોરી લીધા છે. ત્યારે શ્રીમહાપ્રભુલએ કહ્યું કે, તું તારા શાલિગ્રામને જોડે છે ખરો ? ત્યારે સંન્યાસીએ જવાબ આપ્યો કે જોગપુ. છું. તેજ વખતે શ્રીમહાપ્રભુલએ પેલા સંન્યાસીને શ્રીકૃષ્ણની ઘાટના શનીવૃક્ષમાં બે હંતર શાલીગ્રામ લટકેલા દેખાડ્યા. આ દૃશ્ય જોઈને સંન્યાસીને આશ્ચર્ય થયું અને તે મનમાં પસ્તાવા લાગ્યો, ત્યારે શ્રીઆચાર્ય-મહાપ્રભુલએ આજ્ઞા કરી કે, અમારા સેવક તારા શાલિગ્રામ શા માટે ચોરી લય ?

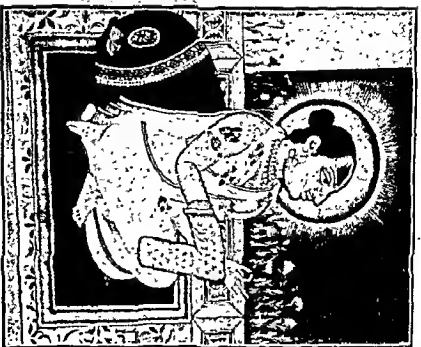
શ્રીઆચાર્ય સાથે મિલાપ—એક વખતે શ્રીગોકુલનાથલએ ક્રીમુએ આજ્ઞા કરી કે, શ્રી આચાર્યલ બદિકાશ્રમ પધાર્યો, ત્યારે શ્રીવેદવ્યાસલનાં ત્યાં દર્શન થયાં, એટલે આચાર્યશ્રીએ કહ્યું કે, આપે વેદાંતના એવાં સૂત્ર કેમ કહ્યા કે જેનો અર્થ માયાવાદ તરફ પણ લગાડી લેવાય. ત્યારે શ્રીવેદવ્યાસલએ કહ્યું કે મને એવીજ આજ્ઞા હતી કે એવાં બે અર્થ વાળાં સૂત્રો કરવાં. ત્યારે શ્રીઆચાર્યશ્રીએ કહ્યું કે મેં તો તમારા સૂત્રનો અર્થ પ્રદક્ષિણાનેજ લાગુ પાડ્યો છે. આ અર્થ શ્રીઆચાર્યલને આચાર્યશ્રીએ સંલગ્નાવ્યો. વળી ‘વામગૃહ્યુતવામકપોતો’ એ સુગલગીતનો શ્લોક પણ વ્યાસલને સંલગ્નાવ્યો. અરુણર વ્રજુ દિવસ વીતી ગયા. આ શ્રવણ દર્શને વ્યાસલ ઘણા પ્રયત્ન થયા. તેથીજ કહ્યું કે ‘વ્યાસસ્ય વિદ્યોઃ પ્રિય’ એટલે કે વિષ્ણુરૂપી વ્યાસલને પ્રિય એવો શ્રીભગવનને અર્થ આચાર્ય-

શ્રીએ કયો છે. આવો અર્થ કોણે જાણ્યો અને પૂણું પુરુષોત્તમને કોણે જાણ્યો તે શ્રીમહાપ્રભુએ અર્થ પ્રકટ કર્યો ત્યારે અધાર્નું ખંજીર પડી. માટે એ અર્થ વ્યાસજીને પ્રિય છે.

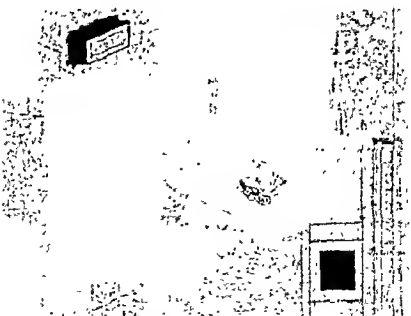
મજનું મહાત્મ્ય—એક વાર શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુએ પ્રભુદાસ જલોટા ને પોતાની સાથે રહેનારા સેવક છે, તેમને કહ્યું કે ચાલો, પ્રસાદ લેવાને આવો, ત્યારે પ્રભુદાસે કહ્યું કે, મેં સ્નાન કર્યું નથી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ એ પ્રશ્નો કહ્યા તેનો અર્થ આ છે—જલથી પણ જ્યાં રજ પવિત્ર છે, રજથી પણ જ્યાં જલ શ્રેષ્ઠ છે, તેવા વૃંદાવનમાં તે વળી ન્હાવાની વાતો શેની? ફરેક વૃક્ષે જ્યાં વેલુધારી છે, પાંદડે પાંદડે જ્યાં ચંતુભુંજ છે, એવા વૃંદાવનમાં લક્ષ્ય અને અલક્ષ્ય કયાઓ વળી કેવી? એવીજ રીતે આચાર્યશ્રીએ કૃષ્ણચૈતન્યને પણ કહ્યું, આ વચનામૃતનો ભાવ ઘણોજ ગંભીર છે. [આ વચનામૃત પર વધારે વિવેચનની કશી જરૂર લાગતી નથી.]

પ્રકટ પ્રતાપ—શ્રીમહાપ્રભુજીનાં અલોકિક સરિત્રનું વર્ણન કરતાં શ્રીવિકુલેશ્વર પ્રભુના ચતુર્થ કુમાર શ્રીગોકુલેશ્વરપ્રભુએ આજ્ઞા કરી કે, ‘શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ શ્રીમેટ દારકમાં રણુછોકરાંજી પાસે શ્રીમંદ્યાગવતની કથા કહેતા હતા, તે વખતે એકદમ વરસાદ પડ્યો માંડ્યો, ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ મેઘની સામે જોયું એટલે વરસાદ સમજી ગયો અને શ્રીમહાપ્રભુજી ને સંભામાં ધિરાજતા હતા તે ચલામાં વરસ્યો નહિ અને બીજે બધે ઠેકાણે વરસવા લાગ્યો. ત્યારે નારાયણ દેવે વિનંતિ કરી કે, રાજ, આ શું? આપ તો ને છા તે છોજ, તોએ આ અનુભવ આમને માટે દેખાડો છો? ત્યારે શ્રીમહાપ્રભુજીએ આજ્ઞા કરી કે ના, આમાં અનુભવ આનો? મેઘથી કયામાં રસાભાસ થતો હતો તેથી મેઘને સલાથી ફરે કયો.’

દેવું કરીને સેવા કરવી—એક દિવસે વળી શ્રીગોકુલેશ્વરપ્રભુએ વચનામૃત કહ્યું કે, શ્રીમહાપ્રભુજી જનશિક્ષા માટે સ્વયંજીએ એક લીલા ગતાવી દીધી. એક વેળાએ પોતાના ઘરમાં લૌકિક સામગ્રીની ખેંચ એકદમ આવી પડી. ત્યારે શ્રીઅક્ષાજીએ શ્રીમહાપ્રભુજીને વિનંતિ કરી કે, “ઘરમાં આમગ્રી તો ઘણી છે.” ત્યારે શ્રીમહાપ્રભુજીએ પુછ્યું કે ‘શ્રી આમગ્રી છે?’ ત્યારે શ્રીઅક્ષાજીએ વિનંતિ કરી કે “છેલા ઘણા છે.” આ સાંભળીને શ્રીમહાપ્રભુજીએ આજ્ઞા કરી કે “છેલા (ચણા) જ લીંબવીને, તળીને લોગ ધરો.” આ વળતે એક સેવક ત્યાં ઉભો હતો તેણે વિનંતિ કરી “મહારાજ, જલરમાંથી ઉધાર આમગ્રી લઈ આવું?” ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ જવાબ આપ્યો કે, “જો તું ઉધાર લાવીશ તો ચુકાવશે કોણ? શું અમોરે જાગીર કે પરગણાં છે, જ્યાંથી દ્રવ્ય આવે? અમે શું પરગણાં મેળવીને કમાઈને ચુકવીશું? હમણાં ઉધાર લઈને પછી આપીએ ક્યાંથી?” ત્યારે સેવકે વિનંતિ કરી કે, “શ્રીકાકુરજી આપે ત્યારે દેવું ચુકવી દેવાશે.” ત્યારે શ્રીમહાપ્રભુજીએ આજ્ઞા કરી કે “જો શ્રીકાકુરજીની આપવાની ધન્ય હોય તો



ଶ୍ରୀରାମାୟଣେ ଶ୍ରୀମତଃ ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣାୟ ନମଃ ।
 ଖ୍ରୀ. ଖ୍ରୀ. ୧୫୯୭ ଖ୍ରୀଷ୍ଟାବ୍ଦ ୨୫ ୮



ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବାଦ୍ ଶ୍ରୀମତଃ ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣାୟ ନମଃ ।
 ଖ୍ରୀ. ଖ୍ରୀ. ୧୫୯୭ ଖ୍ରୀଷ୍ଟାବ୍ଦ ୨୫ ୧୨

સ્થાપન આપશ્રીએ કર્યું. તે ઉપરાંત ત્યાં એક મધ્વસંપ્રદાયના એક સંન્યાસી હતા. તેના મનમાં એમ આવ્યું કે, શ્રીઆચાર્યજી જેવા દિગ્વિજય કરનારા મારા શિષ્ય થાય તો સારું. તેથી તેણે શ્રીઆચાર્યજીને બહુ જ આજીજ કરીને કહ્યું કે, મારા આ. સંપ્રદાય તમને સોંપુ છું અને તમે અહીંજ રહો. ત્યારે રાત્રે શ્રીઠાકુરજીએ પધારીને શ્રીઆચાર્યજીને આજ્ઞા કરી કે, તમે મધ્વસંપ્રદાયને અંગીકાર કરશો નહિ.

ઐતિહાસિક ઉલ્લેખો.

[શ્રીવલ્લભાધીશ્વર અને એઓશ્રીના બે કુમાર શ્રીગોપીનાથજી અને શ્રીગુણાંજીએ ગુજરાતને કેટલીવાર પુનીત કરી તેને લગતી ઐતિહાસિક નોંધ પ્રાંતીજના મંદિરના પ્રાચીન પુસ્તકમાંથી મળી છે, તે નીચે આપીએ છીએ.]

શ્રીમદાચાર્યજી મહાપ્રભુજીએ જ્યારે પૃથ્વી પરિક્રમા કરી, ત્યારે એઓશ્રી ગુજરાતમાં પધાર્યા. તે વખતે ગુજરાતમાં બાદશાહી અમલ હતો. તે પછી સં. ૧૫૮૫ માં શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજી બેટદારિકા દર્શનાર્થે પધાર્યા. ૧ વર્ષ સુધી આપશ્રી દારિકામાં બિરાજ્યા છે. શ્રીરણુછેડરાયજીને શ્રીમદ્ભાગવતની કથા સંભળાવી. તે પછી બધી સામગ્રી શ્રીરણુછેડરાયજીને ભેટ કરી અને રાજનગર (અમદાવાદ) પધાર્યા. રાજનગરમાં વેણીદાસ નામના નાગર વાણીઆના ઘરમાં ૩ દિન બિરાજ્યા પછી ગમીજ ગામમાં ૬ છા ગોપાલ રહેતા હતા, તેનો ઉદાર કરવા માટે તેને ત્યાં પધાર્યા. તેને આપશ્રીએ આજ્ઞા કરી કે “તું અહીંજ રહેજે. એક સુંદર કન્યા વિના પ્રયાસે તને કોઈ લાવી આપશે, તેની સાથે લગ્ન કરીને ગૃહસ્થાશ્રમ માંડીને ભગવત્સેવા કરજે.” એવી આજ્ઞા આપીને પછી આપશ્રી ઘર તરફ પધાર્યા. તે નીતે જે જે જીવ વૈષ્ણવ યથા, તેનાં નામો આ છે—બ્યાસ રાણા સાચોરા, જોષી નરહરિ સિદ્ધપુર, ખેરાગુના દવે નારાયણ સાચોરા, વડાલી દેશના દવે ગોવિંદદાસ સાચોરા, વરજા ભટ્ટ ગોપાલદાસ ઓદીચ્ય ગમીજના, માકુઈના નરસિંહદાસ ભાલેજ ઓદીચ્ય, વડાલીના સાચોરા દેશવલટ્ટ, હવેલીના સોનીચંકર શંદુઆ, આવાં ઘણાજ સેવક થયા છે. કેટલાના નામો લખીએ ? તે પછી આપ શ્રીજીને ઘેર પધાર્યા છે.

શ્રીગોપીનાથજી—અંત ૧૫૬૨ માં દારિકાજી દર્શન મટે પધાર્યા. પહેલાં આપશ્રી રાજનગર (અમદાવાદ) પધાર્યા છે. સિકંદરપુરમાં [હાલમાં હગન ભાઈ ચંદની વાડીને નામે ઓળખાતા રથલમાં] ભટ્ટ જયદૃષ્ટ સોઠેદરા નાગર બ્રાહ્મણના ઘરમાં બાગ હતો, ત્યાં આપશ્રી ઉતર્યા. ત્યાંથી શ્રીમદનમોહનજી (હાલમાં રાજન-મહેતાની પોળમાં બિરાજતા શ્રીઠાકુરજી) પ્રકટ થયા છે. એ ઠાકુરજીને શ્રીગોપી-નાથજીએ સિંહાચનપર પધરાવ્યા છે. આપની સાથે શ્રીહરિવંશજી હતા. ભાઈલાલ કોઠારી, બાઈ બીકુભાઈ સોનાં આદિ ઘણા સેવકોને ધનુંજ સુખ આપ્યું. તે પછી આપશ્રી દારિકા પધાર્યા. ત્યાં એક માસ સુધી બિરાજ્યા. ત્યાં નરહરિદાસ કારમીવી ચંદુ હતાં. એ પ્રમાંહે દારિકા યાત્રા પછી આપશ્રી ૧૫૭૨ ને ૭૩ પધાર્યા.

શું આચાર્યશ્રીની લક્ષ્મી નામની પુત્રી હતી ?
(રા. રા. જોડાલાલ ગોવર્ધનદાસ શાહ એમ. એ.)

તા. ૬-૮-૨૫ ને રોજ “શુભરાત્રી” પત્રની સાહિત્યપૂર્તિમાં પ્રસિદ્ધ કરવામાં આવેલા “જંગસાહિત્ય” નામના લેખમાં જંગ કવિ વૃન્દાવનદાસના “ચૈતન્યભાગવત” નો ઉલ્લેખ કરેલો છે અને લેખકે તેમાં કૃષ્ણચૈતન્ય વિશે લખતાં તેમનું લક્ષ્મીશ્રીવલ્લભાચાર્યની લક્ષ્મી નામની પુત્રી સાથે થયું હતું એવો નિર્ણય જણાવ્યો છે. આ લેખના આધારે કેટલાક ખુદિના આંધળા પુષ્ટિસંપ્રદાયના શત્રુઓ તથા પોતાની જાતને શંકરમતાનુયાયી તરીકે ઓળખાવવાનો દાવો કરનારા પંડિતમન્યોએ ‘પ્રભામિત્ર’ ને પારસી તથા ‘સનાતનધર્મ’કેસરી તેમજ ચીચરીયા ‘પોલ’ માં શ્રીવલ્લભાચાર્યજી વિષે અસહ્ય હુમલાઓ કર્યા છે. જો કે ‘શુભરાત્રી’ ની સાહિત્યપૂર્તિમાં લેખકે કોઈ પણ જાતના દેવ સિવાય કે અંગત ઉલ્લેખના હેતુ સિવાય શુદ્ધ હૃદયથી લેખ લખ્યો છે. પણ જેવા ધર્મઘાતકોએ તો શિષ્ટાચારનો પણ ત્યાગ કરીને યદ્વાતદા જેમ આવે તેમ બકી નાંખ્યું છે, માટે અહિં તેઓએ જે ગંપગોળો ગળાડાવ્યો છે તેમાં કેટલું સત્ય છે તેની પરીક્ષા ઐતિહાસિક દૃષ્ટિથી કરવાની જરૂર છે.

પ્રસ્તુત વિષયમાં વિવાદનો પ્રશ્ન માત્ર એટલોજ છે કે—શ્રીવલ્લભાચાર્યજીની પુત્રી લક્ષ્મીનું કૃષ્ણચૈતન્ય સાથે લગ્ન થયેલું કે નહિ? પણ આ પ્રશ્નને અંગે ખીજા પણ પ્રશ્નો વિચારવા યોગ્ય છે અને તે એ કે—૧ શ્રીવલ્લભાચાર્યજીને લક્ષ્મી નામની પુત્રી હતી કે નહિ? ૨ અને હોય તો કૃષ્ણચૈતન્યની સાથે તેનું લગ્ન થયેલું કે નહિ? ૩ કૃષ્ણચૈતન્યનું લગ્ન ખીજા કોઈ લક્ષ્મીનામની પુત્રી સાથે થયું હતું? ૪ જો તે લક્ષ્મી નામે કન્યા સાથે હોય અને તે શ્રીવલ્લભાચાર્યજીની પુત્રી સાથે થયું હોય તો તે વલ્લભાચાર્ય કયા? ૫ શુદ્ધાદૈતવાદી પુષ્ટિપથપ્રવર્તક બ્રહ્મવાદી તે શ્રીવલ્લભાચાર્યજી કે અન્ય કોઈ?

આ પ્રશ્નના મુખ્ય મુદ્દાઓ તપાસતાં પહેલાં શ્રીવલ્લભાચાર્યજી અને કૃષ્ણચૈતન્યના જન્મકાલ વગેરે તરફ આપણે આપણી દૃષ્ટિ ફેરવી દેઈએ.

શ્રીવલ્લભાચાર્યજીનો જન્મ નિર્વિવાદ રીતે સંવત ૧૫૩૫ માં અગર ઇ. સ. ૧૪૭૯ માં નક્કી થયેલો છે. શ્રીવલ્લભાચાર્યજીની જન્મપત્રિકા જૂહસ્તોત્ર-સરિત્સાગર ભાગ-૨ ના પૃષ્ઠ ૧૪૮ માં આપેલી છે. અને તેના અંતમાં નીચે પ્રમાણે લખ્યું છે. સંવત ૧૫૨૫ શકે ૧૪૦૦ વૈશાલકૃષ્ણે ૧૧ રવૌ ધનિષ્ઠાનક્ષત્રે શુભયોગે વવકરણે एवं पचाङ्गे श्रीदिनगतसमस्तरात्रिगतघटी ૬ । ૪૪ સમયે શ્રીદશામીનાથપ્રાકટયમ્ । સદ્ગત લલ્લભાઈ પ્રાણુવલ્લભદાસ પણ પોતાના વલ્લભચરિત્રમાં તેમજ અંગ્રેજીમાં તે સાલ આપે છે. તેમના અંગ્રેજી પેન્ડેલેટમાં નીચે પ્રમાણે લખેલું, Vallabhacharya who was a high caste Brahmin, was born in Cham.

paranya near Rajim of the Raipur district in the Central Provinces in A. D. 1479. "

આ ઉપરથી શ્રીવલ્લભાચાર્યજીનું પ્રાકટય સંવત ૧૫૩૫ ગણાય છે અને સન ૧૪૭૬ છે, એટલે તેમાં ૫૬ ઉમેરીએ તો ૧૫૩૫ થાય. કૃષ્ણચૈતન્યનો જન્મકાલ તેમના જીવનચરિત્રોમાં ૧૪૮૫ નો સન છે. મી. આઉઝ બંગાલી વૈષ્ણવો સંબધી લખતાં નીચે પ્રમાણે આપે છે; He (Chaitanya) was born in Nadia in Bengal in A. D. 1485. આ ૧૪૮૫ની ઇ. સ. માં ૫૬ વર્ષ ઉમેરતાં ૧૫૪૧ જન્મસંવતનો કાલ કૃષ્ણચૈતન્યનો ગણાય. આ બંને કાલ સાથે મિલકુલ વાંધો નથી.

હવે આ બંને જન્મ સંવતો લઈને લક્ષ્મીપુત્રીનાં લગ્ન સંબધ ઐતિહાસિક અસંગતિ (Historical inconsistency) કેટલી છે તે આપણે તપાસીએ. વસ્તુતઃ દલીલ તો એવી સિદ્ધ થયે કે શ્રીવલ્લભાચાર્યજીની લક્ષ્મી નામની પુત્રી જ નહોતી. તેમ છતાં દલીલ ખાતર તે હતી એમ માનીએ તો પણ નીચે પ્રમાણે ઐતિહાસિક અસંગતિનો બાધ આવે છે.

કૃષ્ણ ચૈતન્ય. (જન્મ સંવત ૧૫૪૧.)

શ્રીવલ્લભાચાર્ય—(પ્રાકટય સંવત ૧૫૩૫ લગ્ન (શ્રીવલ્લભદિગ્વિજય તથા લ. પ્રા. કૃત શ્રીવલ્લભચરિત્રના આધારે) ૩૦ વર્ષની વયે—સંવત ૧૫૬૫.)

(લગ્ન પછી ધારે કે પુત્રીનું પ્રાકટય થયું અને તે પુત્રીનું નામ લક્ષ્મી હોય તો) પુત્રીનો જન્મ સંવત ૧૫૬૬.

લક્ષ્મી સાથે કૃષ્ણચૈતન્યનું લગ્ન.

અર્થાત્ પોતાની ૧૫૪૧-૧૫૮૧=૪૦ વર્ષની વયે લક્ષ્મી નામની પુત્રી સાથે લગ્ન કરેલું હોયું જોઈએ.

(શ્રીગોપીનાથજી પ્રથમ પુત્ર પ્રાકટય સંવત ૧૫૮૨) 'પ્રબંધિત્ર' અને 'પારસીમાં' લખનાર પુષ્ટિમાર્ગનિ-દક ટીકાકારના કથન પ્રમાણે શ્રીવલ્લભાચાર્યની પુત્રી લક્ષ્મી મોટી ઉમ્મરની કોઈ પણ લેતું નહોતું, માટે કૃષ્ણચૈતન્યને પરણાવી. આ ટીકાના આધારે વિચાર કરતાં તે પુત્રીની મૂલ વયતની ઉમ્મર આઠામાં આઠી ૧૫ વરસની અવશ્ય હોવી જોઈએ એટલે ૧૫૬૬+૧૫=૧૫૮૧.

ઉપરની દલીલ પ્રમાણે શ્રીવલ્લભાચાર્યજીને લક્ષ્મીનામનાં પુત્રી હોય તો તે પુત્રીનું લગ્ન સંવત ૧૫૮૧ માં એટલે કૃષ્ણચૈતન્યની ૪૦ વર્ષની વયે થયું હોયું જોઈએ.

પણ 'ગુજરાતી' સાહિત્યપૂર્તિના લેખમાં જણાવ્યા પ્રમાણે પૃન્દાવનંદાસના ચૈતન્યલાગવત અનુસાર અને કવિ કણોપુરના સંસ્કૃત "ચૈતન્યચંદ્રોદય નાટક" અનુસાર શ્રીચૈતન્ય સંસાર ત્યજીને ૨૪ વર્ષની ઉમ્મરે 'સંન્યાસ' ગ્રહણ કર્યોની હકીકત જણાવી છે. વળી મી. આઉઝ પણ એ મતને મજબૂત આવે છે. તેમજ સાધુચરણપ્રસાદકૃત (નદીયાની હકીકતમાં) "ભારત ભ્રમણના લાગ ૩ જામાં" પણ એ હકીકત મળે છે; અર્થાત્ ચૈતન્યે પોતાની ૨૪ વર્ષની ઉમરે સંન્યાસ

લીધો. ઉપર આપણે જોયું કે ૪૦ વર્ષની ઉંમરે લક્ષ્મી નામની વહુભાચાર્યની છોકરી સાથે લગ્ન કરે છે. અને હવે આપણને તેમના ચરિત્રનિરૂપકો ૨૪ વર્ષની ઉંમરે ચૈતન્યે સંન્યાસ સ્વીકારવાની હકીકત નિવેદન કરે છે. આ બંને વચ્ચે કેટલો બધો પરસ્પર વિરોધ છે? આ ઐતિહાસિક અસંગતિથી કૃષ્ણચૈતન્યના, વહુભાચાર્યની પુત્રી (?) લક્ષ્મી સાથેના લગ્નને બાધ થાય છે. અર્થાત્ શ્રીવહુભાચાર્યજીની લક્ષ્મી નામની પુત્રી સાથે તેમનું લગ્ન સંભવી શકતું જ નથી.

૨ શ્રીચૈતન્યના ચરિત્ર નિરૂપકો કહે છે કે:—ચૈતન્યનો જન્મ નદીયામાં (બંગલામાં) થયો હતો અને ત્યાં વહુભાચાર્યની પુત્રી લક્ષ્મીને જોઈને મોહિત થયા. (જુઓ વેપ્પુવ ધર્મનો ઇતિહાસ) આ દલીલથી બ્રહ્મવાદી શુદ્ધદ્વૈતપ્રતિપાદક શ્રીવહુભાચાર્યજીની પુત્રી લક્ષ્મી હોવાનો સંભવ બની શકતો નથી, કારણ કે શ્રીવહુભાચાર્યજીએ કોઈ પણ સમયે બંગાળાનો પ્રવાસ કરેલો નથી.

શ્રીવહુભાષ્યાન બીજામાં ભક્તકવિ ગોપાળદાસ ગાય છે:—

અંગ; બંગ; કલિંગ કેકટ, માગધ, મારુ મુર સિંધ.

તે તામસનાં અથ હર્યા, પ્રતાપ પદરજગંધ.

આ લીટીમાં જણાવેલા દેશો ‘તામસ’ જણાવવાથી આપ કદી પણ ત્યાં પધાર્યા નથી. એટલે નદીયામાં ચૈતન્યની મુગ્ધકાત યવાનો તથા તે સમયે પોતાની લક્ષ્મી નામની પુત્રી (?) નો ચૈતન્ય સાથે મેળાપ યવાનો પણ સંભવ નથી. આથી શુદ્ધદ્વૈતપ્રવર્તક શ્રીવહુભાચાર્યજીની લક્ષ્મી નામની પુત્રી સાથે ચૈતન્યનું લગ્ન થયું નહોતું એ સિદ્ધ થયું.

૩ પણ શુદ્ધદ્વૈતવાદી શ્રીવહુભાચાર્યજીને લક્ષ્મી નામની પુત્રી હતી કે કેમ? આનો ઉત્તર નકારમાં જ હોય. શ્રીવહુભાચાર્યજીને લક્ષ્મીનામની પુત્રી હોય એવો ઉદ્દેશ્ય કોઈ પણ સાંપ્રદાયિક શ્રયોમાં ઉપલબ્ધ નથી.

“લક્ષ્મી સતભામા એક અગ્રજની અનુહાર” એ વહુભાષ્યાનની પ્રક્રિયથી શ્રીગુણધંજીના જ્યેષ્ઠ પ્રાતા શ્રીગોપીનાથજીને લક્ષ્મી અને સતભામા એ નામની બે પુત્રીઓ હતી. પણ શ્રીગોપીનાથજીની લક્ષ્મી નામની બે પુત્રીનું પણ ચૈતન્ય સાથે લગ્ન સંભવી શકતું નથી. શ્રીગોપીનાથજીનું પ્રાકટ્ય સં. ૧૫૬૭; લગ્ન ધારો કે ૨૦ વર્ષની વયે; એટલે સંવત્ ૧૫૮૭ માં, લક્ષ્મી પુત્રીનું પ્રાકટ્ય બીજે વર્ષ લેતાં સં. ૧૫૮૦; આ લક્ષ્મીનું લગ્ન ચૈતન્ય સાથે હોય તો તે લગ્નવખતનું તેનું વય ૧૫ વર્ષનું હોવું જોઈએ. કારણ કે મોટી ઉંમરે ચૈતન્ય સાથે લગ્ન કરેલું એવું વિરોધીઓનું કહેવું છે. એટલે લગ્નની સંવત્ ૧૫૮૬+૧૫=૧૬૦૧. ચૈતન્યનો જન્મ ૧૫૪૧ માં છે. એ તેનું લગ્ન શ્રીગોપીનાથજીની પુત્રી લક્ષ્મી સાથે હોય તે સંવત્ ૧૬૦૪ માં હોવું જોઈએ. અર્થાત્ ૬૩ વર્ષની ઉંમરે હોવું જોઈએ; પણ પોતે ૨૪ વર્ષની વયે સંન્યાસ ગ્રહણ કર્યો છે તે જાણત ૨૫૪ થઈ છે, તેમજ તેમનું અવસાન સંવત્ ૧૫૮૩ માં થયું છે. એટલે ૧૬૦૪ માં લગ્ન થાય એ વાત

“અ-પુષ્પ” અગર વંધ્યાપુત્રનેવીજ છે. એટલે એ લક્ષ્મી શ્રીગોપીનાથજીની પુત્રી હોઈ શકે શકે નહિ. શ્રીવલ્લભાચાર્યજીને એ પુત્રો સિવાય કોઈ પણ પુત્રીજ નહોતી. એટલે મૂલં નાસ્તિ કુતઃ શસ્ત્રા? એ નિયમ પ્રમાણે શ્રીવલ્લભાચાર્યજીને પુત્રીજ ન હોય, તો પછી ચૈતન્ય સાથે લગ્ન શી રીતે સંભવી શકે?

૪ મી. આઉઝ પણ However that may be, when he had arrived at the age of 24.....as a religious teacher, એ વાક્યમાં However that may એ શબ્દોથી વલ્લભાચાર્યજીની લક્ષ્મી નામની પુત્રીનાં ચૈતન્ય સાથેનાં લગ્ન સંબંધમાં તે શંકા દર્શાવે છે.

ભારતભ્રમણ ભાગ ૩ માં આણું સાધુ ચરણદાસ પૃ. ૭૪૪ (૧૨૮) નીચે પ્રમાણે લખે છે:—મહાપ્રભુને સન ૧૪૮૫ ફસર્ગમે નદીયાં કે જગન્નાથમિત્ર વ્રાહ્મણકી છાંકે ગર્ભસે જન્મ લીયા । વહ સંપૂર્ણ વંગાલ ઔર ઉડીસેમે વિષ્ણુકી ભાક્તિકા ઉપદેશ કરતે હે । ઉન્હોને એકસત્તકી પુત્રીસે જપના વિવાહ ક્રિયા થાં કિન્તુ ૨૪ વર્ષકી અવસ્થામે વહ ગૃહકો છોડકર ઉડીસેમેં ચલે ગયે.

આ ફક્તો ઐતિહાસિક ગવેષણાપૂર્વક સાધુચરણદાસે લખેલો છે, આમાં કૃષ્ણચૈતન્યનું લગ્ન એક સંતની પુત્રી સાથે થયેલું એમ સ્પષ્ટ લખેલું છે. આથી શ્રીવલ્લભાચાર્યની લક્ષ્મી નામની પુત્રી સાથે શ્રીચૈતન્યનાં લગ્નનો નિષેધ કયો છે. આમ છતાં જો ચૈતન્યભાગવતના આધારે તેમનું લગ્ન ‘લક્ષ્મી’ અને ‘વિષ્ણુપ્રિયા’ એમ બન્ને સાથે થયેલું માનીએ, તો પણ ઉપર જણાવેલાં કારણોની પ્રહારવાદી શ્રીવલ્લભાચાર્યજીની લક્ષ્મી નામની પુત્રી સાથે તે સંભવી શકતું નથી, કોઈ અન્ય એ નામના હોવા ભેધએ.

ઉપરની દલીલોથી તારવેલાં અનુમાનો.

૧ શ્રીવલ્લભાચાર્યજીની લક્ષ્મી નામની પુત્રી સાથે શ્રીચૈતન્યનું લગ્ન થયું નથી.

૨ પ્રહારવાદી શ્રીવલ્લભાચાર્યને એ પુત્રો સિવાય પુત્રીજ નહોતી.

૩ લક્ષ્મી સાથે લગ્ન માટે મી. આઉઝ સદેહ દર્શાવે છે.

૪ સાધુચરણદાસ શ્રીચૈતન્યનું લગ્ન ફક્ત એક સંતની પુત્રી સાથે થયાનું કહે છે.

ચૈતન્યનો જન્મ નદીયામાં હોવાથી તથા પ્રહારવાદી શ્રીવલ્લભાચાર્યજી કહિ પણ નદીયાના પ્રવાસે ગયેલા નહિ હોવાથી નદીયામાં કૃષ્ણચૈતન્ય જે લક્ષ્મી નામની છોકરીના મોહમાં પડે છે તે વાત તદ્દન ખોટી ને નિર્મૂળ છે.

ઉપરની ઐતિહાસિક સંશોધનપૂર્વક આપેલી દલીલોથી સંપ્રદાયના વિરોધી-ઓએ જે ગપગોળા ચલાવ્યા છે અને શ્રીવલ્લભાચાર્યજી વિરુદ્ધ કાઢવ દેવકવા માંડયો છે તેમાંની સત્ય હકીકત નિષ્પક્ષપાત વાંચનાર કદબી શકશે, હાલ આટલુંજ બસ છે.

શ્રીકૃષ્ણચૈતન્ય:

(લેખક:—પ્રોફેસર શ્રીયુત ગ્રાન્વિલ્ડસ લેફિંગવિન્ડ લઈ M. A.)

તા. ૧-૧૧-૨૫ ના “ ગુજરાતી ” ના અંકમાં શ્રીવલ્લભાચાર્યજી અને કૃષ્ણ-ચૈતન્યના સંબંધમાં મારા સ્નેહી ભાઈ જેઠાલાલનો લેખ વાંચ્યો. આ વિષયમાં મેં પણ જેટલાંક ઐતિહાસિક સાધનો એકઠાં કર્યા હતાં. આમાનાં ઘણાંખરાનો ઉપયોગ તા. જેઠાલાલે સ્વતંત્ર રીતે કર્યો છે. આદીનાં સાધનો નીચે આપવામાં આવ્યાં છે:—

ચૈતન્ય-જેટલાંક વર્ષ લગ કર્યું તે પ્રશ્ન વિચારવા જેવો છે. એ મત પ્રમાણે ચૈતન્યનું લગ્ન ચૌદમે કે પંદરમે વર્ષે થયું. (જુઓ The Chaitanya movement by M. T. Kennedy, M. A. 1925, p. 15. ‘ Soon after his (Chaitanya's) father's death, when the boy was only 14 or 15 years of age, he married and became a house-holder, ’) જીન મત પ્રમાણે તેમનું લગ્ન અઠારમે વર્ષે થયું. (જુઓ Vaisnavism etc. etc. by Sir R. G. Bhandarker, 1913, p. 83 ‘ when he (Chaitany) was eighteen years of age he married a wife of the name of Lachmi Dabi.....) આ બે મતમાંથી એટલું તો પ્રતીત થાય છે કે ચૈતન્યનું લગ્ન ચૌદથી અઠાદ વર્ષની અંદર થયેલું હોવું જોઈએ, આ પ્રમાણે જ્યારે ચૈતન્યનું લગ્ન થયું ત્યારે પુષ્ટિમાર્ગપ્રવર્તક શ્રીવલ્લભાચાર્યજીની ઉંમર વીસથી છઠ્ઠીસ વર્ષ સુધીની હોવી જોઈએ. [શ્રીવલ્લભાચાર્યજીનો જન્મ ઇ. સ. ૧૪૭૯, ચૈતન્યપ્રભુનો જન્મ ઇ. સ. ૧૪૮૫ (સી. કેનેડીના મતે ઇ. સ. ૧૪૮૬)] શ્રીવલ્લભાચાર્યજીએ ત્રીસમે વર્ષે લગ્ન કર્યું હતું એમ સાંપ્રદાયિક પુસ્તકો ઉપરથી જણાય છે. આ ઉપરથી એટલું તો નિર્વિવાદ સિદ્ધ થાય છે કે ચૈતન્યના લગ્ન સમયે શ્રીવલ્લભાચાર્યજી બ્રહ્મચર્યપ્રથમમાં હતા, પછી એમની પુત્રીને પરણવાનો અવસર જ્યાં રહ્યો ! એ વાત અર્ધનગર જેવીજ લાગે છે.

હવે બીજી વાત. જેટ ઇંક ઐતિહાસિક પુસ્તકો વાંચતાં માલમ પડે છે કે ચૌરાંચ મહાપ્રભુ ચૈતન્યના સસરાનું નામ વલ્લભાચાર્ય હતું અને તે નદિયામાંજ રહેતા. સસરાનું નામ વલ્લભાચાર્ય અને પુષ્ટિમાર્ગ-પ્રવર્તકનું નામ શ્રીવલ્લભાચાર્ય, આ નામના માત્ર સામ્યથી શ્રાન્તિ થઈ કે પુષ્ટિમાર્ગીય આચાર્ય શ્રીવલ્લભાચાર્યજી ચૈતન્યના સસરા થાય થાય પણ વસ્તુસ્થિતિ એમ નથી. આ વિષે Dr. T. Farquhar, M. A. D. Litt, પોતાના An outline of the religious literature of India, 1920 નામના પુસ્તકના ૩૧૨ માં પૃષ્ઠ ઉપર નીચે પ્રમાણે લખે છે:— ‘ But he (Vallabhacharya) was not his (Chaitanya's) father-in-law the two men had the same name, but that is all the basis that the story has. ’ આ ઉપરાંત ‘ The Chaitanya movement, 1925 ’ નામના પુસ્તકમાં ૧૫ માં પૃષ્ઠ ઉપર સી. કેનેડી લખે છે કે:— ‘ Owing to the fact

of his (Chaitanya's) father-in-laws name being Vallabhacharya, it has been stated in various English works that Chaitanya was son-in-law to the founder of the Vallabhacharyas; and, because of this fact a relationship has been traced between the two sects. *This is pure fiction*, as Chaitanya's father-in-law was a Nadia house-holder, while the founder of the Vallabhacharyas was not only from the Deccan, but was a contemporary of Chaitanya himself."

આ સર્વ ઉપરથી નીચેની જે વાત નિર્વિવાદ સિદ્ધ થાય છે:—

(૧) બંગાલાના કૃષ્ણચૈતન્યનાં લગ્ન વખતે પુષ્ટિમાર્ગપ્રચારક શ્રીવલ્લભાચાર્યજી બ્રહ્મચર્યાવસ્થામાં હતા.

(૨) કૃષ્ણચૈતન્યના સસરાનું નામ વલ્લભાચાર્ય હતું અને તેથી જ ચૈતન્ય શ્રીવલ્લભાચાર્યજીના જમાઈ હતા એમ જાણ થયો.

હવે આ જે સિદ્ધ વસ્તુથી સ્પષ્ટ થયે કે શ્રીવલ્લભાચાર્યજી અને ચૈતન્યનો સંબંધ સસરા જમાઈનો નહોતો. એ વાત બ્રાહ્મિણી જ પ્રચલિત થઈ છે, એમ સુરા વાચકને જણાયા વિના નહિ રહે.

શ્રીવલ્લભાચાર્યજી અને કૃષ્ણચૈતન્ય.

(લેખક: પ્રોફેસર શ્રીયુત જેઠાલાલ ગોવર્ધનદાસ શાહ એમ. એ.)

સાહેબ, ગત "શુન્દરાતી" ના અંકમાં મારા ફ્નેહી રા. ભટ્ટ એમ. એ. તથા મી. ભટ્ટાચાર્યનાં પત્રો મેં વાંચ્યા છે. રા. ભટ્ટાચાર્યનાં ચર્ચાપત્રો એક જ અંકમાં પ્રસિદ્ધ થયેલાં જોઈને હું થોડો ખુશી થયો છું. દારણ કે મારા કથનને વધુ સમર્થન આપનાર સત્જનક પુરાવા રા. ગોવિંદલાલ ભટ્ટે આપેલાં છે. એટલે જો મી. ભટ્ટાચાર્ય તે ચર્ચાપત્ર આવધાનતાથી વાંચી જોશે, તો તેમને આ વિષયમાં કોઈ પણ શંકાને સ્થાન નહિ રહે.

મી. ભટ્ટાચાર્યને મારે જણાવવું જોઈએ, કે જો તમે ઇતિહાસના સત્યને કબૂલતા હો તો રા. ભટ્ટની દલીલને તથા તેમણે આપેલાં ઐતિહાસિક પ્રમાણોને કબૂલે જ તમારો છૂટકો છે. તેમાંથી એક પણ મારા આપેલાં અનુમાનથી વિરુદ્ધ અનુમાન તારવી શકાય એમ નથી.

મેં જે દલીલો આપી છે તે કેવલ સાંપ્રદાયિક ગ્રંથોમાંથી નથી આપી હલદું શ્રીકૃષ્ણચૈતન્ય સંબંધી જે સાહિત્ય પ્રકટ થયેલું છે તેમાંથી પ્રમાણગ્રુત સંવતો લઈને, મારા કેસને મજબુત કર્યો છે. ભારતવ્રમણ, મી. આઉઝ, તથા ડૉ. Farquhar તથા મી. Kennedy જેવા ઐતિહાસિક સંશોધનમાં રસ લેનાર તથા સત્યને સમજનાર ગૃહસ્થોના આ બાબતમાંથી પૂરાવા એકઠા કરવામાં આવ્યા છે. પૃંદાવનદાસના ચૈતન્યભાગવતમાં શ્રીચૈતન્યનું લગ્ન વલ્લભાચાર્યની લક્ષ્મી નામની પુત્રી સાથે થયું હતું એમ જ કહેવામાં આવ્યું છે; અને તેના ખુલ્લુમાં

મેં મારા લેખમાં સ્વતંત્ર પ્રમાણો આપ્યાં છે. તેમાંથી મેં મુખ્ય મુદ્દાઓ તારવેલા. (૧) શ્રીકૃષ્ણચૈતન્યનું જન્મ શ્રીવલ્લભાચાર્યજીની પુત્રી લક્ષ્મી સાથે થયું નથી. આ દલીલને બાબુ સાધુચરણદાસના ભારતખંડમાં આપેલી હકીકતથી વધારે ટેકો મળે છે. કારણ શ્રીકૃષ્ણચૈતન્યનું જન્મ એક સંતની પુત્રી સાથે થયેલું એમ બાધાભારે કહેલું છે. (૨) બીજું અનુમાન એ છે કે જે વલ્લભાચાર્યની પુત્રી સાથે જન્મ થયેલું એવી દલીલ ઘડીલર દલીલ ખાતર માની લઈએ તો પણ અહિં નામના સંબંધથી પુષ્ટિમાર્ગસંસ્થાપક પ્રદ્ધવાદી શ્રીવલ્લભાચાર્યજી તો ન જ હોઈ શકે, કારણ કે જે શ્રીકૃષ્ણકૃષ્ણચૈતન્ય અને પ્રદ્ધવાદી શ્રીવલ્લભાચાર્યજી અમદાવાદીન હતા, છતાં ચૈતન્યના જન્મની સંવતો મળતી નથી, તેથી ઇતિહાસ દિધી દાલની અસંગતિ આવે છે.

આ વલ્લભાચાર્ય અને પુષ્ટિમાર્ગપ્રવર્તક શ્રીવલ્લભાચાર્યજી એક ગણવા નહિ આ સંબંધી ફકરાઓ મારા મિત્ર રા. ભટે મી. કેનેડીના "The Chaitany movement" નામના પુસ્તકમાં પૃ. ૧૫ ઉપર આપેલા, તેનું અવતરણ કર્યું છે, તે પુનઃ વાંચવાને મી. ભટ્ટાચાર્યને હું ભલામણ કરું છું.

મી. ભટ્ટાચાર્ય ! એ ફકરાનું લખાણ પુષ્ટિસંપ્રદાયની વ્યક્તિએ કરેલું નથી, માટે તેને બરાબર આવધાનતાથી વાંચ્યો અને તેનું મનન કર્યો, અને તમે જે પ્રકારે શ્રીવલ્લભાચાર્યજી ઉપર કાઢવ ફેંકીને પરિણામ ઉપભવવાનો દુરાચાર કર્યો છે તેને ત્યજ દેશો.

વૃંદાવનદાસની હકિકત ખોટી છે એવું હું કહેતો નથી, તે છતાં જે તેને કબૂલ કરતા હો તો પણ અમારો મત બિલકુલ એવો નથી. કારણ પ્રદ્ધવાદી શ્રીવલ્લભાચાર્યજીની પુત્રી લક્ષ્મીનું જન્મ કોઈ પણ રીતે સાબીત થઈ શકતું જ નથી. શ્રીવલ્લભાચાર્યને લક્ષ્મી નામની પુત્રી જ નહોતી. મી. ભટ્ટાચાર્યે ઐતિહાસિક પ્રમાણોથી પોતાનો મત સિદ્ધ કર્યો પડ્યો. ભદ્રંભદ્રની પ્રાચીન શૈલીથી અભ્યાસને સિદ્ધિત વર્ગ તેમના કથનોમાં તથા અનુમાનોમાં શ્રી મૂઢી શક્યો નહિ; ઉલટા એવા પ્રયત્નો તકના અભાવને લીધે હાસ્યાસ્પદ લેખાયો.

હવે મી. ભટ્ટાચાર્ય જે એવું કહે છે કે શ્રીવલ્લભાચાર્યનો સંવત સદ્ગત લક્ષ્મીબાઈના જીવનચરિત્રમાં આપેલો છે તે આધુનિક અગર કાલ્પનિક છે; તે વિશે હું તેમને જણાવીશ કે તે વાતમાં કાંઈ પણ વલ્લુદ નથી. શ્રીશંકરાચાર્યનો જન્મ વગેરેની બાબતમાં કાલગણના માટે વિદ્વાનોમાં એકમત એવામાં આવતો નથી પણ શ્રીવલ્લભાચાર્યજી સંબંધમાં એવું બન્યું નથી. શંકરાચાર્યની કાલગણનામાં હજારો વર્ષોના મતભેદ વિદ્વાનોમાં દિગ્વિચર થાય છે પણ શ્રીવલ્લભાચાર્યના જીવનપ્રસંગોના ઉલ્લેખો જે જે એવદેશીય અગર યુરોપીય વિદ્વાનોએ કરેલા છે તેમાં ચોક્કસ સંવતો મળી આવે છે, તેથી મી. ભટ્ટાચાર્યને તેમના સાચીઓને એ બાબત ન.

કાંઈ પણ શંકા લેવા જેવું નથી. સદ્ગત લલ્લુભાઈએ જે સંવત લીધો છે તે એમના મગજમાંથી ઉપજીવી કાઢ્યો નથી પણ તેમની પહેલાંના પ્રાચીન લેખોમાં આપેલા સંવતોજ તેમણે લીધા છે.

શ્રીદ્વારકેશજી નામના ગોસ્વામી આજથી ૧૫૦ વર્ષ ઉપર થઈ ગયા, તેમણે મૂલ પુરુષ નામનો ગ્રંથ લખ્યો છે તેમાં પણ સંવત ૧૯૩૫ ની સંવત આપી છે, ધન્ય સંવત પંદ્રહા, પેતીસ માધવ માસ છે:

કૃષ્ણ એકાદશી શ્રીવલ્લભ પ્રકટ વદન વિલાસ છે.

વળી બીજા પ્રાચીન પદમાં પણ તે જ સંવત દર્શિગોચર થાય છે.

તરવ^૧ શુભ^૨ બાણ^૩ ભુવિ^૪ માધવાસિત તરણિ પ્રથમ ભગવંદ દિવસ પ્રકટ લઈમન સુવન, ધન્ય સંપારણ્ય મન ત્રેલોક જન અન્ય અવતાર હોય છે ન એસો ભુવન !

આ પંક્તિ પ્રમાણે ભૂ=૧, બાણ=૫, શુભ=૩, અને તરવ=૫, સંખ્યા લેતાં સંવત ૧૫૩૫ નીકળે છે.

સગુણદાસજી શ્રીમહાપ્રભુજીના સમકાલીન હતા, તેમણે શ્રીવલ્લભાચાર્યજીની વધાઈઓ માઈ છે, તેના આધારે તથા ‘નિજ વાર્તા તથા ધરૂ વાર્તા’ તેમજ શ્રીગિરિધરજીનાં વચનામૃત વગેરેના આધારે એ જ સંવત નક્કી થયેલો છે; અને “જન્મપત્રિકા” માં એ જ સંવત આપણે જોઈએ છીએ. તેથી સદ્ગત લલ્લુભાઈએ જ આ સંવત જાહેરમાં મૂક્યો છે એ કહેવું હંડહડતું ભૂલું છે ! ભારતભ્રમણ ભા. ૧ નાં પૃષ્ઠ=૨૨૬ બાણ સાધુચરણદાસ પણ નીચે પ્રમાણે કહે છે : (આ પુસ્તકના ઉપોદ્ધાતમાં લેખક લખે છે કે તેણે ૧૮૯૧ માં ઐતિહાસિક વિગતોની શોધની નોંધ કરેલી છે, એટલે એમના અભિપ્રાય ૧૯૦૭ પૂર્વના છે.)

મદરાસ દેશ-તૈલંગદેશકે કાંકરવટ્ટી ગાંવમે મારદ્વાજ ગોત્ર તૈલંગ બ્રાહ્મણ લક્ષ્મણમટ્ટજી રહતે થે । उन्होंने एक समय काशी-यात्रा की । बिहारप्रदेशके चम्पारण्यमें चौरा गांवके निकट उनकी पत्नी इलमागारुके गर्भसे सम्बत १५३५ वैशाख वदी ११ को श्रीवल्लभाचार्यजीका जन्म हुआ ॥

આ બધી દલીલો ઉપરથી આટલું પ્રતીત થયે કે આ સંવત આધુનિક નથી, તેથી તે સંવતના આધારે જે અનુમાનો અમે ઐતિહાસિક પુરાવાથી આપ્યાં છે તે કોઈ પણ રીતે ખોટાં નથી, પણ અમારી દલીલને તે વધારે મજબુત બનાવે છે.

સદ્ગત લલ્લુભાઈએ શ્રીવલ્લભાચાર્યના જન્મકાલ નક્કી થયો નથી, એવું કોઈ પણ સ્થળે લખ્યું હોય તો તે મેં વાંચ્યું નથી. મી. ભટ્ટાચાર્યે જે તે વાંચ્યું હોય તો સ. લલ્લુભાઈના શબ્દોને જાહેરમાં મૂક્યો, તો તે વિષેના હું મારો અભિપ્રાય આપીશ.

બાકી શ્રીવૃક્ષભાષ્યાંજી જગન્નાથ પધારેલા છે અને અંગાળમાં પધાર્યા નથી, તેનું કારણ કે જગન્નાથ એ ઝોરીયામાં છે. મી. ભટ્ટાચાર્યને ભૂગોળજ્ઞાન પણ ઝોાઈ હોય એવું જણાય છે.

જગન્નાથપુરીમાં શ્રીમહાપ્રભુજી પધાર્યા તે માટે શા માટે પ્રાયશ્ચિત્ત કરે ? અનેક જીવોના ઉદ્ધાર કરવાને પોતે ત્યાં પધાર્યા છે, અને વળી તે પ્રદેશ તામસ નથી. આ વિષેનો પ્રશ્ન કરનાર ભટ્ટાચાર્યની બુદ્ધિની મને ખરેખર હયા આવે છે, તો તેમની સામે હું એમ પણ પ્રશ્ન કરું કે વેદનું પ્રામાણ્ય નહિ સ્વીકારનાર અને છતાં સનાતનધર્મી દહેવડાવનારે પણ શા માટે પ્રાયશ્ચિત્ત કર્યું નહિ ? શ્રીશંકરાચાર્ય અક્ષસૂત્ર ભાષ્યના બીજા અધ્યાયમાં વેદનું પ્રામાણ્ય પણ સ્વીકારતા નથી, તો તેમણે પ્રાયશ્ચિત્ત કર્યું હશે વાં ? આવો પ્રશ્ન પૂછનાર વેદને સમજતોજ નથી. વળી વેદની શ્રુતિઓના letter ને વળગવાનું તે સગર્થ આવ્યાયો આપણને કહેતા નથી; પણ તેના સંસ્કૃતને spirit ને જોવું જોઈએ. વેદપાઠી અગર “પદો પોષટજી અચરે રામ” એવી રીતે વેદનો ઉપયોગ કરનારથી વેદો પણ ત્રાસે છે. જો આ બાબતનો ઉદ્ભવ મી. ભટ્ટાચાર્યે ન કર્યો હોત તો વધારે આંધાત; કારણ કે મૂળ સુદાની સાથે આની કશી પણ સંગતિ નથી.

આખરે સત્ય વસ્તુ સત્ય જ રહે છે. મહાન આવ્યાયોની નિંદા કરનાર પ્રયત્નમાં પાછા ફરે છે. જો તે ઇરાદાથી મી. ભટ્ટાચાર્ય અર્ચાપત્રના સુદમાં અપ-લાવતા હોય તો તેમની તે ગાળતમાં ક્ષેત્રી સ્થિતિ ન થાય તે માટે હું ચેતાવવા માંડુ છું.

શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરચરિત્ર.

उन्मिपत्तमुदवाग्धरोचिःपाटला इव दिशो विदधानाः ॥

मोहयन्ति मदयन्ति विदग्धान् विट्ठलेशपदपल्लवभासः ॥ ૧ ॥

पूर्णसप्तविर्षाणि दिनान्यष्टौ च विज्ञातिः ॥

वसुधायां व्यंराजन्त श्रीमद्वિट्ठलदीक्षिताः ॥ ૨ ॥

પ્રાદુર્ભાવમહામહોત્સવ.

શ્રીમદ્ધિકુમાર શ્રોવિઠ્ઠલાધીધરનું પ્રાકટ્ય સંવત ૧૫૭૨ ના મઝ પોષ કૃષ્ણનવમીના પરમ મંગલમયદિને ચલુ હતું. એઓથીના પ્રાકટ્યમહોત્સવનો આનંદ હિંગોઅર કરીને એઓથીના કૃપાપાત્ર મહાનુભાવી શ્રીગોપાલદાસજી શ્રીવૃક્ષભાષ્યાન ગ્રન્થમાં તે સુદર રીતે વર્ણવે છે. એવા લોકિક વાણીથી અવર્ણનીય અલોકિક પ્રચરો ગુરુકૃપાભાજન મહાનુભાવી દિગ્વિરો જ. આલેખી ચક્રે છે. એનાં ઉદ્ધરણ-રૂપ ઉક્ત ભગવદીયકૃત વૃક્ષભાષ્યાન છે. શ્રીવૃક્ષભાષ્યાનમાંનું “પોષ મધ્યાહને

નોમ શ્રીનાથજી ? એ પદ આપશ્રીના પ્રાકટયમહામહોત્સવનું એવું ઉત્તમ ચિહ્નમાં લાવે છે કે મહોત્સવનું સાક્ષાદર્શન કરવા આપણે જાણે હમણાં જ લાગ્ય શાળી થયા હોઈએ ! આપશ્રીનું પ્રાકટયસ્થળ કાશી પાસે આવેલું ચરણાટ છે આપશ્રીના પ્રાકટય પહેલાં શ્રીમદ્વાચાર્યચરણ જ્યારે પંઢરપુરમાં પધાર્યા હતા ત્યાં શ્રીવિકુંભનાથજી (પાંડુરંગના સેવ્ય) એ સૂચના કરી હતી કે અમારી આપશ્રી ત્યાં નામસ્થાપ્યમારે કરીને પુત્ર તરીકે પ્રકટ થવાની ઇચ્છા છે. અર્થાત્ આપશ્રી ત્યાં જે પુત્ર પ્રકટ થાય તેનું નામ શ્રીવિકુંભનાથજી રાખવાની મારી સૂચના છે શ્રીમદ્વાચાર્યચરણે શ્રીવિકુંભનાથજીની આ સૂચનાને આજ્ઞા તરીકે માન્ય રાખી અને શ્રીપ્રભુચરણનાં પ્રાકટય પછી શ્રીવિકુંભનાથજી એ નામ ધર્યું.

યજ્ઞોપવીત અને વિદ્યાધ્યયન.

શાસ્ત્રોક્ત વિધિને અનુસરીને શ્રીમદ્વાચાર્યચરણે કાશી પાસેના ચરણાદ્રિમાં (ચરણાટમાં) જેને ચૂનારગઢ કહેવામાં આવે છે ત્યાં પધારીને પોતાના બન્ને કુમારો-શ્રીગોપીનાથજી અને શ્રીવિકુંભનાથજીને યજ્ઞોપવીત પ્રદાન કર્યું. યજ્ઞોપવીત સંસ્કાર થયા પછી કાશીમાં મધુસૂદનસસ્તવતી નામના વિદ્યાનું સંન્યાસી પાસે શાસ્ત્રાધ્યયન કરવા માટે શ્રીવિકુંભાધીશને આજ્ઞા કરી. શ્રીવિકુંભાધીશ્વરે અતિવરોધી શાસ્ત્રાધ્યયન પ્રારંભ્યું. વેદ, વેદાંગ આદિનું અધ્યયન સારી પેઠે કર્યું. થોડા સમય પછી એ વિશ્વનાભદ્રની કન્યા શ્રીરુકિમણી સાથે શ્રીવિકુંભાધીશ્વરનાં લગ્ન કર્યા.

પિતૃચરણનો આસુરવ્યામોહ.

આપશ્રીનું વય ૧૭ વર્ષનું થવા આવ્યું. તે અરસામાં પ્રભુની ત્રણવાર આજ્ઞા પ્રયાથી શ્રીમદ્વાચાર્યચરણે નિત્યલીલામાં પધારવાનો નિશ્ચય કર્યો. શ્રીવિકુંભાધીશ્વરને સ્વસન્નીપ બોલાવીને, પોતાના કંઠની આજ્ઞા એજ્ઞાશ્રીના કંઠમાં પધરાવીને માર્ગ સંબંધિ જે કાંઈ ક્ષેત્ર હોય તે શ્રીદામોદરદાસજી આદિ નિજ અંતરંગ લગવદીયો પાસેથી જાણી લેવાનું કહીને પોતે ભક્તિમાર્ગીય સંન્યાસ ગ્રહણ કર્યો. લગભગ ૪૦ દિન સુધી સંન્યાસ સ્વીકાર્યો. સંવત્ ૧૫૮૭ ના આપાઠ શુદ્ધ તૃતીયાને દિવસે ગંગાજીના તટ ઉપર પધાર્યો. મધ્યાહ્નનો સમય પાસે આવ્યો. પોતાના બે કુમાર અને અન્ય નિજ સેવકોને શિદ્ધાપ્લોકીથી ઉપદેશ આપ્યો, અને પ્રભુ નિકટ પધારવા વિનય કર્યો. આચાર્યશ્રી ભૂતલ ઉપર પર વર્ષ, ૨ માસ, ૭ દિન સુધી બિરામ્યા.

અઠેલમાં સ્થિતિ.

આચાર્યચરણના આસુરવ્યામોહ પછી શ્રીમદ્વિકુંભાધીશ્વર પિતૃચરણની આજ્ઞા મુજબ અઠેલમાં બિરામ્યા. ત્યાં પ્રભુની સેવા કરતા. જે જે વિજ્ઞાસુ વૈષ્ણવો ત્યાં આવે તેને શ્રીવાકપતિવાકસુધાનું પાન કરાવતા. શાસ્ત્રાર્થ કરવા આવનાર પંડિતો સાથે શાસ્ત્રાર્થ કરીને તેઓના માનનું ખંડન કરતા. અનેક પંડિતો આપશ્રીનાં અપૂર્ણ પાંડિત્ય, પાંખડ મતોનું ઉન્મૂલન કરવાની વેદસિદ્ધ અદ્ભુત સુક્તિ, નિજપક્ષ

સમર્થને કેરવા માટેનું અગાધ બુદ્ધિબલ આદિને અવલોકીને મુગ્ધ બની જતા. આપશ્રીએ અટેવમાં બિરાલને શ્રીમદ્વાચાર્યચરણના અપૂર્ણ રહેલા અંથો-પૂર્ણ કરવાનો પ્રયાસ કર્યો. ગ્રહસૂત્ર ઉપરનાં પિતૃચરણપ્રણીત અલુભાધ્યમાં છેલ્લા દોઢ અંધ્યાય ઉપર ભાષ્ય લખીને અલુભાધ્યન સંપૂર્ણ કર્યું. તત્ત્વદીપનિર્ણયાંતર્ગત લાગવતાર્ય પ્રકરણનો પ્રકાશ પિતૃપાદે તૃતીયસ્કંધ સુધી જે અપૂર્ણ રહ્યો તે અપૂર્ણ પ્રકાશ પંચમસ્કંધ સુધી આપશ્રીએ લખ્યો. પિતૃચરણના શ્રીમુખોધિની આદિ અનેક અંથ ઉપર આપશ્રીએ સુંદર ટીકાઓ લખી, અને તેમ કરીને શ્રીમદ્વાચાર્યચરણની અનવગમ્ય નાણીનો સ્વાદ લેવા દેવસૃષ્ટિને લાભચાળી બતાવી. આપશ્રીએ રચેલા અંથોની ટીપ નીચે પ્રમાણે છે:—

શ્રીવિક્ર્લેશપ્રભુપ્રણીત અંથો.

(૧ વિદ્ય-મંડન, ૨ અલુભાધ્યનો અંતિમ ૧૫ અધ્યાય, ૩ નિર્ણયપ્રકાશ (૩ સ્કંધથી ૫ સ્કંધ સુધી), ૪ શ્રીમુખોધિનીલ ઉપર દિપ્પણી, ૫ લક્ષિતકંથ, ૬ લક્ષિતહેતુ, ૭ લક્ષિતનિર્ણય, ૮ લક્ષિતજીવન, (૧) ૬ ગીતાપ્રથમાધ્યાયટીકા, ૧૦ ગીતા-તાત્પર્ય, ૧૧ ન્યાયાદેશવિવૃત્તિ, ૧૨ ગીતાહેતુ (૧), ૧૩ માયત્રીકારિકા, ૧૪ પોદ્ધ્ય અંથ ટીકા. (૧ સિદ્ધાંતમુક્તાવલી ટીકા, ૨ ચમુનાદક ટીકા, ૩ નવરત્નપ્રકાશ, ૪ સિદ્ધાંત-તારહસ્ય વિવરણ). ૧૫ શૃંગારરસમંડન ૧૬ રસસર્વસ્વ, ૧૭ વ્રતચર્યા, ૧૮ સ્વપ્રકર્શન, ૧૯ ગુપ્તરસ, ૨૦ સેવાદિગ્ધ, ૨૧ પુરુષોત્તમપ્રતિષ્ઠાપ્રકાર, ૨૨ શ્રીસર્વોત્તમસ્તોત્ર, ૨૩ શ્રીવલ્લભાદક, ૨૪ સ્ફુરતકૃષ્ણપ્રેમામૃત, ૨૫ શ્રીજોકુલાદક, ૨૬ સ્વામિન્યદક, ૨૭ સ્વામિનીસ્તોત્ર, ૨૮ ભુવંગપ્રયાતાદક, ૨૯ લલિતત્રિલંગસ્તોત્ર, ૩૦ શ્રીચમુના-દપદી, ૩૧ આર્યા, ૩૨ વિનયિ, ૩૩ પ્રબોધ, ૩૪ ચતુઃસ્તોત્રી, ૩૫ પ્રેમામૃતભાષ્ય, ૩૬ વૃત્તામૃતચતુઃસ્તોત્રીટીકા, ૩૭ પ્રેમપર્યંકશયનમ્, ૩૮ મંગલમંગલમ્, ૩૯ લાવેર-કુરિતમ્, ૪૦ સૌન્દર્યનિજહૃદયતમ્, ૪૧ ગદ્યાર્થ, ૪૨ જન્માદમીનિર્ણય, ૪૩ રાગનવમીનિર્ણય. ૪૪ ગીતગોવિન્દપ્રથમાદ્યપદીટીકા, ૪૫ આદ્યારનિરૂપણ, ૪૬ પત્રો, ૪૭ રક્ષામરણમ્.

ઉપર જણાવેલા અંથો ઉપરાંત શ્રીમદ્લાગવતના સ્તોકો, શ્રીમુખોધિનીલ, આદિ ઉપર પ્રકીર્ણ લેખો ઘણા છે.

આપશ્રીનો સુદ્રલેખ.

જાનીત પરમં તત્ત્વં યત્તોદોત્સાહલાલિતમ્ ।

તદન્યદિતિ યે માહુરામૃતાંસ્તાનદો બુધાઃ ॥૧॥

શ્રીમદ્વાચાર્યચરણ અને તેઓશ્રીના સેવકોપ્રતિ અનન્ય ભાવ.

શ્રીમદ્વાચાર્યચરણ અને તેઓશ્રીના સેવકો પ્રતિ શ્રીશુદાંઠલનો ભાવ અવલું-

૧૧૫ માં નંબરની ૧૮ નંબર સુધીના પ્રત્યેમાં ૧૧-૧૭ એક છે, અને તેનો સમાવેશ ૨૫ માં નંબરમાં કરી ગયો છે.

નીચળ છે. શ્રીવલ્લભાષ્ટકમાં શ્રીમહાપ્રભુજીનાં સ્વરૂપની ઝાંખી કરતાં જણાય છે કે આપશ્રીજી શ્રીવલ્લભાધીશ્વરનું સ્વરૂપ બાણવાં સમર્થ છે. પોતેજ પોતાનું સ્વરૂપ બલે; અન્ય ક્યાંથી બલે ? શ્રીમહાપ્રભુજીનાં શ્રીદામોદરદાસાદિક સેવકો પ્રતિ આપશ્રીનો ભાવ અત્યદ્ભુત હોય એમ જણાય છે. આપશ્રી એક વેળાએ બાલ્યાવસ્થામાં ખેલી રહ્યા હતા, ત્યારે શ્રીદામોદરદાસજીએ આજ્ઞા કરી કે ‘ખાવા, ચહેં માર્ગ ખેલવે કુદવેકા નહિ હે.’ શ્રીમહાપ્રભુ જેમના હૃદયમાં ખિરાજે છે એવા એક અનન્ય સેવકની આજ્ઞાને શ્રીમસ્તક ઉપર ચઢાવીને આપશ્રીએ હસ્તપરવશતા પ્રકટ કરી છે. શ્રીકૃષ્ણદાસ અધિકારીએ આપશ્રીની પ્રભુસેવા બંધ કરી ત્યારે પણ આપશ્રીએ એ અધિકારીની આજ્ઞાને માન આપીને પ્રભુવિપ્રયોગનો અનુભવ કર્યો. આપે સમર્થ હોઈને પણ શ્રીમહાપ્રભુજીના સેવકની આજ્ઞાને અનાદર ન કર્યો. આપશ્રીએ પ્રભુસેવા છુટી જવાથી છ માસ પર્યંત પ્રભુવિરહનો અનુભવ કર્યો છે. એ સમયમાં પ્રભુને આપશ્રીએ વિરસિપત્રો લખ્યા છે. એ પત્રો ‘વિરસિ’ એ નામથી અત્યારે પણ પ્રસિદ્ધ છે. આ વિરસિપત્રો એટલા તો હૃદયવેધક છે કે તેના અર્થનું અનુસંધાન માત્ર યતાં રોમાંચ શરીર થઇ જાય અને સાથુ નેત્ર ખળી જાય છે. આ ઉપરાંત આપશ્રીએ અનેક પત્રો સ્વળાલકો ઉપર પણ લખેલાં છે.

ભારતમાં પર્યટન—આપશ્રી આર્યોવર્તના કયા કયા સ્થલમાં પધાર્યા હતા તે નીચે લખેલી આપશ્રીની બેઠક ઉપરથી જણાશે.

૧ શ્રીગોકુલમાં બે બેઠક છે. ૨ શ્રીવૃંદાવન. ૩ શ્રીકુંડઉપર. ૪ પરાસોલીમાં. ૫ ચંદ્રસરોવર ઉપર, ૬ ગોપાલપુરમાં ૭ કામવનમાં, ૮ પ્રેમ સરોવર ઉપર, ૯ સંકેતવટ, ૧૦ રિટોરામાં, ૧૧ ઠરેલા; ૧૨ કોટવનમાં, ૧૩ ચીરઘાટમાં, ૧૪ વત્સવનમાં, ૧૫ વેલવનમાં, ૧૬ ચરનાટમાં, ૧૭ અઢેલમાં, ૧૮ ગોઠ દેશમાં (નારાયણદાસજીના ઘરમાં.) ૧૯ સોરમજીમાં, ૨૦ ગોધરામાં, ૨૧ અલીયાના (મહુધા) દર અસારવામાં (સાજનગર), ૨૩ ખંભાતમાં, ૨૪ જામનગરમાં, ૨૫ ગંગા ગોડગઢ (જળલપુર પાસે), ૨૬ દારકામાં, ૨૭ સમજીના મંદિરમાં (દારકાની પાસે) ૨૮ શુરવટમાં.

ઉપર પ્રમાણે શ્રીગુણાંજીની ૨૭-૨૮ બેઠકો છે. ઉપરથી સહજ જણાશે કે આપશ્રીએ ભારતવર્ષનાં ઉક્ત સ્થળોને પવિત્ર કર્યાં હતાં, મુશ્યેય આધનોનાં અભાવથી તે તે સ્થળોમાં પધાર્યાના દિનો અને ચરિત્રોની નોંધ યથાસ્થિત આપવી એ કાર્ય અસંભવિત છે. જે કાંઈ લખેલું મળ્યું, તેને સંક્ષેપમાં અત્રે ઉતાર્યું છે.

આપશ્રીના અનન્ય સેવકો—આપશ્રીએ અનેક જીવોને શરણે લીધા છે. આપશ્રીના મુખ્ય કૃપાપાત્ર વૈષ્ણવોનાં ચરિત્રોનું ‘વર્ણન’ ‘ખસો બાવન વૈષ્ણવોની વાર્તા’ માં છેજ. શ્રીમહાપ્રભુજીના કૃપાપાત્ર જેમ સૂરદાસજી, શ્રીપરમાનંદદાસજી, શ્રીકૃષ્ણદાસજી, શ્રીકુંભનદાસજી એ ચાર સખા છે, તેમ શ્રીપ્રભુચરણના કૃપાલાબન મણુ શ્રીનંદદાસજી, શ્રીચતુર્બુજદાસજી; શ્રીછીતરંગામી એ મુખ્ય ચાર સખા છે,

એમ વાર્તાપ્રાંગ ઉપરથી જણાય છે. આ અદ્દ ભગવદીયોના લીલાવિષયક કીર્તનો પ્રમુખમક્ક ગવાય છે અને તેને આશય દૃઢ્યને રસાદ્ર કરે છે.

આપશ્રીનો પરિવાર—આપશ્રીનાં પ્રથમ પત્નીનું નામ શ્રીરુકિમળીવદ્દલ અને દ્વિતીય પત્નીનું નામ શ્રીપદાવતીવદ્દલ. શ્રીરુકિમળીવદ્દલથી નવ પુત્ર અને નવ પુત્રી પ્રકટયાં હતાં. ત્રણ પુત્રોએ આલપણમાંજ લીલા કરી હતી. તેમજ પાંચ પુત્રીઓ પણ લીલામાં પધાર્યાં હતાં. શ્રીપદાવતીવદ્દલથી એક પુત્ર પ્રકટ થયા હતા, આપ-શ્રીનો વંશવિસ્તાર આ પ્રમાણે વૃદ્ધિગત ચતો ગયો હતો.

પુત્રરત્ન.

- ૧ શ્રીગિરિધરજી પ્રાકટય સં. ૧૫૬૭ ના કાર્તિક સુદ ૧૨
- ૨ શ્રીગોવિંદરાયજી પ્રા. સં. ૧૫૬૬ ના માર્ગશીર્ષ (મજ) વદ ૮
- ૩ શ્રીભાલકૃષ્ણજી પ્રા. સં. ૧૬૦૬ ના (મજ) આશ્વિન વદ ૧૩
- ૪ શ્રીગોકુકનાથજી પ્રા. સં. ૧૬૦૮ ના માર્ગશીર્ષ સુદ ૭
- ૫ શ્રીરણનાથજી પ્રા. સં. ૧૬૧૧ ના કાર્તિક સુદ ૧૨
- ૬ શ્રીચંદનાથજી પ્રા. સં. ૧૬૧૩ ના ચેત્ર સુદ ૬
- ૭ શ્રીધનરાયજી (શ્રીપદાવતીજીના કુમાર) સં. ૧૬૨૮ ના માર્ગશીર્ષ (મજ) વદ ૫૩.

શ્રીમાદભગવદ્ગીતા

શ્રીરુકિમળીવદ્દલથી પ્રકટ થયેલાં બેટીજનો—૧ શ્રીગોખાબેટીજી, ૨ શ્રી યમુનાબેટીજી, ૩ શ્રીકમલાબેટીજી, ૪ શ્રીદેવકાબેટીજી.

ઉપર પ્રમાણે આપશ્રીનો વંશવિસ્તાર વૃદ્ધિ પામ્યો. હાલમાં તે આપશ્રીના જ્યેષ્ઠ પુત્ર શ્રીગિરિધરજી ૫૪ પુત્ર શ્રીચંદનાથજી મહારાજનો વંશ બૃત્તવ ઉપર છે.

નિત્યલીલાપ્રવેશ—ઉપર પ્રમાણે દેવી યદિનો ચમુદાર કરીને, જગતમાં સર્વોદ્ધારક ભક્તિમાર્ગનો પ્રકાશ કરીને, જનોને સુખ કરનારા પાખંડમનું ખેંદન કરીને શ્રીમદ્ભુવરજ સં. ૧૬૪૨ ના માઘ વદ ૭ ના રોજ શ્રીગિરિશંજીની કંઠરામાં પધાર્યાં. શ્રીગિરિધરજી આદિ નિજ ભાવકોને પોતાના શ્રીઅંગ ઉપરનું વસ્ત્ર આપીને તેને આપારે સર્વ વૈદિક ઔષ્ધકૌશિક ક્રિયા કરવાનું જણાવ્યું.

ઉપસંહાર:

આપશ્રીના અલોકિ-દિવ્ય-અસ્ત્રોનું આલેખન થયું હોય તો વાળીથી અસંભવ છે, તેમજ એ ચરિત્રની રમ્યમયતા, અનંદમયતા અનુભવકામ્ય છે, એટલે અત્રે વિશેષ ન લખતાં વિરમીશું.

શ્રીગુણાંજીનો સુન્દરાતનો પ્રવાસ.

[આ પુનિદાસના ઉદ્દેષે પ્રાંતિકના મંદિરના નેત્ર અદિપ્રાચીન પુસ્તકમાં છે.]

શ્રીગુણાંજી—જન્મ ૧૬૦૦ માં દારિક દર્શનથી પધાર્યાં. પહેલાં આપ કંદાર પધાર્યાં, આપશ્રીની જાણે શ્રીમદ્ભુવરજના ચેવકા અને શ્રીજી કવરેશીઓ પણ

હતાં. હરિવંશજી પણ સાથે હતા. તે વખતે આપશ્રીનું વય લગભગ ૨૦ વષ હતું. (૧૮ વર્ષનું હોતું ભેદજી ?) આપશ્રી દારિકા, યાત્રા કરીને ફરી શુભરાત પધાર્યાં. ત્યારે વચ્ચરી ગામમાં રાજા ભારમદા વગેરે ઘણા સેવક થયા અને રાં પુલ્કતા. મામાના ગામમાં કોઠારી જેત, રામા, લીમા એમને ઘેર પોતે પધાર્યાં. યધાની ઉપર અનુગ્રહ કયો તે વખતે કોઠારી હરજીવન છ વરસનો હતો ત્યા તેની માએ તેને શ્રીગુસાંઈજીને ચરણે ધર્યો, શ્રીગુસાંઈજીએ કૃપા કરીને તેને અષ્ટ દ્વર મંત્ર આપ્યો. પછી ત્યાંથી આપ વડાલી ગામમાં પધાર્યાં અને ત્યાંથી રાજનગર પધાર્યાં. રાજનગરમાં (અમદાવાદ ગોટું રાજધાનીનું ચહેર હોવાથી) ભગવત્સેવા ઉપયોગી થાય તેવી વસ્તુઓ લેવા પધાર્યાં તે વખતે આપ ઝવેરીની પોળમાં એ પરદેશીનું ઘર કે જે ઘર હરિહટ શાલની ચેરી વચ્ચે હતું, તેમાં આપ બે દિવસ બિરાજ્યા. તે પછી સિકંદરપુરીમાં પાછલી પોળમાં નહુઆ ગોપાલદાસ અં રામદાસ નામે બે ભાઈઓ રહેતા, તે આપના સેવક થયા, એમને ઘેર ૩ દિવસ બિરાજ્યા. એવી રીતે પાંચ દિવસ આપ રાજનગરમાં બિરાજ્યા છે. તે વખતે રાજનગરમાં ચોરા સેવક હતા. પછી આપ અડેલ પધાર્યાં.

વળી સં. ૧૬૧૩ માં આપશ્રી દારિકાજી દર્શનાર્થે પધાર્યાં. તે વખતે આપે ઈંડર દેશ કૃતાર્થ કયો. તે પછી જાલા ગામમાં વૈષ્ણવ શંકર સધાવાધાને થો પધાર્યાં. હરિવંશજી અને ભંડારી આપા સાથે હતા. ત્યાં વચ્છા ભટ્ટ ગોપાલદાસ દર્શનાર્થે આંચા, તે પછી આપ અચારવાગાં કોઠારી ભાંઈલાલ હરિજીવનને ઘેર પધાર્યાં. બે દિવસ રહીને દારિકા પધાર્યાં તે વખતે શ્રીમહાપ્રભુજીનાં ઘણા સેવકો સાથે હતા રામદાસ, નાગજી, દવે મહાદેવ ગદા તથા બીજા પણ સેવકો સાથે હતા. એ પ્રમાણે દારિકા ચઇને ફરીને આપ અચારવા પધાર્યાં. ત્યાં દાનદીલાસજીનું વ્યાખ્યાન આપે કર્યું. ૧૫ દિન અચારવામાં બિરાજ્યા. બધા વૈષ્ણવને ખૂબ સુખ આપ્યું.

સંવત ૧૬૨૦ ની ચાલમાં શ્રીગુસાંઈજીએ શ્રીપદાવતી વદ્ધજી સાથે લગ્ન કર્યો. આ બીજી વારના લગ્ન કર્યા પછી વૈશાખ સુદ બીજના રોજ શ્રીદારિકાજી દર્શન માટે પધાર્યાં. ત્યારે શુભરાતમાં અચારવા ગામમાં કોઠારી ભાંઈલા હરજીને ઘેર પધાર્યાં, એમને ઘેર થોડા દિવસ રહીને પછી આપશ્રીએ દારિકા તરફ પ્રયાણ કર્યું. ત્યાંથી આપશ્રી ઉતાવળા ફરી અચારવામાં અસાડ સુદ બીજના રોજ પધાર્યાં. કંઈક આવશ્યક કાર્ય હતું. આ વખતે નાસવણદાસજીને રાજપદવી મળી હતી, એટલે તેઓ ઈંડરના રાજ થયા હતા. પછી જલાલપુર પધાર્યાં. ગાંધ જસુનો, ભક્ત રામકૃષ્ણદાસ, બલપદાસ, એ બધા પર અનુગ્રહ આપશ્રીએ કર્યો, તે પછી પાટણ પધાર્યાં. ત્યાં મહુ, કીકા વગેરે ઘણા વૈષ્ણવોનો ઉદાર કર્યો. ત્યારબાદ પ્રભુને માટે ઉત્તમોત્તમ સામગ્રી લઇને પ્રસન્નતાથી ઘેર પધાર્યાં, તે વખતે આ વૈષ્ણવ સાથે હતા. લક્ષ્મીદાસ, ગોપાલદાસ, ભીમજી, માધવદાસ વેળીદાસ અને બીજા. પણ વૈષ્ણવો હતા. ભગવદ્વાર્તા પણ અતી હતી. શ્રીગુસાંઈજી ઘણીજ કૃપા કરતા...

સંવત ૧૬૨૨ ની સાલમાં શ્રીગુસાંઈજી શ્રીદારિકાનાયજીનાં દર્શન કરવા માટે પધાર્યા. તે વખતે સહાદરા ગામમાં (હાલના સાદરામાં) પધાર્યા તે વખતે ભાઈલા કોઠારીને ત્યાં બોલાવ્યા. કોઠારીજીએ પણ ત્યાં જઈને શ્રીજીનાં દર્શન કર્યાં. પછી શ્રીજીએ (શ્રીગુસાંઈજીને સેવકો શ્રીજી કહેતા હતા) આજ્ઞા કરી કે, અમે તુરતમાં જ શ્રીદારિકાજી ચંદ્રને અસારવા આવીશું. આવી આજ્ઞા કરીને આપશ્રી દારિકાજી પધાર્યા અને તુરતજ પાછા અસારવા પધાર્યા. સત્યસંકેષ પ્રભુએ પોતાનું વચન પાળ્યું. વૈષ્ણવોને ઘણું જ મુખ આપ્યું. તે પછી પ્રસન્નતાથી ઘેર પધાર્યા.

સંવત ૧૬૨૭ ની. સાલમાં વરસ બેસતાં જ શ્રીગુસાંઈજી દારિકાજી દર્શનાયે પધાર્યા. તે વખતે આજો સોરઠ દેશ ઉજ્જવળ થઈ ગયો હતો. ભયંકર હુકાળ ફેલાઈ રહ્યો હતો. શ્રીગુસાંઈજી ધોળકા તરફને રસ્તે પધાર્યા. પાંચ દિવસ ધોળકામ બિરાજ્યા. સાથે ઘણાજ સેવકો હતા. બોખાજી, શંકરજી, નાહી ગામવાળા વિષ્ણુજી સંવત ગોવિંદજી, મયાજી, કેશવદાસ જલભરા, પરમ ચૂરવીર ધીર પૂંજીજી આદિ બીજા ધનુધારી ઘણા સાથે હતા. તેમજ બોખાજી, રામદાસ, સવજી સાથેરા, વાણીયા માધવદાસ, બીમજી, ચેળીદાસ, ત્રવાડી પળા, હરિવંશજી, ચાંપા ભંડારી, શંકર અધિકારી, બંવાસ ધારી વગેરે બધા સેવકો સાથે હતા. ન્યારે પોતે નવાનગર (હાલનું જામનગર) પધાર્યા ત્યારે રાજા દર્શન કરવા આવ્યો, ત્યારે તેણે વિનંતિ કરી કે, “મહારાજ, રસ્તો વિપત્તિ (ભયંકર) છે. મારી મા શ્રીદારિકાજી દર્શન માટે ગઈ હતી, પણ રસ્તામાં બહારવટીઆઓએ લુંટી લીધી. આવ્યાં રાજા કેવી રીતે પધારી શક્યો? ત્યારે શ્રીગુસાંઈજીએ આજ્ઞા કરી કે, અમે પ્રભુનાં બલથી પધારીશું. તમે રૂપ યંદ જાઓ. પછી શ્રીજી તો ત્યાંથી શ્રીદારિકાજી પધાર્યા. ન્યારે રાજા જામનગર પધાર્યા. ત્યારે તો પાંચસો ઢાળા (બહારવટીઆ) આવી પહોંચ્યા પણ તે વખતે શ્રીજીએ એવો પ્રતાપ બતાવ્યો કે તેમનું કંઈ આવું નહિ. તેઓ બધા હારી ચાકીને પાછા ફર્યા. શ્રીજી આનંદમંગલથી દારિકાજી પધાર્યા. દારિકાજીનાં ધાણુદારની શ્રી ગોરબાઈ હતી, તેણે શ્રીજીને ઘણા સત્કાર કર્યો. શ્રીજી ન્યારે દારિકાથી વિદાય થયા ત્યારે તે બાઈ નવાનગર સુધી સાથે પહોંચ્યાકવા આવી તે પછી શ્રીજી રાજનગર અસારવા પધાર્યા. ત્યારબાદ ખંભાતમાં કાંઈક ભગવત્સેવામાં ઉપયોગી વસ્તુ લેવા પધાર્યા, ત્યારે ત્યાં કલ્યાણરાયે ઘણા સત્કાર કર્યો. તે પોતે તો અન્યમાર્ગી હતા. ખંભાતમાં બીજા કેટલાક જીવોને પોતે ઉદ્ધાર કર્યો. તેનાં નામો-આચાર્ય મુરારિ, પટેલ જીવા, પટેલ હાંસુ, શાહ, સહજપાલ, ભૂપતિ, વેરય, દેવરાજ વગેરે કેટલાકે જીવોને પ્રભુએ કૃપા કરી અંગીકાર કર્યો. તે વખતે શ્રીજીએ કલ્યાણરાયને કહ્યું કે, ગાંધી દેવલ પોતાનાં વાહરંજો માટેજ દૂધ આપે છે, પણ વચ્ચે કાંઈ બીજા જ કોડો દૂધ કોડી લે છે, તેવો પ્રકાર અત્યારે થયો. (આ આજ્ઞાનો અભિપ્રાય એ છે કે, શ્રીજી પોતે તો ભગવત્કાર્યમાં ખંભાતમાં સહજ પધાર્યા તો વચ્ચે ઉપર જણાવેલા જીવોને અંગીકાર પણ થઈ ગયો. આવા

પ્રજા દયાળુ છે.) ત્યારપછી ખંભાતમાંથી ઉત્તમોત્તમ વસ્તુ કર્પૂર ઘડા ૧ તથા ચંદન તથા પદ્મવત્ર, (અનેક જાતનાં) વગેરે ઉત્તમોત્તમ પદાર્થો લેઇને ફરી રાજનગર પધાર્યા. તે પછી થોડાક દિવસ પછી પરમ આનંદથી ઘેર પધાર્યા.

સંવત ૧૬૨૭ વર્ષ ઉતરતાં શ્રીગુસાંઈજી જ્યેષ્ઠ પુત્ર શ્રીગિરિધરજીની સાથે શ્રીદ્વારિકાજી દર્શન માટે પધાર્યા. તે વખતે પહેલાં આપછી ઈંદર પધાર્યા, ત્યાંથી વિસલનગર, વડનગર, મહેસાણા, ગોહરીઆ, ચિદ્વપુર, ખિંડુસરોવર-શ્રીગદાધરરાયજીનાં દર્શન કરીને, સાવલી, ભદ્રેસર, વણા તથા લીલોડા; આટલા દેશ પર આપે કૃપા કરી. તે પછી પ્રસન્નતાથી આપ અસારવા પધાર્યા. ત્યાં ભાઈલા હરજી કોઠારીને ઘેર કેટલાક દિન સુધી ખિરાન્યા. પછી દારિકા પધાર્યા. દારિકાથી ફરી ગુજરાત પધાર્યા, ત્યારળાદ ખંભાત, ગવાડ, ગણસુલ, મહુધા, ઉમરેક, નડિયાદ, મહેમદાવાદ, અલીણા, વાડાસિનોર, વીરપુર, હુણાવાડા, પધાય. તેમજ મહી નદીના તીરપર લીંબોદરા ગામમાં સૂર્યચક્રુ કર્યું. બીજાં પણ કાંઈ કાંઈ હતાં તેથી પાંચ દિવસ સુધી લીંબોદરામાં ખિરાન્યા. તે પછી રાજનગરની પાસે નલપુરા, કઠાસણ, અગ્ર-લજ. ઉંઆરસજ, મોઢાસર, હરસોલ, પ્રાંતીજ, પીંઠારીઆ સહાદરા એટલા ગામોમાં પધાર્યા. છાકા ગામમાં મેઘજી કરમસી નામના રાજપુતનો અંગીકાર કર્યો. એવીજ રીતે બધાં ગામો કૃતાઈ કર્યા. આ વખતે આપછીની સાથે શ્રીહરિવંશજી, શંકર અધિકારી, ખવાસ હરિદાસ સાઠોદરા બ્રાહ્મણ હતા તે પછી સં. ૧૬૨૮ ની સાત એકી ત્યારે રાજનગરમાં પ્રસનોરા દેશવજીનો અંગીકાર કર્યો. બાઈ લાહબાઈને ઘેર આપ પધાર્યા હતા. રાજપુરમાં રામદાસ વેણીદાસને ઘેર આપ પધાર્યા અને એવીજ રીતે બધાને ખૂબ ક્ષુબ્ધ આપ્યું. ત્યારળાદ અતિપ્રસન્નતાથી ઘેર પધાર્યા.

એવી રીતે છ વખત શ્રીગુસાંઈજી દ્વારિકાજી દર્શનાર્થ પધાર્યા.

કમનસીખ-ગુજરાતીઓનો સંઘ—સંવત ૧૬૧૫ ની સાલમાં શ્રીગુસાંઈજીના દર્શન માટે ગુજરાતમાંથી વૈષ્ણવોનો મોટો સંઘ નિકળ્યો. તે સંઘમાં ગોપાલજી, વૈશ્ય રામદાસજી, નાગા ગોપજી, વિસરામ, ચવજી, જીર્ણભાઈ, સાચોચ નાંગજી કોઠારી, ભીમાબાઈ કુંવરી અને ગોરખાઈ (સીરાહીતા રાજાની રાણી); ત્રવાડી પણ વગેરે બીજા ઘણા વૈષ્ણવો હતા. ગાડીઓ તથા વાહનો ઘણાં હતાં બધાં શ્રીગુસાંઈજીનાં દર્શન માટે આહ્યાં. બધા પહેલાં શ્રીકપુરદ્વારમાં શ્રીજીદાસ આવ્યા. (શ્રીનાથજી શ્રીગિરિરાજજીમાં ખિરાન્યા હતા.) આ વખતે શ્રીજીદાસમાં કૃષ્ણદાસ અને ચંદુ અધિકારી હતા. જ્યારે વૈષ્ણવો આવ્યા ત્યારે કૃષ્ણદાસ અધિકારીએ ઘણું સન્માન કર્યું. શ્રીકૃષ્ણદાસ શ્રીમહાપ્રજીજીના સેવક હતા. તે મંળંધથી વૈષ્ણવોનું સમાધાન તેમણે ઘણુંજ કર્યું. (ખૂબ ખાતર બરદાસ કરી.) કૃષ્ણદાસ મહાન અપરાધી હતા, તેથી શ્રીગુસાંઈજી તેમના પર ઘણુંજ અપ્રસન્ન

રહેતા. શ્રીગુચાંદ્રજી તેથીજ શ્રીઠાકુરંદાર પધારતા નહિ. તે વખતે વિરહ અતુલવીને પ્રભુને વિનતિપત્ર લખતા. વળી ઉત્તમોત્તમ વસ્તુ જે મળતી તે શ્રીજીને અંગીકાર કરાવવા માટે કોઈની સાથે મોકલી દેતા; પણ આપશ્રી પોતે તો ત્યાં પધારતાં ન હતા. એ વેળાએ આપ અડેલમાં ગિરાજતા. શ્રીગુચાંદ્રજી ગુજરાતના વૈષ્ણવોની વાંટ જોતા હતા કે, વૈષ્ણવો ક્યારે આવશે? વાટ જોતાં ઘણા દિવસ નીકળી ગયા. તેથી પોતે ચિંતા કરવા લાગ્યા, કોઈકવાર પોતે મુઆફરોને પૂછતા કે, “ગુજરાતના વૈષ્ણવો અમારા દર્શન માટે ગુજરાતથી ક્યારનાએ નીકળી સુધ્યા છે, ઘણા દિવસો વીત્યા, પણ કરા સમાચાર મળ્યા નથી. રસ્તામાં કુશળ તો છે ને? તેઓ હજી સુધી કેમ ન આવ્યા?” આવા પ્રશ્નો આપશ્રી કરતા. થોડાક સમય પછી આપને સમાચાર મળ્યા કે, જ્યાં ગુજરાતી વૈષ્ણવો ઠાકુરંદારમાં રહ્યા છે. દોઢ મહીનો થયો. દૃષ્ટાંતજીએ તેમનું સમાધાન કર્યું છે અને તેમને ચારી પેઢે રાખ્યા છે. મહાંપ્રસાદ લે છે, અને દર્શન કરે છે. તેઓ અડેલ આવ્યા નહિ. પછી શ્રીગુચાંદ્રજીએ એક પત્રમાં શ્લોક લખીને તે પત્ર એક સેવકદારા પેલા ગુજરાતી વૈષ્ણવોની પાસે શ્રીઠાકુરંદાર મોકલ્યો. (આ શ્લોક પણ બરોબર સમજતો નથી) તોપણ વૈષ્ણવો આવ્યા નહિ, માતા શ્રીરુદ્ધિમણીજી (શ્રીગુચાંદ્રજીનાં વહુજી) છ પુત્ર સાથે ગિરાજતાં હતાં. એઓ પણ વૈષ્ણવોની વાટ જોતાં હતાં કે ક્યારે આવશે? તોપણ વૈષ્ણવો આવ્યા નહિ. વૈષ્ણવોનાં અભાગ્યજ ગણાય. પછી અડેલમાં ચેરચોનો ઉપદ્રવ થયો ત્યારે શ્રીગુચાંદ્રજી બાંધવગદમાં પધાર્યા. થોડાક વરસ પોતે ત્યાંજ ગિરાજ્યા પછ. આપ મથુરા પધાર્યા. મથુરામાં થોડાંએક વરસ ગિરાજ્યા. ત્યારબાદ સં. ૧૬૨૭ દાગજી વઠ ૭ શુભ દિને શ્રીગુચાંદ્રજીએ ચર્વ બાલકો સાથે કુટુંબ પરિવાર સાથે શ્રીગોકુલમાં વાસ કર્યો, દેવકાક વરસ-સુધી જ્યાં બાલકો અને પરિવાર સાથે એકઠા મળીને સેવા કરતા. પછીથી સાતે બાલકોએ પોતપોતાનાં જુદાં જુદાં મંદિર બનાવ્યાં અને સાત સ્વરૂપને સાતે મંદિરમાં પધરાવ્યાં. શ્રીનવનીતપ્રિયજીને શ્રીઠામોદરજીના મંદિરમાં પધરાવ્યા. શ્રીમથુરાનાથજી મોટા શ્રીગોપીનાથજીને ચેર પધાર્યા. શ્રીવિહંગનાથજી શ્રીગોવિંદનાથજીને ચેર ગિરાજ્યા. શ્રીદારિકાનાથજી શ્રીબાલકૃષ્ણજીના મંદિરમાં પધાર્યા. શ્રીનાથજી શ્રીગોકુલનાથજીના મંદિરમાં પધાર્યા. શ્રીગોકુલચંદ્રમાજી શ્રીરમુનાથજીના મંદિરમાં ગિરાજ્યા. (અહીં છૂટા લાલજીને માટે ક્યો ઉલ્લેખ નથી.) શ્રીમદનમોહનજી; શ્રીધનરંજ્યામજીના ઘરમાં પધાર્યા આ પ્રકારે સાતે બાલક પોતપોતાના મંદિરોમાં પ્રભુની સેવા કરવા લાગ્યા. જ્યાં બાળકોનો દિનપ્રતિદિન પ્રતાપ વધતો ગયો.

શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વર.

[સદ્ગત તેલીવાળાના અગ્રેષ્ઠ ઉપોદ્ધાન. ઉપરથી. અનુવાદકઃ—શ્રીપુત્ર પ્રોફેસર સાંકળચંદ્ર
જ્ઞેષ્ઠવાલ શાહ એમ. એ.]

પ્રાકટ્ય આદિ—વિદ્-મંડન ગ્રંથના કર્તા શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરદીક્ષિત શ્રીવલ્લભાચાર્યજીના દ્વિતીય-
કુમાર છે. તેમનો પ્રાદુર્ભાવોત્સવ સંવત ૧૫૭૨ ના માર્ગશીર્ષ માસની વદ ૬ મી તિથિએ અઢાળાદ
પાસે ચરણાટ (સુનાર) માં થયો હતો. પોતાની ઉત્તરાવરથામાં શ્રીવલ્લભાચાર્યજીએ અરેલને
પોતાના કામમના નિવાસ તરીકે સ્વીકાર્યું હતું. અને તેથી શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરની આસ્થાવરથા ત્યાં પસાર
થઈ હતી. સંવત ૧૫૮૭ માં ત્યારે શ્રીવલ્લભાચાર્યજીએ ત્રિદંડ સંન્યાસનો સ્વીકાર કર્યો ત્યારે
વિઠ્ઠલેશ્વરની ઉપર પંદર વર્ષની હતી. તેમના જ્યેષ્ઠભાતા શ્રીગોપીનાથજી તેમના કરતાં પાંચ વર્ષ
મોટા હતા. તેમના ઉપવીત સંસ્કારની વિધિ શ્રીવલ્લભાચાર્યજીએ કરી હતી, પણ તેમની આસ્થા-
વરથાની કેળવણીનો સારો પ્રબંધ થયો હોય એમ લાગતું નથી. સંપ્રદાયમાં એવી ગાથા પ્રચલિત
છે કે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વર પ્રભુચરણ આલપણમાં ધણી રમતીયાળ સ્વભાવના હતા. પોતાને માથે દટવો
ભારે લુખ્યો છે તેનો તેમને ખ્યાલ નહોતો, તેથી અગ્રગણ્ય વૈષ્ણવ શ્રીદામોદરદાસજીએ તેમને
દુપડા આપ્યો હોય એમ કહેવાય છે. અને તેમને અભ્યાસ કરવા માટે સમજાવ્યા હતા, જેથી
ત્રાયક પિતાના લાયક પુત્ર તરીકેની જવાબદારી અદા કરવા માટે થોડા યત્ન કર્યા. એટલું તો નિઃશંક
છે કે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરને રમત ગમતમાંથી કૃષ્ણલીલાનું અવગ્રહન કરવાને રસ્તે ચડાવવામાં દામોદરદાસે
સાફ કામ કર્યું હતું. આચાર્ય તરીકેનું પોતાનું કર્તવ્ય સારી રીતે જાળવવામાં આવ્યા હરિવંશજીએ
પણ શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરને સારો ઉપદેશ આપ્યો હતો. આચાર્ય હરિવંશજીની વૈષ્ણવો વધારવાની પ્રવૃત્તિઓ
ધણી વિશાળ હતી. જે જે જગ્યાએ શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજી પધારતા તે તે જગ્યાએ તેમના પહેલાં આવ્યા
હરિવંશજી જતા અને શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીના સિદ્ધાંતોનો સ્વીકાર કરવા માટે લોકોને તૈયાર કરતા. જે
જે પુસ્તકો લાલ મળે છે તેમાં જે અગાધ જ્ઞાન તરી આવે છે તે જ્ઞાન શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરે જોની મદદથી
મેળવ્યું તેનો ખરાબર નિર્ણય થઈ શકતો નથી. એક ગાથા એવી છે કે શ્રીવલ્લભાચાર્યજીએ
શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરને અભ્યાસ માટે માધવસરસ્વતી પાસે મોકલ્યા હતા, પણ ત્યાં કાંઈપણ અભ્યાસ
કરવાને બદલે, પોતે પોતાનો ખર્ચો વખત શ્રીમદ્ભાગવત વાંચવામાં ગાળ્યો. ઉપરની ગાથામાં ગમે
તેટલું સત્ય હોય, પણ એટલું તો નિર્વિવાદ છે કે પોતાના પિતા શ્રીવલ્લભાચાર્યની માફક શ્રીવિઠ્ઠ-
લેશ્વરને પણ શ્રીમદ્ભાગવતમાં ધણીજ આસક્તિ હતી અને ભાગવત પર ઘણો કાલુ હતો. સંવત
૧૫૮૭ માં શ્રીવલ્લભાચાર્યજીએ લીલા કરી ત્યારપછી શ્રીગોપીનાથજી અને શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વર બન્ને અરેલમાં
ઝિરાભ્યાસ સાધનદીપિકા, અને સેવાપદ્ધતિ સિવાય શ્રીગોપીનાથજીએ બીજા અગત્યના ગ્રંથો લખ્યા
હોય એવું જાણવામાં આવ્યું નથી, અને તેથી શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરને પોતાના મોટાભાઈ શ્રીગોપીનાથજી
પાસેથી લખિયની સાહિત્યની પ્રવૃત્તિઓ સારું શું વિદ્યા મળી તે નિર્ણય કરવાનાં આપણી પાસે
સાધન નથી. શ્રીગોપીનાથજી અને તેમના પુત્ર શ્રીપુરુષોત્તમજીએ સંવત ૧૫૯૦ અને ૧૬૦૦ સાલ
દરમિયાન લીલા કરી હોય એમ લાગે છે. એમણે લીલા કર્યા પછી શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વર એમના પિતાના
માન્ય પ્રતિનિધિ તરીકે ઘણાવાર આવ્યા અને ત્યારપછી તેમણે ઘણી સુસાહરીઓ કરવાનો દરોહો
કર્યો અને સંપ્રદાયના પ્રચાર સારું ગ્રંથો લખવાનો વિચાર કર્યો.

ચૂલકસ્થાપન—શંકર, રામાનુજ, મધ્વ, ચૈતન્ય અને બીજા ઘણા આચાર્યોએ ઉપનિવદની
ગાથાઓ પ્રમાણે અનુસરણ કર્યું નથી. પણ શ્રીવલ્લભાચાર્યે ઉપનિવદ પ્રમાણે આચરણ રાખ્યું અને

સાત્ત્વગુણ અને બીજા અધિભોગી માટેક શુદ્ધરથો હોઈને આત્માય રહ્યા. તેમના પછી તેમના મોટા પુત્રે પણ શુદ્ધરથ આત્માય તરીકે જીવન ગાળ્યું. શ્રીગોપીનાથજીએ શ્રીચિદ્દેવશરણું લઈ શ્રીરક્ષિમણી સાથે રહેવું હતું. શ્રીરક્ષિમણીજી પોતાની નાતિના વિચારનાય લટ અને ભવાનીનાં પુત્રી થાય. ખન્ને બાંધણી વચ્ચે સુખ સારી હતો. શ્રીચિદ્દેવશરે પોતાના મોટાભાઈ શ્રીગોપીનાથજી પર જે પત્ર લખ્યો છે તે પરથી જણાય છે કે એમને પોતાના મોટાભાઈ માટે ઘણુંજ માન હતું.

શ્રીનાગજભટ્ટ—શ્રીગોપીનાથજી અને શ્રીપુરોત્તમજીએ શીશા કર્યા પછી શ્રીવિદ્યેશ્વરજીએ બહારગામ પધારવાનો આદેશ કર્યો. સંવત ૧૬૦૦ માં પહેલા અરેલથી ગુજરાત પધાર્યા અને ખીજવાર સંવત ૧૬૧૩ માં પણ અરેલથી ગુજરાત પધાર્યા. ગુજરાતમાં એમની પ્રવૃત્તિઓ મુખ્યત્વે અમદાવાદ, ખંભાત અને ગોધરામાં હતી. ગોધરામાં શ્રીગુણકૃષ્ણે એક નાગજીભટ્ટને આ સંપ્રદાયની દીક્ષા આપી હતી. આ નાગજીભટ્ટ એમ કહેવાય છે કે સરદારી અમલદાર હતા અને (પંચમદાસ નામ પડ્યું છે તે તેમની પ્રવૃત્તિને લેખને છે,) “પંચમદાસ” ને પાંચ ભાગમાં વિભક્ત કરનાર આ વ્યક્તિ હતી એમ મનાય છે. નાગજીભટ્ટ સાકોદરા નાગર હતા. પ્રખ્યાત ગુજરાતી વયોવૃદ્ધ સાક્ષર દીવાનમહાદુર કેસવાલાય દર્પદરાય કુંવ આ નાગજીભટ્ટના વંશજ છે. જ્યારે જ્યારે શ્રીવિદ્યેશ્વરજી ગુજરાતમાં પધારતા ત્યારે ત્યારે નાગજીભટ્ટ તેમના સંતોગેના સાલ જરૂર લેતા. શ્રીવિદ્યેશ્વરજીએ નાગજીભટ્ટને જે પત્રો લખેલા તેમાંના થોડાએક અસહ પત્રો એવામાં શ્રીનાથદાસમાં અવાપિ મુદ્દી સંપ્રદ કરી રાખેલા છે. નાગજીભટ્ટ ઘણા બુદ્ધિશાળી અતુલાયી હતા. નાગજીભટ્ટે શ્રીવિદ્યેશ્વરજીને ઘણા પ્રશ્નો પૂછ્યા હોય એમ લાગે છે. શ્રીવજ્રમસંપ્રદાયનો પ્રચાર કરવામાં પંચમદાસમાં તેમજ શ્રીવિદ્યેશ્વરજીને ઘણીજ મદાયતા કરી હોય એમ દેખાય છે. શ્રીમુખોદ્ધતી, નિબળ વગેરે ગ્રંથો વાંચ્યા પછી શ્રીમદ્વજ્રમસાચાર્યજીના ઉપદેશના મુખ્ય સિદ્ધાંત મું છે તે બજાવાની તેમની ઇચ્છા થઈ. આ પ્રત્નના ઉત્તરમાં શ્રીવિદ્યેશ્વરજીએ તેમને એક શ્લોક લખી મોકલ્યો, જેમાં શ્રીવજ્રમસંપ્રદાયના ચતુર્ન ઉત્તમ ચન્દ્રોમાં સંક્ષેપમાં વર્ણન છે.

श्रीबल्लभाचार्यमते फलं तत्प्राकट्यमत्राव्यभिचारिहेतुः ।

प्रेमैव तस्मिन्नपथोक्तभक्तिस्तथोपयोगोऽखिलसाधनानाम् ॥

શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યના મત પ્રમાણે ભગવત્પ્રાકટ્ય એજ ફક્ત છે અને તેનો રામચાણુ
ઉપાધ્યે ભગવત્પ્રેમ છે. બીજા બધાં સંપ્રદાયો આ પ્રેમ હિતવન કરવામાં ઉપયોગી છે. નાગજીમ
શ્રીવિદ્યેશ્વરજીની સાથે સુવર્ણાવમાં રજા એટલુંજ નહિ પણ શ્રીવિદ્યેશ્વરને પોતાના દંડવત્ પ્રણામ
કરવા પોતે અટક પણ ઘણીવાર જતા. શ્રીગોવર્ધનના શિખર પર જતીપુરામાં શ્રીગોવર્ધનનાથજીનાં
દર્શન કરવા નાગજીમાર્ગે ગયા છે. એવી માહત્તી મળે છે અને ત્યાં જો એક મહીના સુધી નિવાસ
થેલો છે. આ પરથી એમ લાગે છે કે નાગજીમાર્ગ આ સંપ્રદાયના સાત્ત્વ અને સેવાપ્રકાર બંનેથી
અભિનંદના, અને સંવત ૧૬૦૦ થી શ્રીચતુષ્સંપ્રદાયનો સુવર્ણાવમાં સીધા પ્રચાર કરવામાં
સદાયમત થયા હતા.

શ્રીભાઈલા કોહારી—આ સંપ્રદાયનો પ્રચાર કરવામાં બીજી જે વ્યક્તિએ મદદ કરી તે અમદાવાદ પાસે અસારવા ગામના રહીશ ભાઈલા કોહારી છે. ત્યારે શ્રીવિદ્યેશ્વરજી દારકા અથવા મુજરાત પધારતા, ત્યારે જે એક મહીના સુધી ભાઈલા કોહારીને ત્યાં તેમનો મુકામ રહેતો. ભાઈલા કોહારીના જમાઈ ગોપાલજીએ આ સંપ્રદાયને નવાખ્યાન નામનું મુંદર અને અપ્રતિમ કાવ્ય આપ્યું છે. સંપ્રદાયિક ગાથા એવી છે કે આ ગોપાલજીએ આખરો ભગવાનને મળ્યો.

મહેતા હતા. ગમે તેમ હો, પણ નરસિંહ મહેતાનો કાચનિર્ણય કરવામાં આ ગાથાથી મદદ મળે છે. શ્રીવિદ્યેશ્વરજીની સં. ૧૬૦૦ માં ગુજરાતમાં પ્રથમ પદ્મરામણી યથા ગોપાલદાસની ઉમર તે વખતે નવ વર્ષની હતી. ગોપાલદાસનું નવાખ્યાનનું કાવ્ય વૈષ્ણવોમાં ઘણુંજ લોકપ્રિય અને આદરણીય કાવ્ય છે. વૈષ્ણવ નર અને નારીઓ આ કાવ્યનો મુખ પાક કરે છે. આ કાવ્યપર વ્રજભાષામાં અને સંસ્કૃત ભાષામાં ટીકાઓ લખાઈ છે. ગુજરાતનો વેપારી વર્ગ તો એના પર મુગ્ધ થઈ ગયો છે. ગોસ્વામી બાલકૃષ્ણ તરફ તો વૈષ્ણવોની જુલિ-ઘડવામાં આ કાવ્ય ઘણુંજ સદાય-ભૂત થયું હોય એમ લાગે છે. ગોસ્વામી બાલકૃષ્ણ તરફની વૈષ્ણવોની અગાધ પ્રીતિ અને આદર આ કાવ્યના પ્રસારથી ઉત્પન્ન થયાં હોય તો કાંઈ નવાઈ નથી. આ કાવ્યમાં શ્રીવિદ્યેશ્વરને ગોસ્વામી તરીકે સંબોધેલા છે. સં. ૧૬૩૪ માં ત્યારે અક્ષર આદ્યારાહે શ્રીવિદ્યેશ્વરજીની ગણેને સરકારી તેમજ ખાનગી અર્થાં ખેતર પર ચરાવવાનો પરવાનો કરી આપ્યો ત્યારથી શ્રીવિદ્યેશ્વરજીનું ગોસ્વામી તરીકે લખાવાનું શરૂ થયું. આ ઉપરથી એમ અનુમાન થાય છે કે ગોપાલદાસનું નવાખ્યાન સંવત ૧૬૩૪ ની સાલ પહેલાં આપેલું હોવું જોઈએ નહીં. સાંપ્રદાયિક ગાથા એવી છે કે આ કાવ્ય રચવાની પ્રેરણા ગોપાલદાસને શ્રીવિદ્યેશ્વર તરફથીજ થઈ હતી. એવું કહેવાય છે. કે ગોપાલદાસ મૂળા હતા અને શ્રીવિદ્યેશ્વરજી તેમને ચર્ચિતાતીર્થ આપ્યું. ત્યારપછી તેની પ્રસાદીથી તેમની વાચા ચમત્કારિક રીતે ખુલી ગઈ. ત્યારે શ્રીવિદ્યેશ્વરજી લાલ્લા કોઠારીને ઘેર પધારતા ત્યારે ઘણા મનુષ્યો તેમને મળ્યા આવતા અને તેમનો સંપ્રદાય અંગીકાર કરતા.

જીવા પારેખ—ખલાતમાં વૈષ્ણવ સંપ્રદાયનો પ્રચાર કરવામાં મદદ કરનાર જીવા પારેખ નામના એક પ્રખ્યાત વલ્લુક વેપારી હતા. એકંદરે ગુજરાતમાં શ્રીવલ્લભસંપ્રદાયનો પ્રચાર જગદીપી અને સંપૂર્ણપણે થયો. ઘણી રાતિઓ અને પેઠા રાતિઓ વૈષ્ણવ સંપ્રદાય સંપૂર્ણ પણે પાળવા લાગી. શ્રીવિદ્યેશ્વરની પછીથી પણ વૈષ્ણવોની સંખ્યામાં ઘણો વધારો થતો ગયો.

ગુજરાતમાં પદ્મરામણી—શ્રીવિદ્યેશ્વરની ગુજરાતમાં યોજામાં યોજી છે વખત પદ્મરામણી યર્ષ. પ્રથમ પદ્મરામણી અટેલથી સં. ૧૬૦૦ માં થઈ. બીજી પણ સંવત ૧૬૧૩ માં અટેલથી યર્ષ અને ત્રીજી ગઢાથી સંવત ૧૬૧૯ માં યર્ષ. ચોથી સંવત ૧૬૨૩ માં મથુરાથી યર્ષ, પાંચમી સંવત ૧૬૩૧ માં અને છઠી અને છેલ્લી સંવત ૧૬૩૮ માં ગોકુલથી યર્ષ. આ ઉપરથી એમ નજાય છે કે શ્રીવિદ્યેશ્વરે લગભગ ચાલીસ વર્ષ મુખી ગુજરાત અને કાઠીઆવાડ પર પોતાનો પ્રતાપનો પ્રકાશ પાડ્યો. શ્રીવિદ્યેશ્વરજી દારકાનાયજના પવિત્ર ધામે પધારતા ત્યારે ગુજરાતમાં પધારતા પોતાના પિતાઓના તથા પોતાના ગાદાભાઈ શ્રીગોપીનાથજીના દારકામાં અને ગુજરાતમાં પ્રથમથીજ ઘણો સારો સત્કાર થયેલો તેથી શ્રીવિદ્યેશ્વરને દારકાં અને ગુજરાત માટે સારી મમતા અને પ્રીતિ ઉત્પન્ન થઈ હતી. શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યના પિકાન અનુયાયી રાણાવ્યાસ સિદ્ધપુરમાં સંપ્રદાયના પ્રચાર માટે સારું કામ કરતા હતા, નવોડમાં પ્રચાર કામ ગોપાલદાસ કરતા. શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીની દારકામાં યોજામાં યોજી ત્રણ વખત પદ્મરામણી થઈ હતી. છેલ્લી પદ્મરામણી સંવત ૧૫૮૫ની સાલમાં થઈ હતી. દારકામાં પોતે જ માસથી આગ્રહ રહ્યા હતા એવું કહેવાય છે. જે દારકામાં દારકાનાયજનું જે સ્વરૂપ છે તેની પ્રતિષ્ઠા શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યે કરી હતી.

જગન્નાથપુરીમાં—સંવત ૧૬૧૬ના માસ વદ ૧૩ ને દિવસે શ્રીવિદ્યેશ્વર પુરીમાં જગન્નાથજીના ધામમાં ગયા. પોતાનાં વડુજ મદારાજ રકિમણીજ પોતાની મોરી પુત્રી શેલભાઈ અને વ્યેથપુત્ર ગિરિધરજી સાથે હતાં. ત્યાં પોતે લગભગ છ માસ સુધી રહ્યા. પુરીમાં રથોત્સવનાં દર્શન કરી પોતે અટેલ પાછા રથોં હોય એમ લાગે છે. પોતે પુરી પધાર્યા ત્યારે પોતાની સાથે ગરમ નામના સત્તારને લેઈ ગયા હતા. જગન્નાથજીના રથનો નમુનો ઉતારી લેવા સારુ રથને

લેઈ ગયા હતા. એમ કહેવાય છે કે શ્રીવિદ્યેશ્વરજીએ અંદેશ પધાર્યા પછી જગન્નાથજીમાં જેવા રથ હતો તેવો રથ તૈયાર કરાવ્યો અને અંદેશમાં દાકારજીને તે રથમાં પધરાવી મોટા વરધોટા કપાડ્યો. પોતે ગદામાં રળા ત્યારે પણ રથોત્સવ તેજ પ્રમાણે ઉજવ્યો હતો. પણ ત્યારે પોતે પોતાનો નિવાસ મંથુરામાં લાખ્યા ત્યારે મુસતબખોના ધર્મનિયમજીને લીધે રથોત્સવ બહાર રીતે ઉજવવાનો ત્યારાર માંડી વાળ્યો, પોતે જગન્નાથજીમાં રતા ત્યારે જગન્નાથજીમાં રહેતા ચૈતન્યના અનુયાયીનાં સંસર્ગમાં આવવાનો શ્રીવિદ્યેશ્વરજીને પ્રસંગ પ્રાપ્ત થયો. એમ સંભળાય છે કે સ્વામિનીઅષ્ટક અને સ્વામિનીસ્તોત્ર અને બીજાં નામોં સ્તોત્રો, જેમાં ત્રાસાકુરજીની પદરાખી રાધાજીની શ્રીવિદ્યેશ્વરે ધણી સ્તુતિ કરી છે તે આ સમયમાં રચાયેલા હોય, અથવા તો ચૈતન્ય સાધુજીની સીધી અથવા આડકતરી અસરને લીધે આ સ્તોત્રો રચાયેલાં હોવાં જોઈએ. અમાર જાણવા પ્રમાણે જેવી રીતે શ્રીવિદ્યેશ્વરે શ્રીરાધાજીની સ્તુતિ કરી છે તેવી રીતે શ્રીવલ્લભાચાર્યે કોઈ પણ સ્તોત્રમાં અથવા બીજા કોઈ લેખમાં કરી નથી. શ્રીમદ્વિદ્યેશ્વરજી પર ચૈતન્યની અસર ફેરફાર અને ફેરફાર કાળ મુખી રહી એ નહીં કરવાનાં અમારી પાસે સમ્બંધની ધણી મુશ્કેલી છે. પણ ત્યારે વિચાર કરીએ છીએ કે અણુભાષ્યના અંતના ભાગમાં શ્રીવિદ્યેશ્વરજીએ શ્રીનયનીન-શ્રિવજી અને શ્રીગોવર્ધનપર એ બેનું સ્મરણ કર્યું છે. એટલે પાછલા સમયમાં ચૈતન્યના સિદ્ધાંતોની અસર લઈને જતી રહી હોય એમ લાગે છે. જુગ્મપ્રેમાગૃહ અને ડુંગરરમ્ભગ્નન આ બે ગ્રંથો પરની તેમની ફેલી ચૈતન્યવિચારોનાં લક્ષણે હોય એમ લાગે છે. એમ પણ હોય કે તે સમયે આખા વિદુસ્તાનમાં રાધા-કૃષ્ણની સેવા કરવાનો એક તરંગ આવ્યો હોય અને ઉપરના સ્તોત્રમાં ચૈતન્યના વિચારોની ફેરફાર અસર હતી તે કહેવું મુશ્કેલ થઈ પડે તેમ છે. વિચારની નોંધવૃત્તિ અને વિચારરસની પદ્ધતિ એ બંને શ્રીવિદ્યેશ્વરનાં પોતાનાં જ છે. પણ આ સમયમાં આ બે સ્તોત્રોની રચના થઈ એમ કહીએ તો અમે ખૂબ કરીએ છીએ એમ અમને લાગતું નથી. આ સ્તોત્રો સરસ્વતીસંવાદને લક્ષણે હોય એમ સંભવિત છે. બીજું કારણ માણુમ પડતું નથી.

વિદ્વન્મંદનરચનાસમય—સંવત ૧૬૧૬ ના આઘાદ માસથી તે સંવત ૧૬૧૮ ના આરંભ મુખી શ્રીવિદ્યેશ્વરજીએ અંદેશમાં નિવાસ કર્યો હોય એમ લાગે છે. જગન્નાથજીમાં થાય છે તે પ્રમાણે અહીં પણ રથોત્સવ ઉજવ્યો હતો. આ સમયમાં તેમજો વિદ્વન્મંદનનો અંથ રચ્યો છે. સંવત ૧૬૧૮ ના વૈશાખ સુદ ૧૨ ની તારીખવાળી દસ્તાવિજિત પ્રત મળે છે તે પરથી આ અનુમાન બંધાય છે. આ ગ્રંથની રચનાની તારીખ સંવત ૧૬૧૮ થી પછીની હોઈ શકે નહિ. સંવત ૧૬૧૮ માં અંદેશપર મુસતબખાં લોકોએ ચલાઈ કરી એટલે લગેછને માટે શીશુસાંધજીને અંદેશ હોવાનું પડ્યું.

બંદેગદમાં—અંદેશથી બે ત્રણ જગાએ મુદ્દામ બદલ્યા પછી તેમજો બંદેગદ પોતાનો મુદ્દામ ફેરવ્યો. તે વખતે બંદેગદમાં વાધેલા રજપૂત રાજા રામચંદ્ર રાજ્ય કરતા હતા. તેમજો શીશુસાંધજીને સારો સત્કાર કર્યો. પોતે ત્યાં બે માસ સુધી રળા. શીશુસાંધજીના જ્યેષ્ઠપુત્ર શ્રીશિરિ-વંશજીને આ રાજાની સાથે ધણી સારો સંબંધ હતો. શીશિરિવંશજીના મોટા પુત્ર શ્રીમુરલીધરજીને જન્મ વિજયાદશમીને દિવસે અહીં થયો હતો. પ્રખ્યાત ગાયો તાનસેન રાજા રામચંદ્રને સંગીત-ગાની અને ગાયો હતો, પણ અકસ્માત બાદશાહની માગણી આવવાથી બાદશાહને સોંપેલા પડ્યો હતો. તાનસેન શ્રીવિદ્યેશ્વરના સંસર્ગમાં અહીં આવ્યો. પણ શીશુસાંધજી અહીં લાંગો સમય વિતાવ્યા નહિ આગળ ઉપર ત્યારે વિદ્યેશ્વરજીએ પોતાના કાવ્ય નિવાસ તરીકે ગોકુળ સ્વીકારુ ત્યારે આ રાજા રામચંદ્ર ગોકુળ આવ્યા હતા. શીશુસાંધજી અને શ્રીશિરિવંશજીને તેમનું ગોકુળમાં બહાર રાખવાનું થયું હતું.

ગદારાણી દુર્ગાવતી—અન્ટેગ્રાથી શ્રીવિઠ્ઠેશ્વરજી ગદા પધાર્યા હોય એમ લાગે છે. નર્મદાના કિનારા પર આવેલું જળપુર-એ તે વખતનું ગદા દશે કે કેમ એ કહેવું મુશ્કેલ છે. જળપુરની પાસે શ્રીવિઠ્ઠેશ્વરજીની બેઠક આવી છે, તે પરથી એમ લાગે છે કે ગદા પણ આજુબાજુ કંઈ આવેલું હોયું જોઈએ. અકબર બાદશાહના સેનાપતિ અસફખાને આગળ પર એવો સખત લુચ્ચ પતાંગ્યો હતો કે તે જગા અત્યારે ઝાળખી કાઢવી એ ઘણુંજ મુશ્કેલ થઈ પડ્યું છે. ગદા જ્યાંની શ્રીવિઠ્ઠેશ્વરની સ્વાભાવિક ઈચ્છા હતી. ગદાની રાણી દુર્ગાવતી ઘણી ખ્યાતિવાળી હતી. દુર્ગાવતીના પતિનું નામ દલપતિસાહેબ હતું અને તેમનું લગ્ન કંઈ વિચક્ષણ રીતે થયું હતું. તેમને એક પુત્ર હતો. આ પુત્ર ત્રણ વર્ષનો થયો ત્યારે દલપતિસાહેબ અવસાન થયું. ત્યાર પછી પોતાના પુત્ર વીરનારાયણના રીજન્ડ તરીકે દુર્ગાવતીએ રાણી તરીકે ગદાનું રાજ્ય સંભાળ્યું. વીરનારાયણ ઉપર લાયક થયો છતાં પોતે રાજ્ય સંભાળવાનું આજુ રાખ્યું. તેના રાજ્યમાં બધા મળીને ૫૨ (પાવન) ગઢ હતા, અને રાણીએ ઘણી લડાઈઓમાં ભાગ લીધો હતો. તેની અસાધારણ શીખ-બહાદુરીને લીધે તેને દુર્ગાસાહેબ એવું નામ આપવામાં આવ્યું હતું. પોતે ઘણીજ ધર્મિષ્ઠ હતી અને ઘણા વિદ્વાન્ બ્રાહ્મણોને આશ્રય આપતી હતી. શ્રીવિઠ્ઠેશ્વરના કુટુંબ સાથે જે તેમણે બ્રાહ્મણોનો લગ્ન સંબંધ હતો તે કુટુંબો અહીં રહેતાં હતાં.

વિજયનગર રાજ્યના તે વખતના રાજા કૃષ્ણદેવે શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીને પોતાના રાજ્યમાં મોટામાં મોટા આચાર્ય તરીકે સ્વીકારી લીધો. આ રાજ્ય સ્વતંત્ર રહેલું રાજ્ય હતું. આ સિવાય રાણી દુર્ગાવતીએ પણ પોતાના સ્વતંત્ર હિંદુ રાજ્યમાં બ્રાહ્મણોને ધણું ઉત્તેજન આપ્યું હતું અને તેના રાજ્યમાં લોકો (મુસ્લિમ) ઘણા સુખી હતા. તેની રાજ્યપદ્ધતિ અદ્વૈતિ હતી અને આ રાણીના રાજ્યપર અકબર બાદશાહે જે ચડાઈ કરી તેને સારા ઇતિહાસકારો બાદશાહની પોતાની રાજ્ય પધારવાની તૃષ્ણા અને જ્યાં નારા કરવાની જાતનું પરિણામ હતું એમ માને છે. ત્યારે શ્રીમદ્વલ્લભ પ્રથમ આ રાણીની રાજ્યધાનીમાં પધાર્યા ત્યારે તેમણે જન્મનીય-તત્ત્વાવ અથવા તો રાણીતસારના કંઠાપર પકાવ નાંખ્યો. શ્રીવિઠ્ઠેશ્વરજીના સાધુચરિત્રથી, અગ્રાધ જ્ઞાનથી અને કૃષ્ણની ઉત્કટ ભક્તિથી દુર્ગાવતી રાણીપર એવી હઠી છાપ પડી કે રાણી પોતે તેમના આશ્રમમાં વારંવાર આવતી અને ગદામાં પોતાનો કાયમનો નિવાસ રાખવા રાણીએ શ્રીવિઠ્ઠેશ્વરજીને વિનંતિ બદ્ધ આજીજી કરી. તેમના મુકામ અને સન્માનને સારા ઘણી સારી ગોઠવણ કરવામાં આવી હતી. શ્રીવિઠ્ઠેશ્વરજી ત્યાં ત્રણ વર્ષ રહ્યા, તે સમયમાં રાણી દુર્ગાવતીનો અને શ્રીવિઠ્ઠેશ્વરનો સંબંધ ઘણો (cordial) હાર્દિક હતો. શ્રીવિઠ્ઠેશ્વરજીના પ્રથમ વડછબ્દારાજ શ્રીરમિણીજીએ ધણું ખર્ચ આ સમયમાં લીધા કરી, અને તેમની ઈચ્છા બીજવાર લગ્ન કરવાની બિચકુલ હતી નહીં, પણ રાણી દુર્ગાવતીના આગ્રહ અને દબાણથી શ્રીવિઠ્ઠેશ્વરજીએ સંવત ૧૬૨૦ માં અક્ષયતૃતીયાને દિવસે રામભટ્ટની પુત્રી શ્રીપદાવતી સાથે લગ્ન કર્યું. બીજે પ્રસંગે રાણી દુર્ગાવતીએ શ્રીવિઠ્ઠેશ્વરજીને ૧૦૮ ગામ બક્ષિસ કર્યા, અને તેઓશ્રીએ પોતાની જાતિના ભક્તોને બક્ષિસ કરી દીધાં ! અને જેનો ઉપભોગ હજી પણ તે ભટ્ટના વારસો કરે છે. ગદામાં નિવાસ કર્યો ત્યારે એક બ્રહ્મદાસ નામનો બ્રાહ્મણ તેમના સંસર્ગમાં આવ્યો. તે બ્રાહ્મણને શ્રીવિઠ્ઠેશ્વરજીએ પોતાની પાસા ખંડી આપીને આશિષ આપી. આ દિવસથી આ બ્રાહ્મણના લાગમનો ઉદય થયો અને ત્યારથી એ અકબર બાદશાહનો માનીતો અને વિશ્વાસુ સલાહકાર બન્યો અને તેનું નામ ત્યારથી બીરબલ રાખવામાં આવ્યું. જે નામથી એ અત્યારે ઝાળખાય છે. આ બીરબલનો અને શ્રીવિઠ્ઠેશ્વરજીનો સંબંધ ઘણો ગાઢ હતો, એમ શ્રીવિઠ્ઠેશ્વરજીના પત્રોપરથી જાણી શકાય છે. બંનેના સેવકો પાસેથી પાછળથી

ત્યારે ગોવર્ધન પર્વતપરના શ્રીનાથજીના મંદિરનો કળજો અને બોગવટો લેવાનો વખત આવ્યો ત્યારે બીરબલે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીને ઘણી સારી મદદ કરી હતી અને શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીને તેના કળજો આપ્યા હતા.

ગ્રંથમાં નિવાસ—લગભગ ત્રણ વર્ષ દુર્ગાવતીના રાત્ર્યમાં રહ્યા પછી શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીને માણસ પડ્યું કે આ રાત્ર્યપર પણ અકબરના સૈન્યો દુમશે લાવશે. સંવત ૧૬૨૧ માં દુર્ગાવતી રાણી પાસે અસહ્યાને તેના માનીતા દાથી ગુરુદયની મામણી કરી. આ મામણીના દુર્ગાવતી રાણીએ સ્વાભાવિક રીતે સ્ત્રીકાર કયો નહિ. ત્યારે દુર્ગાવતી રાણીએ પોતાના પ્રધાન અધરદાસને અકબર આજ્ઞાદના દરબારમાં મોકલ્યો હતો, તે વખતે અસહ્યાને દુમશે કયો એ બહુજ આશ્ચર્યજનક છે. ગદાનો ત્યાગ કરવાનું શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીનું મુખ્ય કારણ આજ હોયું નોંધવું. તેટલા માટે એઓશ્રીએ રાણી દુર્ગાવતીને પોતાની ઈચ્છા જણાવી કે હવે મારે મનુનાના તીરપર રહેવાનો વિચાર છે. એઓશ્રીની ઈચ્છા પ્રમાણે રાણી દુર્ગાવતીએ મયુરામાં સતપરા નામનો મહેલ બંધાવી આપ્યો. શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજી અને તેમના સાત પુત્રોએ મયુરામાં આ સતપરામાં વાસ કર્યો. ત્યારે શ્રીગુસ્તંધજી ગુજરાત પધાયો હતા ત્યારે શ્રીમદ્ધરજીએ ગોવર્ધન પર્વતપરથી સંવત ૧૬૨૩ ના ફાલ્ગુન વદ ૭ ને દિવસે શ્રીનાથજીને લગભગ બે મહિના મુધી આ સતપરામાં પધરાવ્યા હતા. આ સતપરા હાલ મોહુદ નથી, પણ જે જગાએ આ સતપરા બંધવામાં આવ્યું હતું તે જગા હજી મયુરામાં સતપરા તરીકે ઓળખાવવામાં આવે છે. પશ્ચિમ દિશાએ હતા બગરની પાછળ આ જગા આવેલી છે અને પરિક્ષા કરનાર માત્રાજીએ આ જગાથી પરિક્ષામાનો આરંભ કરે છે. ગદામાં શ્રીગુસ્તંધજી ઘણા આનંદમાં રહ્યા હતા, તેમજે રથોત્સવનો ઉત્સવ ત્યાં ઉજવ્યો હતો. એક મોટા વરષામાં રથને ચક્રેની આજુબાજુ ફેરવવામાં આવ્યો હતો. રાણી દુર્ગાવતી અને તેમના દરબારના સદાચરે વગેરેએ પણ રથોત્સવમાં ભાગ લીધો હતો. રથોત્સવનો ઉત્સવ ઉજવવામાં રાણી દુર્ગાવતીએ પોતાના રાત્ર્ય તરફથી બધી નોંધની મદદ આપી હતી.

શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીએ જગા છોડ્યું ત્યારે રાણી દુર્ગાવતીએ પોતાના પ્રધાન અધરદાસને સાથે મોકલ્યા. એટલુંજ નહિ પણ સાથે મોટું લોકર પણ મોકલ્યું. શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજી ગદાથી ગોકુલ પધાયો ત્યારે પછી રાણી દુર્ગાવતી શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજી પાસે ગયાં હોય એવું માન્ય પડ્યું નથી. અસહ્યાનની સાથે બદાદુરીથી લડતાં તેમજે પોતાના પ્રાણનો ત્યાગ કર્યો; અને તેના પુત્ર વીર નારાયણે પણ લડાઈમાંજ દેહ ત્યાગ કર્યો હોય એમ જણાય છે. રાત્ર્યનો બધો ઉમદા ખખડો અસહ્યાને લુંટી લીધો અને પોતે સાથે લઈ ગયો, ચક્રેને એટલું ખરાબ રીતે પાષમાલ કરી હોયું કે ઇતિહાસકારો આ બદાદુર અને પ્રખ્યાત રાણીના રાત્ર્યના એકસ ચિન્હ પણ મેળવી શકતા નથી. ગદામાં શ્રીગુસ્તંધજી નિવાસ કર્યો તેની ઝેબાણી એમની બેઠાને લઈ જવામાં રહી છે. આ બેઠક જગતપુરની પાસે આવેલી છે અને શ્રીગુસ્તંધજીનું શ્રીપદાવતી વડુછની સાથેનું બીજાવાનું લગ્ન ઉપર લખ્યા પ્રમાણે આ રથએ થયું હતું. ગદાથી શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજી પોતાનો મુકામ પ્રયાગ (અંદાખાદ) લાવ્યા હોય એમ જણાય છે. અહીં પોતે કેસોટ વખત ધણી સુખથી રહ્યા અને શીફળની સેવામાં પોતાનો વખત નિર્જનન કરી સોમયાગ કર્યો.

શ્રીમદ્ગોકુલમાં—શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજી પ્રયાગથી સંવત ૧૬૨૨ ના બાદપદ પૂજ્યા ૩ ના દિવસે ગોકુલ પધાયો એમ જણાય છે અને મયુરદાસમાં ત્યારે શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજી અને શ્રીગોપીનાથજી પધારતા ત્યારે જે જગાએ ગોકુલમાં રહેતા તે જગાએ પોતાનો નિવાસ રાખ્યો. શ્રીગુસ્તંધજી ગોકુલમાં આશરે ૮૪ દિવસ રહ્યા. સંવત ૧૬૨૩ ના શર્તિક સુકલ ૧૧ ને દિવસથી પોતે

પોતાનો મુકામ મથુરામાં રાખ્યો. અને રાણી દુર્ગાવતીએ બંધાવેલા સતધરામાં રહ્યા. માં પોતે સંવત ૧૬૨૩ થી ૧૬૨૯ સુધી શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીએ મથુરામાં પોતાનો વસ કર્યો. ગુજરાત પધાર્યો ત્યારે શ્રીગોવર્ધન પર્વત પરથી શ્રીગારધરજીએ શ્રીનાથ મથુરામાં પધારાવ્યું અને સતધરામાંજ શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીના ઘરમાં લગભગ બે મહીના અને સુધી શ્રીનાથજીની સેવા કરી. સતધરામાં શ્રીનાથજીને રાખ્યા. એ શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીને પસંદ નહીં, કારણ કે મથુરામાં ગુસધમાનનો દોર બહુ વધી ગયો હતો. મથુરા ગયા પછી એએ રથનો ઉત્સવ ઉજવવાનું પણ બંધ કર્યું તેનું પણ એજ કારણ લાગે છે. પોતાના પિતૃને પસંદ કરેલી ગોવર્ધનપર્વતની જગા શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરને બધા કરતાં વધારે અનુકૂળ લાગી. સંવત ૧૬૨૩ માં ગુજરાત પધાર્યો પછી મથુરા આવ્યા પછી પોતે શ્રીનાથજીના સ્વરૂપને ફરીથી શ્રીગારધર પર પધારાવી ગયા અને સંવત ૧૬૨૪ ના વૈશાખ સુદ ૧૪ ને દિવસે ફરી પાટોત્સવ કર્યો. મથુરાના સહેરી નિવાસ કરતાં શ્રીગુસાંધજીને ગોકુલની સાંત જંગા ધણીજ રીતે વધારે ગમ્યા. આવી અને સંવત ૧૬૨૯ ના ફાગણ કૃષ્ણ ૭ થી પોતાનું કાયમનું રથાન ગોકુલ સ્વીકાર્યું.

બાદશાહી સમાગમ—સંવત ૧૬૨૮ ની સાતતી ૧૬૪૨ માં પોતે લીલા કરી ત્ય સુધી શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજી ગોકુલમાં રહ્યા અને પોતાની સાહિત્યની અને કાર્મિક પ્રવૃત્તિઓમાં પોતાને કામ નિર્ગમન કર્યો. અકબર બાદશાહ પરશોકના સંબંધી પ્રમોની ચર્ચામાં ઘણો આનંદ લેતો આ સમયમાં તેણે વૃંદાવનના ગોસ્વામીઓની પણ મુલાકાત લીધી હતી. પરમાત્માના વિષયનું ચુટીકરણ કરવા અકબર બાદશાહે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વર દિશીતને આમંત્રણ કર્યું હતું. તેમના મુલાકાસંગ્રહ અને સમજાતીઓથી અકબર ઘણો પુશ થયો હતો. અને કંઈપણ બહિસ માગવા. તેણે તેમને વિનંતિ કરી. શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરે અકબર બાદશાહને ગોકુલ ગામ બહિસ આપવા કહ્યું. આ જગા સાંત હોવાથી પોતાના સ્વભાવને અને જરૂરીઆતોને અનુકૂલ હતી, વળી મહાવન પાસે યમુના મૈયાના તીર પર આવેલી હતી. આ પરથી અકબર બાદશાહે પોતાની મહોરવાળો ગોકુલ બહિસ કર્યોનો એક લેખ કરી આપ્યો, અને તે ફરમાન શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરને સંવત ૧૬૩૪ હીજરી સાત્ર ૯૮૫ ખીજા મહીનાની ૨૯ મી તારીખે આપ્યો. (ઈસ્વીસન ૧૫૭૭) શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરને ખીજા ત્રણ ફરમાન પણ કાઢી આપવામાં આવ્યાં હતાં. જેમાં બાદશા અને નંગીરની ભૂમિપર તેમની ગાયો, ઠોર પગે જનાવરને ચરાવવાનો હક્ક બહવામાં આવ્યો હતો. ખીજો એક પરવાનો અકબર બાદશાહની મા હનીદાબાનુ બેગમે પણ કરી આપ્યો હતો. નતીપુરા ગામ ન્યાં શ્રીગોવર્ધનનાથજીનું મંદિર આવેલું હતું તે ગામ પણ તેમને બહીસ આપ્યું હતું. પોતે ગોકુલમાં રહ્યા તે દરમ્યાન બે વખત ગુજરાત પધાર્યા.

શ્રીવલ્લભાખ્યાન—પ્રથમ સંવત ૧૬૩૧ માં અને બીજવાર સંવત ૧૬૩૯ માં નવાખ્યાનના કર્તા ગોપાલદાસનો મેલાપ છેલ્લી વખતે સંવત ૧૬૩૯ માં ગુજરાત પધાર્યા ત્યારે થયો હોવો જોઈએ, ગોપાલદાસે ઘણું સુંદર કાવ્ય રચ્યું છે અને તેમાં છેલા પ્રકરણમાં શ્રીગુસાંધજીના સકલ કુટુંબનું વર્ણન કર્યું છે. આ છેલા પ્રકરણમાં શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીનાં સાત પુત્ર અને તેમનાં વહુજીઓનાં નામ છે. શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીનાં એક વહુજીના નામનો આ કાવ્યમાં ઉલ્લેખ નથી. આ ઉપરથી એમ અનુમાન થાય છે કે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીનાં બન્ને વહુજીઓએ લીલા કર્યો પછી આ કાવ્ય રચાયું હોવું જોઈએ અને એમનાં કનિષ્ઠ પુત્ર ધનસ્થામજીનું જો કે જન્મ ન થયું હોય પણ તેમનો વિવાહ કૃષ્ણાવતી સાથે થયો હતો. તેમનાં ત્રાર બેટીજીઓનાં જન્મ થયાં હતાં. અને પોતાના ન્યેષ્ટ જાતા શ્રીગોપીનાથજીની બે વિધવા બેટીજીઓ લક્ષ્મી અને સત્વલામા તેમની સાથે રહેતાં હતાં અને શ્રીનવનીતપ્રિયજીની સેવા કરી મૂર્ત્યુ આનંદમાં. પોતાનાં વૈધવ્યનો કાલ વીતાવતાં.

પધરાતા, અને તે ન હોય ત્યારે રામદાસ વગેરે શ્રીનાથજીની સેવાનું કાર્ય કરતા હતા. શ્રીમદ્ વલ્લભાચાર્યજી અને શ્રીગોપીનાથજીએ લીલા કર્યા પછી બંગાળી અને શ્રીવલ્લભી વૈષ્ણવો વચ્ચે કંઈ અણબનાવ થયો હતો. ત્યાં સુધી માધવેન્દ્રપુરી ત્યાં હતા, ત્યાં સુધી કંઈપણ ખટપટ ઉભી મડી નહોતી. ચૈતન્ય સંપ્રદાયના લેખકોએ પોતાના ગ્રંથમાં આ મુદ્દિને ગોપાલનું નામ આપેલું માન્ય પડે છે. માધવેન્દ્રપુરી મથકાગર ચંદન લેવા સાર દક્ષિણમાં ગયા. ત્યાં તેઓએ આશરે ૧૩૦ વર્ષની મોટી ઉંમરે દેહ મૂક્યો અને કૃષ્ણદાસ અધિકારીજીના અંકુશ અને દેખરેખ નીચે શ્રીનાથજીની સેવા બંગાળી વૈષ્ણવો કરતા હતા. શ્રીગોપીનાથજી ગુજરાતમાં પધાર્યા ત્યારે સેવા સાર આશરે એક લાખ રૂપિયા લાગ્યા. આ દ્રવ્ય તેમણે શ્રીનાથજીને અર્પણ કરી દીધું. શ્રીવિદ્યેશ્વરજીની ગુજરાતમાં ધણી પધરામણીઓ થવાથી ગુજરાતના ધનિક દોષ્ટિ પણ શ્રીનાથજીનાં દર્શન કરવા આવતા અને શ્રીનાથજીને મોટી ઉમદા બોણ કરતા, એમ જણાય છે કે જે બંગાળી વૈષ્ણવો સેવા કરતા હતા તે હાનામાના આ બંધી બેટની વસ્તુઓ તેમના ગોસ્વામી જે જુદાવનમાં રહેતા તેમની પાસે ભેઈ જતા. આથી ગુજરાતના વૈષ્ણવોમાં ઘણો અસંતોષ પેદા થયો. જેને અર્પણ કરેલા દ્રવ્યનો આલે દુરુપયોગ થતો જોઈને અનંતદાસ નામના વૈષ્ણવે મોટી રાક પાડી. તેણે આ રીત બંધ કરાવવા અને બંગાળી વૈષ્ણવોને કાઢી મૂકવા કૃષ્ણદાસ અધિકારીને સમજાવ્યું, શ્રીવિદ્યેશ્વરની મંજૂરી સિવાય આ કામ કૃષ્ણદાસ આધિકારીથી બને તેમ નહોતું. આથી તેણે અનંતદાસને શ્રીવિદ્યેશ્વર પાસે જઈને મને સમજાવવા કહ્યું. પહેલાં તે શ્રીવિદ્યેશ્વરજીએ આનાકાની કરી, કારણ કે પોતાના પિતૃચરણે આ બંગાળીઓને સેવા કરવા રાખ્યા હતા. પણ કેટલીક વારાપાટ પાડી આ કાર્યને સાર રાગ ખીરબધ પર ભરામણનો પત્ર કૃષ્ણદાસ શ્રીવિદ્યેશ્વરજી પાસેથી મેળવી શક્યા. આ પત્ર લેઈને કૃષ્ણદાસ ખીરબધને મળ્યા, પછી ચોક્કા માણસો ભેગા કરી અને બંગાળીઓનાં હુપડાં સંગ્રામી દીધાં. જે કણે બંગાળીઓને આ વાતની ખબર પડી કે તરત ગોવર્ધન પર્વત પરથી બધા નીચે ઉતરી આવ્યા. પહેલાં તે તેમણે કૃષ્ણદાસની સામે ઘણો વિરોધ કર્યો પણ આખરે યરણે ચપા અને કૃષ્ણદાસને એકલાને આ મંદિરનો કબજો અને ભોલચોટ મળ્યો. રાગ ખીરબધને શ્રીવિદ્યેશ્વરજીના જ્યેષ્ઠ પુત્ર શ્રીગિરિધરજી સાથે ઘણો ગાદ સંબંધ હતો. પોતાનો એકલાનો કબજો અને અધિકાર ક્યાપવા સારજ શ્રીગિરિધરજી ગોપાલ શ્રીનાથજીના સ્વરૂપને સંવત ૧૬૨૩ માં પોતાના ઘરમાં પધરાવ્યાં. આ સમયથી શ્રીગુસ્મંદજીએ સેવાના નેક ભોગમાં ઘણો વધારો કર્યો, આ સ્વરૂપ અને શ્રીવિદ્યેશ્વરજીનું ઘર એ વલ્લભી વૈષ્ણવોનું જ સ્થાન બની રહ્યું. અને બંગાળી વૈષ્ણવો પોતાના પહેલાના સંબંધને બૂંધવા લાગ્યા. શ્રીવિદ્યેશ્વરજી અને ચૈતન્યના અંગત સંબંધ ઘણો પ્રેમાળ હતા, જે આપણને શ્રીનાથજીના સ્વરૂપના રચાપન કરવા સંબંધી દહીકત પરથી માન્ય પડે છે. ચૈતન્યચરિત્રના લેખકો તેમાં પણ મુખ્યત્વે કરી કરીને કૃષ્ણદાસ ને બંગાળમાં રહેતા અને જેણે ચૈતન્યચરિત્રામૃત નામનું પુસ્તક રચ્યું છે તેને શ્રીનાથજી પરનો તેમનો હક જવાબી ધણું જ તીવ્ર દુઃખ થયું. ચૈતન્યની પ્રશંસા કરવાનાં તેમના હિસાબમાં શ્રીમદ્ વલ્લભાચાર્યજીના કાર્યોને દહકા પાડવાનો તેણે પ્રયત્ન કર્યો શ્રીવલ્લભાચાર્યજીના લેખોમાં કોઈ પણ દેહકણે ચૈતન્યના સંબંધમાં કંઈપણ અસત્ય-કઠોર શબ્દ વાપરવામાં આવ્યો નથી. ચૈતન્ય સંપ્રદાયના લેખકો એવો આલેખ મૂકે છે કે જે કે શ્રીવલ્લભાચાર્યે ચૈતન્યનાં વખાણ કર્યા છે, પણ તેમના સત્સંગીઓને ઉતારી પાડ્યા છે અને શ્રીવલ્લભાચાર્યે ભાગવતનું શિક્ષણ જનનાથપુરીમાં ચૈતન્યના શિષ્ય જગદાનંદ પાસેથી લીધું. એ જાને વાતો ઐતિહાસિક રીતે અસંભવિત છે અને હકીકત પોતાના બંધાઈ ગયેલા મતને લઈને છે. આના કરતાં ખીનું વધારે બૂઝાણું શું હોઈ

રહે? હાસના બંગાળી લેખકો જેવા કે ડૉ. સેન અને ખીખર જે આ વાતોનું અનુકરણ કરે છે તેમણે આ આખતોના વિવેચનભુક્તિથી અબ્યાસ કર્યો નથી. અર્થે એમ માનીએ છીએ કે ઉપર લખ્યા પ્રમાણે શ્રીનાથજીના સ્વરૂપનો કંબળે જવાથી ઘટાવનના ચૈતન્ય ગોસ્વામીઓને ઘણી નિરાશા ઉત્પન્ન થઈ અને તે આખતોના નિરાશાનો ઉદ્ધારો તેમણે આ પ્રમાણે કરાડ્યો છે.

ઘટાવનહાસના ચૈતન્યભાગવતમાં પુરીના બનાવ સંબંધી કંઈ પણ ઉલ્લેખ નથી એમ અમારી જાણમાં છે. શ્રીનાથજીના સ્વરૂપનો કંબળે શ્રીવિદ્યેશ્વરજીનાં હાથમાં આવ્યા તેથી ઘણાં સારાં ફળ થયાં. અકબર બદશાહે ખાસ કરમાન કરાડીને શ્રીવિદ્યેશ્વરજીને જતીપુરા ગામ જાણેસ આવ્યું. શ્રીનાથજીના અંગની સેવાનો આધાર ફક્ત શ્રીવિદ્યેશ્વરજીના પુત્રો, વડુજીઓ અને મેરીજીઓને રહ્યા. ચાહણોમાં ગિરનારા અને સાચોરાઓ જેમણે આ સંપ્રદાયનો પ્રથમથીજ અંગીકાર કર્યો હતો તેઓને સેવાના કામમાં રાખવામાં આવ્યા. હવેથી સામાન્ય વૈષ્ણવોને સદાને માટે શ્રીનાથજીના સ્વરૂપને સ્પર્શ કરવાનું બંધ કરવામાં આવ્યું. ત્યારે શ્રીમદ્વંશભાગ્યાર્થજી અથવા તો શ્રીવિદ્યેશ્વરજીના મનમાં આ પરિણામ લાવવાનો વિચાર હશે કે નહીં તે સંકટ ભરેલું છે. ત્યારે શ્રીમદ્વંશભાગ્યાર્થજીએ આ સ્વરૂપની રચાવના કરી અને ત્યારે શ્રીવિદ્યેશ્વરજીને શ્રીનાથજીનો અમનિહત કંબળે મળ્યો, શ્રીવિદ્યેશ્વરજીનો મુખ્ય આશય બંગાળીઓને સેવાથી દૂર રાખવાનો હતો. આ પ્રસંગે આટલું કહેવાનું અરથાને નહીં ગણાય કે સંવત ૧૬૧૬ માં જગન્નાથ જવાથી શ્રીવિદ્યેશ્વરજી ઉપર ચૈતન્યના મતના તત્ત્વોરોની જે અસર થઈ હતી તે મુદ્દે રહી નહિ.

૧૬૨૯ માં શ્રીવિદ્યેશ્વરજી ગોકુલ રજા ત્યારે રાજ ટોડરમજ આપને મળ્યા આવ્યા હતા. રાજા હરિદત્તી સામે જિદારમાં રાહી લરકરનું સેનાધપતિપણું લેઈ લગાઈ કરવા જવાનું તેને કરમાન થયું હતું. આ કામ થયું નેખમ ભરેલું હતું અને આ સાદસ પર જતાં પહેલાં ટોડરમજ આશીર્વાદ લેવા શ્રીગુણકંઈતી પાસે આવ્યા. એઓથીએ તેમને એક ‘ગીતામ્બર’ આપ્યું જે આ લગાઈ કરવા નીકળ્યા ત્યારે પોતાના શિર પર બાંધ્યું. આ પરથી માત્રમ પડશે કે ટોડરમજને શ્રીવિદ્યેશ્વરને માટે ધાળુંજ માન હતું.

શ્રીવિદ્યેશ્વર સાથે પહેલાં જણાવ્યા પ્રમાણે ખીરખજનો સંબંધ પણ ઘણો ગાંઠા હતો. ત્યારે એઓથી શુવરાતમાં પધાર્યા ત્યારે જન્માટમીનો ઉપવાસ ક્યે દિવસે પાળવો તે સંબંધી મતભેદ થયો. શુવરાતમાંથી પાછા ફરતાં તેમને આ વાતની ખબર પડી. તેમણે જન્માટમીનિર્ણય નામનું પુસ્તક કારણો સહિત બહાર પાડ્યું. આખીજ પરિસ્થિતમાં તેમણે રત્નનવમીનિર્ણયનું પુસ્તક પણ રચ્યું હતું. ગોકુલમાં આનંદથી નિવાસ કરવાથી પોતાના પિતૃચરણે જે ધાર્મિક ક્રિયાઓ દાખલ કરી હતી તે બધી ક્રિયાઓ બરાબર ચોક્કસ કરી.

શ્રીગોપીનાથજી આચાર્ય તરીકે—શ્રીમદ્વંશભાગ્યાર્થજીના પછી શ્રીવિદ્યેશ્વરના જ્યેષ્ઠ ભાતા શ્રીગોપીનાથજી આચાર્ય તરીકે ગાદીએ આવ્યા. શ્રીગોપીનાથજી મોટા લક્ષ હતા. પોતાના જ્યેષ્ઠ ભાતાને મારે શ્રીવિદ્યેશ્વરજીને ઘણું માન હતું. પોતાના પિતૃચરણના સિદ્ધાન્તો શ્રીગોપીનાથજી ફરી રીતે સમજતા અને ફરી રીતે તે લોક આગળ મૂક્યા તે જાણવા સાર આપણી પાસે સામગ્રી નથી. આપણે એટલું જાણીએ છીએ કે જર્મીના મોટા ભાગ પોતે અંગ્રેજ રહેતા અને શુભોંસમાં પોતાના પિતૃચરણ પેટે પોતે જન્માં પધારતા. ત્યાં તે ગોપાલ-ઉપાસના કરતા. સાધનહીન પકા નામનો પ્રંથ એથણે રચ્યો છે એમ કહેવાય છે. આ પ્રંથમાંથી આપણને ઘણું જાણવાનું મળતું નથી. આ પ્રંથમાં એક એવો કાનુન મૂક્યો છે કે વિધવા સ્ત્રીએ કૃષ્ણની સેવા જાતભાવથી કરવી. થયું જાભાગ્યવતી સ્ત્રીએ કૃષ્ણની સેવા ભરૂં-ભાવથી કરવી. શ્રીમદ્વંશભાગ્યાર્થના

રાગમાંજ સવારના કીર્તનો ગવાતાં. સંજના કીર્તનો પણ 'સંજે ગવાય' તેવા રાગમાં ગવાતાં. જન્માષ્ટમી, અનનૂદ એવા મોટા ઉત્સવો હોય ત્યારે આ નિયમો પાળવામાં આવતા નહિ. આવા પ્રસંગે ગમે તે સમયે ગમે તે ગાગમાં કીર્તનો ચાતાં, સંગીતમાં ઝડુ અનુસાર રાગ, ખલ્લાય છે. નિત્યસેવામાં હિંઆ પ્રકારના સંગીતના સાજ તંબુરો, ખીન, મૃદંગ, સારંગી વગેરે વપરાતાં. આજ રીત હજી પણ સંપ્રદાયમાં ચાલુ છે. અને માનીએ છીએ કે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીના મુન શ્રીધુનાથજી પોતાના પિતાજીને ગીતસંગીતસાગરનું નામ આપે છે તે યોગ્ય છે.

ઝડુ-અનુસાર સેવાક્રમ—નિત્યસેવાનો ક્રમ પણ ઝડુ અનુસાર બદલાતો. ફરક ખામતની એવી ઉત્તમ ગોઠવણી રગવામાં આવી હતી કે શીતકાળમાં કોઇ પુષ્ટિમાર્ગીય મંદિરમાં પ્રવેશ કરે કે તરતજ તેને શીતકાળની જરા પણ અસર થતા બાલમ પડે નહીં. તેજ પ્રમાણે ઉષ્ણકાળમાં શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીના મંદિરમાં પ્રવેશ કરે કે તરતજ ઉષ્ણકાળ છે એજ તમે બહી જાઓ. સંચર્યતા એટલી દદ મુંધી છે જવામાં આવી હતી કે દરરોજ ઉત્તમમાં ઉત્તમ જે જે વસ્તુઓ શ્રીદ્વારજીને ધરાવવામાં આવે તેમાં દિવસનો વખત અને ઝડુનો વિવેક સાંખવામાં આવતો. અકબર ખાદશાદ શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીની મુલાકાત લેતો અને આપશીએ તેને દર્શન કરવાની છૂટ આપી હતી. સંપ્રદાયમાં એવી ગાથા પ્રચલિત છે કે ઝડુપણિયા અથવા ઘરતપણિયાને દિવસે અકબર ખાદશાદ શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીને ત્યાં આવ્યાં. ઉત્તમમાં ઉત્તમ રસાગારનું આધેવ શ્રીધુજી છે. શ્રીધુજી સ્થામ છે એમ ધર્મન છે અને તેથી તે દિવસે પિછાઈ, ખિજાત વગેરે બધે સાંજ સ્વાભાવિક રીતે સ્થામ રંગનો હતો. અકબર ખાદશાદની વિચ્છિપરથી સ્થામ વસ્ત્રને બદલી મહેદ રૂપેરી કપડાં ગૂખ્યાં અને આ રીત હજી પણ પુષ્ટિમાર્ગીય મંદિરમાં કાયમ છે. ચિત્રકળા જે પણ શ્રીધુલેશ્વરજીનો એક આનંદનો વિષય હતો. પોતાના કાકુરજી શ્રીનવનીતપ્રિયજીનું મુંદર ચિત્ર પોતાના હાથે તૈયાર કરેલું મુખજીના ગોસ્વામી શ્રીદ્વારજીજી મહારાજના કળામાં છે. ઉત્સવના દિવસે મુંદર આર્તિઓ પીતરવામાં આવતી અને તેમાં મોટી ગોઠવવામાં આવતાં અને તેમાં રંગોનું મિશ્રણ અતિ ઉત્તમ રીતે કરવામાં આવતું. આ આર્તિઓના નમુના એએએસીના કુટુંબનો સ્વીવર્ગજી કરતો અને હજી પણ કેટલાક આર્તિના નમુનાના નામ શ્રીભક્તજીજીની વગેરેની આર્તિઓ કહેવાય છે. ધર્મજી માપસર ચિત્રકામ આ આર્તિઓમાં માલુમ પડતું. વસ્ત્રત્કરુમાં સ્થામ અને લીલા રંગોમાં મુંદર છાપોવાળા પદ્મ અને પીંછાઈ જે નિલસેવામાં વપરાય છે, તે ઉપયોગમાં લેવાતાં. તેજ પ્રમાણે સાંજના દિવસોમાં ઉત્તમ પ્રકારના રંગોમાં ડુખીલીઓનું વર્ણન કરતી શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીની પ્રેરણથી જાકુલ્લો, સાદ રીપર, કંડારમાં અલ્લી, હિરમ, જૂક જેવું કે, ચુકામ, અંબેલી, અરુક, જરૂમ, કાળ વગેરે શ્રીદ્વારજીને અર્પવાની માળા મુંધવામાં વપરાતાં. ઉષ્ણકાળમાં પ્રલમ્બજીઓ તૈયાર કરવામાં આવતી. તેમાં જુલ ધણીજ મુંદર અને રસિકતાથી મુંધવામાં આવતાં અને પીરવામાં આવતાં. ટુંકામાં અકબર ખાદશાદના સમયમાં જે જે લલિતકળાઓનો વિકાસ થયો હતો તે બધીનો શ્રીધુજીની નિત્યની સેવામાં ઉપયોગ કરવામાં આવ્યો હતો.

શુજરાતનો ઉદ્વાર—શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીની ધાર્મિક પ્રવૃત્તિઓનું ક્ષેત્ર મુખ્યત્વે શુજરાત અને કાઠીઆવાડ હતું. આ રથજીનો લોહો સ્વભાવે વેપારી હતા. આવા લોકોને વત્તવાનના મહત્ત્વ વિષયોના પ્રશ્નો ચર્ચનારાં પુનઃક્રમમાં રસ લેતા કરવા એ કંઈ મુશ્કેલ હતું. શ્રીધુજીની સેવા એજ મનુષ્ય માત્રનું ધ્યેય છે એ વાતનો સ્વીકાર કેમ કરાવવો એ શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજી પાસે મોટો પ્રશ્ન હતો. શ્રીધુજીની લીલાઓનો આખેદુજ ખ્યાલ આપે તેને સાદું. રાસધારીની ગંજીની ચોળનાનો પ્રમંથ કર્યો. આ રીત અન્ય રીતે ક્ષેત્રમંદ નીવડી અને શુજરાતની જામી સાતિઓએ ધર્મજી ઉદ્ધારી

અને શીઘ્રતાથી કૃષ્ણસેવા-માર્ગનો સ્વીકાર કર્યો. ખરું જોતાં જે કંઈ આપણે આપણું પોતાનું માનીએ તે સર્વથા શ્રીકૃષ્ણને અર્પણ કરવાનું છે. તે વસ્તુઓ કાઢીને આપી દેવાની નથી, પણ મનમાં એવી ભાવના રહીશૂન કરાવાની છે કે જે કંઈ આપણી પાસે છે તે પ્રભુનું છે અને પ્રભુને માટે છે. આવી ભાવના મન-સિદ્ધાંત જે શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીએ લાવેલા પૂજના નદા વચ્ચેના-વર્તેલાનો ઉપદેશ કરેલો તેથી વૈષ્ણવોએ પોતાના આચારમાં સંસારની અદ્વૈતા અને મમતા કાઢી નાંખી પ્રભુ તરફ અદ્વૈતા અને મમતા વાળા દીધી. શ્રીવિદ્યેશ્વરજીએ શ્રીકૃષ્ણની સેવાનો સારો અને સ્વચ્છ ઉપાય પોતાનો ઉદ્દેશ પાર પાડ્યો. શ્રીકૃષ્ણની સેવામાં કુટુંબનો દરેક માણસ ભાગ લેઈ સદે અને જે વસ્તુઓ પોતાનો માનવામાં આવતી હોય તેનો શ્રીકૃષ્ણને માટે ઉપયોગ થાય. આ રીતે મુજરાતના મોટા જાગીરામાં શ્રીવિદ્યેશ્વરે વૈષ્ણવ સંપ્રદાયને એક ધર્મ ધરાવતો બનાવ્યો.

આદોષપરિહાર.—શ્રીવિદ્યેશ્વરજીના પ્રભાષનાં મૂળ એટલાં ઉંડાં નાંખ્યાં હતાં કે યોગજ્ઞ સાધનામાં તેનો એટલો દર બુધી પ્રચાર વધી ગયો કે જ્યારે મુજરાતમાં વૈષ્ણવ સંપ્રદાયે ઉચ્ચાર થાય ત્યારે તેનો અર્થ પુષ્ટિમાર્ગીય વૈષ્ણવ એવાજ થતો. કાકર ભાંડારકર જે રીકા કરે છે કે શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીનો સેવાક્રમ ભાવનાપ્રધાન કરતાં નાટ્યપ્રધાન હતો તે ખીનપાયાવાર છે. શ્રીકાકરજીનો ખાસ કૃપા સિવાય અને પ્રેમભાવના સિવાય સર્વ મેવાસામગ્રી નકામી છે. એવા શ્રીવિદ્યેશ્વરજીએ ઉપદેશ કર્યો હતો. કાકર ભાંડારકર જે રીકા કરી છે તેનું કારણ પુષ્ટિમાર્ગીય મંદિરમાં જે સંવાદકાર ગાંધે છે તેનાથી તેમનું અપરિચિતપણું અને ખીલું જે કંઈ મેવાસામગ્રીનું જાન તેમણે મેળવેલું તે કાઢના પાસેથી મેળવેલું દરે એમ કહે છે. રામાનુજ માખ્ય, મોડીઆ અને જમનાચતા કુખ્ય કથાનો અને શ્રીવિદ્યના મંદિરનો અભારા અનુભવ એમ કહે છે કે કૃષ્ણસેવાનો પ્રકાર જે શ્રીવિદ્યેશ્વરજીએ બોધ્યો છે તે અદ્વિતીય અપ્રતિમ અને અનુપમ છે. આ જાનાને સ્વીકાર મુજરાતના એક મોટા વૈષ્ણવ ગુરુ સ્વામીનારાયણે મુકત કંઈ કર્યો છે અને પોતાની શિક્ષાપત્રીમાં પોતે શ્રીવિદ્યેશ્વરજીને વૈષ્ણવચર્યાનો રાજા તરીકે સંબોધે છે. શ્રીસ્વામીનારાયણે ખુદના અનુયાયીઓને શ્રીવિદ્યેશ્વર જે સેવાપ્રકાર બોધી આપ્યો છે, તે પ્રભાણે આજના શિક્ષાપત્રીમાં ઉપદેશ કર્યો છે. ખરી જાત એ છે કે મનુષ્યમાનની ઉંચા પ્રકારની હલની ભાવનાઓનો વિકાસ કરવા આ સ્વચ્છપ્રકાર રચ્યો હતો. એટલે આ સેવામાર્ગને નાટ્યપ્રધાન કહેવા એ આખા મોટા આચાર્યને અરેખર તત્ત્વ અન્યાય કરવા જેવું છે. અનુભવસિદ્ધ કહે છે કે આ સેવાપ્રકારનું અનુસરણ કરવાથી અનુયાયીઓને સંસારના બંધનોનું વસ્ત્રદળ થઈ શક્યું એટલુંજ નહિ પણ શ્રીકાકરજીના અનુભવ કરવામાં આ સેવાપ્રકાર તેમને ધણીજ સદાપ્રજ્ઞ થયેલ વ્યવહારમાં હોય માત્રમ જરૂર પણ શ્રીવિદ્યેશ્વર જે ઉચ્ચ આદર્શ રાખેલો ત્યાં જાંવી ન પડેલાય એમ કાને તેમ જતાં આખા સેવાપ્રકારને નાટ્યપ્રધાન કહેવા એ તે ભાવાનો દરપોષ થવા જેવું છે.

મંદિરો કેવાં હોય ?—મંદિરો જામવામાં શ્રીવિદ્યેશ્વરજીએ પોતાનાજ પાન કાપી કાઢ્યો. મંદિરોને સાર મોટાં અને જન અચ્છોથી મક્કનો, જાંવણનો વિચાર તેમને પસંદ નહોતો, મોટાં આશીશન મંદિરો જાંવણ ને નમસ્કારથી સંબંધી સદીસલામત નહોતું. આજ કાલજુથી પોતે પશ્ચિમ કાંઠી પદ્ધતિને મંદિરની રચના કરવાનું કહેજી. બહારના દેખાવવડી મંદિર છે, એમ જમ્મદજન નહીં. બહારના દેખાવથી નો તેમનું મંદિર એક સપાટજમ્મ રહેલો મક્કન જેવુંજ જણાય. પણ તેમ જતાં મંદિરની અંદરની રચના કરવામાં ધણીજ કાળજી રાખવામાં આવી. (Free)-માર્ગનો દેવા અને અનુભવ મને દિને પ્રદે પાસ ખાન આપવામાં આવતું. અલ્પિ પણ

શ્રીનાથજીના મંદિરની રચના ધણીજ સાદી પદ્ધતિની છે. મંદિરની અંદર મધ્યમાં ત્રણ કમાનવાળી ગેલેરીઓવાળો ચોક રાખવામાં આવ્યો હતો. આવી એક ગેલેરીની પાછળ નિજ-મંદિરનો ભાગ હતો. આ નિજ-મંદિરની એક બાજુએ શયનગૃહ રાખવામાં આવ્યું હતું. આ શયનગૃહને ગૃહિક બનાવવામાં ધણીજ ખર્ચ કરવામાં આવતો. બીજી બાજુએ ભોગગૃહ રાખવામાં આવતું ત્યાં શ્રીકાકુરજીને ભોગ-સામગ્રી સમર્પવામાં આવતી. ભોગગૃહથી આગળ પાકગૃહ અથવા શ્રીકાકુરજીને માટે ભોગ તૈયાર કરવા જે ઓરડાઓ રાખવામાં આવ્યા હતા. ડુલ, શાક, પાન, જળ આદિને માટે જુદા જુદા ઓરડાઓ રાખવામાં આવ્યા હતા. જેને ડુધધર, શાકધર, પાનધર, જળગૃહ વગેરે નામોં આપવામાં આવ્યાં હતાં. કંમિતી, અક્કાર, આબૂપણ અને વાધાવસ્ત્ર જે શ્રીકાકુરજીને શૃંગારવા રાખ્યા હતા તે પણ સહી સલામત જગામાં રાખવામાં આવતા. આ મંદિર મધ્યમાં રાખવામાં આવ્યું હતું અને મંદિરની આજુબાજુ મહારાજને સારૂ રહેવાનાં મકાનો અને પ્રચારકોને સારૂ મકાનો બાંધવામાં આવ્યાં હતાં. ચૂળ ખ્યાલ એ રાખવામાં આવ્યો હતો કે શ્રીકાકુરજી એ મૌનિક અને ઓરવામી મહારાજશ્રીઓ અને બીજા જાણ તેમના ગ્રેવક છે. આ વાત ખ્યાનમાં રાખી રહેવાનાં મકાનોની રચના કરવામાં આવી હતી.

નામસેવા અને કુટુંબપોષણ—સેવા-પ્રકારના વિકાસ કરવાની સાથે પોતાના પિતૃ-શ્રવણના સિદ્ધાન્તો અને મતોનું વિવરણ કરવામાં અને સમજાવવામાં તેજલાજ ઉત્સાહથી પોતે પોતાનું મન લગાડ્યું. પોતે જે સાહિત્યના ગ્રંથો રચ્યા તેમાં વિચારની અને બાબતી પરિષ્કરતા જણાઈ આવે છે. વેદાન્ત-સૂત્રોપર જે અણુભાષ્ય તેમના પિતૃચરણે લખ્યું હતું તે આ સમયમાં પોતે સંપૂર્ણ કર્યું. મોટા ધાર્મિક ગુરુઆચાર્યો તરીકેની તેમની પ્રતિષ્ઠા નિર્વિવાદ હતી. યુગશતના વૈષ્ણવો તરફથી ઉમદા કોટી તેમના તરફ સંજ્ઞાબંધ આવતી. અકબર બાદશાહ અને તેના પ્રખ્યાત પ્રધાનો ટોડરમલ, ખીરખત્ર, રાય પુરષોત્તમ અને બીજાઓએ વગર માગે પોતાની મહક આપી હતી. પોતાની રાતિના વિદ્વાન માણસો જે તેમની સાથે ગદામાં રહેતા હતા તે બધારે ત્યારે તેમની પાસે આવ્યા તેમને પોતે સારો આશ્રય આપ્યો—આ બ્રાહ્મણોની સાથે પોતે લક્ષ્મીના સંબંધ બાંધ્યા, અને તેમના પુત્રોને પોતાની બેરીછત્રો લગ્યાં આપી અને તેમની પુત્રીઓ પોતાના પુત્રોને સારૂ લક્ષમાં લીધી. એમની રાતિના આ બ્રાહ્મણો હદ તરીકે જોળખાવા લાગ્યા. પોતાના પૂર્વજોના દેશ સાથેના સંબંધની શ્રીવિઠ્ઠેશ્વરને હવે જરૂર ન લાગે તેમ ત્યાંના સંબંધ ધણીખરો છુટી-ગયો અને પોતે એકલગણી થયા. ધીમે ધીમે પોતાની માતૃભાષા તેલુગુને બદલે રૂપાનિક ભાષાને પોતાની માતૃભાષા કરી. વૈષ્ણવો તેમજ હદ લોકોનો શ્રીવિઠ્ઠેશ્વરજી તરફ ધણીજ ભક્તિભાવ હતો. આનું પરિણામ એ થયું કે શ્રીવિઠ્ઠેશ્વરજીને પોતાની મદતાનું એટલી હદ સુધી ભાન થયું કે પોતે પોતાને મોટે માનાયમાં જાહેરચાલના પ્રયોગ કરવાં (વાપરવા) લાગ્યા. સાંજના અનનસરના સમયમાં બધારે વૈષ્ણવોને શ્રીસુગોધિનીજી સંભળાવતા ત્યારે શ્રીસુગોધિનીજીના અથવા ભાગ પર પોતે નોંધ અથવા ટીકા લખતા. આ ટીકા બધી સાથે બાંધવામાં આવી અને તેનું નામ વિશ્વતિપ્રકાશ આપવામાં આવ્યું. મંગલાચરણમાં 'શ્રીવિઠ્ઠલ' કિચ્તે-રાખ્દ છે તે પરથી દર્શાવેલી સ્વમદતાનું ભાન તેમને હશે એમ સ્પષ્ટ થાય છે.

દાંડભાગ—શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીએ પોતાના ભક્તોને દેવતાકં રચણ પધરાવી આપ્યાં હતાં. બધારે જે જે ભક્તો એકોગણી થયા અને તેમનો વંશ રહ્યો નહિ અથવા સ્વરૂપની સેવા કરવા અશક્ત થઈ ગયા, ત્યારે તે ભક્તોએ તે સ્વરૂપ શ્રીસુસાંછજીને પાછું સોંપ્યાં. આમાંના ચાત્ર અથવા આદ પોતાને મળ્યાં હતાં. એઓશ્રીએ દાંડભાગમાં સંવત ૧૬૩૪ માં પોતાના પુત્રોને આ સ્વરૂપ

વહેંચી આપ્યાં દત્તાં. શ્રીનાથજીની સેવના અધિકાર સાતે પુત્રોને મળ્યાં (સંયુક્ત) આપવામાં આવ્યો. પોતાના મોટા પુત્ર શ્રીશિરધરજી એક પુત્ર હોવાથી ગાદીના અધિકારી હતા તેમ તેમની તાબામાં એ શ્રીનાથજીનું સ્વરૂપ રાખવામાં આવ્યું. સંપ્રદાયમાં આ સાત સ્વરૂપને સાત નિધિ કહે છે. સાતે પુત્રોને સાત મકાન ગોઠવવામાં બાંધી આપ્યા દત્તા અને દરેક પુત્રને એક એક આપવામાં આવ્યું હતું (શ્રીવદુનાયજી, શ્રીરક્ષિતભણીજીના પુત્ર જે સાથી નાના દત્તા અને જે મોટા પુત્ર શ્રીશિરધરજીની સાથે રહેતા તેમને માટે મકાન બાંધ્યું નરિ હોય). દાવલાગમાં આપેલાં સ્વરૂપને દરેક પુત્રે પોતાના સ્વેચ્છા સ્વરૂપ તરીકે સ્વીકાર્યું અને તેને માટે મંદિર બાંધ્યું. સંપ્રદાયમાં આ સાત મંદિરોને સાત ગાદી તરીકે ઓળખવામાં આવે છે. શ્રીચિત્રેશ્વરજી એક પત્રમાં પોતાના પુત્રોને વદુનાયજીને માટે ધર બાંધવા જગ્યા પસંદ કરવા લખે છે. એમ ત્રાગે છે કે શ્રીવદુનાયજીને માટે મંદિર બાંધાયું તે પહેલાં પોને લીલા કરી હોય. આનું પરિણામ સંપ્રદાયમાં અનિશ્ચિત આવ્યું, કારણ કે શ્રીવદુનાયજીની ગાદીના મુખ્યેક તરીકે ચાર વંશજોને પોતાનો દાદા બતાવે છે.

ભક્તિદ્વંસ—શ્રીચિત્રેશ્વરજીનાં છઠ્ઠાં વંશે ગોઠવવામાં વણા મુખથી પસાર થયાં. એક મુશ્કેલી નામના પંડિતે તેમને એક એવું પુસ્તક આપવા લખ્યું કે જેમાં પુષ્ટિમાર્ગના મૂળ સિદ્ધાંતોનું એવું સ્પષ્ટ વિવેચન હોય કે જેથી પોતાના દેશના જ્યાં વિરાધીઓને પોતે નિરુત્તર કરી દાદે. આના જગ્યામાં શ્રીચિત્રેશ્વરજીએ ભક્તિદ્વંસ નામનો ગ્રંથ રચ્યો અને તે ગ્રંથ તે પંડિતને મોકલ્યો. આ ગ્રંથ મળ્યાથી તે પંડિતને ધણો અનંદ થયો અને ભક્તિના મૂળ કારણની વધારે સમજુતીને સાદે માગણી કરી. આ માગણીથી તેમણે ભક્તિ-દેવુ નામનો ગ્રંથ રચ્યો. આ એ પુસ્તક ભક્તિનું મુખ્ય કારણ પ્રગટ કર્યા અથવા અનુમત છે અને પૂર્ણ પુરુષોત્તમ પોતાના અંતરંગ ભક્તોની સાથેજ રમવા કરે છે, મન, તન કરાચી વસ થતા નથી. એમ દુઃકમાં સમજાવે છે.

આચાર્ય-વ્યાખ્યાન—શ્રીચિત્રેશ્વરજી સિવે વંચી અધિક જૂતાં પર બિરાજ્યા. એમના જીવનમાં સંપ્રદાયના ચાલુ સિદ્ધાંત અને સેવાપ્રકાર બનેલી ચોખ્ખી પરિપૂર્ણતા હતી. પોને ક્ષેત્રી રીતે લીલા કરી તે જાગત તેમના ભાતોએ અધારમાં રાખી છે. ગોપાલદાસ ચ્યારાના રક્ષી તરફથી આપણી ખબર મળે છે કે તેમને જગ્યા અને પેટમાં કાંઈ દરક થયું જેથી સંવત ૧૬૪૨ ના માર્ગ માસની કૃત્તિક ૭ ને દિવસે પોને લીલા કરી. આ રીતે આ બગીચા કાર્ય કરનાર આચાર્યશ્રીનું પ્રકટ જીવન તિરોદિત થયું. જેનાં મુશ્કેલીઓ દલ પાળી વેળાનાં હરખા છે.

વિગમ—શ્રીચિત્રેશ્વરજીના જીવનના એક પ્રસંગમાંથી-મોટામાંથી સારાને ઉદ્ભવ થાય છે એ કથનનો આપણે ખ્યાલ આવે છે. શ્રીમદ્વક્ત્રાચાર્યજીએ ગોલધર્મ પર્વન પડના શ્રીનાથજીના મંદિરના અધિકારી તરીકે કૃષ્ણસરને નીમ્યા હતા. શ્રીચિત્રેશ્વરજીની સાથે કેમકે તત્કારણે લેહને કૃષ્ણામે શ્રીચિત્રેશ્વરને મંદિરમાં આવવા બધે કહ્યું. શ્રીચિત્રેશ્વરજીએ અધિકારીઓને દુકમ માન્ય કર્યો અને પરાસોલી, ચંદ રોજર પર ૭ માસ સુધી દેશવરો બેઠાં. આ સમયમાં પોને કેટલીક ઉત્તમમાં ઉત્તમ વિગમિઓ લખી છે. એમ કહેવાય છે કે કરોજ એક વિગમિ લખાવી અને સમજાસ તે વિગમિ શ્રીનાથજી પાસે લેઈ જતા. શ્રીચિત્રેશ્વરજીના અંતરોના મુંઝવિ ભાવ દત્તા તે આ વિગમિઓ પરથી દેખાઈ આવે છે. આ વિગમિઓના વિચાર અને બાબતોથી બનેલો મોર મેગ (આ વિગમિઓમાં) જાણ્યો છે. આ વિગમિઓ વાંચીને આપણા મન પર કાવમની છાપ પડી જાય છે. પોતાના પ્રાણુઓને મજાત નથી રહેતા ચિદસંદેશ હૃદયનું આ પરિણામ છે. કૃષ્ણામે આ કારણથી શ્રીચિત્રેશ્વરજીને શ્રીનાથજી કૂર રાખ્યા તે જાગત અધારમાં છે, તેમ છતાં, આખરે કૃષ્ણાસ પડનાર અને શ્રીચિત્રેશ્વરજીની માગી માગી અને મંદિર આપવાને

માટે વિનવતિ કરી. આ વિરસિઓમાં દરેક શ્લોક નિરાળો જ છે. એક પ્રકારકે ૨૫ શ્લોકનું એક છુમ્મુ કરી બુદ્ધુ જાણ્યું, પણ એમ કરવાને અર્થને તો કંઈ કારણ જણાતું નથી. આ વિરસિઓ સી રીતે લખાઈ તે બાબતમાં અમારો શું અભિપ્રાય છે તે જણાવવું અગત્ય નાહ જણાય. શ્રીવિદ્યેશ્વરજી પત્ર લખવામાં ધણા કુશળ હતા. ઘણા વૈષ્ણવોને પોતે પત્ર લખતા અને ઘણા વૈષ્ણવો તરફથી તેમના પર પત્ર આવતા. આ પત્રો સંસ્કૃત ગદ્યમાં લખાતા, પણ પત્રના આરંભમાં અને અંતના ભાગમાં પોતે એક જે શ્લોક લખતા અને પોતાના વૈષ્ણવોને પોતાનું ધાર્મિક કર્તવ્ય શું છે તે જણાવતા. વખત જતાં પરોનો નીરસ ભાગ હુમ થયો, પણ શ્લોકોનો સંગ્રહ થયો અને તે જળવાયા. વિરસિઓની ઉત્પત્તિનું આ કારણ હોવાથી શ્લોકોની અસંખ્યતાનું કારણ આપણને સમજણ પડશે. અસંખ્ય છે છતાં, કતીની અનદદ ભક્તિનું તેમાં દર્શન છે. દેહલીક વિરસિઓમાં તો ઉત્તમમાં ઉત્તમ અને ઉમદા ભાવનાઓ પ્રાપ્ત કરવામાં આવી છે.

કૌટુંબિક જીવન—શ્રીવિદ્યેશ્વરજીનું કૌટુંબિક જીવન ઘણું સુખી હતું. પ્રભુએ તેમને મોટું કુટુંબ બંધ્યું હતું. પોતાનાં પહેલાં વડુજી રકિમણીજીથી છ પુત્ર અને ચાર પુત્રીઓ પ્રાપ્ત થયાં હતાં. શેાભા, યમુના, કમલા અને દેવકા બેરીજીઓ પહેલાં વડુજીથી થયાં હતાં. તે સહિતે પદ્મજીઓ હતાં, અને તેઓ પણ તેમના પતિની સાથે શ્રીવિદ્યેશ્વરજીના ઘરમાંજ રહેતાં. શ્રીગિરિધરજી, શ્રીગોવિંદજી, શ્રીઆલકૃષ્ણજી, શ્રીવલ્લભજી, શ્રીરઘુનાથજી અને શ્રીવિદ્યુનાથ પોતાના પહેલાં વડુજી શ્રીરકિમણીજીના છ પુત્ર હતા. શ્રીલક્ષ્મણજી સાતમાં અને પદ્માવતી વડુજીના એકના એક પુત્ર હતા. શ્રીવિદ્યેશ્વરજીનું પહેલું બાળક શેાભાજી હતાં અને તેમના પછી ભ્રેષ્ઠ પુત્ર ગિરિધરજીનો જન્મ થયો હતો. પોતાના ભ્રેષ્ઠ બાતા શ્રીગોપીનાથજીના એક પુત્ર પુરોત્તમજીએ લીલા કરી હતી, પણ પુરોત્તમજીની જે બેનો લક્ષ્મીજી અને સ્વભાગાજી શ્રીવિદ્યેશ્વરજી સાથે નિવાસ કરતાં. તેમણે બન્નેએ શ્રીનવનીતાપ્રિયજી તથા તેમના ઘરના હકોરજીની સેવામાં પોતાનો વૈધવ્યને કાળ ધણા સુખમાં નિર્ગમન કર્યો. જે કે શ્રીવિદ્યેશ્વરજી ચંદ્રચાત્રમી અને મોટા કુટુંબની જંગળવાળા હતા છતાં પણ સાંસારિક ઉપાધ્યો અને દુઃખમાંથી એમનું ઘર મુક્ત હતું. પોતાના કૌટુંબિક જીવનમાં સંસારની ગન્ધ નહોતી. પોતાના પાંચમો પુત્ર શ્રીરઘુનાથજીના પુત્ર શ્રીદેવકીનંદનજીએ રસાધિનામનું કાવ્ય લખ્યું છે તેમાં શ્રીવિદ્યેશ્વરજી પોતાને કેવી રીતે રમાડતા અને ખેલાવતા તે લખી ગયા છે.

આ ઉપરથી માલુમ પડશે કે પોતાના બાળકોને રમાડતાં પણ પોતે પોતાના સ્વામી શ્રીકૃષ્ણને ભૂલતા નાહ. એટલુંજ નહીં પણ નાનાં બાળકોના કુમત્તા મગજ પર તેમનું કર્તવ્ય તેમના સ્વામી શ્રીકૃષ્ણની સેવા કરવાનું છે એવી જાણપડતા. તેમની પાંચ શ્રીકૃષ્ણભૂરાયજીનું જેવું એક કીર્તન છે. શ્રીવિદ્યેશ્વરજી ઘર છોડવા પોતાની નામરજી-દેવા નાભુક રાખેદોમાં આવે છે. ત્યારે શ્રીવિદ્યેશ્વરજીના કાકા સંતતિ ન હોવાથી તેમના એક બાલક પુત્રની માગણી કરવા આવ્યા ત્યારે શ્રીવિદ્યેશ્વરજીના સંતાન વચરના કાકા ત્યારે તેમના એજ બાળક પુત્રની માગણી કરવા આવ્યા ત્યારે તેમના પાંચ શ્રીકૃષ્ણભૂરાયજીએ શ્રીવિદ્યેશ્વરજી ઘર છોડવાની પોતાની નામરજી સુંદર અને ભાવવાહી રાખેદોમાં એક કીર્તનમાં ઉતારી છે. શ્રીકૃષ્ણભૂરાયજીને એમ બીતિ હતી કે હું પ્રથમ પાંચ છું એટલે મને આપી દેશે. શ્રીકૃષ્ણ પ્રભુનાં કીર્તન કરી શ્રીવિદ્યેશ્વરજીના ઘરમાં રહેવાનો વિચાર દુનિયાની ગમે તેટલી મોહક વસ્તુઓ મેળવવાં કરતાં શ્રીકૃષ્ણભૂરાયજીને વધારે રચિકર લાગ્યો. શ્રીવિદ્યેશ્વરજી પોતાના બાળકોના સ્વભાવ સમજતા અને પોતાના લાલચમાંથી કાઢપણ પોતાનું ઘર છોડી જવા દેતો નથી, એમ જણતા હતા તેથી તેમણે પોતાના કાકાને કહ્યું કે જે લાલચ આપતી સાથે

વર્ણન કરતાં ગોપાલદાસ કવિ તેમના કુટુંબને કલ્પદ્રુ તરીકે વર્ણવે છે તે ખરેખર ચોખ્ખા છે. (શ્રીવિદ્યલ કલ્પદ્રુમ પદ્યો તેના કાલ્પ પ્રસી અનેકો રહ્યાં)

વેદનો ખરો અર્થ—પ્રાચીન સમયથી વેદ ઈશ્વરપ્રણીત માનવામાં આવે છે. અને બ્રહ્મના સીધા સંબંધમાં હતા તે ઋષિઓને તે પ્રકટ થયા હતા અને અઘાપિ પણ કોઈ ઋષિની ગોત્ર માર-કત પોતાનો વંશ માનવામાં ધણા હિંદીઓ અભિમાન માને છે. વળત જતાં આ સીધો સંબંધ નાશ પામ્યો અને શ્રુતિમાં મતભેદને લેધે બ્રહ્મના ખરા સ્વરૂપ વિષે સંદેહો ઉત્પન્ન થયા. આ સમયમાં ભૂતકાળે બાહ્યાયણુ વ્યાસનો અવતાર થયો, અને તેમણે પોતાના બ્રહ્મસૂત્રમાં બધી શ્રુતિઓના સમન્વય કર્યો. જુના સંપ્રદાયના હિંદીઓ બાહ્યાયણુ વ્યાસને ગોનાવતાર માને છે. અને વેદાન્તના બધા અર્થ કરનારાઓ બાહ્યાયણુ વ્યાસની 'authority' (આધાર) માન્ય રાખે છે. વળત જતાં બ્રહ્મસૂત્રોના ખરા અર્થનું વિસ્મરણ થયું અને જુદા જુદા રીકાકરોએ જુદી જુદી રીતે અર્થ કર્યો. હિંદુસ્તાનમાં બ્રાહ્મના ફેલાવા સાથે, આ બધા બ્રહ્મસૂત્રના અર્થના ગ્રંથો નારા પામ્યા, અને થોડી શ્રુતિઓ સિવાય, સાથી પ્રાચીન અર્થવાળી શ્રુતિ આપણને શ્રીશંકરાચાર્યની મળે છે. (Oriental) પૂર્વની વિદ્યાના પ્રખર વિદ્વાનોએ શ્રીશંકરના ભાષ્યનો સારી રીતે અભ્યાસ કર્યો છે, અને તેઓ કહે છે કે શ્રુતિઓના (સાદા અને સહેજ) શ્રીશંકરના પછી ભાસ્કર, રામાનુજ, મધ્વ અને નિમ્બાર્ક અને બીજા આચાર્યો યથા જગણે (શ્રીશંકરના) એમણે કરેલા ભાષ્યના અર્થો ખરા માન્યા નથી. અને જેમ જેમ શ્રીમદ્ભવણાચાર્યના અંબુભાષ્ય અને પ્રકાશનો અભ્યાસ થાય છે તેમ તેમ બ્રહ્મસૂત્રોના સાચા અને શબ્દના ખરા અર્થના મેળોત્તરીકે Merity લેહા શ્રીવલ્લભાચાર્યને કબ્જા કરે છે. પોતાના આ ગ્રંથમાં શ્રીશંકરે અર્થ કર્યો પ્રમાણે બ્રહ્મનું ખરું સ્વરૂપ નિર્વિશેષ છે કે સર્વિશેષ છે કે બંને છે; તેનો શ્રીવિદ્યેશ્વરજીએ વિવરણ કર્યું છે અને ગ્રંથકર્તાએ બધા તકરારી વિષયો ઉપર જોશથી અને નવીનતાથી વિવેચન કર્યું છે.

અંબુભાષ્યના પાછળના સાગમાં વિદ્વન્મંડનમાંથી ઉતારા આપ્યા છે પરંતુ વિદ્વન્મંડનમાં છેલ્લાં સ્વેચ્છામાંથી કંઈપણ હવાનો આપવામાં આવ્યો નથી. તેથી એમ અનુમાન થાય છે કે અંબુભાષ્ય સંપૂર્ણ કર્યા પહેલાં શ્રીવિદ્યેશ્વરજીએ વિદ્વન્મંડન રચ્યું હશે. પ્રાદેશ વિચારો અને સંયોગ દલીલો ઘણી પ્રતિભાશાલી અને સદૃશ ભાષામાં આ ગ્રંથમાં દર્શાવેલાં છે અને તેનું નામ વિદ્વન્મંડન વિદ્વાનોનું જૂથણુ આપ્યું છે તે ચોખ્ખા છે.

વાદશાહી ફરમાનો.

[જગદ્ગુરુ આચાર્યવર્ય શ્રીનાથદ્વારાધીશ્વર શ્રીગોસ્વામી તિલકાચિત શ્રી ૧૦૮ શ્રીગોવર્ધનનાથદેવ મહારાજશ્રીએ આ વાદશાહી ફરમાનોને સુંદર ગ્રંથ સીમલામાં તા. ૨-૧૦-૩૨ ના રોજ નાખ વાઈસરોય સાહેબ લોર્ડ વિલિંગ્ડનને બક્ષીસ કર્યો ત્યારે તેમણે તે સાથે જે પરિચયપત્ર અંગ્રેજી રજુ કર્યું હતું તેનો અનુવાદ નીચે આપેલો છે.]

સદુપયોગ માટે અને સમજણ માટે સક્ષિપ્ત ઇતિહાસ—શ્રી ૧૦૮ શ્રીમાન ગોસ્વામીશ્રી તિલકાચિત શ્રીગોવર્ધનનાથજી મહારાજ, નથદ્વારાધીશ્વર, ગેવાડોત્તરગત, આપશ્રી વલ્લભસંપ્રદાયન મુખ્ય આચાર્ય છે; આપશ્રી “સંપ્રદાય-જગદ્ગુરુ” શ્રીવલ્લભાચાર્ય, “શ્રીમહાપ્રભુ”, “આચાર્ય સમ્રાટ” થી ૧૪ મી પેઢીએ આવે છે. (આ પેઢીઓ દક્ષિણનાં હિન્દુ સંપ્રદાય મહારાજા કૃષ્ણ દેવરાય, વિજયનગરાધીશ, કે જેઓ આચાર્યશ્રીના એક શિષ્ય થયા હતા, તેમણે સત્કાર કરી

માનપૂર્વકે રાત્રિચિહ્નોસહિત આપેલી છે.) શ્રીવજ્રમાચાર્યના પુત્ર ગોસ્વામી શ્રીચિદ્વિજનાયક થયા. આપશ્રીને અને વંશજોને મોગલસમ્રાટ ખાદશાહ અકબર અને તેમના વંશજો પાસેથી અનેકાનેક ફરમાનો, સન્નિધિ મળેલાં છે. આ ફરમાનોમાં શ્રીચિદ્વિજનાયકને “ હકાયાક વા મારફતે આગા ” નો ઇતિફાક આપવામાં આવ્યો છે, અને મોગલ સામ્રાજ્ય નિત્ય ટક્યું રહે તેવી પરમેશ્વરને પ્રાર્થના કરવાની વિનંતિ કરવામાં આવી છે.

ખાદશાહ શાહજહાન તરફથી શ્રીચિદ્વિજરાયને, એટલે કે તેમના મૂળ સ્થાપકથી પાંચમા વંશજને “ તિલકાયત ” નો ખિતાબ આપવામાં આવ્યો છે. (તે કારણે આજ સુધી શ્રીનાયકના મદારાજો તિલકાયત કહેવાય છે.)

શ્રીદામોદરજીના મદારાજ, ૬ નં પેઢીમાં. ૧૧ મા આપશ્રીને, નામ. હોર્ડ આમદરૅ, ઉદેપુરના મદારાજને, જયપુરના મદારાજને, કોટાહતા મદારાજને જે ખરીદી લખ્યા છે, તેમાં હકાયાક વા મારફતે આગા તરીકેના ખિતાબ મંજૂર રાખ્યો હતો અને અંગત મુલાકાતો પશુ લાલ આપ્યો હતો. આપશ્રીને ઉદેપુરના મદારાજાઓએ ગામડાંઓ ઇનામ-બેટ તરીકે આપેલાં છે અને ન્યાયાધિકારની સત્તા સુધાં આપી છે.

[મદારાજશ્રીના હકાયાઓ—પરમપૂજ્ય, જગદ્ગુરુ, આચાર્યસમ્રાટ, હકાયાક વા મારફતે આગા, તિલકાયત શિરોમણિ ગોસ્વામી સીરૅ૦૮ શ્રીગોવર્ધનજીના મદારાજ, શ્રીવજ્રમજ્જપ્રદાયના મુખ્ય આચાર્ય શ્રીનાથદાસ-મેવાડ અ. પ્રભાણે છે.]

પ્રાચીનકાળથી ગોસ્વામી મદારાજશ્રીઓના કુટુંબીઓ સરકારનું લઘું માહનારા છે, અને સાંપ્રત સમયમાં ગોસ્વામી મદારાજોએ દેશકલ્યાણનાં ધણાં સારાં કામો કર્યાં છે, અને નામ. બ્રિટિશ સરકારે તેઓને દિવાની કોર્ટમાં અંગત હાજરી આપવાથી મુક્ત કર્યાં છે.

સાંપ્રત સમયના મદારાજશ્રીને જાણારાજના મદારાજ રાણા જવાનસિંહજીએ એક જોડ પિત્તળની તોપાની પશુ બેટ આપી છે.

ઉદેપુર, જોધપુર, કોટા, જુહિ, જાલારામ, વોહરા, બારીપર, હંદોર, ગિઠાનેર, અલ્વર, કંઠાલી, ભરતપુર, બનારસ, દરમંગા, દયવા, કુંભરપુર, વાંસવાડ, પ્રતાપગઢ, કિશનગઢ, પાર, દીવાસ, ખિલ્તીપુર, પોરબંદર, જનમનગર, ચિખલી, મોરખી, લખતર, કચ્છ, રતલામ હત્યાદિના મદારાજોએ એક અને સર્વે આપશ્રીને ગુરુ નરિંકે માન આપે છે, અને મામો, જમીનો બેટ-કનામમાં આપ્યાં છે, અને ઘણા બધા કાળે તેના ગિરાસ લાલના મદારાજશ્રી મોગલના આપ્યા છે.

બનારસ-કાશીમાં ત્યારે બ્રાહ્મણમદારાજોએ મળ્યું હતું અને જળગ્રામમાં અખિલ ભારતવર્ષીય વળુશ્રિમ સ્વરાજ્ય સંઘનું અધિવેશન થયું હતું ત્યારે, આપશ્રીના પ્રથમ પુત્ર લાલચાવા રાણેજી શ્રીદામોદરજીના મદારાજ શ્રીશંકરાચાર્ય અને શ્રીરામાનુજચાર્ય ઈલાહાલી હાજરીમાં પ્રમુખરૂપે વરણા દત્તા.

શાહી ફરમાન ૧ હું (ગોકુળમાં નિરાંતે રહેવા બાબદ.)

જલાહુદીન મહમ્મદ અકબર ખાદશાહ ગાઝીનું ફરમાન—તે પોતે સ્વતંત્ર છે,

જલાહુદીન મહમ્મદ અકબર ખાદશાહ ગાઝી.

ચિદ્વિજરાજ ને કે નિરાંતે દમણું લઈ જઈનાર છે, અને ને કસને ગોકુળમાં રહે છે, તેમને તેમજ તેમનાં સમાંવાદો અને મોહરયાકરને આ આપી ફત્વીઓના રસકે ખાદશાહન. તેમજ બીજા અધિકારીઓએ કોઈ રીતે સત્તાવચા નહિ. અને તેમની પાસેથી મેલ પશુ રીતે કોઈ પણ અંગતી માગણી કરવી નહિ. એમને પોતાના રોકાણમાં અને પોતાની જગ્યામાં

હોડીઘાટ પેઠી દર પેઠી ગોસ્વામી વિઠ્ઠલરાયને માવચ્ચંદ્રદિવાકરો આપવામાં આવ્યાં છે તથા તેનો કમળે પણ સોંપી દેવામાં આવ્યો છે, તે આ સર્વમાન્ય આરા કાઢવામાં આવે છે કે સઘળા દિવાની અમલદારો, જાગીરદારો, કરોડીઓ; મુદ્દક અધિકારીઓ અને મોધરીઓએ સદરહુ હુકમ મુજબ વર્તવું અને સદરહુ ગામ તથા હોડીઘાટ સદરહુ રાખસના તાબામાં રહેવા દેવાં. એ હુકમમાં તેમણે જરાપણ ફેરફાર કરવો નહિ અને જમીનના કર, કારખાતાના કર, કોષ પણ જાતનો માયાવેરા, દીવાની કે ફોજદારી; વડ વગેરેની માગણી તેમની પાસે કરી તેમને હેરાન કરવા નહિ, તેમને એ સઘળા માગણીઓથી મુક્ત ગણવવા. દરેક વર્ષે તેમની પાંસ નવાં નવાં કરમાન કે પરવાના માગવાં નહિ, જેથી કરીને એઓ આ શહેનશાહી મહેરબાનીથી સતોપ પામી નિરાંતે હમારા ચિરંજીવી રાજ્યના શ્રેય માટે ધધિર પાસે પ્રાર્થના કરવામાં મશગૂલ રહે.

લખ્યું, જોરદાદ મારને ૧૫ મે દિવસે ઇલાહીસનેના વરસ ૩૮ માં (રમઝાન માસની ૫ મી તારીખ. હી. સ. ૧૦૦૧, શનિવાર ૨૬ મી મે ઇ. સ. ૧૫૯૩, વિક્રમ સંવત ૧૬૪૧)

શાહી ફરમાન ૬ હું (જતીપુરા અને કર માફી બાબદ)

શાહજહાન બાદશાહનું ફેરમાન.

ધધિર મહોરો છે.

સહાર પરગણાના હાલના તથા હવે પછીના યનારા અમલદારો જેઓ શહેનશાહની મહેરબાનીથીજ એ ઓહો મોગવે છે, તેમને માલમ માય કે હમણું હમારી પવિત્ર દરબારમાં એવી અરજ મુજબવામાં આપી છે કે ગોરખનનાથના દીકાયત ગોસ્વામી વિઠ્ઠલરાય જેઓ ગોકુળમાં રહે છે, તેમણે મોજે જતીપુરા હું ગોપાલપુરમાં દામ આપી, જમીનના માલિક તરીકે જમીન ખરીદી, તેના પર મકાન, ગૌશાળ, બાગખગીયા, કારખાનાં-ગોવરખનનાથના પયોગ માટે-હિંમાં કરી પોતે પણ ત્યાં રહે છે, તે ઉપરથી સર્વમાન્ય અને આકાશ જેવા ઉચ્ચ કમ બહાર પાડવામાં આવે છે કે એ મોજની જમીનો નામદાર શહેનશાહ તરફથી તેમને તેમના તાના ઉપયોગ તેમજ હાથરદારના ખરચ માટે કરથી મુક્ત તથા વેરા ભરવાની જવાબદારીથી મુક્ત, એવી રીતે આપવામાં આવી છે. તેથી વર્તમાન તથા લવિષ્યમાં યનારા દરેક હાકમ અને મુદ્દક અમલદારો તથા જાગીરદારોની એ ફરજ છે કે તેમણે આ મદાન શહેનશાહી હુકમને જાણવા તથા તેનો અમલ યતો રહે તે બાબતની તાકીદ રાખવા કોશીસ કરવી અને સદરહુ ગોસ્વામીના તાબામાં એ જમીનો પેઠી દર પેઠી ચાલુ રાખવા દેવી. એ હુકમમાં તેમણે જરા પણ ફેરફાર કરવો નહિ, તેમ જ એ મોજ (ગામ) ને સંબંધે જમીનવેરા, કારખાનાનો વેરા, માયાવેરા, મુકાદમી વેરા, કાનુન ગોઠમે વેરા, દીવાનો કર, શહેનશાહી માગણીઓ વગેરે જાતના વેરા ભરવાની માગણી કરી તેમને હેરાન કરવા નહિ. તેમ દરેક વર્સે તેમની પાસે નવાં નવાં કરમાન માગવાં નહી અને આ ફરમાનની વિરુદ્ધ વર્તવું નહિ.

લખ્યું, મેહર મારને ૧૭ મે દિવસે ઇલાહી વરસ હજીમાં (રવિવાર, તા. ૨૬ મી સપ્ટેમ્બર ઇ. સ. ૧૬૩૩, વિક્રમ સંવત ૧૬૯૦)

શાહી ફરમાન ૭ મું (ગોકુલવાસ બાબદ).

અબુલ મુસદ્દેદ્દીન શાહજહાન બાદશાહનું ફેરમાન—ધધિર મહોરો છે.

હાલમાં એક સુખપ્રદ અને મદાન ફરમાન એવું બહાર પાડવામાં આવ્યું છે કે મહાવન પરગણાનું ગોકુળ ગામ જુના વખતથી વિઠ્ઠલરાય ગોસ્વામીના ફરજદારને તેમના હાથરદારના

● આ દીકાયત અથવા તિલકાયત-એ ઉલ્કાબ સોપી પહેલો શાહજહાન બાદશાહે આ ધરના આદીપતિને આપેલો છે.

ખરચ માટે કર્યા મુકત કરી આપવામાં આવ્યું છે, તેથી આ સર્વામાન્ય આગ્રા પ્રસિદ્ધ કરવામાં આવે છે કે હાલના તથા હવે પછી યનારા સર્વ મુલકી અમલદારો અને જાગીરદારોએ આ હુકમને આધીન થવું અને સદરહુ ગામ એ હાકોરદારના ખરચ માટે તેમની પાસે રહેવા દેવું. અને સદરહુ ગોસ્વામી તથા તેમના ફરજદારને સંબંધે તેમાં કોઇ પણ પ્રકારનો ફેરફાર કરવો નહિ, અને તેમને દરેક વતના કરવેરા, માયા વેરા, ઝાડની હિપજના વેરા, મુલકી તથા ખીજત કર આપવામાંથી મુકત અને છૂટા ગણવા, અને તેમની પાસે નવા પરવાના માગવા નહિ કે જેથી એ ગોસ્વામી જે જુના વખતની હમરા ચિરસ્થાથી રાજ્યના શ્રેયે સંબંધે ઇશ્વરપ્રાર્થનામાં મશગૂલ રહેતા આવ્યા છે તે પોતાની રિયતિથી સતોપ પાગી હમરા હમ્મેશ સુધી ટકે એવા રાજ્યના ભલા માટે ઇશ્વર પાસે પ્રાર્થના કરવામાં કાળ વ્યતીત કરે.

લખ્યું, આખાન માસને ૬ ફે દિવસે ઇલાહી વરસ જહામાં (તારીખ ૧૮ મી ઓક્ટોબર ઈ. સ. ૧૬૮૩. વિક્રમ સંવત ૧૬૯૦)

શાહી ફરમાન ૮ મું (ગોકુલમાં નિશ્ચિંતવાસ અને ગાયો બાબદ.)
તે પવિત્ર (પરવરદગાર)ના નામથી શાહજહાન બાદશાહનું ફરમાન શાહજહાન બાદશાહના શાહઝાદા મહમ્મદ હાસ સિકોહની મહોર હી. સ. ૧૦૫૩, (ઈ. સ. ૧૬૪૩).

હાલમાં એવું આગ્રા ફરમાન પ્રસિદ્ધ કરવામાં આવ્યું છે કે વિઠ્ઠલરાય તે હામોદર દીક્ષિતના પુત્ર આ ચિરસ્થાથી રાજ્યનું ત્રણ પ્રાર્થનાર, ગોકુળ કરવામાં રહે છે, અને એ જગા સદરહુ અમલનું વતન છે; તેથી ત્યાં તેમની મિલકત આવેલી છે તથા ત્યાં તેમની ગાયો રહે છે, (તેથી) હુકમ ફરમાવવામાં આવે છે કે કોઇ પણ વ્યક્તિએ એમને હેરાન કરવા યા રંજાડવા નહિ કે જેથી તેઓ પોતે નિશ્ચિંત અને હમારૂં ચિરસ્થાથી રાજ્ય ચિરકાળ ટકે તેને માટે ઇશ્વર પાસે પ્રાર્થના કરવાની માત્ર રાખે અને તે કાર્યમાં મચ્છા રહે. એ જગાની પાટોશના બદમાશોએ તેમ જ ખીજતોએ એમને એમની મિલકતના સંબંધમાં હેરાન કરવા નહિ કે તક્લીફ આપવી નહિ.

શાહી ફરમાન ૯ મું (દાણામંડીના હક્ક બાબદ.)
ઇશ્વર મહોર છે.

પરસ્કાહ આજમખાન શાહજહાનના તાબેદારની મહોર (હી. સ. ૧૦૫૬).

મહાવન પરગણાના હાલના તથા હવે પછી યનારા દીવાની અમલદારોને મક્કમ થાય કે નાયા નામના એક શખ્સે એવી અચળ ગુનરી કે ગોકુલની દાણામંડી (હાટ)ના તોળાટની મુકી લેવાનો દક્ક જો તેને આપવામાં આવે તો દર વરસે સરકારમાં તે રૂ. ૧૭૫ ભરશે. પરંતુ અત્યાર સુધી આવ્યા આપના રિવાજ મુજબ એ મંડીને સંબંધે હિપસાવવામાં આવતાં નાણાં કદિ પણ સરકારી ત્રીજેરીમાં લેવામાં આવ્યાં નથી. તેમ જ એવું પણ કહેવામાં આવેલું કે એવી રીતના દક્ક ગ્રાસ કરી મજદુર નાથાનો ઇરાદો ત્યાં આગળ એક દુકાન જમાવવાનો છે, અને જો તેમ કરવા દેવામાં આવે તો વેપારીઓની આવજમ જો થઇ જવાનો કર રહે છે. તથા ત્યાંના વતનીઓ તથા રહેવાસીઓ જેઓ પોતાને જોષ્ઠો દાણો તથા ખીજ વસ્તુઓ એ મંડીમાંથી ખરીદે છે તેમને માટે પણ એક દરકત રૂપ થઇ પડે, અને વળી જુના વખતથી એ મંડી ગોસ્વામી

જરૂર હિસ્તાનમાં દાણાનું બનલ (દાર, મંડી, મંદી) નથી બસાય છે ત્યાં દાણો વેચનાર પોતે ખરીદનારને દાણો તોળી આપતો નથી; પણ જોડા તોળાટ રાખે છે, તે તોળાટને ખરીદનાર યા અનાજ આવે છે. તે મુકી લેવાના દક્કને સંબંધે આ સનદ છે.

(ફ. મો. જવેરી.)

વિકુલરાયનાં માણસોના કબજામાં ચાલતી આવેલી છે, તેમજ ત્યાંથી માણસ ખરીદ કરનાર વેપારીઓ તથા ખીજા ગ્રાહકો પોતાની રાજપુત્રીથી વિકુલરાયનાં એ માણસોને મુજબ કરમ આપે છે. તેટલા માટે એવો દુકમ કરવામાં આવે છે કે રેલ્વેનાં ભંડારને ખાતર એ મંડી કરીમના રિવાજ મુજબ ગોસ્વામી વિકુલરાયનાં માણસોના તાગમાં ચાલુ-રાખવામાં આવી છે. માટે અમલદારોએ ખાતર રાખવું કે કોઈ પણ ખીજા માણસો તેમાં દખલખીરી કરે નહિ, કે જેથી વેપારીઓ નિર્ધિતપણે આમલ કરે અને કોઈ રીતનો નવો રિવાજ દાખલ થાય નહિ. આ બાબતમાં આવો દુકમ થયો છે તે સૌને રાચન થાય.

અર્થ, મહાન સાગાન માસની ૧૦ મી તારીખે હી. સ. ૧૦૫૧ (ઈ. સ. ૧૬૪૬, વિક્રમ સંવત ૧૭૦૩.)

શાહી ફરમાન ૧૦ મું (ગોકુલની દાણામંડી બાબત)

ઈશ્વર મહોરો છે.

શાહજહાનના તાબેદાર મુકરમતખાનની મહોર.

મહાવન પરગણાના હાલના તથા હવે પછી યનારા મુલ્કી અમલદારો તથા દીવાની અધિકારીઓને આજ્ઞ થાય કે મુલ્કુર પરગણામાં આવેલી ગોલે ગોકુલની દાણામંડી ગોસ્વામી ગિરધરલાલના તાબામાં આપવામાં આવેલી છે. તેથી નજીકવાતું કે આગલા દિવસ મુજબ મુલ્કુર મંડી મુજબ રાખના તાગમાં રહેવા દેવી. એ અધિકારીઓએ એમને એ બાબતમાં કોઈપણ પ્રકારે હેરાન કરવા ચા રંગાડવા નહી. આટલા માટે એ બાબતમાં આ દુકમ કાઢવામાં આવ્યો છે.

અર્થ, સદર માસની ૧૦ મી તારીખે બાદશાહને તખ્તનસીત થયાના ૨૦ માં વરસમાં (રવિવાર તા. ૭ મી માર્ચ ઈ. સ. ૧૬૪૭, વિક્રમ સંવત ૧૭૦૩)

શાહી ફરમાન ૧૧ મું (ફરિયાદો સાંભળવાં બાબત)

તે દયામય અને કૃપામય (ઈશ્વર)ના નામથી શાહજહાન; બાદશાહ

ગાઝીના શાહજહાન મહમ્મદ દારા શિકોહની મહોર.

હુમારી કૃપાને માટે દરેક રીતે લાયક તથા અનુમદાને માટે સંપૂર્ણ રીતે યોગ્ય એવા મુકરમતખાનને આજ્ઞ થાય થાય કે ગોકુલ અને ગોપાલપુરના રહીશ, દામોદરના પુત્ર વિકુલરાય જે કે હમારા ચિરંજીવી રાજ્યના એમને અર્થે હંમેશા ઈશ્વરની પ્રાર્થના કરે છે તેમજ હાલમાં (હમને) મહાન મહેનશાહને અરજ મુજબી રાજ્યના સ્તંભે (મુકરમતખાન) તરફથી જે જે એમના એમને અર્થે કરવામાં આવ્યું તે તે જણાવ્યું. (એ અરજ સાંભળ્યા બાદ) તેમને રીતસર અત્રેથી વિદાય થવાની રજા આપવામાં આવી છે, અને તેથી તેઓ પોતાને વતન પાછા પાછા ફરે છે. તેટલા માટે આ મહાન દુકમ કાઢવામાં આવે છે કે રાજ્યના સ્તંભ પાસે તેઓ પોતાના કોઈ પણ કાર્ય માટે વિનવિ કરે તો આ દુકમ મુજબ અને તેટલું તેમનું ભયું કરી આપવાની પોતે કેશેશ કરવી અને દુકમની વિરુદ્ધ કોઈને વર્તવા દેવું નહિ, તેમજ એમને કે એમના ભાઈઓને કોઈપણ પ્રકારે હેરાન કરવા નહિ, કે જેથી પોતાના વતનમાં પોતે આપાદ થઈ આ ચિરંજીવી રાજ્યની આબાદી માટે ઈશ્વરની પ્રાર્થના કરવા રહે.

અર્થ, પહેલા જમાદી મહિનાની ૨૭ મી તારીખે હી. સ. ૧૦૫૭ (ઈ. સ. ૧૬૪૭, વિક્રમ સંવત ૧૭૦૪)

શાહી ફરમાન ૧૨ સુ (શ્રીનાથજીની ગાયો બાબત).

બુલંદ ઇકબાલશાહ મહમ્મદ દારા શિકોહ શાહજહાન બાદશાહ ગાઝીના શાહઝાદાનું ફરમાન.

શહેનશાહની મહેરબાનીના ખાહેશમંદ, હાલનો અને લવિષ્યના જોડ પરગણાના મુઢી અમલદારોને ઝાંહેર થાય કે આવી શહેનશાહની પાસે અરજ મુજબવામાં આવી છે કે ગોરધન નામનું દેવાલય કે જે મોજે ગોપાલપુરમાં આવેલું છે, તેના તાબાની ગાયો મજદૂર પરગણાનાં ગામ બહાવ અલગજાની જમીન (સીમ) માં ચરવા નય છે, અને તેથી આ શહેનશાહી ફરમાન કાઢવામાં આવ્યું છે, (કે) જે દેવાલયના તાબાની ગાયો તેરહી ગાયો તે જગાએ ચરવા નય તો ચરાઈના કર લેવાને બદલે કોઇએ તેમને (ચરતાં) અટકાવવી નહિ અને એ બાબતમાં કશો લોભ કે આશા રાખવાં નહિ. આ બાબતમાં આવે ખરેખરો હુકમ સમજવો.

લખ્યું, જમાદી ખીમત મહીનાની આઠમી તારીખે શહેનશાહના ગાદીએ આવ્યાને ૩૨ મે વરસે (ખુધવાર ૧૩ મી માર્ચ ઈ. સ. ૧૬૫૮ વિ. સં. ૧૭૧૪)

શાહી ફરમાન ૧૩ સુ (ગોકુલ અને કરવેરાની માટી બાબત)

તે કયામત અને કડખામત (ઇંદર) ના નામથી શાહજહાનના ફરમાનની મહોર દારા શિકોહની મહોર.

શહેનશાહની મહેરબાનીની ઉમેદ રાખનારા, હાલ તથા હવે પછી ધનારા, મહાવન પરગણાના કિવાની અમલદારોને માલમ થાય કે આવી ફરમાનના શહેનશાહ પાસે અરજ મુજબવામાં આવી છે કે તેમના મહાન ફરમાન મુજબ મજદૂર પરગણામાં આવેલું ગોકુલ ગામ સેવક ગિરધરને ગોકુલનાથના હકોરદારના અરજને માટે આપી દેવામાં આવેલું અને મજદૂર ગિરધરના પરશોકવાસ બાદ તેના વારસોના કબજા બોગવટામાં તે આવ્યું છે; તો આ મહાન ફરમાન કાઢવામાં આવે છે કે જેને તાજે ચતું બેઠ્યું. એવાં (આમણાં) ફરમાનોની રૂએ અને અપાર મુશી આસતા આવેલા રિવાજ મુજબ તે ગામ ચિત્રલરાયના મુત ગિરધર તથા સદગતના નળીરા તથા બીજા વારસોના તાબામાં રહેવા હેતુ અને જે જે કરવેરામાંથી તેમને મુક્ત કર્યા છે તે તે કરવેરા તેમની પાસથી માગી તેમને હેરાન કરવા કે રંગડવા નહિ.

લખ્યું, રજબ મહિનાની ૨૭ તી તારીખે ઈ. સ. ૧૦૬૮ (ઈ. સ. ૧૬૫૮ વિક્રમ સંવત ૧૭૧૪)

શાહી ફરમાન ૧૪ સુ (ગોકુલ ગામ બાબત)

તે પવિત્ર અને મહાન ઇંદરના નામથી અબુલ મુઝફ્ફર જલાલુદ્દીન મહમ્મદ

શાહ આનમ બાદશાહ ગાઝીની મહોર ઈ. સ. ૧૧૬૪.

આ સુખના સમયમાં આ ઉચ્ચ અને દયાળા તરેલું ફરમાન કાઢવામાં આવ્યું છે કે, ખિલાફતના સ્થાન અકબરબાદવા સુખમાં આવેલા ઇસ્લામાબાદના સરકારમાં મહાવન પરગણાનું ગામ મોજે રસાલપુર ઉદ્દે ગોકુલ તીમગાઝ દનામ તરીકે ધાર્મિક સભ્યોથી સત, અને સત્ત્વ જાનથી અંકિત એવા ગોસ્વામી મુરલીધર તથા તેનાં ફરજ દોને કરવેરાથી મુક્ત કરી આપવામાં આવ્યું છે. તેનાં સબેધમાં તાલુકાના મજદૂર મુજબ મુસકાનઘણીનાં પાનખર

●વાવચ્ચદ્રિવાકરી બોગવાય તેવી નગીર, કરવેરાથી મુજબ રેશી. રાકાચ અને વારસોને ઉતરે તેવી ૧ શહેનશાહ મંદૂર કરેલા ફરમાનનો ખરોડ. ફ. ૬૭૬. નીન પ્રમાણે ગણાતા વાર મહિનામાંના એક મહિનાનું નામ. (ફ. મો. એવેરી).

અતુલ્ય એક એવો તુમાર બહાર પાડવામાં આવે છે કે હમારા નામાંકિત અને વિશ્વાસુ શાહજાદાઓ, સત્તાવાન હિસાબી ખાતાના વચ્ચે, ઉચ્ચ ઉમરાવો, આખરદાર, હાકીમો, મુખી મુફ્તી અમલદારો, રાજ્યના દીવાની અધિકારીઓ, શહેનશાહી કારોબારના ઓદેદારો, જગીરદારો અને કરોડીઓ, હાલના તથા ભવિષ્યના એમણે આ ફરમાન-મુજબ યાવઅન્દરદિવાકરૌ વર્તવા પ્રયત્ન કરવો અને મળદૂર ગામ તેમના વંશવારસોના કબજા ભોગવટામાં રહેવા દેવું, તેમાં કોઈ રીતનો ફેરફાર કરવો નહિ. રથાનિક કે શહેનશાહી સવળા પ્રકારના કરવેરામાંથી તેને મુક્ત ગણવું, તેમની પાસે પેશકશ, જમીનનો કે કારખાના પરનો કર, માથાવેરા, કરવેરા ઉધરાવનારનો વેરા, દારોગાશી, શિકારની વેક, બેગાર (મજૂર તરીકેની વેક), મુકાદમી, કાનુનગોઈ વગેરેની માગણી કરી, તેમને હેરાન કરવા કે રંજનપા નહિ. તેમની પાસે દર વરસે નવી સનદ માગવી નહિ, આ હુકમને તેમણે ખરેખરો સખત હુકમ મણવો. આ શહેનશાહી ફરમાનની વિરદ તેમણે વર્તવું નહિ.

લખ્યું, ખીજા જમાદી મહિનાની ૧૫ મી તારીખે હમારા તખ્તનાશીન થયાના ૧૩ મા વરસમાં (તારીખ ૨૫ મી સપ્ટેમ્બર ઈ. સ. ૧૭૭૧. ડિ. સં. ૧૮૧૭).

શાહી ફરમાન ૧૫ મું (ગોપાલપુરા બાબદ)

જેવી રીતે આગલું ફરમાન શાહઆલમ બાદશાહે ગોકુળ ગામની જગીર માટે આપ્યું છે તેવું આ ફરમાન ગોપાલપુર ગામ માટે છે. એની ભાષા માત્ર ગામના નામ સિવાય અક્ષરશઃ આગલા ફરમાનની ભાષા મળતી આવે છે. (ક. મો. ઝવેરી)

શાહી ફરમાન ૧૬ મું (ગોકુલ અને કરમાફી બાબદ)

બક્ષી ઉલ્-મુલક નજદે હલદિકાર ઉદ્દૈલાં મીરઝા બેગખાન બહાદૂર

ગાલેખ બાદશાહ શાહઆલમ ગાઝીના તાબેદારની મહોર.

શહેનશાહી રથાન અકબરાબાદના સૂબામાં આવેલા મદાયગ તાલુકાના કસબા ગોકુળના મોધરીઓ, કાનુનગો, અમલદારો, ખેડૂતો, ગણતીઆ, અને મુફ્તી અમલદારોને માત્રમ યાવ કે મોજે શ્રી ગોકુળ તથા મુખારકપુર અને તેને લગતી જમીનો વગેરે કદીમ વખતથી એ કસબાના હક્કદારના મળદૂર મુજબ ગોસ્વામી મોરલીધરને નામે કરી આપવામાં આવેલી છે, અને તે મળદૂર શાખસના કબજા ભોગવટામાં આવુ રહેલી છે. આ સળખથી એમને સરકારી કરવેરા ભરવાની જવાબદારીમાંથી મુક્ત કરવામાં આવેલા છે, અને તે મુજબ કરવેરાથી તેઓ મુક્ત રહેલા છે; તેથી તમારી એ ફરજ છે કે તમારે મળદૂર આગે કદીમ રિવાજ-મુજબ મળદૂર શાખસના કબજા ભોગવટામાં તેમની મિલકત તથા વારસામાં મજેશી મિલકત તરીકે રહેવાં દેવાં, અને અંદા, ઈનામ, ઘાટની શી લેવાનો તેમનો હક્ક છે, એમ આગળથી નક્કી થયેલું છે તે મુજબ તેમને લેવાં દેવાં. તેમને કોઈ રીતે હેરાન કરવા મા રંજનપા નહિ. વળી હુકમ મુજબ કરવેરા તથા માલ મુજારી વસૂલ કર્યા બાદ, તેમાંથી દર વરસે અને દર વરસે તેમનો હક્ક મુજબનો ભાગ તેમને આપી દેવો. આ હુકમને તેમણે સખત હુકમ ગણી તે મુજબ વર્તવું.

લખ્યું, રાજાલ મહીનાની ૧૫ મી તારીખે શહેનશાહી તખ્તનાશીનીના ૧૫ મા વરસમાં (તારીખ ૩૦ મી ડીસેમ્બર ઈ. સ. ૧૭૭૩. ડિ. સં. ૧૮૨૬)

શાહી દરમાન ૧૭ (ગોવધની મનાડ બાબત)

લોઈ લેકનું દરમાન.

મજની ભૂમિ એટલે મયુરા એ વિંદુઓનું વનનું પવિત્ર ક્ષેત્ર છે, તેથી તે જમીન ગાયને શ્રાંધ પણ તરૂંથી શ્રાંધી રીતની ઈતિ કે દરદર થાય તે ચોખ્ખું ક્ષેત્ર નહિ તેથી ક્ષેત્રજન સેનાધિપતિ બલરાવ છારાં લોકે માહિય, જેઓના વચ્ચેમાં થયા અને ક્ષેત્રજનિ રહે છે છે અને જે ક્ષેત્રના વિશ્વસનીય સેવક છે તેઓ એકે દુકમ કરે છે કે ક્ષેત્રનો પંદર કરનાર થા શ્રાંધ પણ અન્ય માણસ, પછી તે મયુરાનો વસ્તી હોય કે વચ્ચી મિત્રાં હોય, કે મયુરાની આસપાસ રહી શહેરમાં આવગર કરતો હોય તેણે ગાયનો વધ કરવો નહિ. આ સાબળથી એવું દરમાન કાઢવામાં આવ્યું છે કે ઉપલી વડમાં શ્રાંધે એવધ કરે નહિ જે ને કુકમનો શ્રાંધ અનાદર કરશે તો તેના પર 'કાષ્ટકેમર' પ્રથમ વચાવવામાં આવશે અને તેના વચ્ચે શ્રાંધ જાતનું બહાનું સાંભળવામાં આવશે નહિ. લખ્યું. તારીખ ૩ જુલાઈ ૧૯૨૬.

શ્રીવલ્લભરાય.

શ્રીગિરિધરજી*૪

(જન્મ ૧૭૪૩ આસો સુદ ૬) (જન્મ સં. ૧૭૪૫ ચેત્ર સુદ ૩)

૩ મા ટિકેત-પેઢી ૯ મા-૮ મા ટિકેત

શ્રીમુરલીધરજી*૧૧

શ્રીમાલકૃષ્ણજી.

જન્મ સં. ૧૭૭૪.

જન્મ સં. ૧૭૭૫.

શ્રીગોવિંદરાયજી*૫

શ્રીગોવિંદજી.

(જન્મ ૧૭૬૩ આસો વદ ૧૦)

(જન્મ ૧૭૬૯ માગસર વદ ૧૧)

૬ મા ટિકેત | પેઢી ૧૦ મા.

શ્રીગિરિધરજી*૬

(જન્મ ૧૮૨૫-જેઠ વદ ૦)

૧૦ મા ટિકેત | પેઢી ૧૧ મા.

શ્રીદામોદરજી*૭

(શ્રીદામજી)

(જન્મ ૧૮૫૩ આસો સુદ ૪)

૧૧ મા ટિકેત | પેઢી ૧૨ મા.

શ્રીગોવિંદજી*૮

(જન્મ ૧૮૭૬ મારતક વદ ૧૪)

૧૨ મા ટિકેત | પેઢી ૧૩ મા.

શ્રીગિરિધરીજી*૯

(જન્મ ૧૮૯૯ જેઠ સુદ ૧૨)

૧૩ મા ટિકેત | પેઢી ૧૪ મા.

વિવ્રમાન) શ્રીગોવિંદરાયજી*૧૦

(જન્મ ૧૯૧૭ આસો વદ ૧)

| પેઢી ૧૫ મા.

વિવ્રમાન) શ્રીદામોદરજી*૧૧ બાવાસાહેબ

(જન્મ ૧૯૫૩-ગોષ સુદ ૬)

| પેઢી ૧૬ મા.

વિવ્રમાન) શ્રીગોવિંદરાયજી.

(જન્મ સં. ૧૯૮૨).

આવરચક સમજીતી.

૧ ખીળ ટિકેત શ્રીદામોદરજી અને તેમના નાના ભાઈ શ્રીગોવિંદરાયજી વચ્ચે સં. ૧૬૬૫માં પ્રથમ ટિકેત શ્રીગિરિધરજીએ લગવડાસાથી સેવા વહેંચી આપી હતી.

૨ ચોથા ટિકેત શ્રીગિરિધરજીના આઈ શ્રીગોવિંદજી પોતાના ભત્રીજા પાંચમા ટિકેત શ્રીદામોદરજી નાની ઉંમરના હતા ત્યારે તેમના આજ્ઞાદર્શનથી જીવનની દૂર આરંભગેજના નાસથી કંટાળીને શ્રી ગિરિધર ઉપરથી શીનાયજીના સ્વરૂપને મેલાકમાં રાજ્ય સુખનિર્મલના રાત્રનામાં પધરાવી લાખ્યા. (સં. ૧૭૨૬-૧૭૨૯ માં).

૩ ૫ મા ટિકેત શ્રીદામોદરજી શીનાયજીને મેલાક-સિંદાઃ નાયકારામાં દાકતી સદાચી પધરાવી લાખ્યા. તેઓને મેલાકા કેષવાર જૂઝ યતી ત્યારે પડોસમાં ખીમતોરમાં ગિરાજતા શ્રી હરિરાયજી મહાપ્રભુજી ચારવાર ત્યાં શીનાયકારમાં આવી સેવાની રીત સિખવના અને સુધરવા. શ્રીદામોદરજી શ્રીહરિરાયજીનું હમેશા જન્મ માન રાખ્યા.

૪. શ્રીદામોદરજી પાંચમા ટિકેતને ત્રણ પુત્રો હતા. તેમાંથી શ્રીવિદ્યારાય મોટા પુત્ર તે શીનાયજી ૬ મા ટિકેત યમા. ૨ને શીવડનાયજીના ખીળ પુત્ર ગોવિંદજીએ વંદ-શ્રીહરિરાયજી

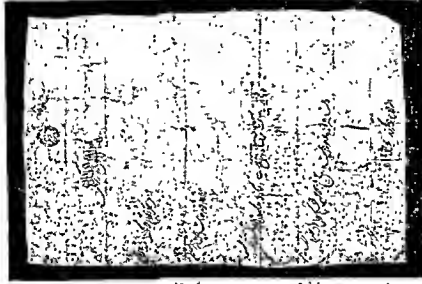
પુષ્ટિમાર્ગના ઇતિહાસ

શાહી ફરમાનો

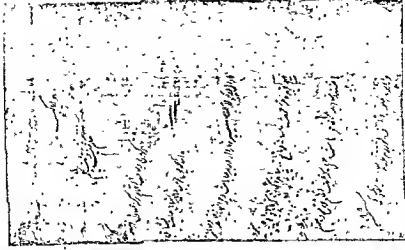
અસલાથિત્રો



અકબર બાદશાહનું ફરમાન નં. ૧



અકબર બાદશાહનું ફરમાન નં. ૨



અલી અકબરનો પુનાનું ફરમાન નં. ૩

- ૪ ૨ શ્રીવિઠ્ઠનાથજી ગુસ્મીજી દક્ષિણ વા મારફતે આગા ફર- અહમદ બાદશાહે
વિ. સં. ૧૫૭૨-૧૬૪૨ આગા નં. ૧-૨-૩-૪-૫ મેળવનાર આપ્યા
- ૫ ૩ શ્રીગિરિધરજી ૧ લા ટિકેટ શ્રીવિઠ્ઠનાથજીના સાત પુત્રોમાં
સં. ૧૫૨૭-૧૬૭૭ ન્યેષપુત્ર
- ૬ ૪ શ્રીદમોદરજી ૨ ના ટિકેટ સં. ૧૬૩૨
- ૭ ૫ શ્રીવિઠ્ઠનાથજી ૩ ના ટિકેટ સં. ૧૬૫૭ તિલકાયત-૫૬ મળ્યું શાહનશાહ બાદશાહે
આપ્યું
- ૮ ૬ શ્રીગિરિધરજી ૪ થા ટિકેટ સં. ૧૬૮૮ શ્રીવિઠ્ઠનાથજીના ચાર પુત્રોમાં
ન્યેષપુત્ર
- ૯ ૭ શ્રીદમોદરજી ૫ મા ટિકેટ સં. ૧૭૧૧ શ્રીનાથજી મેવાડમાં પધાય ત્યારે ઔરંગઝેબનો નાસ
આ મહારાજ બાળક હતો
- ૧૦ ૮ શ્રીવિઠ્ઠનાથજી ૧ ફા ટિકેટ સં. ૧૭૪૩ મેવાડમાં જન્મ રાણા મુનસિંહના મે
(શ્રીગિરિધરજી સં. ૧૭૪૫) વાડમાં જન્મ્યા, ત્રીન
ધરમાં મોટે બચા
- ૧૧ ૯ શ્રીગોવિંદનાથજી ૭ મા ટિકેટ સં. ૧૭૬૩ શ્રીગોવિંદનાથજીએ નિર્વસ લીલા
કરી તેથી નાના બાઈ ગોવિંદજી
તે ગાદીએ આવ્યા
- ૧૨ ૯ શ્રીગોવિંદજી ૮ મા ટિકેટ સં. ૧૭૬૬ પ્રથમ શ્રીવિઠ્ઠનાથજીના ચતુર્થ
કુમારશ્રીગોકુલનાથજીની ગાદીએ
બચા હતા, પણ ન્યેષ બંધુએ
નિર્વસ લીલા કરી ત્યારે પાછા
ગાદીએ આવ્યા, અને ત્યારથી બે
ગાદીના માલીક રહ્યા હતા
- ૧૩ ૧૦ શ્રીગિરિધરજી ૯ મા ટિકેટ સં. ૧૮૨૫ શ્રીનાથજી ઘરયાદ પધાર્યા
સં. ૧૮૫૮ હોલકરના નાસને મેરે
- ૧૧ શ્રીદાહજી-૧૦ મા ટિકેટ સં. ૧૮૫૩ શ્રીનાથજી ઘરયાદથી પાછા લે. જી. હામદ દેવી
(નિર્વસ) પધાર્યા સં. ૧૮૬૪ મુલાકાત લીધી-કેદ-
કામાં દક્ષિણ
મારફતે આગાને
ખિતાબ કબુલ રાખ્યો
- ૧૫ ૧૨ શ્રીગોવિંદજી ૧૧ મા ટિકેટ સં. ૧૮૭૬ શ્રીદમોદરજી તે ૫ મા ટિકેટના
બીજા પુત્ર શ્રીગિરિધરજીના વગે-
માંથી મોટે પધાર્યા
- ૧૬ ૧૩ શ્રીગિરિધરજી-૧૨ મા ટિકેટ સં. ૧૮૯૬
- ૧૭ ૧૪ શ્રીગોવિંદનાથજી ૧૩ મા ટિકેટ સં. ૧૯૧૭ સંપ્રદાન મહારાજાઓ જાણવાડે તેથી પિત
ગની તેથી મળે છે
- ૧૮ ૧૫ શ્રીદમોદરનાથજી બાવાસાહેબ સં. ૧૯૫૩ બાવિતિવ્રજાયત
- ૧૯ ૧૬ શ્રીગોવિંદનાથજી (બાવાસાહેબના ચિરંજીવી, સાવિતિવ્રજાયતના પુત્ર

[સં. ૧૯૮૮ ના 'ગુજરાતી' પત્રના ટીપ્પણસર્વાં પૃષ્ઠો જુદા જુદા સ્થાને]

પુષ્ટિમાર્ગની ઇતિહાસ.

શ્રીગોકુલેશચરિત્ર.

માર્ગશીર્ષે સિતે પક્ષે સપ્તમ્યાં મૃગુવાસરે ॥

નિશામુખે જાયમાનો રુવિમળ્યાં ગોકુલેશ્વરઃ ॥૧॥

માયાવાદિચિદ્રૂપાદિપ્રતિબંધનિવારકઃ ॥

દર્પદા દુર્મદાન્ધાનાં પાયાદો મક્તમૂષ્ણઃ ॥૨॥

શ્રીવિકૃલાધીશ્વરના ચતુર્થ કુમાર શ્રીગોકુલનાથજી પ્રભુચરણનું પ્રાકટય વિક્રમ સંવત ૧૬૦૮ ના માર્ગશીર્ષ શુકલ સપ્તમી અને શુકવારે પૂર્વાભાદ્રપદ નક્ષત્ર વેળાએ ત્રિવેણીતટ ઉપર આવેલા પ્રયાગ નગરમાં અઠેલ ગામમાં થયું હતું. એઓશ્રીના પ્રાકટયસમયના વર્ણનમાં અનેક વધાઈઓ મળ્યાપામાં ગવાઈ છે, તેમજ ગુર્જર ભાષામાં પણ તેઓશ્રીના કૃપાપાત્ર ભગવદીયોએ અનેક ધોળપદો રચ્યાં છે. તે ઉપરથી આપશ્રીના પ્રાકટયોત્સવ આ સંપ્રદાયના પ્રત્યેક ઘરમાં આનંદપૂર્વક થાય છે, શ્રીગોકુલનાથજીના ઘરના લેખીયોમાં તો એ પ્રાકટયદિન મહોત્સવનો મનાય છે અને તેઓને ત્યાં આગશર સુદ ૧ થી મંડપ બાંધી પૃથક્ પૃથક્ ભાવનાત્મક અનેક કીર્તનો ધોળ આદિથી ઉત્સવનું યથાર્થ સ્વરૂપ પ્રકટ થાય છે. ઉત્સવો નામ મનસઃ સર્વવિસ્મારક આહ્વાદઃ એ શ્રીવલ્લાધીશ્વરનાં વચનના સાક્ષાત્કાર શ્રીગોકુલનાથજીનો અનન્ય સેવકો કરાવે છે.

શ્રીગોકુલેશ પ્રભુનાં પ્રાકટયસમયે જે આનંદોત્સવ થઈ રહ્યો હતો, તેનું વર્ણન એક ભગવદીય આ પ્રમાણે ગાય છે:—

આજ તો અઠેલ ગામ પ્રયાગ ત્રિવેણી મુખધામ,

મહારાજધિરાજ ધિરાજે શ્રીવિકૃલશરી ।

તિન ત્રિલોકીનાથ પ્રકટ પુરુષોત્તમ તહાં,

અદ્ભુત સ્વરૂપ પ્રકટે શ્રીગોકુલેશરી ॥ ૧ ॥

શ્રીગિરિવરધારી સાથ શ્રીવિકૃલેશ મદનમોહન,

પાછે તે પધારે મયુરેશ દ્વારકેશરી !

દિન દિન અધિક પ્રતાપ તેજ આનંદ અત્રિક,

વલ્લભપ્રિય નિજ દાસ મિલો જગબલેશરી ॥

આ ઉપરથી જણાશે કે શ્રીમદ્ધિકુમાર શ્રીવિકૃલેશ્વર પ્રભુચરણે શ્રીગોકુલેશના પ્રાકટયસમયે શ્રીગિરિજાધરણ આદિ સ્વરૂપોને પધરાવીને મહોત્સવ કરેલો હતો.

યજ્ઞોપવીત અને અધ્યયન—સંવત ૧૬૧૬ ચૈત્ર શુકલ ૬ શુકવારે શ્રીપ્રભુચરણે શ્રીગોકુલનાથજીને યજ્ઞોપવીત દાન કરીને સાંપ્રદાયિક પ્રણાલી પ્રમાણે બ્રહ્મસંજ્ઞા કરાવેલો હતો. ત્યાર પછી શ્રીમત્પ્રભુચરણ અઠેલથી દ્વારકા પધાર્યા. ત્યાંથી પાછા અઠેલ પધારીને કણોટક દેશના ઉપાધ્યાય નારાયણલક્ષ્મીને વેદાધ્યયન કરાવવા માટે નિજબાલકો પાસે રહેવાની યોજના કરી. વેદાધ્યયન કર્યા પછી આપશ્રીએ બ્યાદરણ

આદિ વેદાંગોનો અભ્યાસ કર્યો.' તદનંતર દર્શન ગ્રંથો અને સાંપ્રદાયિક ગ્રંથોનું અધ્યયન પિતૃચરણ સન્નિધાનમાં જ કર્યું.

લગ્ન અને દૈવજીવોદ્ધાર—યોગ્ય વયને પ્રાપ્ત થયા પછી શ્રીગોકુલનાથજીનાં લગ્ન સંવિધિ થયાં. તેઓશ્રીનાં ધર્મપત્નીનું નામ શ્રીપાર્વતીવહુજી હતું. તેઓશ્રીનાં સ્વરૂપવર્ણનમાં મહાનુભાવી કવિવર ભગવદીય શ્રીગોપાલદાસજી લખે છે કે.—

શ્રીગોકુલપતિ અતિ શુણ્નિધિ, તાત તણે પ્રતિબિંબરે રસના;

પાર્વતીપતિ પ્રેમમું, ગોલા, ગકલ કુટુંબ રે રસના.

આપશ્રી આર્યાવર્તના પ્રત્યેક ભાગમાં મધાર્યા હતા. એઓશ્રીના અનેક સેવકો થયા છે. એ સેવકોમાં મુખ્ય ૭૮ ભગવદીયો છે. એની નામાવલી વ્યાસવાળા ગોપાલદાસે રચી છે. એ મુખ્ય ભગવદીયોમાં પુષ્પ ભગવદીય કદ્યાણુભટ્ટ અને ભરૂચનિવાસી ભગવદીય મોહનભાઈજી મુખ્ય ગણાય છે. ભગવત્સેવાપરાયણ મોહનભાઈજી શુરભક્તિનું મૂર્તિમત્ સ્વરૂપ હોઈને શ્રીગોકુલેશપ્રભુના અનન્ય સેવક હતા. એઓની સ્વશુરદેવમા અસાધારણ પ્રેમભક્તિ હતી. એઓના સંસર્ગથી કેટલાક વૈષ્ણવોની શ્રીગોકુલેશમાં આસક્તિ થઈ અને તેઓ 'પાવડીઆ' ના નામે ઓળખાવા લાગ્યા. એઓમાં પણ ભેદ છે. ૧ પાવડીઆ, ૨ લીમડીઆ, 'પાવડીઆઓ' ની શુરભક્તિ આદરણીય અને પ્રશંસનીય છે, પરંતુ સ્વશુરવંશ અને સ્વશુરવંશસેવ્ય પ્રભુ તરફ અપેક્ષિત ભક્તિભાવનો અનાદર તો પ્રશંસાઈ નથીજ. લીમડીઆ વૈષ્ણવો 'પાવડીઆ' જેવા અંકુચિત દષ્ટિવાળા નથી. તેઓ સ્વશુરવંશને અને સેવ્ય સ્વરૂપોને માને છે.

મહાનુભાવી કદ્યાણુભટ્ટજી—શ્રીગોકુલનાથજીના અન્તરંગ ભગવદીયોમાં મહાધિપતિ શ્રીકદ્યાણુભટ્ટજી પણ છે. તેઓ ગિરિનારા પ્રાદ્યજી અને સંસ્કૃત ભાષાના ઉત્તમ જ્ઞાતા અને કવિવર હતા. વાર્તાપ્રસંગથી જાણી શકાય છે કે શ્રીગોકુલનાથજીના યુવમા ગિરિનારા પ્રાદ્યજીનો આદર વિશેષ હતો અને છે. ગિરિનારા પ્રાદ્યજી ત્યાં સુધી મળે ત્યાં ખીજ પ્રાદ્યજીનો સેવામાં અંગીકાર કરવામાં આવતો નથી. ગિરિનારા પ્રાદ્યજીનાં આથી વિશેષ ભાગ્ય શા હોય ? શ્રીકદ્યાણુભટ્ટજીએ 'કલ્લોલ' નામનો અન્ય સંસ્કૃતમાં ગનાવ્યો છે. જેનું પૂર ચાલીશ હજાર શ્લોકનું કહેવાય છે. આ ગ્રન્થમા શ્રીગોકુલનાથજીના લીલામૃતોદધિનું વર્ણન છે. એ ગ્રન્થનો એકાદ તરંગ મૂલ સંસ્કૃતમાં અમને મળ્યો હતો, જે વાંચવાથી સ્પષ્ટ જણાય છે કે શ્રીકદ્યાણુભટ્ટજી અપૂર્વ ભગવદીય હતા અને તેમની વાણી રસનિઃસ્પંદિની અને પુષ્ટિભક્તિના અલૌકિક રંગથી છત્રકાતી છે. તેઓએ ગીતા ઉપર એક રીકા પણ લખી છે, જેની એક લિખિત પ્રત 'શુભગતી' પ્રેમના માલીકિના પુસ્તકાલયમાં છે. એનું પૂર ૧૫૦૦૦ શ્લોકનું છે. એ ઉપરથી જણાશે કે આપશ્રીએ અનેક દેવી જીવોનો ઉદાર કર્યો છે.

એક અદ્ભુત પ્રસંગ—શ્રીગોકુલેશ પ્રભુના જીવનચરિત્રમાં એક પ્રસંગ સર્વનું ધર્મનું ધ્યાન ખેંચે છે. એ પ્રસંગે આપશ્રી તરફ માહાત્મ્યદષ્ટિએ જોના-

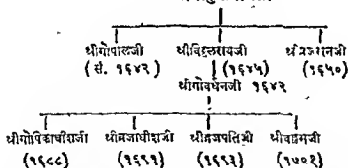
રાના હૃદયમાં ઉડી છાપ બેસાડી છે. સાંપ્રદાયિક ઇતિહાસમાં એ પ્રસંગ સોનેરી-અક્ષરે કોતરાઈ રહ્યો છે. એનું સંક્ષિપ્ત વર્ણન અત્રે આપીએ છીએ.

ચિદ્રપ નામનો એક સંન્યાસી હતો. અર્ધવિશ્વવવાહિમતનો તેણે સ્વીકાર કર્યો હતો. ગુજરાત આદિ સ્થળોમાં જઈને પોતાના અવેદિક મતનો ફેલાવો કરીને અનેક જનોને ધર્મવિમુખ બનાવતો હતો. ધર્મનો નાશ કરીને ધર્મચિંહોને ત્રાસ આપીને ભગવદ્ગીતોદ્ધાત આસુર પ્રવૃત્તિમાં મસ્ત રહેતો હતો. એ જ્યાં જતો ત્યાં ધર્મદ્રોહનો દાવાનળ સળગાવતો, અને અનેક નિર્દોષ પ્રાણીઓની હત્યામાં નિમિત્ત બનતો હતો. એક વેળાએ તે ફરતો ફરતો ઉત્તરેન પાસે આવી પહોંચ્યો. તે નગર પાસે આવેલી ભર્તૃહરિની શુક્લમાં તે ઉતર્યો તે વેળાએ ઉત્તરેનનો સરદાર મહમદ તકી નામનો યવન હતો. તેને ચિદ્રૂપે બહેકાવીને વેદિક ધર્મનો નાશ કરવામાં પ્રવૃત્ત કર્યો. આરે સંપ્રદાયના અનુયાયીઓનાં ધાર્મિક ચિંહોને ફર કરવાના કાર્યમાં મહમદને મદદગાર બનાવ્યો. ઘણા લોકો જનોએ નગરના સરદારના ત્રાસથી ધાર્મિક ચિંહોનો ત્યાગ કરવા માંડ્યો. તે સમયે ઉત્તરેનમાં શ્રીવલ્લભાધીશ્વરના કૃપાપાત્ર શ્રીગોકુલેશના સેવક બે વેંછુયો હતા. ૧ ત્રિકમ ભટ્ટ, ૨ દેવાભાઈ. આ બન્ને ધર્મત્રહી વેંછુયોએ તિલકમાળા આદિ ધર્મચિંહોનો સુદૃઢ ત્યાગ કર્યો નહતો. એક વેળાએ તેઓ ચિદ્રૂપની શુક્લ પાસે ઘડને નિકળ્યા, પણ તે પાખંડી સંન્યાસીને નમન કર્યું નહિ. આ અપમાનથી ચિદ્રૂપે પોતાની પાસે બોલાવીને તેઓને જણાવ્યું કે:—“તમે ત્રિકમ આદિથી વેંછુવ જણાઓ છો, પરંતુ નગરના હાકેમના હુકમ પ્રમાણે તમે હવે શુધી એ ચિંહોનો ત્યાગ કર્યો નથી, માટે તમે શુનેહગાર થયા છો, માટે જો તમારે શિક્ષા ન ભોગવવી હોય તો તિલકમાળાનો ત્યાગ કરો.” સંન્યાસીના આ વચ્ચે તરફે સંઘ પણ લક્ય દીક્ષા વિના ધર્મપરાયણ વેંછુયો પોતાને ઘેર ગયા. આ તરફ સંન્યાસીની પિત્તો ખરી ગયો. એકદમ ગુસ્સાના આવેગમાં મહમદ પાસે ગયો. મહમદને કહ્યું કે:—“જહાંગીર બાદશાહે પોતાની સલ્તનતમાં જે લોકો ધાર્મિક ચિન્હ ધારણ કરતા હોય તેઓને તે ચિન્હો છોડી દેવાની તાકીદ કરવાનો હુકમ કાઢ્યો છે અને તેનો ઠેકઠેકાણું અમલ કરવાને અને ફરમાશ કરી છે. જો તેનો અમલ તમારા રાજ્યમાં ગણખર નહિ થાય તો બાદશાહ તમારા પર નારાજ થશે. માટે તેનો સત્તર અમલ તમારા રાજ્યમાં થવાની તમને ખબર આપેલી છે છતાં પરિણામ ઠીક નથી આવ્યું. આજેજ બાદશાહી હુકમના અનાદર કરનારા તમારા રાજ્યમાં મેં જોયા છે.” સરદારે તુરતજ સંન્યાસી પાસેથી તે માણસોની માહિતી મેળવીને તેઓને પોતાની પાસે બોલાવી મંગાવ્યા. મહમદે તેઓને તિલકમાળાનો ત્યાગ કરવા કહ્યું ત્યારે તેઓએ જવાબ આપ્યો કે:—“તિલક માળા તો શિરને સાટે ગુરુદેવે બાંધેલી છે, તેને તોડવાની સત્તા ત્રિભુવનમાં કોઈને નથી, શિર છુદ્ડ થાય તોજ માળા પણ છુટી થવાની.” મહમદે આ ઉપરથી ગુસ્સે ધડને તેઓને હાથીના પગ નીચે કચડી નાખવાની શિક્ષા કરી. શિક્ષાનો અમલ

આપશ્રીના પરિવાર અને ચરિત્ર—શ્રીગોકુલનાયજીના ઘરના લેખલુવ રા. ઉત્સવલાલ પાસેથી એક લખેલી નોટ મળી, તેમાંથી “શ્રીગોકુલેશાષ્ટક” સંપૂર્ણ મળી આવ્યું. એ એષ્ટક મહાનુભાવી દેવ્યમૂર્તિ શ્રીહરિરાયચરણ કૃત છે, તેનું સુદૃઢ પ્રયત્ન કરવામાં આવ્યું છે. શ્રીહરિરાયજીના જ્ઞાનસંબંધમંત્રદાતા આપજી હતા. એ નોટમાં “શ્રીગોકુલેશાષ્ટોત્તરશતનામાવલી” એ નામનો એક અન્ય દષ્ટિગોચર થયો. તેમાંથી કેટલીક ઐતિહાસિક વાર્તા મળી આવી, તે અત્ર પ્રકટ કરીએ છીએ. શ્રીગોકુલેશ પ્રભુના ત્રણ બાળકો પ્રકટ થયલા. ૧. શ્રીગોપાલજી ૨. શ્રીવિઠ્ઠલેશરાય ૩. શ્રીગોવર્ધનેશજી. આપશ્રીના બિરાજતાં જ સ્વયંજ નિત્યલીલાસ્થ થયો હતો, એમ કહેવાય છે. આ ઉપરાંત ઉક્તાનામાવલીમાં લખ્યું છે કે જહાંગીરના કંથનનો અનાદર કરીને આપશ્રી દ્રાક્ષીર પધાર્યો હતા. ત્યાંથી સોરમજીમાં વાસ કર્યો હતો. ત્યારબાદ જ્યેષ્ઠ જ્ઞાતા લીલાસ્થ થયાના સમાચાર શ્રવણ કરીને શ્રીગોકુલમાં પધાર્યો હતા. જ્યેષ્ઠ જ્ઞાતાની પાદુકાજીને શ્રીજુસાંઈજીની પાદુકા સાથે આપશ્રીએ જ પધરાવ્યાં હતાં. આ પ્રમાણે નિષ્ઠુદ ભાવનો આધાર કરીને પુનઃ આપશ્રી સોરમજી પધાર્યો, ત્યાં થોડો સમય રહીને પરિવારસમેત ફરીને મજમાં વાસ કર્યો. આપશ્રીને સારંગી અતિપ્રિય હતી. આપ નિત્ય લગવદીયોને અતીક્રિક્ત લગવદીયોરસનું પાન કરાવતા. આટલી વિશેષ હકીકત ઉક્ત નામાવલીમાંથી મળી છે.

એક પ્રાચીન કલ્પવૃક્ષમાં શ્રીગોકુલેશપ્રભુના પરિવારનું આ પ્રમાણે દર્શન થાય છે.

શ્રીગોકુલનાયજી



આસુરવંધામોહ—પુષ્ટિમાર્ગના અતીક્રિક્ત રસના વિલાસનું ફેવી ચણિને દાન કરીને આપશ્રી સંવત્ ૧૬૯૭ ના માઘ વદિ ૯ નવમીને દિને નિત્યલીલામાં પધાર્યો. આપશ્રીની ભૂતલ ઉપર સ્થિતિ ૮૯-વર્ષ, ૨ માસ, ૧૭-દિન સુધીની છે. આપશ્રીની નિત્યલીલાસ્થિતિના સમાચાર શ્રવણ કરીને આપશ્રીના અનેક અંતરંગ લગવદીયોએ આ લોકને ત્યજ્યો હતો એમ ઉલ્લેખ છે.

ઉપસંહાર—ઉપર પ્રમાણે આપશ્રીનાં દિવ્ય ચરિત્રોને સંક્ષિપ્ત ઉલ્લેખ કરીને અત્ર વિરમીશું. સાધનોના અભાવને લીધે તેમાં ન્યૂનતા આવે એ સ્વાભાવિક છે, તે તરફ લક્ષ્ય ન આપતાં સાર શ્રદ્ધ કરવા વિનંતિ કરીએ છીએ.

માલાપ્રસંગની ઐતિહાસિકતા.

(લેખક:—૨૧, ૨૨ રામલાલ સુનીલાલ મારી.)

પ્રથુસો વર્ષ ઉપરનો સત્યાગ્રહ.

વિક્રમના સત્તરમા શતકના છેલ્લા ચરણના આરંભમાં એક સત્યાગ્રહનો પ્રસંગ બન્યો હતો. ગાંધીજીનો સત્યાગ્રહ રાજ્યપ્રાપ્ત અને ભારતવ્યાપી હતો. ત્યારે આ સત્યાગ્રહ ધાર્મિક અને મધુ-રોની આસપાસના વનખંડમાં જ ફેલાયો હતો. પણ એ ધાર્મિક સત્યાગ્રહ વ્યક્તિવાચક-એકે જ વ્યક્તિના અભય અને ધૈર્યના ફલરૂપ હતો, ત્યારે આ રાજ્યપ્રાપ્ત સત્યાગ્રહમાં લગભગ આખા સમાજે ભાગ લીધો હતો. છતાં પણ બને સત્યાગ્રહની પદ્ધતિ સરખી નેવામાં આવે છે. જાને નિઃશસ્ત્ર હતા અને પ્રમુખ રાજ્યસંતાની સામે હતા. પરંતુ ત્યારની રાજસત્તાના અને હાનની રાજ્યસત્તાના સ્વરૂપમાં ફેર છે. હાલની રાજ્યસત્તા અમે તેણે પણ કાયદાથી નિયંત્રિત છે અને તેને જાતના અનુકૂળ અને ઉત્તેજક અભિપ્રાયની અપેક્ષા રાખવી પડે છે. અસારના સત્યાગ્રહી પાસે પ્રકાશન અને પ્રચારનાં જેવાં વિષય સાધનો છે, તેમાં પ્રાચીન સત્યાગ્રહી પાસે ન હતાં. તે વખતે બાદશાહનો રાજ તે જ કાયદો મણતો અને તેને જાતના અભિપ્રાયની ફરકાર નહોતી. તેમાં પણ એ સત્યાગ્રહ જહાંગીર જેવા મમતી અને સત્તાપ્રિય બાદશાહ સામે હતો. છતાં પણ સત્યાગ્રહના મુળભૂત સિદ્ધાન્તો અનુસાર તે નિઃશસ્ત્ર અને ધૈર્યયુક્ત હોવાથી સફળ થયો હતો. ગાંધીજી કહે છે કે પ્રમુખમાં પ્રમુખ સત્તા સામે એક પણ વ્યક્તિ નિર્દોષ સત્યાગ્રહ આદરે તો પણ તે વિજયી થયા વિના રહે નહિ, એ સિદ્ધાન્તનું આ સત્યાગ્રહ સમર્થન કરે છે.

આ સત્યાગ્રહની હકીકત ટૂંકમાં આ પ્રમાણે છે. ચિંટૂ નામના સંન્યાસીના ઉપદેશથી જહાંગીર બાદશાહે એવો હુકમ કર્યો હતો કે ગ્રામજે તુલસીની માળા પહેરવી નહિ તુલસીની માળા વૈષ્ણવ સંપ્રદાયેનું આવશ્યક ચિહ્ન મણાય છે. એથી એનો ત્યાગ એ સંપ્રદાયેને ૧૫વાતક હતો. પરંતુ જહાંગીરના હુકમની સામે જાણુ ઘર્ષ શરૂ થયો તે સમયે વનખંડમાં શીવજીભાગ્યજીના શુદ્ધાદિત અને શ્રીહિતહરિવંશજીના રાધાવલ્લભી સંપ્રદાયનું પ્રાગલ્ભ્ય હતું. તેમના ઘણા અનુયાયી-ઓએ તુલસીમાળાને ત્યાગ કર્યો, પણ શીવજીભાગ્યજીના (ચતુર્થ) પૌત્ર શ્રીગોકુળનાથજી- (સં. ૧૬૦૮-૧૬૯૭) એ તેમ કર્યું નહિ. જહાંગીરના હુકમનો અમલ કરાવવા ચિંટૂ ઉત્તર-નથી મધુરામાં આવીને રહ્યો હતો અને જહાંગીરે તેને એ બાબતમાં સર્વ સત્તા સોંપી હતી. તેણે શ્રીગોકુળનાથજીને ઘણી ઘણી લાલચો અને ધમકાઓ આપી, પણ તેને વક્ત થયા નહિ. છેવટે પોતાના હુકમના અનાદર માટે જહાંગીરે તેમને કાસી જેવા જૂર અને વિકટ માર્ગવાળા પ્રદેશમાં મોખાસાની ઝાલમાં બોધાવ્યા અને તેઓ સીતેર વર્ષની ઉમ્મર છતાં પ્રવાસનાં અનેક કષ્ટો ભોગવી ત્યાં ગયા. ત્યાં પણ માળા ઉતારવાને તેમણે સાફ ના પાડી, એ ઉપરથી જહાંગીરે તેમને ધરખાર ત્યજવાનો હુકમ કર્યો. તે પ્રમાણે તેઓ ગોકુળ ત્યજીને શ્રોત્રમમાં જઈ રહ્યા, પણ માળા ત્યજ નહિ. પાછળથી જહાંગીરને પોતાની ભૂલ સમજાઈ અને તેનું ચિંટૂ પ્રત્યેનું માન ધરી ગયું, ત્યારે તેણે પોતાનો હુકમ રદ કર્યો અને શ્રીગોકુળનાથજી ગોકુળમાં આવીને રહ્યા.

મૂળ કાવ્ય.

આ પ્રસંગ વ્યારાના રહેવાસી વૈષ્ણવ કવિ ગોપાળદાસે ‘માલોદાર’ એ નામના મનમિશ્રિત સુન્દરાતી ભાષાના વિસ્તૃત કાવ્યમાં વર્ણવ્યો છે. એ કાવ્ય સં. ૧૬૯૯ માં રચાયું હતું. ત્યાર

કાવ્ય આખું પ્રકટ થયું નથી, પણ તેનો હેતુ સાર નહીંઆદનો સ્વ. લક્ષણાધારે એ સં. ૧૬૧ માં પ્રકટ કર્યો હતો અને કંઈક લાંબો સાર મોઢાસના મી. મનલાલ આંધીએ લખેલા શ્રીગોકુલનાથજીના જીવનચરિત્રમાં આપેલો છે. મેં પણ એ કાવ્યની એક હસ્તલિખિત પ્રત જોઈ છે.

પરંતુ આ પ્રસંગની હકીકત શરૂથી પ્રથમમાં નોંધાવેલી જેવામાં આવતી નથી, તેથી ઘણને તેની ઐતિહાસિકતા વિશે સંકા ઉત્પન્ન થઈ છે. એ સંકાનું નિવારણ કરવું, એ અલેખનો ઉદ્દેશ છે. મૂળ પ્રસંગ બન્યા પછી આ કાવ્ય માત્ર વીશ વર્ષમાંજ રચાયું હતું, અને શ્રીગોકુલનાથજીના લીલામાં પ્રવેશ પછી બે જ વરસમાં રચાયું છે. તેમાં એટલી બધી-ઝીણી વિગતો છે કે તે પ્રથમ દરને જ ઐતિહાસિક હોવામાં સંકા ઉત્પન્ન થાય તેવું નથી, છતાં પણ તેને બારીકાપથી તપાસી, તેની ઐતિહાસિકતા સિદ્ધ કરીશું. આ પ્રંયમાં ફરહીદ બાબતો અતિશયોક્તિભરેલી છે એ કબજ કરીશું; પણ તે ઇતિહાસ નથી, પણ કાવ્ય-અભિનૃત્ય કાવ્ય-છે એ વાત જૂલની જોઈએ નહિ. છતાં પણ એમાંની વિગતો ઇતિહાસ સાથે મેળવતાં મને સત્ય જણાયું છે, એમાં એક પણ પ્રસંગ એવો નથી જણાયો કે ઇતિહાસવિરોધી હોય.

કોઈ પણ કાવ્યની ઐતિહાસિકતા સ્થાપિત કરવામાં આગળનાં સત્ય છે કે કેમ તથા તેનો ઇતિહાસ સાથે મેળ મળે છે કે કેમ તે જોવું જોઈએ:—(૧) સ્થળો, (૨) મતુઓ અને (૩) પ્રસંગો. આ કાવ્યની આ બાબતો તપાસીએ.

સ્થળો:

આ કાવ્યમાં શ્રીગોકુલનાથજીના કારમીરના પ્રવાસનું વિગતવાર વર્ણન છે. તેમાંનાં સ્થળો કાવ્યનિક નથી, કેટલાંક અત્યારે પણ હયાત છે. બાકીનાં જહાંગીરના પ્રવાસવર્ણન સાથે મળે છે. ખુદશના બગવા વખતે આગ્રાથી લાહોર અને ત્યાર પછી કારમીરના પ્રથમ પ્રવાસે તે જાય છે. એ પ્રવાસોમાં કરેલા મુકામનાં જે નામ આપ્યાં છે તે-શ્રીગોકુલનાથજીના પ્રવાસનાં ... સાથે ઘણી ખરી રીતે મળતાં છે.

કાવ્યમાં ગોકુળથી કારમીરનું અંતર-મીનગર સુધીનું-૪૪ દિવસ જણાવ્યું છે. જહાંગીર આગ્રાથી કારમીરનું અંતર ૨૭૬ દિવસ લખે છે. પરંતુ, આમાં બે બાબતો વિચારવાની છે. જહાંગીરે કારમીરની હદ સુધીનું અંતર લખ્યું છે, એટલે કારમીરની હદથી મીનગર સુધીનું આગાંચેક દિવસનું અંતર કાવ્યના અંતરમાંથી બાદ કરવું જોઈએ. વળી શ્રીગોકુલનાથજી કારમીર જતા નિકળ્યા તે વખતે પ્રથમ આગ્રામાં ત્યાંના હાકેમ લરકરખાનને મળ્યા ગયા હતા. એટલે ગોકુળથી આગ્રાનું ૨૦ દિવસનું અંતર પણ તેમાંથી બાદ કરવું જોઈએ. એ બે અંતર બાદ કરીશું તો બને આંકડા સરખાજ થશે.

કારમીરના વર્ણનમાં ત્યાંના બ્રાહ્મણોના આચારસંજ્ઞાથી કાવ્યમાં આ પ્રમાણે લખ્યું છે:—

“હતાં વિદ્યા તો હે બહેન, જે નહિ કહું આચાર;

બાલણ અરુ નામ મ્હે-હાં તેસોઈ વિહવાર.” (૧, ૪૩૨)

૧ કવિશ્રી નાનાલાલે આ પ્રસંગ ‘જહાંગીર-દુરબંદી’ નામના પોતાના નાટકમાં નોંધ્યો છે (પ. ૧૧૧) કવિશ્રી ઇતિહાસના-ખસ કરીને મુજબ પુનઃ-પ્રજાર અસ્વાસી છે. ઇતિહાસના ઉપનામમાં અસ્વાસમાં તેણે મુજબમાં અદ્વિતીય છે. તેમણે બાદશાહનામાંના નાટકોમાંએક પણ પ્રસંગ ઇતિહાસવિરોધી લીધો નથી. આ પ્રસંગ તેમણે નાટકમાં કુશ્યા તેથી તેની ઐતિહાસિકતા તપાસી જ લે. એ તેમને તે વિશે સંદેહ પણ સંકા હોત તો એ નોંધવનું નહિ.

આ સંબંધી જહાંગીરનાં તુલુકે જહાંગીર આ પ્રમાણે લખે છે:—

“ Although most of the houses are on the riverbank, not a drop of water touches their bodies. In short, they are dirty outside as inside, without any cleanliness.

There is also a body of Brahmans living from old in this country who still remain there and talk in the Kashmiri tongue. Outwardly one cannot distinguish them from Mussalmans. They have, however, books in Sanskrit language and read them.”

—રોજર્સ અને બિચરિન્ડટ અનુવાદ ભા. ૨ પૃ. ૧૫૮ અને ૧૫૦.

મનુષ્યો.

આ કાવ્યમાં જણાવેલાં સ્થળો જેમ સત્ય છે, તેમ તેમાં જણાવેલાં મનુષ્યો પણ ઐતિહાસિક છે. તેમાં જણાવેલાં જહાંગીરના કુટુંબનાં માણસો અને સરદારોનાં નામ ફારસીઓમાં મળ્યાં આવે છે. એટલુંજ નહિ પણ તેઓ જે હોદ્દા ઉપર રતા તે પણ ઇતિહાસ તપાસનાં સાચાં લાગે છે. તેનો વિચાર અહીં કરીએ. તેમાંથી જે નામો સામાન્ય ઇતિહાસમાં પ્રસિદ્ધ છે તેવાં કે ખુશ, ખુર્રમ, તુરજહાં, અસરખાન—તે તપાસવાની જરૂર નથી, પણ જે નામ સામાન્ય ઇતિહાસમાં પુસ્તકોમાં જોવામાં આવતાં નથી તે અહીં તપાસીશું.

(૧) ઉત્તરજેનનો હાકેમ મહુમ્મદ તકી.

જહાંગીરે તેને સં. ૧૬૭૧ માં માંડું ગોદલ્યો હતો (તુલુક, ભા. ૧ પૃ. ૨૫૮) માંડે માળવાના મુંબાનું મુખ્ય સ્થળ હતું, એટલે ઉત્તરજેન તેના તાબામાં હતું.

(૨) આઝાનો મુબેદાર લરકરખાન.

સં. ૧૬૭૬ માં ત્યારે જહાંગીર કાશ્મીર જ્યાં નીકળ્યો ત્યારે તેને દક્ષિણમાંથી બોઝાવી આઝાનો હાકેમ નીમ્યો હતો. (તુ. ૨, પૃ. ૮૧.)

(૩) ચિરૂપતું અપમાન કરનાર તુરજહાંનો બનેલી હાકેમ બેગ.

તેજેજહાંની બેન ખાદીબ બેગમને તે પરણ્યો હતો. (તુ. ૨, પૃ. ૩૦૬)

(૪) શ્રીગોકુલનાથજીનો વિરોધી સારંગદેવ.

એ પંડિતજીના કાઠ ગામનાં જહાંગીરદાર અને જહાંગીરનો ખીદમતગાર હતો. (તુ. ૨, પૃ. ૧૮૨)

(૫) શ્રીગોકુલનાથજીને સોરમ નહિ જતાં પોતાના રાજ્યમાં આવવાનું

આમંત્રણ આપનાર રાય રતન હોડિા.

એ ખુદીના રાજા બોજ હાડનો પુત્ર હતો. એને જહાંગીરે સર ખુશદામનો ઇકામ આપ્યો હતો. (તુ. ૧, પૃ. ૧૩૧.)

(૬) જહાંગીરની મહેતારી ર મરીઅમ ઝમાની.

અકબરે આદશાહની બેગમ, જહાંગીરની મા અને રાજા હમવાનહાડની બેન (તુ. ૨, પૃ. ૬૪).

૧. આ લેખમાં જ્યાં જ્યાં તુલુક જહાંગીરી (સંક્ષિપ્ત તુલુક)નો નિર્દેશ છે, ત્યાં ત્યાં આ અંક નવારુંજ સ્પષ્ટ સમજાવું.

૨. સ્વ. લલ્લુભાઈ પારેએ મહેતારીનું અર્થ જ્ઞાનજ્ઞાનાની ઉપરી સ્ત્રી અમલદાર એવો કર્યો છે. (પૃ. ૧૮) એ ભૂલ છે. તેનો અર્થ મા યાય છે.

(૯) જાયસંગ જુરડીઆની દીકરી અને જહાંગીરની બેગમ માનીઆઇ.

મિકનેરના ગ્રામ રાય કયાણમલ્લનો પુત્ર રાય રાયસિંહ એ જુરડીઆ કહેવાતો (૫. ૧. ૧૩૭) તેની પુત્રીને જહાંગીર પરણ્યો હતો. (૫. ૧. ૫. ૧૩૨) આ બેગમનું નામ કાસી પ્રધામાં નથી, આ કાન્ય તે નામ પૂરું પાડે છે.

(૮) જેના માથા ઉપર જહાંગીરે ચિરૂપનો હાથ મૂકાવ્યો હતો તે જુલાહી.^૧

જહાંગીરના પાટકુવર ખુશનો પુત્ર, જેને અસફખાને જહાંગીરના મરણ બાદ થોડા દિવસ માટે દાવરઅસ નામથી આસપાદ બનાવ્યો હતો. પણ પાછળથી શાહજહાનના દરબાર પ્રમાણે મારી નાખ્યો હતો. આ નામ તુલુકે જહાંગીરીમાં નથી,^૨ પણ Peter Mundy ને પ્રવસજીતનામાં (History of Jahangir by Beni Prasad. p. 338) અને Gladwin ના જહાંગીરના ઇતિહાસમાં (૫. ૧૬૦) છે. કલ્લેલમાં પણ એ નામ છે, અને શાહજહાન તેના કરાવેલા ખૂનની નોંધ તેમાં છે. (૭. ૨૦).

પ્રસંગો.

રચગ અને મનુષ્યોના નામ કરતાં, ઐતિહાસિકતાના પ્રતિષાદનમાં પ્રસંગોની સ્થલા અને તેમનું કાલાતુસંધાન વધારે મહત્ત્વનાં છે. તેનું નિરીક્ષણ આપણે હવે કરીએ.

(૧) સં. ૧૬૭૪ માં જહાંગીર ગુન્રાતમાં આવ્યો હતો, ત્યારે તે ચિરૂપને ઉત્તરેન અખગ એક ગુફામાં મળ્યો હતો,

“એટલે સંવત સોળ આહોતેર થઇ એક વાત
જહાંગીર નૃપ આમરેથી જાતો હતો ગુન્રાત.
× × × ×
અવંતી જહાં ઉત્તરો નૃપ જેવાને કરી આંત,
પૂછ્યું તે વળતું તેહને ‘ક્યાં રહે છે મહાંત ?’
ગુફા માંડાં દેખાડીએ ત્યાંડાં મળ્યો તેણી વાર.”

આમાં પ્રથમ સંવતનો વિચાર કરીએ. આ કાન્યમાં જણાવેલા વર્ષ અને માસ ઉપર હિંદની મળના અનુસાર છે, એટલે સંવત ચેતમાં જલ્દાય છે અને માસ પૂર્ણિમાન્ત છે, અર્થાત્ વદમાં માસારંભ થાય છે. જહાંગીર ઈ. સ. ૧૬૧૬ ના નવેમ્બરની દસમી તારીખે નીકળી (૫. ૧. ૫. ૩૪૦) માંકું તથા ખંભાત થઇ ગુન્રાતના પાટનગર અમરાવાદમાં ઈ. સ. ૧૬૧૮ ના જાનેવારી માસની પાંચમી તારીખે, એટલે સં. ૧૬૭૪ ના પાંચ માસમાં દાખલ થયો હતો. તેથી કાન્યમાં આપેલો સંવત ગણેશ્વર છે.^૩

૧. સ્વ. લક્ષ્મણસિંહ પદ્મિનિ જુલાખ એલે નાકની વાળ એ ઉપરથી જુલાખી એલે મહર્ષી વાળી પહેરનાર જહાંગીરનો કોઇ મંત્રી એવો તક કરે છે. (૫. ૧૮), પણ એ ઘટિત નથી, તેમ તેને માટે કોઇ આધાર પણ નથી.

૨. તુલુકે જહાંગીરના અનુવાદક રોલસ અને બિવરિંગ તેની સૂચિમાં જાનીઆવની પુત્રીનું નામ જુલાખી હર્લ એમ જણાવે છે. મૂળ ગ્રંથમાં એમણે એ નામ ‘કાંસમાં લખ્યું છે, એટલે એ એમનો તક કર્યો. તે વાત સાચ હોય તો પણ ખુશન પુત્રનું નામ જુલાખી હર્લ એ ચાકસ છે, અને માત્ર વારસ તરીકે તેને ચિરૂપ પાસે આશાવાદ અપાવ્યો હોય એમ માનવું વધારે યોગ્ય છે.

૩. શ્રીગણેશવાપલના ચરિત્રમાં સં. ૧૫૭૨ નું વર્ષ આપ્યું છે, એ શા આધારે તે સમજાવું નથી. સ્વ. લક્ષ્મણસિંહ સં. ૧૬૩૪ નું વર્ષ આપે છે અને એ જેએશી હાથપ્રતમાં પણ એ જ વર્ષ છે. સં. ૧૬૩૪ વલ્લોલમાં પણ મૂકે ન થયે તેવા અમરાવાદમાં સં. ૧૬૭૪ નું વર્ષ ૨૫૪ રીતે છે.

પુણ્યાર્થસુધારિતગુપ્તમિતે વર્ષ (૧૬૭૪) જહાંગીરે ચવતાનામાલિકાનાં પાર્વતીનો નિજાન્નવણાત.
ગુર્જરદેશે... ૬૦ ૭, ૮૦ ૧)

with Jahangir for the release of Khusrau Achadrup spoke accordingly and Khusrau was released." (Tuz. 11, p. 104, foot-note).

ફલ્લોભમાં પણ આ વાત મેંધેલી છે.

(૫) શ્રીગોકુળનાયજી સં. ૧૬૭૭ ના આવણ (ગુજરાતી આવણ) વદ ૬ ના રોજ ગોકુળથી નીકળ્યા કાશ્મીર ભાદરવા સુદ ૧૩ ના દિવસે પહોંચ્યા હતા. અને આસો વદ ૨ (ગ. ભાદ્રપદ) ના દિવસે બાદશાહની મુલાકાત લીધી હતી. હવે એ જોવાનું છે કે એ મુદત દરમ્યાન જહાંગીર કાશ્મીરમાં હતો કે નહીં? તુઝુક ઉપરથી જણાય છે કે તેણે ઈ. સ. ૧૬૨૦ ના મિલિદર મહિનાની ૧૩ તારીખે કાશ્મીરમાં દશરતો તહેવાર ઉજવ્યો હતો અને એ જ મહિનાની ૨૭ મી તારીખે લાંથી આગ્રા જવા નીકળ્યો હતો. ઈ. સ. ૧૬૨૦ એટલે ભાદરવા-આસોમાં ચૈત્ર સંવત ૧૬૭૭ હતો.

(૬) બાદશાહે કાશ્મીરથી પાછા આવતાં ગોકુળમાં મુકામ કર્યો હતો અને મોલાનિવેધનો દુકમ રદ કર્યો હતો. આથી શ્રીગોકુળનાયજી સં. ૧૬૭૭ ના ચૈત્ર (ગ. ફાગણ) વદ ૫ સોરમથી નીકળ્યા વદ દશમે ગોકુળ પાછા આવ્યા હતા.

“ ચૈત્ર વદિ પંચમી ગુરુવારે સૂર્ય ત્રણ ધરી અગ્ને
વિજય કર્યો સોરમથી મહા મુજલ નગરા ધડતે.

x x x x

સંવત સોળ સતોતરે ચૈત્ર વદિ દશમી બુધવારે ૨
શ્રીગોકુલેય ગોકુલ પ્રવેશ કરે ચરેલ દિન ધરી ચાર ૨.

આ ઉપરથી જણાય છે કે બાદશાહે ફાગણ સુદમાં દુકમ રદ કર્યો હતો.

જહાંગીર કાશ્મીરથી આવતાં ગોકુળ મુકામ કર્યો હતો, એનો તુઝકમાં ૨૫૯ નિર્દેશ છે:—

Next day Gokul was the place of encampment." (Tuz. 11, p. 166)

સમય માટે નીચેની હકીકત ધ્યાનમાં લેવાની છે, કાશ્મીરથી આવ્યા પછી તુરત તેણે ઈ. સ. ૧૬૨૧ ના માર્ચ માસની દશમી તારીખે પોતાના રાજ્યાભિષેકનું સોળમું વર્ષ ઉજવ્યું હતું. (તુ. ૨, પૃ. ૧૯૯) એટલે સં. ૧૬૭૭ ના મદ્ય કે ફાગણમાં (ફેબ્રુઆરી) તે ગોકુળમાં હતો એ ૨૫૯ છે.

આ પ્રમાણે આ કાવ્યમાં જાણવેલાં ત્રયોગ, મનુષ્યો અને પ્રસંગો એ અધાન ઐતિહાસિક હો છે, તેથી તે કાવ્ય કાવ્યનિક નથી. તો પછી મોલાનિવેધનો પ્રસંગ કાશ્મી અથોમાં કેમ નથી? આના ઉત્તરમાં જણાવવાનું કે જહાંગીરના સમયના અધાન કાશ્મી ઇતિહાસના ત્રયોગના અનુચ્છદ હજી પ્રકટ થયા નથી, માત્ર તુઝુકે જહાંગીરનો અનુવાદન પ્રકટ થયો છે. તેથી અધાન ત્રયોગમાં નથી, એમ ચોક્કસ રીતે ન કહી શકાય. આ પ્રસંગ કાવ્યનિક ઉભો કરવાને કશું જ હારણ નથી. કદાચ એમ માનીએ કે શ્રીગોકુળનાયજીના સેવકે તેમનું ગૌરવ વધારવાને આ પ્રસંગ ઉભો કર્યો છે, પણ તેની અંદર એવી કેટલીક વિગતો છે કે જે એ બનાવટી હોત તો તેમાં દાખલ કરવામાં આવતજ નહિ. શ્રીગોકુળનાયજી ચિદ્રૂપ પાસે વારંવાર જાય; જહાંગીરનો એનું લખી આવે કે ચિદ્રૂપ ધર્માનુસાર જે કહેશે તે કબજ કરીશું. તેમના મોટા ભાઈની આગાનો અનાદર, મુસલમાન અમલદારોને વારંવાર મળવું—એ એવી બીનાઓ છે કે જેનાથી તેમનું ગૌરવ વધતું નથી. વળી, જે પ્રસંગ કાવ્યનિકનું ઉભો કર્યો હોય તો શ્રીગોકુળનાયજી અને બાદશાહના

માંથી જ મળી આવે છે. અકબરના લેખલખર્ચ પ્રત્યેના વધુથી હકીકત પણ આદાશી ફરમાનોમાંથી મળે છે.

જહાંગીરનું લખાણ.

જહાંગીરે તુઝુકમાં લખ્યું છે કે પ્રતાપનો પુત્ર અમરસિંહ પોતાની સાથેના યુદ્ધની શરૂઆતમાં જ નખી પડ્યો હતો અને તેના પુત્ર વાલસિંહને પોતાના હરબારમાં મોકલ્યો હતો. આ ખીના પણ ખીન પ્રમાણના આધારે પશ્ચિમ ગેરીશ્વર નાપાયાદાર સાબીત કરી છે. જહાંગીરે ખીન ઐતિહાસિક બાબતો સંબંધી પણ કાં તો ખાન સેયુ છે અથવા તો તે પાંદર લખી છે. તુઝુકનો તરજુમો કરનાર બિયરિંગ લખે છે કે જહાંગીર પોતાના બાપ સાથેના બળવાની બાબતમાં અને શેર અફઘાનના મૃત્યુના સંબંધોની હકીકતમાં ઢાંકીછોડા કર્યો છે:—

“Jahangir has glossed over his rebellion against his father and the circumstances of Sher Afghan's death”—Preface to Tuzuk.

તેણે નૂરજહાંનના પૂર્વગ્રેમ તથા તેની સાથેના પોતાના લગ્ન સંબંધી પણ એક અદાદ પણ લખ્યો નથી. વળી પોતે ખુશરૂની આંખો ફેાપવી હતી અને શાહજહાંએ તેનું ખૂન કરાવ્યું હતું એ સંબંધી ખાન સેયુનું પ્રમાણો મળે છે. છતાં પણ જહાંગીરે તો તે બાબતમાં ખાન જ સેયુ છે. આપણે આગળ જોયું કે ચિદ્રૂપના કહેવાથી ખુશરૂને છોડ્યો હતો છતાં પણ તેણે પોતાનું મહત્ત્વ ધરે તેથી ચિદ્રૂપની દરખાશગીરીના રીકાર કર્યો નથી. શી. વેલીપ્રસાદ જહાંગીરના પ્રશસક હોવા છતાં લખે છે કે જે બાબતમાં પોતાના ઉપર સહેજ પણ બળવાજશદી આવે તેણે એક પણ પ્રસંગ જહાંગીરે નોંધ્યો નથી:—

“The former (Jahangir) would hardly mention a deed for which ultimately he must be partly held responsible.”

(History of Jahangir, p. 335)

આના અપવાદરૂપે અશુભકર્મના ખુનનો પ્રસંગ મળ્યો પડે.

સર દોમસ રોની મુલાકાત.

પરંતુ સૈધી વધારે અંગતની બાબત તો સર દોમસ રોની જહાંગીરની મુલાકાત સંબંધી છે. તે ઈંગ્લાંડના રાજાના એકઘી તરીકે દિલ્હીમાં આવ્યો હતો અને જહાંગીરને અગમર

૧ આ ફરમાનો દિ. બ. કૃષ્ણલાલ જોરીએ સંપાદિત કર્યાં, પણ હજી પ્રગટ થયાં નથી. તેમની કૃપાથી તે હું જોઈ શક્યો છું. તેમાં શ્રીવિક્રમનાથએ ગોળ અને જ્વોત્સના ગાંભીરી જમીન આપ્યાં, (એ ગામે હાલ પણ તેમના વંશજોના ટાણામાં છે) તેની હદમાં સિંકાર ન કરવાનું અને શાહી અમલદારોએ તેમની પાસેથી કરવેરા ન લેવાનું, તેમને ઠાઠ પણ પ્રકારે સત્કારણી ન કરવાનું વગેરે જણાવ્યું છે. એક ફરમાનમાં શ્રીવિક્રમનાથએ “મારું-અજા” એટલે ધરતી જ્વનના કાલા જણાવેલા છે. એક ફરમાન તો અકબરની આતા હમીદા બેગમના નામનું છે, જે ખુશ હંતિલાસમાં વિરલ છે એમ દિ. બ. કૃષ્ણલાલનાઈને ધાર્યું છે. મધુસૂદનમહાદેવ વૈશાલિમાં લખ્યું છે કે સં. ૧૬૨૮ માં શ્રીવિક્રમનાથ અને અકબરનો મેળાપ થયો હતો અને તેણે હાલનું ગોળ જે જગ્યાએ છે એ જમીન આપી હતી. ત્યાં કને ગામ વસાવી, શ્રીવિક્રમનાથ મધુસૂધી આવી રહ્યા હતા. હાલ પણ એ નવા ગોળગના નામે જ પ્રસિદ્ધ છે કવિશ્રી નાનાલાલે અકબરસાહેબનાઈમાં “ગોળ મુસાઈએ આપ્યું” એમ લખ્યું છે, પણ પાછળથી “મળ મુસાઈએ આપ્યું” એમ દુષ્ટિપ્રત્યક્ષમાં સુધાર્યું છે. તેમને એ આ હકીકતની ખબર હોત તો એમ સુધારો કરવાની આવશ્યકતા ન રહેત.

આ ફરમાનોમાં જહાંગીરનું અદાદપ્રસંગ સંબંધીનું ફરમાન નથી, પણ તે હોવાનો સંભવ નથી, કેમકે જહાંગીરે મોહાના હુકમો ક્યાંદતા, હોખી ફરમાન એ સંબંધી કાઢ્યું નહોતું. એમ કાળ નાંચતાં જણાય છે.

પ્રતિભાગેનાં દર્શિત્વસ

ચાલી કરમાનો

અમલ વિશે



કરે છે છતાં પણ મથુરામાં તેને મળવા કેમ નથી જતો? આ થું તેનું મન. ચિદ્રૂપ ઉપરથી ઉતરી ગયું હતું એમ નથી જણાવતું? ખીલું, ઇકલ્લાખનામાં લખ્યું છે કે ચિદ્રૂપને જહાંગીરના સાહુ હાકિમભેગે નિર્દય માર માર્યો હતો:—

“He was Cruelly beaten by Hakim Beg”.

(Tuz II, 1004-foot-note).

જે ચિદ્રૂપ ઉપર જહાંગીરનો આભાવ થયો ન હોત તો હાકિમભેગ આટલી ગંધી હિમ્મત કરે ખરા કે? કલ્લોલમાં લખ્યું છે કે જહાંગીરે કાશ્મીર જતાં મથુરામાં મુકામ કર્યો હતો; ત્યાંથી તેણે મુકામ ઉપાડ્યા પછી, એક દિવસ હાકિમભેગે ચિદ્રૂપની શુંકામાં જોડા પહેરીને જવાનો પ્રયત્ન કર્યો હતો. એટલા નજવા કારણથી જહાંગીરે તેને મારી નાંખવાનો હુકમ કર્યો હતો, પણ પાછળથી ખુશરના કહેવાથી તેને સજા કરવા ચિદ્રૂપ પાસે મોકલ્યો હતો. અરવે તેને એનાજ જોડા માથામાં મારીને કાઢી મૂક્યો હતો. એ વાતનું વેર લેવાને જ કદાચ હાકિમભેગે જહાંગીરનો ચિદ્રૂપ પ્રત્યે આભાવ થવાથી તેને માર્યો હતો, જે આ પ્રમાણે અર્થાત્ થયો હોય તો જહાંગીરને ચિદ્રૂપની વાત ખોટી જણાતાં માહાનિર્વેધનો હુકમ તેણે રદ કર્યો હોય એમાં કંઈ આશ્ચર્ય નથી. પ્રત્યક્ષ પ્રમાણો.

હવે આપણે માળાપ્રસંગસંબંધી પ્રત્યક્ષ પ્રમાણો જોઈએ: ‘માલોદાર’ કાવ્ય સંબંધી એ આપણે ઉપર વિસ્તારથી વિચાર કર્યો છે. તે સિવાયનાં પ્રમાણો અવલોકીયું.

૧. કલ્યાણભટ્ટ નામના શ્રીગોકુળનાયકના સેવક શ્રીગોકુલેશ્વરનારાયણ નામનું બૃહદ્ વિરત્ત કાવ્ય રચેલું છે. એમાં શ્રીગોકુળનાયકનું ચરિત્ર વધુવિદ્યું છે. એના વક્તોલ નામના પંદર ખંડ છે, અને પ્રત્યેક વક્તોલમાં ત્રણ નામના અખ્યાય છે. તેમાં વક્તોલ ૭, ૮, ૯, માં માલાપ્રસંગનું વર્ણન છે. આમાંથી પ્રો. ગોવિંદલાલ બટ્ટની કૃપાથી ક. ૭, ૮ મેં વાંચ્યાં છે. જહાંગીર સાથેના શ્રીગોકુળનાયકનો કાશ્મીરની અંદર યજ્ઞેયો સંવાદ ત્રણ તરંગોમાં વર્ણવેલો છે. આ કાવ્યમાં શાહજહાન ગાદીએ આવ્યાને નિર્દેશ છે અને દાગોદરના “પાખંડપ્રકાશ” માં કલ્યાણભટ્ટ ઉપર કટાક્ષ છે, તેથી તેની રચના સં. ૧૬૮૫ થી સં. ૧૬૯૩ સુધીમાં યજ્ઞેયી એમ હું માનું છું.

૨. શિક્ષાપત્ર ગ્રંથથી જેઓ સંગ્રહમાં પ્રસિદ્ધ છે અને જેઓ શ્રીગોકુળનાયકના ભગીન હતા, તે આચાર્ય શ્રીહરિરાયજીએ શ્રીગોકુળનાયકની સ્તુતિનું એક અષ્ટક રચેલું છે. તેના ૮ માં શ્લોકમાં માળાપ્રસંગનો ઉલ્લેખ છે:—

તાતૈશ્વકપર: પરાશયવિદાં વર્ય: પરાનન્દદો માલ્ય યેન સુરક્ષિતાં નિર્જમહાયકેન કંઠે સતાં ।

ધર્મો યેન વિવર્ધિત: પિતૃપદાચારપ્રચારૈ: સદા સ શ્રીગોકુળનાયક: કરુણયા મૃયાદરો સેવિનામ્ ॥

શ્રીહરિરાયજીના જન્મ સં. ૧૬૪૭ માં થયો હતો, એટલે માળાપ્રસંગના સમયે તેમનું વય ત્રીસ વર્ષનું હતું. આથી એ પ્રસંગની તેમને જાતખાસીતી હતી.

૩. દયારામ કવિએ ગુજરાતીમાં ‘વક્ત્રલનો પરિવાર’ એ નામનું કાવ્ય લખ્યું છે, તેની એક પંક્તિમાં પણ આ પ્રસંગનો નિર્દેશ છે:—

“શ્રીગોકુલેશ સુખધામ જેની માળા રાખો દામ રે.” (દ. કૃત કા. સં. ૫. ૧૨૯)

૪. હિંદી ભાષાનાં ફેટલાક કવિઓએ આ પ્રસંગ સંબંધી રચેલાં કવિત મંજી આવ્યાં છે. તે શ્રીગોકુળનાયકના ચરિત્રકારે સંગ્રહ કર્યો છે. એ આ પ્રમાણે છે:—

૧. માલોદારકાવ્યમાં આ પ્રાણવત્ત એમ લખ્યું છે કે હાકિમભેગે કાશ્મીરને હાથમાં લેવાને જતો હતો એમનાં પેઢાનાં પચાત્ન કર્યો કર્યો હતો. આ જાત અતિગંભીરકારેલી જણાય છે; વક્તોલની

क. विहारी पक्षः—देक की, देक की, देक की दे, गिरे टेकें टरे तो टरे घुब तारो,
धींगोकुलनाथजी माला तेजे वो शेष न शीदा धरे भूमारो,
बोल सके तो सके तो सके, मंत्रकी पन कोन करे महीमे रतनारो !
श्रीवल्लभवंश विहारी कहे, कवि गणत है जगमें जरा पारो.

ख. पृथ्वीपति—अथम उद्धारन तुम नाम, बल्लभ मणि पेज प्रतिपारन,
तपसीवापनिवारन, दुष्टसंचारन, तिलकमाल-उधारन;
मानी मान निवारन, रसिक धिरोमनी, रससंचारन,
हृन्दावन, गोकुलपति, नागर प्रकटे निजजनकारन.

ग. प्राशुनाथ — मत जानो ह्याल, धींगोकुलनाथजुही माला है,
बसानीहु वेदमरजारहु बखानी है.
दारे गुंजा भीव माला अमृत रसादा है,
घुलाये जहांगीरने जाय के जुयाय दियो,
हिन्दुकी हद राखी, धींगोकुलनाथ प्रतिपाला है.
प्रातनाथ कहे, बात सुनो सचे जान दे,
मत जानो ह्याल धींगोकुलनाथजुही माला है.

घ. श्रीपति—शाह फकी सो तैं न फरी, करी सो वेदपुरातन भारी,
मालतिलक जनेउके फारन अटैन पंडन गारो,
धीपत कहे, जहांगीर के खान, जे उमराव से सब सारी.
धीनिकुलनाथजुके धींगोकुलनाथजु, सब हिन्दुकी पन रागी !

પ્રકીર્ણ ઇતિહાસો.

ઇતિહાસનું અવલોકન.

[સં. ૧૯૮૨ ની સાલમાં અમદાવાદમાં બહેર સભામાં વર્સિતરામ રાસ્ત્રીએ આપેલું ભાષણ.]

આજનો આપણા સંપ્રદાયનો મહાન મંગલમય સુદિન ઇતિહાસમાં કોઈ અનૈરી રીતે પ્રદાદી રહ્યો છે. આજના સુમંગલ દિનનો પરિચય તારા મહેતાના વક્તાએ આપને આપ્યો છે જ, તેથી આપે બળ્યું હશે કે, આજે આપણા શ્રીગોકુલેશ્વરપ્રભુ પ્રકટ થયા છે. જ્યાં સુધી ભારત વર્ષમાં એક પણ તિલકમાળા ધારણ કરનાર પુષ્ટિમાર્ગીય વૈષ્ણવ હશે ત્યાં સુધી શ્રીગોકુલેશ્વરપ્રભુ પ્રકટ દર્શન આપતા રહેશે. તિલકમાળામાં શ્રીગોકુલનાયથના જ દર્શન પ્રભાતમાં દેક વૈષ્ણવે કરવા હશે, શ્રીગોકુલનાયથ સં. ૧૬૦૮ ની સાલમાં માર્ગશીર્ષ સુદ ૭ ના રોજ પ્રકટ થયા હતાં, આપ પ્રકટ થયા ત્યારથી જ્યાં સુધી ભૂતકાળ દર્શન આવ્યા ત્યાં સુધીનો બધો ઇતિહાસ લખાયેલો છે. એએશ્રીના સેવકોએ એમનેજ પોતાનાં સર્વસ્વ માન્યા હતા અને એએશ્રીની જીવનશૈલીના દસનો અનુલભ કરવામાં પોતાની કૃતાર્થતા માની હતી. તેથીજ શ્રીગોકુલેશ્વરપ્રભુનો દિવસે દિવસનો ઇતિહાસ ધારી મેળનીશીના રૂપમાં આપણને મળી શકશે. આ ઇતિહાસ રા. લક્ષ્મણાદિ જનનાલાલ દેરાધરજી ઘણે ખર્ચે છપાવી પ્રકટ કર્યો છે. તે વાંચતાં આપણે તકીન ખતી જઈએ છીએ, એએશ્રીના સેવકો અથવા આપણા પૂર્વજોએ આપણને વારસામાં એ દિવ્ય સાહિત્ય આપ્યું છે. આપણા એ પુનિત પૂર્વજોએ શ્રીગોકુલેશ્વરપ્રભુનાં વરોગાનનું મહાસાહિત્ય, કે જે સાહિત્ય ગુજરાતી સાહિત્યની દૃષ્ટિએ ઉત્તમોત્તમ છે, તેનો દિવ્ય વારસો આપણને કૃપા કરીને આપ્યો છે. શ્રીગોકુલેશ્વરપ્રભુના હૃદયમેદક વચનામૃતો લગભગ એક લાખ છે. એ બધાં આપણાજ પૂર્વજોએ યત્ન કરીને લખ્યાં છે. આનો વિવાસ આપણા જીવનને દિવ્ય બનાવવામાં કારણરૂપ છે એમ હું માનું છું.

હિંદના ઇતિહાસમાં જેમ અંસીની રાણીએ પોતાનું સૌંદર્ય ગુવર્ણીકરે અંકિત કરાવ્યું છે, તેમ ગદાની મહારાણી શ્રીદુર્ગાવતીએ પણ પોતાનું યશ જળદળનું રાખ્યું છે. આ મહારાણી વૈષ્ણવ હતી અને તેને માટે આપણે મગર યર્ષ શકીએ. એણે વૈષ્ણવ છતાં વિદ્યાર્થીઓ સામે તલવારથી લડીને એક શરવીર કાચાણીની જેમ પોતાના દેહનો ત્યાગ કર્યો છે, એ ઇતિહાસ આપણા સંપ્રદાયને શોભાસ્પદ બનાવે છે. શ્રીગુરુસંપ્રદાય પોતે અંબેલમાં બિરાજતા હતા, તે એ મહારાણીનાજ અત્યાગ્રહથી ગદામાં પધાર્યા. શ્રીગોકુલનાયથ તે વખત બાળક હતા. આ અવસરમાં પણ તેમનો પ્રભાવ અદ્ભુત હતો. શ્રીવલ્લભાધીશ્વરે રથપેઠે ચરણ ધર્મ શ્રીગોકુલેશ્વરમાં બાલક-અંબરયાથીજ ગળાવી રહેલો હતો. શ્રીગોકુલનાયથનું મૂળ નામ તો શ્રીવલ્લભ હતું, પણ સેવકોએ એએશ્રીને શ્રીગોકુલનાયથ તરીકે પ્રસિદ્ધ કર્યો, જે પ્રસિદ્ધિ અત્યારે પણ તેવીજ છે, આપની યોગ્ય ઉમર. યત્નાં યજ્ઞોપવીત સંસ્કાર લણાજ હાથી ચડેો હતા. ગદાની મહારાણીનો વૈભવ અવલુનીય હતો. આર હમર તો હાથી અને ૪૦ હમર ઘોડાઓ હતા. તેજ પ્રમાણમાં બીજા પણ સંપત્તિ અનુકૂળ હતી. શ્રીગોકુલનાયથ મોટા થયા, વિદ્યાભ્યાસ કર્યો, અનેક સંસ્કૃત પ્રાકૃત ગ્રંથો રચ્યા, મોટા મોટા મહારાજાઓ અને સરદારો તથા ધનાઢ્યો આપના અભિવૃદ્ધિ મુગ્ધ બન્યા. આપશ્રીનું જીવન સેવામય હતું. હાલ તો આપણી નજરજ્ઞ જોઈ જતી છે. એક ગામથી બીજા ગામ લટકે, પુજા મુખપટારો કરે, તેજ જાણે દેરાનું કે ધર્મનું કંઈયેલું કરે છે અને બીજા નહિ એવું આપણે

ચિદરૂપે મયુરામાં મુકામ કર્યો. હવે લડતું - સ્વરૂપ હંડમોસડતું - થયું હતું. અનેક વૈષ્ણવોની માળાઓ અને તિલક ઉતારવા માંડ્યા. ઘંટાવનમાં ચિદરૂપની ફોદો બોલાઈ, પણ શ્રીમદ્દેખાંડે તેક નળગી રહ્યું હતું. સાક્ષાત્ શ્રીગોકુલનો નામ ન્માં બીરાને ત્યાં તેક ન હોય તો ક્યાં હોય ? વાસ્તવિક જોતાં માહાતિથક જાદારના ચિન્હ છે. પોતાનો ધર્મ બચાવવા ખાતર લોહી રેપતું અટકાવવા ખાતર, પ્રભુસેવા કરવા માટે માહાતિથક છુપાવાય, જગતમાં દેખાડાય નહિ તો કશો વાધો નથી. પણ આ તો સંપ્રદાયની હાલત હતી. જો તેવી નળગાઇ જતાવવામાં આવે તો આખો સંપ્રદાય જમીનફોસ્ત બને. તેથી લડતની આગેવાની શ્રીગોકુલનાયકએ લીધી. શ્રીગિરિધરજી પોતે મોટાભાઈ હતા, ધર્મી સ્વરૂપ હતા તેથી શ્રીજીની સેવા સંભાળી. શ્રીગોકુલનાયક પોતે ઘણીવાર ચિદરૂપ પાસે જતા, પણ એ સંન્યાસી રૂપમાં તો કંઈ કહેતો નહિ પણ પાછળથી એ પોતાની સેતાનયત દાખવતો. જહાંગીરને આ કલેશ વધવાની ખબર પડી, પોતે મદાન સરદારો સાથે આવ્યો. શ્રીગોકુલનાયક અને ચિદરૂપનો મુકાબલો કરવાની જહાંગીર ઈચ્છા કરી, શ્રીગોકુલનાયક તો માહાતિથકને વૈદિક દરજ્જા તૈયારજ હતા. પણ એ સંન્યાસીએ તો ઈન્કારજ કર્યો. મને આશ્રમ થયા કરે છે કે, વૈષ્ણવો પોતાના સંપ્રદાયને વૈદિક માને તેમાં બીજાને શું ? ગમે તે જાહને હરી લેવાની યત્તિવાળો ભિક્ષુકો કહે છે કે, તમે અલસખંધને વૈદિક કેમ કરાવો છો ? આ બોલનારાઓના હૃદયમાં ફેટલો દ્રેષ છે તે સાબિત થાય છે. અમારું મતેન્ધ્ર વેદસિદ્ધ છે એમ સિદ્ધ કરીએ તેમાં બીજાને શું ? અક્ષયત, અમે બીજાના મતને અર્થદિક કહેતા હોઈએ તો એક જુદી વાત છે. અમે આખા જનસમૂહને માથે પરજી આમારા વિચારો ઠોકતા હોઈએ તો અમારી કદાચ ક્ષુદ્ર ગણાય. જેમ અમે આમારા સિદ્ધાંતોને વૈદિક કહીએ છીએ તેમ તમે પણ તમારા સિદ્ધાંતોની વૈદિકતા જાહેરમાં કહો. પ્રભુને જે ગ્રંથજી કરવું હશે તે કરશે, તેમાં હારજીતના ભુગાના દંભથી ખરડાવાતું પણ નહિ રહે. વાસ્તવિક રીતે વેદની મારામારી નકામીજ છે. વેદથીજ ફકાર થાય તેવો સિદ્ધાંત હીંદુધર્મમાં છેજ નહિ. વેદપર ખોટો મત્તર બાંધી હીંદુધર્મને સંકુચિત મતાવવાનો સમય હવે પડી ગયો છે. અરે ખુદ વેદ પણ પ્રભુના લજ્જનથી આખા જગતનો કેદાર થાય તેમ કહે છે, શ્રીમદ્ભગવદ્ગીતામાં તો પ્રભુ કહે છે કે કેવળ મારા આશ્રયથી મધા તરી જાય છે. આવા વેદવાક્યો તથા પ્રબુવાક્યોથી મજ્જુન અનેકા શ્રદ્ધા અને - ભાવનાથી પોપાયલા ભક્તિમાર્ગથીજ હવે તો જગતનો ઉદ્ધાર છે. શ્રીગોવંદશંકરાચાર્યજી કહે છે કે સ્ત્રીશ્રદ્ધ જો વેદ સાંભળે તો તેમના કાનમાં સીસુ રેડવું હવે જો વેદ લણવાથીજ ઉદ્ધાર થતો હોય તો સ્ત્રીશ્રદ્ધોના જન્મ એજજ ગયા એમ સમજવું. અરે રાવજી તો મોટો વેદ જાણનાર હતા પણ તેના હૃદયમાં ફેટલી રાજતાન્ધત ભરેલી હતી ? માટે હાલ તો શ્રીરામ અથવા શ્રીકૃષ્ણ નામના જાપથી પણ ઉદ્ધાર થાય છે. એજ મદાન પવિત્ર સિદ્ધાંતોજ દિગ્વિજય થયો છે. પછી ભલે તેને અર્થદિક કહીને લોકો કાપથીઓ ફૂટે તેની કોઈને પરવા નથી. અમે વૈષ્ણવો આમારા મતને વૈદિક કહીએ, આમારા પ્રાણાધિક સર્વસ્વ આચાર્યશ્રીને અખંડભૂમંડલાચાર્ય માનીએ તેમાં બીજાને શું ? અનંતાચાર્યજી શ્રીરામાનંદ સંપ્રદાયના છે, છતાં પોતાને “જમદ્યુજ” કહે છે. નૃસિંહ પરમાત્મા અને ઉપેન્દ્રભગવાન કહેવાય છે, તેની સામે કેમ ચુપ છો ? માટે આવા શ્રદ્ધાઓ અર્થ વગરના છે.

કટોકટીનો મામલો—જહાંગીરની કોશેશ પડી ભાંગી, શાસ્ત્રાર્થ થયો નહિ. પણ પોતે સમ્રાટ હોવાથી હુકમની અમલ ન થાય તે ઠીક નહિ એ વાતપર તે ચક્કમ રહ્યો. પોતે સરદારોને હુકમ કરીને કાશ્મીર તરફ સીધાઓ પંજી ચિદરૂપ તો રાક્ષસ બન્યો. વૈષ્ણવો પર કાળો કહેર વરસાવવા માંડ્યો. અનેક અત્યાચારો કર્યા પણ તેથી વૈષ્ણવો વધુ મજ્જુત બન્યા. આખરે એણે

સરદારને ઉરકેરીને શ્રીગોકુલમાંથી શ્રીગોકુલનાયજીને ગિરફતાર કરવાની પેદવી કરી પણ શ્રીગોકુલમાં જે સરદાર જતા તે શ્રીગોકુલેશપ્રભુની પ્રેમમય ભૂતિમાં ઢોટપોટ થઈ જતા. આખરે મદાન મુગ્ધ અવસ્થા સાથે છેવટનો નિકાલ કરવાનો દસવ ક્યો. આગાના સરદારે મધુરામાં આવ્યા હતા. તેમના કહેણને માન આપીને ભોજન ક્યાં વિનાજ શ્રીગોકુલેશપ્રભુ મધુરામાં પધાર્યા. એઓશ્રી સાથે ૩૦૦ રજપુતો હથીયારબંધ હતા કે એઓએ પોતાના પ્રાણ એ પ્રભુ પર નોંઝાવર કીધા હતા. ૨૪ કલાક અન્ન જળ વિના રહીને આણુ મામણ માટે જાડાયાટ ચગાવી. તેની વચ્ચે એવો પ્રસંગ આવ્યો કે જેથી શ્રીગોકુલેશપ્રભુ સાથેના ૩૦૦ રજપુતોએ સમશેર ખેંચી, પણ અહિંસાપર, પ્રેમદયા અને મૈત્રી સ્વપાલના વૈષ્ણવધર્મના નાદકનું લોહી વહેવડાવવાનું નજ દોષ. પ્રભુએ તુરંતજ બધાની સમશેર આનમાં નખાવી. આખરે શ્રીગોકુલનાયજીએ આ મામણનો છેલ્લો નિકાલ કરવાનું નક્કી કર્યું અને ૭૦ વર્ષની પ્રાંત ઉંમરે કાશ્મીરની બર્ધકર સુસાધરી રાઝ કરી. ૫૦૦ માધક લાંગો પંચે હતા. ૭૮ દિવસે ત્યાં પધાર્યા. આ બધા દિવસોની મીનીટે મિનીટની નોંધ છે. જહાંગીરને પોતે મળ્યા..

મદાન વિજય—જહાંગીર પહેલાં તો એકોત્રા જે થયો નહિ. એક સખાટ પોતાના વચનો કેમ પાછાં ખેંચી લે? પોતાની દાર કેમ કમ્પ્રે? આખરે શ્રીગોકુલેશપ્રભુ પણ પોતાના નિશ્ચયમાં મુકમ રહ્યા. જહાંગીરે કહ્યું કે, તમારી સત્તા સામે અમારે કંઈ કહેવું નથી, પણ આપના હુકમથી હમણે નિર્હીય ધર્મનિકે વૈષ્ણવો પ્રાણધ્યાન કરવા તૈયાર થશે અને તે તેમને ગોલનું નથી. જહાંગીર ચોંકી ઉઠ્યો; એના છગરમાં ઉપરનાં વાક્યોએ અપૂર્વ અસર કરી. શ્રીગોકુલનાયજીની ધર્મનિષા માટે માન ઉત્પન્ન થયું. ચિદરૂપ માટે તિરકાર થયો. આખરે પોતાની પાત રાખવા માટે કહ્યું કે, તમે માણસતિલક રાખો, પણ તમારે મારી આગા માનીને શ્રીગોકુલને ત્યાગ કરવો પડશે. જહાંગીરના આ હુકમમાં પણ કસોટી હતી. ગોકુલના વરચાર અને મદાન કંટોટોને રાજવૈભવ સંપત્તિ છોડાવે કે કેમ? પણ બાદશાહના હુકમનો હર્ષપૂર્વક રસીકાર ત્યારે શ્રીગોકુલેશો ક્યાં ત્યારે બાદશાહી તાજ એઓશ્રીને નમ્યું. પોતે સાદી શામ્યાનામાંથી બદાર પધાર્યા. સાથેના વૈષ્ણવોએ વિજયમાળા આરોપી. તે વખતનું મિત્ર એક રાહી મીતારાએ લીધેયું છે, અને હજુ એ વિજયનો પ્રત્યક્ષ પુરાવો છે. પ્રભુએ ગોકુલ છોડ્યું, જેમને તિત્રાંગની આપી, ધર્મનો રક્ષા કરી પોતે સોરમજમાં ખીરાવ્યા. આ તરફ ચિદરૂપના પાપકર્મો બદાર પડ્યાં, રાહી ગુસ્સાની આગમાં તે દુષ્ટ ખાખ થઈને નરકમાં ગયો.

દંડાકર તિલક—શાસ્ત્રપુરાણોમાં જે પ્રકારના તિલકો અચલથી ચાલ્યાં આવે છે. એક તો ચરણાકાર ચોટલે અપહો પ્રભુનાં ચરણકમલના આકારનું કરીએ હીએ તે; અને બીજું દંડાકાર; જે તિલક શ્રીગોકુલનાયજીના વરમાં ચાલુ છે તે. શ્રીમદા-પ્રભુજી અને શ્રીશુચાંધજી ચરણાકાર તિલક કરતા. હજુ પણ બધી બેઠકોમાં એવુંજ તિલક ચાય છે. શ્રીગોકુલનાયજી જન્મે પ્રકારનાં તિલક કરતા હતા. શ્રીશુચાંધજી પછી શ્રીગોકુલનાયજીપર બધો વરનો બોલે હતો. તેથી પોતે ઘર ચલાવતા અને શ્રીગોવર્ધનનાયજીની સેવામાં પણ પધારતા. એવી રીતે એઓશ્રીને બીલકુલ સમય મળતો નહિ. સેવામાં પધારતાં વિવંજ થઈ જાય માટે પોતે એકદમ તિલક કરી લેતા હતા. એવી રીતે આપશ્રી ત્યારે જલદીથી સેવામાં પધારતા ત્યારે દંડાકાર તિલક કરતા હતા. પોતે આરસી નેચા વિના બે દંડના આકારમાં તિલક ખેંચી

લેતા. આ તિલક પણ શાસ્ત્રસિદ્ધ હતું. પછી, સેવામાંથી પરોક્ષે જે બહાર પધારતા ત્યારે ચરણાકાર તિલક કરતા અને તેમાં મુદ્રા પણ આ ઉપરથી જણાય છે કે, ઉતાવળ ન્યાં હોય ત્યાં પોતે દંડાકાર એવો પ્રાચીન તિલકનો અંગીકાર કરે. માટેજ શ્રીગોકુલનાયજીની ચોક્કસ તિલકજ સુખ્ય થાય છે અને કોઈકવાર દીપ્તાકાર કે દંડાકાર થાય છે. (અતઃ રાજનગરવાળા નિત્યલીલાસ્થ ગો. શ્રી૬ શ્રીમધુસૂદનલાલજી મહારાજે મુકે

લકીરપીટનો ઉત્સવ—કેટલાંક વર્ષપર હું શ્રીમદ્ગોકુલ મયોદેવ ઉત્સવનાં દર્શન પણ મેં કર્યાં હતાં. તેજ અરસામાં એક-ઉત્સવ આવ્યો તેના નામ “લકીરપીટનો ઉત્સવ” એવું છે. આ વળી ઉત્સવ કેવો હશે તે જોવાનું આશ્ચર્ય થયું. અનુભવીઓને એના સંબંધનો ઇતિહાસ મેં પૂછી લીધો ત્યારે ઘણું જાણવાનું મળ્યું. માર્ગનું ઉંડું રહસ્ય એ વાર્તામાંથી ઉઠેલી ધાર છે. લગતો ઇતિહાસ આ પ્રમાણે છે.

શ્રીગુસાંધજીના એક અંતરંગ સેવક શ્રીઆચાર્યહરિવંશજી હતા. શ્રીકૃષ્ણ ઘણાજ કૃપાપાત્ર હતા. લીલાના મહાત્મ અનુભવી હતા. શ્રીગુસાંધજી નિરર્થક પધામો પછી પણ એઓશ્રીના સાતે બાલકો એમનું ઘણુંજ માન ભરાઈ દરેક બાબતમાં શ્રીઆચાર્યજીની સલાહ લેતા. લૌકિક અને અલૌકિકમાં વચ્ચે ઘણા નિપુણ હતા. બુધા કાર્યમાં તેમની સલાહ ઘણીજ સફલ થતી હતી. શ્રીગુસાંધજીના લગવદ્રાતી કરવામાં પણ એઓ હતા. કેટલાંએ વેણુવો એઓશ્રીના દરેક તલસતા હતા. એક સમયે પ્રતિભાગીય સેવાપ્રકાર તેઓશ્રી અમલવી થતા સેવાની ભાવનાનું વર્ણન કરીને સમગ્ર સમાજને અલૌકિક સેવાસ્થમાં જોડી બનાવી દેતા. બધા શ્રોતાઓ તહીન બની ગયા હતા. દોષને તેમનાં વચ્ચે નૃપ્તિ થતી નહતી. શ્રીવલ્લભાધીશ્વરના અને શ્રીગુસાંધજીના સેવાવિલાસને જોઈ સાગરની ઓળો ઉછળી રહી હતી. બધાની આંખોમાંથી પ્રેમનાં આશુઓ વહી જતાં. ઉવટે શ્રીઆચાર્યજીએ આજ્ઞા કરી કે—સેવા તો પિતાપુત્ર કરે તરે જ હાં, શ્રીગોકુલેશ લકીર પીટે છે.

“મતલબ કે, શ્રીવલ્લભાધીશ્વરનો સેવાવિલાસ એઓશ્રી અને શ્રીગુસાંધજીના અનુભવો. સેવામાર્ગનો સાક્ષાત્કાર તો પિતાપુત્રે જ કરી દેખાડ્યો. પુત્ર સાત બાલકોમાં શ્રીગોકુલનાયજી લકીર, લીસાટા ઉપર ચાલી રહ્યા હતા. ગુલના તો શ્રીઆચાર્યજી જેવા મહાનુભાવીજ જ કરી શકે. ખીલતું એ રતું તે શ્રોતાઓ તો એ રહસ્ય કળી ગયા. એમના હૃદયમાં એ ગુલનાથી સાવ મોંઘે ઘેરેલો ઉપજ્યો નહિ. પરંતુ એ શ્રોતાઓમાં કેટલાક શ્રીગોકુલનાયજીના જોડાતા સેવકો હતા. એઓનો પ્રેમ ઉપાધિવાળો હતો. તેમનો પ્રેમ પિતાપુત્ર

ગાહુ જ દેખ કરતા હતા. અરુપરચ આદીઓ કરીને લકાઈ કરાવતા હતા. અરે, એટલુંજ નહિ, પણ તેવા ખોટા ગથો પણ લખી ગયા છે કે જેમાં શ્રીગિરિધરજી આદિ સાત-બાલકોની કેટલીએ ખોટલી કરી છે. તેથીજ શ્રીગોકુલનાયજીએ આજ્ઞા કરી છે કે, 'મારા સેવકોના આવા ગથો જે વાંચશે તે બહિર્મુખ થશે મતલબ કે એવાં ગથો લખનારાઓથી પોતે વણાજ નારાજ હતા. આવા અદેખા સેવકોને શ્રીઆચાર્યનાં વચનો તો બાણુ જેવાં લાગ્યાં. તેઓ તો બહુજ, દુઃખીદુઃખી થઈ ગયા, ને ત્યાંથી એકદમ દોડ્યા. શ્રીગોકુલનાયજી પાસે જઈ પ્રહોંચ્યા. ત્યાં જઈને એઓશ્રી પાસે ફરીઆદ કરી. શ્રીઆચાર્ય આપછીની નિંદા કરે છે એમ મીઠું મરચું સભરાવીને કહ્યું. આપછી આ સેવકોની દશા જાણુતા હતા તેથી તેમના પર કચો વિદ્યાંસ મેલતા નહિ. પોતે આજ્ઞા કરી કે, "અદ્યત્તો, શ્રીઆચાર્યજીએ અમારી શું કહીને નિંદા કરી ?" તેઓ તુરત જ પોકારી ઉઠ્યા અને શ્રીઆચાર્યના મુખમાંથી નીકળેલું ઉપરનું વાક્ય કહી દીધું. શ્રીગોકુલનાયજી તો એ વચનને અમૃતની વૃદ્ધિરૂપ ગણીને મહાન્ આનંદને અનુભવ કરવા લાગ્યા. પોતે દીનતાના સ્વરૂપ એટલે પોતાની પ્રભુસેવાને આટલી ઉચ્ચ માર્ગમાં ગણાતી સાંભળીને તેઓશ્રી ખૂબ ખુશી થયા. તેમાંએ વળી પિતૃચરણ શ્રીશુઆંઈજીના કૃપાપાત્ર અંતરંગ સેવક શ્રીઆચાર્યના શ્રીમુખનાં વાક્યો સાંભળીને તો નેત્રમાંથી અશ્રુનો પ્રવાહ વહેવા લાગ્યો. તુરતજ અધિકારીજીને બોલાવીને વધાઈ બેસાડી. ભોળતાણાનું બેસાડીને તે દિવસેજ વધાઈનો મહોત્સવ માન્યો અને ઘણી ધામધૂમ કરી. ગરીબ બીચારા પેલા પામર સેવકો તો બાંળીને ખાખ થઈ ગયા. આ ઉત્સવ હજી સુધી મનાય છે.

આ ઇતિહાસથી આપણા મનમાં લેહલાવ નજ થયો જોઈએ. આપણે તો બધાને અકલ સ્વરૂપ-માનનારાં રહ્યાં. ઉપરની તુલના કરવાનો અધિકાર શ્રીઆચાર્યજીનોજ હોય. તે પરથી આપણે એ અલ્પ કક સ્વરૂપમાં અનુપધિક ભાવ નજ આણીએ. આપણે શ્રીદારિદ્રાનાયજીનાં નીચેનાં વચનોજ કોતરી રાખીએ.

"સર્લૈકિક સવ અપ્રિકુલ."

દંડાદાર તિલક—દંડાદાર તિલક વિષે એક વાત હું આપી ગયો છું. એવીજ બીજી વાતો ભગવદીય મનોહરદાસજી પાસેથી નીચે મુજબ સાંભળીએ:—

એક દિવસ સેવામાં વિલગ થવાથી શ્રીગોકુલેશ્વરપ્રભુ તંપરાથી તિલક કરીને સેવામાં પધાયો. આ તિલક નીચેથી ગાંધિયું ન હતું. જ્યારે આપછી શૃંગાર ધરવા ગિરાજયા ત્યારે શ્રીનાથજી ખૂબ હસી પડ્યા. શ્રીગોકુલનાયજીને પ્રભુતા બડબડાટ હસવાથી એકદમ આશ્ચર્ય થયું. આપછી આસપાસ નજર ફેરવીને પ્રભુનાં હાસ્યનું કારણ જોળવા લાગ્યા, પણ કાંઈક માલમ પડ્યું નહિ. એટલે પ્રભુને "આટલું કારણ જોળવા લાગ્યા, પણ કાંઈક માલમ પડ્યું નહિ. એટલે પ્રભુને "આટલું બંધું હસવું આવવાતું કારણ શું ?" એવી વિનંતિ કરી. પ્રભુએ આપછીનાં આજ્ઞાનાં તિલક તરફ આંગળી કરી. શ્રીગોકુલનાયજી તુરત સમજી ગયા અને એ તિલક સુધારવાની આજ્ઞા માગી. ત્યારે શ્રીનાથજીએ આજ્ઞા કરી કે "ના; આ તિલક

મને ઘણુંજ પ્રિય છે.” શ્રીનાથજીની આ આજ્ઞા થયા પછી આ બાંધ્યા વિનાનું તિલકતું માહાત્મ્ય શ્રીગોકુલનાથજીના ઘરમાં વધ્યું છે.

શ્રીમોહનભાઈજી—શ્રીગોકુલેશપ્રભુના અનન્ય સેવક શ્રીમોહનભાઈજીને પરિચય આપવા માટેની આપણામાં શ્રી ચોગ્યતા હોય? તો, પણ ભગવદીયોની વાણીમાંથી-કાંઈક એમના ગુણગાન કરીશું. શ્રીમોહનભાઈજી ભરૂચના વતની હતા. મહાપ્રુદ્ધિશાળી અને મુસદ્દી હતા. તેથી જ મોગલોના અમલમાં પણ તેઓ એક નોખમદાર હોદ્દો મેળવી શક્યા હતા. એમને આગ્રાના દિવાનની પદવી મળી હતી. એમને માસિક ૪૦૦ રૂપીઆ પગાર મળતો હતો. તે વખતના ચારસે રૂપીઆની ગરોળરી અત્યારના ચાર હજાર રૂપીઆ પણ કરી શકે નહિ, તે વખતે એક માણસ અત્યાર કરતાં ચાર ગણો આહાર કરતો અને તે પણ માત્ર આઠ આનાના માસિક ખર્ચે. આ ઉપરથી આપણે તે સમયના ચારસે રૂપીઆની કિંમત આંકી શકીએ. શ્રીમોહનભાઈજી શ્રીગોકુલનાથજીના અનન્ય સેવક હતા. શ્રીગોકુલેશપ્રભુમાં એમની અદ્ભુત આસક્તિ હતી. એમને લીલાનો સાક્ષાત્ અનુભવ હતો. શ્રીગોકુલેશપ્રભુનાં નિત્યલીલાસ્થ સ્વરૂપનાં દર્શન તેમને ભૂતલપર ગિરાજતાં શ્રીગોકુલેશમાં થતાં, તેથી તેઓ શ્રીગોકુલનાથજીપર તન મન ધન નોછાવર કરતા. એમને એક પત્ર ‘પતાકા’ ના ૮ વર્ષના ૧ લા અંકમાં પ્રકટ થઈ ગયો છે. ‘એમાં દીનતાનું’ સ્વરૂપ એથી સ્પષ્ટ દેખાય છે. શ્રીમોહનભાઈજી એટલે દીનતાનું ભૂતિમંત સ્વરૂપ.

એક વખત એક ફકીર રસ્તામાં ભીળ માગતો હતો. એક વેણુવને તેના પર હથા આવી ને કહ્યું કે, “અહ્યા, તારે માગ્યું હોય, તો શ્રીમોહનભાઈજી દિવાન પાસે માગ કે જેઓ તારે દાદિદ્રવ્ય ચૂર કરી નાખશે. બા, તેમની પાસે જઈને શ્રીગોકુલનાથના નામથી માગજે.” પેલો ફકીર રસ્તામાં ઉભો રહ્યો. મોહનભાઈ એક પાલખીમાં-મીયાનામાં ગિરાજેલો હતા. મિયાનો પાસે આવતાંજ પેલા ફકીરે પોકાર કર્યો કે ‘મોહનભાઈ, શ્રીગોકુલનાથકે નામપે’ કયા દેતા હે?’ મોહનભાઈજી પોતાના પ્રાણાધારતું નામ આંભળતાંજ નિર્વૃજ થઈ ગયા. “શ્રીકૃષ્ણનામ જળતે-શ્રવણ સુન્યોરી આલીરી” કીર્તન જેવી દ્રશ્ય થઈ ગઈ. એકદમ પોતાના હાથમાંના હીરાજીત કડાં હજારે રૂપીયાની કિંમતના પેલા ફકીરની ઝાળમાં શ્રીમોહનભાઈએ પ્રાણપતિના નામ પર નોછાવર કરી દીધાં. ફકીર-આદ્યો ગયો. આતુ નામ આસક્તિ.

સાત બાળકોનાં સાત નામો—શ્રીમત્પ્રભુચરણ શ્રીગુસાંઈજીના-સાત બાળકોનાં નામો તો પ્રસિદ્ધ છે. પણ શ્રીગુસાંઈજી પોતે એ સાતે સ્વરૂપોને શું કહીને બોલાવતા એ વાત જાણવા જેવી છે. આ પ્રસંગ પરમદૃષ્ટાણુ ગોસ્વામીશ્રી૬ શ્રીમધુ-સૂદનલાલજી મહારાજે કહ્યો છે. ન્યેષ્ટ પુત્ર શ્રીગિરિધરજીને આપ શ્રી “ગોવર્ધન” કહેતા. શ્રીગોવિંદરાયજીને “રામજી” કહેતા. શ્રીજાલકૃષ્ણજીને “રાજલલોચન” કહી સંબોધતા. શ્રીગોકુલનાથજીનું “શ્રીવલ્લભ” કહેતા. શ્રીરઘુનાથજીને “રામચંદ્ર” નામ આપે. ધર્મ્યું હતું. શ્રીયજ્ઞનાથજીનું નામ “મહારાજજી” રાખ્યું હતું. શ્રીમન-

સ્વામીજીનું નામ “પ્રાણવહન” સ્થાપ્યું હતું. આ સાતે બાલકો આપશ્રીને કાકાજી કહીને સંબોધતા હતા.

સાત સ્વરૂપ અથવા સાત બાલકો—શ્રીગુણવેદ વાંચના લાયક છે. સાત બાલકોમાંથી કયા કયા બાલક કયા કયા રાત્રમાં પ્રવીણ છે એ પર એક ઐતિહાસિક પ્રકાર પાઠવામાં આવ્યો છે. શ્રીગિરિધરજી સર્વ રાત્રમાં પ્રવીણ હતા. શ્રીગોવિંદરાવજી વ્યાકરણ રાત્રમાં, શ્રીબાદશ્યજી વેદમાં, શ્રીમોકુલનાથજી માર્ગના સિદ્ધાંતોમાં, શ્રીચુનાથજી ૧૮ પુરાણો અને ૧૮ ઉપપુરાણો મળીને ૩૬ પુરાણોમાં, શ્રીવદુનાથજી વેદક રાત્રમાં, તેમજ શ્રીધનસ્થામજી પણ વિદ્વાન જ હતા. શ્રીવજ્રસ-વેદના લેખક કહે છે કે, “અમારા શ્રીગોકુલેશ્વરપ્રભુએ કહ્યું છે કે, અમારા બધા બાલકોમાં કોઈ મૂર્ખ તે સહેજ જ નથી; બધામાં અલૌકિક સત્ત છે.” આવા કપલ ઉદ્દેશ માટે માન ઉપજે છે.

બ્રહ્મસંબંધદીક્ષા કોણ આપી શકે?—શ્રીહરિરાયમહાપ્રભુના શ્રીહસ્તાક્ષરના લેખ પરથી વાંચકોને નિશ્ચય થશે કે, વૈષ્ણવો કદી ગાદી પાસે બ્રહ્મસંબંધદીક્ષા બીજા કોઈ વૈષ્ણવને આપી શકે નહિ. મંત્રદીક્ષા માત્ર શ્રીવજ્રસકેવલ આપી શકે છે. પહેલાં શ્રીગોકુલેશ્વરપ્રભુનાં વચનાનુસારી પણ પગ એ વાત સાબીત કરી ગયો છું કે, માત્ર શ્રીમદાચાર્યવંશજ એ દીક્ષા આપી શકે. બે કોઈ વૈષ્ણવ આપે તો તે અંકુશ છે એમ શ્રીમુખનાં વચન છે. ખેર, ત્યારે એ સવાલ ઉભો થયો છે ત્યારે તો તે વિગેની સંપ્રદાયની ઐતિહાસિક પરંપરા પ્રકટ કરવી જોઈએ. શ્રાવણ દુહ ૧૧ ની મધ્ય શત્રિએ સાક્ષાત્ પ્રભુએ શ્રીગદાપ્રભુને બ્રહ્મવિદ્ય મંત્રની આજ્ઞા આપી. દામોદરદાસજીએ એ શીલાનાં દર્શન કર્યાં, પણ તેઓ કાંઈ સમજ્યા નહિ. તે પછી શ્રીમદાપ્રભુજીએ અનુભવ વર્ણવીને પદેપદેકેકું બ્રહ્મસંબંધ મંત્રનું દાન દામોદરદાસજીને કર્યું. આટલો સમર્પણદીક્ષાનો મુળ ઇતિહાસ છે.

સમર્પણમંત્ર પહેલાં શ્રીમદાપ્રભુજીએ અષ્ટાક્ષર અને પછી ગઘમંત્રનું પણ આપશ્રીએ દાન કર્યું, ને અદેવદાનદશ તરીકે આપશ્રી પ્રવશ થયા. વળી સંપ્રદાય વધે અને ફેલી થયેને અત્તીકિક આનંદ મળે તેટલામાટે પેલે ગુરુરાત્રમાં નરોગનિવાસી શ્રીમોખાંદાસજીને આજ્ઞા કરાવી કે, તમે વૈષ્ણવોને અષ્ટાક્ષરમંત્રનું દાન કરજો, (ગઘમંત્રનું નહિ, કારણ કે તે તો પોતાનો વંશ જ આપી શકે એવો આપશ્રીને ભગવદ્વાણુસાર નિશ્ચય હતા. બે શિષ્યોદ્ધારા—સેવકોદ્ધારાજ સંપ્રદાય ચલાવેલા હોત તો મોટે ગૃહસ્થાશ્રમોના અંગીકાર જ ન કરત, ને તેમ કરવાની હાંવદારી પણ નજ યાત. આ વાત ખાસ ધ્યાનમાં રાખવાની છે.) એમ ગુરુરાત્રમાં શ્રીમોખાંદાસજીને આજ્ઞા આપ્યા પછી કાશીમાં શેઠ પુરુષોત્તમદાસને પણ અષ્ટાક્ષરનું દાન કરવાની આજ્ઞા કરી પણ કોઈને સમર્પણમંત્રનું દાન કરવાની આજ્ઞા કરી નહિ. આ ઇતિહાસ શું સૂચવે છે? એજ કે, ગઘમંત્ર કોઈ પણ વૈષ્ણવ વૈષ્ણવને આપી શકે જ નહિ.

ત્યાર બાદ આચાર્યશ્રીના દ્વિતીય કુમાર શ્રીચિત્રકેશ્વર પ્રભુએ પણ પોતાના બે સેવકોને મોત્ર અષ્ટાક્ષર આપવાની આજ્ઞા આપી છે. એક તો શ્રીચાચા હરિવંશજી અને બીજા આઠમા લાલજીવાળા, કે જેના વંશજો અત્યારે પણ દેરાછપમાઈવિખ્યાનમાં અષ્ટાક્ષર આપે છે. એમ બે સેવકોને અષ્ટાક્ષર મંત્રનું દાન કરત વૈષ્ણવોને કરવાની આજ્ઞા આપે આપી.

એક વખતે શ્રીગુરુસાંધજી નરોગ પધાર્યા. નરીગમાં તે સમયે શ્રીમદાપ્રભુજીના સેવક શ્રીમોખાંદાસજી બિરાજતા હતા. આપશ્રીએ પોતાનો મુક્તમ તેમને ઘેર જ રાખ્યો. શ્રીગુરુસાંધજીની પપરામણીની વધાઈ સાંભળીને અનેક વૈષ્ણવો દર્શનાર્થે તેમજ અષ્ટાક્ષર લેવા માટે આવી પહોંચ્યા. શ્રીગુરુસાંધજી પોતે બીતર સેવામાં બિરાજતા હતા. બહાર વૈષ્ણવો કોલાહલ કરતા હતા, તેથી શ્રીમોખાંદાસજીએ

બહાર આવીને વૈષ્ણવોને પુછ્યું કે, તમે શા માટે કોલાહલ કરો છો ? એના જવાબમાં વૈષ્ણવોએ શ્રીગુરુસંપ્રદાય પાસે અષ્ટાક્ષર લેવાની વિનંતિ કરી. ત્યારે શ્રીગુરુપાલદાસજીએ કહ્યું કે, હમણું જાઓ, અષ્ટાક્ષર અમે પણ આપી દઈશું. આ શબ્દો શ્રીગુરુસંપ્રદાયના દાન પર પડ્યા. શ્રીગુરુપાલદાસજીને બોલાવીને શ્રીગુરુસંપ્રદાયને આજ્ઞા કરી કે, અમે ત્યારે અહીંથી વિદાય થઈએ ત્યારે જ તમે અષ્ટાક્ષરનું દાન કરી શકો છો; અમે અહીં હોઈએ ત્યાં સુધીમાં તમે જેને અષ્ટાક્ષરનું દાન કર્યું છે, કરો છો, ને કરશો તે બધા ગંગોજ કહેવાશે; મતભેદ કે ગંગાના પ્રવાહમાંનું જલ નહિ, પણ ખાડા ખેંચામાંના જલ જેવા કહેવાશે, માટે તેના વૈષ્ણવોએ ફરીને અમારી પાસે અષ્ટાક્ષર મંત્ર લઈ જવો. વૈષ્ણવમાં દારૂપ્રભાવ જોઈએ, ને મંત્રદોષા આપવાથી દારૂપ્રભાવ નષ્ટ થઈ એક પ્રકારનો ગર્વ આવી જાય છે, ને આખરે વૈષ્ણવપણું દૂર ચાલ્યું જાય છે. શ્રીમદ્દામ્બુજીના સેવક શ્રીગુરુપાલદાસજીને પણ ત્યારે ગર્વ થયો ત્યારે તે ગર્વ શ્રીગુરુસંપ્રદાયને દૂર કંઠે; ને દયા કરીને તેમની વૈષ્ણવતા જાળવી રાખી. તે પછી શ્રીગુરુસંપ્રદાયને અષ્ટાક્ષરમંત્રનું દાન કરવાની આજ્ઞા પછી વૈષ્ણવોને આપવાનું બંધ કરી દીધું, ને તે પછી કોઈપણ વંશ્યે-શ્રીગુરુવાગ્મિબાલક-તેમ કયાંનું ઇતિહાસને પાને ચડ્યું નથી.

છઠ્ઠી ગાદી અથવા છઠ્ઠું ઘર. ૬

શ્રીમદ્દવસલાચાર્યજીના દ્વિતીય કુમાર શ્રીવિક્રમનાથજી શ્રીગુરુસંપ્રદાયના વંશ અત્યારે આપણને દર્શન આપે છે. શ્રીગુરુસંપ્રદાય સાત બાળકો પ્રકટ બિરાજ્યા. સાત બાળકોને લીધે સાત ગાદી, સાત ઘર, સાત પીઠ; જે કહો તે થયાં. સાત શ્રીહાકુરજીથી કંઈ સ્વાત ઘર થયું નથી. આ સાતે ઘરામાં અત્યારે લિન્ન લિન્ન સ્વરૂપો બિરાજે છે. સાત ઘરમાં હજી ઘર વિશે જે મતભેદ ચાલે છે તેનું સમાધાન હજી થયું થયું નથી. તેનું કારણ આ છે. શ્રીગુરુસંપ્રદાય સાતે લાલજીઓએ શ્રીગુરુસંપ્રદાયની આજ્ઞા અનુસાર એક એક દક્ષિણમાં સ્વરૂપો પોતાને માથે પધરાવી લીધાં. પણ હજી લાલજી શ્રીચક્રનાથજીએ પોતાના પાટામાં આવેલું શ્રીનામકૃષ્ણજીનું સ્વરૂપ (હાલ સુરતમાં બિરાજતું) છોડું હોવાના કારણે પધરાવ્યું નહિ. આમાં ખાસ લાવના તો એ છે કે, શ્રીચક્રનાથજી પોતે શ્રીમદ્દાશાસ્ત્રીજીનું સ્વરૂપ એટલે સ્નેહરસાત્મક-રહ્યા, સ્નેહની ક્યા ધરમાં જર નહોય ? તેથી પોતે બધા લાલજીને ઘેર સેવા કરવા પધારતા. તેમાં શ્રીમંત્રની ત્રિપ્રાણના ધરમાં વધારે વાર પધારતા. આવી રીતે ચવાથી એઓશ્રીના ઘર વિશે મતભેદ થયો છે. આ સંબંધમાં કેટલીક સૂક્ષ્મ બાબત અરમહુરુચરજી કહી, તેઓશ્રીએ પણ તૃતીયપીઠાધીશ્વર-નિત્ય-લીલાસ્ય ગો. શ્રીનામકૃષ્ણજીનાથજી બહારાજની આજ્ઞા થયેલી તે પ્રમાણે અને કહી. એ ઇતિહાસ જાણવા જેવો હોવાથી અહીં ઉતારી છું:—

શ્રીચક્રનાથજીએ છોટા હોવાથી શ્રીનામકૃષ્ણજીને પોતાને ઘેર પધરાવ્યા નહિ, તેથી શ્રીનામકૃષ્ણજી હાલ શ્રીકાંકરાલીમાં બિરાજતા શ્રીદ્વારકાધીયની ગોદમાં બિરાજ્યા; અને તે ત્રીજા ઘરના ગોદના હાકુરજી ગણાયા. હવે શ્રીકલ્યાણરાયજી (હાલ વડોદરામાં બિરાજતા) શ્રીમદ્દામ્બુજીના સેવ્ય હોઈ શ્રીનામકૃષ્ણજીને માથે બિરાજતા હતા. શ્રીનામકૃષ્ણજીની જદ અવરયા થવાથી રીત પ્રમાણે શ્રીકલ્યાણરાયજીને શ્રીનાથજીના ઘરમાં પધરાવવાની ઈચ્છા થઈ. આ વાતની ખબર શ્રીચક્રનાથજી પડી એટલે એઓશ્રીએ મોટું સ્વરૂપ શ્રીમદ્દામ્બુજીનું સેવ્ય હોવાથી પોતાને માથે પધરાવી લીધું; અને તેની સેવા થોડા સમય સુધી પોતે કરીને પછી લીધાંમાં પધાર્યા. આપના ન્યેજ લાલજી શ્રીમધુસૂદનજી હતા. તેઓશ્રીએ પણ કલ્યાણરાયજીની સેવા કરી. પણ પાછળથી કોઈની સમજાવટથી પોતાના પિતાશ્રીના પાંડાના હાકુરજી બાલકૃષ્ણજીને પોતાને ઘેર પધરાવી લાવ્યા. પણ કાંઈ શય્યું નહિ, એટલે ફરીને શ્રીદ્વારકાધીયની ગોદમાં પધરાવ્યા. આમ ને આમ પ્રચુરાર કર્યું એટલે

કાંકરોલીમાં ખિરાજતા ઓદારિકશરણએ, ઓળ લાલજી શ્રીગણધર્મજીના લાલજીએ શ્રીનાથજીના રીક્ત તરીકે ખિરાજતા ચોથા લાલજી શ્રીગોકુલનાથજીને પ્રાર્થના કરી, તેથી એઓશ્રીએ પોતાનાં બન્ને ભત્રીજા ઉક્ત બન્ને સાથજીને બોલાવીને તોડ કાઢી આપ્યો. શ્રીમધુસૂદનજીએ તેા શ્રીકલ્યાણરાયજીની જ સેવા પધરાવી, અને એ વિષે એક ફારગતી લખીને શ્રીગણધર્મજી ઉપરથી પોતાનો દક્ક ઉઠાવી લીધી અને ફરીને ફારકાપીયની એકમાં પધરાવ્યા. આ ફારગતી લખી કાંકરોલીમાં ખિરાજે છે.

આ ઉપરથી જણાશે કે, હજી લાલજી શ્રીધુનાથજીનું મોટું ધર ઝેરગલવાનું જ મળ્યાય, અને તેમાં કલ્યાણરાયજી ખિરાજે છે ત્રીજે કલ્યાણરાયજી જ હજી સ્વરૂપ તરીકે ખાની થકાય. આ વિષે કશો સંદેહ રહેતો નથી. જાલકના ધરના દિસાબધી કાકુરજી છે, કાકુરજીના દિસાબધી બાલકાનું ધર નથી.

શ્રીવિદ્યારાયજી—અરમહુસુરજીએ એક દિવસે નિત્ય નિયમમાં ચરણસ્પર્શ કરવાનાં ચિત્રોનાં દર્શન કૃપા કરીને કરાવ્યાં. તેમાં એક અદ્ભુત ચિત્ર પણ મેં નિરખ્યું. એ ચિત્રમાં એક શ્રીગણધર્મનાથજી શ્રીનાથજીના ચરણક્રમસ પર બન્ને શ્રીહસ્ત સ્થાપિને અધુપ્રવાહ વહેવરાવી રહ્યા છે અને તેથી શ્રીનાથજી પોતાની કટિ પર સ્થાપેલા દક્ષિણ-અમણી હસ્ત તેમના મસ્તક પર સ્થાપેલા છે. આ અદ્ભુત ચિત્રનો ભાર મને કાંઈ પણ સમજાયા નહિ; એટલે શુરહેવને વિનંતિ કરી. તેઓશ્રીએ તે પાડી એક ઇતિહાસ કરાવ્યો; જે હું અહીં ઉઠાવી લઉં છું.

શ્રીગણધર્મજીના ખીમ સાથજી શ્રીગણધર્મજીના જ વંશમાં એક બાલક શ્રીવિદ્યારાયજી પ્રકટ થયા છે. આ વિદ્યારાયજી શ્રીનાથજીનાં ખિરાજતા અને શ્રીવિદ્યારાયજીની (શ્રીકુરજીની) સેવા કરતાં શ્રીવિદ્યારાયજી મહારાજ સેવાના અનોસરમાં રાખ્યા, જ્યાં આદિ નિત્ય નિયમ કરતા. નિત્ય નિયમ વખતે લોકિક દષ્ટિએ એક તદ્દન વિપરીત અને આશ્ચર્યકારક ધરના ધત્તી હતી. એક ધત્તી મુસલમાન સ્ત્રી હતી. તે નિત્ય નિયમ સમયે શ્રીવિદ્યારાયજીની સામે બેસતી હતી. વળી મહારાજશ્રી પાનુ તેની આંખો સમયે જ્યાં કરતાં કરતાં એકીટસે જોયા કરતા હતા. બાળે બેઠે કોઈને પણ મળ્યો ન હતો. કેટલાક અંતરંગ કૃપાપાત્ર વૈષ્ણવોને તો આનું સદસ્ય મળી ગયું હતું, એટલે તેમને મહારાજશ્રીની આ અદ્ભુત લીલાથી મોહ થયો નહતો. આ લીલાનો બેઠે શુરકૃપાથી આપણે પણ જાણી લઈએ. વસ્તુતઃ પેલી સ્ત્રી કોઈ દેવી પિરવી પ્રભુલક્ષ્મી હતી. એના બન્ને આંખોમાં સ્વામીશ્વરજીની છબી સ્વષ્ટ દેખાતી હતી. એ બાળ્યમાં જાણીને નરવર-વૃજસ-જોડેને નયનોમાં રાખાવ્યા હતા. આ દર્શન શ્રીવિદ્યારાયજીને સ્વષ્ટ રીતે થતાં હતાં, તેથી તેઓ લોકસાગર કે કુસમપીઠાની પરચ કયાં વિના એ બાળને માત્ર જ્યાંપણ વખતે સામે બેસવા દેતા હતા. રમમાન્ય દુન્યવી ગાણસ આ મુંઝવે બેઠે કયાંથી ઉઠેલી શકે? સામાન્ય લોકો તો આ વાતની ખૂબ ચર્ચા કરવા લાગ્યા. એ રીતે લોકચર્ચાએ અંબીર સ્વરૂપ પકડ્યું, અને પોતાની સત્તા શ્રીગણધર્મજી બાલકની માતિ ઉપર પળ સ્થાપી દીધી. બધા સમજતો-ખાસ ભટ્ટ સમજી-તો ખૂબ બળમળી ઉઠ્યા. શ્રીવિદ્યારાયજીને આ વ્યવહાર તાકીદે બંધ કરી દેવા ધણીવાર ચેતારી ગયા પણ તેઓ તો પોતાની ટેકમાં આગળ રવા. તેથી છેવટે તેઓશ્રીને જનિજ્વાર કરવાનો દાવ કરવામાં આવ્યો. એક દિવસે શ્રીનાથજી ઉઠ્યા શુંબાર તેમને આપણેમાં આવ્યો. શ્રીવિદ્યારાયજીએ તે દિવસે કુંદેરા મસ્તકાળો શુંબાર. શ્રીમે મરાઓ. શુંબાર મળી રહ્યાં પાડી આમે કાશ્મીર સચોઈમાં પ્રિયદર્શન અનુભવવા માંગ્યા. આખને

સ્મરણ થયું કે આજે મારા છેલ્લા શૃંગાર છે અને હવેથી શ્રીનાથજી મારા હાથના શૃંગાર નહિ થશે. આ વાતની યાદ આવતાંની સાથેજ હૃદય કંપાઈ ગયું. સયોગરસની સત્તા વિરહરસે ખુંચી લીધી. એકદમ નેત્રમાંનો અશ્રુનો પ્રવાહ વહેવા લાગ્યો. આજે તુરંતજ શ્રીનાથજીનાં ચરણકમંધ પર બંને હસ્તે રંધાપી દીધા. નેત્રમાંનો અશ્રુપ્રવાહ તો ચાલુજ હતો. એ અશ્રુપ્રવાહથી શ્રીના ચરણ કમંધ પાસેની ગાદી આખી તરબોળ થઈ ગઈ. શ્રીજી તો દયાના સાગર, તે આવેા ઉત્કટ વિપ્રલોભ સન્નિધાનનાં કેમ સહી શકે ? એકદમ પોતાનો જમણો હસ્ત ફેડ પરથી ઉઠાવીને શ્રીવિઠ્ઠલરાયજીના મસ્તકપર રંધાપી દીધો ને આગા કરી કે હલે આખી જાતિ તમારાથી વિરહ હોય, પણ હું તો તમારા પક્ષમાંજ છું. આ શીતલ વચનોથી શ્રીવિઠ્ઠલરાયજીનો ત્વરહાસિ શાંત થયો. હવે આ તરફ શું થયું કે શૃંગારમાં વિલંબ થવાથી શ્રીનાથજીના તિલકાપિત તથા અન્ય ગોરવાભિન્નાવકો પણ બીતર પદાર્થો હતા, અને આ લીલાનો સાક્ષાત્કાર કર્યો હતો. તેથી શૃંગારભોગ ધરીને ન્યારે શ્રીવિઠ્ઠલરાયજી બહાર પદાર્થો ત્યારે બધા સ્વજાતીનોએ એઓના ચરણમાં સાષ્ટાંગ દંડવત્ પ્રણામ કર્યા અને જાતિનો પ્રતિજ્ઞા દૂર કર્યો.

મહાનુભાવીઓની લીલા અટકળવી મુરકેલ છે. મુરકૂપાંથીજ તેનો બેઠ ઉદ્ભાવની ચાવી મળે. તેને માટે દૈવ વિશ્વાસની જરૂર છે. પડિત જગન્નાથ કવિ મહાસમર્થ વિદ્વાન થઇ ગયા હતા. તેમણે એક મુસલમાની સ્ત્રી સાથે ગાઢ સંબંધ બાંધ્યો હતો. તેઓનો પણ આજ કારણે જાતિ-બદ્ધિષ્કાર થયો હતો. પછી પોતાની પવિત્રતાની ખાતરી કરી આપવા માટે તેમણે ગંગાજીની સ્તુતિ કરવા માંડી ગંગાજીનો પ્રવાહ ખાવન પગથીયાંની નીચે હતો. એક એક સ્તુતિના શ્લોકથી એક એક પગથીયાં ગંગાજી ચઢતાં ગયાં. આલીંગન ખાવન શ્લોક પૂરા થયા અને ગંગાજી પણ ખાવન પગથીયાં ચડી ચૂક્યાં. ન્યારે સત્વશુભાભિમાની વિપ્લુનાં ચરણજલની આ શક્તિ તો નિર્ગુણ પૂર્ણ પુરુષોત્તમની કૃપાની તો વાતજ શી કરવી ? કવિ દયારામ ભાઈ ગાય છે:—

“યનની રાખી જગન્નાથ પડિત, તે તો સહજ બની આવેરે;

ખાવન સીદી ગંગા ચઢાવી, તે વેળા વેવધાં વીણાવે.”

x . x . x . x . x .

મોટાનું વચન મુખધામ, કૃતિ રીતે કરીએ;

તે કરે ચલાય સો કામ, આપણે તો :મરીએ.

‘મહાપુરુષોની કૃતિની નકલ કરતાં તો વાર ન લાગે, પણ ન્યારે સમય આવે તે પારે આપણી કૃતિ રેવડી થાય છે તે જોવાનું છે. મહાનુભવોના દાખલા દહને રચ્ચંદ પર્તન કરવું: સગવડીયો પંથ પાળવો એ બધું સહેલામાં શહેલું છે. માત્ર એ મહાનુભાવીઓનાં વચનને અનુસરીને ધીરે ધીરે ઉત્તમ કોટિપર ચઢવું એ જ મુરકેલમાં મુરકેલ છે.

શ્રીયોગિગોપેશ્વરજી—આપથીએ શ્રીનાથદ્વારામાં ગિરાજતા શ્રીવિઠ્ઠલનાથજીના દ્વિતીય પીઠનાં તિલકાપિત તરીકે દર્શન આપ્યાં છે. શ્રીદરિરાવજી મહાપ્રભુએ પણ આજ પીઠને અર્ચકૃત કર્યું છે. આપનું નામ તો શ્રીગોપેશ્વરજી છે, પણ યોગિગોપેશ્વરજી તરીકે આપ ઘણા પ્રસિદ્ધિમાં આવ્યાં છે. અસ્થિત જ આપ એક મહાન યોગી હતા. યોગી એટલે સમાધિ ચલાવનાર કે સત્યામહી યોગી નહિ, પણ કોઈક અલૌકિક રસમગ્ન અંદુલિત યોગી. આપણા પ્રભુ પણ યોગેશ્વર કહેવાય છે, યોગિપેશ્વરજીનું નામ “યોગી” તરીકે પ્રસિદ્ધ થવાનું કારણ આપની રસમસ્ત દયા જ છે. આપ કોઈની સાથે કેમ વાતચિત કરતા જ નહિ. આપની દિન-સર્વ વિલસણ જ હતી. આપ પ્રભુસેવા કરતા અને વૈદિક વિધિ-અનુસાર નિત્ય નિયમ પણ

તથા સ્વરૂપસેવા પધરાવી દેવા કમ્બ સ્થાવી અને ગ્રીવાયુજની ગોલાં મિરાજતા શ્રીમદનમોહન-
ચાચકને પધરાવી આવવાનું નહોતું. પરંતુ શ્રી પધરાવવાના મુદ્દતને દિવસે ગોદના રામચંદ્ર
પધરાવી દેવાની શ્રીદાસી મહારાજે ના કહી અને બીજું કોઈ પણ સ્વરૂપ પધરાવી લેવા
નહોતું. આપ બહુ સમય સેવામાં ઉપરિચિત હતા એટલે પેલા અનુભવ મુજબ આશમંડીમાંથી
શ્રીગુણોદયના સેવ્યનિધિ શ્રીમદનમોહનચાચકને ઝાંપીકામાં પધરાવી લીધા ત્યાર બાદ પેલા
સમય ત્યાં રોમાંષ વદન મહારાજ મુદ્દાં વિગત યદ મગમાં પધાર્યા.

આપે તેક જોત હતાકિના પ્રજાંધ છો નહોતો, પરંતુ વૈષ્ણવો દ્વારા જે દિવસે તેટલી
સામગ્રી આવતી તે તમામ શ્રી આરોમાવીને વૈષ્ણવોને પ્રસાદ લેવાની દેતા. અર્થાત આજે
પરોરની સામગ્રી આવતી તો તેટલી આરોમાવતા અને બીજે દિવસે દય મેરની આવતી તો તે
તમામ આરોમાવી દેતા. ભંડારમાં ગ્રાહ્યોના રાખવાનો રિવાજ નહોતો. મીને માટે કોઈ પણ અનુક
સ્થાન મુશ્કર હતું નહોતું, પરંતુ હમેશાં ઝાંપીકામાં જ પધરાવી રાખતા. અને એક દાણ પણ
પોચાથી અવગ્રહ કરતા નહિ. આપને શ્રીમદ્ભાગવત સમગ્ર કંઠાએ હતું અને અહર્નિશ તેનો પદ
સત્ત્વ અધુ રહેતો હોવાથી મગમાં પધાર્યા. બાદ મજવાસીઓમાં ગયો ચાલી કે, આપ તે
દિવસ ને ગાંધ મુનગુનાટ કરે છે. ત્યારથી આવતું નામ મનુષ્ય પ્રસિદ્ધ થઈ ગયું. અને તે
નામથી જ લીલાપર્યંત પ્રસિદ્ધ રહ્યા.



चतुर्थपंचमपोठाधीश्वर गो. श्री. ६ श्री बलभाचार्यजी महाराजधीना
आत्मज चि. गो. श्रीगोविन्दरायजी.

(पंचमवर्षप्रवेश-सं. १९९० कार्तिक सुद १३)



वीकानेरनरेश श्रीडुंगरसिंहजी बहादुर.

शिलालेख.

श्रीगोकुलेन्दुर्विजयते।

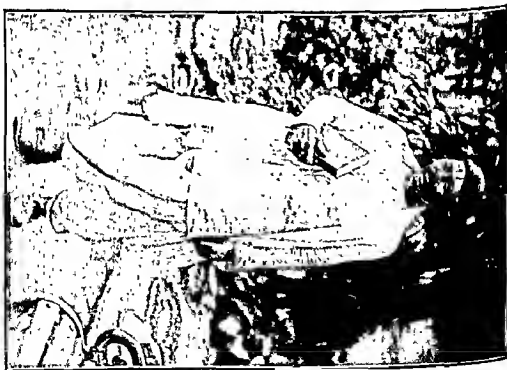
कृष्णं विष्णुं फणीशं शिवं शुक्लमुनीन् व्यासदेवं शुक्लं च श्रीविष्णु
स्वामिदेवं प्रभृति शुक्लभाचार्यमोडे ॥ श्रीमंतं विठ्ठलेशं रघुपतिकुलजं
देवकीनन्दनार्थं तेषामाचार्यसिंहासनमिह जयते पुण्यवंतो हि यावत्।

सं० १९४२ मि. आश्विन शुक्ल १० विजयादशमी पुण्यमूर्ति
राजराजेश्वर नरेन्द्र शिरोमणि श्री २ डुंगरसिंहजी बहादुर विजयराज्ये
शुभं भवतु।

विकानेरस्थ ३ तीन कोस दूर श्रीदेवकीनन्दनप्रभुकी बैठकका शिलालेख.



विद्याविद्यानी गोपबालांभी ६ धीवृत्तान्तमन्त्रान्तो महाप्राप्त
(इमावन्तो भारी हर्षतोना भारीरु.)



કચ્છી, ગંધાસમયેજ શ્રીને અનુકૂળ અરોગ્યવશો એવી હતી. જેથી પ્રાસ આશુ રાખ્યો. એક વખત આશ્વિનકૃષ્ણ અષ્ટમીના સુમંગલ પ્રભાતે આપે આરા કરી કે, આપણે અમુક શહેરમાં જઈ ઉતરવ. કરવો છે. આ આગાથી સર્વે સેવકો વિચારવા લાગ્યા કે, આપણે વિમાનથી ઉડ્ય પ્રદેશમાં છીએ અને અને સમય તો નહકમાંજ છે. તો આવા સમયમાં આપનો મનોરમ સિદ્ધ થવો અશક્ય છે. પરંતુ હજી તો શ્રીને ધૂંધાર ધવળી રાજમેળ સમર્પવાની તૈયારી હતી, તેવામાં કમચારી મનુષ્યો ત્યાં આવ્યા અને વિનંતિ કરી કે, અમારા મહારાજ સાહેબ આપની રાદ છુટે છે, તેમજ આપને પધરાવવા અમને મોકલ્યા છે તો સત્વર પધારો. આ સાંભળી દરેક સેવકો આશ્ચર્ય પામ્યા. જેથી આપે રાજના સેવકની કુશળતા પૂછ્યા બાદ કહ્યું કે, “તમારા રાજને અમારા આગમનની કાંઈ ખબર કરી ?” ત્યારે સેવકોએ કહ્યું કે “જય કૃપાનાથ, અમારા મહારાજને ગતરાત્રિએ એક સ્વપ્ન થયું, તેમાં શીનાથજીએ આરા કરી છે, કે માફ પીઠું પ્રત્યક્ષ રંગરૂપ આચાર્યશ્રી આ નગરથી બાર કોસ ઉપર બિરાજે છે, અને તેઓને ધીને અનુકૂળ આરોગ્યવશો છે. જેથી સામગ્રીની તૈયારી કરો અને ઘૂર્ણ પધારી આવો. જેથી મહારાજ પોને સામગ્રી સિદ્ધ કરવામાં પ્રવૃત્ત થયા છે, અને આપને પધરાવવા અમને મોકલ્યા છે.

મહારાજશ્રી સેવાથી નિવૃત્ત થઈ શ્રીને ઝાંખીટમાં પધરાવી તે રાજના નગરનાં પધાર્યાં, અને તમામ વાતી નિવેદન કરી. ત્યાર બાદ દીપમાલિકા સુધીનો ઉત્સવ મોટા આનંદપૂર્વક ઉજવવામાં આવ્યો, પરંતુ કાન જમાવવાનો સમય આવતાં ખબર મળી કે, આ પદારી પ્રદેશમાં ભાવ મળી શકશે નહિ. જેથી આપે અમુક કિયાતો ત્યાગ કરી વેલોકા પરિવારીનો ભંજ ન થવા દેવો એવી ઇચ્છાથી અન્ન (બકરી)થી કાન જળવવાની કિયા કરી દીધી. આથી સઘે આવેલા પંડિતોએ વાંધા ઉઠાવ્યો કે, આપે આ શાસ્ત્રવિરદ્ધ અનુચિત કાર્ય કર્યું છે. પ્રત્યક્ષમાં તો વિદ્વાનો મૈત્રી ભાવ દર્શાવતા પરંતુ અંદરથી આપની ભુક્ષો શોધવા મતસરતાપૂર્વક અણુભાષ્યના અભ્યાસ નિમિત્તે સાથે વિચરવા લાગ્યા હતા. આપ તો દરેક કાર્ય સનાતન વેદધર્મને અનુસરીનેજ શાસ્ત્રાકત રીતે કરતા. પણ પંડિતો અણુઅણુ લાગ્યા કે આપણે ગાયતો દક બકરીને અર્પણ કરવો એ કોષખજ પ્રકારે હિંદુ નથી, અને ત્યારે આચાર્યો આવી વર્તાણુક ચલણે ત્યારે અન્યની તો વાનજ ક્યો રહી ? આવી બાબતોને ચાલાવી સેવાથી સનાતન વેદધર્મની મહાદાનો લોપ થઈ જશે. આવા પ્રકારનો વિવાદ ઉપરિચત થયો. જેથી ત્યાંજ શાસ્ત્રાર્થ મારે સત્તા નિર્માણ કરી. રાજને પોતાના પંડિતો ઉપરાંત આસપાસના પ્રદેશોમાંથી બીજા પણ કેટલાક પંડિતોને બોલાવ્યા, ત્રણ દિવસના શાસ્ત્રાર્થ બાદ આપનું કાર્ય શાસ્ત્રાર્થસમ્મત સિદ્ધ થયું અને તમામ પંડિતોએ પ્રમાણપત્ર લખી આપ્યું. આ શાસ્ત્રાર્થમાં કેટલાંક લૌકિક પ્રમાણો પણ આપ્યાં કે, મુખ્ય જમને અમારે ઉત્તરાધિકારી પ્રતિનિધિથી લઈ સકાય છે, જેમ રાજને અમારે મંજૂથી, કોને અમારે વાણીતરથી, પોતા ગરીબે અમારે બેલગારીથી, દૂધને અમારે હાથથી ઈલાદિ પ્રકારે કાર્ય થઈ શકે છે, તેમજે વેરમાં બકરી પરિત મનાયેલ છે. સ્મૃતિકારીનું વચન છે કે, ગાયના મુખથી અપવિત્ર થયેલાં પાત્ર અળમુખથી પરિત થાય છે. અર્થાત્ ગાયનું કાર્ય બકરીકારા થઈ શકે છે.

ઉપરનો બતાવ જન્મા પછી પંડિતોએ નિશ્ચય કર્યો કે, જેની છન્દાએજ સરસ્વતીનો સ્વરૂપ નિવાસ હોય એવા વામધીસ (વણી-સરસ્વતીના રવાળી) ની સઘે વિવાદ કરવો એ મિથ્યા મમત છે. આ પ્રકારે પરસ્પરમાં વિચાર કરી પોતપોતાને રચાનકે સ્વસ્થ ગયા. ત્યારથી મતસરતા ત્યાગી પૂન્ય પુદ્ધિથી વર્તવા લાગ્યા.

આપ અતિશય ઉદાર તથા બોળા હલવાના હતા, કોઈનો પણ દોષ આપના લક્ષ્યમાં આવતો નહી. એક સમય એક માણસે આપની પાસે સમય જોઈ વિનંતિ કરી કે, “કૃપાનાથ, આપનો

કારભારી વ્યવસ્થા જાળવતો નથી અને આર્થિક નષ્ટ છે.” તે સાંભળી આપે આજ્ઞા કરી કે, “તું સારો કારભાર કરી શકીશ? તુરંત આજેતુકે” મનુષ્યે હા કહી. એટલે તેને કારભારીનો ઉપરજો આદાઓ અને સેવકોમાં સામેલ કરી દીધો, પરંતુ અર્થમતો કારભારી તો કાયમજ રહ્યો. ફટલેક સમય આ પ્રકારે વીતતાં કારભારીઓની સંખ્યા પણ વધી ગઈ. કારણ જે કોઈ આવીને કારભારી થવાની માગણી કરે છે તેને ના નહિ, એટલે મહોપદસાદના ભોગી ભોગી થાય. તેમાં શું આશ્ચર્ય? કહેવત ચાલી કે ‘શીકારકશજના સાગ્યાર કામદાર’!!

આપ ચાર બંધુઓ હતા. એક દિવસ આપ આંખની માતુશ્રીની ગાદમાંથી મસ્તક રાખી પોદયા. અને માતુશ્રીના મુખારવિંદ સામે દિષ્ટ કરી કહ્યું કે, અંગે ચાર ભાઈઓ આપની દેયાતીમાંજ લીલા વિસ્તારીશું, જન્યું પણ એમજ.

અનુકરણીય—સુપ્રસિદ્ધ ‘શુદ્ધદેવ’ વિદ્યારંધ સાચીજ દરિદ્રજા વીરંભાઈને મુળદના શ્રીજીદન્ધ દિશાથીયે પોતાના મોટા મંદિરમાં પ્રવચનોય. એક સાંપ્રદાયિક વિદ્વાન તરીકે કાયમના નીચા છે. તેઓએ સાંપ્રદાયિક અભ્યાસીઓ માટે એક વર્ગ ચલાવે છે. આ એક અનુકરણીય કાવ્ય છે.

‘પોદપત્રિકા’ પર સુકદમો—‘દેવજા બોલ અને મણીય’ આશ્રેયે કરવા માટે શ્રી મુળદના શ્રીલાલબાબાના મંદિરવાળા ગોરવાખી શ્રી શ્રીવલ્લભલાલ મહાસાગ્રીએ (નિધીધીવારજ ગા. શ્રી રણછોલાલજી મહાસાગ્રીના આત્મજ) ‘પોદપત્રિકા’ પર જનનક્ષીની ફરીવાર ફાંદારી કાટમાં ફાંદાર મૂકીને મૂકી છે. ‘પોદ’ વાળા પર નારંગ નીચા સુધું છે.

શુદ્ધ કીર્તન સંગીતનો મહાન ગ્રંથ

ધોડાજ સમયમાં] સંપ્રદાયમાં અંપૂર્વ ગ્રંથ [પ્રગટ થશે,

સંગીત એટલે શું?—તે સમજવવા માટેની સવિસ્તર સમજ આપી છે. ૧ સંગીત વેદા અને કળા, ૨ રાગ એટલે શું? ૩ રાગોની સંખ્યા કટલી અને તે વિશે જુદા જુદા મત, ૪ રાગોનું કુદંબ (રાગિણી, રાગપુત્ર, રાગપુત્ર, રાગપુત્રવધુ વગેરે) ૫ યાદ, ૬ નાદ અને શ્રુતિ, ૭ સ્વર અને તેના પ્રકારો, ૮ આરોહ-અવરોહ, ૯ સ્વર સમક, ૧૦ વાદી, સંવાદી, અંતુવાદી, પિવાદી સ્વરોનું બંધારણ, ૧૧ અંશ, મહા-પાત્ર તથા નવતિ સ્વરોનું બંધારણ, ૧૨ કીર્તનોમાં વપરાયલા સંગીત શબ્દોના અર્થ, ૧૩ ગ્યાયી, અંતરા, સંચારી અને આભોગ, ૧૪ જનાનાં તથા મહાના સ્વરોનું બંધારણ, ૧૫ કાળ અને માત્રા, ૧૬ તાલ, અંગ પ્રત્યંગ-નવતિ, ૧૭ કીર્તનોપયોગી તાલ, તેની માત્રા કાટલીના ભોધ સાથે, ૧૮ દુપર-ધમાર, ૧૯ કીર્તનોપયોગી મુખ્ય વાદી ત્રિધે માહીતી. ૨૦ કીર્તન સંગીત ગાયક, ૨૧ કીર્તન સંગીતનો વિચાર્યો પ્રભે, ૨૨ ગ્રંથોમાં વાપરેલી નીચાનીઓનું સ્પષ્ટીકરણ.

મુખ્ય રાગો—ભૈરવ, વીરવાલ, (અલેયો તથા નટ) અસાવરી, પૂર્વી, ખમાજ, કાશી, માલકોષ, સારંગ, હમન, બીકાળ, વગેરે રાગોની સમજ તથા કીર્તનો નોટશન સાથે છે, કીર્તન હવે પછી.

આવો ગ્રંથ સંપ્રદાયમાં તેમજ ગુજરાતી સાહિત્યમાં પહેલોજ છે. આ પુસ્તક પરથી કીર્તન સંગીત શીખવાનો માર્ગ સરલમાં સરલ બની જશે. વધારે શું કહીએ. જલદી નામ નોંધાવે. લેખક તથા પ્રકાશક-કીર્તનીયા ચંપકલાલ છમીવદાસ, ડૉ. શ્રી દારકાનાયજનું મંદિર, રામપુર, અમદાવાદ. તથા શુદ્ધદેવ કાર્યોદય અને મુખ્યાલ લાલાજી ડૉ. શ્રી ગોકુલનાથજનું મંદિર, પડી પોળ, ધનાસુધારની પોળ, અમદાવાદ અને કીર્તનીયા છમીવદાસજી ડૉ. શ્રી દારકાનાયજનું મંદિર, પાટણ ઉત્તર ગુજરાત; એ સ્થળે નામો નોંધાવી શકશો.

॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

श्रीमद्भक्तमाचार्यात्मजश्रीगोविन्दलालमहोदयपञ्चमपरम्येता-

महोत्सवाशीर्वादसूक्तिः ।

शार्दूलविक्रीरितवृत्तम् ।

श्रीगोविर्धनधारणोद्यतकृत्श्रीगोकुलापीभ्यः-

श्रीमद्गोकुलचन्द्रमथरणयोरासक्तचित्ताश्रयः ॥

श्रीमदेवकनन्दनात्मनमुतश्रीवल्लभायात्मज-

श्रीगोविन्दहरेणं विनयतां वर्योत्सवः पञ्चमः

॥१॥

श्रीकृष्णो गिरिसानुपूजनविधौ नन्दाङ्गमभ्यस्थितः ।

श्रीमद्भक्तमवर्षसन्निधिगतः श्रीविठलेनो यथा ॥

मार्कण्डेयसामर्थ्येन प्रथमतः सक्तः समस्तं पितु-

मार्कण्डेयसमापुरस्तु भगवान् गोविन्दलालः प्रभुः

॥२॥

एकां भाव्यनुनाय दास्यवि निजां छष्टिं तथा प्रापयन् ।

कृत्वातिक्रमणं चतुर्थशरदः प्राप्तः स्वयं पञ्चमम् ॥

धन्यं वत्सरमित्यहो स्वचरितैर्विदार्थदः सेवकान् ।

श्रीगोविन्दहरिः सपितृवरणो जीव्याविरं सानुजः

॥३॥

विमाशामुतरामपातिवहरीत्यौपाधिक्रया ददु-

देवा इन्द्रपूरोगमाथ सुमनोभिर्वर्षयन्तो भुवम् ॥

सद्भाग्याः स्वमनोभिरर्चयन्त आशीर्गणं वैष्णवा

जीव्यादैष्णयनेत्रवारकमणिगोविन्दलालधिरम्

॥४॥

पूर्णा वेदसमा इति स्वचक्रुः वेदानिगतं तथा ।

भक्तेः पञ्चमतां मदन्तीषानि यद् वर्षं शुभं पञ्चमम् ॥

मार्कण्डेयसमानमुदिरिति तं संपूज्य भूषादयं ।

श्रीमद्भक्तमवर्षमौक्तिकमणिगोविन्दलालः प्रभुः

॥५॥

उपजातिवृत्तम् ।

नरोत्तमेन स्वगुणवपुषैः प्रपन्नं फले प्रपितादिपम् ।

गोविन्दलालस्य हरेः गुणवत् भूषात् शुभाशीर्चनाञ्जनाया ॥६॥

शास्त्रिमोर्तासमतनुज्ञानो नरोत्तमस्य पादार्धं प्रकृतम्

ચર્ચાપત્ર.

ફાતડાશાહી કેની ?

‘શુદ્ધાદેવ’ ના ત’ત્રીજી, ‘શુભરાતી’ પત્રના તા. ૫-૧૧-૩૩ ના અંકમાં ‘વાણવતી વૈષ્ણવ’ ના પુરખા નીચે મારા જેવાજ કોઈ હડહડતા માયાવાદી શંકરે જે નીચ હુમલો કર્યો છે, તેનો જવાબ આપવાની જરૂર છે. એ કહેવાતા ‘વાણવતી વૈષ્ણવ’ શંકરે પોતે કાચના બગડામાં ઘેરોને ખીલના મહાન પર પત્થરા ફેંકવા માંડયા છે, એજ તેની પોતાની ‘વાયડાઈ ફાતડાઈ’ કે હીઝાઈ ભરેલી વર્તણૂંક નહિ તો બીજું શું છે ?

હું પોતે શંકર છું. પણ શ્રીશંકરાચાર્યજીને ‘જગદ્ગુરુ’ માનવા કે મનાવવા તેયાર નથી. શ્રીશંકરાચાર્ય તરફ મને થોડો પૂજ્યભાવ નથી; પણ જ્યારે કોઈ શંકર શ્રીવહ્નિ સંપ્રદાય ઉપર ઘોઠો હુમલો કરે અને પોતાના પગ નીચેના રેલાને જુએ નહિ તે હું સહી નહીં શકું. જગદ્ગુરુ તો માન એક શ્રીકૃષ્ણ છે કે, જેમની ચીતાનો તરજીમાં દુનીયાભરની ભાષામાં થયો છે, અને જગત્ના વિદ્વાનો અને તત્ત્વજ્ઞાનીઓ તે જ્ઞાનામૃત પીએ છે. શ્રીશંકરાચાર્ય જેનો જગદ્ગુરુ ગણાય ? અત્યારે દુનિયાની યોદી વરેલી બીજી ધર્મને મારે છે, શું તેઓ શંકરાચાર્યને ગુરુ માનશે ? શ્રી અને જગદગુરુની જેલો અજાનની વરેલી બીજી છે. વળી શ્રીશંકરાચાર્ય પોતે ગુરુત શ્રીકૃષ્ણમુખ હતા, પણ તેમણે જે માયાવાદ નીપળવી કાઢ્યો છે તે તો બીજી ધર્મની પોલીસ કહેલી નવી આજ્ઞાન છે. ડા. થોમ્સ જેવા ખાસાલ વિદ્વાનો અને ડા. સર લાંડારકર, ડા. જિન્દલકર અને શીશુલ નર્મદાશંકર મહેતા જેવા વિદ્વાનો પણ તે વાત સ્વીકારે છે. ‘શુભરાતી’ના ત’ત્રી મી. નટરસાહ, કે જેમનું સંસ્કૃતજ્ઞાન સાળકાથી આગળનું લાગેલ છે, તેમના અભિપ્રાયો કરાચી કામના નથી. બીજી ધર્મ દિન્દિમાંથી ગયે, તે કુમારિલ ભટ્ટનોજ પ્રતાપ, અવળત, શ્રીશંકરાચાર્ય તેમો કાંઈક સકાયબૂત બન્યા હશે, તેઓ પણ આફ્રિકા, ઇંગ્લેન્ડ કે અમેરિકા કે મકાગદીના ગયા નથી, તેમ તેમના કોઈ અત્યાર છુટીના પીકામિપતિઓ પણ ત્યાં ગયા નથી, તો તેમને જગદ્ગુરુ મનાવવા એ હું ખુલ્લો ઉત્તરપોંડી નથી ? અવળત, શં, માધવલીયં સ્વામી ઇચ્છંડ જાતા હતા, કેમકે તેઓએ પરદેશગમનની ફરે આપી હતી તેથી અનુમાન વાચ કે બીજા દેશોમાં પણ જઈને દિગ્વિજય કરી લાવે ? પણ તેમના શિષ્ય તો. પરદેશગમનથી વંચન વિરહજન છે. જો આવા એકદેશી શંકરાચાર્ય જગદ્ગુરુ કહેવાય તો તેમના પછીના શ્રીશામાનુભાચાર્ય આદિ જગદ્ગુરુ કેમ ન કહેવાય ? શ્રીશામાનુભાચાર્ય આદિના સંપ્રદાયમાં પોતાના સ્થાપક આચાર્યશ્રીઓને જગદ્ગુરુ અસહયીજ કહે છે, અને તે પણ સા. નટરસાહ દેસાઈ કરતાં સોગણી વિદ્વાતા ધરાવનારા મહાન પંડિતો કહે છે. સા. નટરસાહ દેસાઈ એમની વર્તણૂંકને ‘વાયડાઈ કે ફાતડાઈ’ કહેલી ગણ્યા તેયાર છે ? અત્યારે પ્રતિવાદિલય કરપીકતા શ્રીશામાનુભાચાર્ય પોતાને જગદ્ગુરુ કહે છે અને કાશીના મહાન પંડિતો પણ એ વાત સ્વીકારે છે તો શું તે ગપા વાચક કે ફાતડા કે ?

શ્રીવહ્નિસંપ્રદાયના સ્થાપક શ્રીમદ્ભક્ત્યાચાર્યજી આજે ચારસો વર્ષથી જગદ્ગુરુ તરીકે સંબોધાય છે, નાં વાયડાઈ કે ફાતડાઈની ગંધ વાયડા કે ફાતડા વિના બીજા કોઈને આવી લાગી નથી, કાશીના પંડિતો અને સદ્ગત મહામહોપાધ્યાય લક્ષ્મણાચારી અને સર્વ આચાર્યો અને વિદ્વાનોની બ્રાહ્મણ મહાસભાએ પણ એ વાત સ્વીકારી હતી, તો હવે સા. નટરસાહની નજરે એકલા વૈષ્ણવોજ નહિ, પણ દિન્દિના બધા આચાર્યો અને વિદ્વાનો વાયડા અને ફાતડા મેણુંવા જોઈએ.

૧. વળી સાસવિકેજ વિભાવતમનની તરફેણ કરનારા અને કાશીના મહાન વિદ્વાનોએ જેમને સખ્ત વિરોધ કર્યો તે શં. માધવલીયં ‘જગદ્ગુરુ’ કહેવાય તોતે ફાતડાઈ કે વાયડાઈ નહિ.

૨. એક અમેરીકન મદમને દિન્દુ બનાવીને, તેનું ચર્ચિયા નામ રાખીને, ઈન્દોરનરેશની કામવાસનાની વૃત્તિના સદાચક બનેલા કરવીરપીકાધીશ્વરને શંકર સુધરેલાઓ જગદ્ગુરુ કહે તો કાંઈ હમ્મત નહિ.

૩. એક સાધારણ ગૃહસ્થ બ્રાહ્મણને (નરસિંહનાથ), ‘આચાર્ય’ ‘બ્રહ્મનિષ’ ‘પરમાત્મા’ વગેરેથી સંબોધી શકાય. તેમના પુત્ર ‘ભગવાન’ એ નામથી ઓળખાય. તેમના શિષ્ય એક હુંદીયા જેનું ‘વિશ્વવંશ’ નામથી ઓળખાય તો એ બધું શંકર આગાવાદી સા. નટરસાહ દેસાઈને રૂઝે. એ બધાને તો તેઓ સ્વર્ગમાં અને પુરુષોત્તમ સમજતા હર.

૪. શ્રીરામચાર્યાણના અનેક સંસ્કૃત ગ્રંથોમાંના એક પણ ગ્રંથની એક સંસ્કૃત લીટીને પણ અર્થ ન સમજી શકનારને સોંઠેલા વાર 'ભગદ્ગુરુ' 'સંક્યાચાર્ય' તરીકે પોષાનાર રા. નટવરલાલ દેસાઈ પોતે વાચકોઈ કે શ્રીકૃષ્ણ ભરેલી અંધશ્રદ્ધાથી દૂર રહ્યા છે એ કોઈ સાબીત કરવા તૈયાર છે ? હવે આટલું બસ છે. ફરી કોઈવાર બહુચરામાવામાં ચઢ્યા રાખનારા રા. નટવરલાલ દેસાઈની તમને શ્રીકૃષ્ણ કે વાચકોનાં પડખે ચડશે તો એાપરેશન કરવા તૈયાર છું એક શાંકર.

શ્રીનાથદ્વારાપ્રકરણ.

વઢતે વઢતે વઢ ગયે સ્વમંડા ઓર સીર; ધટતે ધટતે ધટ ગયે કરવા બરુ કૌપીન.

ઉપરના દુહો અતિપ્રચલિત છે તેનો સંબંધ શ્રીનાથજી વિશે છે. શ્રીગિરિરાજની શુભામાં બિરાજના શ્રીનાથજીનાના માત્ર આશરું દુધ આરોગ્યતા હતા, તે શ્રીવૃક્ષમાધીશ્વરના વાસ્તવ્યમાવથી વધતાં વધતાં 'પરમંડા' (એક સામગ્રી છે) અને ખીર, મતનજી કે અનેક સામગ્રી આરોગ્યતા થઈ ગયા પશુ પાછા એવો સમય આવશે કે, એ બધા ભોજો "લૌકિક બટ ભયગી" વાળા વાર્તા મુજબ સમેટાઈને કરવો (એક વાક્યપત્ર) અને કેપીતન રહેશે. દુઃખના અર્ધા ભાગનો અનુભવ લીધો અને અર્ધા ભાગનો અનુભવ ના બહુધારા વાળો રહ્યા છે. એક શ્રદ્ધામઝ ૬૬ શ્રીવૃક્ષભીષ વૈષ્ણવને ઉપરની મહાલોકાવિચિત્રતા કંઈ રંગુમજુ કરી ચકવાની નથી. પણ અનાજ સચે ખેતરમાં વાવેલા કાંઈકાં તેા માટીમાં મગી જશે અને અનાજ તેા પાછું ફીલીફીલી લયો રહેશે !

શ્રીનાથદ્વારાની કમીટીની બહારની ધમાક પાછળના શુર ભેલે પર થોડાક પ્રકાશ માર્ગમાં ફેંક્યો હતો અને આ અંકમાં થોડો વધુ ભલસ નાખવો આવશ્યક છે. વાલો એટલે એક ધ્યાનથી નિહાળો.

વિદ્યમાન મહારાણા—ધર્મધુરધર મહારાણાથી ફોલોસિંગલના પશ્ચિમવાસ પછી વિદ્યમાન મહારાણા સર મુખાલસિંગલ સત્તા પર આવ્યા. મરુમ મહારાણાએ 'જગમહેરજી' એ નામથી મરાઠા થયલા કેસરીયાણને પંદર દબાર ફીળ્યાનો એક મુકુલેટ કર્યો હતો, ત્યારે વિદ્યમાન મહારાણાજીએ કેસરીયાણનો લંડાર વધારે સાચવવા માટે રાજની તીભેરીમાં રાખ્યો છે. કેસરીયાણના મંદિર નીચે સાત-કોઠા છે, તે કદી ઉપડયા ન હતા, તેમાંથી ત્રણ કે ચાર કોઠા બાહીને તેમાં જાપિયં હરેશવ વમા સોનું મહારાણાજીએ સ્વાધીન હતું છે અને રાજવિભેરીમાં સુરક્ષિત રાખ્યું છે, અને જેમ કાંઈકાં બહાર પેઢાકર કરતા બેસી રહ્યા છે. બીજા કોઠાઓ ચોર ગંધારાને લીધે કે કોઈ બીજા કારણથી હવે બાકયા નથી. ચેવાહના પ્રસિદ્ધ લંડારની એ હાલત થયા પછી બેઠાજીજી અને શ્રીનાથદ્વારાના શુભ અંદોરે પણ ઉધાડા ચરો એવી લોકવાયકા આજે મલીનાઓથી ચાલુ હતી. પણ શ્રીનાથદ્વારામાધીશ્વરના સાવંભોમ સત્તા (ના. વાઈસરોય) સચેતા રીધા સંબંધને લીધે એ અંકમાં કોઈ વળુડ માનવું નહિ.

કેસરીયા સુગના બાજુકારા—પણ શ્રીનાથજીની ઇચ્છાએ ઓર હીની સાડા ચારસો વર્ષની અગધિ પ્રેરી ધર્મી-મજામાં પ્રકાટજં કુતું જ મજા અંકમાં શ્રીનાથજી મજામાં પધાર્યાની વાત એ લખી છે તે પ્રાચીન ગ્રંથના આધારે લખી છે. એ ગ્રંથસાધના ગ્રંથ અતિપ્રચલિત છે. એ કોણના સમયમાં પ્રકટ થયો. એમાંનું ભવિષ્ય હવે સુધી બેરોબર ખડું પડ્યું છે. હવે પછી તેમજ બનવાનું છે એવો વિશ્વાસ છે. ગયા અંકમાં લખેલી વાત ઘડની ભેટી માટી નથી. વિચિત્રજે અધારા બનવાની તર્ર નથી. એક એક અક્ષર પૂરાવાવાળો લખાય છે] તેથી આ એક કર્યો. પ્રસંગજ એવો કોણનાક પ્રારંભ થયો કે જમતને આંઈ નાજી તેવો વૈષ્ણવ એકમ સમેટાઈ નથ અને "લૌકિક બટ ભયગી" ને જમતને ઇતિહાસ અનુભવી શકાય. શ્રીનાથદ્વારામાધીશ્વરનું અવાજ નિલચીદારમાં પ્રવેશતું, અને હાલ દુરત શ્રીનાથદ્વારાનું નરચવિહોણાપણું તથા શ્રીતિથકાવિતવિહોણાપણું ઘટું, આ અર્ધા શું ઉત્પત્તિના ચિન્હ છે ? ના, કદી નહિ, પણ એ વાત બનવાની છે તેનાજ લણુકાર છે.

મંજવાસીએને અન્યાય—ઉડપુર નરેશે ને માલેહનર ધનાઢય વૈષ્ણવોની વ્યવસ્થાપક સમિતિ નામી છે; તેમાં પોતાનો પ્રતિનિધિ નીમવાને શ્રીનાથદ્વારાના મજાસીએએ લડત પછે ચલાવી છે. પણ મજીસાદના મધ્યાહ્નકાળમાં ગરીબોને કોણ પૂછે છે ! ને મજવાસીએના પૂર્વજોએ ઓરંગઝેબના શયાનક દુમકામાંથી શ્રીનાથજી અને મહાંન ધનમંડારનું રક્ષણ કર્યું, એમને શ્રીનાથજીની સચે રહેલી પોતાના પૂર્વજોના વતનને,

પરચારને, ગાલમત્તાને, અમ્બલીની આંધિ તિલાંજલી આપી દીધી, વિધર્મીઓ અને વિદેશીઓના વિચાર હુમસાર પાવાનભર્મી નેગણે પોતાના ધર્મ, ભક્તિ, સારી આદિને ભોગ આપી દીધો, ફર રાત્રી, હોડકાના બળે હુમસા વખતે, શ્રીનાથદ્વારામાં પણ નેમના પૂર્વેએ પોતાના મેળિશ મસ્તકોની પરના કરી નહિ, ને મજવાસીઓ આચારે પણ શ્રીનાથજી માટે પોતાના પ્રાણ નોઝાવર કરવા માટે દરદરેમાં તૈયાર છે, તે મજવાસીઓ ગરીબ હોવાના કારણે કમીદીમાં રયાન મેળવે નહિ; એ પણ આ કલિમલત્ત કોટુલ છે. નેમના પૂર્વેએ મુશ્કેલી અરસાત કે સોતું કોટ કરીને ભક્તિમાન બતાવ્યા હશે એ આ રયાનના સંતાપારી બને અને નેગણે પોતાનું સર્વસ્વ હોમું છે તેઓ બહાર ફરતા ફરે એ પણ એક લીલાવિચિત્રજ છે.

ભંડારમાં ધડાકા—આ એક અન્યથા બરેલી વાર્તા બહાર આવી છે. તેનાં લક્ષણમાં જરા ભત્તરીશું. દરેક રાત્રીમાં આનંદી ભંડાર તો હોય છે જ. અરે, એક ગૃહસ્થ પણ આપત્તિભરેને માટે અતિશુશ્કીતે કાંઈ કાંઈ પ્રવાવી રાખે છે. રાત્રીમાં તો આ ભંડાર અતિવિરાલ હોય છે, એ ભંડારની નેધિ રહેતી નથી. શ્રીનાથજી જેણે ભારતવર્ષના રાજપૂતાના તેમજ અન્ય મહારાજાઓના એક કરોડ માનવજનોના હુલ્લનાથ, જેણે ચારસો નાપી અરસાત અને સોના ચાંદીના તો દરેક ગયા હશે. દર વર્ષે જેમણે લાખ તોસા ચાંદીના વાસણો કોટ આવતાં હતાં. તેજ મુલ્ય સોનાનાં અનેક પાત્રો ખિત્રોનાં આભૂષણો વગેરે. તે ઉપરાંત શ્રીતિલકાસિત શ્રીઓની પોતાની કોટના પણ લાજો રૂપીયા તથા જોસાત અને સોતું ચાંદી આપ્યા હશે. આ બધાને એક ગ્રામ ભંડાર શ્રીનાથદ્વારામાં છે એવી વાર્તા અનેક વર્ષોથી સંભળાય છે. તેમાં શું છે તેની નેધિ રખાતી નથી. કહે છે કે તેમાં અખતેરી રાંપત્તિ છે. અરે, પોઈ પ્રશ્ન જણે! દરેક રાત્રી ઉપરથી જેવું બતાવે, પણ અંદરથી આગ તર હોય છે એમ મુલકદીઓ કહે છે. આ ભંડારમાં ધડાકા થવા એ કાંઈ શુભ ચિન્હ નથી. સકુનશાસ્ત્રી કહે છે એ ધડાકા લક્ષ્મીલના છે અને તે બહાર નીકળવાને જોર કરી રહ્યા છે. ખચિતજ, લાગે છે કે, નવૌથી અઠગણેઈ લક્ષ્મીજીં હવે વીસમીસાલીના વાચરા ખાવા બહાર નીકળી પડે પણ ખર્ચા! પણ હાલ દરવ, તો બહાદુર મજવાસીઓએ એ લક્ષ્મીજીને બહાર કાઢવાના લક્ષ્મીદાસેના પ્રયાસો અગે ભવરૂપ પિલ્લો, કોનો ક્યો છે! મજવાસીઓના ડરથી એ ગ્રામ ભંડારમાંની સંપત્તિની નેધિ લેવાના ધનાઢ્યોના તથા રા. પટવારીજીના ધરાલ દાલ દુલ સફળ થયા નથી, અને હવે હોળીના દિવસોમાં ફિતેહમંદ થયે કે કેમ, તે જોવાનું છે. આ ભંડારને લઈને તો આ બધી દોડધામ થઈ રહી છે. ને શ્રીલજ્જાવા કોઈ શ્રીગિરિરાજનાં દરમાં ખિરાઈને શ્રીપુલિન્દીજીના ફલાદિ આરોગી રહ્યા હોત તો આ બધી દોડધામ હોત જ નહિ. કોઈને એ નિકુંજનાંયંકનાં રવરૂપની પદી નથી. એક તરફ એ સુકુમાર રવરૂપ અને એક તરફ અઠગક અરસાત; સોના ચાંદીના દગલા પડયા હોય અને પસંદગી પૂજાય તો ધનાઢ્યોના ડોળા ધનભંડાર ભણી નાચતા લાગશે, એ નિરસાય વાત છે.

સંપ્રદાયને માટે સોંકરો રૂપીઆનો ખર્ચ કરીને, આપત્તોમ આપીને, કમીદી શ્રીનાથદ્વારા ગઈ અને ઉત્સાહથી માથે બળબળાના રંગીન લેવાલો રા. પટવારીજીએ છાપાંઓમાં છપાવ્યા છે. આથી કોઈ અંતર ન બધ તેની ચેતવણી આપવાની છે. જે ચાર નોકરોને દૂર કરવાની વાત તથા જાપડીઆઓની નવી વ્યવસ્થાથી હવે નવો વર્ગ સંતોષારી નહિ. જાપડીઆઓને નિરજાલ દ્રવ્ય આપીને ગરીબ તથા મધ્યમ વર્ગ પર ફર પ્રહાર કરાવવાનું પુણ્ય ધનાઢ્યોનેજ મજાઈ હતું, તે જાંઘ થયે! પણ મહાપ્રસાદના બળદેની શી વ્યવસ્થા રા. પટવારીજીએ કરી? એ મહાપ્રસાદ વિદ્યાર્થીઓ તથા અન્ય મજવાસીઓને તથા વૈષ્ણવોને આપીને સાંપ્રદાયિક નવી વ્યવસ્થાની ચાલના કેમ કરી નથી? લાજો રૂપીઆ નેક ભોગમાં ખર્ચાય છે તે મહાપ્રસાદ સમાભિષેકારક કેમ બને? એ વિચાર કેમ થયો નથી?

વળી કહેવાય છે કે કમીદીને સ્વતંત્ર સત્તા મળી નથી. કમીદી ને બંધારણુ પસાર કરે, તેને ઉદયપુરનરેશ ને સંમતિ આપે તો તેનો અમલ થાય. આ તો ખાસસત્તા અને વાઈસરોયનો વ્યવહાર થયો. ખાસસત્તાએ પસાર કરેલા કરાવને વાઈસરોય એક જ હલખને જોઈ જુઠાવી રાકે છે. શ્રીનાથજીના ધનભંડારમાંથી એક પ્રજળ શુદ્ધાદૈત શુનીચક્ષિદી (વિશ્વવિદ્યાલય) બને, પણ તે આ ધનાઢ્યો કરી રાકશે? ઉદયપુર નરેશ તે કરવા દેશે? કેસરીયાજીની પેટે ધનભંડાર વધુ રક્ષણ મેળવવા માટે રાત્રીની તિનેરીમાં તો જઈને નહિ પડે? સોક લાલજી નારજી આ કાર્યના સૂત્રધાર છે અને તેઓ ઉદયપુર મહાસભાના ખાસ દૂતાપાત્ર નિમ્નાશુ સફળદર છે. તેઓ સંપ્રદાયલિત વિચારો કે રાત્રિલિત ઉદયપુર

સાંપ્રદાયિક પ્રવૃત્તિ.

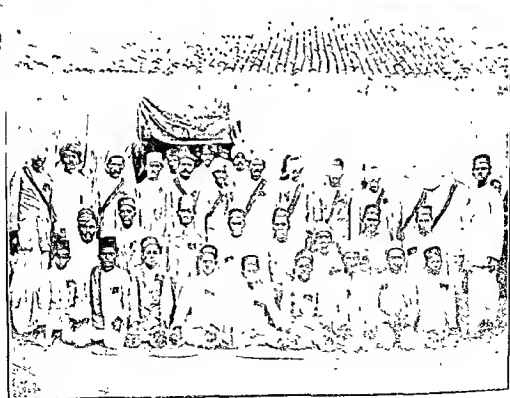
વાર્ષિક મહોત્સવ—અત્રેની શ્રીપુષ્પિમાર્ગીય યુવક પરિવર્ત તરફથી 'શ્રીમદ્દાસ ૪૫૫૪ પૂર્ણાહુતિ મહોત્સવ' નિમિત્તે ધર્માનુરાગી વૈષ્ણવોની એક જાહેર સભા રવિવાર તા. ૫-૧-૩૩ ના દિને સંભળા છ કલાકે અત્રેની શ્રીલાલબાબાની હવેલીમાં શ્રીમદ્ ગો. શ્રી ૧૦૮ શ્રીવલ્લભસાગર મહારાજશ્રીના પ્રમુખપદે મંથા હતી. નિચત સમયે સભાનું કામકાજ સંસ્થાના માનદ મંત્રી શ્રીયુત દ્વારકાદાસ દાણીએ સભા યોજાવવાની નિવેદન પત્રિકા વાંચી શરૂ કર્યું હતું તે પછી શ્રીયુત ગિ. જી. શાહે શ્રીમદ્વલ્લભમહારાજ પ્રતિપાદન કર્યું એક સુંદર કાવ્ય સુરવરે આપ્યું હતું. ત્યારપછી શ્રીમાન સભાપતિ મહોદય ઉપરાંત, ૪૨૪ માંડવીવાસા ગો. શ્રી દ્વારકેશદાસ ગો. શ્રીમન્નાથદાસ સાક્ષી અને ચિ. ગો. શ્રીમુક્તીધારાદાસ બાબા સાહેબ વિગેરેને શ્રીયુત ઇલાલાય રાજાશાહી ભગીરદે બખત્તેસારી પુષ્પમાળા ધરાવી હતી. ત્યારબાદ શ્રીયુતે ગિરિધરદાસ શાહે વિનયન કરતાં જણાવ્યું હતું. વૈષ્ણવ જનુઓ અને બહેનો, આપ શ્રી ભણી છા કે લક્ષ્યાધિ વૈષ્ણવોના વસવાટવાળી યુગલ નમસ્કારો ને કાર્ય પળુ સાંપ્રદાયિક સિદ્ધાંત પ્રચારથી કઈ પણ પ્રવૃત્તિ થતી હોય તો અત્રેનું મહોદ્દ મંદિર અને શ્રીલાલબાબાનું મંદિર છે. મોટા મંદિરમાં તથા અત્રે અનેક સમયે સામાન્ય અને જાહેર સભાઓ નેમિત્તિક અને પ્રાસંગિક પ્રવચનો તથા અન્યન્ય સમયોચિત કાર્ય થાય રીતે થયું છે, હજુ પણ થાય છે અને બાકીમાં પણ ચાલુ રહેશે. વધારે મારે આપ સર્વને નમ્ર નિવેદન કરવાનું છે કે કેટલાક પ્રતિકૂળ સંજોગોને લઈ આજ કેટલાક માસથી અત્રેની સાંપ્રદાયિક સિદ્ધાંત પ્રચાર પરત્વે સભા પ્રવચનાદિની પ્રવૃત્તિ બંધ રહી હતી તે અત્યંતી યુગ સર થાય છે અને હવે પણ કાર્ય શરૂ રહેશે. એમ આપણે સૌ ઈચ્છીએ. શ્રીમાન સભાપતિ મહોદયના ઉત્સાહ અને મહત્વાકાંક્ષા અર્ણવપૂર્વક પ્રશંસનીય છે. ને આપશ્રીએ આપણને પોતાની દશ વર્ષ લગભગની પ્રવૃત્તિથી દેખાડી આપ્યું છે. મારી નજારે સાંપ્રદાયિક કાર્યમાં ઉત્સાહ અને ઉત્તરોત્તર મહત્વાકાંક્ષા ને આજે જણાય છે તે અપશીનેજ આશ્ચર્ય છે એમ ને કહું તો હેરાન પડી જોઈ કે અતિશયોક્તિ લખું નથી.

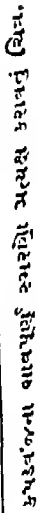
જયી આઠ વર્ષ પૂરે એટલે સન ૧૯૨૨ માં હું આપણીના પરિચયમાં આંખો અને ત્યારપછી આપણીના સભાપતિત્વે ચાલતી વૈષ્ણવ ધાત્ર પરિષદની આગાદિક સમાધાન ને કઈ સંપાદન કરી શક્યો નેનું ફળ આજે આ સંસ્થા અને એની અનેક રચણે અને સંસ્થાઓ તથા ઉત્સાહી કાર્યકર્તાઓની સેવા બાબતે મારી નજરે જણાય છે.

શ્રીપુષ્પિમાર્ગીય યુવક પરિવર્ત અને તેની યોગના—રયાનીય શ્રીપુષ્પિમાર્ગીય યુવક પરિવર્તને સ્વધાયા આજે નવ માસ પૂરા થાય છે. ગયા વર્ષના માપ કુણુ ૨ ને રવિવાર તા. ૧૨-૧-૩૩ ના દિને રચના થઈ નેના શુભ ઉદ્દેશ અને શુભ નિયમાનુસાર અદ્યપિ પર્વત સંસ્થાનું કાર્ય અભાવિત રીતે બાળવત્પાથી ચાલ્યું છે. સંસ્થાનું મુખ્ય મિત્ર શ્રીમદ્દેવસાધીધારના વિશ્વમાન્ય સિદ્ધાંતોને વૈષ્ણવી જનતામાં સમયોચિત પ્રચાર કરવો એજ છે તેને મટી સંસ્થા દ્વારા સંસ્થાના કાર્યકર્તાઓ અને સલાહકારો તન, મન, અને ધનથી થયો શક્ય સેવા કરી પોતાની ફરજ બજાવી રહ્યા છે. આજ પર્વત આ સંસ્થા દ્વારા ને કઈ કાર્ય થયું છે તે નંદનદેવ શ્રીભગદત્તપ્રભુ પ્રભુ તથા શ્રીમદ્દેવસાધીધારની કૃપા અને પૂ. પા. ગો. બાલકોના શુભાર્શોવાદોને આભારી છે. સંસ્થા પ્રત્યે પૂ. પા. ગો. બાલકો, સાંપ્રદાયિક મુપ્રસિદ્ધ વિદ્વાનો અને સંપ્રદાયના સિદ્ધાંતાનુસારી મુપ્રસિદ્ધ વૈષ્ણવોની જ્ઞાત્યંત સદ્ગતિગણી છે એમ હું સંસ્થા પ્રત્યે દરેક મહાનુભાવોનું સદ્માનવ કર્યું વર્તન એજ કહી શકું છું. અત્રેની શ્રીપુષ્પિમાર્ગીય યુવક પરિવર્ત તે માત્ર અમુક બક્ષિ કે કાર્યકર્તાઓની સંસ્થા નથી. પરંતુ વિચાર લક્ષ્યે આખા વૈષ્ણવ સમાજની સંસ્થા છે. તેથી તે દ્વારા ને કઈ કાર્ય કરવામાં આવે ને સમયોચિત અને શ્રીવલ્લભકુજ તથા માનનીય વિદ્વાનોની સલાહ અને સહકારથી થાય એ ઈદ હોવાથી તથા સંપ્રદાયનું રહસ્ય જાણ્યું એ સામાન્ય વાત નહિ હોવાથી સંપ્રદાયનું ચૂદ રહસ્ય સમજવા અને સંપ્રદાયના સિદ્ધાંત વિરુદ્ધ કઈ પણ કાર્ય ન થાય તે લક્ષ્યમાં રાખવા દરેક સંસ્થાને સાંપ્રદાયિક સિદ્ધાંતમર્મજ મહાનુભાવની સલાહ અને સહકારની ખાસ આવશ્યકતા છે. આ સંસ્થાને તેવાં મહાનુભાવોની સંચનાનુસાર આગળ ધપાવી રહ્યા બીએ.



કપડવંજના ભાવપોર્ણ સમરણો કંડી અનુભાવાવનું ચિત્ર.





શ્રીઅણ્ણકર મહામંત્ર મપયત્તની યોજના--રથાનીય શ્રીપુષ્પિમાર્ગીય સુવત્ પરિષદે મત ચત્ત
 માંસમાં કંઈક પ્રવૃત્તિ કરવી એ નિયમ કથી પરંતુ મુજબ જેના પ્રવૃત્તિયાના સંદેશમાં દરેક પ્રવૃત્તિ અર્થસાધ
 હોવાથી અને સંરથા પાસે કંઈ પણ રથાથી ફેંટ કે અન્ય કોઈ પણ પ્રકારની આવકનું સાધન નહિ
 હોવાથી કંઈક સાધારણ પ્રવૃત્તિ યાચ એવા સુદ જ્ઞેયથી પોતાના સદ્ વિચારો પૂ. મો. બાલકો તથા
 કોશાક સંરથાના સુમેગ્ધો પાસે રત્ન કરતાં દરેક પોતાની સદ્વાચણી દર્શાવે જુદી જુદી યોજનાઓ
 બધા કરી તેમાં કંઈક માંડવી પાળા મો. શ્રી. ૬ શ્રીદ્વારકેશવાલ મહોદય અને શ્રીપુત્ર ભગીશરે દર્શાવેલ
 શ્રીઅણ્ણકર મપ યજ્ઞ કરવાની સૂચના વાર્તાવિક અને સર્વોત્તમ તત્ત્વો ૧૮૮૬ ના આવાસી પૂર્ણિમાથી
 ૧૯૬૦ ના મંત્રિકી પૂર્ણિમા પર્વેન્ત શ્રીઅણ્ણકર મહામંત્રનો બને તેરથો વિશેષ પ્રમાણમાં ગુદ્દતથી મપ
 કરવો અને કરાવવો એવા સુદ જ્ઞેયથી તેના નિયમો અને ધ્યેય દર્શાવતી જે દબર દરેકપત્રિકા છપાવી
 સ્વાતંત્ર્યના જુદીજુદા વિશાવના ન્હાટા મ્હોટા ૮૦ થી ૧૦૦ હમસત્ર નામોમાં વહેંચી તથા મોઢાગી.
 તે સિવાય રથાનિક સામયિકો અને સાપ્રદાયિક માસિકોમાં પ્રમાણનાથે મોકલાવી તેમાં અથેના મુજરાતી
 (સાપ્તાહિક) અને સપ્રદાયના સુદાદેવ (માસિક) મનુષ્ય પત્રિકા અક્ષરણ પ્રકાર કરી સંરથાની પ્રવૃત્તિને
 વધાવી હોધી તેથી દબરો પેશ્વેલો હપરાત અન્ય ધર્માતુશો સાધકદેનેએ અવકારી યોજનામાં પોતાનો
 ફાળો આપવા અમને અત્રેથી મૌખિક અને લેખક નામથી અસંખ્ય પત્રોદ્ધાર હાલુવાલ મળી તેમાંએ
 વદવાણી શ્રીપુષ્પિમાર્ગીય વૈષ્ણવ મહાસક્તા, ટંકાગીની શ્રી વૈષ્ણવ ધર્મ મહાસક્તા અને ગેરાગામ બંદરની
 શ્રીવૈષ્ણવ ધર્મ વધિની સક્તાના માયકેરોએ વિશેષ સદ્કાર આપી અમારી યોજનાનો વિપુલ પ્રમાણમાં
 અમલ કર્યો છે, તે સિવાય અમારા પરિચિતોમાં શ્રીપુષ્પિમાર્ગીયથી સિવાય શંકર, રામદુત્ત, માધવ,
 નિમ્બાક અને રવામિનારાવણ મહાતુશાથી ધર્માતુશો સંજ્ઞોએ પણ સંરથાના માથે પાસે પ્રશંસના
 પુષ્પો પત્રોદ્ધાર વેરી સદ્કાર આપ્યો છે.

એ ઈશ્વરનું સાક્ષાત્ રવરૂપ છે. વિગેરે કલા બાદ જ્ય કરવાના જુદા જુદા પ્રકાર અને મહત્તા ઉપર વિસ્તૃત વિવેચન બાદ પ્રમાણીથી સંપ્રદાયિક દૃષ્ટિએ કરી, નિઃસાધન જનોને માટે આવા ધારા-કલિભાવમાં બગવત પ્રાપ્તિ માટે જે કંઈ સર્વોત્કર્ષ સાધન હોય તે તે આવ શ્રીકૃષ્ણ સરણ મમ એ અક્ષર મહા-મંત્રજ છે, અને તેથીજ શ્રીમદ્ભક્તિસાધીશ્વરે તથા અન્ય આચાર્ય વગેરેએ એક ફાળ પાંચ ભગવન્નામોચ્ચાર વિના ન રહેવાની ખાસ આજ્ઞા કરી છે. વિગેરે આવશ્યક વિવેચન કર્યા બાદ શ્રીયુત સુનીલાદ-પરીખે પ્રાસંગિક વિવેચન કરતાં આજ કાળના વર્તમાનપત્રોમાં પ્રકટ થતાં રાગદ્વેષયુક્ત ચર્ચાપત્રો કે લખાણો ઉપર વિરોધ લક્ષ ન આપતાં સંપ્રદાયિક સિદ્ધાંતિ સમજવા શ્રીમદ્દામ્રપ્રબુલ, શ્રીયુગર્ણી, શ્રીગોકુલેશ્વર, શ્રીભરિણ્ય અને શ્રીપુરુષોત્તમજી પ્રતિપાદિત સ્મૃતિલેખનું અધ્યયન, અધ્યાપન અને બહોળા પ્રમાણમાં પ્રચાર કરવાની આશરૂપૂર્વક વિશ્વસિ કરી હતી.

સલાપતિ મહોદયનું મનનીય અધ્યયન—ત્યાર પછી પ્રમુખપર્યાયેથી ગો. શ્રીવલ્લભદાસજીએ અધ્યાપન આપતાં જણાવ્યું હતું કે આજનો વિષય શ્રીભગવતનામગાદાત્મક રાખવામાં આવેલ છે તે ઉપર અમે કંઈક કહીશું કે જે વખતે મમ, જ્ઞાન, સાંખ્ય યોગ, તપ-વિગેરે સાધનો ભગવતપ્રાપ્તિમાં નિષ્પેશી થેખાવા લાગ્યા તે વખતે જીવેના ઉદ્ધાર માટે માત્ર ભગવાનની ભક્તિ એજ એક ઉપાય રહ્યો હોવાથી કહ્યું છે કે વસી કેના-કોઈમંડા. એટલે ભગવાનનું બનન એજ માત્ર કલિજાળમાં ભગવતપ્રાપ્તિનું સાધન છે. ભગવાન ક કૃષ્ણને વેદાન્તમાં બ્રહ્મ, રમૃતિમાં પરમાત્મા, અને ભગવતમાં ભગવાન એ નામંપ્રી સંબોધે છે. બ્રહ્મા, નિરજી અને સ્વદે એ ત્રણ તેના ગુણાવતાર છે. ભગવાન શ્રીકૃષ્ણ નિંજુણ પરબ્રહ્મ છે. ભગવાન ફર અને અક્ષર નર નીતમ છે કૃષ્ણથી આરંભી બ્રહ્મપર્યંતે ફર કહે છે અને ભગવાનના નિર્વાસ રથાંતે અક્ષર કહે છે તે મણિનાનંદ છે, ભગવાન અંશ, કલા આવેશ વિગેરે અનેક અવતાર ધારણ કરે છે. ખરું જ્યારે આપ પછું અખંડ સ્વરૂપે થાય છે ત્યારે શ્રીકૃષ્ણ કહેવાય છે.

તેથીજ શ્રીમદ્ભક્તિસાધીશ્વર મહાપ્રબુલજીએ આપણા જેવા નિઃસાધન જીવોને માટે તેમ ભગવાન શ્રીકૃષ્ણની સેવા, રમરણ અને કીર્તનાદિ કરવાની આજ્ઞા કરી છે. આવા ધારા-કલિજાળમાં શ્રીભગવન્નામોચ્ચાર સિવાય આપણે માટે એક પણ ભગવતપ્રાપ્તિનું સમજ સાધન નથી માટેજ શ્રીમદ્ભક્તિસાધીશ્વરે પાંચ શુદ્ધેશ્વર કહે છે કે દોષના નિધિરૂપ કલિયુગમાં એક મહાન ગુણ છે તે એ છે કે ફક્ત પરબ્રહ્મ સર્વોદ્ધારપરમામાં શ્રીકૃષ્ણમંદ્રના કીર્તન-રમરણ માત્રથી જીવ સંસારના આચારથી બંધનોથી મુક્ત થઈ શ્રીકૃષ્ણને પ્રાપ્ત થાય છે. વિગેરે વિસ્તારથી કહેલા દશીસ પૂર્વ સંચોટ રીતે જણાવી ભગવન્નામરમરણની મહત્તા સિદ્ધ કરી હતી. તે પછી સંસ્થાના મંત્રીએ શ્રીમાન સલાપતિ મહોદય તથા અન્ય ગો. બાલકો અને સલામાં હાજર રહેલા શ્રીપુરુષોત્તમ યોગ્ય શબ્દોમાં આજ્ઞા માંની સલાનું કામ કાળ પૂર્ણ થયું હતું.

શ્રીવેંજીવ ધર્મ મહાસલા (ટંકારા) ની અશંકનીય પ્રવૃત્તિઓ—શ્રી ટંકારા વેંજીવ ધર્મ મહાસલાના આશ્રય નીચે ચાલતી શ્રીવલ્લભીય પાઠશાળાની મુવોકત હેતા સહય વિદિત કરવાનું જે કાઠીવાવાડ જેવા લાખનાપ્રધાન દેશોમાં આવી સંસ્થા ભાગ્યેજ મેલતી હતી. પાઠશાળામાં વિદ્યાર્થીની સંખ્યા આશરે ૪૦ ની છે જેમાં શ્રીસર્વોત્તમ સ્તોત્ર તથા ઘોડશા અન્યનું મુખ્ય અધ્યયન સાંક્રીલ નવલસાંકર વિધનાય ધણીજ સરલવાથી આપી રહ્યા છે જેનોથી કુળી વયના બાળકો ઉપર સારી અંકર પડે છે તથા વિદ્યાર્થીઓ ગાઢાતિલક તથા નીતિ ઉપર ધાર્મિક સંવાદો ધણીજ બળદાર લાખમાં કરી શકે છે. મનુકર સંસ્થાને દિન પ્રતિદિન જનનવતામાં લાખવાને તેના સેવાશંખી મંત્રી મહારાય રાજુપરા લાલજીભાઈ દયાલજી તથા શ્રીયુત દુલ્લભાચાર્ય ઠાકરશી તથા શેઠ વિલ્લભાસ વિગેરે યોતાને અનૂદય સમ-યનો ભોગ આપી તથા તન મન અને ધનથી ધણીજ સારી સેવા કરી યોતાની ફરજ બજાવી રહ્યા છે. આવી સુંદર પ્રવૃત્તિના અંગે એક સાંકડ બેન્ડનું સિદ્ધાંત પાંચ મનુકર પાઠશાળાના વિદ્યાર્થીઓને શ્રીયુત સાંક્રીલ વગાડવાની તાલીમ આપી રહ્યા છે.

આ પાઠશાળામાં કોઈ પણ પ્રકારનું રચાયેલું ફંડ કે અન્ય પ્રકારની માલે આવકનું સાધન એક પણ નહિ હોવા છતાં ફક્ત નજીવી રકમથી સંસ્થાનો ખર્ચ ચલાવે છે. તે આવી સંસ્થાઓને ધર્માનુચી વેંજીવ જનતાએ તન, મન, ધનથી યથાસકય મદદ કરી તેની પ્રવૃત્તિના યોતાને યોગ્ય ફાળો આપી યોતાની ફરજ બજાવવી અતિ આવશ્યક છે. સુલ જનતાને વિદિત હતી કે ટંકારા (કાઠીવાવાડમાં) ગોત્રી

ધર્મમાં રવાના મળતા લાગ્યું છે. બહુ ખેડ છે કે...ને દૂર સખીને રવાખિદારને લાભ ઉઠાવ્યો છે. ઠીક છે. માર્ગની પ્રભુત્વિકા સમજવી બહુ દૂર છે. રાત્ર્યસંબંધ તો બાહ્ય રક્ષણ અર્થે છે. અહીં તો ધર્મ પણ સમજવો દૂર થયો છે. નહિતર.....ની સજા ભરીને પછીનું રાત્ર્યસંબંધ મેળવવા હતો. ...ને વિષે રૂપર ખુદાશે મેળવવાની નજર હતી. પ્રભુની ઈચ્છા કેવા પ્રકારની છે તે શું નક્કીએ ? આવા પત્રો દયા કરીને લાગવડીયા લખતા રહેશે અને શિક્ષા આપશે એવી નક્ક વિનંતિ છે.

૬૫૬૦૪માં લગ્નગૃતિ—શ્રીયતુલ્ય પંચમખીકાષીશ્વરે અને ગીતા વર્ગ ખોલ્યા પછી સારી નયતિ આવી છે. અમદાવાદથી વસંતરામ શાસ્ત્રી તે વર્ગ ચલાવવા આવે છે. સીતા વર્ગ રૂપે થયા પછી એક બાળવર્ગ અને એક બહેનોનો વર્ગ એ બે વર્ગ ખોલ્યા છે. દર એકાદરોએ આ વર્ગો ચાલે છે. તે ઉપરાંત તેમ વિવરો એક નહેર સજા પણ લગાય છે. તેમાં બુદ્ધ બુદ્ધ વિવરો ઉપર વ્યાખ્યાનો ધાર્ય છે. શ્રોતિલકાયિતના નિલયીકાપ્રવેશ માટે એક સંસ્થામાં શોભનો ફારાર થા. ભાર્તવંદમાઈ બી. એ. એ મુદ્દો હતો. રા. નક્ષત્રમ પુરાણીય પણ વ્યાખ્યાનો આપે છે. બીજું એક કાચું ગીતા વર્ગ તરફથી અતુરજીવ રીતે રીતકર્મદ થયું છે. ને શ્રીગોકુલેશ મહામહોત્સવ વિષેની પત્રિકા છે. આ પત્રિકા વ્યવસ્થાપકો રા. ધીરજલાલ જોશીજીવાલ શાસ્ત્ર અને રા. ચંદ્રલાલ જોશીજીવાલ દેસાઈએ પ્રકટ કરી છે. આ પત્રિકા પોતાને ખરચે બીજા આયોમાં પણ શુલ્ક મંડળે મોકલી છે. આ કાર્યોની પાછળ કોયાપક્ષ રા. રા. શેઠ અંબાલાલ વલ્લભદાસ પણ સારી ફારતા લાખયો.

વિવિધ અતે શુભારંભાદી—આર્યસમાજે અણુમાધ્યના ખંડનની જાન પોકારી તે પરથી દયાનંદીએ શુદ્ધારાદી ચલાવી. મારામારી ચલાવીને પરિણામે ૬ વેષ્ણુઓ પર પોકારીસે કેસ મંડ્યો હતો, તે કેસમાં ન્યાયાધીશે બધાને નિર્દોષ નહેર કરીને છાડી મૂક્યા હતા. આ પરિણામ માટે એ ૭ માર્ચીકેને ધન્યવાદ લખા મુખારંભાદી થયે છે.

આંતર વિદરૂપેનો અચરાર—શ્રીમદ્વાપ્તુલને યથેલા ઇતિહાસસિદ્ધિ મનકામિયેક વિષે સંપ્રદાય-ગોદીએ એ ન ચર્ચા ચલાવી છે, તેના કુદાસના હાથા બનેલા આંતર ચિદરૂપેએ ખાનખીમાં ઉશરીને ધારે રૂપર આપ્યું છે. વળી મનકામિયેક એટલે ઉઠેલું સોનું રેઠું એવા અર્થ કરીને નાસ્તિક માયા-ગોદીએ પણ ટપી જનાર ચિદરૂપેને ચેલો પોતાના જુઠું ચિદરૂપનાં કેરાં વખાણુ કરે છે તે સાદાજુ જુદી રવાની નજર છે. અમદાવાદના શુદ્ધરૂપેના આંગણે પત્ર ધસનાર આ ચિદરૂપ અને તેની પાછી ઉપરથી તો હાલ લામ, નિરૂપદતા તથા શ્રીવલ્લભ કુળના અંધ લક્ષ્મીનો પાક સમજીને ખાનખીમાં કેવા પત્રો લખે છે તે જુઓ:—“ને સંપ્રદાય મારા લોહીનીજ અમિતાવા ધરાવતો હોય તો હું તૈયાર છું—પરંતુ મારે તો સંપ્રદાયના ઇતિહાસમાં કાળા અક્ષરે લખાવડું છે કે વિદ્વાનો તરફ આ સંપ્રદાય ઇંદો એવડો છે ? આ પ્રમાણે પોતાનું ખરું જીવન બતાવનાર અને સંપ્રદાયને કલંક લગાડવા માટે હાલ્યામ કરવાનો ડોળ કરનાર ચિદરૂપે અને તેના અગરાઈ ચેલાઓને હવે સંપ્રદાય તરતજ ઓળખી લેશે.

નિરાધાર બાળકો માટે સારામાં સારો માર્ગ કયો ?

તેમની સંભાળ લઈ, સારી રીતે ઉછેરી તેમને આદર્શ નામદિક બનાવવાં તે. આ કામ બહુ ઉત્સાહથી

નડીઆદ હિન્દુ અનાથાશ્રમ

કરી રહ્યું છે. આવાં નિરાધાર બાળકો ઉપરાંત લગ્નપણાં બાળકો, નિરાધાર અસંક્રાંત અને અપંગ સ્ત્રી-પુરુષો વગેરેની સંભાળ લેવાનું કામ આજ વર્ગો, યાં આ સંસ્થા કરી રહી છે. આ સંસ્થાને તમે જો તેટલી મદદ કરો. રૂ. ૧ અને તેથી વધુ દાન આપનારના નામ વાર્ષિક રીપોર્ટમાં છપાય છે.

ગંત્રી—હિન્દુ અનાથાશ્રમ નડીઆદ. (શુદ્ધાન)

ધોળા દીવસે તાર.

ચોક્કસ સર્વોદ્દેશ.

This is to certify that Vaidyarat Motilal Mahashanker (L. W. T. M. I. I. M. C.) possesses some sort of Second Sight or Occult Powers because with the help of such sort of Powers, he predicts the future, like that of an Astrologer. The difference lies in that, no Birth time or any " Kundali " is necessary but he prepares the Kundali with his " Own Marks " unknown to us, only in a minute or less than that and at once tells the Future and Past Correctly. I consider his advice to be invaluable and I recommend all the People to try him once and especially for those who have not got any whereabouts about his birth time and I am sure that he will be very helpful to guide.

I wish him every success.

Vinaychandra M. Sanghani, B. Sc.,

ચમત્કારી તાલીએ—આદળીયાં!—પણાએ અનુભવે ક્યાં છે. મનની ઇચ્છાની સિદ્ધિ ચમત્કારિક રીતે થાય છે.

માત્ર સાત મહાશક્તિઓ માટે રૂ. ૨૫૦૧, રૂ. ૧૫૦૧ અને ૧૧૦૧ ના ત્રણ નંબરો છે. મરિયા તથા મધ્યમ વર્ગના ભાર ૨૫૨ કરાવવાના છે.

શ્રી ગિરીરાજ આપુ તથા ગીરનારના મહાત્માજી પાસેથી પણ દીવસના પ્રવાસથી મનાન પ્રપત્ને દિવ્ય વિદ્યા મેળવી આવનાર વૈદ્યરાજ મોતીલાલ મહાશંકર ભટ L. W. T. રાજકાવાદ્ય કે જેમની પાસેથી નીચે બતાવેલા દુઃખોથી બચી શકાય છે.

- ૧ જેઓ શેતાન શત્રુઓના ત્રાસથી કંટાળી ગયા હોય.
- ૨ વૈપારની ઉચ્ચ પાયાઓમાં નુકસાનીમાં આવી ગયા હોય.
- ૩ વાંઝીઆ પણાના મેણા ટાણાંથી હૃદય કટાઈ ઉઠ્યા હોય.
- ૪ તથા દરેક પ્રકારની મુશ્કેલી, નજાગી વીચરો ઉપર વિગ્ન મેળવી ધન, પુત્ર, માન, આજરો, વરા, વૈપારમાં લાભ, કોર્ટ કેસમાં ફતેહ, સારા પ્રકાર નોકરી, શત્રુ વિગ્ન તથા સ્ત્રી પુરોમાં અણુ બનાવ રહેતો હોય તે અગ્નિ પ્રેમ કચવી આવનાર તથા દગરો દગા વાપરો છતાં અણકર હાડીશા દોરો નડતરના કે દેવી કારણોથી ન મટતો હોય તેમજે ૨૫૨ મંત્રી ખુશ્મો મેળવતા ફેક્ટ પાંચજી મીનીટમાં ૨૫૨ મજાવાથી તમોર આપુ ભવિષ્ય ફગા કહી દેવામાં આવશે. એક પ્રતના રૂ. ૧-૪-૦ પાંચ પ્રતના રૂ. ૫-૮-૦ આખા ભવિષ્ય ફગા રૂ. ૧૦-૩-૦ ઉપરાંત સુદ, ચોટ, શકળ, સાકળ, અમરાશસ વીરે નડતરોના કારણો પેદાશ દેવી પ્રયોગોના બંધથી અગ્નિ રીતે દૂર કરી કરી શકાય છે. મરો વા લખો,

વૈદ્યરાજ મોતીલાલ મહાશંકર ભટ. L. W. T.

(સંગ્રહીના ખાસ પેઠ)

૧. કાકડીયાની પોગ સામે, હાલકીનીકસમ મોરો, મરનપુર—અમનાવાડ

ગુણાનુવાદ કેમ ગારો ? શુદ્ધ સંગીતનાં દિવ્ય કીર્તનો.

સારંગી, ખીન, દીલરૂખા, હાર્મોનીયમ વગેરે વાજીત્રોમાં સાંપ્રદાયિક કીર્તનો ઉતારવાનું આંતું સાધન સંપ્રદાયમાં એકેય નથી. મંગળાધી શયન પર્યંતના મુખ્ય કીર્તનો, વધાઈ અને ધમાર એ ઘણાંનાં ૮૦ રાગોના ખાસ નોંટેશનો આજ અંતમાં છે. પખાવજ શિખનાર માટે તાલના ઘોલ પણ છાપ્યા છે, ગુજરાતી ભાષામાં સવિસ્તર સમજણ પાડી છે. નોંધાવર જે રૂપીઆ, પોસ્ટેજ પાંચ આના.

ડૉ. ભગવાનદાસ નારાયણદાસ ડોટડાવાળા.

સુ. ધંધુકા, (જી. અમદાવાદ.)

હિસ્ટરિયાઈ વાતરોગ દર્શન.

ખંદોક ૩૦ હિસ્ટરિયા, મૂર્છા, ચક્રી, ફેફર, ગાંડપણ અને બકવાદ રોગની અમેરીકન ઉક્તી શોધ મુજબ પાશ્ચાત્ય, યુનાની અને આયુર્વેદિક સિદ્ધાંતો, સમજુતી અને સાદા ઉપ-ચારોનું પુસ્તક વાંચેથી ઘણી રાહત મળશે. કીમત ૧-૪-૦ પૌ. જુહા, દેશીનામું. નવા બ્યવહાર પ્રમાણે રચના વાં. શાળા માટે નહું મંજુર કીં. ૦.૧૦ પૌ. ૦)૦.

હિસ્ટરિયા રોગનીજ રામખાણુ,

પેટ'ટ' દવા વાયુમુક્તાજ છે. ઉપરના દરદોમાં ૨૪ કલાકમાં કાયદો મળે છે. સિલેન, આફ્રિકા, ધરાન અને રંચન સુધીના દરદીઓ વાપરી સુખી થયા છે. ગ્રેડીકલ સરંજનો છુટથી મંગાવે છે. દવા મહિનાની, કીમત ૩.૫) પૌ. જુહા.

છગનલાલ લલ્લુલાલ નામાવાળા. પેલેસ રોડના નાકે—વડોદરા.

વીસમી સદીની નવીન શોધ

સંગ્રહણી (ગળણી) માટે અમૃતમય ઉપાય.

પ્રતિષ્ઠિત અને વિકાન વૈદ ડોક્ટરોની દવા ખાઈ કંઠાળેલા સંપ્રદાયી (ગળતી), મુંખાપના આડા, અતિસાર અને આંતરડાના ક્ષયથી પીગત્ત નિરાશાજનક દર્દોને આશીર્વાદરૂપ થઈ પડેલી વીસ વરસના અનુભવની રામખાણુ દવા માટે રખર મળેલા સવાલપત્ર મંગાવો. પત્રબ્યવહાર નીચેના સરનામે કરવો:—

માસ્તર. કે. જી. પટેલ એન્ડ સન્સ, સ્ટુડેન્ટ્સ આશીસ્ટ-માણસાવાળા.

જિલ્લા મેળાપ—દર રવિવારે, અમદાવાદ—કાલુપુર હાંડીગરાની પોળમાં તંજુગરાની ખાડી ધર નં. ૨૫૬.

અમારૂં ખાલાનંદ બચ્ચાંઓને હજુ પુછ આનંદી અને સુંદર બનાવે છે. કીં. ૦-૧૨-૦ પૌ. જુહા.

સ્ત્રીઓના દરેક રોગોમાં અકસીર અને શક્તિવર્ધક સ્વદેશી ઔષધી

સ્ત્રી શક્તિ (૨૭૨૮૬)

ટીકડીઓ

સ્ત્રીઓને જતી સફેદ, પીળી, કે લાલ, પાણી જેવી, સ્ત્રીકળી મળ્યુમળી માત્ર (પ્રદર) અટકાવે છે; લાંબવળી કમર મટાડે છે; વાંસા અને માથામાં થતો દુઃખાવો તેમજ કમર અને પેદુમાં નીકળતી ફાટ બંધ કરે છે; બ્લેવા ગોઠા કે ઓછાવતા અટકાવને નિયમિત અને પ્રમાણસર કરે છે; ગર્ભાશય આપું પાણું કે ઉંચુનીચું ખસી મથું હોય તે ઠેકાણે લાવે છે, તે પર સોજો આવેલો હોય તો તે દૂર કરે છે; લોહીવા તેમજ કાઠાના વૃત્તાને મટાડે છે; ઉપરાંત આતી ફરિયાદોના પદ્ધિભૂમે નિપજતા દાહી તાલ, ખાંસી, અગિનું મંદ પડી જવું, ખોરાક ન ખવેલો, કમજબાત રહેવી, લોહીનું ઓછું થઈ જવું, શરીરનું શીકું પડી જવું, જીવનશક્તિ ઓછી થતી જતી વગેરે તમામ રોગો મટાડી સ્ત્રીઓને સચક્ર કરે છે અને તેમના વાંત્રીપાષણના સવળા રોગો દૂર કરી ગર્ભધારણ કરવા યોગ્ય બનાવે છે.

ગર્ભવતી સ્ત્રીઓને સેવન કરાવવાથી કમુત્રાવઠ થતી કે અધુરે માસે પ્રસવ થતો અટકે છે અને ગર્ભનું યોગ્ય સ્થાણ થતા પૂરે દડાડે તંદુરસ્ત બાળક જન્મે છે. સુવારોગમાં પણ આ દવા સંપૂર્ણ લાભ આપે છે.

છોટકડીઓને સેવન કરાવવાથી તેમના શરીર રૂદ્રપ્રુદ બને છે.

સુત્રાવઠ પછી સેવન કરાવવાથી સુત્રાવઠમાં દીણ થયેલી શક્તિ જલ્દીથી પાછી આવે છે.

ટીકડીઓ લેવાથી પ્રવાહીની માફક બમળવાની ધસ્ટી નથી.

બ્રહ્મા અને ધીરજથી આ દવાનું સેવન કરનાર દહી નિરાશ થયાજ નથી અને થશે નહિ આ દવાની માત્ર એક યોગ્ય વાપરનાંજ, દર્દના પ્રમાણમાં, તેના મુજબારી પળાની ઓછીવતી ખાત્રી થઈ રહેશે. (જનનીતાં ઝાટકો, વૈદ્ય અને નસોના યોગ્ય એક અભિપ્રાયો માટે નીચેને સરનામે લખો.)

કિંમત ૧૦૦ ટીકડીની ખા. ૧ ના રા. ૩) જન.

૪૦ " — ૧૧) દોઢ

પરદેશ માટે મોટી ખાટલી શિ. ૮) આ શીર્ષક.

(દરેકજ સવારે બે ગોળાઓ લેવાની છે.)

અનુભાવ્ય માટે ૭ માનાની રૂપાવની ટીકડો: મોક્ષી દય ગોળાઓ મંજારી ખાત્રી કરો.

તમામ દવાના વેચારીને પુછો ન દોષ તો લખો: —

હાંસર રસીક એન્ડ કું.

રામચંદ્રાસ-અમરાવાદ.

જાને માટે

તાકત-તાઝીવી ભરપૂર

સજ્જતાર

ઝંડુ ફાલા સવ

—વિના વિલંબે—

વાપરવા માંડે

ખાસ ઝીઝોને માટે

તનદુરસ્તી-તાકદ્દી ભરપૂર

ઝીઝોની નળખાઈમાં

આખાઃ અસર કરનાર

ઝંડુ અશોકારિષ્ટ

પ્રદરદિ રોગોના

અંકસીર હલાજ

દરેક ઘરમાં હોવો જોઈએ

માથી શક્તિનો સંગ્રહ કરવા

ઝંડુની સુવર્ણમિશ્રિત

મુકરદ્દવજીશુટી

—શક્તિની સર્વોત્તમ દવા—

આજઘીજ અજમાવવા માંડે

—તોલા એકના રૂપિયા આઠ—

ઝંડુ ફાર્માસ્યુટિકલ વર્કર્સ લી. મુંબઈ નં. ૧૪

અમદાવાદના એજન્ટ: સોગીલાલ અધર્મ, ૧૧૪, રીચીરોડ.

આયુર્વેદિક દવાઓનું સ્વીયત્વ આજેજ મંગલો.

સાચા દાખલ પાત્રતા અન્ય ગણે છે, ત્યારે ખરેખર તેવા સાચા દરિજાની કોટિયે પણ રિયલિટી થવાય એ માટે આરતિથી અધિક અધિક કરવું.

૨૧. શ્રીહરિ સર્વે સ્થળે સદા વ્યાપકરૂપે, પણ બિરાજેલા છે. ને તેમની પણ સત્તા ઘણીજ છે. માટે તેથી તેમને હાજર નાહીને અસહમાર્ગે ડગલું પણ ન ભરાય તે માટે વિશેષ ધ્યાન આપવું.
૨૨. પરશ્વતથી રોપ, મહેરા, ઘણાદિક અને કાળ તથા માયા અને ઉદાદિક મૂર્ધ અંદાદિક દેવો વિગેરે સર્વે યરયરે છે. એવા અનેક પ્રકારે તે સત્તાધીશ સર્વત્ર સર્વને નિયમમાં રાખનાર નાહી તેમનો ભય વિશેષ કરીને રાખવો. અને એવા પરશ્વત પ્રતિ જે એક વાત્સલ્યાદિક પ્રકારે અવતારાદિકના સમયમાં તેમના નિકટ દિતરવી માતપિતા આદિક ભક્તોએ જે પ્રભાણે કરવા ઈચ્છે તે ભાવ પણ કાણ ન કરમાય એવી રીતે સ્વામીસેવકભાવ પરશ્વત પ્રતિ રાખવો.
૨૩. સેવાસમય નિયમપૂર્વક એવો રાખવો કે, સેવાકાર્ય વખતે કૌટિક પ્રતિબંધક કે વ્યાર્તિક ન આવે કે જેણે કરીને તે અન્ય કાર્યમ યત્તિ કે ઉદ્વેગ ન થાય. એવાનો સમય વીલ્યા પછી (અન્ય અવસરે) ઉદરનિર્વાહાદિક પ્રાપ્તિય કાર્યમાં યુગાવલું પડે તો તે કાર્ય ક્ષણ પુરતું મન તેમાં જોડવું. પણ તેમાં પ્રીતિ આસક્તિ ધર્મ ન જવાય, એ સાવધાની રહેવા ભગવતચિંતન કથી જવું. મનશુદ્ધિ દરિયરિત, કીર્તન શુભગાનાદિક વિગે લગાવી ઉદય દ્રવ્યાદિક પ્રાપ્તિ અર્થે કરવામાં શુદ્ધિ એ કે શ્રીહરિનો નેક નમે તથા શ્રીશુભ ભગવતી આદિનું પણ સમાધાન ધર્મ શકે.
૨૪. પ્રાકૃત જે જે પદાર્થો છે, તે મૂર્ધ સજીવને અસ્થિર છે, વળી તે પણજ તુચ્છ છે એમ જાણી તેથી માયામમતા ત્યાગીને કાર્ય માટે જેટલી જરૂર તેટલા પુરતી વેડ ઉઠાવવી. પણ તેમાં મ્હોવાઈ ન જવું, ને ભય રાખવો કે રૂબે એ ઉપર આસક્તિ બંધાઈ જશે.
૨૫. કદાચ કોઇ સિદ્ધિ આદિકથી પ્રયોગદ્વારાએ મોહનો સંજ્ઞમ લાગે તો તે વેળા તો ખમુએ એમજ માનવું કે માયાનું વ્યા તો પ્રાપ્ત્ય છે. જેનાથી માયા ઉત્પન્ન થઇ છે, તે સમયાર નહ પરશ્વતમાં કેટલી મોહિની ભરેલી હશે ? એ વિચારી રચના કરતાં રચનાવાગાનો લક્ષ પહોંચાડવો.
૨૬. આગળ કીયો ઉત્સવ ક્યારે આવનાર છે, તે જાણી તે માટે જરૂર તે સાહિત્યનો સંગ્રહ કરી આદર રાખવો.
૨૭. ભગવત અર્થે પોતાના મુખનો ત્યાગ કરી શ્રીહરિનું કાર્ય દિતચિંતકપણાથી કરવું.
૨૮. શ્રીહરિને કદી પણ કોઇ બાબતમાં પરિગ્રમ ન પડે એવી રીતે વર્તવું.
૨૯. મંત્રણ (કરજ) કરીને સેવામાં લેલવ ન લધારવો તંબા અનીતિને માર્ગે મેળવેલું દ્રવ્ય સાહિત્ય શ્રીહરિ કદી પણ અંગીકાર કરતા નથી. માટે નીતિથી ઉપાજીત કરવું.
૩૦. ભગવતસેવાસમયુદ્ધાદિક ભગવત્કર્મ અનન્યસરણુયુક્ત રાખવામાં પ્રતિબંધ કરતા હોય, એવો જે કોઇ ધર્મ હોય તો તે ધર્મનો પણ કદાચ લોપ થાય તો તે ભલે ચલા દેવો, પણ સુખ્ય ભગવત્કર્મ જાળવવો. કેમકે સુખ્ય અંગરૂપ ભગવત્કર્મ જાળવ્યામાં સર્વે પેટા ધર્મ સમાયલા છે.
૩૧. પ્રસંગાનુસાર અન્ય દેવનું પૂજન કરવું પડે તો તેને શ્રીહરિના દાસ જાણી તથા એમાં પણ અંતર્યામી અને તેને પણ ચેતનદાતા ભોક્તા અને અદાણ કરનાર પરપરાએ મૂળ તે તો આપણા છંદ પરશ્વત તેનેજ વિગે સર્વ સમાયલું છે, ને ત્યાંજ સર્વનું પર્થવસાવ છે, એ શુદ્ધિએ કેરવું.

૨૨. લાભ, અલાભ, સુખ, દુઃખ, દાનિ, ઉદય, મૃત્યુ, જય, પરાજય, ન્યાદિક કથનમાત્ર અરિથરને પોતાનું માન્યાથી તે બંધનરૂપ થાય છે, તે કર્મોનુસાર શ્રીહરિની યથાર્થ ન્યાયવાણી ઇન્દ્રિયાએ નિર્મિત કરેલ તે પ્રમાણેજ થાય છે, ને તેમાં પણ સર્વનું રિત સમાયતું છે એ તત્ત્વ મનમાં આણવું.
૨૩. શ્રીહરિ કોઈ પણ સાધનથી સાધ્ય નથી, પણ કેવળ આપ કૃપાએ દયા આણીને કે પોતાના અંતરંગ ભક્તની કદાચી કૃપાકટાક્ષથી પ્રાપ્ત થાય છે. એ હેતુએ સર્વસાધન કર્યા છતાં મદગતીદિકથી રહિત થવું.
૨૪. પુરુષદાનાદિક કરવા મનોરથ થાય તો શ્રીહરિના કૃપાપાત્ર વૈષ્ણવોદારાએ ચિનિયોગ કરી તેમને સંતોષવા.
૨૫. શ્રીહરિના જન્મકર્મ અને લીલા સર્વ દિવ્ય અપ્રાપ્ત લઈ તેમાં કુતર્ક કે વિપરીત ભાવના કદી પણ ન કરવી.
૨૬. શ્રીહરિએ દેહ ઇન્દ્રિય મન પ્રાણાદિક જે જે દાસને આપ્યું છે, તે સર્વને ઉપયોગ શ્રીહરિના દિતાર્થે કરવો અને સર્વેન્દ્રિય મનપ્રદિને લૌકિક વાસના કૃતિથી અટકાવવી.
૨૭. અન્ય સર્વભગવદીયને પોતાના સમાન ન ગણતાં શ્રેષ્ઠ ગામી પોતે લઘુતા સમ્પન્ન.
૨૮. શુર ભગવદીય ઉપર લૌકિક હુદિયી ભાવ ન રાખવો, તેમ તેમના દોષ કદી પણ મનમાં ધારણ ન કરવા.
૨૯. સર્વમાં અંશઅંશ તરીકે ભગવાન છે, એમ સમજી કાષ્ઠને દોષ અરિયા કે નિંદા આદિ ન કરતાં ભગવદ્દુષ્ટિએ નષ્ટ રહી કાષ્ઠને આત્મા ન કુ-ખાવવો.

દયારામભાઈ.

ગત. વામનદાદશમીના રોજ મુંબાઈમાં ઉત્ત્વાવતી જન્મંતીના પ્રમુખમથાનેથી ગં. ૧૧. વિદુષી બહેન કુંવરબહેને ભાવણ કરતાં જણાવ્યું હતું કે-આપણે મનુષ્યોની જન્મંતિથિ (વર્ષાંક) એમનાં જીવન કાળમાં ઉગ્મતીએ છીએ ત્યારે તેમાં શું કરીએ છીએ? તે પરત્વે એક અનુભવી કહે છે.

જન્મમાંક કે દિનમે, ખાણ ખતલે ગાસ;

પણ મૂરખ બને નાહિ, દિવસ ગાંધે જળ.

પણ જેના જીવનથી આ જગતને લાભ થયો હોય તેવા જનોની તો મરણ પછી પણ જન્મંતિથિ ઉજવાય છે; છુએ દયારામભાઈની જન્મંતી ઉજવવાથી તેની હૃદયકદામાં આપણે વધારો કરીએ છીએ. તેને લીધે તેનું કાર્ય જન્મતાના માનસની વધારે સમીપ આવે છે. તેમની જન્મંતી મુંબાઈ તથા બહારગામ પછી વખત ઉગ્મવાય છે અને તેના જીવનનું રક્તસ વિદાનો, કવિઓ અને સાક્ષરોએ બહુ સમજાવ્યું કે સમજાવ્યું છે. હું વિદ્વાન, કવિ, કે સાક્ષર નથી, તેથી મ્હારે તે મહાન ભક્ત કવિના વિષયમાં શું બોલવું તે વિચારણીય હોવા છતાં હું આપણે જે કંઈ મ્હારે તે મહાન ભક્ત કવિના પરત્વે તેના જીવન અને જીવનમાંથી કંઈ કરું તે ચાખાનુસારી આપ મને દાનિયા ભક્ત કવિથીના પરત્વે તેના જીવન અને જીવનમાંથી કંઈ કરું તે ચાખાનુસારી આપ મને દાનિયા સંભળશે અને દુધપાક લાડુ વગેરે ખાનારાઓએ આજે રાત્રાચાંદન સંતોષ માનવો પડે.

ભક્ત કવિથી દયારામભાઈને જન્મ ચાન્દોદમાં સોડોદના નામર આપણ પ્રમુદામને ત્યાં થયો હતો. તેઓ સંસ્કારી હતા. તેમજ કવિથીના માનુષી રાજકુંવરભાઈ ચાન્દ, મુઠીય, મરાઠા અને સદનસીય હતા. એટલે સ્ત્રીઓમાં જે સદ્ગુણ જોઈએ તે તેમાં હતો. તેઓ અત્યંત વિચારથી

શુદ્ધ રસ પ્રભુમાં ચિત્ત રાખતાં છતાં તેઓ શુદ્ધકાર્યમાં કુશળ હતાં. માતા હિંચ અને સંસ્કારી હોય તેની કુખેજ હિતમં પુરુષો અવતરે છે. આપણમાં કહેવાય છે કે—

જનની જલ્પુ તો ભક્ત જન, કો દાતા કો ધરે;
નહિતર રહેજે વાંઝણી, મત ગુમાવીશ નર.

તે અનુસાર ભક્તના તે માતાએ એકાદશોમંડુલ શ્રીધામનંદાદશીએ જન્મ આપ્યો અને તે દિવસ તેમના ભક્ત જનને પર દષ્ટિ નાખતા કૃતાર્થ થયો, તે તેમના જન ચરિત્ર ઉપરથી સમગ્રાય છે કે 'આકૃતિ: ચણાન કથયતિ' તે અનુસાર તેઓ મુન્દર અને આકર્ષણ કરે તેવી આકૃતિના હતા. કહેવત છે કે 'એક માતા સો ગુરુ સન્માન જ્ઞાન આપે છે: તે પ્રમાણે માતા ભક્તિવાળાં હોવાથી દેવદર્શન અને પ્રભુના ભજનકીર્તન ગાતા તેની આસરે તથા પિતા પણ ધર્મિય હોવાથી કવિના બાળકહૃદયમાં ધર્મભક્તિનું બીજ ન્દાનપણથીજ રોપાયું હતું. તેમને નિશાળમાં ગુજરાતી વાચન અને ગણિતનો શાલ મળ્યો હતો તથા પિતા તરફથી થોડો થોડો સંસ્કૃતજ્ઞાનનો શાલ મળ્યો હતો. તથા વિશેષ જ્ઞાનનો શાલ કયા-વાતાં શ્રેવણથી મળ્યો હતો. આપણા શહેર કરતાં ગામડામાં ઉછરતાં બાળકોને શુદ્ધશિક્ષણ ઉપગ્રાંત બહારનું પણ કૃતજ્ઞાન મળે છે. આપણી આજકાલની કૃળવણી કરતાં બાળકોનાં હૃદય સુદ્ધિને કૃટલી બધી ધર્મિક, અસરકારક અને સંજીવ કૃળવણી શ્રુતજ્ઞાનથી મળે છે. તે અનુસાર દયારામભાઈને પણ માણસદોષ, મહાત્માઓ અને સાધુસન્તો તરફથી બહુશ્રુતજ્ઞાન બાળપણમાંજ મળ્યું હતું. તેમને ઉંપતીત આખા પછી કવિને મારે જ્યોતિષીઓએ સાઈ ભવિષ્ય જતાવેલું તે આશ્વાસોને સાથે લઈને તેમના પિતા સહમત થયા તે વખતે તેમનો સંજય દાઢ કન્યા સાથે જોડેલો. તેઓ નિરાધાર યર્ષપડ્યા છતાં માતા પુત્ર એકબીજાને આશ્વાસન આપતા રહેતા. તેમના માતા પણ પુત્રને પરણાવવાની હોય હૃદયમાં લઘ પ્રયત્નચરણવિન્દમાં પહોંચ્યાં. માતાના મૃત્યુથી દયારામભાઈ નિરાધાર થઈ પડ્યા હતાં, છતાં તેમની ચિત્તદૃષ્ટિ જન્મથીજ પ્રભુપ્રયે હોવાથી સાંસારિક વિપત્તિઓથી ન દબાયા.

કૃટલીક રીતે સાંસારિક વિપત્તિઓ કૃટલાયે મનુષ્યોને આદર્શરૂપ બનાવે છે, વિપત્તિઓ એક પછી એક આવે છે અને ગાદ અજાનના વાદળોને વેરી નાખે છે. કવિઓને પણ તેમજ ધર્મ પોતાની લક્ષ કરવાની ઈચ્છા નહતી અને માતાપિતા તરફથી પાછો વળેલો પ્રેમનો ઝરા ઈશ્વર તરફ વળ્યો. જેવી રીતે નદીઓને સમુદ્ર ભણી વહેતા રહેવાની, અગ્નિની જ્વાળાને હોય જ્વાળાની, પ્રાણુજ્ઞાનને આકાશ ને વાયુની, આંખને પ્રકાશની અને રાગીઓને આપણની જરૂર છે, તેવી રીતે પ્રેમના ઝરાને કાંઈ પણ રથને વહેલો કરવાની મનુષ્યની ઈચ્છા હોય છે, સાંસારી મનુષ્યો તે પ્રેમ કુટુંબ, દેહ, ધનમાં લગાડે છે. માટે ભક્તોનાં હૃદયનાં પ્રેમઝરણુ ઈશ્વર તરફ વહેવા માંડે છે. તેવીજ રીતે દયારામભાઈનું પ્રેમમય હૃદયઝરણું પ્રભુપ્રયતિ વળ્યું. માતાપિતાના પાંડેલા સંસ્કારાનુસાર વહેવા છી નાસ્તાનિકકર્મ અને પ્રમુસેવાદિ કરી દયારામભાઈ મન્દિરો તથા સત્સમાગમનો શાલ લેતાં પોતાના બનાવેલા પ્રભુકીર્તનો મીઠે રાગે ગાવાની ઉત્તમ બક્ષીસને લીધે વારંવારે શ્રીયે અને ઘરમાં તેમનું સન્માન યત્ન તેઓએ સંજીવનો પણ અભ્યાસ કર્યો અને ગ્રીજલસો તથા કીર્તનકારોની મંડલીમાં ભાગ લેવા શાખ્યા આવી રીતે તેમને વિદ્યામાં રસ લાગવાથી એમનું રસિક હૃદય શ્રદ્ધાવિદ્યા ગેળેગેળા તથા વજ્રબાણના અણસખાઓના પંદો વિગેરેના અભ્યાસમાં મચ્યું અને પરમાત્માની કૃપાની દીનભાવે શાચના કરવા માંડી, તેથી ભગવાને પોતાના જનદારા કૃપા કરી મહાનુભાવ ભગવદ્ભક્ત વૈષ્ણવશીષ્ઠચારામભંદરજી કે જેઓ શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીના કૃપાપાત્ર હતા અને જેમને ભગવાનનો સાક્ષત્કાર થયો હતો. તથા તેઓ દરરોજ શ્રીમદ્ભાગવતનું પારામણુ અને ભગવદ્વાર્તા વૈષ્ણવો પાસે કરતા હતા. તેમણે કાંઈ ગામમાં

હોડે હરિ આવે નહિ, હૃદય ન આવે રામ;

લુકા જેડે જેડીયા, તેં કવિના શા કામ ?

પણ દયારામભાઈ પ્રભુની કવિતા અને એની લીલા ગાવામાં મસ્ત હતાં. તેમના હૃદયમાં ભગવદવેશ હતો. તેમણે પોતાની સર્વ ઇન્દ્રિયો પ્રભુમય બનાવી હતી. એટલુંજ નહિ પણ 'ચતુર્સ્ત-ત્વર્ણ' સેવા તાસિદ્ધ્ય તરુવિત્તજા' એટલે કે જેમ સોયમાં પરાવાયલો દોરો સોય પછવાડેજ ચાલે તેવી રીતે ભક્તોનું ચિત્ત પ્રભુ પછવાડેજ ચાલે. તેમ દયારામભાઈનું ચિત્ત પ્રભુમાંજ પરાવાયલું હતું. કવિશ્રીના કીર્તનો જેમ વધારે વાંચતા જમ્મએ છીએ તેમ તેમ હૃદયમાં આનન્દોર્ધ્વ આવતી જાય છે. રસિક હૃદયને એમાંથી રસનો સ્વાદ મળતો જાય છે. જેમ ગીતાને માટે કોઈ ગીતાભક્તે 'લખ્યું' છે કે ગીતાને સારી રીતે જાણીએ તો બીજા શાસ્ત્રોની જરૂર નથી. તેવી રીતે કવિશ્રીના નેટલા અથો છપાયલા છે તે વાંચીને વિચારીએ તો જે 'વૈષ્ણવો' સંસ્કૃતભાષા ન જાણતા હોય તેવાને માટે અન્ય અથો વાંચવાની જરૂર ન રહે. તેમના કીર્તનોમાં ભક્તિરસ-છત્રોછત્ર ભરેલો છે. તે સિવાય જ્ઞાન, વૈરાગ્ય, દીનતા, આર્તવં પગે યોગ્ય રીતે ગોઠવેલા છે. કોઈ કોઈ કાવ્યોમાં હેમણે દર્શાવેલી સિદ્ધાન્તો ખડુ સારી રીતે સમજાવ્યા છે. કવિશ્રીએ જે લખ્યું છે તે શાસ્ત્રને અનુસરીને લખ્યું છે. કવિશ્રીની વ્યાવહારિક જ્ઞાનમાં પણ કુશળતા તેમની ચાતુરી તથા શીખામણ ભરેલી જરખીઓ પૂરવાર કરી શકે છે. પોતે સ્ત્રીઆવેશમાં રહીને પ્રભુના લીલાં ગાય છે તે સ્ત્રીહૃદયના ભાવો સારી રીતે સમ્પૂર્ણ આલેખ્યા છે, તેથી રસિક સ્ત્રીઓ જ્યારે તેની ગરખીઓ ગાય છે ત્યારે તક્ષીન બને છે. મહારી રમરણુશક્તિ મળે યાદ દેખાવે છે. જ્યારે હું પ્લેડી ચોપડી ભાગતી હતી ત્યારે મારા માતૃશ્રી જ્યારે 'મારગડો ગેલો ગોઠનસાલછ' અને 'મદિયારી મળી ચાલી મહી વેચવા.' આ ગરખી ગાતાં ત્યારે અને આનન્દથી તેમની સામે જોઈ રહેતાં અને એમ લાગતું કે મા આ ગાવાજ કરે તો નીક. તે સિવાય શ્રીમદ્ભુનાજીની આરતી 'કુન્દલભાવ છતાડો' તે આરતી પણ પ્રેમથી બધાં મળીને ગાતાં. આ વાતથી હું એટલુંજ કહેવા માગું છું કે આજથી પચાસ વર્ષ લગભગ કાઠીઆવાડના વૈષ્ણવ ભૈરંગીઓમાં પણ એમનાં પદો પ્રેમથી ગવાતાં હતાં. એટલે એમનો લાભ માત્ર ગુજરાતના ભૈરંગીઓએજ લીધો તેમ નથી પણ કૃષ્ણપ્રેમી તરીકે સમજનાર દરેક જોઈતોએ લાભ લીધો છે અને તે વાત એક સ્ત્રી તરીકે મૂકતાં મળે આનન્દ યાપ છે. ભગવાન શ્રીકૃષ્ણ ગીતામાં શ્રીમુખે કહે છે—

‘અંતકાલે ચ મામેવ સ્મરન્ મુક્ત્યા કલેવરમ્’

તે પ્રમાણે આજી જીવન પ્રભુગુણ ગાવામાં વિતાડી અન્તિમ સમયે પણ પ્રભુને દર્શન દેવા મિનંતિ કરી કે તે મુજબ પોતાનું અન્તિમ પણ મુધાર્યું. મસાલ જેમ પોતાને પ્રકાશ આપી જગતનો અન્ધકાર પણ દૂર કરે છે, તે ન્યાયે ભક્તકવિ શ્રીદયારામભાઈએ પોતાનું જીવન મુધારી જગતના મનુષ્યોનાં જીવન મુધારવા પોતાના અમર કાવ્યો જગતમાં મૂકી ગયા છે. અન્તમાં હું કહું છું તેઓ મર્ગો નથી પણ જીવન્ત છે. જુઓ—

કીધાં છે શ્રીહરિમરણો, ટાળ્યા છે જન્મ ને મરણો;
સર્વ ! શ્રીકૃષ્ણના ચરણે, મુલા પણ જીવતા તે છે.
કીધાં માતા-પિતા ઉત્તવળ, કીધું છે કુલ પણ ઉત્તવળ;
કીધું છે જીવન પણ ઉત્તવળ, મુઆ પણ જીવતા તે છે.

શ્રીદયારામ: એક ભાવંજલિ.

‘હંદગીમાં એકેય’ વાર ન રહ્યું હોય એવું માનવી કોઈ દશે ? જીવનમાં કોઈ દૃષ્ટ કે અદૃષ્ટને ખાતર ત્યારે અંતઃકરણ રહે છે ત્યારે એનું મુજબતર ભક્તિ હોય છે. પ્રેમ અને સમર્પણના ભાવથી ભાગ્યથી સંવેદના એ ભક્તિ. એથી ભક્તિના ઉપાસક કવિ દયારામને નમ્ર ભાવે આજે અમારી ભક્તિની અંજલિ ધરું છું. કવિઓએ અને કવિ કહી પોતાનો ક્યો છે, સાહિત્યસિદ્ધિએ અને સાહિત્યકાર માન્યો છે. દયારામ કવિ હતા, સાહિત્યકાર હતા, પણ એથીયે મોટા એ ભક્ત હતા.

દયારામની કવિતા વાંચતાં એમ લાગે છે કે એ કોમળી પાછળ પેસા ચલા હતા. કોમળે ખાતર એમનું અંતઃકરણ રહ્યું હતું. અને એ વહેતાં આંસુની ઘણી કવિતાઓ આપોઆપ સરળપણ ગઈ છે. જ્યાં પેમળાને, આ ગાંડપણને કેટલાક સાહિત્યકારોએ પ્રણયનું રમ્ય રૂપ આપીને દયારામને કાંકડા, રંગીનો અને પ્રણયી કહ્યો છે. અને એ કોઈય સાચા છે. રમ્ય પ્રણયની પાછળ ફના થઈ જનારોનું પૂર્ણ ભક્ત બની શકે છે. ભક્તિ અને સમર્પણ વિના તો સાચો પ્રણય હોયજ નહિ. દયારામને પ્રણય દત્તો પુરુષોત્તમ સાથે. રાંધા જેવો એ પ્રણય રમ્ય રૂપરંગ અને આકર્ષણોમાંથી વિકાસ પામીને આખરે વિશુદ્ધ અને અઘોરિક ભક્તિમાં રૂપાંતર પામ્યો. એટલા ખાતર પ્રણય, પ્રેમ અને ભક્તિ એ તો વંશિનાં જીવનમત હોય છે. ભક્તિ કાયરો માટે નથી, મદાદુશ માટે હોય છે. ભક્તિમયો જીવનયોગ જીવવા અને જીવવા જે તપ અને સાધના આપવાં પડે છે એ શરતો અને મર્દ. માણસની સિદ્ધિ હોય છે.

માર પદો પ્રખ્યાતી, સવારસાંજ ધુખ્ખી આર્યના કરવાથી, મંદિરે દર્શન કર્યાથી કે માળા દેશવાથી ભક્તિયોગ સિદ્ધ નથી થતો, ભક્તિ એ તો અસિધારાત્મક છે. કર્મયોગ અને જ્ઞાનયોગ કરતાં ભક્તિયોગ જીવને પ્રભુની નિકટતા વધેલી પ્રાપ્ત કરી શકાય છે એવી ભક્તોની વાણી સાર્થક છે. પણ એમાં શુદ્ધિ અને જ્ઞાન કરતાં અંતઃકરણનું અર્પણ દેવાથી એ કહિનમાં કહિન સાધના છે. દેખાવે સરળ પણ આચરણે કુબકર ભક્તિયોગ જીવવો એ પારો જીવવા જેવું છે. નિર્મળનું એ દૂધ સિંદુરસુતનેજ પડે છે. ગમે તેવા સામાન્ય માનવો માટે ભક્તિ નથી. ભુલિ-વાંતી લાંબી પડોળી દલીલબાજ અને વાદવિવાદોમાં જેમની તપશ્ચર્યા સમાર્થ જાય છે, જ્ઞાનના તર્કવિતર્ક અને વિતંડાવાદમાં જેની પ્રતિભા નિર્વિવાદ જાય છે એવા જ્ઞાનીઓ અને કર્મકાંડીઓ કરતાં પોતાના અંતઃકરણને નિયોતી એમાંથી અમૃતધારા વધારી જમતાની દુષ્ટતા ધોનાર ભક્તની જીવનસિદ્ધિ વધારે વ્યાપક ચિરંજીવ અને મહાન છે.

ભક્તિને જીવનમાં જીવતાં જીવતાં દુનિયાની આંખે મૂર્ખ અવ્યવહાર અને અત્યા મનાયતા ભક્તકવિ નરસિંહ મહેતાની આંતરવેદના અનુભવીને ગાંધીજી જેવા અર્પણીનું શુંના કર્મયોગી પોતાનું જીવન ધરતર ઘટે છે. આંસુનું જલ સોંચી સોંચેને પ્રેમવેશ ઉછેરનારી, પુરુષોત્તમને ખાતર સંસારનું સર્વ શ્રદ્ધ-સુખ-રાણીને તથા જંતાવનને માર્ગે સંચરનારી ગાંડી મીચેને સંભારી ક્યારેક માંડવીબાજ જેવા પ્રખર જ્ઞાનયોગી પોતાના અંતઃકરણની શાંતિ અનુભવે છે. એવા ભક્તિયોગીની જીવનસાધના કરીને જેણે જીવંતથી સાહિત્યને પોતાનાં આંસુથી ભીંજેલું રાખ્યું છે એવા દયારામનો જીવંત પર અનલક ઉપકાર છે.

દ્યારામનાં જે સંગારસ છલકાય છે તે લૌકિક રતિનો ઉદ્ધાસ નથી પરંતુ શ્રીકૃષ્ણ-
અલૌકિક માધુર્યની ભક્તિનો પ્રવાહ છે. આ અલૌકિક સંગાર અને અલૌકિક માધુર્યભક્તિને
બેદ ન સમજવાથી અને બનેલાં શબ્દમયી પરિભાષા ઉદ્ધીપક હોવાથી દ્યારામનો કાવ્યો-મા-
સંગારનો છે અને દ્યારામનો શંકડો, રમીલો અને પ્રણયી કવિ છે એવું મતંબ્ય કદલા
વિવેચકોમાં દંડ થયું હતું અને દડ્ય છે. લૌકિક રતિમાં આત્મામાંથી પ્રેમ નીચે ઉતરી રથ
દેહમાં સંભોગ અથવા વિગ્રહભંગ સંગારમાં પરિણમે છે. અલૌકિક માધુર્યભક્તિમાં રથને દેહન
રથલ કામવાસના પલટાઈ 'સંભવ' પરમાત્માની દિવ્યમૂર્તિમાં પરાભક્તિ રૂપે પલટાય છે
લૌકિક રતિનું આલંબન સચેતન શરીર છે, અલૌકિક માધુર્ય ભક્તિનું આલંબન પરમેશ્વરન
સમય મૂર્તિ છે અને હવ—પરર વચ્ચે વિવશભ મધુરભાવ સ્થાયી બંધાયેલો હોય છે. આ
દૃષ્ટિથી જોઈએ તો દ્યારામનાં કાવ્યો શુદ્ધ ભક્તિનાં છે, માત્ર રથલ પ્રણયનાં નથી.

આપણા સાહિત્યમાં ભક્તિની આરાધના લુદ્ધ લુદ્ધ સ્વરૂપની મળી આવે છે. સખા ભાવે
અને દાસભાવે એમ લુદ્ધ લુદ્ધ રૂપમાં દેખા દે છે. અણુની ભક્તિ સખાભાવની હોવાથી અને
નરનારાયણી ભક્તિ કહી છે. રાધાની ભક્તિ સખાભાવની, યશોદાની વાંદસભાવની અને
દુનુમાનની દાસભાવની ભક્તિ કહેવાય છે. ભક્તિનાં આ બધાં સ્વરૂપોમાં સખા ભાવ એવનમાં
હોતો જે ભક્તો પોતાની સુવાસ મૂકતા થયા છે એમાં શુજરાતે દ્યારામ આપોને પોતાની ભક્તો
પરંપરા સાચવી છે. દ્યારામનાં કાવ્યોને પૂર્વગ્રંથ વિના જોતાં લાગશે કે એના કદયાદીશમાં
સંભવ મૂર્તિ કવી રીતે અખંડ રાસ રો છે? કવિના અનુભવમાં આવતી આકૃતિ
અથવા સ્વરૂપ તે શંકર નેદાંત પ્રમાણેની ભાષિક સચળમૂર્તિ નદિ પરંતુ સ્વેચ્છાવિદાર કરનારી
નંદમયી સત્યમૂર્તિ છે, જેની આથે હવની ગોપીસદશ મૂર્તિને રમણ કરવાનું છે. આ સદૃશ
ભાવેશથી પ્રકટ થતો ભગ્નનીય શ્રીકૃષ્ણ અને ગોપીસદશ ભક્ત દ્યારામનો અખંડ રાસ સંબંધ
નાં કાવ્યોમાં શબ્દપ્રહારા બાણ વગતમાં સહે છે.

આ પ્રેમભક્તિનો માર્ગ જે આવી હાય લાગી તો તે સરળ છે અને સુગમ છે, અને જે
આવી હાય ન લાગી તો ત્રિજેરી તોડનારનાં કાંડ કપાય તેવા પશુ છે. ધણુએ આ પ્રેમમાર્ગનાં
આલંબનાદિ વિભાવોનું રહસ્ય જાણ્યું નથી અને તેથી પતિત થયા છે; જેઓએ જાણ્યું છે તે
ભક્તો કૃતકૃત થયા છે. વિગતીય વ્યક્તિ પ્રતિની પ્રણાવનામાંથી છૂટેલી અને મનુષ્યભાવમાં
આવેલી રતિ—પ્રણયને પટાવીને સર્વ ભૂતિ વરેરે જોદોનું અતિક્રમણ કરનારી, રપદ અહવાદની
ઉછળતી અને ઉત્કટ પ્રેમરસની મોટી નદી, પરાભક્તિને વરેલાં ભક્તોનાં હવનમાધુર્યથી કર
મનુષ્યભક્તિના અંતઃકરણમાં કંઈક બીનાશ રહી છે; અને આ બીનાશનું મોનવતાની જોતાં છે.

દ્યારામનાં જે શુભારંભ હલકાય છે તે લૌકિક રતિના ઉદ્ધાર નથી પરંતુ મધુર્યના અલૌકિક માધુર્યની ભક્તિના પ્રવાહ છે. આ અલૌકિક શુભારંભને અલૌકિક માધુર્યભક્તિના ભેદ ન સમજવાથી અને ખતેખાતે શબ્દમયી પરિભાષા ઉદ્દેશક હોવાથી દ્યારામનાં કાવ્યો માત્ર શુભારંભ છે અને દ્યારામનાં તો શોકો, રમીયા અને પ્રણયી કવિ છે એવું મતભેદ કેટલાક વિવેચકોમાં દેડ થયું હતું અને દેડાય છે. લૌકિક રતિમાં આત્મામાંથી પ્રેમ નીચે ઉતરી સ્થૂલ દેહમાં સંભાગ અથવા વિપ્રલંભ શુભારંભો પરિણમે છે. અલૌકિક માધુર્યભક્તિમાં સ્થૂલ દેહની સ્થૂલ કામવાસના પલટાઈ 'રસમય' પરમાત્માની દિવ્યમૂર્તિમાં પરાભક્તિ રૂપે પડેલાય છે. લૌકિક રતિનું આલંબન સચેતન સરીર છે, અલૌકિક માધુર્ય ભક્તિનું આલંબન પરમેશ્વરની રસમય મૂર્તિ છે અને છવ—ધ્રુવર વચ્ચે વિવશાલ મધુરભાવ સ્થાપી બંધાયેલો હોય છે. આ દૃષ્ટિથી જોઈએ તો દ્યારામનાં કાવ્યો શુદ્ધ ભક્તિનાં છે, માત્ર સ્થૂલ પ્રણયનાં નથી.

આપણા સાહિત્યમાં ભક્તિની આરાધના જુદા જુદા સ્વરૂપની મળી આવે છે. સખાં ભાવે અને દાસભાવે એમ જુદા જુદા રૂપમાં દેખા દે છે. અણુતુની ભક્તિ સખાભાવની હોવાથી અને નરનોરાયણી ભક્તિ કહી છે. નાધાની ભક્તિ સખાભાવની, મથોદાની વાતસલ્યભાવની અને હનુમાનની દાસભાવની ભક્તિ કહેવાય છે. ભક્તિનાં આ બધાં સ્વરૂપોમાં સખા ભાવ છવનમાં છવિને જે ભક્તો મોતીની રૂપાસ મૂકતા ગયા છે એમાં શુદ્ધરો દ્યારામ અર્પીને મોતીની ભક્તિ પરંપરા સાચવી છે. દ્યારામનાં કાવ્યોને પૂર્વપ્રદ વિના જોતાં લાગશે કે જોના કૃદ્વાકાશમાં રસમય કૃષ્ણમૂર્તિ કોની રીતે અખંડ રાસ રમે છે? કવિના અનુભવમાં આવતી આકૃતિ અથવા સ્વરૂપ તે શાંકર વેદાંત પ્રભાવેની માયિક સમુદાયમૂર્તિ નહિ પરંતુ સ્વેચ્છાવિદ્યાર કરનારી નંદમયી સત્યમૂર્તિ છે, જેની સાથે છવની ગોપીસદસ મૂર્તિને રમણ કેરવાનું છે, આ સર્વજ્ઞ આવેશથી પ્રકટ થતો ભજનીય શીશુજી અને ગોપીસદસ ભક્ત દ્યારામને અખંડ રાસ સંભળનાં કાવ્યોમાં શબ્દપ્રભાસ બાજુ વળતમાં સંભળે છે.

આ પ્રેમભક્તિના માર્ગે જે ચાલી હાય લાગી તો તે સર્વજ્ઞ છે અને સુગમ છે, અને જે ચાલી હાય ન લાગી તો વિજેરી તોડનારનાં કાંઈ કપાય તેવા પાણ છે. કાણએ આ પ્રેમમાર્ગનાં આલંબનાદિ વિભાવોનું રહસ્ય જાણ્યું નથી અને તેથી પતિત થયા છે, જેઓએ જાણ્યું છે તે ભક્તો કૃતકૃત્ય થયા છે. વિજાતીય વ્યક્તિ પ્રતિની પરજીવાનામાંથી છૂટેલી અને મનુષ્યમાંથી આવેલી રતિ—પ્રણયને પદાવીને સર્વ જાતિ વગેરે ભેદોનું અતિક્રમણ કરનારી, સ્પંદ યલવાદની ઉછળતી અને ઉત્કટ પ્રેમરસની મોટી નદી, પરાભક્તિને વેરલાં ભક્તોનાં છવનમાધુર્યથી કર મનુષ્યભક્તિના અતંકરણમાં કંઈક બીનાશ રહી છે; અને આ બીનાશને મોનેવતાની જગે તો છે.

કિસનસિંહ આવશ્યક

श्रीवाक्पतिपादा विजयन्तान्तमाम् ॥

शुद्धादित

अने

सहितभारत

५५८

पै५,

१८६०.

अंक १०.

श्रीवद्वला

४५५.

सीतकालके पद.

राग आसावरी—भोजनके । जेमत रामरुण दोऊ भैया जननी जरोदा जिमावेरी ॥
खारे खाटे मीठे बिजन स्वाद अधिक उपजवेरी ॥१॥ करत बयार सखी सहचरी मधुर बचन
मुख भाखेरी ॥ परमानंद प्रभु माता हितयों अधिक अधिक रस चाखेरी ॥२॥ पद ॥ छेज बलाय
छाईले तेरी भोजनकों कित करत अवार ॥ गाल लगाय फाँयो मुख चुंमन आतुरताई परोसी
थार ॥१॥ नंदबाबा समझवत मोहन करत बालकैलि सुखसार ॥ गोविंदप्रभु रसिक गिरिधर
पिय प्रभुमुखवाई नंदकुमार ॥२॥ पद ॥ भोजन कीजे मोहनलाल ॥ भांतभांतके बिजन कौने
रसिक रसिली बाल ॥१॥ परोसतही अधिक खावे उपजत बोलत बचन रसाल ॥ चितवनमें
तनमन धन दीनो मोहन मदनगोपाल ॥२॥ अतिही मुख बिछसे बहु माँतिनसों भाव परम
रसाल ॥ श्रीविठ्ठल गिरधर मुख निरखत अखियां भई निहाल ॥३॥ पद ॥ भोजन करत हँ पिय
प्यारी ॥ चाखि चखावत देत परपर हास्याविनोद देख छवि न्यारी ॥१॥ भांति भांति पकवान
परोसे मेवा मिश्री सीतल भरि झारी ॥ श्रीविठ्ठलप्रभु हितही अरोगत दासनको जूठनकी धारी ॥२॥
पद ॥ भोजन करत नवल पिय प्यारी ॥ नवरंग नवल सिंगासन बेठे नवरंग रसिक बिहारी ॥१॥
नवल थार नव खटरस बिजन परोसत नवल छित्तारी ॥ धुकुटी अरसपरस चितवनपर हित
हारिंस जाय बलिहारी ॥२॥ पद ॥

राग टोही—अरी बु बरवार उझकि उझकि आवे जानि भोजनकी बिरियां ॥ जेवत डोलत
नंदगोव बोटा ले बरजीहे सो बिरियां ॥१॥ पर न मुहात रखो नहीं जात फित्त निडरीयां ॥
चनुभुजप्रभु गिरधरन लालकों तकिही रहत दिन भरियां ॥२॥

राग खट—चलि देख सखी बिधि आज भली नवकुंजनमें दोउ जेवतरी ॥ पिय
हाथ हठीठीके जेवनकों पग सीस पर नहीं हितवतरी ॥१॥ छलित्तादि सखी कर जोरि रही अर
करि विनति नहीं चितवतरी ॥ यह सुख भाधुरी जो न लहे बृथादिन योही चितवतरी ॥२॥ पद ॥

राग आसावरी—नवलकुंवर ब्रजराज लाडिले जेवत रोटी ओर बेरी ॥ बरी भुजे
ओर खीचरी सघ घृत अधिक सुगंध परी ॥१॥ पांरं कोमल हरे सधाने जामे राई बहोत चदी ॥
त्रोपुरारी गिरधर रुचि उपजी पीवत मीठी माग फडी ॥२॥ पद ॥ भोजन करत नवल पिय
वेठी गोपकुंवरकी पांति ॥ ललित तिवारी पदा रतनके शरी जल कंचनकी मांति ॥१॥ मानिक थाठ
विशाल घरे बहु बेलबेली नाना मांति ॥ खटरस विंजन घरे तिनके मधि देखत जिनके तय
सिरात ॥२॥ पायस करत रोहिनी फिर २ अति आनंद मनमांस सिरात ॥ लपटत झपटत सख
संग मिली देखि जसोदा मन मुसकात ॥३॥ अष्ट सिद्धि नवनिधि दासी तहां लठावत जुंमन मन
ईतरात ॥ देखत यह सुखसुं सुरपुरवासी भये न ब्रजजन आंख चुचात ॥४॥ जैती सुखसेपति
सब ब्रजनजनकी पल २ छिनु २ वे गिनत न जांत ॥ गोवर्धनेस गिरधर प्रसादको ब्रह्मांडकी
मति ललचात ॥५॥ पद ॥

सेराके भोजनके—राग जेतथी—भोजन करंत किशोर किशोरी ॥ मदनगोपाल
राधिका बनी अनुपम जोरी ॥१॥ विविध पाक पकवान थार भारि सखीयन आन घरे ॥ जेवत
लाळ लाडिले रुचि सों स्वादित भोग खरे ॥२॥ यमुनाजल ललित ले आई ले जलपान कर्यो ॥
पिय प्यारीको बीरी दे गोकुल पाय पर्यो ॥३॥ पद ॥ जेहों दुलहे लाळ दुलहेया ॥ बहुविधि सांफ
सुपारे विंजन ओर बनायो घैया ॥१॥ कंचनथार कंचनकी चोकी परोसत मोद चढैया ॥ ठडी
पवन करत रोहिनी लेत बारने मैया ॥२॥ करि अचवन मुख बीरी दीनी आनंद उर न समैया ॥
लाळ लाडिलीकी छवि उपर परमानंद बल जैया ॥३॥ पद ॥

खीचरीके पद—खीचरी भोर ही रुचि देन ॥ परत हित सों प्रीति सजनी करंत हे
दुम बेन ॥१॥ प्रातपति दग पूतरी मय उमे सब ऐन ॥ गोरस रुचि सों लेत भोगी बलि
आलस नेन ॥३॥ चरत इत उत नेह पूरित कलकटाच्छन सेन ॥ स्वाद भेदी अघस अंगत पुनि
जगावत मेन ॥ ३ ॥ सीत हेमंत प्रीत घोष सहचरी दे चेन ॥ इंद्रावत हितरूप अचवन
जगत बीरी लेन ॥ ४ ॥

सीतकालके पोढवेके ॥ पोढे हरि राधिकाके संग ॥ रंगमहेलमें ललित तिवारी परदा परे
सुरंग ॥१॥ झलमलात पावक अंगीठी रतन जटित बहोत रंग ॥ कुंमनदासप्रभु गोवर्धनघर मोहत
कोटि अनंग ॥२॥ पद ॥ पोढे रंगरमनीराय ॥ रंगमहेल चित्र कीये सुंदिर जगमगात नुराय ॥१॥
रत्नजटितकी आगे अंगीठी परदा परे सुहाय ॥ बल जाड छविली छविपर कृष्णदास बलि जाय
॥२॥ पद ॥ पोढे रंगमहेल नंदलाल ॥ दोऊ और धरी हे अंगीठी परदा परे रंग लाल ॥१॥
ललितारिक सखी चरन चांपत निरखत होत बेदाख ॥ रसिक स्वामिनी लाय लई उर भरि
लीनी अक बारि ॥२॥ पद ॥

राग विहाग ॥ पोढ़े माई प्रीतम प्यारी संग ॥ रंगमहलकी छलित विवारी परदा पे
हे सुरंग ॥१॥ जगमगात पावक अंगीठी बरी रति रसरंग ॥ नंददासप्रभु प्यारी रति हे मुदित
अनंग ॥२॥ पद ॥ रतन जटित पलकापर पोढ़े कैलि करत दोक मिलत परस्पर ॥ पर गये परदा
छलित महलमें जगमगा होत अंगीठी दीप धरि ॥१॥ रति रसकैल बिलास हरिस अचरावत पीवत
हे दग भरि ॥ मदनमोहन गिरधर क्रीडा विनोद मुदित परस्पर भवर चढ़ेछ करि ॥२॥ पोढ़े हरे
रंगमहल प्रिय प्यारी ॥ सुंदिर रची हे सेज ता उपर तकीया धरे हे सवारी ॥१॥ जगमगा होत
अंगीठी पावक गोखन धरे हे दीप सुधारी ॥ मधुर सुर गावत कौकिल कठ कृष्णदास बलिहारी
॥२॥ पद ॥ पोढ़े माई रंगमहल गिरधारी ॥ सुंदिर गादी तकीया सेज रची धरी अंगीठी सुखकारी
॥१॥ कंठ लगाये भुज दे सिरहाने अधरावत पीवत मुकुनारी ॥ बोन मधुरे सुर बजावत ललित
कृष्णदास बलिहारी ॥२॥ पद ॥ अरी इन पोडस वारि ओढ़ाई ॥ सीतें सति पावन तर काई
सीत सतावन आई ॥१॥ अतिसे श्रमित जानि प्यारिने दीनी सोर सँगारि ॥ परमानंदप्रभु पर
तनमन जोवन चार ॥२॥ पद ॥ पोढ़े रंगमहल कुलदाई ॥ सीत समे प्यारी प्रीतम दोड पोढ़े
ओढ़े रजाई ॥१॥ विविध भांतके परदा चहुदिस अंगीठी धराई ॥ आसकरन प्रभु मोहन नगर
सोभा बरनी न जाई ॥२॥ पद ॥ ए दोक दुरत सेज सुख सोये ॥ करत पान मकरंद प्रिया
प्रिय अधर पानरस जोये ॥१॥ तनसों तन मनसों मन मिलवत नैन पान रस भोई ॥ कृष्णदास
प्रभु सुखविधि बिलसत मदन मान सख खोए ॥२॥ पद ॥

कीर्तनमाला.

[लेखकः—रा. रा. चंपकलाल छयाँलदास कीर्तनीयाजी.]

राग इमन ॥

(विध्वजित धर)

ताळः 'ध्याताळ'	मात्रा १२	छान	सपथी	(विध्वजित धर)			
म तीन		स्वार्थ					
नी —	ध प	२ ग म	१ म पध मप	३ अरे सांली	४ सा		
रधां —	म स	७ नी	२... २	६ २	७ नी		
नी २	म ग	— २	३ मप ३	४ २	५ सा	६ सा	
प लि	न म	— ध	२... —	७ प नी	— ७	८ ध	
नी ३३	ग ग	५ म अरे	३ म पध	६ सांली धप	७ म	८ म	
सा ३३	दा दा	३ म दा ति	४ ध ३	५ ३ ३	६ म	७ नी	

स्याम सजनी शारद रजनी पुलिन मय्य वृत्त्य नाट्य सांख्य वाता प्रगता जिरन पंद करत
कामिनी ॥ गिड गिडां गिड गिडां गिड गिड गिड गिडां पिथीकिट ता लम दर्द मांलांनं

अननननननन सुर उर्पगनी ॥१॥ स्यामको यह नाद भावे तांत्रगनाता त्रगता गतिहि लखे तत्तत
तत शब्द लेन कोटि कामिनी ॥ कृष्णदास यशहि गावे कर ताथेई थेई नचावे कांकति कांकति
कांकति कांकति करे मृदंगनी ॥२॥

अर्पण !

[नीचेना शेष 'तत्पदार्थो' नामना श्रीरामानन्द संप्रदायना पत्रना विद्वान् तन्त्रीना छे.
श्रीवैष्णवीय वैष्णवोने गावे लांडवाभां रस लेता भी. नष्टपरवाल देसाधने आ. शेष अर्पण
कराने छे हाथ विरभीश. जी. ज. शास्त्र.]

प्रश्नोत्तर.

कच्छसे एक महात्मा पूछते हैं कि 'लख श्री लगाकर भगवान् के अतिरिक्त अन्य किसी
देवको या अपनेसे बड़ोको नमस्कार नहीं करना चाहिये' ऐसा चिरकालसे सुना जाता है।
इसमें तथ्यांश कितना है ?

उत्तर—लख श्री अथवा कोई भी श्रीवैष्णवोचित तिष्ठक करनेके पश्चात् मनुष्यमें अपने
सम्प्रदाय और अपने इष्टके लिये परम आग्रह होना चाहिये। तिलक वैष्णवताका वाद्य चिह्न है।
मन्त्रसंस्कार और उससे उत्पन्न होनेवाले काम, क्रोध, लोभ, मद मोह आदि आन्तरिक विकारोंका
नाश वैष्णवताका आन्तरिक चिह्न है। इन दोनों प्रकारके चिह्नोंसे युक्त होनेके पश्चात् भाग्यधरेणासे
इदममें सर्वथा सार्विकभावका उदय होता है। उसके पश्चात् स्वयमेव अपने ही उपास्यदेवके लिये
परा प्रीति—परा भक्ति उत्पन्न होती है। उसका परिणाम यह होता है कि श्रीवैष्णव स्वतः ही
अन्य देवकी उपासना आदिसे पराङ्मुख हो जाता है। जिस प्रकारसे विवेकवर्ती पतिपरायण
स्त्री स्वपतिके अतिरिक्त अन्य किसीके लिये भी अपना शरीर, मन, वाणी, बुद्धि आदिका
पतिभावसे अर्पण नहीं करती है उसी प्रकारसे परम रामभक्त पुरुष भी अपने शरीर, मन
वाणी, बुद्धि आदिका भगवान् के अतिरिक्त किसी भी अन्य देवके लिये स्वामीभावसे समर्पण नहीं
करता है। इसी स्वामाविक वस्तुको लेकर यह कहा जाता है कि लख श्री लगाकर अन्य देवको
नमस्कार नहीं करना चाहिये।

तब यहाँ एक दूसरा प्रश्न उठता है कि उपास्यदेवकी भावनासे भले ही अन्य देवके
प्रति मस्तक न झुके परन्तु ऐसे ही सामान्य बुद्धिसे अन्य देवको नमस्कार करनेमें क्या क्षति है ?
इसका उत्तर यह है कि हिन्दू, मुसलमान्, ईसाई आदि सभी उसी एक ही भगवान् रामजीकी
प्रजा है तथापि हम हिन्दुओंको नमस्कार आदिसे सत्कार करते हैं, अन्योको नहीं; अथवा हम
वैष्णव साम्प्रदायिक प्रथाका अनुसरण करके जैसे वैष्णवोको ही नमस्कार आदि करते हैं वैसे
शैव, शक्त आदिको नहीं करते और यह सबके न करनेका कारण यह है कि इन लोगोंके

અમને હમારે શ્વેતદેવકે પ્રતિ હમારે સગાન ઉચ્ચ ઔર પવિત્ર ભાવના નહીં હૈ । હસી પ્રકારસે મ અપને ભગવાનકો હી પ્રણામ કરના અથવા ભગવાનકે અન્ય અવતારોકો હી નમસ્કાર કરના (પનાં ધર્મ સમક્ષતે હૈં ઔર) અન્ય દેવોકે પ્રતિ હમારી આદરપૂર્ણ ઉપેક્ષા હોતી હૈ । હમારે હૃદયમેં અન્યદેવકે પ્રતિ ઘૃણા દ્રેપ ન હોતે હુઅ મી નમસ્કારસુદ્ધિ ઉત્પન્ન હી નહીં હોતી । વે અન્ય દેવ) અન્યોકો દષ્ટિમેં પરબ્રહ્મ બને હુએ હૈં । શૈવ શિવકો હી પરબ્રહ્મ ઔર શ્રીરામાદિકો શિવકા અજ્ઞાનતે હૈં । શાક શક્તિકો હી જગન્નિયન્ત્રી ઔર શ્રીરામાદિકો શક્તિકા અજ્ઞાન માનતે હૈં । ગાણપત્ય મી એસા હી કરતે હૈં । અતઃ સામ્પ્રદાયિક દષ્ટિસે તથા અપને પવિત્ર ભાવોંકી રક્ષાકે લિયે હમે મી હા માનનાં કી ચાહિયે કિ હમારે ભગવાન શ્રીરામ હી પરબ્રહ્મ હૈં ઔર અન્ય દેવ હમારે ભગવાનકે મજ્જ હૈં । જૈસે અન્ય દેવોપાસક રૈવ, શાક આદિ હમારે ભગવાનકો પ્રણામ નહીં કરતે વૈસે હી મ મી અનેક દેવોંકો પ્રણામ નહીં કરતે । તાત્પર્ય યહ હૈ કિ હમેં હમારી દષ્ટિમેં શ્રીરામકે અનન્ત રૂપકો હસં પ્રકારસે મર દેના ચાહિયે કિ ' મરી સરાય રહીમ ઓલિ આપ પાથિક પિત્ર જાય ' કે મનુસાર કોઈ અન્ય દેવ હમારી દષ્ટિમેં આવે હી નહીં ।

અપનેસે મહે ભગવદ્વક્તોં અથવા ગુરુ અદિકો પ્રણામ કરનેકે લિયે તો હમારી ધાર્મિક મર્યાદા હૈ । શ્રીવૈષ્ણવ ભગવત્સ્વરૂપ હોતે હૈ । અન્ને પ્રણામ કરનેમેં કિસી મર્યાદાકા વિલોપ નહીં હોતા હૈ । ' હાલશ્રી હૃદ્ધ્મીજીકા રૂપ હૈ હસલિયે મસ્તકમેં ઉસે ધારણ કરકે કિસીકો મી પ્રણામ નહીં કરના ચાહિયે, હસ ધારણમેં દોષ ઔર અમ હૈ । વૈષ્ણવોંકો પ્રણામ કરનેમેં કોઈ ક્ષતિ નહીં હૈ । શિવજીકો મી વૈષ્ણવ માનકર નમસ્કાર કરનેમેં કયા ક્ષતિ હૈ હસ પ્રશ્નકા ઉત્તર યહ હૈ કિ શિવજી દો હૈ । ઇક વૈષ્ણવ ઔર દુસરે અવૈષ્ણવ । ત્રિપુણ્દ્રધારી, મત્સ્યધારી, જટાધારી, મુળ્દમાલધારી, વૃષભારોહી, સ્મરણચાલી, રત્નાક્ષરધારી શિવ અવૈષ્ણવ હૈ, અનેક સામને હમારા મસ્તક નહીં હુક સકતા હૈ । ભગવદ્વક્ત, હુલ્લીમાલધારી, શુદ્રકાય, પદ્મસંસ્કાર સમન્વિત શિવ હી શ્રીરામમક અત્તર્પણ વૈષ્ણવ હૈ । એસી શિવમૂર્તિકે સામને નમસ્કાર કરનેમેં હમે કોઈ ક્ષતિ પ્રતીત નહીં હોતી હૈ ।

—ભગવદાચાર્ય.

જ્યોતિષનો અદ્ભુત ચમત્કાર.

જ્યોતિષ વિદ્યા માહુ જમાનાની એક અદ્ભુત વિદ્યા પુરવાર થઈ ચુકી છે. પણ તેના અભ્યાસ તથા ઉપાધુમાં ઉત્તરીને ફલાદેશ જેવા માટે અમ અધા લેતા નથી તેથી ત્રદાહુએનો વિશ્વાસ ઘટતો જાય છે.

અમારે ત્યાં ઘણાજ પ્રાસથી ચીવટથી સ્વોટ રીતે કાર્ય થાય છે તેની ખાતરી તો અમારી સાથેના પ્રસંગથીજ થાય તેમ છે. જન્મોત્તરી, પ્રજોત્તરી, જન્મ ફલાદેશ, વર્ષફલ, માસફલ, જન્માક્ષર વગેરે થોડાજ દરથી કરી આપવામાં આવે છે. જિજ્ઞાસુએ સવા આનાની રીઝીટ બીડવી, હસ્તરેખા પણ જોવાય છે.

પંડ્યા અમૃતલાલ ગીરધરલાલ,

ડૉ. શ્રીકૃષ્ણ મંદિર, ડાંક (કાશીવાસ)

સુસાદિત અને લક્ષિતમાતૃક.

સાહિત્યનો પ્રચાર.

(વ્યાખ્યાતા:—જોસ્વામી શ્રીમજ્જનાથસાલજી મહેતાદેવ.)

શ્રીમાદ્ધૃષ્ટદ્યુમ્નચરણકમ્પમંદર-દરિયાસુ પ્રિય વૈષ્ણવદ્! આજે જગતનો પ્રવાહ કે તારક વળી રહ્યો છે અને તે થું પ્રગમ કરવા મંથી રહ્યો છે તે સૌ સુરોથી અગ્રાત નથી. બાદ કાળમાં જેવી પરિસ્થિતિ હતી તેવીજ પરિસ્થિતિ ધીમે ધીમે થતી જણાય છે. લોકો આર્થ-ધર્મથી શિથિલ થતા જાય છે. વિધર્મ જે ગતિમાં લાઇ જનારા માર્ગ છે તે પ્રતિ દોડતા જણાય છે. તેઓ એમ માને છે કે આર્થવર્તનો ધન્ય અને ધર્મ નફામાં કલિપત તરવો છે. તેને માનવાની કે પણ આવશ્યકતા નથી. સાસ્રોએ ખોટાં છે. મરેરે પ્રલાયો કરી પોતાનું અકલ્યાણ કરી રહ્યા છે. અરે! તેઓ પોતાનો સર્વનાશ કરી રહ્યા છે અને મનમાં ધુલ્યાય છે કે અગે વાસ્તવિક માર્ગને પ્રદલ્ય કર્યો છે. હે પ્રહું છુ' કે યદિ તમે ધન્યરને નથી માનતા તો તમારે તમારા પિતાને પણ ન માનવા જોઇએ. તમે તમારા 'આ પિતા છે.' એમાં શં પ્રત્યક્ષ પ્રમાણ આપી શકશો? તમારી માતા અને અન્ય પરિચિત જનોના ક્યનથીજ અનુમાનદ્વારા 'આ તમારા પિતા છે.' એમ માનવુંજ પડશે. છૂટકોજ નથી. તેમ અમારા ધન્યર અને ધર્મના તરવો જમારા પ્રાચીન શાસ્ત્રો વણુવે છે એટલે તેને ન માનવા એ જરાએ હુક્તિસંગત નથી તેમાં જરાએ મુદ્ધિમતા નથી. તમે જો શાસ્ત્રોને ન માનતા હો તો તમોને ધન્યર નથી કે ધર્મ એ ધર્મિંગ છે એવો અર્થશૂન્ય લવાય કરવાનોએ અણુમાત્ર અધિકાર નથી. આસ્તિકો શાસ્ત્રોને માનનારા વાદીઓ સાથે શાસ્ત્રાનુસાર શાસ્ત્રાર્થવાદચિવાદ કરતા કટિબદ્ધ છે. પણ જે નાસ્તિકો છે, તેવા સાથે વિતંડા કરવા જરા ઇચ્છા નથી રાખતા.

વૈષ્ણવો! આવા સમયમાં જો આપણે ધાર્મિક સાહિત્ય વાંચ્યું હોય, તેનું અભ્યાસદ્વારા મનન કર્યું હોય, તોજ તેવા જડવાદીઓનાં મુખમહનો કરી સપ્તમે અન્યથા આપણે પશુ તેઓના પ્રભાવમાં નાસ્તિકવાદમાં પ્રસ્ત ધર્મ જઇએ એ સ્વાભાવિક છે. વિજ્ઞાન કહે છે કે વિચારોના એ કોટાણુઓ હોય છે. સ્વસ્થ શરીર વા મસ્તિષ્ક પર ડેરી કોટાણુઓ અસર નથી કરતા પણ જો અસ્વસ્થ મસ્તિષ્ક હોય તો તે પર તે ડેરી કોટાણુઓ માત્ર અસર નથી કરતાં કિન્તુ ધર કરીને ધામાજ નાંખી દે છે. તેવીજ રીતે જેનું મસ્તિષ્ક ધાર્મિક સાહિત્યના વાંચનથી અને સત્ વિચારો તથા આચારોના સેવનથી સ્વચ્છ નથી હોતું તેવા નાસ્તિક-મસ્તિષ્કનો ડેરી જન્ટુઓ ઝટ પ્રવેશી જાય છે. અને તેને પોતાના પ્રભાવથી એવું પ્રભાવિત કરી દે છે કે તેને તદ્દન નાસ્તિક કરી દે છે મારેજ ધાર્મિક સાહિત્યના વાંચન અને તેનાં પ્રચારની કેટલી બધી આવશ્યકતા છે તે સદજ જણાઇ આવે છે.

વૈષ્ણવો! મેં એ તમને સ્પષ્ટ સમજાવવાનો પ્રયત્ન કર્યો છે કે પ્રજુની પ્રજુતાથી જે અમણ હોય છે અને જે નિતાન્ત પ્રચ્છન્ન હોય છે તેને પણ અનતોગતા પ્રજુની પ્રજુતા મને કે કમને માનવીજ પડે છે. પ્રજુની એજ વિશેષતા છે કે તેઓ સર્વ લૌકિકના જેવી લીલાઓ કરે છે તથાપિ પ્રજુમાં અને તેની લીલામાં જરાએ આદૃતલુક્ષતા નથી સંભવતી. શ્રીમદ્ભાગવતમાં લખ્યું છે કે:—

દ્રવ્યં કર્મ સ્વ કાલથ સ્વભાવો જીવ એવ ચ ।

યદનુગ્રહતઃ સન્તિ ન સન્તિ યદુપેક્ષયા ॥

અર્થાત—કમ, કમ, કમ, સ્વભાવ અને જીવ એ સર્વ જેના અનુગ્રહથી જ છે. બધી પ્રભુની કૃપા ન હોય તો તેનું અસ્તિત્વ સંભવજ નહિ. આવા સર્વભવન સમર્થ પ્રભુમાં દાસાક્તિ જેવી યશ્ન નીચ અને તદનન્તર પ્રભુમાં વ્યસન પણ પણ પ્રાપ્ત થાય તો પછી તેના દેહની સાધકતા યદ્યપિ સંભવની. પુષ્ટિમાર્ગનું પરમ ફળ પણ વ્યસનદશા-પછીની જે તનમયતા છે તેજ. પ્રભુને લોકિક વિપયાદિથી તદન મુક્ત છે. જે જીવ નિર્વિકારી અને નિષ્કામી ચારિત્ર્યવાન હોય તે પરજીવોતાનો પરમ અનુગ્રહ કરે છે. શ્રીગોપીજનો પ્રભુના પરમ કૃપાપાત્રીઓ થયાં તે શા માટે ? તેઓ પ્રભુને પસંદ પડે તેવા નિર્વિકારી અને વિશુદ્ધ હતાં, તૃતીય રક્ત્યના શ્રીસુખોદિનીઓમાં શ્રીમદ્દાપ્રભુજી પુણ્ય લખે છે કે—

“યયા દૃષ્ટિર્ભગવતિ પ્રવિષ્ટા તત્સદ્દે ચેતનાડપિ તત્રૈવ ગતા । અતો ન સ્વશરિરે તાસાં કામયોગોપેક્ષી ભગવત્સ્વરૂપં ષ્વાનન્દાનુભવાત્ । ન કામનાનન્દો નવા સ્વામિન્ જાતત્યાડઽઽ નાનન્દસ્થાનુભવઃ અન્તઃકરણાદિનાં તત્રૈવ વ્યાપ્તત્વાત્ ।” [તુ. સ્કં સુ. પૃ. ૨૬]

અર્થાત, જેમ પ્રભુમાં દૃષ્ટિ પ્રવિષ્ટ થઈ તેમને તેની સાથે સાથે ચેતના પણ પ્રભુમાં પ્રવિષ્ટ થઈ ગઈ અત એવ શ્રીગોપીજનોનાં શ્રીઅંગમાં કામની અણુમાત્રએ અગેશા નથી, કારણ કે તેઓ તો પ્રભુનાં સ્વરૂપમાં જ આનન્દનો અનુભવ કરતી હતી. લોકિક કામમાં જરાએ આનન્દ નથી અને તેઓને તો ચેતના જે આનન્દ સંપ્રાપ્ત થયો હતો તેનું જો જાન નહોતું રહ્યું, કારણ કે તેમના અંતઃકરણાદિ સર્વ પ્રભુમાં જ તટ્પર બની ગયાં હતાં.

વૈષ્ણવો ! સમગ્રદાયનું આપું ઉત્કૃષ્ટ રહસ્ય અને આવા ઉચ્ચ સિદ્ધાન્તોનું જ્ઞાન જેઓને નથી તેઓજ થયા તથા પ્રથમે છે માટેજ આપણા સમગ્રદાયના સિદ્ધાન્તનો પ્રચાર કરવા શ્રીકૃત ગિરિ-ધરદાસજી. શાહે જે પ્રવૃત્તિ આદરી છે અને તેને સફળ કરવા જે પ્રયાસો કરી રહ્યા છે તે ખરેખર વખાણનાં લાયક છે. તેમનું મુંગમ જેવા વિજ્ઞાન વૈષ્ણવોની વસ્તીવાળા શહેરમાં સાંપ્ર-દાયિક તથા અન્ય સત્સાહિત્ય પ્રચારનું કાર્ય પ્રસન્નનીય છે. મને આશા છે કે વૈષ્ણવો ભગવદીય શાહના ઉત્સાહને પૂર્ણ ઉત્તેજન આપશે. ‘શ્રીભક્તિમાર્ગીય સારિત્ય મન્દિરો’ અને ‘શ્રીભક્તિ-માર્ગીય મહત્ વાચનાલયો’ ની ભારતમાં જ્યાં જ્યાં વૈષ્ણવોના વિપુલ સમૂહ નિજતિપર હોય ત્યાં ત્યાં તીવ્ર આવશ્યકતા છે અને એ જરૂરીઆત મુંગમનાં લ. શાહે પૂર્ણ કરી છે. તદર્થ તેમને ધન્યવાદ આપી માફ વક્તવ્ય પૂર્ણ કરું કરું છું.

વઢવાણને આપશીનો આદેશ.

વઢવાણના શ્રીમદ્દાપ્રભુજીના ઉદ્દેશથી વૈષ્ણવ જેઓ અને સાધકોનાં હૃદયોને આદેશ લાગેથી શું સદેશ આપું ? વૈષ્ણવ સંમાજ આમ રચનાત્મક પ્રવૃત્તિપરતે આન આપે છે અને અમદારી પાસેથી પણ આગ્રહ કરીને જાણવાનું ઇચ્છે છે તેથી મને અપાર આનન્દ થાય છે અને એજ ભવિષ્યની ઉન્નતિનું એ જ વચનત ચિન્હ છે. શ્રીમદ્દાપ્રભુજીએ જીવોના ઉદ્ધાર માટે પ્રગટ થઈ કૃપામાર્ગ નગતને દેખાડ્યો અને શરણમાં મનદારા અને નિવેદનમાં મનદારા આ શરોનો ઉદ્ધાર કર્યો એ સર્વ વાતી વૈષ્ણવોથી અજાત નજ હોય. શ્રીમદ્દાપ્રભુજીએ સમાજને વિકાસ માર્ગ વધવા માટે અનેક ઉપદેશામૃતો મંદારા પાયા છે પણ એનો વિષય છે કે આપણે એ મહાપુરુષના આદેશો પ્રમાણે નથી વર્તતા. પ્રભુના ભરણુરવિદમાં ચક્ર પુનઃ એ ધન આલોક તથા પરલોક સર્વેન્દ્રિયો તથા ધમો સાથે નિવેદિત કરી જીવો પંચ મહાદોષોથી મુક્ત થઈ સેવા-પયોગી દેહ સંપાદન કરે છે પેણ પાછા તે દોષો પ્રવિષ્ટ ન થાય તે માટે શ્રીમદ્દાપ્રભુજીએ સિદ્ધાન્ત રહસ્યમાં આજ્ઞા કરી છે કે પ્રભુને સમર્પણ વિનાનો દોષ પણ પદાર્થ ઉપભોગમાં ન લેવો, તેનો

ત્યાગ કરવો જોઈએ જેથી હૃદયમાં કોઈ પણ પ્રકારે વિકારો નથી જન્મીને પતા, દોષો નથી પ્રવિષ્ટ થતા. આજ કાલ હોટલો તથા દુકાનોની અસ્વચ્છતા તથા અણુપ્રસાદી વસ્તુઓના આવાધી સોડામાં ભજમાવના અને ધર્મનો લોપ દેખાય છે માટે વૈષ્ણવોએ આવી દુકાનોની હોટલોની વસ્તુઓને કોઈ પણ વખતે ઉપયોગમાં ન લેવી જોઈએ. તેનો સર્વદા બહિષ્કાર કરવો જોઈએ અને વિષય વિદ્યારાધિની નિવૃત્ત યજ્ઞ પ્રભુની સેવામાં પરમણુ બનવું જોઈએ તેમાંજ ઉદ્ધાર છે.

લી. ગો. શ્રી. પ્રજનાથલાલજી વિ. મહોશય.

“જન્મવૈકલ્યનિરુપણાદક.”

[વૈ. પ્રમલાલ ગો. કે.સારા-સુવતાનપુરા.]

“નવ આશ્રય જેને શી વશભાધીયનો, નવ સુખોધિની નિહાળી પ્રેમ. દષ્ટનો; ૧
ન આરાધ્યા કદિએ રાધિકાનાયને, વૃથા તેહનો જન્મ ગયો આ ભૂતલે.
ન ક્યારે હરિનામ તણું ગુંજન કર્યું, ન આત્મા સમર્પ્યો શીપ્રભુનાં ચરણને;
ન સેવા કરી ક્યારેયે શ્રીકૃષ્ણની, વૃથા તેહનો જન્મ ગયો આ ભૂતલે. ૨
ન ચિતન શીહરિની લીલાનું કર્યું, ન દીનતા, ને નહીં વિરહ દિલમાંજ જો;
ન પૂરણ શ્રી કૃષ્ણ તજ્યો આશ્રય કર્યો, વૃથા તેહનો જન્મ ગયો આ ભૂતલે. ૩
નવ નીતિ ને વાત કરી કૃષ્ણભક્તિની, ન કરી જેણે સાધું સંતની સેવજો;
ન ગોવિન્દના ગુણોનું ગામન કર્યું, વૃથા તેહનો જન્મ ગયો આ ભૂતલે. ૪
ન કૃષ્ણ રૂપ સાન્ધ્ય જેના હૃદયમાં, ન મન બીજેથી રાકી થયો લીનજો;
ન દુઃસંગ પરિત્યાગ કર્યો નિજ દિલથી, વૃથા તેહનો જન્મ ગયો આ ભૂતલે. ૫
ન ભક્તિ પુષ્ટિમાર્ગ તણી કદિએ કરી, ન નિઃસાધન ભાવ થયો નિજ ઉરજો;
ન જેણે સર્વે પ્રપંચો વિસારીયા, વૃથા તેહનો જન્મ ગયો આ ભૂતલે. ૬
નથી જેને તત્પરતા ધર્મ કાર્યમાં, ન ધર્મ મારગે લામ્યું જેનું મનજો;
ન ભક્તિ જ્ઞાન વૈરાગ્ય જેના અંતરે, વૃથા તેહનો જન્મ ગયો આ ભૂતલે. ૭
નથી વિરહ નિજરવામાં દેરા દીલમાં, ન તેનો પરિતાપ, અને નહીં ભાવજો;
નવ દુર્લભ જેના અંતરમાં દીનતા, વૃથા તેહનો જન્મ ગયો આ ભૂતલે. ૮
‘જન્મ વૈકલ્ય નિરુપણાદક’ સ્તોત્રનો, ‘વશભ’ કૃપાથી કરીયો ગેં અનુવાદજો;
દાસ ‘પ્રેમલાલ’ ફક્તે, શીહરિ ભક્તિ કરી, સદ્ગજ કરજો જન્મ વ્હાલા ! આ ભૂતલે.” ૯.

“ડૂબી રહેલું સર્વદા.”

[રચયિતા ‘શ્રીપરાગ’ મુખ્યમંદ,]

શ્રીકૃષ્ણનું શુભ નામ લેતાં સર્વ પાપો ટળી જતાં, જિવ્હા તણું સાચક્ય પણ, તેના ચકી છે નાન્ય
ભૂત-પ્રેત-પિશાચનો બધ દૂર થાતો પણ મહી; સમ્પત્તિ યાતી સર્વને, સૌભાગ્ય ને ધન ધાન્ય
શ્રીનન્દનન્દનનું સદા, કરવું હૃદયમાં ચિન્તન, પ્રેમથી વેજનાથ ભજવા સર્વ ભાવે નિર્મલ
પ્રભુ નામ નૌકાથી તરે, સૌ જીવ માત્ર અભેદથી, દુરતર. ભવાણુંવને કરે, સમ્પ્રાપ્તિ પ્રભુના ચરણન
શુષ્ક રાનાદિ યજી પ્રભુ નામ મોંધું છે ધણું, રસથી ભર્યું આનન્દની સરિતા વહાવે એ યજી
વિષયમય વાદળ દુઃખના, શ્રીકૃષ્ણનામ પ્રભાવથી, વિગાદિ દુષ્ટ વિકારની નિવૃત્તિ તેથી ઝટ થત
પ્રભુ નામ જપવું સર્વદા, પ્રભુ નામ રમરવું સર્વદા, મન તન્ન તજ્યો સખે ! શિરમૈલિ એ છે સર્વથ
શ્રીકૃષ્ણને શરણે જઈ, કંઈક ખતીને સેવવા, શ્રીકૃષ્ણનામ સમુદ્ધમાં ડૂબી રહેવું સર્વદા

સમ્પ્રદાયીના સૂક્ષ્મભાવ.

(લેખક—ભગવદ્દીય વેલજી નયુભાઈ મીસ્ત્રી.)

(રાગ—માધો મનનો મોહન વર પામીયારે લોલ.)

શ્રીવલ્લભ શરણુ અમે પામીયારે લોલ, એથી કરી ત્રિવિધ તાપ રાખાવીયારે લોલ. ૧.
વિરહાનલ શ્રીવલ્લભને વખાણીયેરે લોલ, અરેય દાનો પૂરણુ બલ પરમાણુએરે લોલ. ૨.
જેહુનાં રામ રામ શ્રીકૃષ્ણસ્થેથી લયારે લોલ, નિત્યસ્તીયાના વિદારસાગરમાં તથારે લોલ. ૩.
ગોપીપતિ પ્રિયા રોલ પ્રકટ દેખતારે લોલ, જેમ સમુદ્રમાં તરંગોને વિશેષતારે લોલ. ૪.
વજ્રવિહારી સંગમ રસ ત્રીજતારે લોલ, પ્રેમપીયૂષથી અંગે અંગ ભીજતારે લોલ. ૫.
એવી મૂર્તિ મનોહર વલ્લભ નામનીરે લોલ, સદા વસે હૃદયમાંહી અભિરામનીરે લોલ. ૬.
નિજ દાસત્વ સોભાગ્ય અખંડ રાખતારે લોલ, પ્રાતમ પ્રેમમાં બીજાક્યાં રસ ચાખતારે લોલ. ૮.
નીરસ માયાપાદ રૂપી તમ ટાળાયારે લોલ, સુંદર સેવાની રસ રીત પ્રગટાવીયારે લોલ. ૯.
પ્રિય સંગ મુધા જે રાગ રંગનારે લોલ, પ્રાંતે કરી પામ્યાં જન ગોપીસંભારે લોલ. ૧૦.
કુખે કરીને જે વરણુ કદી નવ મળેરે લોલ, ચરણુ શરણુ આન્યાં જેને દીધી એ પળેરે લોલ. ૧૧.
ઉદય થયે અલૌકિક ભાતુ બૂતલેરે લોલ, ટાળું તમ નિજ સેજના બંને કરીરે લોલ. ૧૨.
પ્રિયા પ્રિયતમનાં રોહનું સ્વરૂપ છેરે લોલ, ગૂઢ સ્વામિનિનું પ્રગટ સ્વરૂપ છેરે લોલ. ૧૩.
કાષ્ટ ખંડિત કદાચે નિગમ નહી ગતિરે લોલ, કદી હોય ગતિ ક્રિયા માહે નહિ મતિરે લોલ. ૧૪.
ક્રિયા કરે કદી તોએ પ્રેમ નય મળેરે લોલ, પ્રેમ વગરની ક્રિયા તે કદી નવ મળેરે લોલ. ૧૫.
પ્રેમ હોય તો માત્ર જડા નામનેરે લોલ, વસ્તુ વગર ધરો કયા કામનેરે લોલ. ૧૬.
પરિચોધી સદાજ પ્રેમ આપીયોરે લોલ, અખંડ નજીવતિમાં નવ ચમાવીયોરે લોલ. ૧૭.
એવા સકલ શુણુ સમ્પન્ન શ્રીવલ્લભસાલ છેરે લોલ, જેહનું પૂરણુ પ્રભુજીમાં વડાલ છેરે લોલ. ૧૮.
ધીમુખ સુદાં મુખોધિની વરસાવીયારે લોલ, રાધાકૃષ્ણ યુગલ નેદ દરસાવીયારે લોલ. ૧૯.
ન કાષ્ટ હોયો ન હોય અવની મહારે લોલ, રાધાકૃષ્ણ સેવન પ્રેમભાવથી લહીરે લોલ. ૨૦.
શ્રીવલ્લભ નખચંદ પ્રીણ પાનથીરે લોલ, મત થયાં માનવ કૃપારસદાનથીરે લોલ. ૨૧.
કલિકાળનો પ્રભાવ નહિ જોદનેરે લોલ, એવા ભક્ત બૂનગ વજ્રલ શરણુ એદનેરે લોલ. ૨૨.
જેહુના ચરણમાં શ્રીવલ્લભીજ વસી રજારે લોલ, એવા મજાપતિ રસ નેદમાં ધસી રજારે લોલ. ૨૩.
દેવી જીવના તે પ્રાણુ આધાર છેરે લોલ, લીલા સ્થાગરે રામાન્યાં નર નારનેરે લોલ. ૨૪.
વિષય સાગરે પડેલા શરણુ આવીયારે લોલ, અગર કરી ચરણુ શરણુમાં રામાવીયારે લોલ. ૨૫.
જાણન જુદી તે રોહન રસ પાછનેરે લોલ, જીહ્વારિક્ષ બાંદ મદી મનુ ધાછનેરે લોલ. ૨૬.

“સંભારણાં.”

ગયા છતાં સદૃશ્યો, હૃદયોંકિત જરૂર રહે;
નિજ અભિનય-વપાએ જગતમાં અમર રહે.
નિર્જાંકિત વાક-પટુતાઓ, મજામાં સ્મરણુશ્રૂત રહે;
એવા પુરોહી આશીર્વાદ, જગતમાં ફોન-મુખ રહે.
સ્વાચ્છા હંચન ગ્રાણી, મુખુ શરીર-ત્વજ રહે;
શરીર વિજુ શરીર, જગતમાં આત્મીય રહે.
નિજ બાહુમાં મુખોથી, નિર્ભયતા વિચરી રહે;
આત્મીય પ્રેમાંશુ સંભારી, જગતમાં અનુસૂત રહે.

(લેખક—જોષી અવજલાલ હગનલાલ પરમજયદીય કવિવર શીલ્પારામજાણના ચિખ્ખા પ્રગૌચ.)

ભવસાગર તરવો રહેલ છે.

શ્રીકૃષ્ણ નામ જે રટશે, સંસાર રહેવે તરશે, વ્હાવા વૈષ્ણવ ભવસાગર તરવો રહેલ છે. ૧. શ્રી-
ચારો પ્રભુના દાસ, તો રહેશે પ્રભુ પાસ, દીનતાથી જો ભજશે બધેથી પ્રભુને મળશે. ૨.
ચિત્ત પ્રભુમાં જોડા મંસારી સંબંધ તોડે, જીવું કદી ના ભોલો એક સત્યતાથી ચાલે. ૩
પ્રભુ ભજે જે વ્હાલે તે પ્રભુ મહેલે મ્હાલે, શ્રીવલ્લભના દાસ થાવું ખોટા માર્ગે ના જાવું. ૪.
આ ભવસાગર છે ખોટો જાણે પાણીનો પરખોટો, શ્રીકૃષ્ણ નામ છે માર્યું બાકી બધુયે કાર્યું. ૫.
નીચ કર્મ જે કરતા તે અતે નરકે પડતા, શ્રીકૃષ્ણ નામને રટવું અભિમાને પાછા ફટવું. ૬
નિત્ય પ્રભુ ગુણ ગાયે તે ગોલોકવાસી ગાયે, કોઈ સન્નને તોડી હું પદને દા છોડી. ૭.
અવિચારી કર્મ પર થુકે શ્રીકૃષ્ણનામના સુદે, ભક્તિથી રહે તરશે ખીજ બધામા મરજો. ૮.
સદગુણને શણે રહેવું સત્યે હુ ખ પડે તે મહેવું, ઉપકાર સદાયે કરવો અપકારને પગદરવો. ૯.
મંથી સદાયે મહેવું કુર્મપમા ન બહેવું, ૫, ધર્મી પરદરવી નિંદા કોઈની ન કરવી. ૧૦.
નીનિ થકી નવ દારો વૈયં ધર્મને ધારો, શીખે સાચાને કે ગાય, તે મહેજે ગોલોક જાય. ૧૧.

વૈયંચંદ્ર રણછોડદાસ છુદ્ધ. ૧

પ્રભુને વિનતિ.

વ્હાના વિનતિ કં હુ પ્રેમે આપને રે, મ્હાગ હૃદય તણા છે આપ પ્રાણધાર. વ્હાલા. ૧.
આપ બધુ છે દીનના ગુણસાગર શ્રીગોપાળ, પ્રેમે ભક્તિ આપને પ્રેમે કરા શ્રીકૃપા. ૨.
દીન જાણીને દયા કરે શ્રીનાથજી રે, મુજને સરણે રાખી આપો ચરણે પાસ. ૩.
જાણક જાણી આપનો કરે કૃપા વ્રજનાથ, વ્હાવા પ્રેમે શીઘ્રતથી મ્હો બાળનો દાય. ૪.
જાણી આપ ચરણની પાસે વ્હાવા બેહુશી રે, ભક્તિ આપો પ્રભુજી જાણી મારો દામ ૫.
એક ભરમો આપનો શ્રીમદ્ગિરિમાર, અપર ન ધારે અંતરે, કયો એ દહ વિચાર. ૬.
પ્રભુ પૂર્ણ શ્રીપુરોત્તમ ગુરુ વૈયંના રે, પ્રભુ ગ્યાયો મુજને ચરણનો દાસ ૭.

વૈયંચંદ્ર રણછોડદાસ છુદ્ધ.

શ્રીનાથપ્યારા.

ભક્તિ વડે વશ થાય, શ્રીનાથ પ્યાગ ભક્તિ વડે વશ થાય. ધ્રુવ. ૧.
જે જીવ ભક્તિ કરે તેનો, જન્મ મળવું ભય જાય. શ્રીનાથ. ૨.
જેય નીચ તેમા પ્રભુ નથી જોતા, ભવે રંકે હોય કે રાય. શ્રીનાથ. ૩.
રૂપ, ધનકે વિદ્યા એ કાષ, પુરવાતને પ્રસન્ન ન થાય. શ્રીનાથ. ૪.
ભક્તિથી ભક્તની વિનતિ સુણી, પ્રભુજી વગર ગરુડે જાય. શ્રીનાથ. ૫.
પુષ્ટિમાર્ગના પાય તરવો, ભક્ત્યેથી ગોલોક પમાય. શ્રીનાથ. ૬.
શ્રીપુરોત્તમની પ્રેમ ભક્તિ, શેષ મહેગ ગુણ ગાય. શ્રીનાથ. ૭.
મુરેશ, ગણેશને શારદ નાન્દ, અભાન્નિક ચિત્ત ચહાય. શ્રીનાથ. ૮.
વૈયં ધની ભક્તિ કર્યાથી, ચોરાશી મટી જાય. શ્રીનાથ. ૯.

વૈયંચંદ્ર રણછોડદાસ છુદ્ધ.

શ્રીગોકુલનાથજી.

(વ્યાખ્યાના—રા. રા. છોટલાલ લાલભાઈ અગીરદાર.)

પુષ્ટિમાર્ગ એટલે આનંદનો ઉદય એ વાત વેપ્પુનેતર જનથી કદાચ ન સમજાય, અસંય-
મીધીય ન સમજાય. એ તો એમજ કહેશે કે ‘પુષ્ટિમાર્ગ’ એટલે ઠોર અને રખડી; પણ એ ઠોર
અને રખડી બનાવવામાં અને તેના ઉપભોગ કરવામાં કેટલો સંયમ ખર્ચાય છે તેનો જાણો
ખ્યાલ પણ હોટેલો અને રેસ્ટોરાં, વિશ્રાંતિગૃહો અને ઉપહારગૃહોના ‘આડધા’ ‘અમત’ ચા,
પાતળભાજને “દીકડી ચી ભાજ” ગલીચ અને એકા જુદા ‘જર્તન’ માં ખાધ પી ખેરસણા
કરનારને ભાગ્યેજ આવે. અને હવે તો કહેવાતા ઉચ વર્ણના હિંદુઓમાં ધુસેલી એ મલિનતા
અત્યંત ભાષ્યોને માથે શાદવાનો પણ પ્રયત્ન એમના ઉદારને નામે થઈ રહી છે. કાંઈ પણ
એક અન્ન આપે તો તે લેવાના ઇન્કાર કરવાનો અત્યંતને ઉપદેશ આપનારાઓ તેઓ માટે
વિશ્રાંતિગૃહો ખોલી આડકતરી રીતે એકવાડ ખાવા માટે અત્યંતને પ્રેરી રહ્યા છે. એવાઓને
તો પુષ્ટિમાર્ગના ઠોર અને રખડી તૈયાર કરવાની મહેનત, પરિવ્રતા, તેનો ઉપભોગ કરતા પહેલાં
તો પ્રભુને ધરાવવાનો સંયમ, અને એ પ્રભુની પ્રસાદી છે માટે તે ગમે તેમ વેચાય કે પગ તળે
અંધાય નહિ તે માટે પુષ્ટિમાર્ગ એક નાનામાં નાના બાલકથી માંડીને વૃદ્ધમાં વૃદ્ધ અશક્ત છતાં
ભગવદ્ભક્તની કાળજી એ સર્વનો ખ્યાલ શો રીતે આપી શકાય? ખાવું પીવું ને લહેર કરવી એ
સિવાય પુષ્ટિસંપ્રદાયમાં કશુંય નથી એમ માનનાર બહિર્મુખી મનુષ્યને કોણ સમજાવે કે ખાઈ
પીને લહેર કરવી તો સર્વ કાંઈને ગમે છે; અરે એનો પ્રાણી માત્રો જ નમસ્કિદ હક છે પણ
ખાઈ પીને લહેર કરવાનો સાત્ત્વિક આનંદ માણતા પહેલાં ભારેમાં ભારે તપશ્ચર્યા કરવી પડે છે
એ તો પુષ્ટિમાર્ગની રીતિ નીતિનું રસ્ય હૃદયે પ્રેરેલી સાત્ત્વિક દૃષ્ટિથી નિરીક્ષણ થાય ત્યારેજ
સમજાય. હમણાંજ છાપામાં વાંચવામાં આવ્યું હતું કે એક મંદિરમાં અન્નકૂટનો ભાત ઉકરડે
નાંખવામાં આવ્યો હતો, ત્યાં તે ટોશના ખાવામાં આવતાં ટોશ મરણીએલ માંદા પડ્યા; પુષ્ટિ
સંપ્રદાય પર કેટલાક ગૃહસ્થોની ‘ખાસ કૃપાદષ્ટિ’ હોવાથી તેમની ફેલાવેલી વાતમાંથી અમુક
ટકા બાદ કરતાંય થોડા ટકા પણ આ વાતમાં સ્વ્યાચ્છ હોય તો તે ખરેખર ભારે શોચનીય
કહેવાય, છતાં એવી અપવાદરૂપ વાતોને કાટલે સંપ્રદાયનું તોણ કરનારને ગળે સંપ્રદાયની
તપસ્યાની વાત કેમ કરી ઉતારી શકાય? આજનો વિષય એ નથી પણ આજના વિષય પર
આવતા પહેલાં આટલા ઉપોદ્યાતની જરૂર હોવાથી જરા વિષયાંતર કરવો પડ્યો. અસ્તુ

સંપ્રદાયને માથે આજના મહોત્સવના નાથક શ્રીગોકુલેશ ચરણ બીરાજતા હતા ત્યારે મોગજ
શહેરનાદ જતાંગીરની આજી વર્તતી હતી. કાંઈ ચિદ્રૂપ સ્વામીના ભમાખ્યાથી પાદશાહે વેપ્પુનેના
પ્રિય, તિલક કંઠી સામે એકાદ પુકારી ત્યારે તેનો સરજતાપર્વકે સામનો કરનાર શ્રીગોકુલેશ
પ્રભુનાં નામ અને કામથી કાંઈ દીનસાગી વેપ્પુવન્ અમણ હોય. વેપ્પુવપતના રાખણદાર એ
અંધારીએ શી-શી મુશાખતો વચ્ચેથી પોતાનો માર્ગ સરળ કીધો એ તો કલિદાસપ્રસિદ્ધ
વાત છે; કૌટુંબિક અને આર્થિક મુશ્કેલીનો નિવેડો એક ગુરુને જાણતાં તપથી શ્રીગોકુલેશ
પ્રભુએ આપ્યો હતો એમ એના ચરિત્રકાર પાસેથી આપણે સાંભળીએ છીએ ત્યારે આપણું
હૃદય આનંદાશ્રુથી પુલકિત થયા વિના રહેતું નથી; કાંઈનું પણ હીઝ દુખાવ્યા સિવાય અનશન
તપથી આર્થિક મુશ્કેલીનો આપણો લાવેલો અંત અહમ્મત અને સાત્ત્વિક વૃત્તિના પરિણામ રૂપ
કરી શકાય; અનેક મુશીબતો છતાં આપણીના મુખપરથી પુષ્ટિસંપ્રદાયના તપ અને સંયમનાં

જર્મન વિદ્વાનો શું કહે છે ?

શ્રીકૃષ્ણે પ્રકટ કરેલી આકર્ષણ વિદ્યા (સામન્સવિદ્યા) રસાનુભવ વિદ્યાનો અખૂટ ખજાનો શ્રીમદ્વલ્લભવેદાન્ત તત્ત્વજ્ઞાન અથવા શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યે જીવનચરિત્ર કૃષ્ણ.

અભિજ્ઞ વિશ્વભક્તિમાર્ગજ્ઞમાર્ગે વલ્લભાચાર્યે પ્રગટ કરેલું સર્વે વેદોનું અને સર્વશાસ્ત્રો પુરાણોનું સારરૂપતત્ત્વ કૃષ્ણ.

કૃષ્ણ યોગશાસ્ત્ર અન્ય સહારિકા રાસ પંચાખ્યાયીવલ્લભોપિકાસુત્રમત્તમરંગીતસુખોદિની એ છે. પૃથ્વીપર શ્રીમદ્ લાગવત પ્રગટ થયા પછી તે ઉપર શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યે શ્રીસુખોદિનીજી પ્રગટ કર્યા પછી તેમાંથી સારરૂપ તત્ત્વ સ્વતંત્રપણે શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યની પૃથ્વી કૃપાથી (પ્રેરણાથી) પૃથ્વી પરની તમામ વ્યક્તિઓના યથાધિકાર લાભાર્થે અરિદ્ધ કર્યું છે. તે અલૌકિક જવાહીર છે. અલૌકિક સામર્થ્યયુક્ત આકર્ષણ વિદ્યાને ભરપૂર ભંડાર છે. અલૌકિક નૃસિંહીકાને અલૌકિક કામશાસ્ત્રોક્ત ખજાનો છે અલૌકિક પ્રેમમાં મસ્ત બનેલાં, સ્નેહમાં રમી રહેલાં, પ્રેમ અને સ્નેહની પરકાશને ઓલખનારાં, અલૌકિક દીર્ઘ દષ્ટિવાળાં, તીવ્ર સુહૃદવાળાં શ્રીમદ્ગોપીબળના સયોગ વિપ્રયોગ વિલાસનો અદ્ભુત ભંડાર છે. શ્રીમદ્વલ્લભવેદાન્ત તત્ત્વજ્ઞાનનો અપૂર્વ ખજાનો છે. આ પૃથ્વીના કોઈપણ ખંડમાં અને તેના કોઈપણ દેશોમાં (કોઈપણ રાજ્યમાં) કોઈ પણ સ્થાને આવું તત્ત્વ નથી, આવો ગ્રન્થ નથી, એમાં છે એવી અલૌકિક વિદ્યા કે જે પૃથ્વી પર કોઈ સ્થાને નથી. એમાં જે અલૌકિક વિદ્યા છે તેવી આજ સુધી સાંભળવામાં વાંચવામાં કે જોવામાં આવી નથી, શ્રીકૃષ્ણચરિત્રે જેવી જેવી અલૌકિક સામર્થ્યયુક્ત શોધો કરી છે તેવી પૃથ્વી પર આજ સુધીમાં કોઈપણ વ્યક્તિએ કરી નથી તે નથીજ.

જર્મની, ડીડ ૧૨ નવેમ્બર ૧૯૩૧.

બ્હાલા સાહેબ ! લાવનગર શામળદાસ ટ્રાવેલના મારા બ્હાલાં વિદ્યાર્થી ડૉ. પી. એમ. મોદી મારફતે તમોએ મોકલાવેલી યોગશાસ્ત્ર અન્ય સહારિકા રાસપંચાખ્યાયીવલ્લભોપિકાસુત્રમત્તમરંગીતસુખોદિનીજીની એ પ્રતિ હું સાભાર સ્વીકાર છું. તમે બહાર પાડેલી આ સુંદર પ્રતથી હું ખૂબ જ ખુશી થયો છું અને મારા વિદ્યાર્થીઓના ઉપયોગ માટે આમાંની એક કોપી (નકલ) આ ધુનીવરસીદીના ઇન્ડોલ્ફરગેનીકલ સેગીનરની લાયબ્રેરીમાં મૂકીશ અને એક મારા અંગત ઉપયોગ માટે રાખીશ.

તમારો સાચો,

ડૉ. ડા. એફ. ઓ. આઈર.

બ્હાલા સાહેબ ! તા. ૩-૧-૩૨ નો વળેલો પત્ર અને યોગશાસ્ત્ર અન્યની બીજી પ્રત મને મળી છે. તે માટે આપનો ઉપકાર માનું છું.

આપના પ્રશ્નોના ઉત્તરમાં જણાવવાતું કે શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યના સિદ્ધાંતોની જર્મની, ફ્રાન્સ, ઇંગ્લેન્ડ અને અમેરિકામાં લગભગ અજાનતા છે. અદોલ્ફ હિટલરે વિદ્યાર્થીમાં સંસ્કૃતના અભ્યાસ માટે રચાન છે. પરંતુ તમારા વિચારો મુજબ ફક્ત શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીના સિદ્ધાંતો અગર તો તો હિટલર તત્ત્વજ્ઞાન શીખવવા માટે એલાયદી કોઈપણ સંસ્થા નથી. વળી મારા પ્રો. એચ. વોન આસેનથ (કોઈનીગ્સબર્ગ) સીવાય કોઈ પણ શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીના રસ લેનાર હોય એવી મને ખબર નથી પરંતુ તેઓથી તત્ત્વજ્ઞાનના સિદ્ધાંતોમાં રસ ઉત્પન્ન કરવામાં કોઈ મદદવાની મને આશા છે. તેથી યોગશાસ્ત્રની ચાર પ્રતો આપે મને મોકલી તે માટે આપનો આભારી છું આથી હું આ અમૂલ્ય પુસ્તક મારા વિદ્યાર્થીઓ સમક્ષ મૂકી રાકીશ. તમારો,

એફ. ઓ. આઈર.

અથાવલોકન.

શિક્ષાપત્રી—અર્થદીપિકા દીકા—શુભશીળી અનુવાદ સાથે મૂલ્ય ત્રણ રૂપીયા; અનુવાદક અને પ્રકાશક રા. રા. માધવલાલ દલસુખરામ કોઠારી, કે. રાયપુર વડની પોળ, અમદાવાદ. શીસ્વામિનારાયણ, સંપ્રદાય નામથી સુપ્રસિદ્ધ શ્રીમદ્બ્રહ્મવત્પ્રદાયનો આ મૂળાધારૂપ અને એ સંપ્રદાયમાં સર્વોપરિ ઉત્તમોત્તમ ગ્રંથ છે. શ્રીમદ્બ્રહ્મવત્પ્રદાયના મહાન સંસ્થાપક શ્રીસદ્ભનંદ સ્વામીજીએ ‘શિક્ષાપત્રી’ નામક એક ગ્રંથ પોતાના પરમ કૃપાશાળન વિદ્વાન ઉપાસક શ્રીસદાનંદદાસ પ્રગટ કરાવ્યો છે અને જનતમાના સિન્ન બિન્ન અધિકાર ધરાવનારા જીવો માટે પરમ શ્રેયસ્વી પ્રાપ્તિ કરાવનારા અનેક કિંચ સિદ્ધિતિહુ તેમાં નિરૂપણ કર્યું છે. મૂળ શિક્ષાપત્રી ગ્રંથ રૂપ રચોદાનો છે, પણ તે ગ્રંથ વેદ, ગીતા શ્લોકસૂત્ર અને શ્રી ભાગવતમાં સમસ્ત પુરાણોનો સમન્વય કરીને, પોતાનાથી પહેલાં પ્રગટ થયેલા ભક્તિમાર્ગવિદ્યાઓના સિદ્ધિતામર્ગથી વત્તનું દોહન કરીને રચવામાં આવેલો છે. રૂપ રચોદા તે માત્ર રચોદાન નથી, પણ ગંભીર અર્થથી ભરેલો સૂત્રો છે. આયસંસ્કૃતિના સર્વમાન્ય મહાનુ ગ્રંથોના નિષ્કર્ષથી ભરપૂર એ સૂત્રો શ્રીમદ્બ્રહ્મવત્પ્રદાયને અનુસરનારાઓનાં સર્વસ્ત્ર હોય, પણ ઉત્તર સંપ્રદાયિકોને પણ અતિમનનીય છે. ઇન્દ્રિયનિગ્રહદારી મહાનુ સંયમ કેવી રીતે સાધી શકાય અને સદાચારપૂર્વક, વર્ણાશ્રમ વ્યવસ્થાના રહસ્ય સાથે ભગવદ્ ભક્તિદારી પ્રણામિ કેવી રીતે થઈ શકે એનો મહાન આદર્શ ગ્રંથકારે સ્પષ્ટ કર્યો છે. એ ગ્રંથની દીકાએ પણ શ્રીસદાનંદ મુનિએ સંસ્કૃત ભાષામાં સચિતરતર લખી છે. એમણે રચેલી એ દીકાઓમાંની અર્થ દીપિકા દીકા આ ગ્રંથમાં છે. દીકા વિદ્યતાપૂર્ણ છે અને દીકા પ્રણેતાનાં સર્વદેશીય પાંડિત્યના જ્ઞવંત દર્શાવરૂપ છે. આયસંસ્કૃતિના સૈંકયો ભવ્ય ધર્મિક ગ્રંથોના પુષ્કળ પ્રમાણોથી પરિપૂર્ણ આ દીકા અચિત્ત વિદ્વાનોનાં હૃદયને આકર્ષે છે. શ્રીમદ્ભુમજિરૂપ મહાપુરુષાર્તું આયસંસ્કૃતિમાં કેટલું ઉચ્ચ સ્થાન છે તેના નિષ્કર્ષ માટે આ દીકા પૂર્ણ સલાયક થઈ પડે તેમ છે. આ સંસ્કૃત દીકાનું સરલ શુભશીળી ભાષાંતર શ્રીમદ્બ્રહ્મવત્પ્રદાયના એક વિદ્વાન વેળા અને પત્ર સંપાદક રા. માધવલાલ કોઠારીએ કરેલું છે. વિદ્વાન પૂર્ણ દીકાનો અનુવાદ કરવો એ કઠિન કાર્ય છે. સંસ્કૃત ભાષામાંથી સંપૂર્ણ સ્વસ્થ શુભશીળીમાં ઉતારવું કહેવું નથી. છતાં રા. કોઠારીએ એ કાર્ય ધણીજ રહેતમદોષથી કરેલું છે. મૂળ તથા ગદ્યના સંપૂર્ણ આદાય શુભશીળીમાં ઉતારવા માટે તેમણે કરેલો અત્યાગ પ્રયાસ સફળ થયો છે. વળે અનુવાદકે એક યશસ્વિન્યાર્થથી ગ્રંથના ગૌરવમાં ધણીજ અભિજિદ્ધિ કરી છે, અને તે કાર્ય દીકામાંના પ્રમાણો કથા ગ્રંથમાં કયે સ્થલે છે તે સોધાને તેની અનુક્રમણિકા તૈયાર કરીને પ્રગટ કરાવતું છે આ અતિ પ્રયાસથીજ જની શકે છે. વળે ગ્રંથના છત્રસુ માટે સાશ્રી દુષ્કૃત્તરપદાસે એક પ્રસ્તાવના લખીને માર્ગ સરલ કરી આપ્યો છે. આદરો પાનાના આ મહાન ગ્રંથની કિંમત ત્રણ રૂપીયા વડન લખિત છે. શ્રીમદ્બ્રહ્મવત્પ્રદાય તથા બીજા પણ આવા સંપ્રદાયોમાં આ ગ્રંથ આદરપાત્ર જનવો જોઈએ. આવો મૂળ ગ્રંથનાં સંશોધન, અનુવાદ, સંપાદન વગેરે કાર્યમાં રસ લઈને અનુવાદકે શીસ્વામિનારાયણ સંપ્રદાય ઉપર અને ધાર્મિક સાહિત્યના અભ્યાસીઓ ઉપર ઉપકાર કર્યો છે. આ ગ્રંથનો પુસ્તકાલયો તથા ધર્મનિદાસુઓએ આદર કરવો જ જોઈએ એ કહેવાની સાચીજ નર હોય.

સાંપ્રદાયિક ગ્રંથો ક્યાંથી મેળવશો ?

શ્રીમદ્ભુભાષ્ય રસિમ અને શ્રી સુબોધિની (સંપૂર્ણ) મળશે

મુદ્રિત થયેલા તથા નહિ મળતા સંસ્કૃત, ગ્રંથ, હિન્દી, શુભશીળી અને અંગ્રેજી ભાષાના સાંપ્રદાયિક સર્વ ગ્રંથો નીચેને સ્થળે મળશે. યોગ્ય કમીશન પણ આપવામાં આવશે. બહારગામની માગણી પર પૂરતું ધ્યાન આપવામાં આવશે.

ભારત માર્તંડ પંડિતે શ્રીગદ્ગતાલાંબની સંસ્થા,

નં. ૫૨/૫૩ કેપ્સલ સ્ટ્રીટ, ભુલેશ્વર, મુંબાઈ નં. ૨.

આદર્શ વૈષ્ણવ યુવક.

(લેખક:—“ શ્રીકૃષ્ણચરણ ”)

આદર્શ વૈષ્ણવ યુવક વિષે હું કંઈ પણ આલેખું ત્યાર પહેલાં વૈષ્ણવ સમાજ અને તેના કહેવાતા યુવાનું સ્થાન દર્શાવું છે તે વિષે જરા અવગતિ કરીશ.

અત્યારે વૈષ્ણવ સમાજ અને સમપ્રદાય ઉપર આદર્શની વલવાર વરે છે. વૈષ્ણવ સમપ્રદાયમાં અત્યંત દ્રવ્ય છે છતાંયે રમનાત્મક કાર્યોના અભાવ છે. ઉપરાંત રૂઢિચુસ્ત અને પ્રાચીન પ્રણાલિમાનને વળગી રહે છે. વૈષ્ણવ સમાજ સમગ્ર દેશમાં વેદ પ્રત્યે ક્રોધ છે. વિદ્યાધીઓના પ્રગટ આકર્ષણોની પરમ્પરા વિકાસ રૂપે સંસ્કારથી સત્તમ થઈને સમસાન હતી છે, સામપ્રદાયિક અટલ સાદિસ પ્રસિદ્ધ કરવાના વાખાં છે તોયે અનેક પ્રત્યે. દલુ અજુકેલ પડ્યા છે. સમપ્રદાયના આચાર્યશ્રીઓ કુધારે દેવ છે પણ તેને અમલમાં મૂકવાની તરા કેમ બતાવતી નથી ? એ કંઈક ચિંતે જગતી પામેલા અને વિચારોની દલવામાં આવળ વધેલા અવસા ગાંઠવા યુવાનો છે તેઓ દ્રવ્ય સદાયતાને બતાવ આગળ આવી શકતા નથી. આ બધું ત્યારે જ થઈ શકે કે વૈષ્ણવ સમાજમાંથી આદર્શ યુવકો બહાર પડે.

આદર્શ યુવક કોને કહેવો ? આદર્શ વૈષ્ણવ યુવકનું માનસ પ્રમતિના દરેક પાત્ર પર આવળ વધવાને લેવાતું હોય, તેનામાં વિશ્વત્વ હોય, કોશલ્ય હોય, આદર્શનાં વાદ્ય સામે અનુભવાની અપાર શક્તિ તે પ્રસારતો હોય ત્યાગમૂર્તિ હોય, નિરંજન હોય, શ્રીવત્સાધીશના સિદ્ધાંતોમાં અત્યંત ચઢી પડેલા હોય, જગતના બંધનોથી તો તે નિર્લેપ જેવા હોય છતાંય જગતની વચ્ચે તે પૂમતાથી પાળી પાળી કરતો ન હોય.

વૈષ્ણવ સમાજમાં અને સમપ્રદાયમાં પ્રવર્તે રહેતા પાપપુન સામે બાષ બીડે-પોતાની બાષ અને સંપત્તિની આકૃષ્ટિ આપીને પણ એ પ્રવર્તે રહેતા અન્યાયોને ફનાવવા અને તેના બાદમાં-વૈષ્ણવ સમાજ અને સમપ્રદાયમાં પોતાના ફળત વિચારોથી રસ, કલા અને નેત્રવ્યના દુષ્ટાસ વહેવારને તેમ વૈષ્ણવ યુવક છે. તે પોતે જ સામપ્રદાયિક જાનથી રજાપડેલા હોય તેમાં સંતોષ ન માને, પોતાના મુદને ફેળવે, પાકોશીઓને ફેળવે, શુદ્ધ અનેકને ફેળવે, અને પોતાના દેશના મનુષ્યો કલા કલા જાનથી વચિત છે તે સમજવા પ્રયત્ન કરે, તેઓને કુધારે, આદર્શ વૈષ્ણવ યુવક ચારીરે સજાત હોય, તેટલામાં સંતોષ ન માને પણ પોતાના બાંધવજોને પણ તેવા બતાવે. સાધનસંપન્ન હોય તો વ્યાપકસાક્ષી રથે, નહિ તો બીજા પાસે યોદ્ધાવે. તેમાંથી અભિવ્યક્ત વૈષ્ણવ બીરોનું વીરત્વ બીજાને. મૂળજાત વૈષ્ણવ બીરોને બતાવે એનું રીત્યું બીજાને. આદર્શ ગોસ્વામીશ્રીના ગૌરવધર્મ બતાવે.

જેનું બોધ નેહું વિચાર હૃદય હોય, વિષાદવાળુ ચાટડાં નેરો હોય, પોતાના કલ્પ અને ત્યાગના પ્રસારથી અન્યને આજવાની નેતામાં શક્તિ હોય, દેવતાં અણુએ અણુમાં, રામીસમમાં અનન્ય ભવનદ્વ-અક્તિમાવનું રક્ત વહી રહ્યું હોય, અન્યાયોનો અન્યાય સામે અનુભવાની અને ન્યાય પ્રવર્તાવવાની અનન્ય ઉંઝાશક્તિ હોય તે જ આદર્શ વૈષ્ણવ યુવક.

તે કાપા ન હોય, બીજ ન હોય, પ્રસાદનો તેને લલચાવી ન શકે. સત્તાનો-મનનો-હાથનો તેને મોઢ ન હોય, જગતની કાંઈપણ શક્તિ તેને તેના નિમિષમાંથી કાઢી ન શકે; જેને એ અજેય અને અકબ-કલ્પ-કલિના યુગ રૂપ આદર્શના સિખર પર તટસ્થપણે વસે રહે તે જ આદર્શ વૈષ્ણવ યુવક.

આદર્શની સિદ્ધિ માટે કલા વધા તરફ મરે, સાંચ પર આદર્શ વર્તા આવી પછી પારા કરેના ન હોય, વૈષ્ણવ સમાજમાં પ્રચલિત એક કુલિયાને પોતાના વ્યક્તિત્વના કોળાથી ફેર કરવા મથતો, વિદ્યાસ પંથે વહી જતા વૈષ્ણવ સમાજ અને સમપ્રદાયનો વિકાસ સાધવા સદા પ્રવાસી આદર્શો, આવી કલ્પ આવામાં વિદરતો યુવક તે જ આદર્શ વૈષ્ણવ યુવક.

વૈષ્ણવ સમાજ દુર્ભોગી ગર્તામાં સબરતો હોય, સમપ્રદાયના ઉદ્ધારથી રહુદાક વાગતી હોય, દેશમાં
 ત્રાસ અને ભુદ્ભોગી અડતોઓ પ્રવર્તી રહેતી હોય, અને સારંગે વિશ્વ કાન્તિના લોપસ કાળમાંથી પસાર
 થઈ હોય એવે પ્રસંગે ભનું યુવાન ખમીર. હૃદયના આરે છે-આમલોગની ભૂવન-પ્રકટે, મારીને નદિ
 પણ મરીને દેશને અને વૈષ્ણવ સમાજને આફતોના આસમાંથી દોડાવીને રવચીને આરે કહારે એમ આશં
 વૈષ્ણવ યુવક. સમપ્રદાયવત્તા રહુદાક સાંભળી એને શણગું ન મૂલે, રંગરાગ ન મૂલે, માની લીધેલી એ
 દુન્યવી ફરતો ધણીસરને માટે ભૂલી નય તેમ આદર્શ વૈષ્ણવ યુવક. નવયુગ ધડવાની મહાત્માકાક્ષા સેવતો
 હોય, પોતાના જીવન સંસારમાં ધીવરિયાધીસર પ્રતિષ્ઠાદિત વૈષ્ણવત્વને મોખરે રચાવી, દેહ અને
 આત્માને દમી, મનને શુદ્ધ, દૃઢ અને પવિત્ર બનાવી વૈષ્ણવસમાજ અને સમપ્રદાયને ધરણે પોતાનું જીવન
 ધરે અને પોતાની જીવનનૌકાને-તોફાની સંસાર મહાસાગરથી નિર્ભયપણે હંધારી નય. અને આખરે
 આખરે સત્ય, નીતિ અને ન્યાય સાથે સમાનતાનાના ધોરણમાં સમપ્રદાય જીવન રક્ષવિધને, એ માર્ગે જીવન
 ધડવા પ્રેરે એનું જ નામ આદર્શ વૈષ્ણવ યુવક. વૈષ્ણવ સમાજ અને સમપ્રદાયનો ખરો ઉત્તમ ત્યારે જ થશે
 કે જ્યારે ધરેધરમાં આવા હૃદય આદર્શનીય વૈષ્ણવ યુવકો બહાર પડશે.



નામજ નંદિ અને ચેમાંથી લીધે તેનું નીચાન પશુ નદિ. ત્યારે મને યાંકા ગઈ કે હજી લેખના લેખક કોણ ? આજી શ્રીમનલાલ કે શાસ્ત્રી વસંતરામ । દમણ એક શ્રીરંગો બનેલ છે કે મી. મેત્રીએ બંધાવે પુસ્તકનો અનુવાદ પોતાના નામથી વળી મૌલિક હૃદિ જણાવી પ્રકટ કરી પાછળથી પોલ પકડાઈ ત્યારે મી. મેત્રી દીલા પોયા થયા. માટે આ લેખ કેની કાન છે તેનો જવાબ શાસ્ત્રી શ્રીમનલાલ આપશે ।

સંપ્રદાયમાં વધોત્ક વિદ્વાન બે છે. એક તો ક્ષયુત પ્રો. રતનલાલજી શાસ્ત્રી, બીજા ક્ષયુત પરવારીજી સાહેબ છે. દમણાં પ્રોફેસર સાહેબ નિરુત્તિમય જીવન વાળો, યુગ્મત સ્વરૂપનું રમણજી કરી, શ્રીમુખાધિ- નીજના વાચનમાં તથા સંપ્રદાયિક સાદિલ્યના પ્રકાશનમાં બાજી રહેલો કાજ નિર્ભરમન કરે છે. ત્યારે શ્રીપરવારીજી એક મદાદપાધિમાં આવી પડયા હાથે છે. શ્રીનાથજીની વર્તમાન પરિસ્થિતિને અંગે દુષ્કરિયત થયેલી ચર્ચામાં પરવારી સાહેબે મુંબઈની સમાજા પ્રમુખ તરીકે કાવો પ્રસિદ્ધ કર્યા. પરંતુ તે હામલા પહેલા મુરબી, વરીલ, પૂત્ય પરવારીજીને એક વિનંતિ કરી ચાકું કે આપ શુદ્ધ થયા હો, માટે આત્મકલ્યાણાર્થે યુગ્મ સ્વરૂપનું જ્ઞાન રમણજી કરી, (જ્યાંનું જે થયું દરો તે થયે । શ્રીગોવર્ધનધરજીની ઇચ્છા હો એ રસરસિદ્ધ પ્રમુ તો એમની ઇચ્છામાં આવે તેમ કરવા દરો. તેમાં, તમે, કે સંપ્રદાયના મોટા લોકો, કે આચાર્યો, વૈષ્ણવો, સુમારકો શું કરવાના દલા । માટે પ્રમુ રમણજી કરીને) એક ઉત્તમોત્તમ પુસ્તક વૈષ્ણવ પ્રબલે વારસામાં ગર્વણ કરે તો કેતું ? આપ પરમ બલવદીવ હો માટે પ્રમુ ફજ્જા થલીયસી માની ઇશ્વર રમણજી કરો.

“ જુલતાવી ” કે સંપટેઅર અને ૧૯૩૩ ના પત્રમાં મદાદપાધિના સાક્ષરરત્ન દુર્ગાશંકર કેવરામ શાસ્ત્રી શું કરે છે ? “ શ્રીવૃદ્ધવાચાર્વના કનઝાભિષેકની ઐતિહાસિકતા વિષે પ્રચલિત મતની અવગણના કરીને ચર્ચા કરનાર એલ. રંમીલાસ તથા ડા. રૂડ-ટ-ડડના “ જુલતાવી ” માં (પૃ. ૧૦૧૭ મા) તે ઇવરની નોંધમાં “ કનઝાભિષેકની ગૌતમદાસિક સત્તાવા પુસ્તકર કરવા માટે સ્વર્ગન સાચા નિમિત્ત પુરાવાઓ ” માટે માગવી કરનાર “ જુલતાવી ” ના સંપાદક પશુ “ અગ્રદાણુ ન તણાય ? અમૃતલાલ ડ. ખાદેખ.

પર ધ્યાન ન આપી લેખાણુ પણ ન હોય તેથી શંકા શું છે? અને કહાય નિર્ણય કરવા પ્રેરણા તે વેંચવા પ્રેરણા, તે પોતે તેમ કરી શકે તેમાં લેખકને શું? શા માટે તે શ્રીશંકરાચાર્યના અનુયાયી પોતાના જ આચાર્યના જગ્યા માટે ૮૦૦ થી ૧૦૦૦ વર્ષના ફરક જુદાં જુદાં પુસ્તકોમાં દર્શાવે છે તેનો નિર્ણય કરવા મહેનત કરતા નથી?

શંકા નં. ૨ શ્રીવલ્લભાચાર્યજીએ પોતાના અધ્યામાં પોતાના માટે અભિરૂપરૂપ વાંધું તે ઉપર કે ક્રમ?

કાંઈ પણ વ્યક્તિને પોતાનો નામ અને વસિા રેખતા જ નથી. તેમાં પણ એને ઇર્ષ્યા અને દેવ રૂપી કમળાએ ઘેરાયે હોય તે તો ક્યાંથી જ દેખી શકે, તેમ લેખકને પણ દોષ જ લાગે છે. શ્રીશંકરાચાર્યજી કહે છે ને પરમજ્ઞા નિર્ણય તદેવાદ્યમસિંચ પરજ્ઞા નિર્ણય છે, તેજ હું છું અને જાદ્યદ્યારિન્ન-હું બ્રહ્મ છું” એવા જ્ઞાનોપદેશ તેમના અનુયાયીઓમાં મુખ્ય છે. શું લેખક પણ રવ સિદ્ધાન્તથી અજાત છે, કે નવજુવા છતાં રવમુખથી પોતાના શુભ માટે ન યોજાય તેથી વેંચવાને નિમિત્ત આપી જોડાવા હવે છે, ધન્ય છે તેમની બુદ્ધિને, જ્યારે શ્રી શંકરાચાર્યજી જેવા બ્રહ્મને તો ફક્ત નિર્ણય નિર્ણય માનનાર પોતાને હું બ્રહ્મ છું એમ નદે તે હજી અને શ્રીવલ્લભાચાર્યજી તો અભિરૂપરૂપે તમે તે માટે શંકા અને ન્યાય કરવા?

શ્રીવલ્લભાચાર્યજી તો એક જ પરબ્રહ્મને સર્વભવનસમર્થ, નિર્ણય અને સમજી, ક્રિયાવાન અને નિર્લેપ પણ એવું સર્વવિરુદ્ધમાર્ગ્ય છે એમ ક્રીષ્ણોસોફી પ્રકટ કરનાર પોતાના સિદ્ધાન્ત પ્રતિષ્ઠાન કરતા અંધમાં કે જેના કોઈક શ્લોકમાં આચાર્યજી વરેલું છે અને અવિદ્યા રૂપી રત્નો નારા કરતા એવી ક્રીષ્ણોસોફી તત્ત્વજ્ઞાનને પ્રકટ કરતા પોતાને (લૅલિક અગિ કે જેનો રપરાં થતા જ સર્વ ભરમામ્મત યાવ તેવા નહિ પણ) અલોકિક, આધિદેવિક અભિરૂપરૂપે પોતાને વાણીદેવતાના પતિરૂપે દર્શાવે તેમાં શું શંકા? વેદમાં પણ “શ્રાદ્ધોત્સવ મુલભાસીત-અગ્નિર્મયી” ભગવાનનું મુખ બ્રાહ્મણ છે, અગ્નિ ભગવાનનું મરતક છે ઉત્પાદિ વાક્યા રપટ છે, તે લેખક શું નથી જાણતા? અને તે પ્રમાણુ બધને તો હમણે જાણ્યો: કહે પછી જાણ તેજવાલા હોયા ન હોય પણ વાવિક પાસેથી જાણણુ ભગવાનનું મુખ છે, અભિરૂપ છે ને તેમાં હોયેલું એટલે બ્રહ્મભોજન કરાવેલું તે ભગવાનને પહેાંચે છે એમ મનાવી પૂલ ચઢવું કરે છે. શું લેખક જાણ્યો મુખઅભિરૂપ નથી એવું દર્શાવી આ પ્રથા બંધ કરાવવા હવે છે? ને તેમ ન હવેલો હોય તો પછી શુદ્ધ બ્રાહ્મણ ક્રમમાં, સંપૂર્ણ રીતે બ્રાહ્મણત્વ ધરાવનાર, શુદ્ધ સનાતન પેઢિક ધર્મની ધર્મપતાકા ફરકાવતા આચાર્યજીને ઉપદેશ આપી નિર્ણય અંધમાં અવિદ્યારૂપી રત્નો નારા કરવા પોતે પોતાને અભિરૂપરૂપ એવા દર્શાવી ધર્મનો નાજુક કરે અને નિર્ણય અભિરૂપરૂપ કહે તેમાં શું હોય? વાચકે ચાહ રાખેલું ને શ્રીવલ્લભાચાર્યજી પોતાના શુદ્ધ આત્મરૂપરૂપની વિરૂપ્તિવાળા ન હતા પણ આત્મસાદ્ગત્તાર એટલે આત્મરૂપરૂપનો અનુભવ કરનાર હતા તેથી તેઓથી, જેમ મંત્રદશા જપિયો અનુભવ કરી લખી ગયા તે સત્ય છે તેમજ, ને જાણે તે સત્ય જ છે અને તેમાં આત્મશક્તિ જેવું કાંઈ પણ નથી.

શંકા નં. ૩ વાણીનો સંયમ કોણે જોયો ને મૂર્ખ કોણ?

પૂર્વ આચાર્યોમાં જેમની ક્રીષ્ણોસોફી અને પ્રમાણુ ધર્મવિરુદ્ધ જણાય તેવાઓને નામ નિર્દેશ આપ્યા સિવાય પ્રચ્છતબીજી, અસુર, પાખંડી કે લખાણુ મૂર્ખતાવાળું છે એવું જાણે તેમાં શું થઈ ગયું? સાક્ષી ભણનારા સાક્ષીઓ પણ તેમજ રાજા નથી ને કાંઈ પણ નવીન વજાવ્ય સિદ્ધાન્ત સમજવવા માટે જન સમૂહ સમજ કયવું હોય ત્યારે પ્રથમ લલ્લદા દર્શાવતા સિદ્ધાન્ત માટે તેવા રાખેલો વાપરવા જ પડે છે અને તેમ કરવામાં લેખકના આચાર્ય પણ જાણી શક્યા તો નથી જ અને શ્રીશંકરાચાર્યજીએ પણ બ્રાહ્મમતાનુયાયી આગે અન્યે રચતાં પોતાના જ અંધમાં “ભગ્યે પાવંદિનઃ શર્વે જ્ઞાનજાતાંયુ દુર્વલાઃ બ્રીહ બધા પાખંડીઓ છે, અને જ્ઞાનની વાતોમાં દુર્ગંધ છે એમ રપરૂપ કહે છે તો શું ઉપરનો ઉલ્લાખ સાચે સાચે તેમને પણ લાગુ નહિ પડે? વિરોધ તો લેખક પોતે જ જ્યાં નામ નિર્દેશ સિવાય શ્રીવલ્લભાચાર્યજી અસુર પાખંડિ, વિ. રાખેલો વાપરેલા છે અને તેવું શ્રીગોતાલમાં પણ દર્શાવેલું જ છે, ત્યાં (કૌંસ કરી) વચમાં શ્રીશંકરાચાર્યજીનું નામ મુકીને તે જાણી રાખેલો ફક્ત શ્રીશંકરાચાર્યજીને જ કરતા ન હોય તેમ

એવા પ્રબંધ થવો જોઈએ, જે સેવામાંથી અધિક સેવકોના દિસાબથી તેઓને અલગ આપે. અથવા સેવા દેવાની વાત મંદિરથી અન્યત્ર કરે. આમ કાયદો કરવાથી બધી વાત સુચવવા તેમ છે.

એક બીજો અન્યાય—શ્રીનાથજીના ક્ષેત્રની જેમરેખ માટે નીચેની કમીટીમાં કોઈપણ અન્ય (શ્રીનાથજીને સંબંધ ધરાવતા) રાજ્યોને નિમંત્રણ નહીં તેનું કારણ શું? સંમિલનના પ્રમાણે જ્યારે હૃદયુર નરેશ તરફથી શ્રીજીને ભેટ થયેલી ભગીરની ઉપજ વાર્ષિક રૂ. ૬૦ થી ૭૦ હજાર રૂપિયાની છે, ત્યારે કોટાનરેશ તરફથી શ્રીજીને ભેટ થયેલી ભગીરની ઉપજ વાર્ષિક રૂ. ૧ થી ૩૩ લાખની છે. એવીજ રીતે ઇતર વેષ્ટુવ અને ધર્મચુરત રાજ્યોના રાજ્યમાંથી થતી મોટા પ્રમાણમાં શ્રીજીને ભેટ થયેલી ભગીરની ઉપજ છે. કોઈપણ રાજ્યોના તેમજ તેઓના પ્રતિનિધિઓને કમીટીમાં સામેલ નહીં કરતાં ફક્ત પોતાનાજ હાથ નીચે સત્તા રાખવા માટે કમીટીના સદ્યદરેશોને કાળના પુતળાની આંકે આગમ ધરીને હૃદયુર રાજ્ય પોતાનો કબજો જમાવવા માટે છે એવું સ્પષ્ટ તરી આવે છે. આ સતરંજવાસ કમીટીના સદ્યદરેશો જાણે છે કે નહિ તે પ્રશ્ન જાણે.

તા. મદારાણને જોઈએ હતું અને વેલે કર્યું. શ્રીનાથજીની સત્તા ઉપર પોતાનો કાબુ જમાવવા માટે તા. મદારાણનો પહેલેથી ઈરાદો હતો કે શું તે કોઈ ચમત્કંઠ નથી. તેમાં વળી કમીટીના સદ્યદરેશોએ મદદ કરી. પણ વેષ્ટુવો કમીટીને પૂછી શકે કે તમને શ્રીજીની વ્યવસ્થા કરવા કોના તરફથી શોભણમાં આવ્યા છે? તમે ક્યા સંસ્થાના નેતા છો?

વિશેષમાં તો, કમીટી ઉપર પંજુ હૃદયુર તરફથી એ ચુદરેશો નિમાયા છે, બતાવે, એ કમીટી કી ચાલની છે શું? હા માં હા મેળવી શ્રીજીની સત્તાને અને શ્રીપ્રજ્ઞચરણની રાજ્યસત્તાને હૃદયુર હરજારના હાથમાં આપવી એ સિવાય બીજું કંઈ થવાનું નથી. સમસ્ત વેષ્ટુવોનો પોષાર એ છે ને ને કમીટી નીમે તો સાતધરના શ્રી ગો. બાળોજી નીમી શકે. આનાથજીના સંપૂર્ણ હક્કાર શ્રી ગો. બાળોજી છે, અને જો તેમ ન થાય તોજ પહેલાની કમીટી, જે શ્રોતિવકાચિતશ્રીએ સ્થાપેલી તે હમિય છે. જેમાં ચાર શ્રીગો. બાળોજી ચાર રાજ તથા આઠ વેષ્ટુવો તરફથી સાત્રક મજાવાળા સદ્યદરેશો હતા. આઠ કમીટીમાંના કેટલાક આંતર સુધારકપક્ષી અને કેવલ નારિતકો (જેઓ પ્રજિમાનને જાણતા નથી) એવાઓને સ્થાન શ્રોતિવકાચિતશ્રી ન ન આપત. શ્રીગો. બા. ચિતા શ્રીજીને ત્યાંની સેવા રીત જાણ જાણે છે? શ્રીનાથજી એટલે બીજા કેવરેશનો જેવું એક પૂજ્યસ્થાન મ્યત્ત નથી. શ્રીગો. બા. ની કમીટીની અવસ્થા જરૂર છે, તેમજોજ હક ઊભા. કમીટીના પચસાં શ્રીજીદારમાં થતાંની સાથેજ શ્રીજીદારમાંથી અને શ્રીજીને અન્નદૂતો વિરુદ્ધ પ્રસંગ બન્યા ન જાણે આગળ શું થશે? સંમિલન છે કે, શ્રીજીની પુક મિત્રાતમી જાણની આવવી સાહે કરી જદાર નહેરમાં લાવવી છે. જે તેમ થશે તો આખી દુનિયાની તબરે શ્રીજીની હોલત ખુશી. અને એનું પરિણામ મંદાન બચાંકર આવશે. માટે સાત્રક અને શ્રીમી વેષ્ટુવો તરફથી એક કમીટી હાય. અને ત્યાં શ્રીગો. બા. ની કમીટીને મેળવી, એક પ્રખર આંતરેન કરવાની જરૂર છે. હુકમાં હૃદયુર હરજારે જેવી રીતે જોતિઓના સ્થાન શ્રીજીસરીવાળને સ્વતંત્ર કરી લીધું તેમજ અહીં પણ થાય તે પહેલાંજ વેષ્ટુવો એતે તો સાં. પણ હૃદયુર હરજારને એમનાજ પોતાના અને પોતાનાજ રાજ્યના જવાને માટે અમેા સર્વે પ્રાર્થવિ જીએ કે આપનાં આવજના રાજ્યોના વચને જાણે શું થવી આપું છે? શ્રીમદરાજાધિરાજ મદારાણાશ્રી બીમસિંહજી હુકમ કરે છે કે:—“તારા સેવકો શ્રીજીને નીચે વર્ણવેલાં માંગે અને ચહેરો ભેટ આપવામાં આવે છે વસુલાત, દસિલ, વસાહ, લગાવ (લામ્હા મેલમદ) અદરેશો પ્રિદા અને સીમા એ જાણુ શ્રીજીના તાગમાં છે. જો મારા બીજાને હોય તો હોઈએ આ ખામત વાંધે ઉઠાવવો નહીં.

શ્રીમદારાણા બીમસિંહજી ફરમાવે છે કે:—શ્રીજીનાં માંગે અથવા શ્રીગુસાંઈજી મદારાણાની ખામતો જામીને કોઈપણ અદરેશ કરવી નહીં તેમજા ઉપર કોઈ હુકમ અથવા ફરમાવ મા નાખવો નહીં. નાપદારમાં ઉઠી થતી ફરીયતો હાવા અથવા જે જે ખામતોમાં આવતી જરૂર પડે તે ત્યાંતે ત્યાંજ આપવામાં આવશે. તેમાં કોઈ વચ્ચે પડશે નહીં. શ્રીગુસાંઈજી જે ચુકાદો આપશે તે મારે કબુલ મંજુર છે. તે શહેર અને વેપારી માલતી જકાત (શ્રીનાથ

દ્વારા અને તેના પેટા ગામોની) અન્નભાવણી (પંખાઈ) થી જે ખેડેર ખાતરમાંથી લેવાતી હતી. તે કીમતી માત્રુપર કર ચારે દરવાને લેવાતી તમામ દલાલી અને લવાજમ. ગમે તે ભવતા કર એ બધું શ્રીછને બક્ષીશ આપીએ છીએ.

પરદેશી વખત વાટચોકી જે વેપારી આવાત કરવા હતા તે વસ્તુઓ દેશી અગર પરદેશી દોષ અને નાશદારમાં વાપરવા માટે દોષ તેા તેના પર કર લેવામાં આવતો નહીં. તે સંદેશના અને તેના સુધના ગામોમાં શ્રીછના પવિત્ર દરને ટેકો આપવામાં આવતો. જે ત્રણ લોકોનો હો અને માસ નોકરો હો તેા આ દુકાનના સહામલ અને નિર્ણયને માટે ગમે ચલાવતો જે જે આ ભેટ ખાતી હોતી તે આઠ લગત વચસ સુધી નરકમાં કોટેા ચળીને રહેતો. મ.વ. રૂ. ૧ સં. ૧૮૬૫. મહારાષ્ટ્રા ઉદ્દેશ્યું ઉપરના મોટા અક્ષરો ઉપર અને ધ્યાન ખેંચીએ છીએ. દીવાની ખેંચી લીધી તેમજ નક્કત પત્રુ અલમ નાખી, અને શ્રીગુણકાંતને પરત્ર ખનાવવા ઉક્તું લખાણ સંકરતા સમયમાં શ્રીતિલકપવિત પાસે દલાણી લખાવાણું તે શું ન્યાય છે ? કારણકોના શ્રીગોસ્વામીશ્રીને તેમજ કમીટીને તથા લાવવવાના લાગુક શ્રીછના દુષાપાત્રોને વિનંતિ છે કે આ શું થઈ રહ્યું છે ? ઉમરમાં બધુ સાકે દેખાય છે પણ આખરે કાંઈ નહીં થતે તેા વિચર્ય પરિણામ આવશે એ ચાકસ છે. રાજસૂત્રા કાંઈ વિચિત્ર પદાર્થો છે તે પહેલાં કાંઈક થવું જોઈએ. તેને માટે અમારા સર્વે વેપારીનાં દન મન અને ધન તૈયાર છે. જ્યાં સુધી વજારી સુધિ છે ત્યાં સુધી શ્રીછને ચરિકાવિત્ર પત્રુ પરિગ્રમ નથી. પહેલાના લાગુક રાજસૂત્રા અપેક્ષા કરેલી સત્તા અર્ધશુદ્ધ બતાવી દીધી છે. શ્રીછ અર્ધશુદ્ધનો અંગીકાર કરવા નથી.

શ્રીનાથદ્વારાના વજવાસીયોને પ્રાર્થના—વજવાસીયો, શ્રીછને માટે તમેા પહેલાથીજ પ્રયત્ન આપતા આવ્યા છો; માટેજ શ્રીછ તરફથી તમારે પાલન સારી રીતે થઈ રહ્યું છે. જે શ્રીમ. બાલકનો દર આ લોકોએ કમીટી કરી દલાલી લીધી તેા તમાને નમ્રથી જે પાલન કરવામાં આવે છે તે તમારું ખર્ચ સંમત દાલમાં તેા નહીં પણ આગળ ઉપર બંધ કરતાં અચકાશે નહીં:—શ્રીછની શ્રીભક્ત કેટલી છે ? તેની અણત્રી કરવા ન દેવા તેમજ કમીટીના દાલમાં મહેનાપર ન રોપવા. નહીં તેા તમને પણ ધોષા છે.

દરનું પણ પળી ખાતની ચાલબાલ ચાલે છે, એ મેવાલી ચાલબાલ શું નહીં કરે ? તે ખજાર પડતી નથી. માટે વેપારી તરફથી બધે આજ કમીટીમાં ચાર રાજસૂત્રા અને ચાર મહાનુભાવ શ્રીગોસ્વામી સંમતિલ દોષ અને સેવા પ્રકાર માટે ગો. બા. સાત ઘરનામાંથી મોકલે પણ પરિચારક ત્રણથી નીમે. સમિતિવા પ્રમણે જેવી રીતે મેટાની આવક મેટા નરેરો રોપી છે. તેથીજ રીતે શ્રીછની સમજત આખરની જે જે અખતારમાં દરો તે રોકશે, તે ધ્યાન રાખજો, પરિણામમાં આ લોક અને પરલોકમાં અપયસ મેને છે ? શ્રીનાથલ શ્રીગોસ્વામી બાલકોના કોરલ ન છે, ઉદ્દેશ્ય નરેશના નથી. જે જે નરેરો શ્રીછ ઉપર હાથ કરી છે તેનું ફલ તેઓને ફેવું મળ્યું છે તે ઉત્તિદાસ બતાવી આપે છે. માટે આખરે અમારી એજ પ્રાર્થના છે, જે શ્રીનાથલ પ્રયુ ઉદ્દેશ્ય દરખાસ્તે સુલકિ આપે. શ્રીગોસ્વામી બાલકોના દરને જીનતોને આજ સુધી ફેવું સુખી થયું નથી તેમ થશે પણ નહીં એ નિઃસંદેહ છે. જ્યાં શ્રીગોસ્વામી બાલક નથી ત્યાં શ્રીછ પણ નથી. શ્રીછનો આત્મા શ્રીવદ્મમુદત છે એ શ્રીપ્રદાશજીની અદ્વા છે.

લી. શ્રીનાથદ્વારાનો યાત્રાલુ વેપાર.

સાંપ્રદાયિક પ્રવૃત્તિ.

સ્થામદાકમાં સતચર્યામનોવચ—શ્રીગાયત્રી શ્રીભક્ત સ્વરૂપના પ્રથમ મુખ્ય સ્વરૂપ શ્રીમયુદેયલ નિરાને છે. તે મંદિરના શ્રીતિલકપવ ગોસ્વામી શ્રી ૧૦૮ શ્રીનિરિવાલ (તે શ્રી મુળમાં શ્રીગાયત્રી દલાલીના માટીકે ગોસ્વામી કોદારદેયલકાલ) મહારાજ શ્રીમયુદ નગરી વરને જીપુસમાં શ્રીનિરિ-રાજલુદ પવિત્ર રમણીય સ્વલ છે, ત્યાં શ્રીમયુદેયલનું મંદિર આવેલું છે, ત્યાં નિરાને છે, અને તે મંદિરમાં તેઓશ્રીના શ્રીગાયત્રીના મંદિરના શ્રીબાલમુણ્ડલનું સ્વરૂપ પણ નિરાને છે, અને શ્રીતિલકપવ શ્રીનિરિ-વાલ મહારાજશ્રી અને પધારી શ્રીબાલમુણ્ડલની સેવામાં પદ્મજ પરિગ્રમ લઈ દરને વેપારોને અંગીકાર દર્શાવેલા લાલ અપાવે છે. કોટથી કેટલાંકે વસ્તો ઉપર સત્વરપત્રના એક સ્વરૂપ શ્રીમયુદેયલ શ્રીવજ બુધિમાં પંખામાં દલા, તે વખતે શ્રીનિરિવાલમાં કેટલોક વખત જોરાળ્યા દલા. તે વખતે સ્થામદાક

ઉપર એક મનોરથ થયો હતો. તે ઉપરથી કેટલાએક વૈષ્ણવોએ વિનંતિ કરવાથી શીખાલકૃષ્ણજીને રથામદાક પધરાવી એક મનોરથ કરવો એવી ઇચ્છા ઇચ્છી એ વિનંતિથી અને વૈષ્ણવોનો આગ્રહ એક વિલક્ષ્યત શ્રીચિરિશરણ મહારાજશ્રીની ઇચ્છા થઈ. તે એક મનોરથ કરી વૈષ્ણવોને ભલ્લીકિંક ઇચ્છીને કસવા એ નકી થવાથી શ્રીમધુસૂત્ર ગોકુલ તથા જ્યોત્સુર તથા રથામદાકના આસપાસ આગેમાં ખબર પડવાથી મન વાસ્તીએ તથા વૈષ્ણવો તે આનંદનો પાર રહ્યો નહિ અને શ્રીચિરિશરણમાં શીખાલકૃષ્ણ પ્રાકટ્ય થઈ હતું અને હાલ શ્રીચિરિશરણ સાત કોસમાં બીસતો છે અને ચાત્રાણુઓ અને આવી સાત કોસની પરિક્રમા કરે છે અને ચતુર્થ માસમાં અને ૮૪ કોસની પરિક્રમા કરવા હમરે ચાત્રાણુઓ શ્રીગોસ્વામી મહારાજશ્રી સાથે કરે છે ત્યારે શ્રીચિરિશરણમાં આઠ દિવસ રેરા પડે છે, મોટી ભગ્ના લક્ષ્ય છે અને શ્રીચિરિશરણના મુખ્યારવિંદ ઉપર સંજુનાર થાય છે અને કુંડવારા તથા દાનના મનોરથ થાય છે. લીલાલી ઉપર અનકોટના ઇચ્છન થાય છે. ત્યારે લાખો ચાત્રાણુઓને અલોકિંક ઇચ્છીને લાલ મહે છે. આવા મનોરથો દર વર્ષે થાય છે, પણ રથામદાક ઉપર આજ નીસ વર્ષ અગાઉ શ્રીમધુસૂત્ર પધાર્યા હતા તે વખતે અલોકિંક મનોરથોના ઇચ્છનો લાખો ચાત્રાણુને લાલ મથ્યો હતો અને શ્રીજીવકૃષ્ણલાલ પધારવાના છે એ બોલે મનોરથ છે એવી રીતે અત્રેના વધેશ્વર મજવાસીઓનું કહેવું છે. રથામદાક જ્યોત્સુર ભાગથી ત્રણ માહવને છેડે આવેલું છે. તે રમણીય રથામદા શીખાલકૃષ્ણની લેક આવેલી છે. અને જોનાં થયેથી સુચોભિત રમણીય રથાન છે. એવા પવિત્ર રથમાં શ્રીકૃષ્ણ ગોપીજનો ગોવાળીઆઓ સાથે રમણ કરતા હતા. શીખાલકૃષ્ણની લેક પાસે રથામ તળાવ આવેલું છે. એક મીઠા પાણીનો કુવો તથા એક નાની ધર્મ-શાળા આવેલી છે. આવા રમણીય પવિત્ર રથમાં કલ્પ હૃદયનો દરો તેનું મન પીગળ્યા વગર રહેશે નહીં. રથામદાક ઉપર એ દિવસ પહેલાં ગોવલ્લુ કરવામાં આવી હતી અને રથામ તળાવના કાંઠે ઉપર એક કંઠમનું વૃક્ષ આવેલું છે તેના ઉપર વસ રાજામાં આભ્યાં હતાં. અને એ માટે સરખો કરી સાન સજામાં આવ્યો હતો. એવી રીતે બંદોલત થયો હતો. આ મતયર્થી (ચોરદરજી) લીલાનો મનોરથથી વેચારી કઈ રહેવાથી કાંઈક વડ સાતમને શુક્રવારની મંત્રલિંક સવારના રાજભોજના ઇચ્છન થયા પછી નવ વાગે શીખાલકૃષ્ણજીને રથામદા પધારાવ્યા હતા અને ખામેખામથી મજવાસીઓ તથા વૈષ્ણવો તથા સત્તારીઓની મેટની ધણ હતી. સાડા નવ વાગે સ્વારી બંદુકો બદારથી અને ચાલ્યો તથા નમાશઓના સરોઈથી તથા મનપતાકા પોરેસ્વારો વગેરે અતિ ધામધુમથી શ્રીચિરિશરણની તળેડીમાં બીઈંદવડી ચિલાથી શ્રીચિરિશરણના મુખ્યારવિંદના સાંકળે હંડવડ કરી સ્વારી ચાલતે ચાલતે આમગ ચાલી અને ગુરુભિંડક થઈને રથામદાક પધારી શીખાલકૃષ્ણની લેક પાસે બોને પધારાવ્યા હતા. શ્રીને સામથી ભોગ ધરાવવામાં આવ્યો હતો. રથામદાકમાં હમરે વૈષ્ણવો તથા મજવાસી સન્નારીઓથી તથા ચાલ, નમાશના સરોઈથી તથા કીર્તનીઆ કીર્તન કરતા હતા અને વૈષ્ણવો લાંબન કરતા હતા અને મજવાસીની સન્નારીઓ રસીઆ આવાં હતા તેથી આ રમણીયરથાન આનંદ મંજલથી ખાલ રહ્યું હતું. ભોગ સરખા પછી શ્રીને રથામદા પધારાવ્યા અને સ્વારી ચાલતે ચાલતે રથામ તળાવના કાંઠે ઉપર ચાલી અને લી શ્રીને પધારાવવામાં આવ્યો. તે માટે મનપતાકાઓથી તથા કાંટના પત્રથીઆ પાસે તળાવમાં ગોપીજનોનાં રજપોને ગોઠવવામાં આવ્યાં હતાં. તથા ખાલ માતાજીએને સંજુનાર સજ એક બાજુ ઉભી રાજામાં આવી હતી. મજવાસીની કુમારિકાઓને ઉપર કલસ ધરી ઉભી રાજામાં આવી હતી. અનાદિકામાં શ્રીકૃષ્ણ તથા ગોપીજનોએ ચોરપાટ ઉપર ચોરદરજી લીલા કરી હતી જેવા ભાગ વૈષ્ણવોને થયો હતો. સંભળા પૂર્વે વાગે ઇચ્છન ખોલવામાં આવ્યા હતાં. શ્રીવિલક્ષ્યત શ્રીચિરિશરણ મહારાજશ્રી તથા વજીર મહારાજશ્રી શ્રીની સનમુખ બીસાવ્યા હતા. એ કલાક મુઠી અલોકિંક ઇચ્છીને લાલ હમરે વૈષ્ણવોને થયો હતો. આ મર્થમાં જ્યોત્સુરનાવા મુખ્યાલ પ્રલહાદજીની કેખરેખ નીચે વ્યવરયા હતી. તેઓએ તમનથી મેનત કરી આ કાય પ્રસંસા પાત્ર કરી આપેલ હતું. તેઓને ધન્યવાદ થતો છે રાવડા કેટલાક જોડેને પ્રસાદ લીધા બાદ શ્રીને રથામદા પધારાવી ચાલતે ચાલતે સ્વારી જ્યોત્સુર ચાલી આવી રીતે મતયર્થી (ચોરદરજી) લીલાનો મનોરથ અતિ આનંદ મંજલ સાથે સંપૂર્ણ થયો હતો.

શ્રીભક્તિમાર્ગ્ય સાહિત્ય મંદિર—મુખર્કમાં શ્રીલલિતાવાના મંદિરમાં આવતાં ઉપપૂજ્ય માર્ગદર્શન પ્રવાર તા. ૨૦-૧૧-૩૩ ના દિને રથાન પરિકરન કરી સુપ્રસિદ્ધ ચિદાન ગો. વિ. શ્રી ૬ શ્રીમજના

લાઠીને નરહ દરેકે ખૂદકું મૂકવાનો વિધિ થવાનો હોવાથી તે નિમિત્તે મળકુર દિને સંતોના ૭ માસે રથાનીય મોઢા મન્દિરના બગીચામાં ધર્મનુરાગી જનતાની એક સભા મળી હતી. તે સમયે ૧૯૧૭ માંદગી-વાતા પૂ. પા. ગો. શ્રીહરિદાસલાલજી મહોદય અન્વ જાત ચેરવાગીઓ, સમગ્રધર્માનુરાગી વૈષ્ણવ લાઈ બહેનોએ સારી સંખ્યામાં દાબરી આપી હતી. યશસ્વતીમાં શ્રીયુત દ્વારકાદાસ લણીએ આમંત્રણ પત્રિકા વાંચી સંભળાવી હતી.

વ્યવસ્થાપકકું નિવેદન—ત્યારપછી ઉપધુક્ત જન્મે કાર્યાલયના વ્યવસ્થાપક ચિરિધરલાલ ન. શાહે પૂ. પા. ગો. બાલકોને ભજવત્રસાદી પુષ્પમાળા ધરાવ્યા પછી પોતાનો કાર્યાલય પારવેનો અનુભવ અને નિવેદન રજૂ કરતાં જણાવ્યું હતું કે—

સ્વધર્મનુરાગી સન્માનનીય બંધુઓ અને બહેનો !

આજના સુ અવસરે પરમવંદનીય પૂ. પા. શ્રીમદ્દેવભાઈ કુમારેના પાદપદ્મામાં સદૈન્ય પ્રમાણ કરી ‘શ્રીભક્તિમાર્ગીય સાહિત્ય મંદિર’ અને વાચનાલય પરત્વેના મારી અનુભવ અને માર્ગ નિવેદન રજૂ કરું તથા પૂર્વે મારી પૂર્વે પરિચિતિના હુકે પરિચય આપું તે તે અરથને નહિ જણાવ. નિ. સ. ૧૯૭૨-૮૦ માં સંપ્રદાય પ્રતિ વિરોધીઓ તરફથી પ્રત્યાષાતક અળવળ થઈ થઈ. શ્રીમદ્દેવભાઈપરિચરું સમગ્રાધિવેશન રથાનીય માધવબાગમાં ભરાયું. સંપૂર્ણ વિરોધી વાતાવરણ અને પ્રતિકૂળ સંભોગો હોવા છતાં મુકુટચળ કાયકત્તિઓના પ્રયાસથી સફળ થયું, અને તેજ અરસામાં પ્રત્યાષાતી અળવળને પરાસ્ત કરવા આપદયક પ્રયત્નો થયા હાલમાં તેમાં તે સમયના મારા જેવા ઉગતા છાત્રાસુ માટે સંપ્રદાયિક ચિદ્વાદ જાણવા તથા સમજવા માટે સાહિત્ય વાચનની વિશેષ આવશ્યકતા જાણતા તેનું સાવધાન અવગોહન કરવાની યશસ્વતી કરી અને તે અવગોહન કરતાં તેના પ્રચાર વિશેષ પ્રમાણમાં થાય તેની આવશ્યકતા જણાતાં એક ‘સાહિત્યચિંતક મિત્ર મંડળ’ ની રચના કરી તેના દ્વારા સામાજિક સાહિત્ય સાથે ધાર્મિક સાહિત્યનો પ્રચાર વિશેષ કરવાનો પ્રયત્ન કરતાં તે અમુક અંશે સફળ પણ થયા, અને તે વ્યવસ્થા લગભગ ત્રણ વર્ષ સુધી ચાલી પરંતુ ત્યારપછી ઉત્તરેતર યુગકેની આર્થિક પરિસ્થિતિ વિકટ બાબતો અને સાહિત્યમાં રસ લેવાના અભને દરેકને બ્યાવહારિક ઉપધિ વધતાં અમે સર્વે છૂટા છવાયા થઈ જવાથી મંડળ બંધ પડ્યું, છતાં ભજવત્રપાંચે મારી સત્યાહિત્ય પ્રચારની છાત્રાસુ ઉત્તરેતર વધતી ગઈ તેને સં. ૧૯૮૪ ના નિબધાદ્દશમીના દિન દિને નિ. સી. પૂ. પા. ગો. શ્રીજીજીજીલાલજી મહારાજ (શ્રીલાલ-બાવાના મંદિરવાળાએ) નિજ પિતૃચરણના રમરણાર્થે ‘શ્રીજીજીજી પુલિસિદ્ધાન્ત પુસ્તક લેડાર’ જોડાવો તેની સચળી અવરથા રાખવાની અને આજ્ઞા કરી તે માટે પોતાના મંદિરમાં રથાન અને સાંપ્ર-દાયિક સાહિત્ય પ્રમથકો પાસેથી પુસ્તકાદિ સાહિત્ય મળી શકે તે સંબંધી સચળી સજવડ સાંપ્રદાયિક સાહિત્યનો પ્રચાર સારી રીતે થાય તે દુઃખ ભાવનાની કરી આપી તેમાં વે. શા. સં. શ્રીયુત ઉચ્છિષ્ણુ-શાસ્ત્રીઓ પણ પ્રયત્ન લેતાં એ મારે ભૂવરું ન લેઈએ. તે દ્વારા સાહિત્ય પ્રચારનું કાર્ય લગભગ દસ માસ ચાલ્યું એટલાં હુકે સમયમાં કાર્યાલય પોતાનું ખર્ચ સારી રીતે ઉપડવા ઉપરાંત સાહિત્ય પ્રચાર પણ થોડાં રીતે કર્યું હતું યાને પંચમર થયું હતું. પરંતુ કતિપય વિમ્મસંતોષીઓના કારણે તથા ભવિષ્યમાં પૂ. પા. મહારાજશ્રીના તથા આજ દુઃખ હશે લીન થવાનો સંભવ જાણતાં મળકુર કામલાલ સંવત ૧૯૮૫ ના આવણ મસની આખરે બંધ કર્યું. તે સમયે સાનુદ્ધન સંધિએ સ્વતંત્ર જવાબદારીથી પ્રચાર કાર્ય યા કરવા-છઠ્ઠા રાખેલી તે યુગ્મ સં. ૧૯૮૮ ના દ્વિતીય આવાઢ દુઃખ ત્રયોદશીના દિને ‘શ્રી ભક્તિમાર્ગીય-સાહિત્ય મન્દિર’ ની વ્યવસ્થા કરવા નિશ્ચય કરી. અને તે માટે પૂ. પા. ગો. શ્રીજીજીજીલાલજી મહારાજશ્રીની આજ્ઞા અને શ્રીલાલબાવામંદિરમાં પોષ્ય શાકું લઈ રથાન આપવા વિનંતિ કરતાં આપશ્રીએ પ્રસન્નતા પૂર્વકે મારી યોજના માટે આશીર્વાદ સહ આજ્ઞા અને યોષ્ય શાકું લઈ રથાન આપવા અનુમત્ત કરી સાંપ્રદાયિક સાહિત્યનો પ્રચાર વિશેષ પ્રમાણમાં થાય એ ઉદ્દેશને લક્ષ્યમાં રાખી કાર્ય કરવા ખાસ સૂચના કરી ત્યારથી આપશ્રીના એ આશી-ર્વાદાત્મક વાક્યસુધાએ હુકે સ્થિત કરી સાહિત્યપ્રચાર સાથે સાહિત્યવાચનનો લાભ સામાન્ય રિતિના ધર્મનુરાગીઓ લઈ શકે તે દુઃખ ઉદેશથી શ્રીભક્તિમાર્ગીય પુસ્તકાલય માને વાચન વિભાગની પણ (મત્ત) વ્યવસ્થા કરી જેમાં એ પોતે ખરીદેલું ધાર્મિક અને સામાજિકયોગી સાહિત્ય ઉપરાંત સાપ્તાહિક,

મહાસિદ્ધિ અને અન્ય સામયિકો પણ વચિતો મળી શકે એવી ખાંસ વ્યવસ્થા રાખવામાં આવી છે તેના દ્વારા કેટલાક ધર્માનુરાગી સમજીને તેના ઉદ્દેશ અને નિયમોને અનુસરીને કંઈ રહ્યા છે, અને વિશેષ પ્રમાણમાં ધર્માનુરાગીઓ છે એમ હું હૃદયથી ઈચ્છું છું ભવતઃ આ પ્રમાણે ઉપધુક્ત બંને કાર્યોવશીની વ્યવસ્થા કર્યા પછી રચાનીય તેમજ બહારગચ્છના સપ્રિણવિક સાહિત્ય પ્રકારો, છુટકોલો અને સંસ્થાઓના કાર્યકર્તાઓ તરફથી મને ઉત્તરોત્તર અનુકૂળતા અને પ્રોત્સાહન મળ્યું તેમ તેમ મારી મહત્વાકાંક્ષા વધતી ગઈ તેનેજ હું મારા ઉપર ભગવદ્કૃપા, વંદનીય ગો. બાલકૃષ્ણ શુભાશીર્વાદ, સામગ્રદાયિક સુપ્રસિદ્ધ વિદ્વાનો, સન્નિત્રો અને સહર્મ પરાયણ મહાનુભાવોના સહકારને આભારી માનું છું. આ કાર્યમાં હું નિમિત્ત માન છું ભુક્ષિત્રેષ્ઠ શ્રીવત્સરાજકુમાર પ્રભુ છે તેમની પ્રેરણાનુસાર ને કંઈ કરવા પ્રયત્ન કરે છું તેમાં તે સચિત્ત દાનંદ રસાત્મક શ્રીકૃષ્ણની કૃપાથી સાહૃદય મળે છે એમ મારે ઓમાગ્ય સમજું છું અલ્પરે કેટલાક પ્રતિકૂળ સંજોગોને લીધે તથા પ્રચારકાર્યને વિશેષ પરલવિત કરવા ઉપધુક્ત બંને કાર્યોવશીનું આજે અને રજાન પરિવર્તન કરે છું તે સમયે ત્રદારા જેવા અનેકસાં ઉપર સર્વદા અનુકૂળ રાખતાં એટલુંજ નહિ પણ મારા દરેક સાપ્રિણવિક કાર્યમાં પ્રોત્સાહન આપી મારા ભાવનું સંચિત કરનાર શ્રીવલ્લભકુલભૂષણ વિદ્યાનિધિ પ. મા. ગો. શ્રી ૬ શ્રીમત્નાયકલાલ મહોદયે કૃપા કરી મળકુર કાર્યોવશી ચોતાના શુભ હરતે ખૂદલા મુક્યા મટિ અને પધારવા ને અનુકૂળ થયાં છે તદ્વત્સાર આ સ્વરસરે પ. મા. ગો. શ્રીદારકેશલાલ મહોદયે પધારવા કૃપા કરી છે તદ્વત્ હું આપશ્રીમાનોનો સહૃદય આભાર માનું છું અને આપશ્રીમાનોની કૃપા ઉત્તરોત્તર મારા ઉપર સર્વદા વૃદ્ધિ પામેા એમ હું અહૃદય ઈચ્છું છું. તદ્વત્સાર અન્ય ગો. બાલકૃષ્ણ કે જેઓ મને સમયોચિત પ્રેરણા કરી મારી ફરજ બલવવાની સૂચના કરી મારા કર્તવ્યનું પાન કરાવી રહ્યા છે તે માટે તે સર્વેનો હું ઝાળી છું તે સિવાય રચાનીય સાહી, હરિષ્કૃષ્ણમર્ઠ, શ્રીયુત ભગીરદાર, શાઓ હરિસંકરભાઈ, યો. શી. એન. નેરરી, વાહશ્રીનરમદાસ દાણી અને શ્રીયુત ગોપાલદાસભાઈ જોડે સન્માનનીય ઇશ મિત્રો ઉપરાંત રચાનીય રમત બહારગચ્છના વિદ્વાનો અને ધર્માનુરાગી ભાઈ, ભગિનીઓ કે જેઓ મારી પ્રાયે સહૃદય રાખી આચર્યક સત્તાદ અને અનુકૂળતા કરી આપે છે તદ્વત્ તે સર્વેની સદ્ દાનવૃદ્ધિ માટે તે દરેકનો સહૃદય આભાર માનું છું અને મારા પર ને લાગણી સંચેતી છે તે શુભળ કાર્ય કરવા શ્રીહરિ અને શક્તિપ્રદાન કરે એમ તે પ્રભુના પાદપદ્મોમાં મારી સનિત્ય પ્રાર્થના છે.

સુજી ! ને હૃદયથી મેં આ પ્રચારકાર્યની સાચાત કરી છે તેને સમયોચિત સાનુકૂળતા મળવી ભવ છે. છતાં સત્યની ખાતર જીજ્ઞાસનું પડે છે કે લક્ષ્યવધિ વૈષ્ણવોના વસવાટવાળા મુંબઈ નગરીમાં માસિક રૂપીયા બસોતું પણ સાપ્રિણવિક સાહિત્ય વેચાઈ નથી આ ત્રદારા અનુસર છે. મારે ત્યાં સાપ્રિણવિક સાહિત્ય કરતાં 'ગીતા પ્રેસ' ગેરજાણુર કે તેના જેવી અન્ય પ્રચાર સંસ્થાઓના સાહિત્યનો વિશેષ પ્રમાણમાં પ્રચાર થાય છે. મટિ હું શ્રીમદ્લક્ષ્મીસિદ્ધાન્તાનુરાગી વૈષ્ણવોને સનિત્ય સૂચન કરીશ કે આપણા સાપ્રિણવિક સાહિત્યનો પણ બહોળા પ્રમાણમાં ફેલાવો થાય તેને માટે તાન, મન કનથી પ્રયત્ન કરીશો તેના આપણી લાવી પ્રભ ધર્માચિન્ચિત્વાળ રહી રાહસો. ઓળાવૃષ્ણુ પ્રેમ સર્વેને ધર્માનુરાગી બનાવો એજ ઈચ્છી ગો. બાલકૃષ્ણ પાદપદ્મોમાં પુનઃ પ્રણામ કરી તથા આપ સર્વેનો વિશેષ આભાર માની મહાકે પદાન્ત્ય સમાપ્ત કરે છું.

ત્યારપછી પં. હરિસંકર શાસ્ત્રીએ વિવેચન કરતાં જણાવ્યું હતું કે સંપ્રદાયોના પાંચ કેવળ સાવનાની ઉપર રચાયેલો નથી. સાવના હૃદયનો ધર્મ છે. સાવના સાહિત્યથીજ ઉત્પત્ત થાય છે. બાહ્ય સંસ્કારો ત્યારે હૃદય પર પડે છે ત્યારેજ ઉત્તમ વાચ-વાચ છે. સાપ્રિણવિક સાહિત્ય પ્રતિ વૈષ્ણવોની અસિદ્ધિ દર્શક નથી થતી તે કીલગીર થવા ચોગ્ય છે છતાં પણ કયા વર્ગમાં ને સાહિત્યનો પ્રચાર થયો છે કે જેથી સાપ્રણુ થયાં આને વૈષ્ણવો પણ કરી શકે છે. સાહિત્ય પ્રકાશનની વ્યવસ્થા સારી રીતે ચાલી છે. પરંતુ તેને કલ્પના ભારથી સદકાર મહંતની આવરણકતા છે. ભાઈ નિરિષદાસ શાહનો સાહિત્ય પ્રચારનો પ્રયત્ન પ્રદર્શનાય છે. વિ. રહા બાદ સાથીજ હરિષ્કૃષ્ણ નીરજામર્ઠએ મોઢતાં જણાવ્યું હતું કે જેણે શ્રીમદ્લક્ષ્મીસરનો આશય નથી કર્યો, શ્રીકૃષ્ણોપનિષદના દર્શન બરાબર નથી કર્યા, શ્રીરાધિકાનાય શ્રીકૃષ્ણની સેવા નથી કરી, તેનો જન્મ આ બ્રહ્મકે નિરર્થક છે. એ શ્રીકૃષ્ણની સેવાનો રસ ત્યાં સુધી સાહિત્ય-વચોક્ત નહિ કરીએ ત્યાં સુધી મળી રાહસો કે જાણી રાહસો નહિ. રીપક નેમ ને બાહ્ય પવન લાગે તે બાહ્ય કમચવા લાગે તે શુભળ સાહિત્યવલોકન સિવાયના બેનની રિયતિ સમાજનો પરંતુ ને છે સાપ્રિણવિક

સાહિત્યનું વાચન કર્યું છે તેને ખમે તેવા વટોળાયાઓ આવે તો પણ કમવાની કારતી નથી વિગેરે કહ્યા બાદ દ્વિતીયવેલે સાંપ્રદાયિક ગ્રંથોની ચાહી આપતાં સમજાવ્યું હતું કે શ્રીમદ્ભગવાદ ગ્રંથ એક અદ્વિતીય ઘટનાનું નામ છે. તેની પ્રસાદ સાંપ્રદાયિકો સિવાય બહારના વિકાસો કે ટો. સારાંસાર જેવાએ કરતાં કર્યું છે કે બહુમતના વધારા અર્થે કરી તેને થોડા ન્યાય આપ્યો હોય તો તે માત્ર શ્રીમદ્ભગવાદ ગ્રંથનું અણુમાથાન છે. સાદાત્વ મુદ્દાની પ્રવૃત્તિ પૂર્ણ રીતે ચાલી રહી છે પણ તેના પ્રચારની દલે ખાસ આવરણકતા બાકી છે. તેને દરેક વેંજુએ લક્ષ્યમાં લેશે. સર્વદા સાંપ્રદાયિક સિદ્ધાન્તપ્રચારણે પ્રયત્ન રાખે. રહેતા ઉત્સાહી ગો. શ્રીમદ્ભગવાદકલ મહોદયે આજે પોતા શુભ દરેકે 'સાદિત્ય મંદિર' ની ઉદ્ઘાટન ક્રિયા કરશે. જેની વ્યવસ્થા બ. ગિરિધરજીવ સાહેબ ચલાવી રહ્યા છે જે પણ ઉત્સાહી છે તે વેંજુએ તે સાદિત્ય મંદિરમાંથી પુસ્તકાદિ સાદિત્ય ખરીદી અને કી વાચનાલક્ષ્યમાંથી વાચના માટે સાદાત્વ મેળવી તેના પ્રચાર કાર્યને થોડા ઉત્તેજન આપ્યો વગેરે કહી પોતાનું વક્તવ્ય પૂર્ણ કર્યું હતું.

ત્યારપછી શ્રીવલ્લભકુલ બુધ્ધ પ. પા. ગો. શ્રી ૧ શ્રીમદ્ભગવાદકલ મહોદયે 'ધાર્મિક સાદિત્ય વાચન અને પ્રચારની ભરોશાત રહે કર્યું હતું જે આ અંકના પ્રારંભમાં છે.

ત્યારબાદ જિ. ભ. સાદની વિશ્વવિત્તી ૫. પા. ગો. શ્રીમદ્ભગવાદકલ ઉપકુલ બળે શાશ્વત્ય પાસે પધારી નિમગ્ન દરેકે બુદ્ધિ બુદ્ધિ દલ ત્યારબાદ અગત્યનું સત્તરનો પાન સોપારી અને 'પુષ્ટિમાન' નામક પુસ્તકાલેકે આપી વ્યવસ્થાપક સતાર કર્મ બાદ સી વિજયાલા દલો.

છુણવાલામાં આનંદ-વિશ્વવિત્તી શ્રીગોકુલેશપ્રભુના પ્રાકટ્યનો ચિરમરણીય દિવસ સં. ૧૯૨૦ ના માર્ગશુક્ર સુદ ૭ નો આવવાનો હતો, વેંજુએમાં કંઈ આનંદની અભિવ્યક્તિએ જણાવી હતી. શ્રીમંદિરે પણ જ્વલપતામાંથી ચલુતારવામાં આવ્યાં હતાં અને માર્ગશુક્ર સુદ ૧ થી શ્રીગોકુલેશ પ્રભુના મંદિરમાં શ્રીગોકુલેશને કેસરનાન થઈ હતું, વેંજુએ દિનપ્રતિ અતિ લક્ષ્યે પ્રકૃષ્ટિ અને આનંદમાં લક્ષ્યે જોડેજોડે દર્શન લતા. ધોળ લક્ષ્યે કીર્તનોનો આનંદ અનિરચનીય હતો. "કર્યા તે કરીને પધાર્યા" એ ધોળ કીર્તન ગાતાં પ્રભુ શ્રીગોકુલેશનાં ગાદીકલ રવરે દર્શન લયા. મંદિરમાં ભારે ભોડે થઈ પડી, પ્રભુ દીનકયાલુ લક્ષ્યેજોડે શ્રીગોકુલનાથકલ જળના ધનિ સાથે દર્શન આપી રહ્યા હતા. દરેક સમગ્રી સુધી વેંજુએ આનંદથી આ મંદિરથી વેંજુ મંદિર દર્શનની આતુરવાથી લક્ષ્યે જોડેજોડે લતાં હતાં. શ્રીગોકુલેશ પ્રભુના મહામહોત્સવના પ્રાતરમરણીય પ્રસાદે વેંજુએના મનમંદિરમાં મોટો ઉત્સાહ આવી જતાં આત લક્ષ્યે મંદિરમાં જતાં હતાં. ગોષ્ઠીઓના સરજાઈ નજારાના નાદથી શ્રીગોકુલ બોદારીલાલે દર્શન આપ્યાં. પાંચઝો સાવઝો મણસ વેંજુ જળતાથી મંદિર ઉતારવા લાગ્યું. જોડેજોડેમાં તે મંદિરમાં સખત ભોડે થઈ પડી. શ્રીગોકુલેશ પ્રભુની જડમણએ પણ કેસરનાનથી પંથનાદ, રાંખનાદ સાથે દર્શન આપ્યાં. શ્રીગોકુલેશનાં ચિત્તએ પણ કેસરનાનથી દર્શન આપી પ્રેમી વેંજુવ સખાને આનંદમુગ્ધ બનાવી દીધાં. દર્શનાર્થે અને કીર્તનાવાજોના આનંદનો પાર તે હોય જ રાખો. જોડેજોડે નજારાના અવાજ સાથે રાજજોડે સમયમાં શ્રીગોકુલેશનાં વિદલ થયું. "વધાઈકો દિન નીકો આનંદ વધાઈકો દિન નીકો" એ વધાઈ ધોળ કીર્તન ગાતાં વેંજુએનાં મન પ્રકૃષ્ટિ થઈ જતાં મિમ્મી નિદાળીને દર્શન કરવા લાગ્યાં. આ સમયની ચોક્કસ જોડે જોડે "હું પામર છપ્પું આલેખી રહું" વિષય મનમાં જિરાલ બસોતોના મનોરથ પૂર્ણ કરતાં હોયની તેવાનું આનંદ ઉદ્ભવ્યો. કુમકુમના ચાપા દોરે દોરે થયા. આનંદનો પાર ન રહો. પ્રેમી લક્ષ્યે કીર્તનીઆ લોચેજો પ્રસાદે કુંકુમ ત્યા કુલેક ત્યા ચંદન લોધાં. આનંદના મહામહોત્સવને મહાન દિવસના આનંદનો પાર નહોતો, વેંજુએના સિરવાજ મણસ તિલકે રણુલાર શ્રીગોકુલેશ પ્રભુના પ્રાકટ્યદિને કયા વેંજુવ આનંદ ન માને! પ્રભુ વાગતાં વેંજુવ સખારીઓ. જળસ લઈ મંદિર તરફ જવા લાગ્યાં. સરજારી લેન્ડે કંઈ નિશાન સાથે વરપોડો શ્રીગોકુલ બોદારીલાલના મંદિરથી ચડી જોડે શ્રીગોકુલેશ પ્રભુ માલાલિલકોના વિષય કરવા જતા હોય અને વેંજુએ પ્રભુશ્રીને જળવનિ સાથે વધાવતા હોય તેવી રીતે ધોળ વધાઈ કીર્તનના આનંદ સાથે "ખાનત કદો બધાઈ ગોકુલેશ ખાનત કદો બધાઈ" કીર્તનીઆએ પાછળ વેંજુવ સખારીઓ જળસ લઈ પાછળ ચાલતી હતી. "આજે આજે આનંદને ઘેરે જળમાં થઈ રહી છે લીલા લહેરે" શ્રીગોકુલ કપલ મુખ નીરજવા યોધા શ્રીગોકુલેશ દ્વારે "આજે જળમંદે જળમ દિવસ છે રે લેલી. રાજુતાર જળું સર્વે પડેલી"

વધાઈ, ધોળ, કીર્તન ગાતા વરપાટો ખસાર થયો હતો અને હમસગ પાંચસો સાતસો વૈષ્ણવ ભજવાની સાથે બે કલાકમાં ગામમાં ફરી શ્રીગોકુલબીહારીલાલના મંદિરમાં પાછા આવ્યા હતા અને ભણે 'શ્રીગોકુલ-ધીરાજી શ્રીસોમચંદ્રી ગોકુલ ભાલાલિકાનો વિભવ કરી વધારવા હોય તોવીજ રીતે મંદિરમાં પેસતાં કળશ વધાવવામાં આવ્યા હતા અને કળશની ભેટ ભોલાવવામાં આવી હતી, અને શીના લાલલા ભગવંતીય વૈષ્ણવે કુદી પડી ભેટ ભોલી કળશ વધાવવામાં આવ્યા હતા અને કીર્તનની આ વગેરે વૈષ્ણવ સમાજ મંદિરમાં પેસતાં શ્રીગોકુલબીહારીલાલે ધંડાનાં ધર્મ સંધ્યાનાં દર્શન આપ્યાં અને હાથો લેવા આતુર અને પગે લેવાર પ્રેમીઓને લેવાર હતા. ત્યાં હાથો લેવાનાં રાત્ર થઈ "છતને ડંકે મારો નાય રે." "શ્રીગોકુલ-નાય પ્રગટ થયા રે, આવ્યો મહા જોગજીવ" "શ્રીવલ્લભ વર પેર આવીઆ આજ સખી વહીબ વર પેર આવીયા" તથા બીજાં ધોળ વધાઈઓ હાથમાં લેવાઈ હતી અને કપડવંજ વૈષ્ણવ યુવક મંડલે મોઢસેથી શ્રીગોકુલેશ મહામહોત્સવની પત્રિકા (૨૮) હતી તે બાંધી દીધી હતી. પત્રિકાનો પછો સત્કાર થયો છે. શ્રીગોકુલેશ પ્રભુના જયની સાથે વૈષ્ણવો લીંગરાયા હતા. શ્રીગોકુલેશ પ્રભુની ભિક્ષે પણ તેવાજ આનંદ હતો. હંમેશાં દિનપ્રતિદિન શ્રીગોકુલેશ પ્રભુના સેવકોને આનંદ શ્રીપત્યે વધે અને આવી ધર્મ પત્રિકા પ્રતિવર્ષે નીકળે એજ અંતરની અભિલાષા.

હાસાલદાસ-દોસી 'સુલચંદ' કરમચંદ.

કપડવંજમાં મહોત્સવ—કપડવંજમાં મહોત્સવ દર વર્ષની પેઠે અતિ આનંદથી ઉજવાયો. દિવસોથી વધાઈ બેઠેથી જ હતી. ઉત્સવના સાત દિવસોના આનંદનો પાર ન ન રહ્યો, ઉત્સવનો પહેલો રોજ વસંતરામ યાત્રી આવ્યા હતા. ખીતા વર્ગ તથા વ્યાખ્યાન છૂટના રોજ થયાં. સમાજમાં મહોત્સવ-પત્રિકા બાઈ ધીરજલાલ જોગજીવલાલ રાહે વર્ધો. તે પછી રાત્રીછંમે વ્યાખ્યાન આપ્યું હતું. પ્રદાસથી ભગવંતીય રતનલાલ ફાણી આને અહીં આવવાથી આનંદ આવ્યો હતો. ઉત્સવના રોજ કળયનો વારોડો થયો હતો. બેંડ સુંદર સ્વરથી આગળ વાજતે ગાજતે વ્યાખ્યાન ઉત્સાહમાં વખારો કર્યું હતું. તે પછી સંકુલદરેયો શામળ કીર્તન કરતા ચાલતા હતા. નાના બાળકોની ફોળે તેા કમાલ કીધી હતી. જાનન દલ જયંતિ અને 'જે જે શ્રીગોકુલેશ' ના પવિત્ર પત્રિકા આપા ગામને ગલવી મૂક્યું હતું. પછી નાદવાર મહાપ્રસાદ લઈને રાત્રે સમાજનો આનંદ લીધો હતો.

ગોધરામાં આનંદ—આ વર્ષે મહોત્સવનો આનંદ કાંઈ અદ્ભુત રીતે ભર્યો હતો. કળશ, વરપાટો અને સમાજે આપા ગામનું ધ્યાન જેમ્મું હતું. દલરથી ઉપરની સંખ્યાના વૈષ્ણવોએ જાનના નંદનો લલાલો લીધો હતો. મહોત્સવની પત્રિકા મજાતે તેના બાજે સત્કાર થયો હતો.

શ્રીવિકુલેશ મહોત્સવ-કપડવંજ—આ વર્ષે શ્રીગોકુલેશના મહોત્સવ પર ગાને સખા રામવામાં આવી હતી. પ્રારંભમાં બાઈ ધીરજલાલ જોગજીવલાલ રાહે 'પત્રિકા' વર્ધો હતી. તે પછી વસંતરામ રાત્રીએ શ્રીગોકુલેશ પતિવધાવન છે અને ખરમદવાણ છે તે વિષે રોમાંચિત્તક પ્રસંગો વર્ણવ્યા હતા. ઉપરે ભગવંતીય રતનલાલ ફાણીએ રાત્રીછંમે કપકાર ગાવ્યા હતા અને શ્રીગોકુલેશે કૃપા કરીને આ પ્રશંસિ રાત્રીછં દ્વારા રાત્રે રાત્રી તે બદલ આપશ્રીની કૃપાનું રસરસ કહ્યું હતું.

શ્રીગોકુલેશપ્રાકાશવમહોત્સવ મુંબઈ—અને મોટા મંદિરમાં બ્રહ્મવાદિવિદ્વંસના તરફથી કોમેડુલેશ પ્રશ્નોને પ્રાકટ્ય મહોત્સવ ધણીજા ધામધુમથી ઉજવવામાં આવ્યો હતો. પ્રથમ દિવસે સમાપતિ-રવાન ગોરવામીશ્રી ૬ શ્રીદ્વારકાલાલજી શ્રીવિકુલેશતયજી મહાસાગે અત્કૃત કહ્યું હતું. પ્રારંભમાં વધાઈ ગાન થયા બાદ ૫, ઉચિત્કૃષ્ણ બીજી યમગિ શ્રીગોકુલેશના જીવનચરિત્રમાંથી ધણી મુશામીના બાળક સખાવતાં કહ્યું હતું કે—માણા અને વિલક મારે પાતાની સંપૂર્ણ દીલલ ધણાજ આનંદ સાથે પરિભ્રમ કરી સોમચંદમાં જઈ વસનાર સગરમી સહીના મદાન ધર્મરસક શ્રીગોકુલેશ મહાપ્રગ્ન છે. ધર્મ વિનાના જીવનની કથી ડિમલ નથી જે સાત્રીય સિદ્ધાંતને પાતાના જીવનમાં જાતપ્રાપ્ત કરી લઈ તે સખાના મોક્ષ પાદલાદ નદાગીર સખે પ્રાણપંજી પણ તેમોમીએ ધાર્મિક લડત લડી પાતાનું ધર્મચાર્યવજ્ઞ સાચક્ય કહ્યું હતું. તેમોમીને પ્રાકટ્ય મહોત્સવ ઉજવી ધર્મને ખાતર આત્મજીવિદ્યાન પણ કર્યું પડે નો દરેકે કૃપે કરવા તેવાર રહેવાના પાઠ આપણે શીખવે એકમે. ગોરવામી શ્રીકૃષ્ણજીવનજી મહાપ્રાણે 'સત્કોનો અવરણ' એ વિષય ઉપર પાતાની જણાવ્યું હતું કે આજ કાલ પ્રેમને નામે ધરેજાન અનર્થ સારી રહ્યો છે. ખરો પ્રેમ ધણી એકા દીકો સખાને છે. અતઃ તેનો ડુકપણ વડો રેખાય

કરવા, વિરોધીઓનું મુખમર્દન કરવાં, દેશ દેશાવર ફરી ને કાર્ય કરું છે તે માટે આપણે જરૂર તેઓથીતા ઝગાળી છે. વગેરે, કઠીન પડવંજના ઓળીતા વર્ગે તરફથી શાસ્ત્રીય વર્ણવશમુલાકાએ ને મહોત્સવપંચિકા બહાર પાડી છે. તેમાંથી સારારા દર્શાવે સારે સમજાવી તે પત્રિકાઓ મંત્રીના હાથે સમાર્પા વહેંચી આપી હતી. ઉપરમાં સમાના મંત્રી શ. ધનરાયગ એમણે સારે આજના મંગલિક દિવસનું સ્મરણ વેળુવાએ અવરજ, રાખડું પટે, જગત ઉદ્ધારક શ્રીવિઠ્ઠલેશ મહાપ્રભુએ બતાવી આપેલા માર્ગે ગમન કરવા સર્વેએ ધ્યાન રાખડું, જોઈએ, અને તે નજીવા માટે તેઓશ્રીએ લખી મુકેલા મંત્રીનું આરોહન કરડું જોઈએ વગેરે વિવેચન કરી સર્વે વેળુવાને તથા પ્રમુખને આભાર માની શ્રીગુણાઈલના ન્યાયનાર સાથે સભા વિસર્જન થઈ હતી. સભામાં શ્રીગુણાઈલના ત્રિવલ શબ્દ આસન ઉપર પધરાવ્યા હતાં. વેળુવાએ એટ વગેરે ધરી પકો ચાચાં દતાં.

કેન્ડીનમાં—રથાનિક શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય જ્ઞાન પ્રસારક યુવક મંડળના આમત્રણથી અનેની પાશાજાના લભ્ય મહાનમાં શ્રીવિઠ્ઠલનાથજીને જનમ મહોત્સવ ઉજવવા વેળુવ બાઈઓ અને બહેનોએ મોટી સંખ્યામાં હાજરી આપી સભારથાન બરપૂર કરી દીધું હતું. આરંભમાં મંત્રવ કીર્તનો થયાં બાદ શેઠ હીરાચંદ માધવજીએ શ્રીવિઠ્ઠલનાથજીના ચિત્રજીને એતાઓના હર્ષનાદ વચ્ચે મુંચમાળા પહેરાવી હતી. પાંદશાળાના વિદ્યાર્થીઓએ સુંદર ત્રાયમી પ્રજી રવિત્રિ બાઈ હતી. ત્યારબાદ નારદ વાસ્તિમિત્રો સંવાદ બાજોએ છાથી સ્વરસ રીતે ભજવી બતાવેા દતો. નાની નાની કોમલ વયના બાળકોના હુકા-છતાં સુંદર બાપણી એવાં બોલે મુખ્ય બનાવી હેતા દતા. શાસ્ત્રી હાથીરામ રતનજી રામંએ શ્રીવિઠ્ઠલનાથજીના ક્યેનચરિત્રની રૂપરેખા દર્શાવ્યા બાદ, પાંદશાળાના વિદ્યાર્થીઓની સંખ્યા ૯૯ ની છે કરી જાહેર કરેલ; તેમાં ૬૫ બહેનો પણ આ શાળાના હાથ લઈ ધાર્મિક તથા સંસ્કૃતનું જ્ઞાન સંપાદન કરે છે એવી રીતે જણાવવામાં આવ્યું હતું. ઉપર વિદ્યાર્થી વહેંચનાસ દેશવલ પારેખ, સપ્રકાસ તત્ત્વવીપ નિમંધના રાજાચં અને સર્વ નિર્જીવની પત્રીકામાં જીતમ કક્ષાએ જીતીજી થતાં મેસર્સ મૂળજી એકા કું. ના માલિક શેઠ ચત્રમજી ગોવર્ધનનાથ તરફથી સુવર્ણપદક તેવાર કરાવવામાં આવેલ, તે સંરથા દ્વારા શેઠ નેરામ છવરાજના હસ્તે મળ્યું. વિદ્યાર્થીને આપવામાં આવેલ. પછી શાહ હીરાચંદ માધવજી તરફથી પાંદશાળાના ઓળી વર્ગને નિત્યપાઠ માટે શ્રોમદ્ ભગવદ્ગીતાના દેશમી પુરાના પુસ્તક, સોની હરિલાલ છગનલાલ તરફથી વિદ્યાર્થીઓને "કનકાભિષેકનો હવિદાસ," શેઠ હરિલાલ ચત્રમજી તેમજ શેઠ નેરામ છવરાજ તરફથી વિદ્યાર્થીઓને નારંગી અને નાનજી મેથજી તરફથી પ્રસાદ, આપી રીતે ઉનામે આપવામાં આવ્યા હતા. બાદ હાજર થયેલ વેળુવ મળેના આભાર માની શ્રીવિઠ્ઠલનાથજીના ન્યાય પાપણા સાથે સભા વિસર્જન કરવામાં આવી હતી.

ઉત્સવ પત્રિકા વિષે વિચારો—મહામહોત્સવ પત્રિકાઓ મળી પત્રિકાનું લખાણ સર્વોત્કૃષ્ટ છે. એવી પત્રિકાઓ લેખો અવારનવાર લખીને પુષ્ટિમાર્ગના વિરોધીઓને જાતિમાર્ગનું અર્થ રહસ્ય સમજાવવામાં આવે એ અત્યંત ઉચ્ચત યોગ્ય છે. આનું સર્વોત્કૃષ્ટ લખાણ લખવાને માટે આપને નેટલો ધન્યવાદ આપું એટલો ઓછાજ છે. આપણે પુષ્ટિમાર્ગ કહેવાત વહીવટમાં ધર્મ કરતાં અતિ ઉદાર છે એ જીતમ રીતે સાબીત કરી બતાવ્યું છે. ધરમસીના ઔરમરણ.

આપના તરફથી શ્રીવિઠ્ઠલાધીધર પ્રાદુર્ભાવ મહોત્સવ પત્રિકાઓ મળી સામાર સ્વીકાર એન. પ્રમોણે પ્રસંગોપાત સંબાળી કૃતાર્થ કરીો અથ હાલે એ પ્રજી ચરણના જનમોત્સવનો દિન એઓથીતા છવન કતારપર કાઢીને કાઈ પ્રકાર માંડવાની ખાસ આવરવકા હોવાજ. જ્યારે ગઈ કાલે આપના તરફથી તે સંબંધી પત્રિકાઓ મળી અને તેજ ઉત્સવ નાચકનું દિવ્ય ચરિત્ર આણેખવામાં સહાયજીત થઈ, અને સેંકડો બોતાઓના સમક્ષ એ પત્રિકાદ્વારા જહુ જમણાનો ચિતાર પણ રહ્યું કર્યો. આમ આપ હમથોચિત પત્રિકાઓ પ્રજટ કરી વાકપતિની છવનસુખાનું પાન કરાવનાર ભગવદીયોનો આ સંરથા સહાય આભાર માને છે. ભગવદ્ મંડળી યોગજ.

અને મહોત્સવ વખતે બહાર પાડેલી પત્રિકાઓ આપે મોઠાલી આપી. તે પહેલેથી છે, અને યુવક વેળુવાને વહેંચી છે. તેની અસર પ્રસંગ ઉપર સારી થાય છે. માટે દને પણ વધુ પ્રમાણમાં મોઠાલી આપશે. રમણલાલના ન્યાયશ્રીકૃષ્ણ.

સન્માનમાં સમાયલી છે. આજે તેવા સંપ્રદાયના ઉદ્ભવ વર્તમાની, જે ૧૧ માં વર્ષના મંત્રલ દિને આવ સમારંભ દ્વારા સન્માની એ માફ કર્તવ્ય બન્યું છે. એથી વિશેષ કંઈએ નથી કહ્યું. બુદ્ધપુરના મનિષે પ્રી. મજલલ શાસ્ત્રીએ આગામી ઉપ મી જન્મતિથિએ માત્ર સગાએ બારે અભિનન્દનપત્રો આપીને દેવદૃષ્ટતા ન માની થી પણ પ્રી. મજલલ શાસ્ત્રીએ યોગ્ય એવું ચિરસ્મરણીય 'સમારંભ' ઉપ્પ કરી તેમ તેની સાથેકતા ગણારો એમાં શક નથી કે સંપ્રદાયના વિદ્વાનોની જન્મતિથિએ જાહેરમાં સન્માન આપવામાં બુદ્ધપુરના વૈષ્ણવોએ પહેલ કરી છે. શાસ્ત્રીજીનું જીવન ઉત્તમ છે. માત્ર તેમનામાં વિદ્વતા છે એમ નહિ પણ તેમની દીનતા વૈષ્ણવતા અને તેમની નિર્મલ બાલુકતા ખરેખર અન્ય વિદ્વાનોને માટે અનુકરણીય છે. યદ્યપિ તેઓ જીવનની સંધ્યાએ પહોંચ્યા છે તથાપિ તેમની કર્તવ્ય નિષ્ઠા અને રચનાત્મક ક્રિયાશીલ એક તરફને પણ લક્ષિત કરે તેવી છે, પ્રભુ તેમને ચિરંજીવ કરે અને તેમના દ્વારા સંપ્રદાયની નમ્રતાએ સેવાઓ ખૂબ કરાવે. આજે આથી વધુ શું મહેનત હોય ? પ્રી. મજલલ શાસ્ત્રી જેવા તમારે આગળ છે અને તેમથી પાસેથી સંપદ યત્ન રહસ્ય નેટલ બનવું હોય તેટલું જાણી લેને તેમના જેવી સમજવવાની રીતી અન્યથ નથી. સિદ્ધાન્તે ના મનન ચિન્તનથીજ સુદ્ધિ-પ્રભુ-સેવામાં જોડે છે, હૃદય નિર્મલ થાય છે. સુદ્ધિ બ્રહ્મ ન થાય તે માટે શ્રીમદ્દાસપ્રભુ શ્રીસુખાધિનીજીની કારિગમી બાણ કરે છે, યદિ સુદ્ધિ બ્રહ્મ યદ બલ્ય, સુદ્ધિનો વિનાશ યદ બલ્ય, તો તો સર્વ સાધનો વ્યર્થ થયા સમજવા પડી તેવી સુદ્ધિબ્રહ્મ થયેલા માણસ માટે અર્જુનવ્ય કહ્યું રહેલું નથી માટે સુદ્ધિને રિયર અને ધાર્મિક રાજરા શાસ્ત્રનુ અવગાહન કરતા રહેશે. તથા સર્વ ભાવે શ્રીમજલિયને સેવતા બનતા રહેશે એવી હું સૂચના કરી માફ વ્યાખ્યાન પૂર્ણ કરું છું.

સ્વસ્થાદ શાસ્ત્રીને સમાપતિ મહોદયે નિજપિતૃચરણ ગો. શ્રીવિદ્યેશ્વરાચાર્ય મહારાજશ્રીએ શોભાલેલ પ્રસારી કેસરી ઉપરણું આઠારથો દત્તો.

સ્વાસ્થાદ જ્ઞાનાચપુરીના એક પંડિતે પ્રાસંગિક બોલતાં શ્રીશંકરાચાર્યના જ્ઞાન માર્ગ અને શ્રીમદ્દશ્વાચાર્યના શુદ્ધ બંધિતમાર્ગ પ્રેમમાર્ગ મીમાંસા કરતાં શુદ્ધ પ્રેમનું સ્વરૂપ શ્રીમદ્દશ્વાચાર્યના બતાવ્યું છે તે ચિદ્ધ કર્યું હર્ષ અને શાસ્ત્રીજીની વિદ્વતા તથા સારવ્ય પરત્વે કેટલુંજ આવશ્યક વક્તવ્ય કહ્યું હર્ષ.

સ્વાસ્થાદી મુખાધથી આ પ્રસંગે ખાસ આવેલા શ્રીપુલિમાર્થીય યુવક પરિષદના માનદ મંત્રી શ્રીકુલ નિરિધરલાલ જ શાહે પ્રાસંગિક વક્તવ્ય કરતાં બધાનું હર્ષ કે આનંદાલ જનતામાં થતાબ્દી, અર્ધ થતાબ્દી, રમતેત્સવ, મીઠવર નયુધીલી, કે કનકોત્સવ વિગેરે ઉજવાનો પવન કુંકોશ છે. આમાં આમાં ફટી યોગ્યતા તે બાબતનો વિચાર જાહેર જોડા થાય છે. યદ્યપિ તેનો મેનીયા મોટા શહેરમાં વિશેષ ફેલાયો છે. તદનુસાર અમે મુળદીની પુ પુ પરવદ અને શ્રીવૈષ્ણવ સેવામંડળ દ્વારા શાસ્ત્રીજીના એકસામાં વર્ષારંભનો આનંદ ઉજવવા વિચાર કર્યો. પરંતુ ગારે તથા પૂ સત્તાપાત મહોદયને અગ્રે આવવાનું થતાં તે વિચાર મુકતવી રાખ્યો. આજે મુરખી શાસ્ત્રીજીને મારા તથા શ્રી પુ. યુ. પતિવદ્ધ (મુળદ) તરફથી અભિનન્દન અર્પી પ્રભુ ચિરાયુષ્યમાન કરે એમ હૃદયથી ઇચ્છું છું. સુજો. ૧ બારતવર્ષમાં પ્રાચીન સમયે વિદ્વાનોના અદ્વિતીય સન્માન યતાં તે આપણે પ્રાચીન દ્વિતીય તથાસીકું તો જાણી રૂપીકું સંપ્રદાયના પ્રાચીન અચાર્યો પ્રતિ દૃષ્ટિપાત કરીશું તો જાણી શકશે કે શ્રીમદ્દશ્વાચાર્યશ્રી શ્રીમત્પુરોહિતમજ પયંતના વિદ્વાન આચાર્યપાદો વિદ્વાનોના અપૂર્વ સન્માન કરતા અત્યારે પણ મુળદવાળા ગો. શ્રીશ્રીકુલનાયક મહારાજ, સુરતિરથ ગો. શ્રીમજલલલાલજી, નટપુરરથ શ્રીઅનિરંજલાલજી, કચ્છમાંડવીપુરરથ ચિ. ગો. શ્રીદારશેશલાલજી અને આપ સર્વે અનુમતી રહો. હો. તેમ આજના સમાપતિ મહોદયે જેઓ ખાસ અગ્રે પધાર્યા છે તે પણ વિદ્વાનોનાં સુયોગ્ય સન્માન કરી રહ્યા છે. આ આદર્શ પુલિસંપ્રદાય રિવાજ અન્યથ રથજે બહુજ જોડા દેખાય છે. સ્વાસ્થાદ વક્તાએ શાસ્ત્રીજીની પૂના, મુળદ અને અન્યાન્ય રથજે નાનંદાઈ રાત્રિથી કરેલી સંપ્રદાયની કરેલી કેટલીક સેવાઓનું દિવ્યદર્શન કરાવી બિબ્બમાં પણ તેઓ જાન, મન ધનથી સંપ્રદાયની સેવા કરી પોતાની ફરજ બજાવશે વિગેરે આજા બતાવી તેમની પરત્વેની લાગણી અને કહુસલ પણ સંપ્રદાયના હિત માટે કહેવાની નિહરતા માટે યોગ્ય વિવચન કરી સમાપતિ મહોદયની ઉદારવાનો પણ આવશ્યક પરિચય આપી પોતાનું વક્તવ્ય પૂર્ણ કર્યું હર્ષ.

—શાસ્ત્રીજીનું વિચેચન—તદનંતર બ. સ્થા. નિ. ઓયુત મળવાલ શાસ્ત્રીજીએ મંજલાયારણ કરી વિચેચન કરતાં કહ્યું હતું કે સેદિખતને જનમ મરણ પ્રાપ્ત્ય છે તેથી ૬૦ વર્ષ સમાપ્ત થયાં અને ૬૧ થી ૭૫ સુધી થયું હતું તેથી ૧૫૫૦ ને વારોએ એવકાશ નથી પરંતુ એ નિમિત્તે ચિ. ગો. શ્રીમજ્જાપલાલજી બાવા સાહેબનું જન્મે પદારણ થયું અને તે પ્રસંગે આપ સર્વને એકજ મથળે ભગવત્પ્રભુ કરવાનો ને અલભ્ય લાભ પ્રકટ થયો છે એ એક પ્રસંગમાં ચિદન તો મારું જ છે વક્તાઓએ ને કંઈ યથાવસર કહ્યું છે ઉચિતજ દર્દ. પ. બ. જયકૃષ્ણસામઘના સ્મારકમાંથી અમુક રકમ ‘જયકૃષ્ણસંકેત’ માટે આપવાને દૂટી તરીકે હું નેરોત્તમદાસ બાઈને આમત્ કરીશ એટલું જ નહિ પરંતુ દૂરની રકમનો ઉપયોગ નામરોવામાં થવાનો ને પ્રબંધ કરાવેલ છે તેમાં પણ રૂપિય પ્રસંગમાંથી લાવી શકીશ. રજકળીય માત્ર એટલું જ ને કંઈ ચોથા નામની અને રૂપની થય તે કેવલ નિરસ્યે થાય એ જ્ઞાન બદાર રહેતું ન હોય. સમાપતિના ઓપિત્યરણે તથા તેઓથીના યોગ્ય બદલરણે અને પોતે સ્વયં આ અવસરે પણ મારા પ્રતિ ને અનુમત્ દર્શાવે છે તદ્દયં કશ્ચિત્ સંદેહઃ કયુષ્ઠ તે કરતાં પણ મનોમાનથી ભાવનાએ કદ એ વિશેષ સ્વિર છે પુરીસ્ય પંડિતજના પ્રાસંગિક બોધમાંથી ‘બીજ’ શબ્દ પ્રતિ આપ સર્વેને જ્ઞાન આપાને શ્રીમદ્ભાષ્ય ચરણના ભજિતર્જની અંધત્ ધિગ્ તદુચ્ચતે દાહ્યે રહ્યું ઇન્દ્રિયે નયતિ લાઘવં સંસ્મરણ કરાતું હું શ્રીમદ્ભાષ્યની દ્વાયાથી ભગવત્પ્રેમ, ભગવદ્ભક્તિ અને ભગવદ્વ્યસન હૃદ યાય ત્યાં સુધી ભક્તિમાર્ગમાં પણ માવધાનના આવશ્યક છે અને તેથીજ ‘રસિકા. કામવર્તિતા’ એ તમારા સમક્ષ વિરાજમાન ચુદ્ધોખનો અર્થ પ્રકટ કયું હું કે ‘રસોવેતાઃ’ સુનેથી પ્રતિપાદરસ આપણું સર્વેર છે રસિકતાજ આપણો પરમ ધર્મ છે પરંતુ રસિકત્વ અને કામ એ બહુજ મિત્ત છે. રસ સાક્ષત્ ભગવદ્વરણ છે ત્યારે કામ નરહાર છે. અતઃકલ્પ કામથી ને સદા સર્વદા વિરતિત રહે તેજ ‘રસિક’ સંજ્ઞાને યોગ્ય છે. કોઈ પણ વ્યક્તિ પ્રતિ આપ દષ્ટિ કરીશ તો સમજીશ કે જનતમાં કેટલી બધી વ્યક્તિઓ કામવિરણ યત્ અનેક નિરિદ્ધ લોકમાંથી દુઃખી થય છે આશીર્વાદ દ્વિતીય ચુદ્ધો લેખ પ્રતિ આપનું ચિત્ આકર્ષિતું છે અને રસિક ભાષામાં કહ્યું હું કે ભગવત્પ્રમાદથી અતિશ્લિષ્ટ કોઈપણ પદાર્થની ઉલ્લાસ તે કામ અને કેવળ ભગવત્વરણ તેજ રસ અને તેથીજ પુષ્કિમિભાગમાંથી શીવલભાસ વંજીએ ઉપનિષદ્વરણ સિદ્ધાન્તરદરસ અન્યમાં રસિક આજ્ઞા કરી લીધી કે અલભ્યપિત્તવરણ તરમદ્ વર્તનમાર્ગેની રસોજાન સર્વેયા કરો પરંતુ અલભ્યપિત્ત વસ્તુનો ત્યાગ કરો. રસોજ મ ફલપ છે. કામજોજ ફલ છે તાત્પર્યકે રસાત્મક ભગવત્વરણપનાજ લોભાર્થ અલભ્યપિત્ત વસ્તુએનું કામજો ગતે સર્વેન કરો નિરંવર શ્રીમદ્ભાષ્યચરણનો અલભ્ય-અનન્ય આશ્રય પરિમરને ભક્તિપ્રીત્તનાથી અંકુર, અંકુરમાંથી કલિકા, કલિકામાંથી પુષ્પ, પુષ્પમાંથી ફલ, ફલમાંથી રસ અને રસમાંથી પરમકામપત્ત ભગવત્વરણનો આસ્વાદ કરો. અરે! તદ્દયં પ્રથમ બાધક કામનો પરિત્યાગ કરો હવસંહારમાં માત્ર એટલુંજ કહેવનું છે કે મારામાં શુભ માનીને ને મારી પ્રશંસા વધ તે શુભ ભગવદ્વસ્તુએનું પ્રતિબિંબ છે. વસ્તુતઃ તેમજા શુભની રેતિ મરી નેહએ તે શુભ નિર્મલ, અનંતશુભ, સત્ય, જ્ઞાન, અવનન, બદા ઇતિ એવિએ પ્રતિપદિત શબ્દ બ્રહ્મમાં છે, બ્રહ્મધર્મ જિંબ છે અને જ્યારે ને કંઈ સદ્વસ્તુએનું પ્રતિદેશિત પ્રતિબિંબત્વે દેખાય છે તે શુભનું પણ પરમ ત્યાગ બ્રહ્મ, પરમાત્મા, ભગવાન, શ્રીકૃષ્ણ અથવા શ્રીકૃષ્ણાનન શ્રીમદ્ભાષ્યમાંથી થય છે વિનેરે વિસ્તારથી સમજીશ ઉપચિત્ત મથેલાં સર્વેનો આવાર માન્યો દતો.

ગુરુવાર તા. ૭-૧૨-૩૩ ના દિને પણ સંજ્ઞાના નિવત્ત સમયે સમાની શરૂઆત ભગવત્પ્રીત્તન સંજ્ઞેતમાં એક સંજ્ઞાને સુરેરે માવા બાદ પ્રે. મન્નલાલ શાસ્ત્રીજીએ વેદમાર્ગ અને શ્રીવીદ્યા ભાગવતોક્ત ભક્તિમંત્ર એ લેનું તારવમ્બ રસિક કરીને પુષ્કિમિજનું વિસ્તારથી વિચેચન કરી દિગ્દશન કમળું દર્શ અને સમાપતિ મઠોદયે ‘શ્રીમદ્ભાષ્ય’પ્રણીત ‘ભક્તિવર્ધિની’ અન્યથી તે સિદ્ધાન્તનું બહુજ અધુર સાધમાં પોષણ કરી જનતાના હૃદય ઉપર સારી ભાવના ઉપચિત્ત કરી હતી. ત્યારપછી બને કિંચિત્ મથેલાં શ્રીમાન સમાપતિના અત્યંત ઉપકાર માટે ઓયુત કૃષ્ણલાલ મજમુતરે સમા તરફથી કશ્ચિત્ કહ્યું હતું જેને ઓયુત મળવાલ દલાલે એકસેર બાધમાં અલભ્યેકન આપ્યા પણ શ્રીમાવર્ધન ધરણના નાપાપના વચ્ચે દોઢ કલાક સી ચિંતાયા દર્તા

નિધિસ્વરૂપ શ્રીબાલકૃષ્ણલાલની સેવા.

શ્રીબાલકૃષ્ણલાલજીને જે સ્વરૂપ રાજકોટ ગામની હવેલીમાં બીરાજે છે તે સંપ્રદાયના મૂળ આચાર્ય શ્રીવલ્લભાચાર્યજીએ સેવેલ હતાં. તેઓશ્રીના વખતમાં ઉચ્ચ કોટિના આદ્યશ્રીજીજીનું ગાળનારાં ૮૪ વૈષ્ણવ હતાં. તેમનાં એક પદારાવલ્ય હતાં તેમને શ્રીવલ્લભાચાર્યજીએ આ સ્વરૂપ પદારાવલ્ય આપ્યું. પદારાવલ્યનાં વંશજોએ આ સ્વરૂપની સેવા ઉત્તરેનમાં કરી. રાજકોટ રાજ્યની યાદી સ્થાપનાર શ્રીવિભાજી સને ૧૬૩૫ (સં. ૧૫૭૯) સુધી આવી ઉપર હતાં. હાલની કેળવણીનો અને પશ્ચિમનાં પવનનો રૂપ લાગ્યા નહોતો ત્યારે ધણાં ખરા રાજપુત અને કાંઠી રાજ્યો ધર્મપરાયણ અને વૈષ્ણવ હતાં. યુદ્ધિમાર્ગમાં જે સ્વરૂપોની સેવા થાય છે તેમાં અને સંપ્રદાયના આચાર્યો પ્રતિ તેમનો ભાવ હતો. રાજકોટ નરેશ વિભાજીની વિનંતિથી પદારાવલ્યના વંશજોએ શ્રીબાલકૃષ્ણલાલજીને સ્વરૂપ રાજકોટ રાજ્યની હદમાં પદારાવલ્ય, ત્યાં સેવા કરવા માંડી અને રાજ્ય તરફથી નેક લોકો ખાતે પ્રજ્ઞાંધ થયા.

સને ૧૭૦૬ ના અરસામાં પદારાવલ્યના વંશજોને રાજ્ય સાથે કંઠવારાં ધવાંથી, તેમણે આ સ્વરૂપ નમનગરમાં પદારાવલ્ય અને ત્યાં તે ત્રણે સુધી બીચાળ્યું. તે વખતના નમનગરનાં સાવિત્ર નરેશોએ નમનગર અપાંલુ કરી, લેખ કરી આપ્યા. સને ૧૭૫૪ ના અરસામાં તે વખતના રાજકોટના નરેશની વિનંતિથી, આ સ્વરૂપને રાજકોટમાં ફરી પદારાવલ્ય. સને ૧૮૭૭ સુધી પદારાવલ્યના વંશજોએ રાજકોટની નીની હવેલીમાં સ્વરૂપની સેવા કરી. શ્રી બાલાજીરાજ સને ૧૮૧૨ માં આવીએ બેઠા. તે વખતે તેમનું ઉંમર ૧૫ વય હતું. સને ૧૮૭૧ માં પણ સત્તા સાથે રાજ્યતંત્રની લગામ તેમને સોંપવામાં આવી ત્યારબાદ પદારાવલ્યના વંશજ ગોવિંદજી ભટ્ટને રાજકોટની હદમાં રહેવાનું સહીસત્તામંત્ર નહીં નોંધાવાંથી અનેક પ્રકારનાં લેખમે વેઠી, તેમણે ૧૮૭૭ માં આ સ્વરૂપ સીવીલ રેસીડેન્સની હદમાં મેરખીના નીના ઉઠાંશમાં પદારાવલ્ય તેઓ પરમ ભગવદીય હતાં. આત્મનિવેદનનું તેમને અનુસંધાન રહેતું. પ્રજા ઉપર દેહ આશ્રય હોતો. સને ૧૮૮૩-૮૪ માં વૈષ્ણવોની મદદથી સીવીલ રેસીડેન્સમાં આવેલી હવેલીનું મંકાન બંધાવ્યું, તે સિદ્ધ કરી, સ્વરૂપને ત્યાં પદારાવલ્ય સેવા કરવા માંડી. બાલાજીરાજ ૧૮૬૦ માં દેવદોહ થયા. ૧૮૭૭ થી ૧૮૬૦ સુધીમાં, રાજ્ય કુટુંબમાં બીજાં પણ મારણ થયાં. બા નાની બાને એવા વિષાદો રૂપો જે શ્રીબાલકૃષ્ણલાલ રાજકોટની હવેલીમાં નહીં પધારે ત્યાં સુધી રાજકુટુંબ સુખ અને શાંતિ અનુભવો નહીં. કાંઈને સમજાવવા અનેક પ્રયાસો થયા પણ તે નિષ્ફળ થયા. ઉપર તા. ૨૩-૪-૧૮૬૧ ની મીતીથી તેમણે હાલાર પ્રાંતના મે. ચાક્ષીદીઠ એન્ટ રાહેબને અરેષ્ટ આપી. કોરણ કે શ્રી લાખાજીનાં સંપૂર્ણ હોવાથી; એન્ટ રાહેબ આ રાજ્યનો વહીવટ ચેતો હતા.

ઉક્ત અરજીના થોડા ફક્તોએ ટાંકવાની રત્ન લગ્ન છું.

આ રેસીડેન્સ સ્થાપનાર કાકોરશ્રી વિભાજીની વિનંતિથી ભદ્રજીના કુટુંબે આ સ્વરૂપ ઉત્તરેનમાં રાજકોટમાં પદારાવલ્ય. રાજ્ય નેકલોકોના પ્રજ્ઞાંધ થયાં. રાજ્ય સાથે નેમનગર ધવાંથી, થોડાં વર્ષ સુધી, આ સ્વરૂપને નમનગરમાં પદારાવલ્ય અને રાજ્યની વિનંતિથી ફરીને આદિ પદારાવલ્ય. સ્વરૂપ સીવીલ રેસીડેન્સ પદારાવલ્ય પછી, અમારા કુટુંબને દુઃખદાયક વારસો મળ્યો છે અને મહુમ કાકોર સાહેબના નાની ઉંમરમાં અમારો મૃત્યુથી બીજા કુખિા પણ આવી પડ્યાં છે. ન્યાં સુધી રાજકોટની હવેલી ખાલી રહે, અને અમારા શ્રીબાલકૃષ્ણલાલજી બહાર બીરાજે ત્યાં સુધી મને શાંતિ મળે તેમ નથી. મારી દુઃખદ સ્થિતિનો અંબાલ રાખવા હું આપને વિનંતિ કરું છું. મારા કુટુંબમાં જે માણસો રહ્યાં છે તેમનાં એક માટે હું ઉગ્રજી હું કે શ્રીબાલકૃષ્ણલાલજી આદિ પદારાવલ્ય, અને અમારા ઉપર મોટી રૂપા કરે. મારું કૃષ્ણજીવદેવને રાજકોટની નવી હવેલીમાં શ્રીકાકોરજીને પાછા પદારાવલ્ય મેં સંમત્ય છે. તે ખાસ એવી યત્ન મેં છે કે, ને લાભિયમાં કોઈ પ્રેસને રાજ્ય સાથે તેમને અમર તેમના વંશજોને કંઠવારાં ધવાં તો તેઓ શ્રીકાકોરજીને પદારાવલ્ય, લખ નહીં રાહે. આ યત્ન મને વ્યાજબી લાગે છે, અને રાજ્યને ઠાઈ રીતે મુકરાનકારક નથી. હું આશા રાખું કે આ મારી પવિત્ર ઉગ્રજી અગ્રદામાં મુકરાને આપને કરી વધિ નહિ હોય. મારી મંગલિકા અમાના અને રાજકોટના સંખ્યાબંધ વૈષ્ણવોના ધર્મને અનુસક્તી છે. બીજીની ધાર્મિક લાવણીને મારા સત્તાપતિ તો બીજીસ રાજ્યનો ગેરમાર્ગ ગાંધ સફળ છે. આશા છે કે આ કામમાં તે વધુ.